17

स्थापित वि. संवत् १९३२
(१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

शिमला व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2015-16 ई.
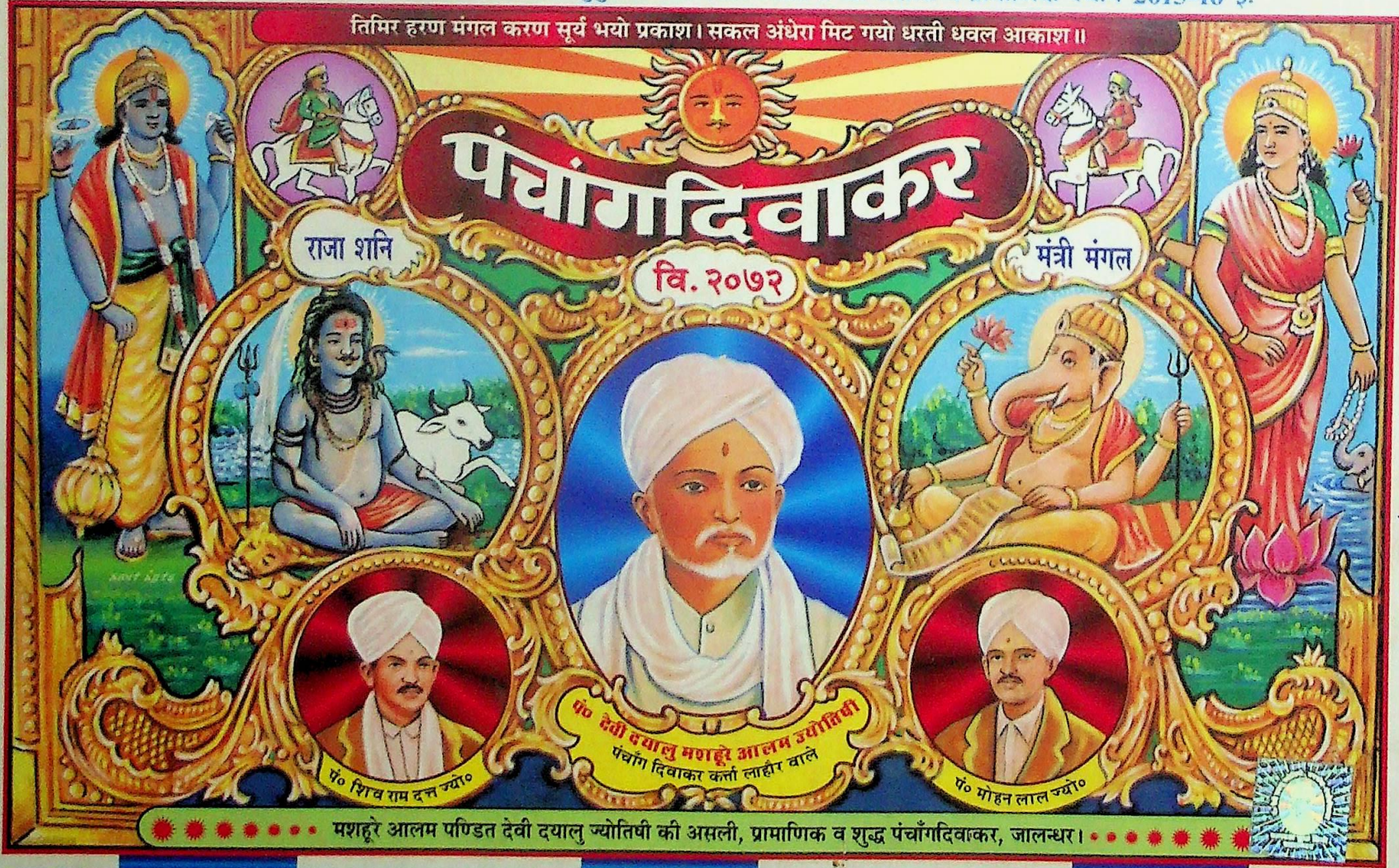
गौरवशाली 140 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम

पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़

माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008

एकमात्र वितरक :

मूल्य: ₹ 84/-

स्वर्गीय : पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी

श्री गणेशाय नमः

श्री सरस्वत्यै नमः
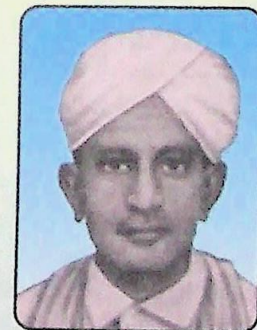
स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

''कीलक'' नामक वि. संवत् पंचाँगदिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०७२ (सन् 2015-16 ई.)

मशहूरे आलम **असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग**

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. विवेक शर्मा (एम. ए. एल. एल. बी.) सह-संपादक : पं. पंकज शर्मा (एम. कॉम)

सुपुत्र: स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

(ज्योतिष, कर्मकाण्ड सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (भारत) फोन न

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १४० वां

स्थापित वि. संवत् १९३२ वां

प्रकाशक : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.) मोबाईल ... 9-13583

स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी (ज्योतिष-जगत् के एक सूर्य)

श्रद्धाञ्जलि एवं संक्षिप्त जीवन परिचय

{ पं. शिव कुमार शर्मा M.A., रिटा. प्रिंसीपल, प्रताप नगर, अमृतसर (पं.) }

पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी जी के देहावसान का हृदय-विदीर्ण करने वाला समाचार मुझे 16 मई, 2014 ई. की प्रातः को प्राप्त हुआ। पं. जी जैसी विभूति के असामयिक महाप्रस्थान से ज्योतिष जगत् की ऐसी महत्त्वपूर्ण क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में होती नहीं दिखाई देती है। वस्तुतः **'पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी'** अपने आप में एक ऐसा नाम है, जो भारतीय ज्योतिष जगत् में किसी परिचय की अपेक्षा नहीं रखता। सन् 1875 ई. से पितृपुरुष **पं. देवीदयालु जी** द्वारा प्रणीत एवं संस्थापित पंचांग प्रकाशन तथा लेखन की अविरल श्रृंखला को पंडित पन्ना लाल जी ने विगत 44 वर्षों से सफलतापूर्वक विभृत किया और आगे बढ़ाया। इन वर्षों में पण्डित पन्ना लाल जी ने अपने गौरवमयी प्रभावशाली लेखन कला एवं भविष्यवाणियों द्वारा केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी ज्योतिष मर्मज्ञों तथा ज्योतिष में विश्वास रखने वाले विद्वतजनों के मध्य **'ज्योतिष शिरोमणि'** के रूप में लोकप्रिय हुए। पण्डित जी द्वारा संचालित 'पंचांगदिवाकर', 'मुफीद आलम जन्त्री' (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी) तथा तिथ-पत्रिका (पंजाबी) को लोग प्रामाणिकता का प्राय मानते हैं।

पण्डित पन्ना लाल जी का जन्म 23 नवम्बर, 1940 ई. को लाहौर (अब पाकिस्तान) में शाण्डिल्य गोत्रीय पं. देवीदयालु जी के प्रतिष्ठित, धर्मपरायण एवं गणमान्य ब्राह्मण परिवार में हुआ। माता श्रीमती शान्ति देवी मात्र 4 वर्ष की बाल्यावस्था में इन्हें तथा पुत्री (श्रीमती) प्रेमलता शर्मा को छोड़कर दिवंगत हो गई। पिता पं. चूनी लाल जी शर्मा ने ही दोनों का पालन-पोषण किया। पं. पन्ना लाल जी की बाल्यावस्था में ही पठन-पाठन एवं ज्ञानलिप्सा के कारण अध्ययन में विशेष रूचि थी। अपना अधिकांश समय उन्होंने अपने मामा जी के साथ दिल्ली, अपनी बुआ के साथ चण्डीगढ़ में व्यतीत किया। सन् 1965 ई. तक एम.ए. हिन्दी तथा फिर एम.ए. संस्कृत में उच्च श्रेणी में पूर्ण की। अक्तू., 1970 ई. में पण्डित जी का विवाह श्रीमती सुमन शर्मा के साथ हुआ। विवाह के एक मास के भीतर ही पण्डित जी पर वज्रपात हुआ। पहले पितातुल्य चाचा पं. चमन लाल जी, तदुपरान्त पिता पं. चूनी लाल जी का देहान्त हो गया तथा पंचांगदिवाकर व अन्य जन्त्रीयों के लेखन एवं प्रकाशन का कार्यभार पण्डित जी के ऊपर आ गया। इस दारुण शोक की अवस्था में भी उसी वर्ष से ही पण्डित जी ने पंचांग के लेखन एवं प्रकाशन के साथ-साथ प्राचीन ज्योतिष के मूल ग्रन्थों का भली-भान्ति परिशीलन किया। ये ऐसी हृदय विदारक परिस्थितियाँ थीं, जो प्रस्तर-हृदय को भी विचलित कर देती, बड़े-से-बड़े ज्ञानवान भी इन विषम-परिस्थितियों में धैर्य नहीं रख पाते, परन्तु पण्डित जी ने परमपिता ईश्वर के शरणागत हो कर्मशील रहते हुए उन्हीं के ऊपर अपने योग-क्षेमके निर्वहन का उत्तरदायित्व दे दिया। हिन्दी एवं संस्कृत भाषा पर आधिपत्य होने के कारण शीघ्र ही पंचांगदिवाकर तथा मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी भाषा में) की ख्याति को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ले गए। पण्डित जी जैसा आत्मविद एवं ब्रह्मज्ञानी ही अपनी आत्मदृष्टि से स्वयं तथा परिवार पर आए समस्त शोकों से पार ले जा सकता था। उनकी वैदुष्य की ख्याति से प्रभावित होकर प्रतिदिन सैंकड़ों लोग अपनी ज्योतिष, धार्मिक एवं आध्यात्मिक जिज्ञासाएं प्रत्यक्ष लेकर आते तथा कुछ पत्राचार माध्यम से ही समाधान करवाते। उनके ज्योतिष सम्बन्धी उपायों में धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता का अद्भुत संमिश्रण होता था, जिससे उनके उपाए एवं भविष्यवाणियाँ अक्षरशः सत्य एवं सटीक बैठती थीं। गीता का यह श्लोक अक्सर मुझे सुनाया करते थे-

य: शास्त्र विधिं उत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अर्थात् जो लोग शास्त्र प्रतिपादित विधियों को छोड़कर मनमाने ढंग से आचरण करते हैं, न वो कार्यसिद्धि को प्राप्त करते हैं, न उन्हें सुख व शान्ति मिलती है तथा न उनकी परलोक में गति होती है। उनकी इसी प्रसिद्धि एवं ख्याति को देखकर कुछ धोखेबाज प्रकाशक **'पंचांग'** तथा **'मुफीद आलम जन्त्री'** का मिलता-जुलता टाईटल छाप कर लोगों को धोखा दे रहे थे। ''एक चिन्तक का कथन है कि जब परिस्थितियाँ मुश्किलों के पहाड़ खड़ी करने लगें, तो समझ लो कि हमारा अंब शौर्य एवं शक्ति प्रदर्शन का समय आ गया है। विपरीत परिस्थितियों में प्राप्त की गई सफलता ही हमारे कौशल की कसौटी है।'' पण्डित जी ने भी उन विपरीत परिस्थितियों में न केवल अपने कौशल, शौर्य एवं शक्ति को दिखाया, बल्कि साथ-ही-साथ स्वाध्याय द्वारा अपनी ज्ञानलिप्सा तृप्ति की ओर बढ़ते गए। त्रिस्कन्ध ज्योतिष (सिद्धान्त, होरा तथा संहिता) पर पं. श्री पन्ना लाल ज्यो. जी के अद्भुत आधिपत्य और पंचांगदिवाकर व मुफीद आलम जन्त्री की गणित, फलित सम्बन्धी भविष्यवाणियों से प्रभावित होकर सर्वप्रथम 1981 ई. में भारतीय ज्योतिष अनुसंधान परिषद् (रजि.) लुधियाना में, 1989 ई.

ध्यानपुर (दीनानगर) में श्रीसनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय में उन्हें मुख्यतिथि के रूप में आमन्त्रित करके विशेष रूप से सम्मानित किया गया, तदुपरान्त दिसम्बर, 1996 ई. में अखिल भारतीय ज्योतिष संस्थान, दिल्ली द्वारा पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी को ज्योतिष क्षेत्र में उच्चस्तरीय लेखन व प्रकाशन कार्यों में उत्कृष्ट सेवाओं एवं योगदान हेतु **'ज्योतिष सम्राट'** की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान वर्तमान विदेश मन्त्री तथा तत्कालीन सूचना प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज द्वारा एवं श्रीमद्जगद्गुरु शंकराचार्य स्वा. माधवानन्द सरस्वती जी महाराज (प्रयाग पीठाधीश्वर) के तत्त्वाधान में दिया गया था। तदोत्तर दिसं., 96 में ही अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन, जालन्धर, भारतीय ज्योतिष विद्या परिषद् (फिरोज़पुर) तथा भृगु ज्योतिष अनुसंधान संस्थान, अम्बाला (2006 ई.) आदि अनेक संस्थाओं द्वारा पण्डित को सम्मानित कर उनके वैदुष्य एवं ज्ञान को ही प्रणाम किया था।

इसके अतिरिक्त पण्डित जी ने पंचांग निर्माण के साथ–साथ प्राचीन साहित्य के गहन अनुशीलन एवं सुदीर्घ अनुभव के आधार पर बहुत से ग्रन्थ लिखकर ज्योतिष कर्मकाण्ड एवं धार्मिक साहित्य को भी समृद्ध किया। पण्डित जी का शब्दों का उच्चारण, वाक्य–संरचना, भाषा ज्ञान इतना समृद्ध एवं रचनात्मक था कि उन्होंने वेदों, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, ज्योतिष व संहिताओं के सारगर्भित एवं गूढ़तम सिद्धान्तों को साधारण जन कल्याणार्थ सरल, सुबोधगम्य शैली में अपनी पुस्तकों/ग्रन्थों में प्रकट किया। उनके द्वारा सर्वप्रथम लिखे ग्रन्थ **'ज्योतिष–तत्त्व'** नामक पुस्तक को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। इस पुस्तक के अनुशीलन से साधारण पठित अनेक लोगों ने ज्योतिष विद्या में सफलतापूर्वक प्रवेश किया। आजकल भी यह पुस्तक अनेक ज्योतिष विद्यालयों के पाठयक्रम में पढ़ायी जाती है। किञ्च् उनके द्वारा लिखित एवं प्रकाशित ग्रन्थों की अविरल श्रृंखला है–(1) ज्योतिष तत्त्व (गणित), (2) ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग–I, (3) ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग–II, (4) वर्षफल चन्द्रिका, (5) अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके, (6) सुतभाव प्रकाश, (7) अर्द्धशताब्दि पंचांग, (8) दशवर्षीय पंचांग–2 भाग, (9) **कर्मकाण्ड सम्बन्धी**–विवाह पद्धति, (10) दुर्गा सप्तशती (भाषा–टीका) एवं सरल भाषा में, (11) गण्डमूल नक्षत्र शान्ति रहस्य, (12) कार्तिक स्त्री–प्रसूता शान्ति, (13) जन्मदिन पूजा पद्धति, (14) धर्म एवं मन्त्र सम्बन्धी पण्डित जी का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ 'शिव–मन्त्रावली' एवं च **पंजाबी भाषा** में भी, (15) भृगु संहिता, (16) ज्योतिष ज्ञान शास्त्र आदि ग्रन्थ उनकी प्रकाण्ड विद्वता एवं महानतम्, दिव्य गुणों के द्योतक हैं। पण्डित पन्ना लाल जी वेदों, शास्त्रों, आध्यात्मिक ज्ञान एवं ज्योतिष के एक अगाध समुद्र थे। गीता में भी भगवान् कृष्ण ने स्वयं कहा है–

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्।। (७/१८) (गीता)
एवं च, बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।। (७/१९) (गीता)

अर्थात् प्रेमगत मन–बुद्धिवाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम गतिस्वरूप मुझमें ही अच्छी प्रकार स्थित है। बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में तत्त्व ज्ञान को प्राप्त पुरुष सब कुछ वासुदेव ही है–इस प्रकार जो मुझको भजता है, वह महात्मा अत्यन्त दुर्लभ है। सब वेदादि शास्त्रों में परम तत्त्व ब्रह्मस्वरुप तारक ही है। वस्तुतः मनुष्य के वर्तमान जीवन के सुस्पष्ट ज्ञान से ही उसके पूर्व तथा परवर्ती जीवन का ज्ञान हो सकता है।

इस प्रकार के तत्त्वदर्शी, ब्रह्मज्ञानी एवं त्रिस्कन्ध ज्योतिष का गहन ज्ञान रखने वाले **'पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी जी'** के 15 मई, को देहावसान होने से भारतीय ज्योतिष के साथ–साथ सम्पूर्ण समाज को वस्तुतः एक अपूर्णीय क्षति हुई है तथा उसकी पूर्ति न जाने कितना काल लेगी। जब मैं 16 मई की प्रातः उनके निवास स्थान पहुँचा तो दोनों पुत्रों सहित सम्पूर्ण परिवार दारुण शोक की अवस्था तथा अश्रुओं के सैलाब से ओतप्रोत था। परन्तु श्रेष्ठ पिता की उत्तम सन्तान की भान्ति उन्होंने धैर्य बान्ध रखा हुआ है। उनके देहान्त पर **'पंचांगदिवाकर कार्यालय'** तथा उनके निवास स्थान में हजारों विद्वानों के शोक–सन्देश एवं संवेदना पत्र–अखिल भारतीय ज्योतिष संस्थान, दिल्ली, थॉपर एस्टरो विजन, चण्डीगढ़, पं. गिरीश कौशल शास्त्री संस्थान, होशियारपुर, पं. पवन शर्मा ज्यो. कार्यालय, अमृतसर, Suraj Parkash Divine Institution, California (U.S.A.) आदि अनेक ज्योतिष संस्थाओं के शोक एवं सान्त्वना संदेश पहुँचे हैं तथा पहुँच भी रहे हैं। 'पंचांगदिवाकर कार्यालय, उनके पुत्र तथा परिवार उन सभी का हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

परम पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी बड़े ही उच्चकोटि के विद्वान, परम त्यागी, तपस्वी, पूर्ण सदाचारी, प्रकाण्ड ज्योतिषी, अनन्य भगवद्–भक्त ब्राह्मण थे। पण्डित जी अपने वैदुष्य, सतत् अभ्यास एवं गहन अध्ययन से प्राप्त सुदीर्घकालीन अनुभव को अपने दोनों पुत्रों पं. विवेक शर्मा M.A.LL.B. तथा पं. पंकज शर्मा M.Com. को दे गए हैं। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि पण्डित जी के दोनों सुयोग्य पुत्र **'पंचांगदिवाकर', 'मुफीद आलम जन्त्री'** तथा अन्य ग्रन्थों के माध्यम से अपनी वंश–परम्परा को और भी अधिक गौरान्वित एवं प्रतिष्ठित करेंगे। अन्त में दिवंगत पं. पन्ना लाल जी की शुद्ध व दिव्य आत्मा की शाश्वत शान्ति की प्रार्थना के साथ उनके पुत्रों/पौत्रों के लिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की एक रचना स्मरण में आ रही है–

निज गौरव का नित ध्यान रहे। हम भी कुछ है यह ध्यान रहे।।
सब जाय अभी पर मान रहे। मरणोत्तर गुंजित गान रहे।।
कुछ हो न तजो निज साधन को। नर हो न निराश करो मन को।।

बस, जीना इसी का नाम है।

विषय-सूची-पंचांगदिवाकर-संवत् २०७२ (सन् 2015-16 ई.)

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- स्त्री जातक सम्बन्धी विशेष ज्योतिषीय योग
- आनन्दादि 28 योग और उनका प्रभाव
- विदेशी नगरों/देशों के वर्गीकृत अक्षांश-रेखांश
- श्राद्ध कर्म (पितृकर्म) सम्बन्धी विशेष नियम
- अनिष्ट ग्रहों के दान व उपाय

पंचाँग दिवाकर के १४०वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर

जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा-
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्मपीठाधीश्वरकाशीक्षेत्रम्(वाराणसी)

सर्वकल्याणकारी शास्त्र वचन

[स्वर्गीय पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी जी की व्यक्तिगत डायरी में से उद्धृत]

परम पूजनीय हमारे पिता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी का दिनांक 15-05-2014 ई. को स्वर्गवास हो गया है। दिव्यात्मा पण्डित जी महान् ज्योतिर्विद के साथ धर्म, शास्त्र एवं आध्यात्म-अनुरागी थे। उनके जीवनाचार्य में प्रमुख उद्देश्य स्वाध्याय एवं सत्संग-श्रवण ही था। साथ-ही-साथ वे जहाँ से भी अनमोल वाक्य, शास्त्र-वचन एवं आध्यात्मिक प्रवचन श्रवण अथवा पढ़ते, उन्हें अपने रजिस्टर/डायरियों में लिख लेते थे। उन्हीं के हस्तलिखित प्रवचनों/अनमोल वाक्यों को हम क्रमबद्ध श्रृंखला से हर वर्ष 1-2 पृष्ठों में पंचांग/जन्त्री में प्रकाशित किया करेंगे। यह वाक्य संग्रह तत्त्वज्ञ तथा आध्यात्मिक चेतना-पुरुष पंडित जी द्वारा अभिव्यक्त अनेक लौकिक तथा पारलौकिक (आध्यात्मिक) विषयों पर सरल, सुबोध भाषा में शास्त्रानुमोदित, स्वानुभूत विचारों और सिद्धान्तों का दिग्दर्शन है। हमें विश्वास है कि सभी कल्याणकामी सत्पुरुषों के लिये पं. जी की प्रेरणाप्रद व आध्यात्मिक बातें उपयोगी मार्ग-दर्शक सिद्ध होंगी।

(1) जीव अकेला ही आता-जाता है–

एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते। एकोऽनुभुङ्क्ते सुकृतमेव एव च दृष्कृतम्।।
मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठ समं क्षितौ। विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति।।

अर्थात् जीव अकेला ही जन्म लेता है, अकेला ही मरता है एवं वह अपने पाप-पुण्य भी अकेला भोगता है। उसके मृत शरीर को मिट्टी और लकड़ी के समान छोड़कर, उसके सभी बान्धव वापिस लौट जाते हैं, केवल धर्म ही उसके साथ जाता है।

(2) **न काष्ठे विद्यते देवो न शिलायां कदाचन्।**
भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावं समाचरेत्।।

देवता न तो लकड़ी में और न ही पत्थर की शिला में रहता है। वह तो प्राणी के भाव में विराजमान रहता है। इसलिए सद्भाव से युक्त भक्ति का सम्यक् आचरण करना चाहिए।

(3) **अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।**
नित्यं संनिहितो मृत्युः कर्त्तव्यो शीघ्रं धर्मसंग्रहः।।

शरीर अनित्य है और धन-वैभव भी सदा रहने वाला नहीं है। मृत्यु सदा समीप मण्डराती रहती है। इसलिए यथाशीघ्र धर्मसंग्रह करना चाहिए।

(4) भगवती पार्वती और भगवान् शंकर की कृपा का आश्रय के बिना तो अनपे हृदय में स्थित आत्माराम और श्री भगवान् के दर्शन हो ही नहीं सकते–

भवानी शङ्करौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धास्वान्तः स्थमीश्वरम्।।

श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड के मंगलाचरण के श्लोक संख्या २ में गोस्वामी जी हमारे अन्दर हृदय में विराजमान आत्माराम श्रीभगवान् के दर्शनों के लिए पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से श्रद्धास्वरुपा करुणामयी माता पार्वती जी और अचल विश्वास स्वरूप भगवान् शंकर की कृपा का सहारा लेने की बात पूरे विश्वास से कहते हैं।

(5) विषयासक्त और नास्तिक जनों के संग से परहेज करना चाहिए। क्योंकि विषयों का संग पतन की ओर ले जाना वाला है। विषयों-भोगों के त्याग के लिए गीता का निम्न श्लोक अनुकरणीय है–

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःख योनय एव तो।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।। (गीता ५/२२)

जो ये इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले सब भोग हैं, वे यद्यपि विषयी पुरुषों को सुख रूप भासते हैं, तो भी दुःख के ही हेतु हैं, आदि-अन्त वाले अर्थात् अनित्य हैं। इसलिए हे अर्जुनः ! बुद्धिमान् विवेकी पुरुष उनमें नहीं रमता।

–ईश्वर में श्रद्धा कम होने लगे, तो समझ लो कुसंग हो रहा है और पाप ही इसका कारण है। या तो पाप की कमाई आ रही है या कुसंग कारण बन रहा है।

(6) ***माता-पिता की सेवा की महिमा–***

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन् पूजयेत्।।

अर्थात् माता में सभी तीर्थों का अधिष्ठान् है अथवा सभी तीर्थों का जो पावनत्व (पवित्रता) है, उससे भी अधिक पवित्र माता है। इसी प्रकार पिता में सभी देवता प्रतिष्ठित हैं। अतः सभी प्रकार यत्नों से माता-पिता की सेवा-पूजा करनी चाहिए।

(7) ***संस्कारों का चक्र–***

योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः।
स्थाणु मन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्।।

अर्थात् जिसका जैसा कर्म होता है और शास्त्र आदि के श्रवण द्वारा जैसा भाव प्राप्त हुआ है, उसी के अनुसार शरीर धारण करने के लिए कितने ही जीवात्मा तो नाना प्रकार जङ्गम योनियों को प्राप्त हो जाते हैं और दूसरे स्थावर भाव को प्राप्त होते हैं।

(8) **एवं यः सर्वभूतेषु पश्यति आत्मानं आत्मना।**
स सर्वसमतामेत्य ब्रह्माभ्येति परं पद्म।।

अर्थात् जो सब जीवों में अनुस्यूत परमात्मा को आत्मस्वरूप से देखता है, वह समबुद्धि प्राप्त कर ब्रह्मरूप मोक्ष को प्राप्त होता है।

(9) **दुर्लभं त्रयमेव एतद् देवानुग्रहहेतुकम्।**
मनुष्यत्वं मुमुक्षत्वं महापुरुष संश्रयः।।

अर्थात् भगवत्कृपा ही जिनकी प्राप्ति का कारण है, वे मनुष्यत्व, मुमुक्षत्व (मोक्ष-प्राप्ति की भावना) और महापुरुषों का संग–ये तीनों ही दुर्लभ हैं।

प्रमुख पर्व-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (सन् 2015-16 ई.)

»» जनवरी 2015 ई. »»

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ 1 जन. गुरु
पुत्रदा एकादशी व्रत 1 जन. गुरु
पौष पूर्णिमा 5 जन. चंद्र
माघस्नान प्रारम्भ 5 जन. चंद्र
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी 8 जन. गुरु
लोहड़ी पर्व 13 जन. मंग
मकर (माघ) संक्रान्ति 14 जन. बुध
पुण्यस्नान माघ संक्रांति 15 जन. गुरु
माघ (मौनी) अमावस 20 जन. मंग
भौमवती अमावस 20 जन. मंग
गौरी तृतीया (गोंतरी) 23 जन. शुक्र
श्रीगणेश तिल चतुर्थी 23 जन. शुक्र
वसन्त (श्री) पंचमी 24 जन. शनि
सरस्वती पूजन 24 जन. शनि
रथ-आरोग्य सप्तमी 26 जन. चंद्र
भारत गणतन्त्र दिवस 26 जन. चंद्र
भीष्माष्टमी 27 जन. मंग
भीष्म द्वादशी, तिल १२ 31 जन. शनि

»» फरवरी »»

माघ पूर्णिमा 3 फर. मंग
माघस्नान समाप्त 3 फर. मंग
श्रीगुरु रविदास जयन्ती 3 फर. मंग
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत 17 फर. मंग
होलाष्टक प्रारम्भ 26 फर. गुरु
अन्नपूर्णा-अष्टमी 26 फर. गुरु

»» मार्च »»

गोविन्द द्वादशी 2 मार्च चंद्र
होलिका दहन (प्रदोषकाले) 5 मार्च गुरु
होलाष्टक समाप्त 5 मार्च गुरु
पूर्णिमा, होली पर्व (पं.) 5 मार्च गुरु
वसन्तोत्सव 6 मार्च शुक्र
होला मेला (श्रीआनन्दपुर- व पांओटा साहिब } 6 मार्च शुक्र
शीतलाष्टमी व्रत 14 मार्च शनि
वारुणी पर्व 18 मार्च बुध
महाविषुव दिवस 20 मार्च शुक्र
वि. संवत् 2071 पूर्ण 20 मार्च शुक्र
वि. संवत् 2072 प्रा. 21 मार्च शनि
चैत्र (वासन्त) नवरात्रे प्रा. 21 मार्च शनि
गौरी तृतीया (गणगौर) 22 मार्च रवि
श्री (लक्ष्मी) पंचमी 24 मार्च मंग
स्कन्द षष्ठी 25 मार्च बुध
श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति 27 मार्च शुक्र
अशोकाष्टमी 27 मार्च शुक्र
श्रीरामनवमी 28 मार्च शनि
वासन्त नवरात्रे समाप्त 28 मार्च शनि

»» अप्रैल »»

विष्णुदमनोत्सव 1 अप्रै. बुध
अनङ्ग त्रयोदशी व्रत 1 अप्रै. बुध
श्रीमहावीर जयन्ती 2 अप्रै. गुरु
शिवदमनोत्सव 3 अप्रै. शुक्र
गुड फ्राइडे 3 अप्रै. शुक्र
ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण 4 अप्रै. शनि
वैशाखस्नान प्रारम्भ 4 अप्रै. शनि
वैशाख संक्रां. (वैशाखी) 14 अप्रै. मंग.
भगवान् परशुराम जयं. 20 अप्रै. चंद्र
अक्षय-तृतीया 21 अप्रै. मंग
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं. 23 अप्रै. गुरु
श्रीगङ्गा जयन्ती 25 अप्रै. शनि
बगुलामुखी जयन्ती 26 अप्रै. रवि
जानकी जयं. (सीता ९) 27 अप्रै. चंद्र

»» मई »»

मई (मजदूर) दिवस 1 मई शुक्र
श्रीकूर्म जयन्ती 3 मई रवि
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा 4 मई चंद्र
वैशाख स्नान समाप्त 4 मई चंद्र
भद्रकाली एकादशी 14 मई गुरु
शनैश्चर जयन्ती 17 मई रवि
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष) 17 मई रवि
ज्ये. सोमवती अमावस 18 मई चंद्र
श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं. 26 मई मंग
श्रीगङ्गा दशहरा (हरिद्वार) 28 मई गुरु
निर्जला एकादशी व्रत 29 मई शुक्र

»» जून »»

वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा) 2 जून मंग
सन्त कबीर जयन्ती 2 जून मंग
आषा. अधिक मास प्रा. 17 जून बुध
सायन दक्षिणायन प्रा. 21 जून रवि

»» जुलाई »»

आषा. अधिक मास समा. 16 जुला. गुरु
श्रीजगन्नाथ यात्रा (पुरी) 17 जुला. शुक्र
कुमार-षष्ठी 22 जुला. बुध
विवस्वत सप्तमी 23 जुला. गुरु
हरिशयनी एकादशी 27 जुला. चंद्र
चातुर्मास्य व्रतनियम प्रा. 27 जुला. चंद्र
श्रीविष्णु शयनोत्सव 27 जुला. चंद्र
शिवशयनोत्सव 30 जुला. गुरु
कोकिला व्रत 30 जुला. गुरु
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा 31 जुला. शुक्र

»» अगस्त »»

हरियाली अमावस 14 अग. शुक्र
भारत स्वतन्त्रता दिवस 15 अग. शनि
मे. चिन्तपूर्णी (हि.प्र.) प्रा. 15 अग. शनि
मधुस्रवा-हरियाली तीज 17 अग. चंद्र
कुम्भ-महापर्व (नासिक) स्नान प्रा. 17 अग. चंद्र
नाग-पंचमी 20 अग. गुरु
दूर्वाष्टमी व्रत 22 अग. शनि
श्रीदुर्गाष्टमी (मे. चिंतपूर्णी) 23 अग. रवि
श्रावण पूर्णिमा 29 अग. शनि
रक्षा-बन्धन (भद्रा बाद) 29 अग. शनि
श्रावणी उपाकर्म 29 अग. शनि

»» सितम्बर »»

बहुला चतुर्थी 1 सितं. मंग.
अङ्गारकी गणेश चतुर्थी 1 सितं. मंग.
चन्दन षष्ठी व्रत 3 सितं. गुरु
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत 5 सितं. शनि
गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव 6 सितं. रवि
श्रीगुग्गा नवमी 6 सितं. रवि
वत्स द्वादशी (पूजा) 9 सितं. बुध
कुशाग्रहणी अमावस 13 सितं. रवि
कुम्भ महापर्व (नासिक) -मुख्य शाही स्नान } 13 सितं. रवि
साम-उपाकर्म (हस्त नक्षत्र में) 15 सितं. मंग.
हरितालिका तृतीया 16 सितं. बुध
सिद्धि विनायक व्रत 17 सितं. गुरु
कलंक चतुर्थी, पत्थर चौथ 17 सितं. गुरु
ऋषि-पंचमी 18 सितं. शुक्र
सूर्य षष्ठी व्रत 19 सितं. शनि
सन्तान सप्तमी व्रत 20 सितं. रवि
श्रीराधाष्टमी 21 सितं. चंद्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा. 21 सितं. चंद्र
श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन) 22 सितं. मंग.
श्रीवामन जयन्ती 25 सितं. शुक्र
अनन्त चतुर्दशी व्रत 27 सितं. रवि
मे. बाबा सोढल (जालं.) 27 सितं. रवि
प्रोष्ठपदी, पूर्णिमा श्राद्ध 27 सितं. रवि
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रा. 28 सितं. चंद्र

»» अक्तूबर »»

महात्मा गांधी जयंती 2 अक्तू. शुक्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा. 5 अक्तू. चंद्र
महालय श्राद्ध समाप्त 12 अक्तू. चंद्र
सर्वपितृ श्राद्ध 12 अक्तू. चंद्र
सोमवती अमावस 12 अक्तू. चंद्र
मे. फाल्गु. (कुरुक्षेत्र) 12 अक्तू. चंद्र
शरद् नवरात्रे प्रा. 13 अक्तू. मंग.
उपाङ्ग ललिता व्रत 17 अक्तू. शनि
सरस्वती आवाहन 18 अक्तू. रवि
सरस्वती पूजन 19 अक्तू. चंद्र
सरस्वती बलिदान 20 अक्तू. मंग
श्रीदुर्गाष्टमी 21 अक्तू. बुध
सरस्वती विसर्जन (श्रवणे) 21 अक्तू. बुध
महानवमी, नवरात्रे समा. 22 अक्तू. गुरु
विजयादशमी (दशहरा) 22 अक्तू. गुरु
भरत मिलाप 23 अक्तू. शुक्र
शरद् पूर्णिमा व्रत 26 अक्तू. चंद्र
कोजागर व्रत 26 अक्तू. चंद्र
महर्षि वाल्मीकि जयं. 27 अक्तू. मंग
कार्तिक स्नान प्रा. 27 अक्तू. मंग
व्रत करवा-चौथ 30 अक्तू. शुक्र

»» नवम्बर »»

अहोई अष्टमी व्रत 3 नवं. मंग
गोवत्स द्वादशी 7 नवं. शनि
धन त्रयोदशी 9 नवं. चंद्र
श्रीहनुमान जयन्ती 9 नवं. चंद्र
नरक चतुर्दशी 10 नवं. मंग
श्रीमहालक्ष्मी पूजन 11 नवं. बुध
दीपावली 11 नवं. बुध
विश्वकर्मा दिवस (पं.) 12 नवं. गुरु
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा 12 नवं. गुरु
यमद्वितीया, भाई-दूज 13 नवं. शुक्र
विश्वकर्मा पूजन 13 नवं. शुक्र
सूर्य षष्ठी (बिहार) 17 नवं. मंग.
गोपाष्टमी 19 नवं. गुरु
अक्षय-नवमी 20 नवं. शुक्र
भीष्मपंचक प्रारम्भ 21 नवं. शनि
हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत 22 नवं. रवि
चातुर्मास्य व्रतादि समा. 22 नवं. रवि
तुलसी विवाह 23 नवं. चंद्र
वैकुण्ठ चतुर्दशी 24 नवं. मंग.
कार्तिक पूर्णिमा 25 नवं. बुध
श्रीगुरुनानक देव जयं. 25 नवं. बुध
भीष्मपंचक समाप्त 25 नवं. बुध
कार्तिक स्नान समाप्त 25 नवं. बुध

» दिसम्बर »

श्रीकालभैरवाष्टमी	3 दिसं. गुरु
स्कन्द (गुह) षष्ठी	17 दिसं. गुरु
मित्र (विष्णु) सप्तमी	18 दिसं. शुक्र
मोक्षदा एकादशी व्रत	21 दिसं. चंद्र
श्रीगीता जयन्ती	21 दिसं. चंद्र
सायन उत्तरायण प्रा.	22 दिसं. मंग.
पिशाचमोचन श्राद्ध	24 दिसं. गुरु
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	24 दिसं. गुरु
क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. शुक्र

» जनवरी-2016 ई० »

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शुक्र
लोहड़ी-पर्व	13 जन. बुध
मकर (माघ) संक्रां.	14 जन. गुरु
पुण्यस्नानादि माघ सं.	15 जन. शुक्र
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	16 जन. शनि
पुत्रदा एकादशी व्रत	20 जन. बुध
पौष पूर्णिमा	23 जन. शनि
माघस्नान प्रारम्भ	23 जन. शनि
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. मंग
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	27 जन. बुध

» फरवरी-2016 ई० »

माघ (मौनी) अमा.	8 फर. चंद्र
सोमवती अमावस	8 फर. चंद्र
महोदय योग (14/22 तक)	8 फर. चंद्र
गौरी तृतीया (गोंतरी)	11 फर. गुरु
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	11 फर. गुरु
वसन्त (श्री) पंचमी	12 फर. शुक्र
सरस्वती पूजन	12 फर. शुक्र
रथ-आरोग्य सप्तमी	14 फर. रवि
भीष्माष्टमी	15 फर. चंद्र
भीष्म द्वादशी, तिल १२	19 फर. शुक्र
माघ पूर्णिमा	22 फर. चंद्र
माघ स्नान समाप्त	22 फर. चंद्र
श्रीगुरु रविदास जयंती	22 फर. चंद्र

» मार्च -2016 ई० »

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च चंद्र
खण्डग्रास सूर्यग्रहण	9 मार्च बुध
होलाष्टक प्रारम्भ / अन्नपूर्णा अष्टमी	16 मार्च बुध
गोविन्द द्वादशी	19 मार्च शनि
महाविषुव दिवस	20 मार्च रवि
अर्द्धकुंभी स्नान प्रा. (हरिद्वार)	20 मार्च रवि
होलिका दहन (देखें पृ.86)	23 मार्च बुध
होलाष्टक समाप्त	23 मार्च बुध
पूर्णिमा, होली पर्व	23 मार्च बुध
वसन्तोत्सव	24 मार्च गुरु
होला मेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब)	24 मार्च गुरु

» अप्रैल-2016 ई० »

शीतलाष्टमी व्रत	1 अप्रै. शुक्र
वारुणी पर्व	5 अप्रै. मंग.
वि. संवत् 2072 पूर्ण	7 अप्रै. गुरु

एकादशी व्रत–2015-16 ई.

'धर्मसिंधु' अनुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी तिथि से युक्त एकादशी विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

सर्वसाधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है।

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	1 जन. गुरु
षट्तिला (माघ कृष्ण)	16 जन. शुक्र
जया (माघ शुक्ल)	30 जन. शुक्र
विजया (फल्गु. कृष्ण)	15 फर. रवि
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	1 मार्च रवि
पापमोचनी (चैत्र कृ.) वैष्ण.	17 मार्च मंग.
कामदा (चैत्र शुक्ल)	31 मार्च मंग.
वरूथिनी (वैशाख कृष्ण)	15 अप्रै. बुध
मोहिनी (वैशाख शुक्ल)	29 अप्रै. बुध
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	14 मई गुरु
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	29 मई शुक्र
योगिनी (आषाढ़ कृ.) वैष्ण.	13 जून शनि
पुरुषोत्तमा (अधि. आषा. शु.)	28 जून रवि
पुरुषोत्तमा (अधि. आषा. कृ.)	12 जुला. रवि
देवशयनी (शुद्ध आषा. शु.)	27 जुला. चंद्र
कामिका (श्रावण कृष्ण)	10 अग. चंद्र
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	26 अग. बुध
अजा (भाद्रपद कृष्ण)	8 सितं. मंग
पद्मा (भाद्र. शुक्ल)	24 सितं. गुरु
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	8 अक्तू. गुरु
पापांकुशा (आश्वि शु.)	24 अक्तू. शनि
रमा (कार्तिक कृष्ण)	7 नवं. शनि
देवप्रबोधिनी (कार्तिक शु.)	22 नवं. रवि
उत्पन्ना (मार्ग. कृष्ण)	7 दिसं. चंद्र
मोक्षदा (मार्ग. शुक्ल)	21 दिसं. चंद्र

(सन् 2016 ई.)

सफला (पौष कृ.) वैष्ण	6 जन. बुध
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	20 जन. बुध
षट्तिला (माघ कृष्ण)	4 फर. गुरु
जया (माघ शुक्ल)	18 फर. गुरु
विजया (फाल्गु. कृष्ण)	5 मार्च शनि
आमलकी (फाल्गु. शुक्ल)	19 मार्च शनि
पापमोचनी (चैत्र कृ.) वैष्ण.*	4 अप्रै. चंद्र

*वैष्ण.-वैष्णवों (गृहस्थियों) के लिए व्रत स्मार्तों का व्रत वैष्णवों के व्रत के दिन से एक दिन पहले होता है। जिस तिथि के आगे कुछ नहीं लिखा, उसका अभिप्राय: यह है कि यह तिथि स्मार्तों और वैष्णवों-दोनों के लिए ग्राह्य है।

श्रीसत्यनारायण व्रत
(सन् 2015-16)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदयकालिक पूर्णमाशी की तिथि से कभी-कभी एक तारीख का अन्तर पड़ सकता है। क्योंकि चन्द्रोदय कालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष	4 जन. रवि
माघ	3 फर. मंग
फाल्गुन	5 मार्च गुरु
चैत्र	3 अप्रै. शुक्र
वैशाख	3 मई रवि
ज्येष्ठ	2 जून मंग
प्र. अधिक आषाढ़	1 जुला. बुध
द्वि. शुद्ध आषाढ़	30 जुला. गुरु
श्रावण	29 अग. शनि
भाद्रपद	27 सितं. रवि
आश्विन (देखें पृ. 85)	27 अक्तू. मंग.
कार्तिक	25 नवं. बुध
मार्गशीर्ष	24 दिसं. गुरु

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल सन् 2015-16 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन. बुध	19-26	दोप. 13/02 से अगले दिन प्रात: 11/23 तक
फागुन संक्रान्ति	13 फर. शुक्र	8-26	सूर्योदय से दोप. 14/50 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शनि	29-18	अगले दिन दोप. 11/42 तक
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. मंग.	13-45	प्रात: 7/21 बाद सारा दिन
ज्येष्ठ संक्रान्ति	15 मई शुक्र	10-37	सूर्योदय से मध्याह्न बाद तक
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून चंद्र	17-12	प्रात: 10/48 बाद
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. गुरु	28-02	अगले दिन प्रात: 10/26 तक
भाद्र. संक्रान्ति	17 अग. चंद्र	12-25	प्रात: 6/01 बाद सारा दिन
आश्विन संक्रान्ति	17 सितं. गुरु	12-19	सूर्योदय बाद सारा दिन
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. शनि	24-15	दोप. 12/15 बाद से अगले दिन मध्याह्न तक
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं. चंद्र	24-02	दोप. 12/02 से अगले दिन मध्याह्न तक
पौष संक्रान्ति	16 दिसं. बुध	14-42	प्रात: 8/18 से सारा दिन
माघ संक्रान्ति (16)	14 जन. गुरु	25-25	अगले दिन मध्याह्न तक
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फर. शनि	14-24	प्रात: 8/00 से सारा दिन
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च चंद्र	11-17	सूर्योदय बाद सारा दिन

—(सन् 2016 ई.)—

पौष	23 जन. शनि
माघ	22 फर. चंद्र
फाल्गुन	22 मार्च मंग

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

माघ (भौमवती)	20 जन. मंग.
फाल्गुन (9/03 बाद)	18 फर. बुध
चैत्र	20 मार्च शुक्र
वैशाख (शनैश्चरी)	18 अप्रै. शनि
ज्येष्ठ (सोमवती)	18 मई चंद्र
प्र. शुद्ध आषाढ़ (भौमवती)	16 जून मंग.
द्वि. अधिक आषाढ़	16 जुला. गुरु
श्रावण	14 अग. शुक्र
भाद्रपद	13 सितं. रवि
आश्विन (सोमवती)	12 अक्तू. चंद्र
कार्तिक	11 नवं. बुध
मार्गशीर्ष	11 दिसं. शुक्र

—(सन् 2016 ई.)—

पौष (7/54 बाद) (शनैश्.)	9 जन. शनि
माघ (सोमवती)	8 फर. चंद्र
फाल्गुन (7/25 तक)	9 मार्च बुध
चैत्र	7 अप्रै. गुरु

–श्रीगणेश चतुर्थी व्रत–

माघ कृ. (संकटचौथ)	8 जन. गुरु
फाल्गुन	7 फर. शनि
चैत्र	9 मार्च चंद्र
वैशाख	8 अप्रै. बुध
ज्येष्ठ	7 मई गुरु
प्र. शुद्ध आषाढ़	5 जून शुक्र
द्वि. अधि. आषाढ़	5 जुला. रवि
श्रावण	3 अग. चंद्र
भाद्रपद (अङ्गारकी)	1 सितं. मंग.
आश्विन	1 अक्तू. गुरु
कार्तिक (करवाचौथ)	30 अक्तू. शुक्र
मार्गशीर्ष	29 नवं. रवि
पौष	28 दिसं. चंद्र

(सन् 2016 ई.)

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	27 जन. बुध
फाल्गुन	26 फर. शुक्र
चैत्र	27 मार्च रवि

पितृपक्ष में श्राद्ध-2015 ई.

(आश्विन कृष्ण पक्ष-श्राद्ध तिथियाँ)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2015 ई. में श्राद्ध की तिथियों का विवरण--

प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	27 सितं. रवि
प्रतिपदा का श्राद्ध	28 सितं. चंद्र
द्वितीया का श्राद्ध	29 सितं. मंग.
तृतीया का श्राद्ध	30 सितं. बुध
चतुर्थी का श्राद्ध	1 अक्तू. गुरु
पंचमी का श्राद्ध	2 अक्तू. शुक्र
षष्ठी का श्राद्ध	3 अक्तू. शनि
सप्तमी का श्राद्ध	4 अक्तू. रवि
अष्टमी का श्राद्ध	5 अक्तू. चंद्र
नवमी का श्राद्ध	6 अक्तू. मंग.
दशमी का श्राद्ध	7 अक्तू. बुध
एकादशी का श्राद्ध	8 अक्तू. गुरु
द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	9 अक्तू. शुक्र
त्रयोदशी का श्राद्ध	10 अक्तू. शनि
✤चतुर्दशी का श्राद्ध	11 अक्तू. रवि
अमावस श्राद्ध	12 अक्तू. चंद्र
सर्वपितृ श्राद्ध	12 अक्तू. चंद्र

✤ = चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का विधान है।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	26 जन. चंद्र
श्रीहोलिका दहन (प्रदोषे)	5 मार्च गुरु
श्रीभगवतनारायण जयं.	9 मार्च चंद्र
रामनवमी पर्व	28 मार्च शनि
वैशाखी पर्व	14-16 अप्रै.
जानकी जयन्ती	27 अप्रै. चंद्र
गंगा दशहरा	28 मई गुरु
गुरु पूर्णिमा	31 जुला. शुक्र
तुलसी जयन्ती पर्व	22 अग. शनि
कृष्ण जयन्ती पर्व	5-7 सितं.
महंत गु. गोबिन्ददास जयं.	27 अक्तू. मंग.

प्रदोष व्रत-2015-16 ई.

पौष शुक्ल	2 जन. शुक्र
माघ कृष्ण	18 जन. रवि
माघ शुक्ल	1 फर. रवि
फाल्गुन कृष्ण (सोम)	16 फर. चंद्र
फाल्गुन शुक्ल (सोम)	2 मार्च चंद्र
चैत्र कृष्ण	18 मार्च बुध
चैत्र शुक्ल	1 अप्रै. बुध
वैशाख कृष्ण	16 अप्रै. गुरु
वैशाख शुक्ल	1 मई शुक्र
ज्येष्ठ कृष्ण	15 मई शुक्र
ज्येष्ठ शुक्ल	31 मई रवि
प्र. शुद्ध आषाढ़ कृ.	14 जून रवि
प्र. अधि. आषाढ़ शुक्ल	29 जून चंद्र
द्वि. अधि. आषाढ़ कृष्ण	13 जुला. चंद्र
द्वि. शुद्ध आषाढ़ शुक्ल	29 जुला. बुध
श्रावण कृष्ण (भौम)	11 अग. मंग.
श्रावण शुक्ल	27 अग. गुरु
भाद्रपद कृष्ण	10 सितं. गुरु
भाद्रपद शुक्ल	25 सितं. शुक्र
आश्विन कृष्ण	10 अक्तू. शनि
आश्विन शुक्ल	25 अक्तू. रवि
कार्तिक कृष्ण (सोम)	9 नवं., चंद्र
कार्तिक शुक्ल (सोम)	23 नवं. चंद्र
मार्गशीर्ष कृष्ण	8 दिसं. मंग.
मार्गशीर्ष शुक्ल	23 दिसं. गुरु

(सन् 2016 ई.)

पौष कृष्ण	7 जन. गुरु
पौष शुक्ल	21 जन. गुरु
माघ कृष्ण	6 फर. शनि
माघ शुक्ल	20 फर. शनि
फाल्गुन कृष्ण	6 मार्च रवि
फाल्गुन शुक्ल	20 मार्च रवि
चैत्र कृष्ण	5 अप्रै. मंग.

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. चंद्र
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	12 जन. चंद्र
सिद्ध बा. लालदयाल जी	22 जन. गुरु
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शुक्र
लाला लाजपतराय जी	28 जन. बुध
श्रीगुरु रविदास जी	3 फर. मंग
श्रीगुरु रामदास जी	13 फर. शुक्र
महर्षि दयानन्द सरस्वती	14 फर. शनि
श्रीरामकृष्ण परमहंस	20 फर. शुक्र
श्रीचैतन्य महाप्रभु	5 मार्च गुरु
सन्त तुकाराम जी	7 मार्च शनि
शहीदी स: भगत सिंह	23 मार्च चंद्र
श्रीमहावीर जयन्ती	2 अप्रै. गुरु
डॉ॰ बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. मंग
श्रीवल्लभाचार्य	15 अप्रै. बुध
श्रीछत्रपति शिवाजी	20 अप्रै. चंद्र
भगवान् परशुराम	20 अप्रै. चंद्र
आद्यगुरु शंकराचार्य	23 अप्रै. गुरु
स्वामी रामानुजाचार्य	24 अप्रै. शुक्र
महात्मा बुद्ध	4 मई चंद्र
श्रीनारद जयन्ती	6 मई बुध
श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई गुरु
श्रीमहाराणा प्रताप (राज.)	20 मई बुध
सन्त कबीर जयंती	2 जून मंग
श्रीध्यानू भगत	24 जून बुध
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. गुरु
ऋषि वेदव्यास	31 जुला. शुक्र
शहीदी दि. स: ऊधम सिंह	31 जुला. शुक्र
लोकमान्य तिलक-स्मरण	1 अग. शनि
गोस्वा. तुलसीदास जी	22 अग. शनि
सन्त ज्ञानेश्वर	5 सितं. शनि
भक्त नवल (जोधपुर)	5 सितं. शनि
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. मंग.
श्रीचन्द्र महाराज (उदासीन)	22 सितं. मंग.
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. शुक्र
महाराजा अग्रसेन	13 अक्तू. मंग.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. गुरु
श्रीमाधवाचार्य	23 अक्तू. शुक्र
श्रीधनवन्तरी	9 नवं. चंद्र
श्रीहनुमान जयंती	9 नवं. चंद्र
श्रीविश्वकर्मा जयं.	13 नवं. शुक्र
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. शुक्र
श्रीजवाहर लाल नेहरू	14 नवं. शनि
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. मंग.
भक्त नामदेव जयं.	21 नवं. शनि
श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं. चंद्र
श्रीवीर वैरागी	24 नवं. मंग.
श्रीगुरु नानकदेव जी	25 नवं. बुध
डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. गुरु
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	24 दिसं. गुरु
शहीद स: ऊधमसिंह जयं.	26 दिसं. शनि

(सन् 2016 ई.)

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. मं.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शनि
लाला लाजपतराय जी	28 जन. गुरु
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	31 जन. रवि
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	10 फर. बुध
श्रीगुरु रविदास जी	22 फर. चंद्र
गुरु रामदास जी	3 मार्च गुरु
महर्षि दयानन्द सरस्वती	4 मार्च शुक्र
श्रीरामकृष्ण परमहंस	10 मार्च गुरु
श्रीचैतन्य महाप्रभु	23 मार्च बुध
शहीदी स: भगतसिंह	23 मार्च बुध
सन्त तुकाराम जी	25 मार्च शुक्र

पूर्णिमा व्रत (2015-16 ई.)

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

पौष	5 जन. चंद्र
माघ	3 फर. मंग.
फाल्गुन	5 मार्च गुरु
चैत्र	4 अप्रै. शनि
वैशाख	4 मई चंद्र
ज्येष्ठ	2 जून मंग
अधि. आषाढ़	2 जुला. गुरु
शुद्ध आषाढ़	31 जुला. शुक्र
श्रावण	29 अग. शनि
भाद्रपद	28 सितं. चंद्र
आश्विन	27 अक्तू. मंग.
कार्तिक	25 नवं. बुध
मार्गशीर्ष	25 दिसं. शुक्र
पौष (2016 ई.)	23 जन. शनि
माघ	22 फर. चंद्र
फाल्गुन	23 मार्च बुध

दशमहाविद्या जयन्ती

श्रीमहातारा जयन्ती	28 मार्च शनि
श्रीमातङ्गी जयन्ती	21 अप्रै. मंग.
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	26 अप्रै. रवि
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	4 मई चंद्र
श्रीधूमावती जयन्ती	26 मई मंग
श्रीमहाकाली जयन्ती	5 सितं. शनि
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	25 सितं. शुक्र
श्रीकमला जयन्ती	30 अक्तू. शुक्र
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	25 दिसं. शुक्र
श्रीललिता जयन्ती (16)	22 फर. चंद्र

दशावतार जयन्तियां-2015 ई.

श्रीमत्स्यावतार जयन्ती	22 मार्च रवि
श्रीरामावतार जयन्ती	28 मार्च शनि
श्रीपरशुराम जयन्ती	20 अप्रै. चंद्र
श्रीनृसिंहावतार जयन्ती	2 मई शनि
श्रीकूर्मावतार जयंती	3 मई रवि
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	4 मई चंद्र
श्रीकल्कि अवतार	20 अग. गुरु
श्रीकृष्णावतार जयं.	5 सितं. शनि
श्रीवाराहावतार जयं.	16 सितं. बुध
श्रीवामनावतार जयं.	25 सितं.शुक्र

मास-शिवरात्रि व्रत-2015-16

माघ	19 जन. सोम
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	17 फर. मंग
चैत्र	18 मार्च बुध
वैशाख	17 अप्रै. शुक्र
ज्येष्ठ	16 मई शनि
शुद्ध आषाढ़	14 जून रवि
अधि. आषाढ़	14 जुला. मंग.
श्रावण	12 अग. बुध
भाद्रपद	11 सितं. शुक्र
आश्विन	11 अक्तू. रवि
कार्तिक	9 नवं. चंद्र
मार्गशीर्ष	9 दिसं. बुध

—(सन् 2016 ई.)—

पौष	8 जन. शुक्र
माघ	6 फर. शनि
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	7 मार्च चंद्र
चैत्र	6 अप्रै. बुध

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उ.खण्ड और उ.प्र. के मुख्य मेले—सन् 2015 ई.

मेला	तिथि
मरोज पर्व (जौनसार) उत्तरां.	12 जन.
मेला लोहड़ी (पं.)	13 जन.
मे. दांऊ (चण्डीगढ़-मोहाली)	13 जन.
बिन्दरख (रोपड़) (पं.)	13-14 जन.
मे. माघी (मुक्तसर) पं.	14 जन.
मे. मौनी अमावस (हरिद्वार आदि) उत्तरां.	20 जन.
मेला वसन्त पंचमी	24 जन.
मे. मस्तुआणा (पं.) (बरसी सन्त अतर सिंह जी)	1 फर.
मे. जैसलमेर (राज.)	1-3 फर.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	2-3 फर.
माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	3 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	17 फर.
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	17 फर.
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	26 फर-5 मार्च
मे. सावातिल्ला	3 मार्च
होला मेला (श्रीआनन्दपुर सा.) पं.	6 मार्च
मेला होली, ठाकुरद्वारा-जमशेर	6 मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	10 मार्च
श्रीगुरुरामराय (देहरादून) उत्तरां.	11 मार्च
नवचण्डी (मेरठ) यू.पी.	11 मार्च
मे. शीतलामाता (कुराली) पं.	13-14 मार्च
पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	19 मार्च
मेला चीमा (नानकसर) पं.	21 मार्च
मेला नवरात्रे-मनसादेवी (हरिद्वार व पंचकूला) हरि.	21-28 मार्च
गौरी तृतीया (जयपुर) राज.	22 मार्च
त्रिपुरमालिनी (जालंधर) पं.	24 मार्च
माईसरखाना (बठिण्डा) पं.	25 मार्च
भण्डा. स्वा. संतदास, जालंधर	30 मार्च
मे. कौंसा देवी (चण्डीगढ़)	3-4 अप्रै.
वैशाखी मेला-श्री लक्ष्मण चौंतरा-हाँसी (हरि.)	4-14 अप्रै.
मे. वैशाखी (पं.)	14 अप्रै.
मे. ढुंगरा डांडा, नागी-बागीधार (उत्तराखण्ड)	17 अप्रै.
मे. पिंजौर (कालका) हरि.	18 अप्रै.
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	25 अप्रै.
वीर केसरी चन्द मेला चोलीथात (चकराता) उ.खण्ड	3 मई
मे. भद्रकाली-कपूरथला (पं.)	14 मई
जोड़ मेला-संत खुशीराम जी गाँव-भरोमजारा, नवांशहर पं.	23-24 मई
साईं टेऊँराम पुण्यतिथि भूपतवाला रोड, हरिद्वार	23 मई
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	28 मई
मेला जखोली (उत्तराखण्ड)	3 जून
मे. श्रावण कांवड़ (नीलकंठ) उत्तरां	16 जुला.
रथयात्रा उत्सव, पुरी, उड़ीसा	17 जुला.
साईं टेऊँराम जयंती, सप्तसरोवर भूपतवाला रोड, हरिद्वार	22 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	31 जुला.
मे. काहनूवाल (गुरदासपुर)	31 जुला.
मे. नुणाई (जौनसार-बावर) उत्तरां	4 अग.
मेला नाग-पंचमी (राज.)	4 अग.
पं. जोगराज (जंडियाला)	13-14 अग.
मेला भद्रराज (जौनसार) उत्तरां.	17 अग.
मेला सिंघारा तीज (पं.)	17 अग.
गौरी-तीज (जयपुर) राज.	17 अग.
मे. जयन्ती-देवी (मुल्लापुर-गरीबदास), चण्डीगढ़	28-29 अग.
मे. बग्गी-देहरी, गाँव-कण्डे लालोवाल, गुरदासपुर	29 अग.
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व (मथुरा)	5 सितं.
मे. गुग्गा नवमी (अम्बाला)	6 सितं.
गुग्गा जाहिरपीर, नकोदर (पं.)	6 सितं.
गोगामेड़ी, श्रीगंगानगर, राज.	6 सितं.
मे. बाबा सुथरेशाह (दिल्ली)	13 सितं.
रानी सती मेला (झुंझुनूं) राज.	13 सितं.
गोसाईंआणा (कुराली) पं.	15 सितं.
रामदेव रोणेचा (जोधपुर) राज.	23 सितं.
वामन द्वादशी (अम्बाला)	24 सितं.
मे. छपार, मलेरकोटला, पं.	26-28 सितं.
मे. बाबा सोढल (जालन्धर)	27 सितं.
मे. गोइन्दवाल सा. (तरनता)(पं.)	28 सितं.
मे. गुग्गापीर (लुधियाना)	28 सितं.
मे. आशापूर्णी (पठानकोट)	13-22 अक्तू.
अचलेश्वर (बटाला)(पं.)	20-21 नवं.
मे. जन्म बीरबैरागी (नकोदर)	24 नवं.
मे. बग्गी देहरी, गाँ-कण्डे-लालोवाल (गुरदासपुर)	25 नवं.
मे. रामतीर्थ (अमृतसर) पं.	25 नवं.
कपालमोचन (हरियाणा)	25 नवं.
मे. श्रीगढ़गंगा, पुष्कर तीर्थ	25 नवं.
भण्डा सन्त प्रीतमदास, जालं.	30 नवं.
महायज्ञ श्रीओमदरबार, नन्दाचौर धाम, जि. होशियारपुर (पं.)	2-4 दिसं.
पुरानी दीपावली-जौनसार, जौनपुर (उत्तरां.)	10 दिसं.
मे. चमकौर साहिब	21-23 दिसं.
मे. जोड़-फतेहगढ़ सा. प्रा.	26 दिसं.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम भूपतवाला (हरिद्वार)-2015

पर्व	तिथि
स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती	24 जन.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	8 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	6 अप्रै.
श्री स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	19 अप्रै.
महामंड. गुरु प्रेमानन्दजी जयन्ती	31 जुला
निर्वाण महा. गुरु प्रेमानन्द जी	18 अग.

जम्मू-कश्मीर के मेले

मेला	तिथि
लोहड़ी पर्व	13 जन.
मे. शिवरात्रि (पंजवटी-दवलैहड़) (जम्मू)	17 फर.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	18-19 मार्च
गुप्तगंगा, कफी-अरवनूर	19 मार्च
नवरात्रे पर्व	21-28 मार्च
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	27 मार्च
मे. रामबन	28 मार्च
गुरुगद्दी 1008 सत्गुरु बाबा कांशीगिरजी (सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	2 मई
मे. मानसर	24-25 मई
मे. क्षीर (खीर) भवानी	26 मई
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	2 जून
माँ सरथल देवी यात्रा (किश्तवाड़) प्रा.	24 जुला
मे. शरीक भवानी	25 जुला.
मे. हरिप्रयाग (बनी)	27 जुला.
मे. ज्वालामुखी	30 जुला.
मे. रुद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	31 जुला.
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	29 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य	29 अग.
मे. रामबन	5 सितं.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	10-11 सितं.
मेला पात (भद्रवाह)	18-20 सितं.
मे. आशापति (मार्तण्ड)	11-12 अक्तू.
मे. झिड़ी बाबा	11 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	10 दिसं.

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) के मुख्य पर्व—2015 ई.

पर्व	तिथि
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	22 जन. गु.
वसन्त-पंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	24 जन. श.
होलिका दहन (प्रदोषकाले)	5 मार्च गु.
श्रीरामनवमी पर्व	28 मार्च श.
वैशाखी पर्व	14 अप्रै. मं.
महंत नारायणदास जयं.	30 मई श.
व्यास पूजा	31 जुला. शु.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी	5 सितं. श.
विजयादशमी (दशहरा)	22 अक्तू. गु.
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. र.
दीपावली पर्व	11 नवं. बु.

(सन् 2016 ई.)

पर्व	तिथि
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	10 फर. बु.
वसन्त पंचमी	12 फर. शु.

तपोभूमि श्रीबाबा निकोदरदास धर्मशाल महन्ता, अम्ब, ऊना (हि.प्र.)

पर्व	तिथि
मकर संक्रान्ति	14 जन. बुध
श्रीमहाशिवरात्रि	17 फर. मंग.
चैत्र नवरात्रे प्रारम्भ	21 मार्च शनि
वैशाख संक्रान्ति मेला	14 अप्रै. मंग.
गुरु पूर्णिमा	31 जुला. शुक्र
अनन्त चतुर्दशी	27 सितं. रवि
श्राद्ध षष्ठी	3 अक्तू. शनि
गोपाष्टमी	19 नवं. गुरु
पंचभीष्म	21-25 नवं.

''आगामी वर्ष के दो महान् पुण्यपर्व''

आगामी वर्ष वि. संवत् 2073 में निम्नलिखित कुम्भ महापर्व घटित हो रहे हैं—

(1) अर्धकुम्भी पर्व, हरिद्वार (13 अप्रैल, बुधवार, 2016 ई.)

(2) कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व उज्जैन (21 मई, शनिवार, 2016 ई.)

एतदर्थ श्रद्धालु, ईश्वरविश्वासी, आस्तिक महानुभावों एवं कल्याणकामी सत्पुरुषों को कटिबद्ध रहना चाहिए। इनकी सभी स्नानतिथियों, माहात्म्य का विस्तृत विवरण तथा अन्य आवश्यक जानकारी वि. संवत् २०७३ के 'पंचांगदिवाकर' में दी जाएगी।

विशेष नोट—यदि आप अपने स्थानीय ग्राम/नगर/जिले का कोई मेला/पर्व सम्मिलित करवाना चाहते हैं, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेज़ी तारीख, जिसके मुताबिक उसे मनाया जाता है—अच्छी तरह विवरण सहित लिखकर भेजें—**सम्पादक।**

हिमाचल प्रदेश के मेले–सन् 2015 ई.

मेला	तिथि
श्रीदेवता खुड्डी-जल,, देहूरी, आनी, कुल्लू	14 जन.
श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	24 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	17-25 फर.
मे. काठगढ़	17 फर.
मे. रिवालसर (मण्डी)	17 फर.
स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	17 फर.
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	18 फर.
बड़भाग सिंह (ऊना)	26 फर.-5 मा.
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	5-10 मार्च
होला मेला (पांओटा सा.)	6 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ प्रा.	14 मार्च
मेला कनिहारा (धर्मशाला) प्रा.	14 मार्च
मे. नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
बालासुन्दरी (सिरमौर)	21 मा.-4 अप्रै.
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	21-28 मार्च
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	22-29 मार्च
मे. ललवाड़ (सुन्दरनगर)	22-27 मार्च
मे. लाहौल (मण्डी)	26 मार्च
मे. रोहरू (महासू)	31 मा.-2 अप्रै.
मेला नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
चचौहली (जगतसुख) कुल्लू	9-11 अप्रै.
मेला मारकण्डा (बिलासपुर)	12-16 अप्रै.
मे. नैनादेवी-धर्मपुर-बनवार	14 अप्रै.
कालेश्वर महादेव, देहरा, कांगड़ा	14 अप्रै.
मेला रिवालसर (मण्डी)	14 अप्रै.
मेला बिशू प्रारम्भ	14 अप्रै.
मेला राजगढ़ (सिरमौर)	14-16 अप्रै.
मे. कशाधा हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मेला ग्राम्बली (कुल्लू)	17-18 अप्रै.
मे. खनाणी (शिम., कुल्लू)	20-21 अप्रै.
मेला माहूनाग (करसोग)	22-23 अप्रै.
मे. पीपल-जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मे. मनीकरण (कुल्लू)	22 अ.-4 मई
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मेला नारकण्डा (बिलासपुर)	10-11 मई
मे. श्यामाकाली (सरकाघाट)	11 मई
मे. बन्जार (कुल्लू)	14-18 मई
मे. ढुंगरी जातर	15-16 मई
मेला घाघरस (बिलासपुर)	15 मई
पशु मेला (हमीरपुर) प्रा.	18 मई
मे. शाढ़ी जातर	18-23 मई
मे. हरिदेवी (घुमारवीं)	22 मई
शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	23-25 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	25-26 मई
मुरारीदेवी (सरकाघाट)	26-28 मई
मे. पीपलू (हमीरपुर)	29 मई
ग्राम-पंजगाई (बिलासपुर)	30-31 मई
भुन्तर मेला (कुल्लू)	**15-17 जून**
मे. बाड़ी (सोलन)	15 जून
मे. अहल (हमीरपुर)	15 जून
नौवाही देवी (सरकाघाट)	15 जून
टाणी देवी (हमीरपुर)	24 जून
मे. त्रिमौणी (सिरमौर)	12 जुला.
माँ शूलिनी (सोलन) प्रारंभ	12 जुला.
मे. नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली)	19 जुला.
मे. मिंजर (चम्बा) प्रा.	**26 जुला.**
मे. छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	**15-23 अग.**
सन्तोषी माता (लदरौर)	17 अग.
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	23 अग.
श्रीदेवता खुड्डी-जल, गाँव-देहूरी तह–आनी, जिला कुल्लू	29 अग.-7 सितं.
मे. गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	6 सितं.
मे. बंद्राल (कुल्लू)	6 सितं.
अम्बिकादेवी, सदर (मण्डी)	11 सितं.
महासू (शिलाई) सिरमौर	17-18 सितं.
मेला सायर (अर्की)	17 सितं.
गणपति उत्सव (मण्डी)	17-27 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	17 सितं.
हिमाचल गणेशोत्सव अम्बिकानगर-अम्बा. (ऊना)	17-27 सितं.
नलवाड़ (चिच्चोट)	17 सितं.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा.	19 सितं.
गुग्गा माड़ी, सुबाथू, सोलन	21-23 सितं.
मे. चामुण्डा (काँगड़ा)	13-22 अक्तू.
मेला रामलीला	13-22 अक्तू.
बगुलामुखी (वनखण्डी)	13-22 अक्तू.
तारादेवी (शिमला)	21-23 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	21-22 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन) कांग.	21 अक्तू.
मे. दशहरा (अर्की)	22 अक्तू.
मे. दशहरा (कुल्लू)	**22-27 अक्तू.**
मे. काली-बाड़ी (शिमला)	10-11 नवं.
मे. लावी (रामपुर-चिच्चोट)	11-14 नवं.
मे. रेणुका (नाहन) सिरमौर	22-23 नवं.
मेला हरिप्रयाग (शिमला)	22 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	22-25 नवं.
बुढ़ी दीपावली (शिलाई-सिरमौर)	11-14 दिसं.

श्रीविनायक चतुर्थी व्रत
(2015 ई.)

मास	तिथि
माघ (तिल चतुर्थी)	23 जन. शुक्र
फाल्गुन	22 फर. रवि
चैत्र	23 मार्च चंद्र
वैशाख	22 अप्रै. बुध
ज्येष्ठ	21 मई गुरु
अधि. आषाढ़	20 जून शनि
शुद्ध आषाढ़	19 जुला. रवि
श्रावण	18 अग. मंग.
भाद्रपद (सिद्धि विनायक)	17 सितं. गुरु
आश्विन	17 अक्तू. शनि
कार्तिक	15 नवं. रवि
मार्गशीर्ष	15 दिसं. मंग.
—(सन् 2016 ई.)—	
पौष	13 जन. बुध
माघ	11 फर. गुरु
फाल्गुन	12 मार्च शनि

विशेष नोट–यदि आप अपने स्थानीय ग्राम/नगर/जिले का कोई मेला/पर्व [illegible] मनाया जाता है, अच्छी तरह विवरण सहित लिखकर भेजें।–सम्पादक।

जैन व्रत-पर्व व उत्सव (2015-16 ई.)

पर्व	तिथि
मेरू त्रयोदशी	18 जन. रवि
मर्यादा महोत्सव	26 जन. चंद्र
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	3-5 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	13 मार्च शुक्र
वरसी तप प्रारम्भ	14 मार्च शनि
ओली तप प्रारम्भ	26 मार्च गुरु
श्रीमहावीर जयन्ती	2 अप्रै. गुरु
ओली तप समाप्त	4 अप्रै. शनि
वरसी तप समाप्त	21 अप्रै. मंग.
केवलज्ञान दिवस	28 अप्रै. मंग.
मे. चक्रेश्वरीदेवी (सरहिंद)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम प्रा.	31 जुला. शुक्र
तेरापन्थ स्थापना दिवस	31 जुला. शुक्र
जैन महोत्सव	12-14 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	12 सितं. शनि
सम्वत्सरी महापर्व	18 सितं. शुक्र
श्रीकालू निर्वाण दिवस	19 सितं. शनि
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	22 सितं. मंग.
श्रीमहावीर निर्वाण	11 नवं. बुध
श्रीवीर संवत् 2541 प्रा.	12 नवं. गुरु
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	13 नवं. शुक्र
ज्ञान पंचमी	16 नवं. चंद्र
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	25 नवं. बुध
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	5 दिसं. शनि
मौनी एकादशी	21 दिसं. चंद्र
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	30 दिसं. बुध
—(सन् 2016 ई.)—	
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	4 जन. चंद्र
मेरू त्रयोदशी	6 फर. शनि
मर्यादा महोत्सव	14 फर. रवि
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	21-23 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	31 मार्च गुरु
वरसी तप प्रारम्भ	1 अप्रै. शुक्र

❖मुस्लिम त्यौहार❖

त्यौहार	तिथि
ईद-ए-मिलाद	4 जन. रवि
ईद-ए-मौलाद	9 जन. शुक्र
ग्यारहवीं शरीफ	1 फर. रवि
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	21-26 अप्रै.
जन्म श्रीहजरत अली	3 मई रवि
शबे-मिराज	17 मई रवि
शबे-बारात	3 जून बुध
रमज़ान (रोज़े शुरु)	19 जून शुक्र
शहादत-ए-हजरत अली	9 जुला. गुरु
शबे-कदर	15 जुला. बुध
जमातुलविदा	17 जुला. शुक्र
ईद-उल-फितर	19 जुला. रवि
ईदुलजुहा (बकरीद)	25 सितं. शुक्र
मुहर्रम (हिजरी 1437 प्रा.)	15 अक्तू. गुरु
मुहर्रम (ताजिया)	24 अक्तू. शनि
चेहलुम	2 दिसं. बुध
आखिरी-चहार	9 दिसं. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	11 दिसं. शुक्र
ईद-ए-मिलाद	24 दिसं. गुरु
ईद-ए-मौलाद	29 दिसं. मंग.
(सन् 2016 ई.)	
ग्यारहवीं शरीफ	22 जन. शुक्र

क्रिश्चियन त्यौहार

त्यौहार	तिथि
नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. गुरु
गुड फ्राइडे	3 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	5 अप्रै. रवि
लो (Low) सण्डे	12 अप्रै. रवि
रोगेशन सण्डे	10 मई रवि
विटसण्डे-Pentecost	24 मई रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शुक्र
—(सन् 2016 ई.)—	
नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शुक्र
गुड फ्राइडे	25 मार्च शुक्र
ईस्टर सण्डे	27 मार्च रवि
लो (Low) सण्डे	3 अप्रै. रवि

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2015-16 ई.)

(इन छुट्टियों को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लें)

छुट्टी	तिथि
ईद-ए-मिलाद	4 जन. र.
मकर संक्रान्ति	14 जन. बु.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. चं.
श्रीगुरु रविदास जयंती	3 फर. मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	17 फर. बु.
होला मेला (पं.)	6 मार्च शु.
श्रीरामनवमी	28 मार्च श.
श्रीमहावीर जयन्ती	2 अप्रै. गु.
गुड फ्राइडे	3 अप्रै. शु.
वैशाखी (पं.)	14 अप्रै. मं.
जन्म श्रीहजरत अली (का.)	3 मई र.
श्रीबुद्ध जयन्ती	4 मई चं.
रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	17 जुला. शु.
जमातुलविदा	17 जुला. शु.
ईदुलफितर	19 जुला. र.
शहीदी स: ऊधम सिंह (पं.)	31 जुला. शु.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. श.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी	5 सितं. श.
सिद्धि विनायक व्रत (महारा.)	17 सितं. गु.
ईदुलजुहा (बकरीद)	25 सितं. शु.
महात्मा गाँधी जयंती	2 अक्तू. शु.
दशैहरा	22 अक्तू. गु.
मुहर्रम (ताजिया)	24 अक्तू. श.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	27 अक्तू. मं.
दीपावली	11 नवं. बु.
श्रीगुरु नानक जयंती	25 नवं. बु.
ईद-ए-मिलाद	24 दिसं. गु.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शु.
(सन् 2016 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	16 जन. श.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. मं.
श्रीगुरु रविदास जयं.	22 फर. चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च चं.
होली पर्व	23 मार्च बु.
होला मेला (पं.)	24 मार्च गु.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि—(2015-16 ई.)

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कलैण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	25 नवंबर	जन्म से	7 अक्तू.	25 नवंबर	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	19 अप्रैल	2 अक्तू.	23 मार्च	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	3 मई	21 मार्च	28 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	29 अक्तूबर	26 सितंबर	16 सितंबर	9 अक्तूबर	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जुनदेव जी	11 अप्रैल	15 सितंबर	22 मई*	2 मई	16 सितंबर	22 मई*
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	3 जून	11 मई	24 मार्च	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	1 फर., 15 ई. / 20 फर., 16 ई.	18 मार्च, 15 ई. / 5 अप्रै., 16 ई.	4 नवंबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	8 अगस्त	4 नवंबर	3 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	9 अप्रैल	2 अप्रैल	16 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	16 जन. 16 ई.	14 दिसंबर	16 नवंबर	16 जन. 16 ई.	24 नवंबर	16 नवंबर

पर्व	प्राचीन परम्परा अनुसार		नानकशाही कलैण्डर अनुसार	
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार	14 सितंबर	16 भादों (ना.शा.)	1 सितं., 2015 ई.
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली (नन्देड़)	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार	13 नवंबर	पुरातन परम्परा अनुसार ही	13 नवंबर, 2015 ई.
खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे अनुसार	14 अप्रैल	1 वैशाख (ना. शा.)	14 अप्रैल, 2015 ई.

*–कुछ क्षेत्रों में श्रीगुरु अर्जुनदेव जी का शहीदी दिवस 21 मई को भी मनाया जाएगा। (जहाँ सूर्योदय 5/40 के बाद होगा।)

वि. संवत् २०७२ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–शनि | वर्ष का मन्त्री-मंगल

- वि. संवत् (कीलक) २०७२ का शुभारम्भ = 21 मार्च, शनिवार
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,116 वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = 1,95,58,85,116 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,884 वर्ष
- २०७२ में कलि वर्ष = 5116वां वर्ष (20 अगस्त, गुरुवार, 2015 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5251 प्रा. (5 सितं., शनिवार, 2015 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5091 प्रारम्भ = 21 मार्च, शनिवार, 2015 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2639 प्रा. = 4 मई, सोमवार, 2015 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2541 प्रा. = 11 नवंबर, बुधवार, 2015 ई.
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2016 प्रारम्भ = 1 जनवरी, शुक्रवार
- (i) शाका संवत् 1937 प्रारम्भ = 22 मार्च, रविवार, 2015 ई.
  (ii) शाका संवत् 1938 प्रारम्भ = 21 मार्च, सोमवार, 2016 ई.
- हिजरी सन् 1437 (मुस्लिम) प्रा. = 15 अक्तूबर, गुरुवार, 2015 ई.
- बंगाली सन् 1422 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, मंगलवार, 2015 ई.
- (क) नानकशाही संवत् 547 प्रारम्भ = 14 मार्च, शनिवार, 2015 ई.
  (ख) नानकशाही संवत् 548 प्रारम्भ = 14 मार्च, सोमवार, 2016 ई.
- खालसा संवत् 317 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, मंगलवार, 2015 ई.
- जय हिन्द संवत् 69वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, शनिवार, 2015 ई.
- पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 140वाँ = 21 मार्च, शनिवार, 2015 ई.

सन् 2015-16 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा आदि—एक दृष्टि में

(मास) 2015-16 ↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य-नारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदान)
जनवरी	14 (माघ)	1,16,30	2, 18	4	5	8	20
फरवरी	13 (फाल्गु.)	15	1, 16	3	3	7	18
मार्च	14 (चैत्र)	1,17 (वै.),31	2, 18	5	5	9	20
अप्रैल	14 (वैशा.)	15, 29	1, 16	3	4	8	18
मई	15 (ज्ये.)	14, 29	1, 15, 31	3	4	7	18
जून	15 (आषा.)	13(वै.),28	14, 29	2	2	5	16
जुलाई	16 (श्राव.)	12, 27	13, 29	1, 30	2, 31	5	16
अगस्त	17 (भाद्र.)	10, 26	11, 27	29	29	3	14
सितम्बर	17 (आश्वि.)	8, 24	10, 25	27	28	1	13
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	8, 24	10, 25	27	27	1, 30	12
नवम्बर	16 (मार्ग.)	7, 22	9, 23	25	25	29	11
दिसम्बर	16 (पौष)	7, 21	8, 23	24	25	28	11
जनवरी (16)	14 (माघ)	6, 20	7, 21	23	23	27	9
फरवरी	13 (फाल्गु.)	4, 18	6, 20	22	22	26	8
मार्च	14 (चैत्र)	5, 19	6, 20	22	23	27	9
अप्रैल	——	4 (वैष्ण.)	5	–	–	–	7

आगामी वि. संवत् २०७३ के सम्भावित व्रत-पर्व

(2016-17 ई.)

वासन्त नवरात्रे प्रा.	8 अप्रै. शु.
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. बु.
श्रीदुर्गाष्टमी	14 अप्रै. गु.
श्रीरामनवमी	15 अप्रै. शु.
श्रीमहावीर जयंती	19 अप्रै. मं.
अक्षय तृतीया	9 मई चं.
श्रीबुद्ध जयन्ती	21 मई श.
श्रीगंगा दशहरा	15 जून बु.
गुरु पूर्णिमा	19 जुला. मं.
रक्षा-बन्धन	18 अग. गु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)	24 अग. बु.
सिद्धि विनायक व्रत	5 सितं. चं.
श्राद्ध (पक्ष) प्रारंभ	17 सितं. श.
श्राद्ध समाप्त	30 सितं. शु.
शरद् नवरात्रे प्रा.	1 अक्तू. श.
श्रीदुर्गाष्टमी	9 अक्तू. र.
दशहरा (विजयादशमी)	11 अक्तू. मं.
शरद् पूर्णिमा व्रत	15 अक्तू. श.
करवा चौथ व्रत	19 अक्तू. बु.
दीपावली	30 अक्तू. र.
भाई दूज	1 नवं. मं.
श्रीगुरु नानक जयं.	14 नवं. चं.
श्रीगीता जयन्ती	10 दिसं. श.

(सन् 2017 ई.)

लोहड़ी पर्व	12 जन. गु.
मकर संक्रान्ति	13 जन. शु.
वसन्त पंचमी	1 फर. बु.
श्रीगुरु रविदास जयं.	10 फर. शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	24 फर. शु.
होली पर्व	12 मार्च र.

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०७२ वि.

(1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, 2016 तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल-ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं-इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट-हमारे कार्यालय से छपी 'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। मूल्य 65/- रु.

पता-जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
7	जन.	आश्लेषा	13	47	9	जन.	मघा	19	29
17	जन.	ज्येष्ठा	8	36	19	जन.	मूल	5	52
25	जन.	रेवती	12	59	27	जन.	अश्विनी	11	11
3	फर.	आश्लेषा	20	32	5	फर.	मघा	26	16
13	फर.	ज्येष्ठा	17	58	15	फर.	मूल	16	30
21	फर.	रेवती	22	03	23	फर.	अश्विनी	18	35
2	मार्च	आश्लेषा	26	33	5	मार्च	मघा	8	29
12	मार्च	ज्येष्ठा	25	10	14	मार्च	मूल	25	13
21	मार्च	रेवती	9	02	23	मार्च	अश्विनी	04	23
30	मार्च	आश्लेषा	8	45	1	अप्रै.	मघा	14	46
9	अप्रै.	ज्येष्ठा	6	51	11	अप्रै.	मूल	7	36
17	अप्रै.	रेवती	19	49	19	अप्रै.	अश्विनी	15	09
26	अप्रै.	आश्लेषा	15	53	28	अप्रै.	मघा	21	40
6	मई	ज्येष्ठा	12	40	8	मई	मूल	13	03
15	मई	रेवती	04	34	16	मई	अश्विनी	24	52
23	मई	आश्लेषा	24	03	26	मई	मघा	5	19
2	जून	ज्येष्ठा	19	51	4	जून	मूल	19	22
11	जून	रेवती	10	59	13	जून	अश्विनी	8	26
20	जून	आश्लेषा	8	31	22	जून	मघा	13	21
30	जून	ज्येष्ठा	4	31	2	जुला.	मूल	03	30
8	जुला	रेवती	16	20	10	जुला.	अश्विनी	14	09
17	जुला	आश्लेषा	16	25	19	जुला	मघा	21	06
27	जुला	ज्येष्ठा	13	51	29	जुला	मूल	13	08
4	अग.	रेवती	22	38	6	अग.	अश्विनी	19	40
13	अग.	आश्लेषा	23	13	16	अग.	मघा	05	06
23	अग.	ज्येष्ठा	22	36	25	अग.	मूल	22	59

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
1	सितं.	रेवती	7	14	3	सितं.	अश्विनी	02	49
10	सितं.	आश्लेषा	5	07	12	सितं.	मघा	10	20
20	सितं.	ज्येष्ठा	5	50	22	सितं.	मूल	7	34
28	सितं.	रेवती	17	55	30	सितं.	अश्विनी	12	21
7	अक्तू.	आश्लेषा	10	58	9	अक्तू.	मघा	16	19
17	अक्तू.	ज्येष्ठा	11	42	19	अक्तू.	मूल	14	11
26	अक्तू.	रेवती	5	02	27	अक्तू.	अश्विनी	23	25
3	नवं.	आश्लेषा	17	53	5	नवं.	मघा	22	47
13	नवं.	ज्येष्ठा	17	26	15	नवं.	मूल	19	39
22	नवं.	रेवती	14	29	24	नवं.	अश्विनी	9	58
1	दिसं.	आश्लेषा	02	23	3	दिसं.	मघा	6	23
10	दिसं.	ज्येष्ठा	24	24	12	दिसं.	मूल	25	50
19	दिसं.	रेवती	21	13	21	दिसं.	अश्विनी	18	09
28	दिसं.	आश्लेषा	11	49	30	दिसं.	मघा	14	58
(सन् 2016 ई.)									
7	जन.	ज्येष्ठा	8	57	9	जन.	मूल	10	01
15	जन.	रेवती	26	33	17	जन.	अश्विनी	23	58
24	जन.	आश्लेषा	20	44	26	जन.	मघा	23	39
3	फर.	ज्येष्ठा	18	08	5	फर.	मूल	19	43
12	फर.	रेवती	9	07	14	फर.	अश्विनी	05	33
21	फर.	आश्लेषा	04	00	23	फर.	मघा	7	22
1	मार्च	ज्येष्ठा	26	37	4	मार्च	मूल	5	20
10	मार्च	रेवती	18	21	12	मार्च	अश्विनी	13	15
19	मार्च	आश्लेषा	9	49	21	मार्च	मघा	13	46
29	मार्च	ज्येष्ठा	9	41	31	मार्च	मूल	13	23
7	अप्रै.	रेवती	5	20	8	अप्रै.	अश्विनी	23	23

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल-सं० २०७२ वि.

(1 जन. 2015 ई. से 7 अप्रै., सन् 2016 ई. तक)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता. मास	घं.	मिं.	ता. मास	घं.	मिं.
22 जन.	8	50	26 जन.	11	48
18 फर.	19	58	22 फर.	20	01
18 मार्च	6	59	22 मार्च	6	30
14 अप्रै.	15	53	18 अप्रै.	17	22
11 मई	22	19	15 मई	26	41
7 जून	27	41	12 जून	9	40
5 जुला.	10	01	9 जुला.	15	07
1 अग.	18	30	5 अग.	20	57
29 अग.	04	52	2 सितं.	04	49
25 सितं.	15	36	29 सितं.	15	00
22अक्तू.	24	50	26अक्तू.	26	13
19 नवं.	7	35	23 नवं.	12	18
16 दिसं.	12	55	20 दिसं.	19	45
(सन् 2016 ई.)					
12 जन.	19	18	16 जन.	25	13
9 फर.	04	12	13 फर.	7	13
7 मार्च	14	51	11 मार्च	15	42
3 अप्रै.	25	15	7 अप्रै.	26	22

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) २०७२ वि. (सं. 2015-16 ई.)

नगर	8 अप्रै.,15		7 मई, 15		5 जून, 15		5 जुला., 15		3 अग., 15		1 सितं., 15		1 अक्तू., 15		30 अक्तू., 15		29 नवं., 15		28 दिसं., 15		27 जन., 16		26 फर., 16		27 मार्च, 16		श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवा-चौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	5 सितं., शनि	
अमृतसर	22	32	22	17	21	57	22	12	21	31	20	50	20	58	20	28	21	02	20	40	21	14	21	43	22	15	23	56
अजमेर	22	23	22	07	21	48	22	07	21	32	20	54	21	08	20	39	21	12	20	49	21	17	21	41	22	08	24	07
अम्बाला	22	21	22	06	21	46	22	03	21	24	20	44	20	54	20	25	20	58	20	36	21	08	21	35	22	05	23	53
अहमदाबाद	22	27	22	10	21	51	22	14	21	39	21	04	21	20	20	52	20	52	21	00	21	26	21	47	22	11	24	20
अलवर (राज.)	22	18	22	02	21	43	22	01	21	24	20	45	20	58	20	29	20	29	20	39	21	09	21	34	22	02	23	50
आगरा	22	11	21	56	21	36	21	56	21	19	20	41	20	53	20	25	20	25	20	35	21	04	21	28	21	56	23	53
ईलाहाबाद	21	52	21	38	21	15	21	38	21	03	20	25	20	40	20	12	20	44	20	21	20	48	21	12	21	38	23	40
ऊना	22	26	22	12	21	52	22	07	21	26	20	45	20	53	20	24	20	57	20	35	21	09	21	38	22	09	23	58
उदयपुर (राज.)	22	25	22	10	21	50	22	11	21	05	20	59	21	13	20	45	21	18	20	54	21	22	21	44	22	10	24	13
ऊधमपुर	22	33	22	18	21	58	22	12	21	30	20	48	20	55	20	26	21	11	20	39	21	14	21	44	22	16	23	54
कपूरथला	22	28	22	13	21	53	22	09	21	28	20	48	20	57	20	28	21	01	20	39	21	13	21	41	22	12	23	56
करनाल	22	20	22	05	21	45	22	02	21	23	20	43	20	53	20	24	20	57	20	35	21	07	21	34	22	04	23	52
काँगड़ा (हि.प्र.)	22	27	22	12	21	54	22	07	21	26	20	45	20	53	20	23	20	56	20	35	21	09	21	39	22	10	23	51
कानपुर	22	01	21	45	21	26	21	46	21	10	20	32	20	46	20	17	20	50	20	27	20	55	21	19	21	46	23	45
कैथल	22	22	22	07	21	47	22	04	21	25	20	45	20	55	20	26	20	59	20	37	21	09	21	36	22	06	23	54
कुल्लू	22	23	22	08	21	48	22	03	21	22	20	41	20	49	20	19	20	52	20	32	21	05	21	35	22	06	23	47
कुराली	22	24	22	09	21	49	22	05	21	25	20	45	20	53	20	24	20	57	20	36	21	09	21	37	22	08	23	52
कुरुक्षेत्र	22	21	22	06	21	46	22	03	21	24	20	44	20	54	20	25	20	58	20	36	21	08	21	35	22	05	23	53
कोलकाता	21	24	21	07	20	48	21	10	20	36	20	01	20	17	19	49	20	21	19	57	20	23	20	44	21	08	23	17
गाज़ियाबाद	22	16	22	01	21	41	21	59	21	21	20	41	20	53	20	24	20	57	20	34	21	05	21	32	22	00	23	52
ग्वालियर	22	09	21	53	21	34	21	54	21	18	20	40	20	54	20	25	20	58	20	34	21	03	21	27	21	54	23	53
गुरदासपुर	22	30	22	15	21	55	22	10	21	29	20	48	20	56	20	26	20	59	20	38	21	12	21	42	22	13	23	54
गुड़गाँव	22	17	22	02	21	43	22	01	21	23	20	44	20	56	20	27	20	59	20	37	21	07	21	33	22	01	23	55
चण्डीगढ़	22	22	22	07	21	47	22	03	21	23	20	43	20	51	20	22	20	55	20	34	21	07	21	35	22	06	23	50
चम्बा	22	28	22	13	21	54	22	08	21	26	20	45	20	51	20	22	20	55	20	34	21	09	21	39	22	11	23	49
चेन्नई	21	43	21	25	21	07	21	36	21	08	20	38	21	03	20	37	21	09	20	41	21	00	21	13	21	30	24	07
जयपुर (राज.)	22	20	22	05	21	45	22	04	21	28	20	49	21	03	20	34	21	07	20	44	21	13	21	37	22	05	24	02
जम्मू	22	34	22	19	21	59	22	13	21	31	20	50	20	56	20	26	20	59	20	39	21	14	21	44	22	17	23	54
जालन्धर (पं.)	22	28	22	13	21	53	22	09	21	29	20	48	20	57	20	28	21	01	20	39	21	13	21	41	22	12	23	56
जोधपुर (राज.)	22	30	22	14	21	55	22	15	21	39	21	01	21	15	20	46	21	19	20	56	21	24	21	48	22	15	24	14
जीन्द (हरि.)	22	22	22	06	21	46	22	04	21	26	20	46	20	57	20	29	21	02	20	39	21	10	21	37	22	06	23	57
दिल्ली	22	17	22	02	21	42	22	00	21	22	20	43	20	54	20	25	20	59	20	36	21	06	21	32	22	01	23	54
देहरादून	22	16	22	01	21	41	21	58	21	19	20	39	20	49	20	20	20	53	20	31	21	03	21	30	22	00	23	48
धर्मशाला	22	27	22	12	21	52	22	07	21	26	20	45	20	53	20	23	20	56	20	35	21	09	21	39	22	10	23	51
नंगल (पंजा.)	22	24	22	09	21	49	22	05	21	25	20	45	20	53	20	24	20	57	20	35	21	09	21	37	22	08	23	51
नादौन (हि.प्र.)	22	25	22	12	21	52	22	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	35	21	09	21	39	22	10	23	51

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) २०७२ वि. (सं. 2015-16 ई.)

नगर	8 अप्रै., 15		7 मई, 15		5 जून, 15		5 जुला., 15		3 अग., 15		1 सितं., 15		1 अक्तू., 15		30 अक्तू., 15		29 नवं., 15		28 दिसं., 15		27 जन., 16		26 फर., 16		27 मार्च, 16		श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवा-चौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	5 सितं., शनि	
नाहन	22	20	22	05	21	46	22	02	21	22	20	42	20	51	20	22	20	55	20	33	21	06	21	34	22	04	23	49
पठानकोट	22	29	22	14	21	54	22	09	21	28	20	47	20	55	20	25	20	58	20	37	21	11	21	41	22	12	23	53
पटियाला	22	22	22	07	21	47	22	04	21	25	20	45	20	55	20	26	20	59	20	37	21	12	21	36	22	06	23	54
पंचकूला	22	22	22	07	21	47	22	03	21	23	20	43	20	52	20	22	20	55	20	34	21	07	21	35	22	06	23	50
पानीपत	22	19	22	04	21	43	22	01	21	23	20	43	20	55	20	26	20	59	20	36	21	07	21	34	22	03	23	54
पटना	21	41	21	25	21	06	21	25	20	50	20	12	20	26	19	58	20	30	20	07	20	36	20	59	21	26	23	25
फगवाड़ा	22	27	22	12	21	52	22	08	21	28	20	48	20	56	20	27	21	00	20	38	21	12	21	40	22	11	23	55
फरीदकोट	22	30	22	15	21	55	22	11	21	31	20	51	20	59	20	30	21	03	20	42	21	15	21	43	22	13	23	58
फरीदाबाद	22	16	22	01	21	41	21	59	21	22	20	43	20	55	20	26	20	59	20	36	21	06	21	32	22	00	23	54
फाज़िल्का	22	32	22	17	21	57	22	14	21	35	20	55	21	05	20	36	21	09	20	47	21	19	21	47	22	16	24	04
फिरोज़पुर	22	31	22	16	21	56	22	12	21	32	20	52	21	00	20	31	21	04	20	43	21	16	21	44	22	15	23	59
बीकानेर	22	32	22	16	21	57	22	15	21	38	20	59	21	11	20	42	21	15	20	52	21	22	21	48	22	16	24	10
बिलासपुर(हि.प्र.)	22	23	22	08	21	48	22	04	21	24	20	44	20	52	20	23	20	56	20	34	21	08	21	36	22	07	23	51
बैंगलूरु	21	54	21	36	21	18	21	47	21	19	20	48	21	14	20	48	21	20	20	52	21	11	21	24	21	41	24	18
महेन्द्रगढ़(हरि.)	22	20	22	05	21	45	22	04	21	26	20	47	20	59	20	30	21	03	20	40	21	10	21	36	22	04	23	58
मेरठ	22	15	22	00	21	41	21	58	21	20	20	40	20	52	20	23	20	56	20	33	21	04	21	31	21	59	23	51
मण्डी (हि.प्र.)	22	24	22	09	21	49	22	04	21	23	20	42	20	49	20	20	20	53	20	32	21	06	21	36	22	07	23	48
मथुरा	22	13	21	58	21	39	21	57	21	20	20	41	20	54	20	25	20	58	20	35	21	04	21	30	21	57	23	53
मुम्बई	22	20	22	02	21	32	22	09	21	38	21	04	21	24	20	58	21	30	21	04	21	26	21	45	22	06	24	26
यमुनानगर	22	19	22	04	21	44	22	01	21	22	20	42	20	52	20	23	20	56	20	34	21	06	21	33	22	03	23	51
रोपड़	22	26	22	09	21	49	22	05	21	25	20	45	20	53	20	24	20	57	20	36	21	09	21	37	22	08	23	52
रोहतक	22	19	22	04	21	44	22	02	21	24	20	44	20	56	20	27	21	00	20	37	21	08	21	35	22	04	23	55
रूड़की	22	16	22	01	21	41	21	58	21	19	20	39	20	49	20	20	20	53	20	31	21	03	21	30	22	00	23	48
लुधियाना	22	22	22	11	21	51	22	07	21	27	20	47	20	55	20	26	20	59	20	38	21	11	21	39	22	10	23	54
लखनऊ	21	59	21	44	21	25	21	43	21	07	20	29	20	42	20	13	20	46	20	22	20	52	21	17	21	44	23	41
वाराणसी	21	49	21	33	21	13	21	34	20	59	20	22	20	36	20	08	20	40	20	17	20	45	21	08	21	34	23	36
शिमला	22	21	22	06	21	46	22	02	21	22	20	42	20	50	20	21	20	54	20	32	21	06	21	34	22	05	23	49
श्रीगंगानगर	22	33	22	18	21	58	22	15	21	36	20	56	21	06	20	37	21	10	20	48	21	20	21	47	22	17	24	05
संगरूर (पं.)	22	24	22	09	21	49	22	06	21	27	20	47	20	57	20	28	21	01	20	39	21	11	21	38	22	08	23	56
सरकाघाट	22	27	22	12	21	52	22	07	21	26	20	45	20	52	20	23	20	56	20	35	21	09	21	38	22	10	23	51
सहारनपुर	22	18	22	03	21	43	22	00	21	21	20	41	20	51	20	22	20	55	20	33	21	05	21	32	22	02	23	50
सोनीपत	22	18	22	03	21	43	22	01	21	23	20	43	20	55	20	26	20	59	20	36	21	07	21	34	22	03	23	54
हिसार (हरि.)	22	23	22	08	21	48	22	06	21	28	20	48	21	00	20	31	21	04	20	41	21	12	21	39	22	08	23	59
होशियारपुर	22	28	22	13	21	53	22	08	21	27	20	46	20	56	20	25	20	58	20	36	21	10	21	39	22	10	23	53
हरिद्वार	22	15	22	00	21	40	21	57	21	18	20	38	20	48	20	19	20	52	20	30	21	02	21	29	21	59	23	47
हमीरपुर(हि.प्र.)	22	26	22	11	21	51	22	06	21	25	20	44	20	52	20	22	20	55	20	34	21	08	21	37	22	09	23	50

कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व-नासिक

भाद्रपद अमावस, रविवार (13 सितम्बर, 2015 ई.) कुम्भमहापर्व की परम्परा, माहात्म्य एवं स्नान तिथियां--(लेखक : पं. विवेक शर्मा)

'कुम्भ-महापर्व' भारत की अति-प्राचीन परम्परा है। यह पर्व भारत की प्राचीन गौरवमयी वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक है। भगवान् आदि शङ्कराचार्य ने भी वैदिक काल से प्रचलित **'कुम्भ'**-पर्व की परम्परा का उद्धार एवं प्रचार किया। मूल रूप में **'कुम्भ'**-पर्व की यह अत्यन्त प्राचीन परम्परा मनुष्य के द्वारा रत्न-ऐश्वर्य, सुख-आरोग्य, आत्म-ज्ञान-अमरत्व की इच्छा से जुड़ी हुई है। वेद, पुराण आदि प्राचीन धर्मशास्त्र मनुष्यों की इन इच्छाओं से सम्बन्धित ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण हैं।

सर्वश्रेष्ठ **'आत्म-ज्ञान'**-अमरत्व को समझने या समझाने के लिए ऋषियों-मुनियों ने **'कुम्भ'**-रूपी सुन्दर प्रतीक को हमारे सम्मुख रखा है। उदाहरण रूपी यह श्लोक देखिए-

अन्तः शून्यो बहिः शून्यः, शून्यः 'कुम्भ' इवाम्बरे।
अन्तः पूर्णो बहिः पूर्णः, 'पूर्ण'-कुम्भ इवार्णवे।।

अर्थात् जिस प्रकार एक खाली **'कुम्भ'** आकाश में पड़ा हो, तो उसके भीतर तथा बाहर सर्वत्र आकाश ही रहता है तथा जल से पूर्ण **'कुम्भ'** समुद्र में डूबा हो, तो उसके भीतर और बाहर सर्वत्र जल ही रहता है, उसी प्रकार इस जगत् में सर्वत्र तथा इसके बाहर भी सर्वश्रेष्ठ **'आत्मा'** ही है। स्पष्ट है कि कुम्भ-पर्व आत्मा, आत्म-ज्ञान जैसी सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति से जुड़ा हुआ है। आवश्यकता है कि इसके विविध पक्षों पर चिन्तन-मनन किया जाए।

धर्म के आधार पर ही समस्त मानव समाज प्रतिष्ठित है-**'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'**।- धर्म ही सम्पूर्ण जगत् का आधार है। धर्म का अपलाप कोई भी नहीं कर सकता है। धर्म ने ही मानव-समाज को एकसूत्र में बाँध रखा है जिसका एकमात्र मूलतत्त्व परमात्मतत्त्व ही है। इसी प्रकार हिन्दू धर्म का प्रतीक कुम्भपर्व है। कुम्भपर्व को एक महत्त्वपूर्ण और सार्वभौम महापर्व माना जाता है। इस महापर्व के अवसर पर सारे भारत से ही नहीं, अपितु विश्व के अनेक देशों से असंख्य धर्मपरायण श्रद्धालुगण एकत्र होकर नासिक (त्र्यम्बक) में गोदावरी के तट पर, हरिद्वार, प्रयाग या उज्जैन में स्नान, दान, तपादि करके तथा वहाँ के समीपवर्ती तीर्थस्थल पर रहने वाले महात्माओं के अमृत वचनों का श्रवण करके धन्य होते हैं।

वस्तुतः 'कुम्भ' शब्द का अर्थ साधारणतः घड़ा ही है, किन्तु इसके पीछे जनसमुदाय में पात्रता के निर्माण की रचनात्मक शुभभावना, मङ्गलकामना एवं जनमानस के उद्धार की प्रेरणा निहित है। यथार्थतः 'कुम्भ' शब्द समग्र सृष्टि के कल्याणकारी अर्थ को अपने आप में समेटे हुए है।

कालिक दृष्टि से ऐसे ग्रहयोग जो खगोल में लुप्त-सुप्त अमृत्व को प्रत्यक्ष और प्रबुद्ध कर देते हैं, चार स्थानों में 12-12 वर्ष पर कालयोग से प्रकट होते हैं। तब गङ्गा (हरिद्वार), त्रिवेणी जी (प्रयाग), शिप्रा (उज्जैन) और गोदावरी (नासिक)-ये पतितपावनी नदियाँ अपनी जलधारा में अमृतत्व को प्रवाहित करती है अर्थात् देश, काल एवं वस्तु तीनों अमृत के प्रादुर्भाव के योग्य हो जाते हैं। फलस्वरूप अमृतघट या कुम्भ का अवतरण होता है। "कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र, मूल भाग में ब्रह्मा, मध्य भाग में मातृगण, कुक्षि में समस्त समुद्र, पहाड़ और पृथ्वी रहते हैं और अङ्गों के सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद भी रहते हैं।"

कालचक्र न केवल जीवन के क्रिया-कलाप का मूलाधार है, अपितु समस्त यज्ञकर्म, अनुष्ठान एवं संस्कार आदि भी कालचक्र पर आधारित हैं। कालचक्र में सूर्य, चन्द्रमा एवं देवगुरु बृहस्पति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन तीनों का योग ही कुम्भ-पर्व का प्रमुख आधार है। आगामी वर्ष सूर्य, चन्द्रमा एवं बृहस्पति सिंह राशि में एकत्र होने से भाद्रपद की अमावस्या तिथि को नासिक (महाराष्ट्र) (त्र्यम्बक) में अति दुर्लभ कुम्भ-महापर्व समायोजित होगा। शास्त्रानुसार जब **भाद्रपद अमावस** को सूर्य, चंद्र एवं गुरु-तीनों सिंह राशि में एकत्र हों तो गोदावरी (नासिक) में कुम्भ-महापर्व का योग होता है-

सिंहे गुरुस्तथा भानुः चन्द्रः चन्द्रक्षयस्तथा। गोदावर्यां तदा कुम्भो जायतेऽवनिमण्डले।।

इस वर्ष (वि. संवत् २०७२ में) भाद्रपद अमावस तदनुसार **13 सितम्बर, 2015 ई., रविवार को नासिक** (त्र्यम्बक) में कुम्भ महापर्व का योग बन रहा है। इस दिन सिंह के चन्द्रमा कालीन सूर्य एवं गुरु का योग सिंह राशि में होगा। इसे **'सिंहस्थ महापर्व'** भी कहा जाता है। इस पुण्यपर्व पर नासिक में गोदावरी के तट पर पहुँचकर लाखों श्रद्धालु लोग स्नान, दान, जप-तपादि करके विशेष पुण्य एवं मोक्षप्राप्ति करेंगे। इस स्थिति में सभी ग्रह मित्रतापूर्ण और श्रेष्ठ होते हैं। हमारे जीवन में जब मित्र और श्रेष्ठजनों का मिलन होता है, तभी श्रेष्ठ एवं शुभ विचारों का उदय होता है और हमारे जीवन में यह योग ही सुखदायक होता है।

कुम्भ पर्व क्यों मनाया जाता है ?

कुम्भ-पर्व का प्रारम्भ कब से हुआ है, इसका ठीक-ठीक निर्णय करना कठिन है। वेदों में कुम्भपर्व का आधार सूत्रों-मन्त्रों में वर्णित है, जबकि पुराणों में चार कथाओं का उल्लेख मिलता है, जिनमें (1) भगवान् शिव एवं गङ्गा जी की कथा (2) महर्षि दुर्वासा की कथा (3) कद्रू-विनता की कथा और (4) समुद्र मन्थन की कथा-ये प्रसिद्ध हैं। इनमें सर्वाधिक प्रचलित आख्यान समुद्र-मंथन की कथा है। स्कन्दपुराण में वर्णित कथानुसार-एक समय भगवान् विष्णु के निर्देशानुसार देवों तथा असुरों ने मिलकर संयुक्तरूप से अमृत-कुम्भ प्राप्ति के लिए क्षीरोद् सागर में 'मन्दराचल पर्वत' एवं 'वासुकि' नाग के द्वारा समुद्र-मन्थन किया जिससे पहले हलाहल (१) 'विष' उत्पन्न हुआ जिसे भगवान् शिव ने पी लिया। हलाहल विष की ज्वालाओं के शान्त होने पर पुनः समुद्र-मन्थन में से (२) पुष्पक विमान, (३) ऐरावत-हाथी, (४) पारिजात-वृक्ष, (५) नृत्यकला में प्रवीण रम्भा, (६) कौस्तुभ-मणि, (७) द्वितीया का

बाल चन्द्रमा, (८) कुण्डल, (९) धनुष, (१०) धेनु (कामधेनु), (११) अश्व (उच्चैः श्रवा), (१२) लक्ष्मी, (१३) धनवन्तरि, (१४) देव-शिल्पी विश्वकर्मा उत्पन्न हुए।

धन्वन्तरि के हाथों में शोभायमान '**कुम्भ**' उत्पन्न हुआ, जो मुख तक '**अमृत**' से पूर्णतया भरा हुआ था। भगवान् विष्णु की कृपा से वह अमृत-कुम्भ इन्द्र को प्राप्त हुआ। देवताओं के संकेत पर इन्द्रपुत्र '**जयन्त**' अमृत कुम्भ को लेकर बड़े वेग से भागने लगे। दैत्यगण जयन्त का पीछा करने लगे। अमृत प्राप्ति के लिए देवताओं और राक्षसों के मध्य बारह दिव्य दिनों (मानुषी बारह वर्ष) तक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में '**अमृत-कुम्भ**' की रक्षा करते समय पृथ्वी के जिस-जिस स्थानों पर अमृत की बूँदें गिरी थीं, उस-उस स्थान (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कुम्भ महापर्व मनाया जाता है। तत्पश्चात् मोहिनीरूपधारी भगवान् विष्णु ने दैत्यों को अमृत का भाग न देकर देवताओं को पिला दिया। इसलिए देवगण अमर हो गए।

पुराणानुसार '**अमृत-कुम्भ**' की रक्षा में **बृहस्पति, सूर्य व चन्द्रमा** ने विशेष सहायता की थी। इसी कारण सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति-तीनों ग्रहों के विशेष योग से ही कुम्भ महापर्व आयोजित होता है।

शारीरिक निरोगता, लक्ष्य-प्रदात्री लक्ष्मी, कभी न नष्ट होने वाला '**अमृत**' यदि हमें प्राप्त करना है, तो सभी कामनाओं को मंथना होगा। मंथने के लिए चैतन्य रूपा बुद्धि व चैतन्यता को ढँकनेवाले '**मन**'-दोनों को लगाना होगा। इस मन्थन से मन को हरने वाले मनोहर रत्नों की प्राप्ति तो होगी ही, साथ ही '**आत्मा**' अर्थात् कुम्भ को दीप्ती करने वाली शक्ति '**अमृत**' की भी प्राप्ति होगी।

—सिंहस्थ (नासिक) कुम्भपर्व की मुख्य स्नान तिथियां—

(1) श्रावण शुक्ल ३, सोमवार (17 अगस्त, सन् 2015 ई.)–इस दिन सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा। भाद्रपद (सिंह) के पुण्यकाल में गोदावरी नदी में स्नानकर जप, पाठ-दान करने का विशेष माहात्म्य होगा। संक्रान्ति का पुण्यकाल इस दिन लगभग सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहेगा। परन्तु कुम्भ-पर्व के उपलक्ष्य में तीर्थस्नान सूर्योदय से पूर्व अरुणोदयकाल में करने का शास्त्रविधान है। जप-पाठादि सूर्योदय के बाद भी कर सकते हैं। तदनुसार 17 अग., को महापर्व कुम्भ का पुण्यकाल नासिक (महा.) में सूर्योदय ($6^{घं.}$ $22^{मिं.}$) से लगभग 4 घड़ी पूर्व अर्थात् 4 बजकर 43 मिनट से अरुणोदय काल प्रारम्भ होगा। **इसे प्रथम शाही स्नान भी कहा जाएगा।**

(2) श्रावण पूर्णिमा, शनिवार तदनुसार 29 अग., 2015 ई. यह भी कुम्भ पर्व की मुख्य स्नानतिथि है। इस दिन श्रावणी उपाकर्म भी है। अरुणोदयकाल स्नान के लिए श्रेष्ठ है। इस पर्व पर संन्यासी-उदासीन व निर्मल अखाड़े के मुख्य स्नान होंगे।

(3) तृतीय व मुख्य शाही स्नान (भाद्रपद अमावस, रविवार तदनुसार 13 सितं., 2015 ई.)–यह कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व की प्रमुख स्नान तिथि होगी। सन्त-महात्माओं की प्रमुख शाही यात्रा भी इसी दिन निकलेगी। इस दिन अमावस दोपहर 12 बजकर 11 मिं. तक रहेगी। शास्त्रानुसार तो इस दिन भी अरुणोदय काल में स्नान कर लेना चाहिए। इस दिन नासिक में अरुणोदयकाल सूर्योदय (6/26) से 1 घं. 36 मिं. पूर्व प्रात: 4 घं. 50 मिं. से प्रारम्भ होगा। यदि अरुणोदय काल में अधिक भीड़ के कारण गोदावरी स्नान सम्भव न हो, तो दोपहर (मध्याह्न) तक कर लेना चाहिए।

वैसे, ता. 12 सितं. को प्रात: 9 घं. 43 मिं. के बाद भी गोदावरी में स्नान से कुम्भ-पर्व के मुख्य स्नान का पुण्य प्राप्त किया जा सकता है। क्योंकि ता. 12 सितं. को चतुर्दशी तिथि प्रात: 9 घं. 43 मिं. तक ही विद्यमान् है। तदनन्तर, सारा दिन अमावस तिथि तथा चंद्रमा सिंहस्थ है।

(4) चतुर्थ (अन्तिम) शाही स्नान (भाद्र. शुक्ल तृतीया, बुधवार तदनुसार 16 सितं., 2015 ई.)–यह भी कुम्भपर्व की मुख्य स्नानतिथि है। इसदिन '**हरितालिका तृतीया**' नामक विशेष पर्व भी होगा। '**हरितालिका तृतीया**' के इस महापर्व का अन्तिम शाही स्नान होगा। इस दिन वैष्णव, अग्नि अखाड़े व खालसे अखाड़ों का स्नान होगा।

(5) ऋषि-पंचमी (18 सितं., शुक्रवार)–यह भी कुम्भ पर्व की स्नान तिथि है। इस दिन से कुम्भ स्नान का विशेष माहात्म्य समाप्त हो जाएगा।

(6) वामन-जयन्ती (भाद्र. शु. १२)–यह पर्व भी कुम्भ स्नान हेतु विशेष रूप से ग्राह्य होगा।

इन विशेष स्नान तिथियों के अतिरिक्त जब तक देवगुरु बृहस्पति विश्वात्मा सूर्यनारायण के साथ सिंह राशि में रहते हैं, तब तक का समय सिंहस्थ कहलाता है। इस सिंहस्थ काल में (17 अग. से 16 सितं. तक) श्रीनासिक तीर्थ की यात्रा, पवित्र गोदावरी नदी में स्नान एवं त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन लाभ का बड़ा माहात्म्य है। यहीं पञ्चवटी में भगवान् श्री राम ने वनवास का दीर्घकाल व्यतीत किया था। यथा–

सिंहराशिं गते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ। गोदावर्यां भवेत्कुम्भो भक्तिमुक्ति प्रदायकः।।

सिंहस्थ (नासिक) महापर्व–स्नान–दान की महिमा

13 सितम्बर, रविवार को ब्रह्म मुहूर्त्त एवं अरुणोदयकाल से ही कुम्भ के पावन पर्व पर सहस्रों की संख्या में सन्त, महात्मा, नागा संन्यासी एवं विभिन्न अखाड़ों से सम्बन्धित महात्मा तथा लाखों की संख्या में श्रद्धालु जन श्रीनासिक (त्र्यम्बक) में स्नान, दान, जप होमादि करके पुण्यार्जन करेंगे। ब्रह्मवैवर्तपुराण में लिखा गया है–

अश्वमेघफलं चैव लक्षगोदानजं फलम्। प्राप्नोति स्नानमात्रेण गोदायां सिंहगे गुरौ।।

अर्थात् 'जिस समय बृहस्पति सिंह राशि पर स्थित हो, उस समय गोदावरी में केवल स्नानमात्र से ही मनुष्य अश्वमेघ-यज्ञ करने का तथा एक लक्ष गोदान करने का पुण्य प्राप्त करता है।'

ब्रह्माण्डपुराण में भी कहा गया है–

यस्मिन् दिने गुरुर्याति सिंहराशौ महामते। तस्मिन् दिने महापुण्यं नरः स्नानं समाचरेत्।।
यस्मिन् दिने सुरगुरुः सिंहराशिगतो भवेत्। तस्मिंस्तु गौतमीस्नानं कोटिजन्माघनाशनम्।।

कुम्भ-स्नान की विधि एवं दानादि का महत्त्व

सर्वप्रथम प्रातःकाल उठकर अपने इष्टदेव का स्मरण करना चाहिए। उसके पश्चात् शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर कुम्भपर्व पुण्यसूचक श्लोकों का उच्चारण करें। तदनन्तर यथासमय कुम्भ स्नानार्थ गोदावरी आदि पवित्र नदी में जाकर अपने दोनों हाथों द्वारा कुम्भ-मुद्रा (कलश-मुद्रा) बनाकर उसमें अमृततत्त्व की भावना करते हुए निम्नलिखित श्लोकों को पढ़ते हुए स्नान करें–

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेवेदेवाः सपैतृकाः।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं स्नानं कर्तुमीहे जलोद्भव।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

स्नान करने के बाद सन्ध्या-तर्पणादि से निवृत्त होकर श्रीगणेश पूजन सहित कुम्भ (कलश) स्थापित करें। तदोपरान्त श्रद्धा-भक्ति से कुम्भ को षोडशोपचारपूर्वक पूजन करे। तत्पश्चात् एक, चार, ग्यारह आदि यथाशक्ति सुवर्ण, चाँदी, पीतल या ताम्र के कलशों में घृत भरकर वस्त्र, फल, गुड़ादि मिष्ठान्न, दक्षिणा संकल्प सहित किसी सुपात्र विद्वान ब्राह्मणों को दान करें।

कुम्भ-पर्व के समय यथाविधि घृतपूर्ण कुम्भ का पूजन कर, उसे वस्त्र, अलंकार, आभूषण सुवर्ण या चाँदी की मुद्रा सहित सदाचारी ब्राह्मण या विद्वान को संकल्पूर्वक देने से सैंकड़ों गोदान करने का फल मिलता है। कुम्भ-पर्व पर साधु-महात्माओं को भोजन खिलाना व दक्षिणा देने से आत्म कल्याण के साथ-साथ पितरों की आत्मा की तृप्ति होती है।

नासिक (त्र्यम्बकेश्वर) कुम्भपर्व का माहात्म्य

नासिक तीर्थ को गोदावरी, पंचवटी, त्र्यम्बक और गौतमी आदि नामों से भी जाना जाता है। जहाँ लक्ष्मणजी ने रावण की बहिन शूर्पणखा की नाक काटी थी और जहाँ सीताहरण हुआ था, वह स्थान नासिक पंचवटी के नाम से प्रसिद्ध है। नासिक पंचवटी से थोड़ी दूर त्र्यम्बकेश्वर का स्थान है। यहाँ निकटस्थ ब्रह्मगिरि पर्वत से पूतसलिला गोदावरी निकलती है। जो माहात्म्य उत्तर भारत में पाप-विमोचनी गङ्गा का है, वही दक्षिण में गोदावरी नदी का है। दक्षिण में यह गङ्गा नाम से ही प्रख्यात है। जिस प्रकार इस पृथ्वी पर गङ्गा-अवतरण का श्रेय तपस्वी भगीरथ को है, उसी प्रकार गोदावरी नदी का अवतरण ऋषिश्रेष्ठ गौतम की घोर तपस्या का फल है, जो उन्हें भगवान् आशुतोष से प्राप्त हुआ है।

गौतम ऋषि की तपस्या के फलस्वरूप आई हुई गोदावरी का दूसरा नाम गौतमी है। बृहस्पति के सिंह राशि में आने पर यहाँ विशाल कुम्भ-पर्व आयोजित होता है। इस कुम्भ के अवसर पर गोदावरी-स्नान का विशेष माहात्म्य है। इन्हीं पुण्यतोया गोदावरी के उद्गम स्थान के समीप स्थित त्र्यम्बकेश्वर भगवान् की भी बड़ी महिमा है। गौतम ऋषि तथा गोदावरी के प्रार्थनानुसार भगवान् शिव ने इस स्थान में निवास करने की कृपा की और त्र्यम्बकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए।

शिवपुराण के अनुसार त्र्यम्बकेश्वर के दर्शन और पूजन करने वाले को इस लोक और परलोक में आनन्द रहता है। नासिक-माहात्म्य के वर्णन-प्रसंग में शिव पुराण में कहा गया है–

तद्दिनं हि समारभ्य सिंहस्थे च बृहस्पतौ। आयांति सर्वतीर्थानि क्षेत्राणि दैवतानि च।।
सरांसि पुष्करादीनि गङ्गाद्यास्सरितस्तथा। वासुदेवादयो देवाः सन्ति वै गौतमीतटे।।

भाव यह है कि सिंह के बृहस्पति में सम्पूर्ण देवता तथा तीर्थ पुष्कर आदि सरोवर, गङ्गा आदि नदियाँ, वासुदेव आदि अनेक देवता गौतमी (नासिक)–में निवास करते हैं।

गोदावरी में सिंहस्थ पर्व के समय, देव, दानव, यज्ञ और मनुष्यादि जो कोई गौतमी गङ्गा का स्नान तथा पान करेगा, वह समस्त संकटों से मुक्त होकर सर्वविजयी होगा। सिंहस्थ गुरु के समय गोदावरी में विधिपूर्वक स्नान, पूजा, पाठ तथा दान करने से मोक्ष-पद की प्राप्ति होती है। जो कुम्भ-पर्व पर इन्द्रतीर्थ में स्नान-दानादि कर पितरों का श्राद्ध-तर्पण करता है, वह पितृऋण से मुक्त होकर अक्षयसुख की प्राप्ति करता है। अतएव इस महापर्व पर नासिक जाने वाले धर्मनिष्ठ लोगों को चाहिए, वह सर्वप्रथम कुतुपकाल (अपराह्णकाल) में अपने पूज्य पूर्वजों को तीर्थ-पिण्ड दान अवश्य करें।

–कुम्भ-महापर्व का अमृत-संदेश–

अमृत कुम्भ-पर्व मनुष्य जीवन में कई प्रकार से अमृतत्व का संचार करता है। ज्ञान के द्वारा बुद्धि में, श्रद्धा के द्वारा मन में, पवित्रता (स्नानादि) के द्वारा शरीर में, दान के द्वारा धन में और वासना-शोधन के द्वारा समस्त लोक-व्यवहार में एक उच्च कोटि का प्रकाश भर देता है, जिससे मनुष्य जीवन उज्वल बनकर कर्त्तव्य पथ की ओर अग्रसर हो सके। अमृतत्व-प्राप्ति का वास्तविक तात्पर्य है–जीवन की पूर्णता अर्थात् मानव जीवन का सर्वाङ्गीण विकास। यह प्रत्येक देश में, प्रत्येक काल में, प्रत्येक मनुष्य के लिए अपेक्षित् है।

विराट् महाकुम्भ-पर्व का यह आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व एवं उद्देश्य मानवमात्र में विश्व-बन्धुत्व, विश्वप्रेम की शुभ भावना के साथ जीवन के नैतिक मूल्यों तथा आदर्शों के रक्षण हेतु निरन्तर विश्व-मङ्गल की ओर बढ़ते रहने का सार्थक एवं मङ्गल प्रयास है। जो इस महापुण्य बेला पर (13 सितं.) को गङ्गाजल (या गोदावरी) के मिश्रित जल में खड़े होकर '**ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः। नमस्ते विष्णुरुपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोऽस्तुते।।**' तदनन्तर गंगास्तोत्र, शिवाष्टक, शिवस्तोत्रादि का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।

ग्रहण विवरण (संवत् २०७२ वि.)

परिलेख–
–पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०७२ (सन् 2015–16 ई.) में भूलोक पर कुल चार ग्रहण घटित होंगे–

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (4 अप्रैल, 2015 ई., शनिवार)
(2) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य) (13 सितम्बर, 2015 ई., रविवार)
(3) खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (28 सितम्बर, 2015 ई., सोमवार)
(4) खग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (8/9 मार्च, 2016 ई., मंग./बुध)

● भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) एकमात्र ● खण्डग्रास सूर्यग्रहण का संक्षिप्त विवरण

(1) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (13 सितम्बर, 2015 ई., भाद्रपद अमावस, रविवार)– यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण केवल दक्षिणी अफ्रीका के क्षेत्रों/देशों साऊथ अफ्रीका, नामीबिया, माज़ाम्बीक, बोत्सवाना, जिम्बाबवे, मैड़गास्कर, दक्षिणी हिन्द महासागर तथा एण्टार्क्टिका के पूर्वी हिस्सों में ही दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. के अनुसार इस ग्रहण का प्रारम्भ/समाप्तिकाल इस प्रकार होगा–

	घं. मिं.	
ग्रहण आरम्भ	10–12	(भा. स्टैं. टा.)
परमग्रास	12–24	
ग्रहण समाप्त	14–36	

इस खण्ड सूर्यग्रहण सम्बन्धी स्नान, दान, सूतक, माहात्म्य का विचार भारतवर्ष में नहीं होगा क्योंकि भारत में यह बिल्कुल दिखाई नहीं देगा। परन्तु सिंहस्थ गुरु कालीन भाद्रपद अमावस के स्नान, दानादि का माहात्म्य तो अवश्य रहेगा ही।

● भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण ●

(1) खग्रास (ग्रस्तोदय) चन्द्रग्रहण (4 अप्रैल, 2015 ई., चैत्र पूर्णिमा, शनिवार)–

यह खग्रास चन्द्रग्रहण 4 अप्रैल, 2015 ई. को सम्पूर्ण भारत में ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा अर्थात् भारत के किसी भी नगर में जब चन्द्रोदय होगा, उससे काफी पहले ही चन्द्रग्रहण प्रारम्भ हो चुका होगा। भारत के केवल सुदूर उत्तर-पूर्वी राज्यों (पोर्ट-ब्लेयर, नागालैण्ड, मिज़ोरम, असम, मणिपुर, अरुण. प्रदेश) में इस ग्रहण का परमग्रास तथा परमग्रास की समाप्ति देखी जा सकती है। शेष भारत में तो जब चन्द्रोदय होगा तब तक खग्रास समाप्त हो चुका होगा तथा केवल ग्रहण-समाप्ति ही दृष्टिगोचर होगी। अतएव, भारत में इस ग्रहण का खण्डग्रास रूप ही दिखाई देगा। भूगोल पर इस ग्रहण के स्पर्श आदि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

	घं. मिं.	
ग्रहण (स्पर्श) प्रारम्भ	15–45	(भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ	17–24	
ग्रहण मध्य (परमग्रास)	17–30	
खग्रास समाप्त	17–36	
ग्रहण (मोक्ष) समाप्त	19–15	

[चन्द्रमालिन्य प्रारम्भ (enters penumbra) = 14घं. 30मिं. तथा चन्द्रकान्ति निर्मल (leaves penumbra) = 20घं. 31मिं.] पर्वकाल = 3घं. 30मिं.)

भारत में स्थानीय चन्द्रोदय से ही इस ग्रहण का आरम्भ माना जाएगा क्योंकि भारत में मुख्यत: चन्द्रोदय के बाद इस ग्रहण की समाप्ति ही देखी जा सकेगी। आगामी पृष्ठ पर दिए गए चित्र (1) में 'क-ख' रेखा से दायीं ओर के नगरों/क्षेत्रों में इस खग्रास चन्द्रग्रहण का परमग्रास, खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति देखी जा सकेगी अर्थात् जिन नगरों में चन्द्रोदय 17घं. 30मिं. से पहले होगा, वहीं परमग्रास, खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण-समाप्ति दिखाई देगी। 'क-ख' एवं 'च-छ' रेखा के मध्यवर्ती नगरों में केवल खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति ही देखी जा सकेगी। जबकि 'च-छ' रेखा के बाईं ओर शेष भारत में केवल ग्रहण-समाप्ति ही दृश्य होगी। अर्थात् इन नगरों में चन्द्रोदय 17घं. 36मिं. (खग्रास-समाप्ति) के बाद होगा। तीनों परिस्थितियों में यह ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण होगा, क्योंकि ग्रहण या खग्रास प्रारम्भ तो भारत के किसी भी नगर में दृश्य नहीं होगा।

आगे पृष्ठ 19–20 पर भारत के प्रसिद्ध 200 से भी अधिक नगरों में 4 अप्रैल, 2015 ई. को चन्द्रोदय काल तथा इस ग्रहण का विभिन्न नगरों में पर्वकाल भी दिया गया है।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण कहाँ दिखाई देगा ?

यह खग्रास चन्द्रग्रहण लगभग सम्पूर्ण ऐशिया (अफगानिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान ईरान को छोड़कर), आस्ट्रेलिया, उत्तर-पूर्वी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अन्टार्क्टिका, हिन्द महासागर तथा प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। इंग्लैण्ड आदि यूरोप, दक्षिणी अफ्रीका, रूस आदि में दिखाई नहीं देगा।

ग्रहण का पर्वकाल– आगे पृष्ठ 19 व 20 पर भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों के 4 अप्रैल को चन्द्रोदयकाल (भा.स्टैं.टा.) तथा ग्रहण का पर्वकाल भी दिया गया है। चन्द्रग्रहण में स्नानदान, जपादि का विशेष माहात्म्य होता है। ग्रस्तोदय ग्रहण में चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति तक के काल को '**पर्वकाल**' माना जाता है। धर्मपरायण लोगों को चन्द्रोदय को ही ग्रहण आरम्भ मानकर सभी धार्मिक क्रियाओं का सम्पादन व अनुष्ठान करना चाहिए।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 4 अप्रैल, 2015 ई. को प्रातः सूर्योदय से ही प्रारम्भ हो जाएगा। [सामान्यतः चन्द्रग्रहण का वेध (सूतक) स्पर्श से 9 घण्टे पूर्व माना जाता है, परन्तु ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण होने से पूर्ववर्ती पूरे दिन में ग्रहण का सूतक माना गया है।] शुद्ध (ग्रहण-मोक्ष) चन्द्र बिम्ब के दर्शन एवं तर्पण करने के बाद ही सभी धार्मिक कार्य करने चाहिए।

ग्रहण-राशिफल—यह चन्द्रग्रहण हस्त नक्षत्र (कन्या राशि) कालीन घटित हो रहा है। अतएव इस नक्षत्र एवं कन्या राशि वालों को इस ग्रस्तोदय ग्रहण का फल विशेष रूप से अशुभ एवं कष्टकारी होगा। जिस राशि के लिए ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, उसे यथाशक्ति जप-पाठ, ग्रह राशि (चन्द्रमा एवं राशिस्वामी बुध की) एवं दानादि द्वारा अशुभ प्रभाव को क्षीण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रहण-उपरान्त औषधि-स्नान करने से भी अनिष्ट की शान्ति होती है। सभी राशियों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा-

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	रोग, गुप्त चिन्ता, कार्य-विलंब	खर्च अधिक, भागदौड़ अधिक	कार्य सिद्धि, धन लाभ	प्रगति, उत्साह एवं पुरुषार्थ वृद्धि	धन हानि, खर्च अधिक, यात्रा	शरीर कष्ट, चोट भय, धन क्षय	धन हानि, परेशानी	धन एवं सुख लाभ	रोग, कष्ट, चिंता भय, संघर्ष	सन्तान संबंधी चिन्ता	शत्रु व दुर्घटना भय, खर्च अधिक	स्त्री/पति संबंधी कष्ट

ग्रहणकाल तथा ग्रहण-पश्चात् क्या करें-क्या न करें ?

ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र एवं स्तोत्र-पाठ, मन्त्र-सिद्धि, तीर्थस्नान, ध्यान, हवन-कीर्तनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है। धार्मिक/आस्थावान लोगों को 4 अप्रैल, सूर्यास्त से पूर्व अपनी राश्यानुसार अथवा ब्राह्मण परामर्श अनुसार दान योग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिए तथा ग्रहणमोक्ष ($19^{घं.}$ $15^{मिं.}$) के बाद अथवा अगले दिन 5 अप्रैल, 2015 ई. को प्रातः सूर्योदय के समय पुनः स्नान करके संकल्पपूर्वक योग्य ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

सूतक एवं ग्रहणकाल में नाखुन काटना, मूर्त्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूठ, कपटादि, वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग से परहेज़ करना चाहिए। सूतककाल में बाल, वृद्ध, रोगी एवं गर्भवती को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में कोई दोष नहीं।

ग्रहण/सूतक से पहले ही दूध/दही, आचार, चटनी, मुरब्बा में कुशातृण रख देना श्रेयस्कर होता है। इससे ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों में कुशा डालने की आवश्यकता नहीं।

—ग्रहण का लोक-भविष्य एवं प्रभाव—

(*i*) ग्रहण का मास फल—यह चन्द्रग्रहण चैत्र मास में घटित होने से चित्रकार, फोटोग्राफर, लेखक, बिल्डर, अभिनेता, नाटककार तथा रूप-सौन्दर्य से आजीविका करने वालों को कष्ट तथा धन-हानि होगी। सोना तथा व्यापार की अन्य वस्तुओं के भावों में भी तेजी बनेगी-

चैत्र्यं तु चित्रकरलेखककगेयशक्तान्। रूपोपजीविनिगमज्ञ हिरण्यपण्यान्।।

(*ii*) ग्रहण का वार फल—यह ग्रहण शनिवार को होने से सिन्ध, महाराष्ट्र आदि राज्यों में उत्पन्न होने वाले धान्यों में तेजी, चोरों, ठगों का उपद्रव, राजा के मन्त्रियों को कष्ट, ज्वार, अफीम, काली मिर्च, क्रूड तथा अन्य काली वस्तुएं तेज होंगी-

सिन्धुतीरे च सौराष्ट्रे महर्घं तस्कराद्भयम्।।

(*iii*) ग्रहण का नक्षत्र फल—ग्रहण हस्तनक्षत्र में घटित होने से तेजस्वी, व्यापारी, हाथी आदि चौपाये, पण्डित, शास्त्रों को जानने वाले, विद्वान् लोगों को कष्ट हो। चावल, चने आदि धान्य की कृषि नष्ट होगी। इनके भाव बढ़ेंगे।

तेजोयुताश्च वणिजो रथिकुंजराश्च, पुष्पौषधानि भिषजः फलमूतवार्ता।।

कन्या राशि में भी फल अशुभ लिखा गया है। **कवीनां लेखकानांच गायकानां धनक्षयः।**

(*iv*) ग्रहण योग फल—व्याघात योग में ग्रहण होने से मद्य (शराब) पीने वाले, माँस खाने वाले, धन-लोलुप, चोर और पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वालों को पीड़ा एवं कष्ट रहे।

ये मद्यमांसाभिरतार्थ लोलुपा, ये तस्करा येऽपि च जीवघातकाः।
निपीडयेत्तान् गिरिवासिनो जनान्, व्याघातयोगे रविशीतगुग्रहः।।

यहाँ ध्यात्व्य है कि चार खग्रास चन्द्रग्रहणों की श्रृंखला में यह तृतीय चन्द्रग्रहण है क्योंकि लगातार चार खग्रास चन्द्रग्रहण हज़ारों वर्षों पश्चात् ही घटित होते हैं। कभी खग्रास के बाद खण्डग्रास या अल्पग्रास चन्द्रग्रहण घटित होते रहते हैं। (चार खग्रास ग्रहणों की श्रृंखला अनेकों वर्षों पश्चात् ही घटित होती है। यथा-(1) 15 अप्रैल, 2014, (2) 8 अक्तूबर, 2014 ई., (3) 4 अप्रैल, 2015 ई., (4) 28 सितम्बर, 2015 ई.।

(2) ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (28 सितम्बर, 2015 ई., भाद्रपद पूर्णिमा, सोमवार)—यह ग्रहण भाद्रपद पूर्णिमा तदनुसार 28 सितम्बर, 2015 ई., को भारत के केवल पश्चिमी गुजरात एवं पश्चिमी राजस्थान के सुदूर क्षेत्रों में कुछ ही मिनटों के लिए चन्द्रास्त के समय आरम्भ होता हुआ दिखाई देगा। भारत के अन्य किसी भी क्षेत्र/नगर में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। जिस नगर में चन्द्रास्त $6^{घं.}$ $37^{मिं.}$ से पहले होगा, वहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। भूगोल पर भा.स्टैं.टा. के अनुसार इसका प्रारम्भ, मोक्षादि काल इस प्रकार से होगा-

	घं. मिं.	
ग्रहण प्रारम्भ	6-37	28 सितं., 2015 ई., सोमवार प्रातः (भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ	7-41	
ग्रहण मध्य	8-17	
खग्रास समाप्त	8-54	
ग्रहण समाप्त	9-57	

[चन्द्रमालिन्य प्रारम्भ-$5^{घं.}$-$40^{मिं.}$, चन्द्र मालिन्य समाप्त $10^{घं.}$-$54^{मिं.}$]

केवल गुजरात के पश्चिमी नगरों में चन्द्रास्त से लगभग 4-5 मिनट पहले ही यह ग्रहण प्रारम्भ होगा। अधिक-से-अधिक 5 मिनट के लिए ही इन क्षेत्रों में दिखाई देगा। यहाँ भी इसका ग्रास अत्यन्त अल्प होगा, अत: इन नगरों में भी इस ग्रहण का कोई विशेष माहात्म्य नहीं होगा। (इन नगरों का चन्द्रास्त समय तथा पर्वकाल अलग से दिया गया है।

ग्रहण चित्र (2) में दी गई 'क-ख' रेखा से बाईं ओर स्थित गुजरात व राज. राज्य के सीमावर्ती नगरों में ही यह ग्रहण चन्द्रास्त के समय देखा जा सकेगा। रेखा के दाईं ओर स्थित सभी नगरों (शेष भारत) में यह ग्रहण नहीं देखा जा सकेगा क्योंकि शेष भारत में ग्रहण प्रारम्भ होने से पहले ही चन्द्रमा अस्त हो चुका होगा। भारत के अधिकांश नगरों में ('क-ख' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों को छोड़कर) 6घं.-37मिं. से पहले ही चन्द्र अस्त हो जाएगा।

इस ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण को 'क-ख' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों में प्रात: पश्चिमी क्षितिज की ओर चन्द्रमा अस्त होते देखा जा सकेगा।

भारत के कुछ भाग के अतिरिक्त यह ग्रहण पश्चिमी एशिया (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, अफ्रीका, इंग्लैण्ड आदि सारे यूरोप, अमरीका, दक्षिणी अमरीका में दिखाई देगा।) (देखें ग्रहण चित्र-विश्व-परिदृश्य)

ध्यान रहें, ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण का पर्वकाल ग्रहण के प्रारम्भ से चन्द्रमा के अस्तकाल तक ही माना जाता है। अत: चन्द्रमा के अस्त हो जाने पर वहाँ स्नान कर लेना चाहिए।

क्योंकि यह ग्रहण सोमवार के दिन घटित हो रहा है, अतएव यह **'चूड़ामणि चन्द्रग्रहण'** कहलाया जाएगा।

ग्रहण का सूतक—जिस क्षेत्र में ('क-ख' रेखा से बाईं ओर) यह ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण दिखाई देगा, केवल वहीं इस ग्रहण के सूतक का विचार होगा तथा 27 सितं. को सूर्यास्त के समय प्रारम्भ हो जाएगा।

क्योंकि यह ग्रहण भारत के सुदूर पश्चिमोत्तर क्षेत्रों (पश्चिम राजस्थान, पश्चिम गुजरात) को छोड़कर शेष भारत में दिखाई नहीं देगा। अतएव भारत के अधिकांश भागों में ('क-ख' रेखा के दाईं ओर के क्षेत्र) इस चन्द्रग्रहण का कोई माहात्म्य, सूतकादि धार्मिक कृत्यों का विचार नहीं होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण मीन राशि तथा उ. भाद्रपद नक्षत्र में घटित हो रहा है। अतएव इन राशि वालों को विशेष रूप से जप, पाठ, दानादि अवश्य करना चाहिए। शेष राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन हानि	लाभ उन्नति	रोग कष्ट भय	संतान संबंधी कष्ट	शत्रु भय, साधारण लाभ	स्त्री/पति कष्ट	रोग, गुप्त चिन्ता	खर्च अधिक, कार्य विलम्ब	कार्य सिद्धि	धन लाभ	खर्च अधिक, यात्रा	दुर्घटना, शरीर कष्ट

ग्रहण का अन्यफल—समुद्र से उत्पन्न होने वाले जलद्रव्य एवं वस्तुएं, नमक, धान्य तेल आदि महँगे होंगे। यमुना के तटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को कष्ट हो। दुर्भिक्ष तथा कम वर्षा से अनाजादि महँगें हों। स्त्रियों के गर्भ नाश होगा। कपूर, मदिरा आदि महँगे होंगे।

कर्पूरं मदिराश्चैव विनश्यन्ति वरांगना:। यमुनातटपीडा च दुर्भिक्षं तस्कराद् भयम्।।

ग्रस्तास्त (अल्पकालिक) चन्द्रग्रहण (28 सितम्बर, 2015 ई.)

(पश्चिमी भारत के प्रमुख नगरों में 28 सितं., को चन्द्रास्त काल)

[जहाँ चन्द्रास्त 6घं.-37मिं. से पहले होगा, वहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा]

पश्चि. गुजरात के नगर	चन्द्रास्त घं.	मिं.	पर्व-काल मिं.	पश्चि. गुजरात के नगर	चन्द्रास्त घं.	मिं.	पर्व-काल मिं.	पश्चि. राजस्थान के नगर	चन्द्रास्त घं.	मिं.	पर्वकाल मिं.
								कूरी	6	35	–
खम्भालिया	6	40	3	भुज	6	40	3	खुईआला	6	36	–
जामनगर	6	38	1	भावनगर	6	29	–	जैसलमेर	6	35	–
जूनागढ़	6	35	–	पोरबन्दर	6	40	3	घोटारू	6	38	1
द्वारिका	6	41	4	राजकोट	6	34	–	मियालजर	6	37	–
नालिया	6	42	5	सोमनाथ	6	35	–	मुनाबाओ	6	37	–
								शाहगढ़	6	38	1

खग्रास (ग्रस्तास्त) चन्द्रग्रहण

(28 सितम्बर, 2015 ई.)—विश्व परिदृश्य
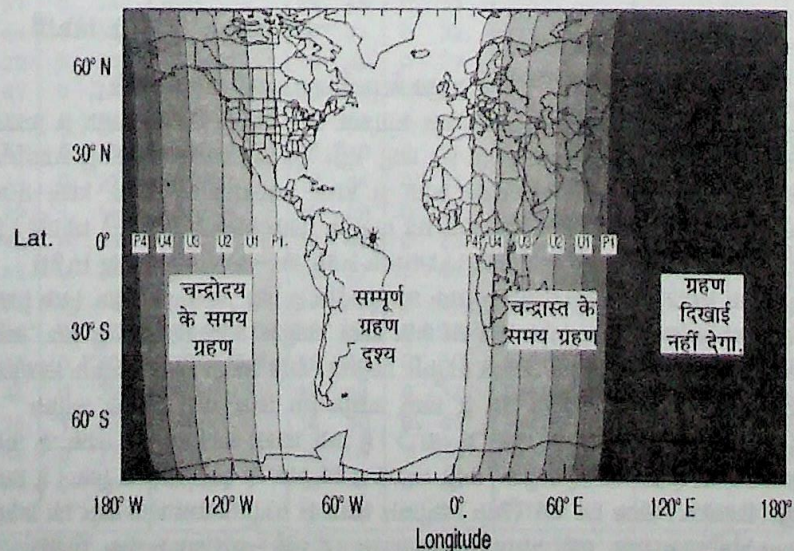
(3) ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई., फाल्गुन अमावस, बुधवार)—यह खग्रास सूर्यग्रहण फाल्गुन अमावस, बुधवार को भारत में खण्डग्रास तथा ग्रस्तोदय खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा। भारत के केवल उत्तर-पश्चिमी व पश्चिमी भागों [पश्चिमी पंजाब, पश्चिमी जम्मू-कश्मीर, पश्चिमी राजस्थान व पश्चि. गुजरात, पश्चि. महाराष्ट्र आदि] में दिखाई नहीं देगा। भूगोल पर यह खग्रास सूर्यग्रहण भा.स्टैं.टा. अनुसार इस प्रकार होगा—

	घं. मिं.	
ग्रहण आरम्भ	04-49	
खग्रास प्रारम्भ	05-47	
परमग्रास	07-27	**भा. स्टैं. टा.**
खग्रास समाप्त	09-08	**(9 मार्च, 2016 ई.)**
ग्रहण समाप्त	10-05	

भारत के अतिरिक्त यह सूर्यग्रहण दक्षिणी-पूर्वी एशिया, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, दक्षिणी कोरिया, जापान, सिंगापुर तथा आस्ट्रेलिया में दिखाई देगा। इस ग्रहण का सम्पूर्ण घटनाक्रम (आरम्भ, परमग्रास तथा समाप्ति) सुमार्ता, बोरनियो, इण्डोनेशिया तथा उत्तर-प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा।

आगे पृष्ठ 22 पर ग्रहण चित्र (3) में **'क-ख'** रेखा से दाईं ओर के उत्तर-पूर्वी प्रदेशों में जब सूर्योदय होगा, तब कुछ मिनटों बाद ही इस ग्रहण का आरम्भ हो जाएगा। इन क्षेत्रों में खण्डग्रास ग्रहण आरम्भ से ग्रहण समाप्ति तक देखा जा सकेगा। **'क-ख'** रेखा के बाईं ओर तथा **'क-ख'** और **'ट-ठ'** रेखा के मध्यवर्ती नगरों में इस ग्रहण का परमग्रास से ग्रहण समाप्ति ही देखी जा सकेगी। **'ट-ठ'** रेखा से बाईं ओर तथा **'च-छ'** रेखा के दाईं ओर के नगरों में सूर्योदय के बाद इस ग्रहण की केवल समाप्ति ही देखी जा सकेगी। ज्यों-ज्यो हम पश्चिम की ओर बढ़ेंगे, ग्रहण की अवधि उतनी कम होती जाएगी। ग्रहण का ग्रास भी उतना ही कम होता जाएगा। **इन स्थानों पर यह ग्रस्तोदित होगा** अर्थात् सूर्योदय होने से पूर्व ही सूर्य ग्रस्त हो जाएगा। अतः यहाँ इस ग्रहण का स्पर्श नहीं देखा जा सकेगा, केवल ग्रहण मोक्ष ही देखा जा सकेगा। **'च-छ'** रेखा से बाईं ओर के नगरों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। आगे पृष्ठ 21 पर भारत के प्रसिद्ध-2 नगरों में ग्रहण आरम्भ, परमग्रास तथा ग्रहण-समाप्ति काल के साथ-साथ सूर्योदय तथा पर्वकाल भी दे दिया गया है। जिससे आप अपने स्थानीय नगर में ग्रहण आरम्भ जान सकते हैं। आप ग्रहण चित्र (3) से भी सुगमतापूर्वक जान सकते हैं कि अमुक नगर/क्षेत्र में यह ग्रहण दिखाई देगा अथवा नहीं।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक स्पर्शकाल से ठीक 12 घण्टे पूर्व 8 मार्च की सायं 16^घं.^ 49^मिं.^ से प्रारम्भ हो जाएगा (**'क-ख'** रेखा के दाईं ओर)। लेकिन ग्रस्तोदय ग्रहण (**'क-ख'** रेखा के बाईं ओर) स्पर्शकाल से ठीक 12 घण्टे पूर्व सूतक का वास्तविक प्रारम्भ काल होता है। **'च-छ'** रेखा के बाईं ओर (जहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा) के क्षेत्र में सूतकादि का विचार नहीं होगा। तदनुसार धार्मिक कृत्य किए जा सकते हैं।

ग्रहण का पर्वकाल—पृष्ठ 21 पर भारत के लगभग 100 नगरों का सूर्योदयकाल, ग्रहण का मोक्षकाल तथा सूर्योदय से ग्रहण समाप्ति (मोक्ष) तक का काल (पर्वकाल) दिया गया है। जहाँ सूर्योदय होने के बाद ग्रहण प्रारम्भ होगा, वहाँ ग्रहण प्रारम्भ से ग्रहण समाप्ति तक के काल को पर्वकाल लिखा गया है। ('क-ख' रेखा के दाईं ओर के नगरों में।)

क्योंकि लगभग उत्तर-मध्य एवं दक्षिण भारत में यह ग्रहण ग्रस्तोदय है। अतः इसका पर्वकाल सूर्योदय से ही प्रारम्भ होगा। इसलिए सूर्योदय होने से पूर्व ही धार्मिक लोगों को जप, पूजा, दान में प्रवृत्त हो जाना चाहिए। ग्रहण मोक्ष पर पुनः स्नान करके संकल्पपूर्वक दानादि कार्य करने चाहिए। 'च-छ' रेखा से बाईं ओर के नगरों में ग्रहण-सम्बन्धी माहात्म्य नहीं होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र तथा कुम्भ राशि में घटित हो रहा है। अतएव इस राशि व नक्षत्र वालों के लिए इस ग्रहण का फल विशेष अशुभकारक होगा। जन्म-नक्षत्र अथवा अनिष्टकारक नक्षत्र में ग्रहण लगने पर उसके दोष की शान्ति हेतु सूर्यग्रहण में सोने के बिम्ब तथा गौ, भूमि, तिल एवं घी का यथाशक्ति दान देने का माहात्म्य शास्त्रों में प्रतिपादित है। भगवत् नाम-संकीर्तन और जपादि तो सभी को करना ही चाहिए—

''सूर्येन्दुग्रहण यावत्तावत्कुर्याजपादिकम्।।''

द्वादश राशियों पर प्रभाव—

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन लाभ	गुप्त चिन्ता	संतान कष्ट गुप्त चिंता	लाभ सौख्य	स्त्री/ पति कष्ट	रोग, कष्ट भय	मान-हानि खर्च	कार्य सिद्धि	धन प्राप्ति	खर्च, यात्रा, धन-हानि	चोट से शरीर कष्ट	धन हानि

ग्रहण का अन्य फल—(*i*) ग्रहण का राशि/नक्षत्र फल-सूर्यग्रहण कुम्भ राशि एवं पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में घटित होने से पश्चिमी प्रदेशों के पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वालों, पशु पालने वालों, हिंसा, चोर तथा नीच प्रकृति वाले लोगों को कष्ट एवं पीड़ा होगी।

कुम्भोपरागे पीडयन्तेगिरिजाः पश्चिमाजनाः।.........।।

(*ii*) ग्रहण वार फलम्—सूर्यग्रहण बुधवार को होने से चावल आदि सभी धान्यों का नाश हो, सोना, पीतल आदि धातुओं में तेजी बनेगी—

पीतधातुमहर्घत्वं सारधान्यं विनश्यति।।

(*iii*) ग्रहण-योग फल—ग्रहण साध्य योग में होने से उपवास करने वाले, साधु, पवित्र रहने वाले, सत्यवादी, व्यापारी, स्मृति तथा वेद का अध्ययन करने वाले तथा ब्राह्मणों को पीड़ा एवं कष्टों का सामना करना पड़े—

उपवासपराश्च साधवः शुचयः सत्यरता वणिग्जनाः।
स्मृतिवेदविदश्च वाडवा युजि साध्ये ग्रहणं यदि स्यात्।।

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (4 अप्रैल, 2015 ई.)

भारत के प्रसिद्ध नगरों में 4 अप्रैल, 2015 ई. को चन्द्रोदय तथा पर्वकाल (भा.स्टैं.टा.)

[पर्वकाल=चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति (19घं.–15मि.) तक का काल]

नगर	चन्द्रोदय घं.	मि.	पर्व काल घं.	मि.
अगरतला	17	39	1	36
अमृतसर	18	50	0	25
अबोहर	18	52	0	23
अम्ब (हि.प्र.)	18	45	0	30
अर्की (हि.प्र.)	18	41	0	34
अम्बाला	18	41	0	34
अनन्तनाग(का.)	18	50	0	25
अखनूर	18	51	0	24
अजमेर	18	49	0	26
अलवर	18	41	0	34
अहमदाबाद	18	55	0	20
अकोला (म.)	18	35	0	40
आनन्दपुर सा.	18	43	0	32
आदमपुर (पं.)	18	46	0	29
आगरा	18	35	0	40
इन्दौरा(हि.प्र.)	18	46	0	29
इन्दौर (म.प्र.)	18	41	0	34
इलाहाबाद	18	19	0	56
इम्फाल (मणि)*	17	30	1	45
ईटानगर*	17	32	1	43
ऊना (हि.प्र.)	18	44	0	31
ऊधमपुर (का.)	18	50	0	25
उदयपुर (राज.)	18	51	0	24
उज्जैन	18	43	0	32
एजवाल (मिज़ो)	17	34	1	41
ऋषिकेश	18	33	0	42
औरंगाबाद (म.)	18	41	0	34
कपूरथला	18	47	0	28
करतारपुर	18	47	0	28
करसोग	18	40	0	35
कसौली	18	41	0	34
कण्डाघाट (हि.प्र.)	18	41	0	34

नगर	चन्द्रोदय घं.	मि.	पर्व काल घं.	मि.
करनाल	18	40	0	35
कठुआ	18	48	0	27
कटक	18	01	1	14
कन्याकुमारी	18	29	0	46
कालका(हरि.)	18	41	0	34
काँगड़ा	18	44	0	31
कानपुर	18	25	0	50
किश्तवाड़	18	47	0	28
कुराली	18	43	0	32
कुल्लू	18	40	0	35
कुमारसेन	18	39	0	36
कुरुक्षेत्र	18	41	0	34
कूचबिहार	17	48	1	27
कैथल	18	42	0	33
कोटकपूरा (पं.)	18	50	0	25
कोटखाई (हि.प्र.)	18	39	0	36
कोलकाता	17	51	1	24
कोचीन (के.)	18	35	0	40
कोहिमा(ना.)*	17	29	1	46
खन्ना (पं.)	18	44	0	31
खरड़ (पं.)	18	43	0	32
खण्डवा(म.प्र.)	18	39	0	36
गढ़शंकर	18	44	0	31
गगरेट(हि.प्र.)	18	45	0	30
गया	18	06	1	09
गाज़ियाबाद	18	37	0	38
गाँधीनगर	18	56	0	19
गंगटोक (सि.)	17	52	1	23
गुरदासपुर	18	47	0	28
गुड़गांव	18	39	0	36
गुवाहाटी	17	39	1	36
गोराया(पं.)	18	46	0	29

नगर	चन्द्रोदय घं.	मि.	पर्व काल घं.	मि.
गोहाना (हरि.)	18	40	0	35
गोवा	18	46	0	29
गोरखपुर	18	13	1	02
ग्वालियर	18	33	0	42
घुमारवीं(हि.प्र.)	18	42	0	33
चण्डीगढ़	18	41	0	34
चम्बा	18	46	0	29
चमोली(उत्तरां)	18	31	0	44
चिन्तपूर्णी	18	45	0	30
चेन्नई	18	19	0	56
छिन्दवाड़ा	18	28	0	47
जलालाबाद (पं.)	18	52	0	23
जस्सूर(हि.प्र.)	18	45	0	30
जगाधरी	18	39	0	36
जम्मू	18	51	0	24
जयपुर	18	44	0	31
जबलपुर(म.प्र.)	18	25	0	50
जलगांव (महा.)	18	41	0	34
जालन्धर	18	47	0	28
जीन्द	18	42	0	33
जोधपुर	18	54	0	21
जोरहाट(आ.)	17	29	1	46
जोगिन्द्रनगर	18	42	0	33
ज्वाली (हि.प्र.)	18	45	0	30
झाँसी	18	32	0	43
झुंझुनू	18	45	0	30
टोहाना	18	45	0	30
डल्हौजी	18	46	0	29
डिब्रूगढ़ (आ.)*	17	26	1	49
डोडा (का.)	18	48	0	27
तरनतारन	18	49	0	26
तलवाड़ा	18	47	0	28

नगर	चन्द्रोदय घं.	मि.	पर्व काल घं.	मि.
तेजू	17	21	1	54
त्रिवन्तपुरम (के.)	18	33	0	42
दार्जिलिंग	17	53	1	22
द्वारिका	19	10	0	5
दिल्ली	18	39	0	36
दीनानगर	18	47	0	28
दुर्ग(३६गढ़)	18	19	0	56
देहरादून	18	36	0	39
दौलतपुर (हि.प्र.)	18	45	0	30
धर्मपुर	18	41	0	34
धारीवाल	18	48	0	27
धूरी	18	45	0	30
नकोदर	18	47	0	28
नवांशहर	18	44	0	31
नंगल	18	44	0	31
नगरोटा(हि.प्र.)	18	43	0	32
नवलगढ़	18	46	0	29
नाभा	18	43	0	32
नादौन	18	44	0	31
नाहन	18	40	0	35
नालागढ़	18	44	0	31
नारकण्डा	18	39	0	36
नारनौल(हरि.)	18	42	0	33
नागपुर	18	27	0	48
नासिक	18	48	0	27
नूरमहल (पं.)	18	48	0	27
नूरपुर (हि.प्र.)	18	45	0	30
नैनादेवी	18	43	0	32
नैनीताल	18	30	0	45
पटना	18	05	1	10
पटियाला	18	42	0	33
पठानकोट	18	46	0	29

नगर	चन्द्रोदय घं.	मि.	पर्व काल घं.	मि.
परवाणू (हि.प्र.)	18	41	0	34
पणजी (गोआ)	18	47	0	28
पंचकूला	18	42	0	33
पालमपुर	18	43	0	32
पानीपत	18	40	0	35
पुँछ (ज.का.)	18	55	0	20
पूना	18	49	0	26
पोर्ट-ब्लेयर*	17	29	1	46
फरीदकोट	18	49	0	26
फगवाड़ा	18	46	0	29
फतेहगढ़ सा.	18	44	0	31
फतेहाबाद (हरि.)	18	46	0	29
फरीदाबाद	18	38	0	37
फाज़िल्का	18	52	0	23
फिल्लौर	18	46	0	29
फिरोज़पुर	18	50	0	25
बरनाला (पं.)	18	46	0	29
बटाला	18	48	0	27
बंगा	18	45	0	30
बलाचौर	18	44	0	31
बड़सर (हि.प्र.)	18	43	0	32
बनीखेत (हि.प्र.)	18	46	0	29
बल्लभगढ़	18	38	0	37
बहादुरगढ़	18	39	0	36
बनिहाल (का.)	18	50	0	25
बसौली (का.)	18	44	0	31
बनारस(वाराणसी)	18	14	1	01
बड़ौदा	18	51	0	24
बिलासपुर(हि.प्र.)	18	42	0	33
बीकानेर	18	54	0	21
बुलन्दशहर	18	36	0	39
बैजनाथ (हि.प्र.)	18	30	0	45
बैंगलुरु	18	30	0	45

* = इन नगरों में ही केवल परमग्रास या खग्रास समाप्ति दिखेगी, शेष भारत में केवल ग्रहण समाप्ति दृश्य होगी।

नगर	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मिं.	पर्व काल घं.	पर्व काल मिं.
भटिण्डा	18	48	0	27
भद्रवाह (का.)	18	47	0	28
भिवानी	18	43	0	32
भुन्तर (हि.प्र.)	18	41	0	34
भुवनेश्वर	18	00	1	15
भोपाल	18	35	0	40
मलेरकोटला	18	45	0	30
मण्डी (हि.प्र.)	18	41	0	34
मनाली	18	40	0	35
महेन्द्रगढ़	18	42	0	33
मथुरा	18	36	0	39
मानसा (पं.)	18	47	0	28
मुकेरिया	18	45	0	30
मुक्तसर	18	50	0	25
मुम्बई	18	52	0	23
मुजफ्फरनगर	18	37	0	38
मेरठ	18	36	0	39
मोगा (पं.)	18	48	0	27
मोहाली	18	42	0	33
यमुनानगर	18	39	0	36
राजपुरा (पं.)	18	42	0	33
राजकोट (गु.)	19	02	0	13
राहों (पं.)	18	45	0	30
रामपुरबुशैहर	18	39	0	36
राजौरी (का.)	18	53	0	22
रामबन (का.)	18	49	0	26
रायगढ़ (३६गढ़)	18	10	1	05
रायपुर (३६गढ़)	18	18	0	57
राँची	18	03	1	12
रिवाड़ी(हरि.)	18	40	0	35
रियासी(का.)	18	50	0	25
रूड़की	18	37	0	38
रोपड़ (पं.)	18	43	0	32
रोहड़ू (हि.प्र.)	18	38	0	37
रोहतक	18	41	0	34
रोंयिंग (अरु.प्र.)*	17	23	1	52
लखनऊ	18	23	0	52
लाडवा(हरि.)	18	40	0	35

नगर	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मिं.	पर्व काल घं.	पर्व काल मिं.
लुधियाना	18	46	0	29
विशाखापट्टनम	18	09	1	06
विकासनगर	18	37	0	38
शाहकोट (पं.)	18	48	0	27
शाहाबाद (हरि.)	18	40	0	35
शाहदरा (दिल्ली)	18	38	0	37
शिमला	18	40	0	35
शिलांग (मे.)	17	38	1	37
श्रीनगर (का.)	18	52	0	23
श्रीगंगानगर	18	53	0	22
संगरूर	18	45	0	30
सरहिन्द	18	44	0	31
समाना (पं.)	18	43	0	32
सपाटू (हि.प्र.)	18	41	0	34
सरकाघाट	18	44	0	31
सहारनपुर	18	38	0	37
साम्बा (का.)	18	50	0	25
सागर (म.प्र.)	18	30	0	45
सिरमौर	18	39	0	36
सिलचर*	17	34	1	41
सिरसा (हरि.)	18	48	0	27
सिलीगुड़ी	17	52	1	23
सीकर (रा.)	18	47	0	28
सुनाम (पं.)	18	45	0	30
सुन्दरनगर	18	42	0	33
सुजानपुर टिहरा	18	43	0	32
सूरत	18	53	0	22
सोलन	18	41	0	34
सोनीपत	18	39	0	36
हमीरपुर (हि.प्र.)	18	43	0	32
हनुमानगढ़	18	51	0	24
हरिद्वार	18	36	0	39
हाजीपुर (पं.)	18	47	0	28
हाँसी (हरि.)	18	43	0	32
हिसार	18	44	0	31
हैदराबाद	18	28	0	47
होशियारपुर	18	45	0	30

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (4 अप्रैल, 2015 ई.)

यह ग्रहण चन्द्रोदय के समय 'क-ख' रेखा के दाईं ओर के नगरों में परमग्रास, खग्रास समाप्ति दिखाई देगी। 'च-छ' रेखा से 'क-ख' रेखा के मध्यवर्ती नगरों में खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण समाप्ति दिखाई देगी। जबकि 'च-छ' रेखा से बाईं ओर शेष भारत में केवल ग्रहण समाप्ति दिखाई देगी।

भारत के प्रसिद्ध नगरों में सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.) का स्पर्श, मोक्ष आदि काल (भा. स्टैं. टा.)

नगर	खण्डग्रास प्रारम्भ घं.	मिं.	परमग्रास घं.	मिं.	खण्डग्रास समाप्त घं.	मिं.	सूर्योदय घं.	मिं.	पर्वकाल घं.	मिं.
अगरतला	–	–	6	09	6	52	5	40	1	12
अम्बाला	–	–	–	–	6	43	6	41	0	02
अहमदाबाद	–	–	–	–	–	–	6	53	–	–
आगरा	–	–	–	–	6	45	6	35	0	10
ईलाहाबाद	–	–	–	–	6	47	6	19	0	28
इम्फाल	5	32	6	11	6	53	5	31	1	21
ईटानगर	5	41	6	15	6	51	5	32	1	10
इन्दौर	–	–	–	–	6	47	6	42	0	05
ऊना (हि.प्र.)	–	–	–	–	–	–	6	43	–	–
उज्जैन	–	–	–	–	6	47	6	43	0	04
ऐजवाल(मिज़ो)	–	–	6	09	6	53	5	35	1	18
करनाल	–	–	–	–	6	44	6	40	0	04
कटक	–	–	6	04	6	49	6	01	0	48
कन्याकुमारी	–	–	–	–	6	47	6	30	0	17
कैथल (हरि.)	–	–	–	–	6	44	6	42	0	02
कुरुक्षेत्र	–	–	–	–	6	43	6	41	0	02
कोलकाता	–	–	6	07	6	50	5	51	0	59
कोहिमा (नागा.)	5	35	6	13	6	53	5	28	1	18
कोचीन	–	–	–	–	6	47	6	35	0	12
कानपुर	–	–	–	–	6	46	6	25	0	21
कुराली	–	–	–	–	6	42	6	42	–	–
कूच-बिहार	–	–	6	12	6	49	5	48	1	01
गया	–	–	6	08	6	48	6	07	0	41
गंगटोक	–	–	6	13	6	48	5	52	0	56
गाज़ियाबाद	–	–	–	–	6	44	6	38	0	06
गुड़गांव	–	–	–	–	6	45	6	40	0	05
गुवाहाटी	–	–	6	12	6	50	5	40	1	10
गोवा (पंजिम)	–	–	–	–	6	48	6	47	0	01

नगर	खण्डग्रास प्रारम्भ घं.	मिं.	परमग्रास घं.	मिं.	खण्डग्रास समाप्त घं.	मिं.	सूर्योदय घं.	मिं.	पर्वकाल घं.	मिं.
चण्डीगढ़	–	–	–	–	6	43	6	40	0	03
चेन्नई	–	–	–	–	6	48	6	21	0	27
जयपुर	–	–	–	–	6	46	6	44	0	2
जबलपुर (म.प्र.)	–	–	–	–	6	47	6	25	0	22
जलगांव (महा.)	–	–	–	–	6	47	6	42	0	05
डिब्रूगढ़ (आ.)	5	42	6	16	6	52	5	25	1	10
तामेलौंग	5	34	6	12	6	53	5	31	1	19
दार्जिलिंग	–	–	6	13	6	48	5	53	0	55
दिल्ली	–	–	–	–	6	45	6	38	0	07
दुर्ग(३६गढ़)	–	–	–	–	6	48	6	19	0	29
देहरादून	–	–	–	–	6	43	6	35	0	08
नादौन	–	–	–	–	–	–	6	44	–	–
नाहन (हि.प्र.)	–	–	–	–	6	43	6	39	0	04
नालागढ़	–	–	–	–	–	–	6	43	–	–
नागपुर	–	–	–	–	6	48	6	27	0	21
नालगोंडा	–	–	–	–	6	48	6	26	0	22
पटना	–	–	6	10	6	48	6	05	0	43
पटियाला	–	–	–	–	–	–	6	42	–	–
पंचकूला	–	–	–	–	6	43	6	41	0	02
पालमपुर	–	–	–	–	–	–	6	43	–	–
पानीपत	–	–	–	–	6	44	6	40	0	04
पांवटा सा.	–	–	–	–	6	43	6	37	0	06
पूना	–	–	–	–	–	–	6	49	–	–
पुरी (उड़ी)	–	–	6	03	6	50	6	01	0	49
पोर्ट-ब्लेयर	–	–	5	56	6	54	5	31	1	23
पोंडीचेरी	–	–	–	–	6	48	6	23	0	25
फरीदाबाद	–	–	–	–	6	45	6	39	0	06
बहादुरगढ़	–	–	–	–	6	44	6	40	0	04
बनारस (वाराणसी)	–	–	–	–	6	47	6	13	0	34
बिलासपुर (हि.प्र.)	–	–	–	–	–	–	6	41	–	–
बैंगलुरु	–	–	–	–	6	47	6	32	0	15

नगर	खण्डग्रास प्रारम्भ घं.	मिं.	परमग्रास घं.	मिं.	खण्डग्रास समाप्त घं.	मिं.	सूर्योदय घं.	मिं.	पर्वकाल घं.	मिं.
भागलपुर(बि.)	–	–	6	10	6	48	5	59	0	49
भोपाल	–	–	–	–	6	47	6	36	0	11
भुवनेश्वर	–	–	6	04	6	49	6	01	0	48
मण्डी (हि.प्र.)	–	–	–	–	–	–	6	40	–	–
मदुरई	–	–	–	–	6	47	6	28	0	19
मथुरा	–	–	–	–	6	45	6	36	0	09
मुज्जफरपुर	–	–	6	11	6	47	6	04	0	43
मुर्शीदाबाद	–	–	6	09	6	50	5	52	0	58
मेरठ	–	–	–	–	6	44	6	37	0	07
मैंगलोर (कर्ना.)	–	–	–	–	6	47	6	43	0	04
मैसूर	–	–	–	–	6	47	6	35	0	12
यमुनानगर	–	–	–	–	6	43	6	39	0	04
रायपुर(३६गढ़)	–	–	–	–	6	48	6	18	0	30
राँची	–	–	6	07	6	49	6	04	0	45
रोहतक	–	–	–	–	6	44	6	42	0	02
लखनऊ	–	–	–	–	6	46	6	23	0	23
शिमला	–	–	–	–	6	42	6	39	0	03
शिलांग(मे.)	–	–	6	12	6	51	5	39	1	12
सरकाघाट	–	–	–	–	–	–	6	44	–	–
सहारनपुर	–	–	–	–	6	43	6	38	0	05
सिलिगुड़ी(बंगा.)	–	–	6	12	6	48	5	53	0	55
सिलचर(आसा.)	–	–	6	11	6	52	5	35	1	17
सिबसागर (आसा.)	5	39	6	15	6	52	5	27	1	13
Sringeri (Karn.)	–	–	–	–	6	47	6	40	0	07
सोलन	–	–	–	–	6	43	6	39	0	04
हमीरपुर (हि.प्र.)	–	–	–	–	–	–	6	42	–	–
हरिद्वार	–	–	–	–	6	43	6	34	0	09
हैदराबाद	–	–	–	–	6	48	6	29	0	19

'–' = जहाँ पर्वकाल के नीचे समय नहीं लिखा, वहाँ यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा।
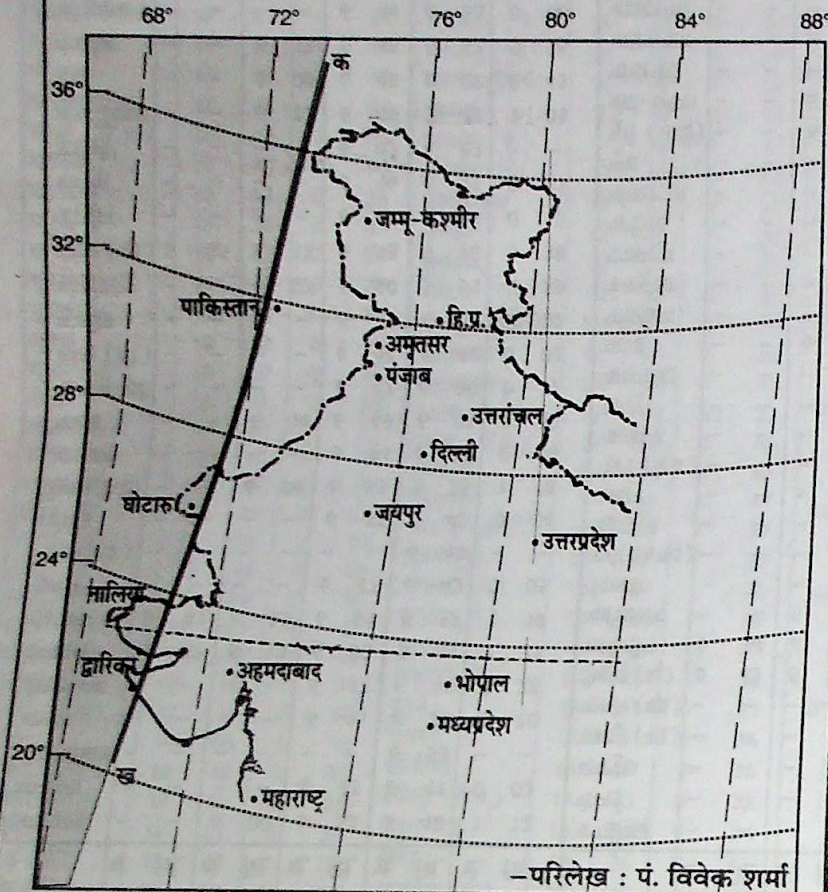
'क-ख' रेखा से बाईं ओर ही यह ग्रहण दिखाई देगा। शेष भारत में दिखाई नहीं देगा।
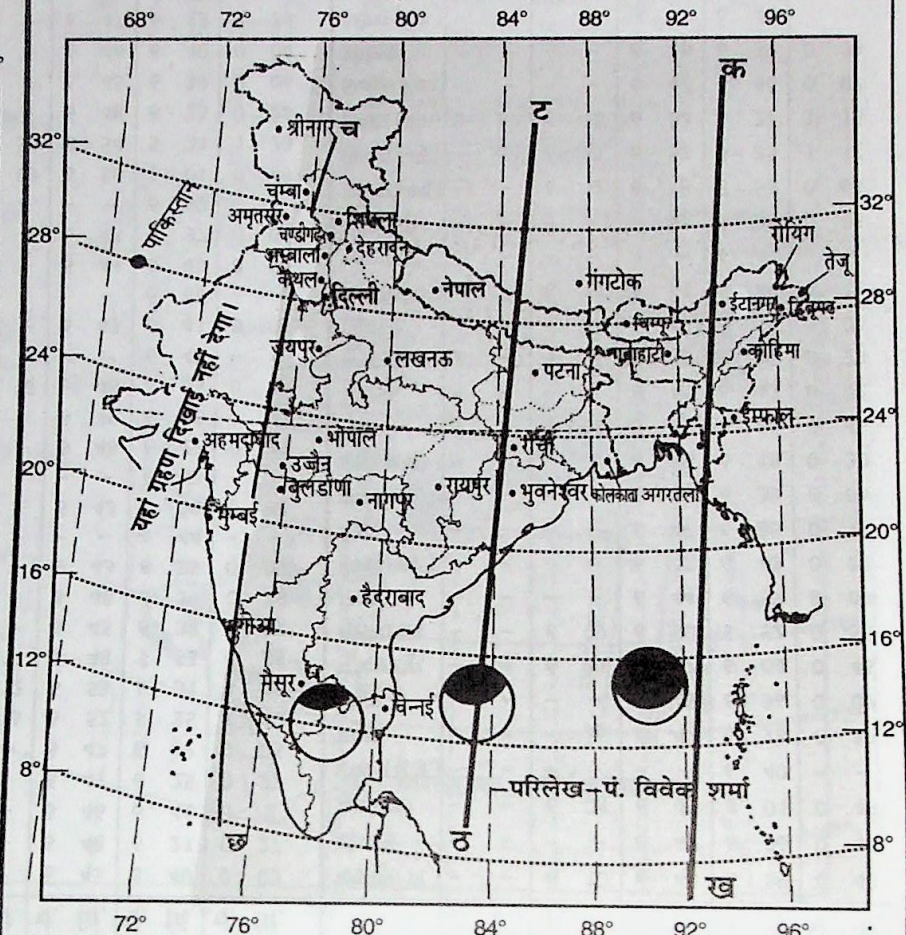
'च-छ' रेखा के बाईं ओर नगरों/ग्रामों में यह खण्डसूर्यग्रहण दिखाई नहीं देगा। 'क-ख' रेखा के दाईं ओर के नगरों में खण्ड सूर्यग्रहण के सभी घटनाक्रम दिखाई देंगे (खण्डग्रास आरम्भ से ग्रहण-समाप्ति)। 'क-ख' तथा 'ट-ठ' रेखा के मध्यवर्ती नगरों में परमग्रास से ग्रहण समाप्ति ही देखी जा सकेगी। जबकि 'च-छ' तथा 'ट-ठ' रेखा के मध्यवर्ती नगरों में सूर्योदय के बाद केवल ग्रहण-समाप्ति ही देखी जा सकेगी। (पृष्ठ 21 भी देखें)

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०७२ (सन् 2015-16 ई.)

गतवर्ष 2 नवबंर 2014 ई० से ही शनि देव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट हो चुके हैं। **वि. संवत २०७२ (सन् 2015-16 ई०) में शनि देव वृश्चिक राशि में ही संचार करेंगे।**

14 मार्च से 1 अगस्त 2015 ई० तक की अवधि में शनि वक्री अवस्था में रहेंगे। दो (२) अगस्त से वृश्चिक राशि में ही मार्गी होंगे। 24 मार्च सं० 2016 ई० तक मार्गी रहेंगे। 25 मार्च 2016 ई० से संवत के अन्त (7 अप्रैल) तक वक्री स्थिति में वृश्चिक राशि में ही संचरणशील रहेंगे।

ध्यान रहे ! शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करता है, तो वह ग्रह और भी अधिक क्रूर एवं अशुभफल प्रदायक हो जाता है तथा बुध, शुक्रादि शुभ-ग्रह वक्री हों, तो और अधिक शुभ-फल देने वाले होते हैं-

क्रूरा वक्रा महाक्रूराः, सौम्या वक्रा महाशुभाः।

अर्थात् शनि आदि क्रूर ग्रह यदि जातक की कुण्डली में नीच राशिस्थ, शत्रु आदि विरुद्ध राशि में संचार करता हो, तो जातक/जातिका के जीवनकाल में आर्थिक परेशानियां, शरीर कष्ट, आय में अड़चनें, खर्चों की अधिकता, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। किसी राष्ट्र की वर्ष कुण्डली में शनि वक्री होकर अशुभ हो तो सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों में उथल-पुथल, उपद्रव एवं विशेष राजनैतिक उलटफेर या परिवर्तन, महँगाई या प्राकृतिक प्रकोपों का भय, लोगों में असुरक्षा की भावना हो आदि अशुभ फल घटित होने की सम्भावनाएँ होती हैं।

जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में शनि वक्री होकर साढ़ेसती या ढैय्या के रूप में अशुभ प्रभाव कर रहा हो, तो जातक/जातिका को मानसिक तनाव, परिवारिक एवं आर्थिक उलझनें, शरीर कष्ट, रोग-भय, आय कम व खर्च अधिक, निकट बन्धुओं से मतान्तर, शत्रु-भय एवं बनते कामों में विलम्ब तथा विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

☆ वृश्चिक राशिस्थ शनि कालीन साढ़ेसाती एवं ढैय्या ☆

(1 जन. 2015 से संवतान्त् 7 अप्रै., 2016 ई. तक)

☆ साढ़ेसाती-तुला, वृश्चिक व धनु राशि वाले जातक/जातिकाओं को शनि साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा।

☆ शनि की ढैय्या-मेष व सिंह राशि के जातकों को शनि की ढैय्या (अढैय्या) का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा।

शनि साढ़ेसाती या ढैय्या का फल सभी कुण्डलियों में एक जैसा नहीं होता। यदि किसी कुण्डली में शनि त्रिकोणेश (1,5 या 9वें) भावों का स्वामी होकर उच्चस्थ या मित्रक्षेत्री होकर शुभग्रह की दृष्टि में हो, तो शनि साढ़ेसाती या ढैय्या का अशुभ प्रभाव अपेक्षाकृत कम होगा। इसके अतिरिक्त ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा शुभ एवं योगकारक ग्रहों से सम्बन्धित हो तो भी शनि साढ़ेसाती या ढैय्या का अशुभ प्रभाव कम होगा।

→ किसी विशेष राशि पर शनि की साढ़ेसाती/ढैय्या का शुभाशुभ विचार करते समय, उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टियों आदि का प्रभाव तथा सुवर्णादि पाया का विचार कर लेना चाहिए।

☆ शनि का सामान्य गोचरफल-

भूमीशाः क्रोधपूर्णा विषधर मुदिताः राजानां सन्निपातः।
सप्तद्वीप प्रकम्पान्नरपतिमरणं यांति मेघा विनाशनम्।
यदा वृश्चिकगः सौरिः मेदिनी दुख संयुता।
वर्षमात्रमथो चोर्ध्वम् इन्द्र प्रस्थो विनश्यति।।

अर्थात् वृश्चिक का शनि हो, तो राजनेताओं में विग्रह एवं टकराव हो, एवं उनमें क्रोध अधिक रहे। विश्व में अनेक स्थलों पर भूकम्पादि की संभावना हो, किन्हीं विशिष्ट नेताओं की मृत्यु हो। कहीं बहुल वर्षा के कारण धन, जन एवं सम्पदा की हानि हो। पृथ्वी पर दुख एवं पीड़ा युक्त घटनाएँ घटित हों। एक वर्ष बाद इन्द्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली शहर में विनाशकारी घटनाएँ घटित हों।।

सुवर्णादि पाया विचार-शनिदेव 2 नवम्बर, 2014 ई० रविवार को कुम्भ के चन्द्रमाकालीन वृश्चिक राशि में प्रवेश कर चुके हैं। तदनुसार मेषादि राशियों पर ताम्रादि पाया इस प्रकार से है-

(1) मेष, कन्या एवं कुम्भ राशियों पर सुवर्ण (सोना) का पाया होगा। जिससे जातक को संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना होगा। आय में कमी तथा खर्च अधिक रहें। शरीर कष्ट, रोग भय, तनाव तथा बन्धुओं के साथ मतान्तर रहे।

(2) वृष, सिंह, एवं धनु राशियों पर ताम्र का पाया होगा। शुभ फल प्राप्त होंगे। उच्चविद्या प्राप्ति, वाहन, धन सम्पदा का लाभ एवं विवाह, सन्तान, आरोग्यादि सुख, पदोन्नति आदि लाभ प्राप्त होंगे।

(3) मिथुन, तुला एवं मकर राशियों पर चांदी का पाया होगा। पदोन्नति, विदेशगमन, आकस्मिक धन लाभ, भूमि, वाहनादि सुख, स्त्री-सन्तानादि परिवारिक सुखों की प्राप्ति आदि शुभफल होंगे।

(4) **कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशियों पर लौह का पाया होगा।** परिवारिक कलह, घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ, आय में कमी व खर्चों की अधिकता तथा दुर्घटना से चोटादि का भय होता है।

वृश्चिक राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर गोचरफल-सं. २०७२

(1 जन., 2015 ई. से 7 अप्रै., 2016 ई. तक)

✤ **मेष राशि**–वर्षारम्भ में इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु शनि की ढैय्या एवं पाया सुवर्ण होने से वृथा दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। ता. 14 जुला. से गुरु की शुभ दृष्टि होने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होंगे।

✤ **वृष राशि**–वर्षारम्भ में राशिस्वामी शुक्र भाग्य स्थान में होने से निर्वाह योग्य आय के साधन रहेंगे। शनि का पाया ताम्र होने से गृह में मंगल कार्य घटित होगा। परन्तु राशि पर शनि व मंगल की दृष्टियां होने से व्यवसाय में संघर्ष अधिक व खर्च भी बढ़ेंगे। शनि सम्बन्धी उपाय करने शुभ होंगे।

✤ **मिथुन राशि**–प्रारम्भ में शनि छटे तथा राशिस्वामी बुध अष्टम होने से धन हानि तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। 9 मार्च से कुछ सुधार विशेषकर 5 जुला. से बुध स्वराशि में शुभ होगा। इस राशि पर शनि का पाया भी चान्दी होने से धन, भूमि, वाहन एवं परिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी। परन्तु मानसिक तनाव रहेगा।

✤ **कर्क राशि**–वर्ष के पूर्वार्द्ध में इस राशि पर गुरु का संचार तथा शनि पंचमस्थ होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी। इस राशि को शनि का पाया लोहा होने से उत्तरार्द्ध में आर्थिक उलझनों तथा परिवारिक परेशानियों का सामना रहेगा। शनि के उपाय करने शुभ होंगे।

✤ ***सिंह राशि**–पर शनि की ढैय्या का प्रभाव अभी रहेगा। द्वितीय स्थान में राहु का संचार होने से आर्थिक परेशानियों का सामना रहेगा। परंतु शनि का पाया ताम्र होने से तथा 14 जुला. से गुरु का संचार होने से मंगल कार्य एवं निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।*

✤ ***कन्या राशि**–वर्षारम्भ में शनि तृतीयस्थ है, जबकि राहु लग्न में संचरित होगा। दौड़धूप अधिक रहेगी। संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। इस राशि को शनि का पाया सुवर्ण होने से मानसिक व शरीर-कष्ट तथा गुप्त चिन्ताएँ रहेंगी। श्रीहनुमान उपासना व शनि के उपाय करने शुभ होंगे।*

✤ ***तुला राशि**–इस राशि पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा,* जिसके फलस्वरूप व्यवसाय में आर्थिक परेशानियाँ तथा घरेलु उलझनों का सामना रहेगा। इस राशि पर शनि का पाया चान्दी होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। वाहन आदि सुख-साधनों पर व्यय अधिक होंगे। अन्त में लिखे शनि देव के उपाय करने कल्याणप्रद होंगे।

✤ **वृश्चिक राशि**–पर शनि साढ़ेसाती होने से कार्य-व्यवसाय में अड़चनें तथा आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। शनि का पाया भी लोहा होने से घरेलु व आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। ता. 13 जुला. तक इस राशि पर गुरु की शुभ दृष्टि होने से निर्वाह योग्य धन लाभ तथा धर्म/कर्म की ओर रुचि बनी रहेगी।

✤ **धनु राशि**–शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा। गुरु उच्चस्थ होने पर भी अष्टमस्थ है, कार्य व्यवसाय में कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। शनि का पाया भी ताम्र होने से बिगड़े कार्यों में सुधार होगा, विशेषकर 14 जुला. के पश्चात्।।

✤ **मकर राशि**–वर्षारम्भ से ही इस राशि पर शनि की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। शनि का पाया भी चान्दी होने से गत किए गए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। यद्यपि 14 जुला. के बाद धन लाभ एवं उन्नति के लिए विशेष संघर्ष का सामना रहेगा। आय कम व खर्च अधिक रहेंगे।

✤ **कुम्भ राशि**–शनि दशम भाव में शुभ-राशिगत है। अत्यन्त कठिनाईयों एवं संघर्ष के बाद ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व खर्च अधिक रहेंगे। ता. 14 जुला. से इस राशि पर गुरु की दृष्टि शुभ होने से धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। आगे लिखे उपाय करने शुभ होंगे।

✤ **मीन राशि**–राशिस्वामी शनि नवमस्थ (भाग्य) में होने से कार्य व्यवसाय में अड़चनें हों। शनि का पाया भी लौह एवं केतु लग्नस्थ होने से स्वास्थ्य विकार, गुप्त चिन्ताएं एवं खर्च अधिक होंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे एवं धार्मिक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी।

शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी विशेष उपाय

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे,** शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय विशेषकर लोहे, तेल के कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट सहयोगी भी परायों जैसे व्यवहार करने लगते हैं।

अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जाप तथा औषधि स्नान आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुं. में शनि यदि अशुभ हो अथवा जन्म-नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु-विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि रोग होते हैं।

शनि प्रायः क्लिष्ट रोग एवं दुःख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के अरिष्टकाल में कोई-न-कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराये होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

उपाय—शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें—

'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा—

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

(3) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष कल्याणप्रद होगा।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—*"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।"*

शनि का वैदिक मन्त्र—

"ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥ शं नमः॥"

शनि लघु स्तोत्र—

नमस्ते कोण संस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तुते।
नमस्ते विष्णुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते।।
नमस्ते रौद्रदेवाय, नमस्ते काल-कायजे।
नमस्ते यम-संज्ञाय, शनैश्चराय नमोऽस्तुते।।

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

गुरु का कर्क एवं सिंह राशिस्थ गोचरफल-संवत् २०७२

गतवर्ष 19 जून, गुरुवार, सन् 2014 ई० से गुरु देव (बृहस्पति) कर्क राशि में संचार कर रहे हैं। **आगामी वर्ष सन् 2015 ई० में 14 जुला., मंगलवार को प्रातः 6 बजकर 26 मिनट पर गुरु मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करेंगे।** तथा सम्वत् के अन्त (7 अप्रैल 2016 ई०) तक सिंह राशि में ही संचार रहेगा।

वक्री-मार्गी—गतवर्ष 9 दिसबंर 2014 ई० से 7 अप्रैल 2015 ई० तक कर्क राशि में वक्री होंगे। कर्क राशिगत गुरु जब वक्री अथवा अतिचारी होता है, तो देश के कुछ भागों में दुर्भिक्ष-अर्थात् अनाज की कमी हो एवं राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव की स्थिति बनेगी।

कर्क राशिगतोजीवो यदा वक्री भवेत्तदा।
दुर्भिक्षं जायतेघोरं राजानोयुद्धतत्पराः।। व.प्र.।।

देश में छत्रभङ्ग (शासन परिवर्तन) हो तथा अनेक स्थलों में जनांदोलन एवं उपद्रव हों। सब प्रकार के अनाज, रसादि पदार्थ, घी, तेल, दूध, चावल, चीनी, सर्वधातुएँ एवं कपासादि तेज भाव हों। सात महीनों में विशेष तेजी हो—

राष्ट्रभङ्गं विजानीयात् वैरोपद्रव संकुलम्।
रसादि सर्वसंयोगोघृततैलादि खण्डकम्।। ....सर्वधान्य महर्घता।।

ता. 14 जुला. 2015 ई० को गुरु सिंह राशि में प्रवेश करेगा। गुरु का सिंह राशि में संचरणकालीन धर्मस्थलों, विद्वानों एवं ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा बढ़े तथा सत्याचरण करने वाले महापुरुषों की मान-इज्ज़त में वृद्धि होगी, विभिन्न पार्टियों एवं समुदायों के बीच टकराव एवं विवाद हो, क्लिष्ट किस्म के रोगों की वृद्धि हो। सब प्रकार के चौपायों एवं गेहूँ, उड़द, तिल, तेल, पैट्रोल, चावल, सोना, चान्दी, ताम्बा, पीतल आदि धातुएँ तेज भाव होंगे।

सिंहे जीवे देव ब्राह्मण पूजास्यात्नराणां मान्यतासताम्।
रोगा:विवादश्चान्योऽन्यं चतुष्पदादिमहर्घता।। (व.प्र.)....

जुलाई-अगस्त में सिंहस्थ गुरु शीघ्रातिचारी स्थिति में गतिशील है। इस मास में शनि भी वक्री स्थिति में है। इसका फल भी शास्त्र में अशुभ कहा गया है।

यदा क्रूर ग्रहो वक्रीहि अतिचारी सौम्यकः।
युद्धादि भवति दुर्भिक्षंराज्ञांवैरं परस्परम्।।

अर्थात् शनि आदि क्रूर ग्रह जब वक्री हो और गुरु आदि शुभ ग्रह शीघ्र अतिचार गति को प्राप्त हो, तो देश के किसी क्षेत्र में अनाज एवं आवश्यक वस्तुओं की कमी हो, विशिष्ट प्रकार के रोगों के कारण लोगों में कष्ट, सीमाओं पर युद्धभय, एवं राजनेताओं में परस्पर विरोध बढ़े।

गुरु का गोचर फल

अनेक स्थलों पर टकराव एवं हिंसा की घटनाएँ घटित होंगी। कुछ भागों में अत्याधिक वर्षा के कारण कृषि-धन एवं लोगों की हानि हो। आगामी पृष्ठ पर संक्षेप में कर्क एवं सिंह राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल लिख रहे हैं।

☆ कर्क राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल ☆

[1 जन. से 13 जुला., 2015 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चतुर्थस्थ गुरु होने से साधनों में वृद्धि परन्तु सुख में कमी हो, तनाव व अशान्ति बढ़े, सवारी से चोटादि का भय, गृह में कलह-क्लेश हो।	तृतीयस्थ गुरु होने से धन लाभ अच्छा परंतु आक-स्मिक खर्च, निकटस्थ भाई-बन्धु को शरीर कष्ट, घरेलू उलझनें।	उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल हो, दीर्घ यात्रा के योग, धन लाभ, शुभ कार्यों पर खर्च हो। धार्मिक कार्यों की ओर रूचि रहे।	लग्नस्थ गुरु पूज्य होता है। यद्यपि संघर्ष देता है, परन्तु यहां उच्च राशिगत होने से उलझनों एवं संघर्ष के बाद धन लाभ एवं कार्य प्रशस्त होंगे।	द्वादश गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, बनते कार्यों में विघ्न, धर्म कार्यों में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।	धन सम्पदा व सवारी आदि का सुख हो, भाग्य में उन्नति, प्रिय मिलन, व्यय अधिक, कार्यों में सफलता हो।	दशमस्थ गुरु होने से कार्य-व्यवसाय में रुकावटों के बाद धन प्राप्ति, आय कम, खर्च अधिक, तनाव के कारण स्वास्थ्य खराब रहे।	गुरु भाग्यस्थ होने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, भूमि, वाहनादि का सुख मिले, किसी प्रियबन्धु से मिलाप, सन्तान सम्बन्धी सुख।	अष्टमस्थ गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, ऋण व रोग का भय, घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।	सप्त-मस्थ गुरु होने से विघ्नों के बाद कार्य-सिद्धि धन-लाभ, भाग्य में उन्नति के योग हैं। यात्रा का विचार बने।	छटे गुरु होने से व्यय अधिक रहे, ऋण, रोग एवं शत्रु भय हो, निज-बन्धु से विरोध रहे।	पंचमस्थ गुरु होने से भूमि-वाहनादि सुख हो, उच्च विद्या में सफलता, विवाह आदि सुखों की प्राप्ति, श्रेष्ठजनों के सम्पर्क से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

✚ सिंह राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल–सं. २०७२ ✚

(14 जुला. 2015 ई० से 7 अप्रैल 2016 ई० तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
गुरु पंचम में होने से विद्या एवं कार्यों में सफलता, वाहन आदि सुखों में वृद्धि, धन लाभ के अवसर मिलेंगे।	गुरु चतुर्थ होने से विशेष संघर्ष के बाद किंचित् धन लाभ हो, गृह कलह व खर्च के कारण मन अशान्त हो।	गुरु तृतीय होने से कठिनता से धन प्राप्ति हो। आय-कम व खर्च अधिक रहे। शरीर कष्ट, रोग भय।	धन लाभ व उन्नति के अवसर धर्म कार्यों पर खर्च अधिक हो, गत किए कार्यों में सफलता हो।	संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य धन मिले, परन्तु खर्चों में विशेष तेज़ी हो, रोग व शुभ भय रहे। धर्म-कर्म में रूचि बढ़े	द्वादश होने से वृथा दौड़ धूप रहे, आय कम खर्च अधिक हों, कामों में बाधाएँ रोग व कष्टमय, गुप्त चिन्ताएँ हो।	गुरु लाभ में होने से किसी श्रेष्ठ जन की मदद से धन लाभ के अवसर मिलेंगे। विद्या या कार्य क्षेत्र में सफलता मिले।	गुरु दशमस्थ होने से विशेष कठिनाईयों के बाद ही गुज़ारे योग्य आय हो। खर्च अधिक रहें। तनाव व रोग भय।	गुरु भाग्यस्थ होने से गत किए गए कार्यों में सफलता हो, भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो, धन लाभ के साथ खर्चे भी बढ़ेंगे।	गुरु अष्टम में होने से बनते कामों में अड़चनें होंगी। आय कम व खर्च अधिक होंगे। घरेलु उलझनों के कारण रोग भय व अशान्ति हो।	गुरु सप्तम में होने से अत्यंत संघर्ष के बाद आय के साधन बनेंगे। खर्च अधिक तथा आय अल्प हो कार्य क्षेत्र में दौड़धूप अधिक हो।	गुरु छटे होने से आय कम व खर्च अधिक होंगे, रोग व शत्रु से भय हो। घरेलु उलझनों के कारण मन परेशान एवं अशान्त रहे।

गुरु का कारकत्व—गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है।

हमारे कार्यालय से छपी **'ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1'** में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शन्ति के लिए दान—गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मंत्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र–

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।''

गुरु बीज मन्त्र–''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।।''

गुरु का वैदिक मन्त्र–ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरु मन्त्र– ॐ देवानां च मुनीनां च गुरु कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमानि बृहस्पतिम्।।

☆ राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०७२ ☆

गतवर्ष राहु 12 जुला. सं. 2014 ई० से रात्रि 9/52 मिनट पर कन्या राशि में तथा केतु ग्रह मीन राशि में प्रविष्ट हो चुके हैं।

आगामी वर्ष सन् 2015 ई० में राहु कन्या राशि में तथा केतु मीन राशि में ही संचार करते रहेंगे। परन्तु 29 जनवरी सन् 2016 ई० से राहु सिंह राशि में तथा केतु कुम्भ राशि में रात्रि 25/21 बजे से प्रविष्ट होंगे। उनका शुभाशुभ गोचर फल आगामी पंचांग संवत् २०७३ में दिया जाएगा। आगे राहु का कन्या राशि में तथा केतु का मीन राशि में प्रवेश का गोचर फल दिया जा रहा है–

☆ कन्या राशिस्थ राहु का गोचर फल ☆

[संवतारम्भ से 29 जनवरी, 2016 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
विशेष संघर्ष के बाद भी आय कम व खर्च अधिक रहें।	आर्थिक उलझनों के कारण घरेलू परेशानियां हों, भाग्य में विघ्नों के कारण गुप्त चिंताए रहें।	कार्य-व्यवसाय में विघ्नों के बाद सफलता मिले। आय के साथ-2 खर्च भी बहुत हों।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, धन-लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। विदेश-गमन की योजना बनेगी।	घरेलू कलह-क्लेश हो, वृथा खर्च बढ़े, शरीर कष्ट व तनाव बढ़े। रोग भय।	शरीर कष्ट, तनाव अधिक रहे। बनते कार्यों में अड़चनें पड़े, खर्चों की भी अधिकता हो।	सामान्य आय के साथ-2 खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहे।	धन लाभ व उन्नति के चांस बनेंगे, पर खर्च भी बहुत बढ़ेंगे, विदेश यात्रा के विचार बनेंगे।	आय अल्प, किन्तु खर्च बहुत हों, कार्य-व्यवसाय एवं घरेलू उलझनों के कारण तनाव बढ़ें कार्यों में विघ्न।	बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, बड़ी कठिनता से निर्वाह योग्य आय बने।	धन-लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे, शुभ कार्यों पर खर्च होंगे, शुभ समाचार मिले, कुछ बिगड़े काम बनेंगे।	बनते कार्यों में अड़चनें, लाभ कम व खर्च अधिक होंगे, परिवार या पति/पत्नी में मन-मुटाव हो।

☆ मीन राशिस्थ केतु का गोचर फल ☆

[संवतारम्भ से 29 जनवरी, 2016 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रोग व शत्रु भय, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें। खर्च अधिक रहेंगे।	धन लाभ साधारण, वाहन, भूमि आदि साधनों की प्राप्ति, संघर्ष अधिक रहे।	अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे, खर्चों में वृद्धि, रोग व शत्रुभय, परेशानियां बढ़ेंगी।	भाग्य-उन्नति में विघ्न, वृथा खर्च बढ़ें, दुर्घटना से चोट आदि का भय।	परिश्रम से धन लाभ अच्छा, वाहन आदि सुख प्राप्त हों, कुछ बिगड़े कामों में सुधार।	कुटुम्ब में किसी प्रियजन से वैमनस्य, खर्च अधिक, किसी से धोखा मिले।	पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, खुश-खबरी मिले।	लाभ कम व खर्च अधिक हों। घरेलू कलह-क्लेश के कारण मन अशान्त, विदेश गमन का योग बनेगा।	संघर्ष के बाद गुजारे योग्य आय के साधन हों। भूमि, सवारी आदि सुखों का लाभ।	बिगड़े कामों में सुधार, परिश्रम से धन लाभ अच्छा, वाहन सुख मिले।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम व खर्च अधिक रहे, तनाव हो।	शरीर कष्ट व तनाव रहे, बनते कार्यों में विघ्न, खर्च अधिक हो।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र–

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र–

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। **मूल्य–200/-**

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

- ✷ आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती–इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।
- ✷ विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।
- ✷ रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)
- ✷ पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता।।

चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

कुछ विद्वानों एवं मुहूर्त्त ग्रन्थों अनुसार जन्म-राशि से चन्द्रस्थिति तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों के अनुसार चन्द्रमा के सुवर्णादि पाद का विचार किया जाता है। यथा–

स्थान	१,६,११	२,५,९	३,७,१०	४,८,१२
चन्द्रपाद	स्वर्ण	रजत	ताम्र	लोह
फल	सौभाग्य	शुभत्व	दारिद्रय	मृत्यु

जन्मराशि से इन्हीं स्थानों पर अन्य ग्रहों के भी चरणों का विचार किया जाता है परन्तु फल भिन्न-भिन्न रहता है–**"सौरी लोहे शुभः प्रोक्तो हेमपादे च वै गुरुः। रजते चंद्रशुक्रौ च, ग्रहाश्चान्ये च ताम्रके।।"**

अर्थात् शनि का लौह पाद, बृहस्पति का सुवर्णपाद, चंद्र शुक्र का रजत पाद तथा अन्य ग्रहों (सू.मं.बु.श.के.) के ताम्र पाद श्रेष्ठ होते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योग–वि. संवत् २०७२ (सन् 2015–16 ई.)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग की** उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो **'रवि योग'** अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं।

गुरुपुष्य योग— गुरू अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल, अधिक मास, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने शुभ होंगे।** ध्यान रहे, 12 अग. से 7 सितं., 2015 ई. तक गुरु अस्त तथा 5 अग. से 20 अग., 2015 ई. तक शुक्र अस्त रहेगा।

—पण्डित विवेक शर्मा, गणितकर्ता

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2015 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2015 ई.	घं. मिं.
22 मार्च	सू. उ.	23 मार्च	4 23
24 मार्च	सू. उ.	25 मार्च	2 02
25 मार्च	सू. उ.	26 मार्च	सू. उ.
28 मार्च	4 05	28 मार्च	सू. उ.
29 मार्च	सू. उ.	30 मार्च	8 46
31 मार्च	सू. उ.	31 मार्च	11 40
8 अप्रै.	सू. उ.	9 अप्रै.	6 51
12 अप्रै.	7 10	13 अप्रै.	सू. उ.
13 अप्रै.	6 13	14 अप्रै.	4 46
17 अप्रै.	19 49	18 अप्रै.	सू. उ.
19 अप्रै.	सू. उ.	19 अप्रै.	15 09
21 अप्रै.	सू. उ.	21 अप्रै.	11 57
22 अप्रै.	सू. उ.	23 अप्रै.	सू. उ.
26 अप्रै.	सू. उ.	26 अप्रै.	15 53
6 मई	सू. उ.	6 मई	12 40
10 मई	सू. उ.	10 मई	11 57
11 मई	सू. उ.	11 मई	10 56
15 मई	04 34	17 मई	सू. उ.
18 मई	21 55	19 मई	सू. उ.
20 मई	सू. उ.	20 मई	20 46
21 मई	21 08	22 मई	22 14

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2015 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2015 ई.	घं. मिं.
30 मई	16 30	31 मई	सू. उ.
1 जून	19 20	2 जून	सू. उ.
6 जून	17 31	7 जून	सू. उ.
11 जून	10 59	13 जून	सू. उ.
15 जून	6 26	16 जून	सू. उ.
17 जून	सू. उ.	17 जून	5 41
18 जून	6 01	19 जून	6 57
23 जून	16 21	24 जून	सू. उ.
24 जून	19 27	25 जून	सू. उ.
27 जून	सू. उ.	28 जून	02 49
29 जून	सू. उ.	30 जून	4 31
3 जुला.	24 40	4 जुला	22 55
7 जुला.	17 45	8 जुला.	सू. उ.
9 जुला.	सू. उ.	10 जुला	14 09
13 जुला	सू. उ.	14 जुला	सू. उ.
16 जुला	सू. उ.	17 जुला	सू. उ.
21 जुला	सू. उ.	22 जुला	3 11
22 जुला	सू. उ.	23 जुला	सू. उ.
25 जुला	सू. उ.	25 जुला	11 24
27 जुला	सू. उ.	27 जुला	13 51

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2015 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2015 ई.	घं. मिं.
31 जुला	9 53	1 अग.	7 41
4 अग.	सू. उ.	4 अग.	22 38
6 अग.	सू. उ.	6 अग.	19 40
8 अग.	18 26	9 अग.	सू. उ.
10 अग.	सू. उ.	10 अग.	19 01
13 अग.	सू. उ.	13 अग.	23 13
18 अग.	सू. उ.	18 अग.	10 11
19 अग.	सू. उ.	19 अग.	13 22
28 अग.	सू. उ.	28 अग.	18 07
1 सितं.	सू. उ.	1 सितं.	7 14
5 सितं.	सू. उ.	5 सितं.	24 10
13 सितं.	13 21	14 सितं.	सू. उ.
19 सितं.	3 57	19 सितं.	सू. उ.
27 सितं.	20 54	28 सितं.	सू. उ.
29 सितं.	15 00	30 सितं.	सू. उ.
3 अक्तू.	सू. उ.	3 अक्तू.	7 27
9 अक्तू.	16 19	10 अक्तू	सू. उ.
11 अक्तू	सू. उ.	12 अक्तू	सू. उ.
16 अक्तू	9 43	17 अक्तू	सू. उ.
18 अक्तू	13 13	19 अक्तू	सू. उ.
25 अक्तू	7 42	26 अक्तू	5 02
27 अक्तू	सू. उ.	27 अक्तू	23 25

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2015–16	घं. मिं.	समाप्ति काल 2015–16	घं. मिं.
28 अक्तू	20 50	29 अक्तू	सू. उ.
2 नवं.	16 25	3 नवं.	सू. उ.
3 नवं.	17 53	4 नवं.	सू. उ.
6 नवं.	सू. उ.	6 नवं.	25 52
8 नवं.	सू. उ.	9 नवं.	सू. उ.
12 नवं.	15 42	13 नवं.	17 26
15 नवं.	सू. उ.	15 नवं.	19 39
22 नवं.	सू. उ.	22 नवं.	14 29
24 नवं.	सू. उ.	24 नवं.	9 58
25 नवं.	7 38	26 नवं.	सू. उ.
30 नवं.	1 32	1 दिसं.	02 23
1 दिसं.	सू. उ.	2 दिसं.	04 02
4 दिसं.	सू. उ.	4 दिसं.	9 14
6 दिसं.	सू. उ.	6 दिसं.	15 31
9 दिसं.	22 56	10 दिसं.	24 24
20 दिसं.	19 45	21 दिसं.	सू. उ.
23 दिसं.	सू. उ.	24 दिसं.	सू. उ.
27 दिसं.	11 19	28 दिसं.	11 49
29 दिसं.	सू. उ.	29 दिसं.	13 03
(सन् 2016 ईसवी में)			
6 जन.	सू. उ.	7 जन.	8 57
10 जन.	9 42	11 जन.	सू. उ.
11 जन.	8 57	12 जन.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2015–16	घं. मिं.	समाप्ति काल 2015–16	घं. मिं.
16 जन.	2 33	16 जन.	सू. उ.
17 जन.	सू. उ.	17 जन.	23 58
19 जन.	सू. उ.	19 जन.	21 46
20 जन.	सू. उ.	21 जन.	सू. उ.
24 जन.	सू. उ.	24 जन.	20 44
3 फर.	सू. उ.	3 फर.	18 08
7 फर.	सू. उ.	7 फर.	18 29
8 फर.	सू. उ.	8 फर.	17 03
12 फर.	9 07	13 फर.	7 13
16 फर.	3 09	16 फर.	सू. उ.
17 फर.	सू. उ.	18 फर.	2 14
19 फर.	2 24	20 फर.	2 59
27 फर.	18 28	28 फर.	सू. उ.
29 फर.	24 17	1 मार्च	सू. उ.
6 मार्च	4 58	6 मार्च	सू. उ.
10 मार्च	18 21	12 मार्च	सू. उ.
14 मार्च	9 27	15 मार्च	सू. उ.
16 मार्च	सू. उ.	16 मार्च	7 47
17 मार्च	7 52	18 मार्च	8 33
22 मार्च	16 19	23 मार्च	सू. उ.
23 मार्च	19 07	24 मार्च	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2015-16	घं. मिं.	2015-16	घं. मिं.
26 मार्च	सू. उ.	27 मार्च	4 13
28 मार्च	7 05	29 मार्च	सू. उ.
2 अप्रै.	14 26	3 अप्रै.	सू. उ.
7 अप्रै.	सू. उ.	8 अप्रै.	2 22

अमृत सिद्धि योग

विशेष—कुछ विद्वानों के मतानुसार सर्वार्थ सिद्ध योग एवं अमृत सिद्ध योग के संयोग से रविवार से शनिवार तक (क्रमशः) ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११ तिथियां एवं प्रारंभ की ६ घड़ियाँ विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई है।

प्रारम्भ काल	घं. मिं.	समाप्ति काल	घं. मिं.
8 मार्च	सू. उ.	8 मार्च	17 30
8 अप्रै.	सू. उ.	9 अप्रै.	सू. उ.
17 अप्रै.	19 49	18 अप्रै.	सू. उ.
6 मई	सू. उ.	6 मई	12 40
15 मई	सू. उ.	16 मई	2 41
12 जून	सू. उ.	12 जून	9 40
13 जुला	12 52	14 जुला	सू. उ.
16 जुला	14 49	17 जुला	सू. उ.
8 अग.	18 26	9 अग.	सू. उ.
10 अग.	सू. उ.	10 अग.	19 01
13 अग.	सू. उ.	13 अग.	23 13
2 सितं.	04 49	2 सितं.	सू. उ.
5 सितं.	सू. उ.	5 सितं.	24 10
29 सितं.	15 00	30 सितं.	सू. उ.
3 अक्तू	सू. उ.	3 अक्तू	7 27
11 अक्तू	22 34	12 अक्तू	सू. उ.
27 अक्तू	सू. उ.	27 अक्तू	23 25
8 नवं.	सू. उ.	9 नवं.	सू. उ.
24 नवं.	सू. उ.	24 नवं.	9 58
6 दिसं.	सू. उ.	6 दिसं.	15 31
9 दिसं.	22 56	10 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2016 ईसवी में)			
6 जन.	सू. उ.	7 जन.	सू. उ.
16 जन.	2 33	16 जन.	सू. उ.
3 फर.	सू. उ.	3 फर.	18 08
12 फर.	9 07	13 फर.	07 13
11 मार्च	सू. उ.	11 मार्च	15 42

रवि योग–संवत् २०७२ वि०

रवि योग वार, तिथि, जनित आदि कुयोगों के दोषों को दूर करता है। सामान्यतः अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि में) के लिए इनका उपयोग किया जाता है–

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2015 ई.	घं. मिं.	2015 ई.	घं. मिं.
23 मार्च	4 23	24 मार्च	2 52
25 मार्च	2 02	26 मार्च	1 57
28 मार्च	4 05	29 मार्च	6 09
29 मार्च	6 09	30 मार्च	8 45
2 अप्रै.	17 52	3 अप्रै.	20 51
10 अप्रै.	7 30	11 अप्रै.	7 36
21 अप्रै.	11 57	22 अप्रै.	11 15
23 अप्रै.	11 17	24 अप्रै.	12 05
26 अप्रै.	15 53	27 अप्रै.	18 37
27 अप्रै.	18 37	28 अप्रै.	21 40
28 अप्रै.	21 40	29 अप्रै.	24 47
9 मई	12 40	10 मई	11 57
20 मई	20 46	21 मई	21 08
22 मई	22 14	23 मई	24 03
28 मई	11 26	29 मई	14 12
8 जून	सू. उ.	8 जून	15 02
9 जून	सू. उ.	9 जून	13 41
19 जून	6 57	20 जून	8 31
21 जून	10 41	22 जून	13 21
24 जून	19 27	25 जून	22 23
25 जून	22 23	26 जून	24 54
26 जून	24 54	27 जून	26 49
30 जून	4 31	1 जुला	सू. उ.
7 जुला.	17 45	8 जुला	16 20
18 जुला	18 31	19 जुला	21 06
20 जुला	15 51	20 जुला	24 03
22 जुला	3 11	23 जुला	6 17
25 जुला	11 24	26 जुला	13 01
26 जुला	13 01	27 जुला	13 51
29 जुला	13 08	30 जुला	11 46

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2015 ई.	घं. मिं.	2015 ई.	घं. मिं.
5 अग.	20 57	6 अग.	19 40
17 अग.	7 03	17 अग.	12 24
18 अग.	10 11	19 अग.	13 22
20 अग.	16 24	21 अग.	19 04
23 अग.	22 36	24 अग.	23 12
24 अग.	23 12	25 अग.	22 59
27 अग.	20 19	28 अग.	18 07
4 सितं.	1 19	4 सितं.	24 26
16 सितं.	22 43	17 सितं.	25 32
19 सितं.	3 57	20 सितं.	5 50
22 सितं.	7 34	24 सितं.	6 19
26 सितं.	2 26	26 सितं.	23 47
27 सितं.	17 43	27 सितं.	20 54
3 अक्तू	7 27	4 अक्तू	7 13
16 अक्तू	9 43	17 अक्तू	11 42
18 अक्तू	13 13	19 अक्तू	14 11
21 अक्तू	14 20	22 अक्तू	13 29
22 अक्तू	13 29	23 अक्तू	12 02
26 अक्तू	5 02	27 अक्तू	2 13
1 नवं.	15 46	2 नवं.	16 25
14 नवं.	18 45	15 नवं.	19 39
16 नवं.	20 09	17 नवं.	20 14
19 नवं.	19 09	20 नवं.	7 22
20 नवं.	17 58	21 नवं.	16 24
21 नवं.	16 24	22 नवं.	14 29
24 नवं.	9 58	25 नवं.	7 38
1 दिसं.	2 23	2 दिसं.	4 02
14 दिसं.	1 57	15 दिसं.	1 44
16 दिसं.	1 15	16 दिसं.	14 41
16 दिसं.	24 33	17 दिसं.	23 38
19 दिसं.	21 13	21 दिसं.	18 09

2015 ई.	घं. मिं.	2015 ई.	घं. मिं.
23 दिसं.	14 52	24 दिसं.	13 24
31 दिसं.	17 30	1 जन.	20 27
13 जन.(16)	6 40	14 जन.(16)	5 19
15 जन.	3 55	16 जन.	2 33
17 जन.	23 58	19 जन.	21 46
21 जन.	20 17	22 जन.	20 00
30 जन.	7 45	31 जन.	10 51
11 फर.	11 10	12 फर.	9 07
13 फर.	7 13	14 फर.	5 33

2016 ई.	घं. मिं.	2016 ई.	घं. मिं.
16 फर.	3 09	18 फर.	2 14
21 फर.	4 00	22 फर.	5 28
28 फर.	21 30	29 फर.	24 17
11 मार्च	15 42	12 मार्च	13 15
13 मार्च	11 07	14 मार्च	9 27
16 मार्च	7 47	17 मार्च	7 52
17 मार्च	7 52	19 मार्च	9 49
21 मार्च	13 46	22 मार्च	16 19
29 मार्च	9 41	30 मार्च	11 49
30 मार्च	11 49	31 मार्च	13 23

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2015–16 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे–ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2015 ई.	घं. मिं.	2015 ई.	घं. मिं.
17 मार्च	20 15	17 मार्च	25 56
5 अप्रै.	19 35	6 अप्रै.	02 01
19 मई	21 03	20 मई	सू. उ.
30 मई	सू. उ.	30 मई	16 30
1 अग.	13 08	2 अग.	5 18
3 अक्तू	15 19	4 अक्तू	7 13
30 जन.16	17 05	31 जन.	10 51
15 मार्च	8 19	15 मार्च	11 12
4 अप्रै.	05 38	4 अप्रै.	सू. उ.
गुरुपुष्य योग			
16 जुला	14 49	17 जुला	सू. उ.
13 अग.	सू. उ.	13 अग.	23 13
रविपुष्य योग			
29 मार्च	सू. उ.	30 मार्च	सू. उ.
26 अप्रै	सू. उ.	26 अप्रै.	15 53
29 नवं.	25 32	30 नवं.	सू. उ.
27 दिसं.	11 19	28 दिसं.	सू. उ.
24 जन.16	सू. उ.	24 जन.	20 44

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2015-16	घं. मिं.	2015-16	घं. मिं.
25 अप्रै.	सू. उ.	25 अप्रै.	13 39
5 मई	9 54	5 मई	11 51
10 मई	6 46	10 मई	11 57
23 जून	16 21	24 जून	3 17
28 जून	10 45	29 जून	04 02
7 जुला	17 10	7 जुला	17 45
12 जुला	8 23	12 जुला	13 00
22 अग.	सू. उ.	22 अग.	12 24
30 अग.	20 27	31 अग.	सू. उ.
24 अक्तू	10 05	25 अक्तू	4 08
2 नवं.	4 51	2 नवं.	सू. उ.
7 नवं.	13 47	8 नवं.	05 03
22 दिसं.	16 30	22 दिसं.	22 50
26 दिसं.	15 24	27 नवं.	11 19
6 जन.(16)	6 54	6 जन.	07 26
11 जन.	5 40	11 जन.	सू. उ.
5 मार्च	17 12	6 मार्च	4 58

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

														जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर		७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर		११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी		१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर		९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद		१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य		१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी		२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग		१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी		१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार		मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन:शिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मन:शिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥१ ॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम ॥२ ॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरु मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदृती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शूद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व–उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी–स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**–मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा–ऐसा कहना चाहिए। जैसे–यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

वैधृति एवं व्यतीपात–दो विशेष अरिष्टकर परन्तु महत्त्वपूर्ण योग

गर्गाचार्य अनुसार योग दो प्रकार के होते हैं। एक नित्य, दूसरे नैमित्तिक। विष्कम्भादि 27 नित्य योग होते हैं और आनन्दादि तिथि वार के साहचर्य से नैमित्तिक योग होते हैं। अधिकतर पंचांगों में पाँच तत्त्वों के रूप में 'विष्कम्भादि योगों' का अधिक वर्णन रहता है।

विष्कम्भादि योग–सूर्य और चन्द्रमा के राश्यंश, कलादि के जोड़ को योग कहते हैं। नक्षत्रों की भान्ति योग कोई तारा समूह का नाम नहीं, बल्कि यह एक वस्तु स्थिति है, जो सूर्य एवं चन्द्र के राश्यंशों के जोड़ (कलाओं में) को आगामी दिवसीय सू.चं. में जोड़ के तुलनात्मक अन्तर द्वारा भाग देने पर सन्धि के रूप में प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में सूर्य और चन्द्रमा को संयुक्त रूप में 13° अंश, 20 कला (अर्थात् 800 कला) को पूरा करने में जितना समय लगता है, उसे योग कहते हैं। विष्कम्भादि योगों की संख्या भी 27 मानी जाती है। सूर्य, चन्द्रमा की गोल आवृत्तीय गति के कारण 360 अंशों के 27 समान भाग करने पर प्रत्येक योग की कोणीय दूरी का मान भी नक्षत्र की भान्ति 13° अंश, 20 कला माना जाता है। योग का दैनिक भोग्य **मध्यम मान ६० घड़ी १३ पल** होता है तथा योग के मध्यम मान में भी सूर्य-चन्द्र की गतियों में प्रतिदिन भिन्नता के कारण न्यूनाधिकता बनी रहती है। पंचांग में दिए गए नक्षत्रों एवं योगों के घड़ी पल अथवा घण्टे-मिन्ट, नक्षत्र एवं योग के समाप्ति काल को दर्शाते हैं। **फलित ज्योतिष** में नक्षत्रों की भान्ति योगों के शुभाशुभ फल का वर्णन भी प्राचीन ग्रन्थों में पाया जाता है।

विष्कम्भ आदि 27 योग तथा उनके स्वामी इस प्रकार से हैं–

क्रम	योग	स्वामी	शुभाशुभ	क्रम	योग	स्वामी	शुभाशुभ
1.	विष्कम्भ	यम	अशुभ	15.	वज्र	वरुण	अशुभ
2.	प्रीति	विष्णु	शुभ	16.	सिद्धि	गणेश	शुभ
3.	आयुष्मान	चन्द्र	शुभ	17.	व्यतीपात	रूद्र	अशुभ
4.	सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ	18.	वरियान	कुबेर	शुभ
5.	शोभन	बृहस्पति	शुभ	19.	परिघ	विश्वकर्मा	अशुभ
6.	अतिगण्ड	चन्द्र	अशुभ	20.	शिव	मित्र	शुभ
7.	सुकर्मा	इन्द्र	शुभ	21.	सिद्ध	कीर्तिकेय	शुभ
8.	धृति	जल	शुभ	22.	साध्य	सावित्री	शुभ
9.	शूल	सर्प	अशुभ	23.	शुभ	लक्ष्मी	शुभ
10.	गण्ड	अग्नि	अशुभ	24.	शुक्ल	पार्वती	शुभ
11.	वृद्धि	सूर्य	शुभ	25.	ब्रह्म	अश्विनी कु.	शुभ
12.	ध्रुव	भूमि	शुभ	26.	ऐंद्र	पितर	अशुभ
13.	व्याघात	वायु	अशुभ	27.	वैधृति	दिति	अशुभ
14.	हर्षण	भग	शुभ				

उपरोक्त योगों में विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ, ऐन्द्र, वैधृति योगों में उत्पन्न जातक को गण्डमूल की भान्ति अशुभ फलदायक माना जाता है।

वसिष्ठ संहिता के अनुसार विरुद्ध (अशुभ) योगों का पहिला चरण, वैधृति व व्यतीपात के चारों चरण और परिघ योग का प्रथमार्ध (7½ घटी) समस्त शुभ कार्यों में वर्जनीय होता है।

विरुद्धयोगेषु च आद्यपादः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयः।
सवैधृतस्तु व्यतिपातयोगः सर्वोप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम्।।

'मुहूर्त्त-गणपति' अनुसार भी वैधृति, व्यतिपात के चारों चरण शुभ कार्यों में वर्जित कहे हैं।

'वैधृतिव्यतिपाताख्यौ सम्पूर्णौ वर्जयेत् शुभे। वज्रविष्कम्भयोश्चैव घटिकात्रयमादिकम्। परिघार्धं पञ्चशूले व्याघाते घटिका नव। गण्डातिगण्डयोः षट् च हेयाः सर्वेषु कर्मसु।।

–अर्थात् वज्र और विष्कम्भ योग की प्रथम तीन घड़ियाँ, परिघ का पूर्वार्ध, व्याघात की नौं (9) घड़ियां, शूल योग की पाँच (५), गण्ड और अतिगण्ड योग की आरम्भिक 6-6 घड़ियाँ शुभ कार्यों में त्याग करनी चाहिएँ।

'ज्योतिर्निबन्ध' अनुसार भी परिघ की पूर्वार्द्ध घड़ियां सब शुभ कार्यों में निन्दनीय कही हैं। विष्कम्भ की प्रथम तीन (3), व्याघात की 9 घटी, गण्ड और अतिगण्ड की 6-6 तथा शूल योग की पाँच घड़ियां अशुभ मानी हैं।

'परिघस्य तु पूर्वार्धं सर्वकार्येषु गर्हितम्। विष्कम्भं घटिकास्तिस्रो नवव्याघात वज्रयोः। गण्डतिगण्डयोः षट् च शूले पञ्च न शोभनाः।।'

इस प्रकार, मुहूर्त्त ग्रन्थों एवं प्राचीन ऋषियों ने विवाह आदि में वैधृति एवं व्यतीपात योगों के सम्पूर्ण काल (चारों चरण) को तथा परिघ, शूल आदि योगों की उपरोक्त घटियों को विशेष रूप से त्याज्य माना है। **'पंचांगदिवाकर'** तथा अन्य पंचांगों में भी इनके काल में विवाहादि शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए जाते। यद्यपि इनके परिहार वाक्य भी उपलब्ध हैं। यथा–

वैधृति, व्यतीपात, भद्रा या अन्य किसी दृष्ट योग से आक्रान्त दिन में यदि अमृत योग का समागम हो जाए, तो समस्त पाप योगों का नाश हो जाता है–

यदि विष्टिः व्यतिपातो दिनं वाप्यशुभं भवेत्।
हन्यतेऽमृतयोगेन भास्करेण तमो यथा।। (राजमार्तण्ड)

परन्तु अधिकतर पंचांगकारों ने इस परिहार वाक्य को अधिक मान्यता नहीं दी तथा मुहूर्त्तों में इनका काल निषिद्ध ही माना है।

इस वर्ष वि. संवत् २०७२ में आश्विन (शारदीय) शुक्ल प्रतिपदा को नवरात्रे आरम्भ वैधृति योग में हो रहे हैं। इस दिन घटस्थापन आदि मंगल कृत्यों को मध्याह्न काल अभिजित मुहूर्त्त में करने की शास्त्राज्ञा है।

पीपल (अश्वत्थ) वृक्ष की महिमा एवं पूजन

विज्ञानिकों के अनुसार विश्वभर में एकमात्र पीपल ही एक ऐसा वृक्ष है, जो दिन-रात चौबीस घण्टे ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है तथा कार्बनडाइ-ऑक्साइड को ग्रहण करता है। इससे बड़ा मानवोपकारी कौन हो सकता है ? भारतीय जन-जीवन में वनस्पतियों, वृक्षों आदि में भी देवत्व की अवधारणा की गई है। वृक्षों में पीपल, गूलर, बरगद, पाकड़ और आम को पञ्चवट माना गया है। इनमें भी धार्मिक आस्था की दृष्टि से पीपल का स्थान सर्वोपरि है। कल्पवृक्ष की भान्ति पीपल भी अभीष्ट फल प्रदान करने वाला है। पीपल पवित्र वृक्ष है, इसमें देवताओं एवं पितरों का निवास है।

गीता में भी भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है-**'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्'** अर्थात् मैं वृक्षों में पीपल हूँ, पीपल के मूल में ब्रह्मा जी, मध्य में विष्णु जी एवं अग्रभाग में शिव जी साक्षात् रूप में विराजमान हैं।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय अश्वत्थाय नमो नमः।।

स्कन्दपुराणानुसार अश्वत्थवृक्ष के मूल में **विष्णु**, तने में **केशव**, शाखाओं में **नारायण**, पत्तों में **भगवान् श्रीहरि** और फलों में सब देवताओं से युक्त अच्युत सदा निवास करते हैं। यह वृक्ष मूर्तिमान **श्रीविष्णुस्वरूप** है। पीपल वृक्ष की पूजा एवं जल से सिंचित करने से पापों का नाश तथा सभी अभीष्टों की प्राप्ति होती है। **मूले विष्णुः स्थितो नित्यं स्कन्धे केशव च। नारायणस्तु शाखासु पत्रेषु भगवान् हरिः।। फलेऽच्युते न संदेहः सर्वदेवैः समन्वितः। स एवं विष्णुर्द्रुम एव मूर्तो महात्मभिः सेवितपुण्यमूलः। यस्याश्रयः पापसहस्रहन्ता भवेन्नृणां कामदुघो गुणाढ्यः।।**

पीपल को जल से सिंचित् करना एक धार्मिक कर्म माना जाता है और यह मरणाशौष की निवृत्ति कर पवित्रता प्रदान करता है। अशौष की पूर्ण निवृत्ति भी देववृक्ष पीपल के स्पर्श से मानी गई है। पीपल वृक्ष हमें संसार की क्षणभङ्गुरता तथा सर्वत्र परमात्मा-प्रभु की व्यापकता का संदेश प्रदान करता है। अश्वत्थ वृक्ष के आरोपण की भी बड़ी महिमा है, ऐसे व्यक्ति की वंशपरम्परा का उच्छेद नहीं होता। समस्त ऐश्वर्य एवं दीर्घायु की प्राप्ति होती है और पितृगण नरक से छूटकर मोक्ष प्राप्त करते हैं-

अश्वत्थः स्थापितो येन तत्कुलं स्थापितं ततः।
धनायुषां समुद्धिस्तु नरकात् तारयेत् पितृन्।। (अश्वत्थस्तोत्रम्।)

शास्त्रों में कहा गया है कि पीपल वृक्ष को बिना प्रयोजन के काटना अपने पितरों को काट देने के समान है। ऐसा करने से वंश की हानि होती है। यज्ञादि पवित्र कार्यों के उद्देश्य से इसकी लकड़ी काटने से कोई दोष न होकर अक्षय स्वर्ग की प्राप्ति होती है। पीपल सर्वदेवमय वृक्ष है, अतः इसका पूजन करने से समस्त देवता पूजित हो जाते हैं-

अश्वत्थः पूजितो यत्र पूजिताः सर्वदेवताः।।

अश्वत्थ (पीपल) पूजन-अश्वत्थ की पूजा एवं स्पर्श प्रायः शनिवार को ही विशेष रूप से किया जाता है। अश्वत्थ पूजा का प्रारम्भ आषाढ़, पौष और चैत्र मास में, गुरु-शुक्र अस्त होने पर तथा जिस दिन चन्द्रबल न हो, उस दिन न करें। शुभ दिन देखकर प्रातः शुभ मुहूर्त्त विशेषकर शुक्रवार में पीपल वृक्ष के पास जाकर उसकी जड़ में सुपारी, हल्दी, कुमकुम और चावल चढ़ाकर दोनों हाथ जोड़कर कहे-**'कल्पवृक्ष ! पितृदेव !** मैं कल से सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए आपकी विधिपूर्वक पूजा करूँगा। इसके लिए आप मुझे आज्ञा प्रदान करें।' इस प्रकार उनकी आज्ञा प्राप्ति की भावना कर शनिवार प्रातःकाल तेल की आड़ी बत्ती वाला दीपक जलाए। ताँबे के लोटे में जल लेकर पीपल वृक्ष के पास जाकर दीपक रखकर पीपल की जड़ में जल चढ़ायें। ध्यान में अष्टभुज विष्णु जी का स्मरण करें। शिव-पार्वती जी का पूजन करें। वृक्ष को वस्त्र या सूत पहनाएं। बाद में अश्वत्थवृक्ष की पाँच बार प्रदक्षिणा करें। प्रदक्षिणा के समय निम्न मन्त्र बोले-

अश्वत्थ सुमहाभाग सुभग प्रियदर्शन।
इष्टकामांश्च मे देहि शत्रुभ्यस्तु पराभवम्।।
आयुः प्रजां धनं धान्यं सौभाग्यं सर्वसम्पदम्।
देहि देव महावृक्ष त्वामहं शरणं गतः।।

अर्थात् महाभाग अश्वत्थ ! आप सुन्दर तथा प्रियदर्शन हैं। आप मेरी अभिलाषाओं को पूर्ण करें, मेरा कामादि शत्रुओं का पराभव करें। मुझे दीर्घायु, संतान, धन-धान्य, सौभाग्य तथा सभी प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान करें। देव ! महावृक्ष! मैं आपकी शरण में हूँ।।

इस प्रकार प्रार्थनापूर्वक परिक्रमा के बाद पीपल की जड़ को स्पर्श करें। सच्ची श्रद्धा हो तो निःसंदेह कल्पवृक्ष पीपल सभी अभीष्टों को पूर्ण करने वाला है। पीपल की पूजा करने से ग्रहपीड़ा, पितृदोष, कालसर्पयोग, विष योग तथा ग्रहों से उत्पन्न दोष का निवारण हो जाता है। अमावस्यान्त श्रावण मास में पीपल के नीचे स्थित हनुमान जी की शनिवार के दिन अर्चना करने से बड़े-से-बड़ा संकट दूर हो जाता है। प्रातःकाल पीपल के नीचे बैठकर जप करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। पीपल वृक्ष प्राणवायु प्रवाहित करता है। पीपल के इन दिव्य गुणों से ही उसे पृथ्वी पर कल्पवृक्ष का स्थान प्राप्त हुआ है। अतः इसका आरोपण करके इसे संरक्षण प्रदान करना चाहिए। इस वृक्ष को लगाकर हम भी पुण्य के भागी बनें और हरीतिमा संवर्धन में सहयोगी बनें।

शुभचिंतक-पं. विवेक शर्मा,

प्रेरक-परम श्रद्धेय ब्रह्मलीन स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी

सिंहस्थ गुरु विचार (विवाहादि मङ्गलकृत्यों में विशेषत: विचारणीय)

–लेखक : पं. विवेक शर्मा (पंचागदिवाकर कार्यालय, जालन्धर, पं.)

गुरु प्रत्येक राशि में लगभग एकवर्ष तक संचार करता है। आगामी वर्ष 14 जुलाई, 2015 ई. से सम्वतान्त तक गुरु सिंह राशि में संचार करेगा। मुहूर्त्त शास्त्र एवं प्राचीन पौराणिक ग्रन्थों में सिंह राशिस्थ की पूर्ण अवधि, कुछ में केवल गुरु के सिंह नवांशस्थ काल, कुछ में केवल विशेष क्षेत्रों में ही वर्जित माना गया है। इस प्रकार अनेक विरोधाभास वाक्य मिलते हैं।

(1) प्रथम मत–अनुसार अनेक शास्त्रवाक्यों ने सम्पूर्ण सिंह राशिस्थ गुरु की संचार-अवधि में विवाह, मुण्डन, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा, यज्ञ, यात्रा, क्षौर, यज्ञोपवीत, दीक्षा आदि शुभ कृत्यों को करने का निषेध माना है तथा ऐसा करने पर कर्ता को शुभफल नहीं होता है। यथा–ऋषि शौनकानुसार–

कीर्त्यागारविवाहयागगमनं क्षौरं च कर्णव्यधं।
सिंहस्थे विबुधार्चने न शुभदं कर्तुस्तथा सूर्यगम्।।

देवीपुराणानुसार भी सिंहस्थ गुरु कालीन विवाहादि शुभ कर्म वर्जित माने गए हैं–

सिंहसंस्थे गुरौ यत्नात् सर्वशुभकर्माणि विवर्जयेत्।
प्रारब्धं च न सिध्येत् महाभयकरं भवेत्।।

निर्णयामृत में भी सिंहस्थ गुरु काल में सभी शुभकर्मों को न करने का निर्णय दिया है–

उद्यानचूडाव्रतबन्ध दीक्षा विवाहयात्रा च वधूप्रवेशः।
तड़ागकूपत्रिदशप्रतिष्ठां बृहस्पतौ सिंहगते न कुर्यात्।।

अर्थात् बगीचा, चौल, यज्ञोपवीत, दीक्षा, विवाह, यात्रा, वधूप्रवेश, तालाब, कुआँ, देवप्रतिष्ठा सम्बन्धी कार्य सिंह के गुरु में नहीं करने चाहिए।

उपरोक्त शास्त्रवाक्य सिंहस्थ गुरुकाल को सम्पूर्ण प्रदेशों में वर्ज्य बतला रहे हैं। अर्थात् सिंहस्थ गुरु की सम्पूर्ण अवधि को सभी जगह वर्ज्य माना गया है।

(2) द्वितीय मत–अनुसार गोदावरी के दक्षिणदेश अर्थात् [मैसूर, आंध्रप्रदेश, मद्रास, महाराष्ट्र, मुम्बई, गुजरात आदि के निकटवर्ती क्षेत्र] एवं गंगानदी के उत्तरवर्त्ती प्रदेश [उत्तराखण्ड, उत्तरी उ.प्र., नेपाल, गोरखपुर आदि के समीपस्थ क्षेत्रमात्र] तथा बिहार में सिंहस्थ गुरु का दोष नहीं होता।

यथा–ऋषि वसिष्ठ जी अनुसार–

"भागीरथ्युत्तरे कुले गोतम्या दक्षिणे तथा।
विवाहो व्रतबन्धश्च सिंहस्थेज्ये न दुष्यति।। (निर्णयसिन्धु)

आचार्य गर्ग जी का यह वाक्य भी देखिए–

भागीरथ्युत्तरे तीरे गोदावर्याश्च दक्षिणे।
व्रतोद्वाहादिकर्माणि सिंहगेज्ये न दुष्यति।।

–गंगा के उत्तर तट पर और गोदावरी के दक्षिण में व्रत, विवाह आदि शुभ कार्य सिंह के गुरु में दोषप्रद नहीं होते हैं।

ज्योतिर्निबन्ध अनुसार भी सिंहस्थ गुरु काल में गोदावरी नदी के दक्षिण भाग और भागीरथी नदी के उत्तर भाग में सिंह के गुरु में भी विवाह आदि मांगलिक कार्य करना चाहिए।

(3) तृतीय मत–अनुसार गुरु के सिंहराशिस्थ काल में केवल मघा के चारों चरणों एवं पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण में सिंहस्थ गुरुकाल को वर्जित कहा है। यथा–

मघादि पंचपादेशु गुरु सर्वत्र निन्दितः।
गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्।। (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

मुनिभावरत्न रचित ज्योतिर्विदाभरणम् में भी मणिमाला ने कहा है कि मघा नक्षत्र का त्यागकर जब गुरु पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जाता है तो उस समय शादी करने पर कन्या पुत्रवती, धनिनी और सुख भोगने वाली होती है। यथा–

मघां त्यक्त्वा यदा गच्छेत्फाल्गुनीं च बृहस्पतिः।
पुत्रिणी धनिनी कन्या सौभाग्यसुखमश्नुते।।

परन्तु तृतीय मत भी अधिकांश ज्योतिषाचार्यों द्वारा स्वीकार्य नहीं हुआ है।

मघागत बृहस्पति का परिहार–मणिमाला अनुसार सिंह राशि में मघा नक्षत्र में गुरु के संचार कालीन जब विवाह किया जाता है तो करने पर धन, सुख, भाग्य, पुत्र, पशु और राज्य की वृद्धि होती है–

सिंहस्थमध्ये यदि पितृऋक्षे भवेद्गुरु स्याच्च तदा विवाहः।
कृते सु प्राप्नोति धनं च सौख्यं भाग्यं च पुत्रं पशुराजवृद्धिम्।।

मुहूर्तमाला अनुसार माघ मास की पूर्णिमा में मघा नक्षत्र के होने पर सिंह के गुरु का दोष उस वर्ष नहीं होता, इसके विपरीत में होता है।

माघमासे पौर्णमासी मघायुक्ता यदा भवेत्।
सिंहस्थस्य गुरोर्दोषस्तस्मिन्वर्षे न चान्यथा।।

यद्यपि इस संवत् २०७२ में यह योग घटित हो रहा है। परन्तु यह वाक्य सिंहस्थ गुरु के काल की ग्राह्य-अग्राह्यता के पोषक पुराण, संहिता ग्रन्थों के अन्य किसी भी वाक्य से सामञ्जस्य नहीं रखता। अतः इस वाक्य की प्रामाणिकता भी नहीं है।

(4) चतुर्थ मत–परन्तु परवर्ती अधिकांश ज्योतिषाचार्यों एवं '**मुहूर्त्त ग्रन्थों**' ने सिंहस्थ गुरु के संचार का पूरा काल शुभ कृत्यों के लिए वर्जित नहीं माना है। **मुहूर्त्त चिन्तामणि (पीयूषधारा)** के अनुसार सिंह का बृहस्पति सिंह के नवांश (पू.फा. के प्रथम-चरण) में स्थित हो, तो विवाहादि शुभ कार्यों में नेष्ट फल करता है–

"सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावद्।
भागीरथी याम्यतटं हि दोषो नान्यत्रदेशे तपनेऽपि मेषे।।"

और गोदावरी नदी के उत्तरीय प्रदेशों (महाराष्ट्र, राज.) एवं गंगा जी के दक्षिणी तट पर्यन्त जितने प्रदेश (मध्यप्रदेश, छ्‌त्तीसगढ़ आदि) है, उनमें सिंह के बृहस्पति में शुभ कार्य त्याज्य हैं, दूसरे प्रदेशों में नहीं। अन्यऽपि च, यदि मेष का सूर्य (वैशाख मास) हो, तो किसी भी प्रदेश में सिंहस्थ बृहस्पति का दोष नहीं होगा।

आचार्य राजमार्तण्ड अनुसार भी सिंह राशि में सिंह के नवांश (4-13°-20′ से 4-16°-40′ तक) में गुरु रहने पर समस्त प्रदेशों में विवाहादि शुभ कार्य त्याज्य होते हैं, क्योंकि उस काल में किया गया विवाह वर-वधू के लिए मरणकारक होता है।

सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।
सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः।।

राजमार्तण्ड का यह वाक्य सिंहस्थ गुरु के सिंहाशक (नवमांशक) (13°-20′ से 16°-40′ तक) को सर्वत्र (गंगा-गोदावरी के मध्यवर्ती तथा इनसे इतर सभी प्रदेशों में) वर्ज्य बतलाता है।

व्यास जी अनुसार भी सिंह राशि में सिंह के नवांश (13°-20′ से 16°-40′ तक) में गुरु के होने पर कलिङ्ग, गौड़, गुजरात प्रदेशों में कालमृत्यु योग कारक होता है। यह स्त्री-पुरुष दोनों के लिए मरणप्रद होता है।

"सिंहे सिंहाशके जीवे कलिंगे गौडगुर्जरे।
कालमृत्युरयं योगो दम्पत्योर्निधनप्रदः।। (मु. चि. पीयूष)

मुहूर्त्त गणपति, मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा, टोडरानन्द आदि प्रभृति मुहूर्त्त ग्रन्थों में सिंह राशि के नवांश (अर्थात् सिंह राशि के 13 अंश, 20 कला से 16 अंश, 40 कला पर्यन्त) काल में ही विवाहादि शुभ कार्य त्याज्य माने गए हैं।

पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर के अधिकांश पंचांगकार एवं ज्योतिषाचार्यों द्वारा गत अनेक वर्षों से चतुर्थ मत (अर्थात् सिंहस्थ नवांश काल (13°-20′ से 16°-40′ पू.फा. प्रथम (I) चरण) अर्थात् 14 सितम्बर से 30 सितम्बर, 2015 ई. की समयावधि को विशेष नष्ट एवं त्याज्य माना है।

इसी परम्परा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत वर्ष 14 सितं. से 30 सितं., 2015 ई. की समय-अवधि में विवाह, गृहारम्भ आदि शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए गए हैं।

● सोमवती, भौमवासरी आदि अमावस्या का माहात्म्य ●

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है–

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते। तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्।।

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्थान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार, यदि अमावस्या सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर योग** कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहणों में किए हुए दान-पुण्य से सौ गुणा अधिक होता है–

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्।।

स्नानदान आदि पुण्य कर्मों में मंगलवारी अमावस्या भी सोमवती अमावस्या के समान मनानी चाहिए। यदि मंगलवारी अमावस्या हो तो गंगा के स्नानमात्र से सहस्र गौओं के दान का फल प्राप्त होता है–

स्नानदानादौ भौमवती अपि सोमवती समा ज्ञेया। अमावस्या भवेद्वारे यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्नवी स्नान-मात्रेण गोसहस्रफलं लभेत्। –हेमाद्रौ शातातप

सोमवार से युक्त अमावस्या हो तो वहाँ अनन्त फल देने वाली और पितृगणों को दिया हुआ श्राद्ध अक्षय होता है–

सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्। तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षयम्।।

सोमवती एवं मंगलवारी अमावस्या के विशिष्ट योग में पितृदोष शान्ति, सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म शुद्धि, स्नानदान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन व्रत धारण करके भगवान श्री विष्णु एवं शिवपूजन, चन्द्रपूजन तथा पीपल वृक्ष की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, एवं पुष्प-फल-मिष्ठान से धूप-दीप आदि से पूजन करके 108 प्रदक्षिणा के उपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2015-16 ई. में प्रमुख अमावस्याएँ

माघ (भौमवती)	20 जन. मंग.	आश्विन (सोमवती)	12 अक्तू. चंद्र
ज्येष्ठ (सोमवती)	18 मई चंद्र	माघ (सोमवती)	8 फर. चंद्र
प्र. शुद्ध आषाढ़ (भौमवती)	16 जून मंग.		

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयर-बाज़ार में मन्दा-तेजी-सन् 2015 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेजी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाजार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विशोंतरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह-दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन-हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2014 ई० में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी-मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर जून-जुलाई में सोने-चांदी में हुई तेजी-मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाजिर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 751 रु., 2 मास की फीस 1400 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें। —**पं. विवेक शर्मा S/o स्व. पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब), फोन 0181-2457959**

जनवरी—व्यापारी भाईयों के लिए नववर्ष मंगलमय एवं लाभप्रद रहे। मासारम्भ ता. 1 जन. को ही बुध मकर राशि में आकर मंगल एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर शनि एवं गुरु की दृष्टि रहेगी। हमारे विचारानुसार यह योग विशेष तेजी का है। सोना, चाँदी, घी, मूँग, रूई, तेल में विशेष तेजी बनेगी। बैंकिंग शेयर्ज में भी तेजी का रुख बनेगा। ता. 31 दिसं. को जिन वस्तुओं में तेजी बने, उन वस्तुओं/जिन्सों में ता. 1 से तेजी को और बल मिलेगा।

4 जन. को मंगल कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ स्थान परिवर्तन योग बनाएगा अर्थात् मंगल शनि की राशि में तथा शनि मंगल की राशि में होगा। रूई, चाँदी, गुड़, चीनी, सोना, अनाजों में उथल-पुथल के बाद अच्छी तेजी बनेगी। **[यथा-भूसुते कुम्भराशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता।।]**

6 जन. को शुक्र, फिर ता. 7 जन. को बुध श्रवण नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। ता. 6 तक जिन वस्तुओं/जिन्सों में तेजी होगी, उन वस्तुओं में तेजी ओर बढ़ेगी। यदि. ता. 6 तक जिन्सों में मन्दी की लाईन बन गई, तो मन्दी ज़ोर पकड़ सकती है। ध्यानपूर्वक ता. 5 को बाज़ार का वातावरण देखते हुए आगे बढ़ें।

11 जन. को सूर्य उ.षा. में तथा ता. 12 जन. को वक्री गुरु आश्लेषा (3) में आने से लगभग सभी व्यापारिक जिन्सों में तेजी की लाईन बनेगी। उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, चीनी, शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, सरसों, मूँग, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

13 जन. को मंगल शतभिषा नक्षत्र में आने से अनाजादि में मन्दी, रूई, सोना, चाँदी, कपास, चने के भाव पहले मन्दे होकर बाद तेज हो जाएंगे।

14 जन. को सूर्य मकर राशि में आकर बुध एवं शुक्र के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि एवं गुरु की दृष्टि रहेगी। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, चीनी, रूई, सरसों, सोयाबीन, चने में अच्छी तेजी का झटका लगेगा, गेहूँ, चावल, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बन सकती है।

[ता. 13 से 16 जन. के मध्य जिन जिन्सों में मन्दी रहे, उन्हें व्यापारी बन्धु आगे के लिए स्टॉक कर सकते हैं तथा मासान्त से पहले थोड़ी तेजी बनते ही निकाल दें]

17 जन. को शुक्र धनिष्ठा तथा राहु हस्त (3) में आने से चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चाँदी, रूई, कपास, दूध, घी में तेजी बनेगी।

20 जन. को मंगलवारी अमावस भी तेल, तिलहन, चने में अचानक तेजी ला सकती है। सावधानीपूर्वक कार्य करें।

21 जन. को मकर राशिस्थ बुध वक्री होगा। इस पर शनि की पहले से ही दृष्टि चल रही है। घी, बैंकिंग शेयर्ज़, मूँग, गुड़, चीनी में तेजी बने। इसी दिन बुधवारी चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, रूई, बारदाना, शक्कर में घटाबढ़ी के बाद मामूली मन्दी बनेगी।

22 जन. को शुक्र कुम्भ राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है। परन्तु क्रूरग्रह मंगल के साथ योग के कारण यहाँ मन्दी की जगह तेजी प्रधान रहेगी। चान्दी, घी, रूई में अच्छी तेजी बनेगी। सोने, अलसी, तेल, सोयाबीन,

गुड़, साफ्टवेयर शेयर्ज़, चीनी में पहले मन्दी बनकर फिर तेज़ी बनेगी।

24 जन. को सूर्य श्रवण नक्षत्र में आकर बुध के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि-गुरु की दृष्टि रहेगी। गेहूँ, जौं, चावल, रुई, सूत, सन्, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, लौंग, पीतल में तेजी बनेगी। परन्तु शीघ्र ही मन्दी का रुख भी बन जाएगा। जल्दी सौदे निपटा लें।

28 जन. को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एक-नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गेहूँ, चावल आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रूई, सरसों, चान्दी में अच्छी तेजी की लाईन बनेगी।

30 जन. को मंगल पू.भा. नक्षत्र में आने से तिल, तेल, मूँगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रूई, सूत, कपास, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। मंगल अतिचारी होने से भी इन जिन्सों में तेजी को और अधिक बल मिलेगा।

[**विशेष**–ता. 1 से 12 जन. के मध्य तेजी का रुख रहेगा, पुन: 21 से 24 तक मुख्य जिन्सों तथा शेयर बाज़ार में तेज़ी का रुख रहेगा।]

☞ फरवरी–5 फर. को वक्री बुध उ.षा. नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। इसी दिन वक्री बुध पूर्व में उदय होगा। घी, अनाज, शेयरों, चान्दी, चना, कपास, खल-बिनौला, सोने, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी तथा अन्य जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों, अलसी, रूई में तेजी बनेगी।

8 फर. को शुक्र पू.भा. नक्षत्र तथा वक्री गुरु आश्लेषा (2) में आने से रूई, घी, तेल, सोयाबीन, चने में तेजी, अनाजों में कुछ मन्दा बनेगा।

10 फर. को शनि अनुराधा के तृतीय चरण में आने से मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर, तेल, क्रूड-आयल में तेजी बने।

11 फर. को मकर राशिस्थ बुध मार्गी होने से सरसों, रूई, तेल, अलसी, गुड़, बिनौला, कपूर, मूँगफली में पहले मन्दी बनकर बाद में मामूली सुधार होगा। सोना, गेहूँ, जौं, चने में तेजी बनेगी।

12 फर. को मंगल मीन राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की नवम दृष्टि रहेगी। सोना, चाँदी, रूई, घी, मिर्च, सरसों में पहले मन्दी या ठहराव सा आकर 1-2 दिनों में ही अच्छी तेजी का झटका लगेगा।

13 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। अतएव कुछ जिन्सों/वस्तुओं में अच्छी तेजी तथा कुछ में मन्दी का रुझान रहेगा। घी, तेल, लवण, सरसों, मूँगफली, राई, सोने, क्रूड-आयल में तेजी तथा रूई, एरण्ड, गेहूँ आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनेगी।

16 फर. को शुक्र मीन राशि में मंगल एवं केतु के साथ एक-राशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी है। इसी दिन मंगल उ.भा. नक्षत्र में आ जाएगा। अकेला शुक्र यद्यपि मीन राशि में मन्दी करता है, **परन्तु यहाँ शत्रु ग्रह दृष्टि एवं क्रूर ग्रहों के योग से विशेष तेज़ी का योग बनेगा। रूई, चान्दी, NIFTY, गुड़, शक्कर, घी में अच्छी ज़ोरदार तेजी बन सकती है। तेल तिलहन, सरसों, चीनी में कुछ मन्दी बन सकती है।** शीघ्र ही चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थ भी तेज़ होंगे।

18 फर. को बुध श्रवण में आएगा। इस पर शनि की दृष्टि रहेगी। इसी दिन शुक्र उ.भा. नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गुड़, चीनी, अलसी, चना, चावल तेज होंगे। चाँदी, कपूर, नमक, रूई, कपास आदि में मामूली मन्दी बनकर पुन: तेजी बन जाएगी।

19 फर. को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आने से सोना, चान्दी, सूत, सन, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ के भाव तेज होंगे।

20 फर. को शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होने से सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, ऊन में मन्दी तथा रूई, चाँदी, सोना में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी बनेगी।

[**विशेष**–ता. 12 से 20 फर. तक मुख्य जिन्सों तथा शेयर बाज़ार में मुख्यत: तेजी का रुख रहेगा। सावधानीपूर्वक कार्य करें।]

☞ मार्च–ता. 1 मार्च को शुक्र रेवती नक्षत्र में आएगा। मीन राशि में शु.-मं.-के. ग्रहों का योग बना हुआ है। रूई, कपास, चाँदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, जवाहरात में मन्दी होकर बाद में तेजी बन जाएगी।

3 मार्च को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। इस पर शनि की दृष्टि चल रही है। सोना, चाँदी, रूई, चावल, घी, दूध, मूँग में मन्दी के योग के बावजूद तेजी का रुख बन जाएगा।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. नक्षत्र में आएगा। रेशम, सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पीपलामूल, रुई में तेजी बनेगी।

6 मार्च को मंगल रेवती नक्षत्र में आकर शुक्र-केतु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गेहूँ, चना, मूँग, सोना, मोठ, जौं, ज्वार, बाजरा में मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी। रूई, चाँदी में शुरु से ही तेजी रहेगी।

8 मार्च को वक्री गुरु आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में प्रवेश करेगा। घी, तेल, शेयरों, मूँग, अरहर, चने, मिर्च, सोयाबीन, ग्वार में तेजी बनेगी।

9 मार्च को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जिन वस्तुओं में तेजी चल रही होगी, उनमें ओर तेजी बनेगी। बाज़ारों में काफ़ी उठापटक चलेगी। शेयर बाज़ार, बैंकिंग शेयर्ज़, निफ्टी, मूँग, घी, गुड़, चीनी, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

12 मार्च को शुक्र अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में प्रवेश करेगा। जौं, चना, गेहूँ आदि अन्न, घी, सोने, चान्दी, गुड़, शक्कर, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ऊन, तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी में कुछ मन्दी बनेगी।

13 मार्च को बुध शतभिषा नक्षत्र में आने से सोने, चांदी में मामूली मन्दी का झटका लगेगा।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर मंगल एवं केतु के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन वृश्चिक राशिस्थ शनि वक्री हो रहा है। गुरु भी वक्री चल रहा है।

फाल्गुनेचैत्रमासे च पक्षद्वयतिथीषु च।
वक्रं यातः शनिर्भौमः शीघ्रं गृहलीत धान्यकम्।।

अर्थात् चैत्र मास में शनि वक्री होने से 15 दिनों में अनाज महंगे हो जाते हैं। तिल, तेल, क्रूड-आयल, सोना, चाँदी, सरसों, शक्कर, गुड़, खाण्ड, रुई में भी अच्छी ज़ोरदार तेजी बनेगी।

[ता. 14 से 17 मार्च तक शनि से सम्बन्धित बाज़ार मुख्यत: तेज रहेंगे। इसलिए पूर्व योजना बनाकर स्टॉक कर रखें। पैट्रोलियम, गैस, रिफाइनरी मिडकैप, स्मॉलकैप, कैपिटल गुडस और मेटल शेयरों में तेजी बनेगी।]

18 मार्च को सूर्य उ.भा. नक्षत्र में आने से चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल तेज होंगे।

22 मार्च को बुध पू.भा. नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, चना तथा अनाज में मन्दी, रुई में घटाबढ़ी रहेगी।

23 मार्च को मंगल अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर शुक्र के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातु, मूँग, मोती ऊन, रूई, कपास, पाट, बारदाना, गुड़, शक्कर, लाल-मिर्च, सोयाबीन, तेल में तेजी की लाईन बननी प्रारम्भ होगी। गेहूँ, चना आदि अनाज में कुछ मन्दी बन सकती है।

27 मार्च को बुध मीन राशि में आकर सूर्य एवं केतु के साथ मेल करेगा। इसी दिन बुध अस्त भी हो रहा है। रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी, बिनौला, मूँग में घटाबढ़ी के बाद पहले अच्छी तेजी बने, फिर उतनी ही मन्दी बन सकती है।

29 मार्च को बुध उ.भा. नक्षत्र में आकर सूर्य एवं केतु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। चाँदी, रूई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूँ, अनाज में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आने से अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रुई, गेहूँ, जौं, चना, चावल तेज होंगे।

[**नोट**–ता. 12 से 17 मार्च तक, पुन: 23 से 27 मार्च तक वायदा बाज़ार तेज रहेंगे।]

☞ अप्रैल–3 अप्रै. को शुक्र कृतिका नक्षत्र में आएगा। जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, चाँदी, सोना, मोती आदि जवाहरात में मन्दी बनेगी।

4 अप्रैल को ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण भी चाँदी, रुई, घी में विशेष तेजी लाएगा।

5 अप्रै. को बुध रेवती नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। केसर, मजीठ, लाल-चन्दन, लाल-मिर्च आदि लाल वस्तुओं में विशेष तेजी, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी, सोयाबीन, चाँदी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बन जाएगी।

6 अप्रै. को शुक्र वृष राशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। सोना, चाँदी, रूई, कपास, घी, कपड़ा, साफ्टवेयर शेयरों में अच्छी उठापटक के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

8 अप्रै. को कर्क राशिगत गुरु मार्गी होने से रुई, चाँदी में मन्दी बनकर तेजी होगी। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू, घी में तेजी बनेगी।

10 अप्रै. को मंगल भरणी नक्षत्र में आएगा। इसी दिन मं. पश्चिम में अस्त होगा। सोने, चाँदी, रूई, गेहूँ, अलसी, जौं, चना, गुड़ में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा।

12 अप्रै. को बुध मेष राशि में आकर मंगल के साथ योग करेगा। सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातु, मूँग, मोती आदि रत्न, ऊन, रुई, कपास, पाट, बारदाना, गुड़, चावल, चना आदि तेजी के रुख को बल मिलेगा।

14 अप्रै. को सूर्य भी अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर बुध एवं मंगल के साथ मेल करेगा। यह योग पिछली चली आ रही तेजी की ओर बढ़ावा देगा। फिर भी सावधानीपूर्वक देखते हुए आगे बढ़े। रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी। गेहूँ, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं, मटर में घटाबढ़ी के बाद पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी।

15 अप्रै. को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आएगा। शु.-श. में पहले ही समसप्तक योग चल रहा है। चाँदी, सोना आदि धातु, अलसी, एरण्डी, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, नारियल में पहले मन्दी का झटका लगकर बाद में तेजी बनेगी।

16 अप्रै. को वक्री शनि अनुराधा (2) में आने से लाल मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर, क्रूड-आयल, सोने में तेजी बनेगी।

18 अप्रै. को बुध भरणी नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन शनिवारी अमावस भी व्यापारिक जिन्सों में तेजीकारक होगी। गेहूँ, चावल, चना आदि अनाज, मूँग, शक्कर, सोयाबीन, सरसों में तेजी बनेगी।

20 अप्रै. को सोमवार के दिन चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, सोने में तेजी रहे, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

22 अप्रै. को बुध पश्चिम से उदय होगा। मेष राशि में सूर्य-मंग.-बुध योग बना हुआ है। ऊन, कपास, रुई, शेयरों तथा घी में अच्छी घटाबढ़ी के मध्य तेजी का रुख रहेगा।

25 अप्रै. को बुध कृतिका में रुई में तेजी, चाँदी, घी में घटाबढ़ी होकर मन्दी बनाएगा।

26 अप्रै. को शुक्र मृगशिर नक्षत्र में आकर गेहूँ, चना, ज्वार, सोयाबीन, सरसों में मन्दी तथा गुड़, शक्कर, चीनी, घी में तेजी करेगा।

27 अप्रै. को बुध वृष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा तथा इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। रूई में पहले मामूली मन्दी बनकर फिर तेजी बने। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोयाबीन, बैंकिंग शेयर्ज़, मूँग में विशेष तेजी का रुख बनेगा। इसी दिन सूर्य भरणी नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्वन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, कॉपर, मूँग, चना, सरसों, गुड़ में भी तेजी की लाईन बनेगी।

29 अप्रै. को मंगल कृतिका में आकर बुध के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाकर घटाबढ़ी को बढ़ावा देगा। गेहूँ, मूँग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

☞ मई–ता. 2 मई को ही शुक्र एकाकी रूप में मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। रूई, कपास, सूत, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मन्दी, अलसी, गुड़, घी, साफ्टवेयर शेयर्ज़ में घटाबढ़ी रहेगी। गेहूँ, जौं, चना, चावलों में तेजी बनेगी।

3 मई को मंगल वृष राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। लाल चन्दन, लाल मिर्च, गुड़, सरसों, सोयाबीन, रुई, कपास, सूत, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, सोना, चाँदी, कॉपर, जिस्त आदि तथा मैटल/इस्पात शेयरों में ज़ोरदार तेजी बनेगी।

8 मई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आने से गेहूँ आदि अनाजों में अचानक मन्दी का वातावरण बनेगा। इसलिए ता. 8 से पहले तेजी के सौदे निपटा लें।

10 मई को गुरु आश्लेषा (2) में आने से घी, तेल, चना, रुई, कपास, ग्वार में तेजी का रुख बनेगा।

12 मई को सूर्य कृतिका नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। घी, रुई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में अच्छी तेजी बनेगी।

15 मई को सूर्य वृष राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। अतएव यह योग विशेष वायदा एवं हाजिर बाज़ार में विशेष तेजी लेकर आएगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी बनेगी। जौं, चना, गेहूँ, मटर, अरहर, मूँग, चावल में कुछ मन्दी बनकर बाद में तेजी बने। शेयर बाज़ार, क्रूड आयल में अच्छी तेजी बनेगी।

17 मई को मंगल रोहिणी नक्षत्र में आकर बुध के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। बाज़ार में घटाबढ़ी के बाद तेजी का माहौल बनेगा। रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल-मिर्च, हींग, शेयरों में तेजी का रुख रहेगा।

19 मई को वृषराशिगत बुध वक्री होगा। वक्री शनि की उस पर दृष्टि रहेगी। चाँदी, बैंकिंग शेयर्ज, सोने, मूँग, गुड़, शेयर बाज़ार, तेल, सोयाबीन में अच्छी ज़ोरदार तेजी का झटका लगेगा।

21 मई को शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आकर धान्य, गेहूँ, बिनौले में तेजी परन्तु सोने, चाँदी, रूई, कपास, सूत में मन्दी बनेगी।

22 मई को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से सोने, चाँदी, रूई में तूफानी तेजी का चाँस है। शेयर बाज़ार, कॉपर, कपास, बिनौला, मूँग में भी तेजी बनेगी।

23 मई को राहु हस्त (1) तथा केतु उ.भा. (3) में आने से रुई, गुड, खाण्ड, चावल में तेजी बनेगी।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आकर मंगल एवं बुध के साथ एक नक्षत्र बनाएगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। अतएव सोने, क्रूड-आयल में तूफानी तेजी बन सकती है। घी, रुई, चाँदी, अलसी, शेयर-बाज़ार, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, सुपारी, मिर्च, राई में भी अच्छी तेजी बने। तेजी की यह लाईन 29 मई तक चलेगी।

30 मई को शुक्र कर्क राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। रुई में पहले अच्छी मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी परन्तु चाँदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में मन्दी बने।

जून–ता. 2 जून को शुक्र पुष्य में आने से रुई, सूत, सन्, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी और लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी।

4 जून को वक्री शनि अनुराधा (1) में आने से कपास, रुई, केसर, क्रूड-आयल में तेजी का रुख रहेगा।

6 जून को मंगल मृगशिर नक्षत्र में आएगा। सू., मं., बु. ग्रहों पर शनि की दृष्टि भी चल रही है। इसी दिन गुरु आश्लेषा (3) में आएगा। तिल, चाँदी में विशेष तेजी, रुई, गुड़, सोयाबीन में मन्दी की उम्मीद होने पर भी तेजी का रुख बनेगा।

8 जून को सूर्य मृगशिर नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन वक्री बुध पूर्व में उदय होगा। सोना, चाँदी में तेजी बनकर अचानक मन्दी बन सकती है। कॉपर, रुई, सूत, रेशम, सन्, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, तेल, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा तथा अलसी में तेजी बनेगी।

[यदि 8-9 ता. को धातुओं में मन्दी बने तो आगे के लिए मन्दी का ही व्यापार करें।]

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आएगा। इसी दिन मंगल भी मिथुन में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। बारदाना, रेशम, सोना, चाँदी, कपास, कॉपर, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल आदि अनाज, **लाल मिर्च आदि में अच्छी ज़ोरदार तेजी का झटका लगेगा।**

ता. 16 जून को भी भौमवती अमावस व्यापारिक वस्तुओं में तेजीकारक रहेगी। [परन्तु शीघ्र ही इस तेजी में कमी आ जाएगी। अतएव व्यापारिक बन्धुओं को शीघ्र मुनाफा काट लेना चाहिए।]

राज्यभ्रंशोराज युद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्।
उपघातोऽल्पवृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।

अर्थात् राजनीतिक टकराव, जन-धन-सम्पदादि की क्षति एवं अल्प वृष्टि हो।

17 जून से आषाढ़ अधिक मास प्रारम्भ हो रहा है। सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुओं में मन्दी, जबकि करियाना वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा। यथा–

द्वयाषाढ़े व्यथा किंचित् खण्डवृष्टिः क्वचित्पुनः।।

अर्थात् दो (अधिक) आषाढ़ मास होने से प्रजा में महँगाई के कारण व्यथा, अनिश्चितता एवं आक्रोश रहे। कुछ क्षेत्रों में खण्ड वर्षा हो अर्थात् कहीं अधिक वर्षा से हानि एवं कहीं कम वर्षा से हानि होगी। धान्यादि के भाव बढ़ेंगे।

ता. 17 जून को शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा।

गुरु-शुक्रौ यदैकस्थो नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः।।

अर्थात् देश के कुछ भागों में कहीं आन्तरिक कलह, उपद्रव, अशान्ति एवं युद्ध का वातावरण बने। कहीं असामायिक वर्षा से हानि हो, दैनिक उपभोग्य वस्तुओं में तेजी होगी। रुई में कुछ मन्दी बने।

18 जून, गुरुवार को चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, रेशमी, ऊनी-वस्त्र, सरसों, तेल, घी में तेजी, सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़ में मन्दी बनेगी।

22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चाँदी में तेजी बनेगी। सोने में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

25 जून को मंगल भी आर्द्रा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। मंगल सूर्य के पीछे-पीछे चल रहा है। वर्षाकाल में वर्षा अच्छी होगी।

भौमस्य पृष्ठतो भानुजातश्च जलशोषकः।
भवत्यत्र न संदेहो विपरीतो जलप्रदः।।

रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक में तेजी और चाँदी में मामूली मन्दी बनेगी।

26 जून को गुरु आश्लेषा (4) में आने से घी, तेल, रुई, चावल, सोने में तेजी बनेगी।

30 जून को बुध मृगशिर नक्षत्र में आएगा। शनि की इस पर दृष्टि है। रुई, चाँदी, गेहूँ, तिल, सरसों, मूँग, उड़द, बैंकिंग शेयर्ज़ में पहले मन्दी बनकर अचानक तेजी का रुख बन जाएगा।

☞ जुलाई—मासारम्भ से ता. 4 जुला. तक व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के मध्य तेजी का रुख रहेगा।

5 जुला. को बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन शुक्र मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में प्रवेश करेगा तथा शुक्र पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। यह योग विशेष तेजीकारक होगा। सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुओं, घी, गुड़, साफ्टवेयर शेयर्ज़ में अच्छी ज़ोरदार तेजी बनेगी। चाँदी, रुई, में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

6 जुला. को सूर्य पुनर्वसु में आकर भी रुई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्ज़ी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थों, अन्य करियाना वस्तुओं में तेजी करेगा।

9 जुला. को बुध आर्द्रा में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाकर घटाबढ़ी करेगा। गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ में मन्दी बनकर घटाबढ़ी चलेगी।

12 जुला. को बुध पूर्व में अस्त होने से अनाज, घी, शेयरों में मन्दी, रुई, सोने, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

14 जुला. को गुरु मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। *गुरु-शुक्र के योग का फल 17 जून को भी लिखा जा चुका है। सिंह राशि के बृहस्पति का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है—*

गोधूमतिलमाषाज्य शालीनांच महर्घता।
सुवर्णरूप्यताम्राद्येः प्रवालानां समर्घता।।

अर्थात् सिंह राशि का वृहस्पति होने पर सुभिक्ष हो तथा वर्षा प्रबल रूप से होगी, विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन होगा। एवं च, गेहूँ, तिल, उड़द, घी, चावल, सोना, चाँदी, ताम्बा और मूँग विशेष महँगे होंगे। अलसी, रुई में घटाबढ़ी चलेगी। [हमारे विचारानुसार अचानक बाज़ार में सभी वस्तुओं/धातुओं में ज़ोरदार तेजी या मन्दी चलकर तुरन्त लाईन परिवर्तित हो जाएगी।] इसलिए यदि तेजी बनती है तो शीघ्र मुनाफा काटकर निकल जाएं।

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आने से रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, सोना, चान्दी, शेयर बाज़ार में तेजी बने, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर, उड़द, मूँग, चावल में मन्दी बनेगी।

18 जुला. शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, वस्त्र, अनाज, चाँदी, सोना, सरसों, मूँगफली आदि में अच्छी तेजी बनेगी।

20 जुला. को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आएगा। इसी दिन बुध भी कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। रुई, चाँदी, गुड़, दूध, तेल, मूँगफली, सरसों, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

22 जुला. को बुध पुष्य नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, रुई, घी, ऊनी-वस्त्र, मूँग में मन्दी बनकर भी बाद में सुधार हो जाएगा।

25 जुला. को सिंहराशिगत शुक्र वक्री होगा। इस पर वक्री शनि की दृष्टि भी चल रही है। इसी दिन राहु उ.फा. नक्षत्र में आएगा। लोहा, कागज़ (पेपर), काली मिर्च, रुई, सोना, चाँदी, कॉपर, क्रूड में तूफानी तेजी बन सकती है। गुड़, घी, खाण्ड, चावल, गेहूँ, साफ्टवेयर शेयर्ज़ में भी तेजी बनेगी।

28 जुला. को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आकर भी तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँगफली में तेजी बनेगी।

30 जुला. को मंगल कर्क राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। इसी दिन गुरु मघा (2) में भी आएगा। गुड़, शक्कर, सरसों, एरण्ड, अलसी, तेल, कॉपर, सोना, चाँदी, सोयाबीन में तेजी की लाईन बनेगी।

☞ अगस्त—2 अग. को वृश्चिक राशिगत शनि मार्गी होने से काली मिर्च, लाल-मिर्च, सोने, कॉपर रुई, तिल, तेल, सरसों, हींग में तेजी बनेगी।

3 अग. को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, रुई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च में तेजी बनेगी।

4 अग. को मंगल पुष्य नक्षत्र में आएगा। **इसी दिन बुध मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में आकर गुरु एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि चल रही है।** गेहूँ, जौं, चना, सोना, चान्दी, सूत, रुई, ऊनी वस्त्र, खाण्ड, क्रूड-आयल, मूँग, बैंकिंग शेयर्ज़ में अच्छी ज़ोरदार तेजी बनेगी।

5 अग. को बुध पश्चिम में उदय होगा। इसी दिन सिंह राशिगत शुक्र पश्चिम मे अस्त होगा। सोना, चाँदी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में मन्दी बनेगी। रूई में तेजी बनेगी।

[घटाबढ़ी के मध्य मन्दी का यह रुख ता. 11 तक चलेगा। यद्यपि रुई, कपास में मज़बूती बनी रहेगी।]

12 अग. से बाज़ार की लाईन एकदम परिवर्तित होगी। इस दिन मंगल पूर्व में उदय होगा, बुध पू.फा. नक्षत्र में आएगा। सिंह राशिस्थ गुरु भी पश्चिम में अस्त होगा। रुई, कपास तथा शेयरों में तेजी बनेगी। सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना आदि अनाज में मन्दी बनेगी।

13 अग. को वक्री शुक्र कर्क राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है। परन्तु यहाँ मन्दी की जगह व्यापारिक वस्तुओं में तेजी की लाईन बनेगी। रूई, कपास में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी, अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। चाँदी, जौं, चना, अरहर में मामूली मन्दी बने।

14 अग. को गुरु मघा (3) में आने से गुड़, खाण्ड, चना, अरहर आदि सर्वप्रकार के अनाज, सोना, चाँदी, लोहे में मन्दी बनेगी।

16 अग. रविवार को चन्द्रदर्शन होने से शेयरों, गुड़, तेल, सोयाबीन, सोना-चाँदी में तेजी बनेगी। रुई, कपास में घटाबढ़ी के बाद मामूली मन्दी बने।

17 अग. को सूर्य सिंह राशि में आकर बुध एवं गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। अतएव बाज़ार में विशेष तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, सोयाबीन, क्रूड आयल, शेयर बाज़ार तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में तेजी बनने का चाँस है। [परन्तु हमारे विचारानुसार तेजी **प्रारम्भ होने का इन्तजार करें, क्योंकि गुरु-शुक्र अस्त चल रहे हैं, यदि तेजी शुरु हो जाए तो माल पकड़कर शीघ्र निकाल देवें। वैसे तेजी का झटका अवश्य लगेगा।**]

20 अग. को शुक्र पूर्व में उदय होने से चना, गेहूँ, चावल, बाजरा, दालें आदि अनाज तेज होंगे। नारियल, रेशमी सूत, सॉफ्टवेयर शेयर्ज में अच्छी तेजी बनेगी।

23 अग. को बुध कन्या राशि में आकर राहु के साथ योग करेगा। कुछ वस्तुओं में भयंकर तेजी की लाईन बनेगी। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, शेयर्ज में तेजी बने। चना, रूई, घी, चाँदी में पहले मामूली मन्दी बन फिर तेजी बनेगी।

25 अग. को मंगल आश्लेषा नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, चाँदी में मन्दी का चाँस होने पर भी अचानक मामूली तेजी दिखाई देगी। चना, गेहूँ, चावल आदि अनाज में तेजी बनेगी।

30 अग. को गुरु मघा (4) में आने से गुड़, सोना, चान्दी, घी, चीनी में कुछ मन्दी बनेगी।

31 अग. को सूर्य पू.फा. नक्षत्र में तथा बुध हस्त में आएगा। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रुई, सूत में तेजी बनेगी। चाँदी में घटाबढ़ी चलेगी।

☞ सितम्बर–मासारम्भ से ता. 5 तक घटाबढ़ी के मध्य मुख्यत: मन्दी का माहौल रहेगा। अनाज, सब्ज़ी तथा रुई में तेजी रहेगी।

6 सितं. को कर्क राशिगत शुक्र मार्गी होने से सोना, चाँदी, गुड़, घी, रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

7 सितं. को सिंह राशिगत गुरु पूर्व में उदय होने गेहूँ, चना, चावल आदि अन्न, घी, रुई, शेयरों, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। यह तेजी की लाईन धीरे-धीरे चलेगी।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. में आने से रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, सुपारी में तेजी बनेगी।

14 सितं. को गुरु पू.फा. नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ, शक्कर, चावल आदि अनाजों में मन्दी बनेगी। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

15 सितं. को मंगल सिंह राशि में आकर गुरु के साथ योग करेगा। मंग.-शनि की परस्पर चतुर्थ-दशम् दृष्टि सम्बन्ध भी शुरु होगा। जोकि 2 नवं. तक रहेगा। इस अवधि में सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि धातु, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूँ, अलसी, रुई, लाल वस्त्र, लाल मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी बनेगी।

17 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध एवं राहु के साथ योग करेगा। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, गुड़, सोयाबीन, लाल-मिर्च में तेजी बनेगी। शेयरों एवं चाँदी में घटबढ़ी, रुई, घी में अच्छी घटाबढ़ी चले। गेहूँ, चना में कुछ मन्दी का झटका लगेगा।

[घटाबढ़ी का यह रुख 23 सितं. तक चलेगा।]

24 सितं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। **सोने, चाँदी में धमाके की तेजी बनेगी।** शेयरों, रुई, घी, मूँग में भी अच्छी तेजी बनेगी।

27 सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में तथा शनि अनु. (2) में आएगा। गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, हल्दी, शेयरों में तेजी बनेगी।

30 सितं. को गुरु पू.फा. (2) में आने से गुड़, खाण्ड, रुई, शक्कर, गेहूँ, चावल आदि अनाजों में मन्दी बने।

☞ अक्तूबर–**1 अक्तू. को शुक्र सिंह राशि में आकर मंगल एवं गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी।** सोना, ताम्बा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-मिर्च, घी, साफ्टवेयर, शेयर्ज़ में अच्छी ज़ोरदार तेजी बनेगी। रुई, चान्दी में पहले मन्दी बनकर बाद में अच्छी तेजी बन जाएगी।

3 अक्तू. को वक्री बुध उ.फा. नक्षत्र में आकर राहु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर, बाजरा में तेजी, रुई, कपास, चान्दी में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

6 अक्तू. को मंगल पू.फा. नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की दृष्टि है। तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, मूँगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, मिर्च, ग्वार में तेजी बनेगी।

7 अक्तू. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से घी, अनाज, शेयरों, चान्दी, चना, कपास, खल-बिनौला, सोने, रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

9 अक्तू. को बुध मार्गी होने से चन्दन, सुपारी, नारियल, गेहूँ, जौं, चना, अनाज, सोने में तेजी बनेगी। रुई, चाँदी, घी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

11 अक्तू. को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आएगा। रुई, सूत, सोना, चाँदी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, कपूर में तेजी बनेगी।

14 अक्तू., बुधवार के दिन चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, रुई, सूत, बारदाना, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी, अन्न और घी में तेजी बनेगी।

15 अक्तू. को बुध हस्त में आकर गेहूँ, चावल, चना, अरहर आदि सभी प्रकार के अनाजों में कुछ मन्दा बनेगा।

17 अक्तू. को सूर्य तुला राशि में आएगा। रुई, चान्दी, ताम्बा, लाल-चन्दन, श्रीफल, सुपारी, सोयाबीन में कुछ तेजी बनेगी। इसी दिन शुक्र पू.फा. में आने से ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना, जौं, ज्वार में मन्दी बनेगी।

[ता. 17 से 23 अक्तू. के मध्य घटाबढ़ी के बाद साधारण तेजी रहेगी।]

24 अक्तू. को सूर्य स्वाती में आने से कॉपर में 5-10 रु. की विशेष तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, शेयरों, रुई, सूत, सन्, रेशम, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

25 अक्तू. को बुध चित्रा में आने से रुई, चाँदी, घी, गेहूँ, चना, शेयरों में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बने।

27 अक्तू. को बुध पूर्व में अस्त होने से घी, गेहूँ, चना आदि अनाज कुछ मन्दे, सोना, चाँदी, रुई, कपास, ग्वार में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

28 अक्तू. को मंगल उ.फा. नक्षत्र में आकर राहु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। मं.-गु.-शु. पर शनि की दृष्टि चल रही है। गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोयाबीन, सोना, ताम्बा, मिर्च आदि में ज़ोरदार तेजी बनेगी।

29 अक्तू. को बुध तुला राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, सोना, सोयाबीन में अच्छी तेजी बनेगी।

30 अक्तू. को शुक्र उ.फा. नक्षत्र में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी चल रही है। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दी करता है। परन्तु ग्रहयोग अनुसार यहाँ विशेष तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, चावल, शेयरों, चाँदी रुई, कपास में अच्छी तेजी बनेगी।

31 अक्तू. को शनि अनुराधा (3) में आने से क्रूड-आयल, तेल, डीज़ल, सोयाबीन, सरसों, गुड़ के भावों में तेजी बनेगी।

☞ नवम्बर–2 नवं. को बुध स्वाती नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बना लेगा। रुई, घी, चावल, चाँदी, कपास, ग्वार, सोयाबीन में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

3 नवं. को मंगल एवं शुक्र कन्या राशि में आकर यद्यपि शनि की दृष्टि से हट जाएंगे, परन्तु राहु के साथ योग करेंगे। अतएव बाज़ार में पहले तूफानी तेजी बनेगी। *सोना, चाँदी, ऊन, लाल-रंग की वस्तुओं, गुड़, खाण्ड, चावल, रुई, कपास में विशेष तेजी बनेगी। तेजी की यह लाईन 2-3 दिन चलेगी।*

5 नवं. को गुरु पू.फा. (4) में आकर गुड़, खाण्ड, शक्कर में मामूली मन्दी बनाएगा।

6 नवं. को सूर्य विशाखा में आने से जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम में तेजी, अलसी, चाँदी, घी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

10 नवं. को बुध विशाखा में आकर सूर्य के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, मूँग, शेयरों, चाँदी, सोने, ताम्बे में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

12 नवं. को शुक्र हस्त नक्षत्र में आने से सोने, चाँदी, साफ्टवेयर शेयर्ज़ में तेजी बनेगी। खाण्ड, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। अन्नादि के भाव यदि मंदे हुए तो संग्रह करने से आगे लाभ होगा। रुई, चावल में मन्दी बने।

13 नवं. को शनि पश्चिम में अस्त होने से मेटल शेयर्ज़, रुई, सोने, कॉपर में मन्दी, गेहूँ, चावल आदि अनाज में तेजी बनेगी।

16 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। रुई, ताम्बा, चान्दी, सोना, ऊनी, वस्त्रों, क्रूड-आयल, तेल, सोयाबीन, गुड़, कपास में अच्छी तेजी की लाईन बनेगी। परन्तु शनि अस्त होने के कारण प्रारम्भ में मन्दी का प्रभाव रहेगा। परन्तु धीरे-धीरे शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

17 नवं. को बुध भी वृश्चिक राशि में आकर सूर्य एवं शनि के साथ मेल करके व्यापारिक वस्तुओं में विशेष उथल-पुथल करेगा। घी, तेल, सरसों, रुई, चान्दी, मूँग, क्रूड-आयल, सोयाबीन, गुड़, कपास, ग्वार, जिस्त, ज़िंक में विशेष तेजी बनेगी। सोने में तेजी बनेगी।

19 नवं. को मंगल हस्त तथा बुध अनुराधा नक्षत्र में आएगा। घी, गुड़, खाण्ड, नमक, मिर्च में तेजी, सूत, सन, रुई, सोना, चाँदी में मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

20 नवं. को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आकर बुध के साथ योग करेगा। जौं, चना आदि धान्य, ऊन, धागों, सोना, चाँदी, कॉपर, जिस्त आदि धातुओं में तेजी बनेगी। गेहूँ, अलसी, मिर्च में तेजी होकर मन्दी बने।

24 नवं. को शुक्र चित्रा में आने से सोना, चाँदी, साफ्टवेयर शेयरों, घी, रुई के भावों में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

27 नवं. को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आने से बैंकिंग शेयर्ज़, घी, गुड़, खाण्ड, चावल, मूँग में तेजी बनेगी।

28 नवं. को गुरु उ.फा. नक्षत्र में आकर राहु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गुरु पर शनि की दृष्टि भी है। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, घी, ग्वार में तेजी बनेगी। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

29 नवं. को शनि अनुराधा (4) में आने से कपास, रुई, घी में विशेष रुप से तेजी की लाईन चलेगी। अतएव पहले से स्टॉक होना चाहिए। केसर, चन्दन, कपूर, सोने में भी तेजी बनेगी।

30 नवं. को शुक्र तुला राशि में आने से रुई, चाँदी और अफीम में पहले तेजी, बाद में मन्दी बन सकती है। सोने, गुड़, खाण्ड, चावल, शेयरों में तेजी बनेगी।

☞ दिसम्बर–3 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। ऊनी वस्त्रों, सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड, रुई में तेजी बनेगी।

5 दिसं. को शुक्र स्वाती में आने से गुड़, खाण्ड, रुई में तेजी, अन्नादि के भावों में मन्दी बनेगी।

6 दिसं. को बुध धनु राशि में आएगा। अकेला बुध यद्यपि यहाँ मन्दी करता है **परन्तु मंगल एवं गुरु की दृष्टि के कारण** रुई,. कपास, वस्त्र, सूत, चान्दी, गुड़, बैंकिंग शेयर्ज़, मूँग में तेजी बनेगी। बाद में मन्दी बनेगी। शीघ्र तेजी दिखते निकल जाएं।

11 दिसं. को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बने, तिल, तिलहन, चाँदी, सोने, शेयरों में भी तेजी का रुख रहे।

12 दिसं. को मंगल चित्रा में आने से गेहूँ, चावल, चना, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, गुड़, सोयाबीन, सरसों में तेजी बनेगी।

14 दिसं. को बुध पू.षा. में आने से अनाज, चना, सोना, चाँदी में मन्दी बन जाएगी। खल-बिनौला तेज होंगे।

16 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल एवं गुरु **ग्रहों की दृष्टि है।** रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चाँदी, चावल, घी, दूध, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

17 दिसं. को शुक्र विशाखा में जाने से रुई, कपास, चाँदी तथा अनाज मन्दे की तरफ बढ़ सकते हैं।

[अतएव ता. 16 को तेजी दिखते ही मुनाफा काटकर चलना अक्लमन्दी होगी।]

23 दिसं. को मंगल तुला राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। यह शुक्र ग्रह की वस्तुओं को भी कुछ तेजी प्रदान करेगा तथा बाज़ार में फैले मन्दी के वातावरण को धीरे-धीरे तेजी प्रदान करेगा। रुई, कपास, सूत, पाट, बारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, उड़द, मूँग आदि अनाजों में तेजी बनाएगा। शेयरों, चाँदी में भी तेजी बनेगी।

24 दिसं. को बुध उ.षा. में आने से अनाज, गेहूँ, चना, उड़द में पुनः कुछ मन्दापन रहे।

25 दिसं. को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। रुई, शेयरों, चान्दी, अफीम में मन्दी का चाँस होने के बावजूद तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, उड़द, मूँग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों, अलसी, सोयाबीन में अच्छी तेजी बनेगी।

26 दिसं. को बुध मकर राशि में आएगा। इस पर शनि की दृष्टि रहेगी। सोना, चाँदी, क्रूड-आयल, बैंकिंग शेयर्ज़, कपास, डीज़ल, मूँग, उड़द में अच्छी तेजी बनेगी।

28 दिसं. को शुक्र अनुराधा नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, चावल, नमक आदि में मन्दी बनेगी।

29 दिसं. को सूर्य पू.षा. नक्षत्र में आने से तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चान्दी में तेजी बनेगी।

[तेजी की यह लाईन नववर्ष के आरम्भ तक चलेगी।]

नोट–ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे। —सम्पादक

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।
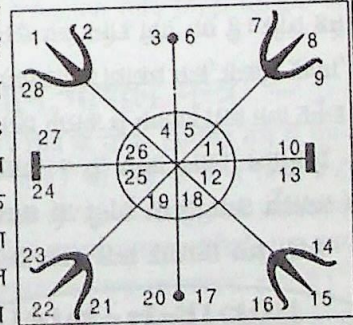
खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं–

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देनी वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है-

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना भी अधिक जप, होम तथा शारीरिक प्रयास किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों ने मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे-गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी प्रकाशित पुस्तक **'शिव मन्त्रावली'** में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल-सन् 2015-16 ई.

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2015-16 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	15-14	प्रात: 8/50 से रात्रि 21/38 तक
19 फरवरी	मीन	05-21	18 की रात्रि 22/57 से 19 की प्रात: 11/45 तक
20 मार्च	मेष	28-16	20 की रात्रि 21/52 से 21 की प्रात: 10/40 तक
20 अप्रैल	वृष	15-12	प्रात: 8/48 से रात्रि 21/36 तक
21 मई	मिथुन	14-15	प्रात: 7/51 से रात्रि 20/39 तक
21 जून	कर्क	22-08	दोप. 15/44 से अगले दिन प्रात: 04/32 तक
23 जुलाई	सिंह	9-00	22 की रात्रि 26/36 से 23 की दोप. 15/24 तक
23 अगस्त	कन्या	16-07	प्रात: 9/43 से रात्रि 22/31 तक
23 सितम्बर	तुला	13-51	प्रात: 7/27 से रात्रि 20/15 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	23/17	सायं 16/53 से अगले दिन प्रात: 5/41 तक
22 नवम्बर	धनु	20-55	दोपहर 14-31 से अद्धरात्रि बाद 27/19 तक
22 दिसम्बर	मकर	10-18	21 की रात्रि 27/54 से 22 की सायं 16/42 तक
20 जन.(2016)	कुम्भ	20-57	दोपहर 14/33 से अर्द्धरात्रि 27/21 तक
19 फरवरी	मीन	11-04	प्रात: 04/40 से सायं 17/28 तक
20 मार्च	मेष	10-00	प्रात: 03/36 से सायं 16/24 तक

क्रान्तिसाम्य काल-2015-16 ई.

यहाँ सूर्य-चन्द्रमा का महापात गणित द्वारा प्रणीत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल को वर्जित किया गया है। यह समयावधि विवाहादि शुभ मुहूर्त्तों के लिए अशुभ परन्तु मन्त्र-यन्त्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ होती है।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
29 जन.	16 44	30 जन.	10 52
11 फर.	17 15	11 फर.	26 01
23 फर.	04 01	23 फर.	10 05
8 मार्च	06 16	8 मार्च	12 45
20 मार्च	10 23	20 मार्च	15 20
1 अप्रै.	21 24	1 अप्रै.	27 51
14 अप्रै.	16 06	14 अप्रै.	21 59
26 अप्रै.	8 45	26 अप्रै.	17 39
8 मई	23 59	9 मई	13 49
8 अग.	9 19	8 अग.	20 04
21 अग.	10 49	21 अग.	19 02
2 सितं.	06 02	2 सितं.	11 33
14 सितं.	25 54	15 सितं.	8 17
27 सितं.	14 19	27 सितं.	19 09
9 अक्तू.	16 35	9 अक्तू.	23 19
22 अक्तू.	17 59	22 अक्तू.	24 23
2 नवं.	25 14	3 नवं.	11 12
(सन् 2016 ई.)			
3 फर.	06 09	3 फर.	19 39
14 फर.	20 02	15 फर.	03 13
27 फर.	13 48	27 फर.	20 52
10 मार्च	21 21	10 मार्च	26 11
23 मार्च	04 30	23 मार्च	10 49
5 अप्रै.	04 41	5 अप्रै.	10 02

वारुणी पर्व

18 मार्च	17 38	18 मार्च	22 28
(सन् 2016 ई.)			
4 अप्रै.	27 07	5 अप्रै.	10 35

-सूर्य-चन्द्रग्रहण-

सूर्य एवं चन्द्र-ग्रहणों का पर्वकाल जानने के लिए देखें पृ. 15

दीपावली पर्व

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना, अनुष्ठान के लिए 11 नवम्बर, बुधवार को दीपावली पर्व में प्रदोष एवं निशीथ काल विशेष सिद्धिदायक होगा। देखें पृ. 87

पुत्र प्रदायक सन्तान गणपति स्तोत्र

आगे दिया गया सन्तान गणपति-स्तोत्र के तीन पाठ नित्यप्रति **श्रद्धापूर्वक निरन्तर 21 दिन** तक करने से वाँछित पुत्र सन्तति का सुख प्राप्त होता है। संक्षेप में पाठ विधि इस प्रकार है– **भाद्रपद या माघ** मास की गणेश चतुर्थी का फलाहारी व्रत रखकर कुशा या ऊनी आसन पर पूर्व या उत्तर अभिमुख बैठ जाएँ और भगवान् श्री गणेश की प्रतिमा या शीशे में लगे चित्र तथा श्री गणेश यंत्र को अपने सम्मुख विराजमान कर लें। चन्दन, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य आदि से श्री गणेश का पूजन पण्डित जी से करवाकर संकल्प करें कि "मैं अमुक कार्य (पुत्र सन्तति प्राप्ति) के लिए इस स्तोत्र का प्रतिदिन तीन बार पाठ करूँगा/करूँगी।" तत्पश्चात् भगवान् श्रीगणेश का ध्यान करते हुए श्रद्धापूर्वक स्तोत्र पाठ करें। श्री गणेश पूजन एवं संकल्पादि कृत्य यदि किसी कर्मकाण्डी पण्डित जी द्वारा करवाए जाएं, तो प्रशस्त होगा। स्तोत्र पाठ उपरान्त यदि **ॐ गं गणपतये नमः** मन्त्र की ५, ३ या १ माला का पाठ चन्द्रार्घ्य व लड्डुओं का प्रसाद यथाशक्ति लगाएँ तो लाभप्रद होगा। कोई साधक यदि निरन्तर २१ दिन पर्यन्त पाठ न कर सकता हो तो उसको प्रति मास श्री गणेश चतुर्थी को व्रत करके तीन सँख्या का पाठ तथा **ॐ गं गणपतये** मंत्र के 11 पाठ कम-से-कम एक वर्ष तक करना चाहिए। मनोवाँछित पुत्र सन्तान प्राप्ति के लिए यह एक अत्यन्त सफल उपाय होगा।

नोट–स्तोत्र पाठ के दौरान दम्पत्ति को भूमिशयन, अल्प भोजन, फलाहार सत्यवचन, ब्रह्मचर्य इत्यादि नियमों का अवश्य पालन करना चाहिए।

संतान गणपति स्तोत्र

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धि युताय च। सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धि प्रदाय च।।
गुरूदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते। गोप्याय गोपिताशेषभुवनाय चिदात्मने।।
विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टि करायते। नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शुण्डिने।।
एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः। प्रपन्न जनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने।।
शरणं भव देवेश सन्तति सुदृढ़ां कुरु। भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक।।
ते सर्वे तव पूजार्थं निरताः स्युःवरो मतः। पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धि प्रदायकम्।।

सिद्धि-बुद्धिसहित उन गणनाथ को नमस्कार है, जो पुत्रवृद्धि करने वाले तथा जो सब कुछ देने वाले देवता हैं। जो भारी उदर वाले (लम्बोदर), गुरु (ज्ञानदाता), गोप्ता (रक्षक), गुह्य (गूढ़स्वरूप) तथा सब ओर से सुन्दर हैं। जिनका स्वरूप और तत्त्व गोपनीय है तथा जो समस्त भुवनों के रक्षक हैं, उन चिदात्मा आप गणपति को नमस्कार है। जो विश्व के मूल कारण, कल्याणस्वरूप, संसार की रचना करने वाले, सत्यस्वरूप, सत्य से पूर्ण तथा शुण्डधारी हैं, उन श्री गणेश्वर को बारम्बार नमस्कार है। जिनके एक दाँत और सुन्दर मुख है ; जो शरणागत भक्तजनों के रक्षक तथा जो शरणागत्जनों की पीड़ा का नाश करने वाले हैं, उन शुद्धस्वरूप, आप गणपति को बारम्बार नमस्कार है। देवेश्वर ! आप मेरे लिए शरणदाता हों। मेरी संतान-परम्परा को सुदृढ़ करें। गणनायक ! मेरे कुल में जो पुत्र हों, वे सब आपकी पूजा के लिए सदा तत्पर रहें। यह वर प्राप्त करना मुझे अभीष्ट है। यह पुत्रप्रदायक स्तोत्र समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाला है।

–पुत्र संतति प्रदायक–"सन्तान गोपाल मन्त्र"–

भगवान् श्रीकृष्ण के बालरूप की प्रतिमा (अथवा) चित्र के सामने नियमित रूप से धूप-दीप जलाकर संकल्पपूर्वक प्रतिदिन (एक या तीन माला) का पाठ करने से निश्चय ही मनोवांछित पुत्र सन्तान प्राप्ति होती है। सवा लाख संख्या में पाठ करना शुभ एवं लाभदायक रहता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी अथवा किसी शुभ मुहूर्त्त में पाठारम्भ करना चाहिए। पाठ स्वयं विधिपूर्वक अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा श्रद्धापूर्वक करवाना लाभदायक होता है।

विनियोग–अस्य श्री सन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, ग्लौं बीजम्, नमः शक्तिः, पुत्रार्थे जपे विनियोगः।

अङ्गन्यास–'देवकीसुत गोविन्द' हृदयाय नमः, 'वासुदेव जगत्पते' शिरसे स्वाहा, 'देहि मे तनयं कृष्ण' शिखायै वषट्, 'त्वामहं शरणं गतः' कवचाय हुम्, '**ॐ नमः**' अस्त्राय फट्॥

ध्यान–
वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम्।
किरीटसारथिं पुत्रमानयन्तं परात्परम्॥१॥
आदाय तं जलस्थं च गुरवे वैदिकाय च।
अपर्यन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थमच्युतम्॥२॥

मूल मन्त्र–"**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥**"

इसका तीन लाख संख्या में जाप करना चाहिए। साथ में हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित **'सन्तान गोपाल स्तोत्र'** (हिन्दी अनुवाद सहित) पुस्तक में से सन्तान गोपाल स्तोत्र का भी यथासम्भव पाठ करना चाहिए तथा मंत्र/स्तोत्र जप के बाद दशांश, हवन, तर्पण, मार्जन कर ब्राह्मणों को खीर, पूड़ी आदि दक्षिणा सहित भोजन करवाकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें।

लघु शास्त्र विहित सन्तानप्रद मन्त्र

(4) ॐ नमो भगवते जगत् आत्मसूतये नमः।

मन्त्रार्थ (सम्पूर्ण जगत् जिनकी अपनी सन्तान है, उन भगवान् श्री कृष्ण को नमस्कार है) इस मन्त्र का **तीन लाख** की सँख्या में संकल्पपूर्वक जप करने का विधान है। पहले लिखी गई विधि अनुसार प्रतिदिन निश्चित सँख्या में, शुभ मुहूर्त्त से प्रारम्भ करके भगवान् कृष्ण की बाल प्रतिमा के सम्मुख पूर्वाभिमुख होकर, शुद्धासन पर बैठकर श्रद्धापूर्वक पाठ करें।

अथ ध्यान (श्रीकृष्ण)–

शंख चक्रगदा पद्म् दधानं सूतिकागृहे।
अंके शयानं देवक्याः कृष्णं वन्दे विमुक्तये ।।

(अर्थात् सूतिका गृह में शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए माता देवकी की गोद में निद्रालीन हुए हैं, उन भगवान् कृष्ण की मैं सन्तान प्राप्ति के प्रतिबन्धक (दोष) से विमुक्त होने के लिए वन्दना करता हूँ।)

इस मन्त्र जप/अनुष्ठान के भी सम्पन्न हो जाने पर श्री **सन्तानगोपाल स्तोत्र** का पाठ, फिर किए पाठ की दशमांश संख्या में हवन, उसका दशांश तर्पण और उसका दशांश मार्जन करना चाहिए। तदनन्तर **ब्राह्मणों को** मिष्ठान्न सहित भोजन, **वस्त्रादि का यथोचित दान-दक्षिणादि देकर उनका आशीर्वाद** ग्रहण करना चाहिए। तथा समाप्ति पर भगवान् श्रीकृष्ण जी की आरती और खीर, हलुवा आदि का **भोग लगाकर** परिवार में सबको बाँटकर स्वयं ग्रहण करें।

पुत्र लाभ के लिए कुछ अन्य जपनीय मन्त्राः

**(5) अस्माकं पुत्र लाभाय भजामि त्वां जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते।। ५।।**

अर्थ–(हे जगदीश्वर ! मैं अपने लिए पुत्र प्राप्ति के लिए उद्देश्य से आपकी आराधना करता हूँ। रमावल्लभा, वासुदेव, श्री कृष्ण ! मुझको पुत्र संतान दीजिए।।५।।

**(6) वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव।
पुत्रं मे देहि श्री कृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो।। ६।।**

अर्थ–वासुदेव ! मुझे बेटा दीजिए। माधव मुझे तनय (सन्तान) दीजिए। श्री कृष्ण मुझे पुत्र दीजिए। महाप्रभो ! मुझे वत्स (पुत्र सन्तति) दीजिए।। ६।।

**(7) वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत।
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो।। ७।।**

अर्थ–वासुदेव ! मुकुन्द ! ईश्वर ! गोविन्द ! माधव ! अच्युत ! श्री कृष्ण ! रमानाथ ! महाप्रभो ! मुझे पुत्र सन्तान दीजिए।। ७।।

**(8) विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकी नन्दन प्रभो ।। ८।।**

अर्थ–प्रभो देवकीनन्दन श्री कृष्ण ! आप साद मेरे लिए विद्वान्, बुद्धिमान और धन-सम्पन्न पुत्र प्रदान कीजिए।

**(9) मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जनार्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। ९।।**

अर्थ–(मेरे इष्टदेव गोविन्द ! वासुदेव ! जनार्दन ! श्री कृष्ण ! मुझे पुत्र सुख प्रदान कीजिए, मैं आपकी शरण में आया हूँ।)

आवश्यक नोट–उपरोक्त मन्त्रों के संदर्भ में ज्ञातव्य रहे कि सभी मन्त्रों की विधि-विधान एवं प्रयोग, 'सुतभाव प्रकाश' पुस्तक के आरम्भ में दिए गए (देवकी सुत गोविन्द) में जो-जो मुहूर्त, विनियोग, अंगन्यास या जप सँख्या, विधि आदि बताई गई है, उपरोक्त मन्त्रों के सम्बन्ध में भी समान रूप में रहेगी। ध्यान रहे, **अर्थ को ध्यान में रखकर किए गए मन्त्र जप का फल विशेष अधिक** होता है।

पाठोपरान्त ऊपर लिखे मन्त्र से कम-से-कम १०८ आहुतियाँ देनी चाहिएँ तथा अन्त में अपनी सामर्थ्यानुसार ब्राह्मण भोजन, दान-दक्षिणा सहित करवाना तथा कन्या पूजन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रसारोक्त सन्तान गोपाल यन्त्र

पहले अष्टदल कमल बनाकर उसकी कर्णिका में '**क्लीं**' इस काम बीज का उल्लेख करे। फिर वहीं यजमान पति-पत्नी के नाम और उसकी कामना भी लिख दे। यथा– '**अमुकस्य धर्मपत्न्याः अमुकदेव्याः पुत्रं कुरु कुरु।**' फिर आठ दलों के निम्न भागों में दो-दो करके अकारादि सोलह स्वरों को अंकित करे तथा उन्हीं के ऊपरी भागों में सन्तान गोपाल-मन्त्र के चार-चार अक्षरों को लिखे। फिर उन दलों के बाह्य भाग में एक गोल रेखा खींचकर उसे ककारादि वर्णों से आवेष्टित करे। तत्पश्चात् उस वृत्त के बाहर चतुष्कोण बनावें। किसी पात्र में माखन रखकर उस पर यह यन्त्र अंकित करें अथवा सूक्ष्म स्वर्ण या चान्दी आदि के पतरे पर इस यन्त्र को मुद्रित करावें। यन्त्र से अंकित नवनीत को नारी खा जाए और स्वर्णादि पत्रों पर लिखे गए इस यन्त्र को वह धारण करे। इससे वह पुत्र को जन्म देती है।

इस यन्त्र के देवता श्री कृष्ण हैं। यंत्र धारण करने से पूर्व चाँदी की कटोरी में जल रखकर यन्त्र को रेशमी लाल या गुलाबी वस्त्र पर पूजनोपरान्त स्थापित कर देवें, तदनन्तर श्री संतान गोपाल मंत्र एवं स्तोत्र का पाठ करें।

(शारदा तिलक में बताये अनुसार यह सन्तानगोपाल के मन्त्र की अनुष्ठानविधि लिखी गयी है।)
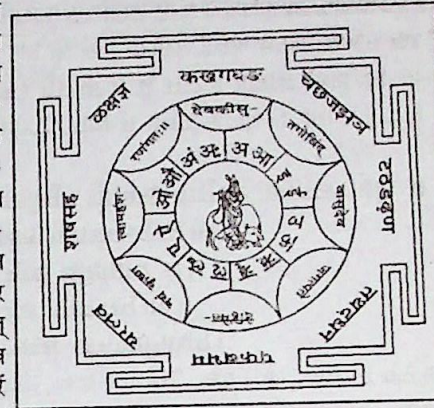
'दीर्घायु व रोगनाश के लिए महामृत्युञ्जय मन्त्र'

'ॐ हौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।'

अर्थ–हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि–यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन-अनवरत जलधारा के प्रवाहवत अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक, तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तथा एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ट दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

श्रीमहामृत्युन्जय मंत्र के जप से अकालमृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुषडाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट एवं असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है।

''श्रीमहामृत्युंजय कवच यन्त्रम्''

भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यन्त्र लिखकर गुग्गुल का धूप देकर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ में बाँध देना चाहिए। गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी) का नाम यथास्थान लिख देना चाहिए। साथ में रुद्राक्ष माला से महामृत्युञ्जय जप करते रहें।
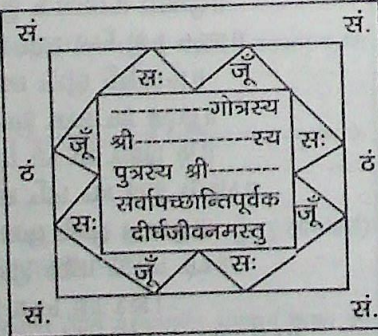
अचानक आए संकट को दूर करने के लिए

ॐ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॐ॥

मार्कण्डेय पुराण में देवी भगवती ने स्वयं प्रतिज्ञापूर्वक कहा है–**''जब-जब संसार में दानवी बाधा उपस्थित होगी, तब-तब अवतार लेकर मैं शत्रुओं का संहार करूँगी।''**

विधि–इस मंत्र की 1008 आहुति एक पान पर, शाकल्य, कमलगट्टा घी में भीगोकर, 1 सुपारी, 2 लौंग, 1 इलायची तथा गुग्गल, रक्त पुष्प, रक्त चन्दन से वेष्टित कर, सभी वस्तुएं सुर्वे में लेकर खड़े होकर हवन में समर्पित करने से अचानक आई हुई विपत्ति या संकट शीघ्र दूर हो जाता है।

भूमि-मकान-जायदाद-कृषिभूमि खरीदने/प्राप्ति के लिए

किसी से भूमि/जायदाद खरीदने या किराये पर लेने का प्रयास किया जा रहा हो अथवा किसी वाद-विवाद-शत्रुता-मुकद्मा आदि के चक्कर में अपनी ही ज़मीन-जायदाद-मकान आदि नष्ट होने की स्थिति पैदा हो रही हो तो द्विपुष्कर या त्रिपुष्कर योग जिस दिन पड़े, उस दिन अपनी आकांक्षा के अनुसार संकल्प करके श्रीगणेश-गौरी-कार्तवीर्य-दत्तात्रेय और वराह देवता की विधिवत् पूजा करके 10 दिन इस मंत्र का जाप 10-10 माला प्रतिदिन करें–

''ॐ एकदण्ष्ट्राय विद्महे महावराहाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रयोदयात्॥''

11वें दिन इसी मंत्र के 10 माला के जप द्वारा तिल, मधु, घी का हवन करें। फिर 12वें दिन से 27 दिन तक, कुल 16 दिन 5-5 माला प्रतिदिन इसी मंत्र का जप करें–

''ॐ नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवः स्वः पतये भूपतित्वं मे देहि च दापय स्वाहा॥''

28वें दिन इसी मंत्र के 8 माला जप द्वारा खड़ी हल्दी और घी का हवन करें। फिर 29वें दिन से 40 दिन तक, कुल 12 दिन 12-12 माला प्रतिदिन इस मंत्र का जप करें–

''ॐ श्रीवराहायधरण्युद्धारणाय स्वाहा''

41वें दिन इसी मंत्र का 15 माला जप छोटी इलायची, मधु, घी का हवन करें। 42वें दिन 3 ब्राह्मणों को विधिवत भोजन कराकर सर्वांग वस्त्र दान देने से भूमि/मकान/जायदाद की इच्छित कामना पूर्ण होती है।

कन्या के शीघ्र विवाह का अनुष्ठान

आजकल प्रायः यह देखा जा रहा है कि कई परिवार के लोगों को अपनी कन्या के विवाह के लिये विशेष प्रयत्नशील होने पर भी दहेज आदि की समस्याओं के कारण सफलता नहीं मिलती; कन्याएँ भी माता-पिता की इस चिन्ता से दुःखी होने लगती हैं और वे उपाय पूछती हैं।

इस प्रकार की स्थिति वाली कन्याओं की संख्या समाज में बहुत अधिक है। यह बड़े ही दुःख की बात है कि दहेज के अभाव से और आजकल के आधुनिक मनोवृत्ति के लड़कों के कारण लड़कियों के विवाह नहीं हो पा रहे हैं और घर-घर ऐसी कठिन समस्याएँ आ रही हैं। ऐसे लड़कों को तथा उनके अभिभावकों को तैयार होना चाहिये, जो बिना दहेज के विवाह करने को प्रस्तुत हों ; इसके साथ ही विवाहोपरान्त पति-पत्नी का परस्पर सामञ्जस्य न बैठने के कारण तलाक भी होने लगा है जो सर्वथा शास्त्रविरुद्ध है। परस्पर पति-पत्नी में सद्भाव तथा स्नेह-प्रेम भी रहना ही चाहिये। इसके लिए यहाँ एक अनुष्ठान प्रस्तुत है–

अतः मनोऽभिलाषित घर-वर शीघ्र प्राप्त करने के लिये कुमारी कन्याओं को प्रतिदिन माता पार्वती के चित्र का चन्दन-पुष्प आदि से पूजन कर आगे लिखे मन्त्र की ग्यारह माला का जप करना चाहिये। ग्यारह माला न हो सके तो पाँच माला (१०८ दानों की एक माला)–का जप अवश्य करना चाहिये। समयाभाव में भी एक माला तो करनी ही चाहिये तथा कातर-हृदय से पार्वती

माता से प्रार्थना करते हुए नीचे लिखी चौपाइयों की एक आवृत्ति पाठ करना चाहिये। श्रद्धा-भक्तिपूर्वक करने पर इस प्रयोग से शीघ्र सफलता मिलती है–

मन्त्र यह है– हे गौरि शंकरार्धाङ्गि यथा त्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

प्रतिदिन इसका एक बार पाठ करे–

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी॥
जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना॥
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥
पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष॥
सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी॥
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं॥
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मनकामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा॥
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदति मन मंदिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

(रा० च० मा ० १। २३५ । ५ से २३६ तक)

अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए अन्य मंत्र

जिन कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएं पड़ती हों, उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, बसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का आरम्भ करके यथेष्ठ संख्या में ५१ हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में, शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी कीकृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है–

ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरु ते नमः॥

इसके साथ प्रति सोमवार का व्रत तथा पार्वती मंगल स्तोत्र का पाठ भी किया जाए, तो मनोवांछित फल की प्राप्ति शीघ्र होती है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक शास्त्रोक्त प्रयोग प्रसंगवश मिलते हैं, जिनका जातिका की ग्रहदशा का अवलोकन करके करना चाहिए।

विदेश यात्रा के लिए कुछ सफल प्रयोग

(1) शुक्ल पक्ष के मंगलवार के दिन एक छोटी शीशी में शहद भरकर यह मन्त्र तीन बार पढ़कर किसी एकान्त स्थान में भूमि में गड्ढा खोदकर गाड़ देवें। मन्त्र–"**ॐ भूमिपुत्राय नमः, ॐ भूमि नन्दनाय नमः, ॐ सर्वकामफल प्रदाय नमः॥**" मंत्र पढ़ने के बाद शुद्ध पानी के 3 बार छींटें दे देवें।

(2) प्रस्तुत यंत्र को नवरात्रों में अथवा अक्षय तीज या गुरुपुष्य योग में भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही एवं अनार की कलम से लिखकर पंचोपचार विधि से 'सर्वमंगल मांगल्ये....' आदि मन्त्रों से पूजा करके। माला '**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**' 31 दिन तक निरन्तर करके 9 कन्याओं का पूजन करके प्रसाद बांटे तो विदेश यात्रा में पड़ने वाले विघ्न दूर होंगे।
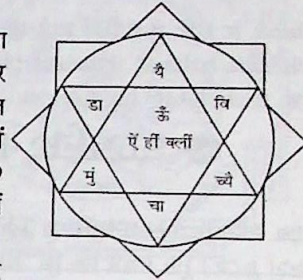
(3) सुन्दरकाण्ड का पाठ–किसी शुक्ल पक्ष के मंगलवार अथवा अन्य सिद्ध मुहूर्त्तों से प्रातः स्नानादि के बाद संकल्पपूर्वक श्री सुन्दरकाण्ड का पाठ निरन्तर 108 दिन (बिना क्रम तोड़े) तक करना शुभ होगा। पाठारम्भ वाले मंगलवार से हर मंगलकर को श्रीहनुमान चालीसा का भी पाठ करके श्रीहनुमान मंदिर में मिष्ठान्न युक्त प्रसाद बच्चों में बांट देवें। प्रतिदिन पाठ के बाद निम्न चौपाई भी पढ़ लेवें तो शीघ्र लाभ होगा–

पवनतनय बल पवन समाना। बुद्धि विवेक विग्यान निधाना।
कवन सो काज कठिन जग माही। जो नहि होइ तात तुम्ह पाही॥ कि. का.

धनप्रदायक सिद्ध बीसा यन्त्र

गुरुपुष्य योग अथवा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन शुभ मुहूर्त्त में भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही से सोने की निब अथवा चमेली की कलम से लिखकर मन्त्रोपचार पूजन कर रुद्राक्ष अथवा स्फटिक की माला से २१ हज़ार नवार्ण मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित कर स्वर्ण, चांदी आदि के यन्त्र में भरकर धारण करने से धन, धान्य व सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
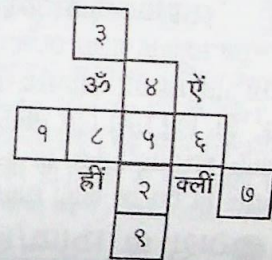
बारह राशियों के जप मन्त्र

ज्योतिष भारत की अति प्राचीन विद्या है। हमारे प्राचीन संतों, ऋषियों ने सम्पूर्ण आकाश मंडल का व्यापक अध्ययन करने पर जो निष्कर्ष दिए हैं, उन्हें आज भी विज्ञान मानता है। उन्होंने सम्पूर्ण आकाश मण्डल को जो अनन्त असीम है, सूर्य को आधार मानकर १२ खण्डों में विभाजित कर ज्योतिष विद्या को जन्म दिया है। उसी के आधार पर नाभीय चक्र को १२ राशियों एवं २७ नक्षत्रों में बांटा गया है। अलग-अलग राशि का अपना-अपना अलग विशेष देवता से अभिन्न सम्बन्ध है। प्रत्येक साधक को अपनी जन्म राशि से सम्बन्धित देवता और ग्रह का पूजन करना कल्याणकारी रहता है।

राशियों के देवता और मन्त्र-प्रत्येक साधक को अपनी सुविधा के अनुसार प्रतिदिन अपनी राशि के अधिष्ठित मन्त्र की कम-से-कम एक माला का जाप करते रहने से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

(१) मेष राशि-इस राशि के देवता भगवान् विष्णु हैं, अतः इनकी उपासना श्री लक्ष्मी नारायण मन्त्र के जाप से करनी चाहिए।

मन्त्र-"ॐ श्री लक्ष्मी नारायणाय नमः।"

इस मन्त्र का जाप केले के वृक्ष के पास अथवा लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में करें। फल और लड्डुओं का भोग लगाएं।

(२) वृष राशि-इस राशि के देवता भगवान् वासुदेव हैं। उनकी उपासना वासुदेव मन्त्र से करनी चाहिए।

मन्त्र-"ॐ क्रीं वासुदेवाय नमः"

(३) मिथुन राशि-इस राशि वालों को केशव मन्त्र का जाप करना चाहिए। भगवान् कृष्ण की दूध-दही, मक्खनादि से पूजन करें।

मन्त्र-"ॐ क्रीं केशवाय नमः"

(४) कर्क राशि-इस राशि वालों को हरिवंश मन्त्र का जाप करना चाहिए। राधा-कृष्ण के मन्दिर में खोये के लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए।

मन्त्र-"ॐ ह्रीं हरिहराय नमः"

(५) सिंह राशि-इस राशि वालों को मुकुन्द भगवान् (मदन गोपाल) का पूजन लाभकारी होगा। मुकुन्द भगवान् की खीर तथा मालपुओं से पूजा करनी चाहिए।

मन्त्र-"ॐ बालमुकुन्दायः नमः"

(६) कन्या राशि-इस राशि वालों को पीताम्बरधारी (पीत वस्त्रधारी) भगवान् कृष्ण का ध्यान करना चाहिए। पीले चावल और पीले रंग का हलवा भगवान् को अर्पण करें।

मन्त्र-"ॐ ह्रीं पीताम्बराय परमात्मने नमः"

(७) तुला राशि-इस राशि वालों को भगवान् श्री राम का सपरिवार पूजन करना लाभप्रद रहेगा। अपने को अति प्रिय लगने वाले मिष्ठान सहित पूजन करना चाहिए।

मन्त्र-"श्री रामः शरणं मम"

(८) वृश्चिक राशि-इस राशि वालों को नर-नारायण भगवान् की उपासना करनी चाहिए। जाप के उपरांत मास में कम-से-कम एक बार ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन करवाना चाहिए।

मन्त्र-"ॐ नमो नारायणाय नमः"

(९) धनु राशि-इस राशि के जातक को श्री धरणीधर भगवान् का पूजन और उपासना करनी चाहिए। जगत धारण करने वाले भगवान् का ध्यान करते हुए कच्चा दूध-दही अर्पण करें।

मन्त्र-"ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणीधराय: नमः"

(१०) मकर राशि-इस राशि वालों को ब्रह्मातारक की उपासना करनी चाहिए। जाप नियमित रूप से करते हुए संक्रान्ति और अमावस्या को सफेद वस्त्र, खीर तथा फलादि का दान ब्राह्मण को दक्षिणा सहित करें।

मन्त्र-"ॐ श्री वत्साय उपेन्द्राय नमः"

(११) कुम्भ राशि-कुम्भ राशि वालों को गोविन्द गोपाल की पूजा करनी चाहिए। गाय को हरा चारा और पेड़ा-शक्कर डाल कर खिलाएं। कृष्ण भगवान् का ग्वाल-बालों सहित ध्यान करें।

मन्त्र-"श्री गोपाल गोविन्दाय नमः"

(१२) मीन राशि-इस राशि वालों को प्रमुखत्या चक्रपाणि और दामोदर भगवान् की उपासना करनी चाहिए। जाप करते समय भगवान् विष्णु का शेष शैय्या पर विराजमान लक्ष्मी जी सहित ध्यान करें। भगवान् को दूध, क्षीर और दूध के बनी मिठाई और नारियल अर्पण करें।

मन्त्र-"ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथाङ्गचक्राय नमः"

उपर्युक्त मन्त्रों का जाप शुभ मुहूर्त्त में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा विधिपूर्वक शुरू करावें और स्वयं पाठ होते समय मांस, मछली, नशादि से परहेज करें। कम से कम दिन में एक अच्छा पुण्य कार्य अवश्य करें। माता-पिता की आज्ञा का पालन, उनकी सेवा करके आशीर्वाद ग्रहण करना कल्याणकारी रहेगा।

कालसर्प दोष निवारक रक्षक यंत्र

कालसर्प यंत्र को शनि प्रदोष के दिन, शिवरात्रि, नागपंचमी या अनन्तचतुर्दशी के दिन ताम्र पत्र पर खुदवाकर या भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से लिखकर निम्न मंत्र द्वारा 21 बार अभिमन्त्रित करके अपने सिर से तीन बार Anticlock घुमाकर चलते पानी में बहा देवें।

मन्त्र- ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः।
ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।।
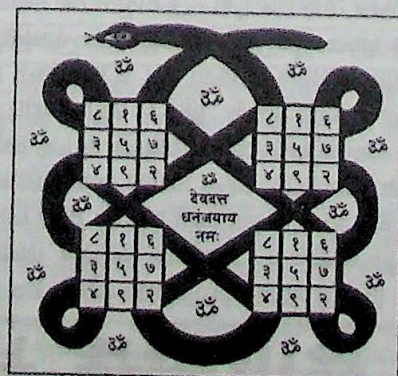
प्रश्नोत्तर–समस्याएँ और समाधान

(1) समस्याएं–(i) अत्यावश्यक परिस्थिति में यदि किसी जातक के लिए काम्यव्रत या यज्ञ करना असम्भव हो, तो उसके निमित्त किसे व्रत, यज्ञ आदि का अधिकारी होना चाहिए?

(ii) क्या गुरु–शुक्र अस्तकाल में नवग्रह शान्ति, दुर्गा–पाठ हवन, महामृत्युञ्जय पाठ, हवनादि करवाया जा सकता है या नहीं ?

–पं. दीवान चन्द शर्मा ज्यो., गाँ-पोलियां, हरोली, जिला-ऊना (हि.प्र.)

समाधान–(i) यात्रा, आपत्ति, दुर्बलता, रोग, अध्ययनकाल में, स्थानान्तरण अथवा अन्य किसी अपरिहार्य कारण से यदि व्यक्ति स्वयं व्रत न कर सके तो, वह असमर्थ व्यक्ति अपने स्थान पर प्रतिनिधि रूप में यज्ञ, व्रत या हवन आदि करवा सकता है। शास्त्रानुसार पुत्र, पत्नी, बहिन, भाई, पति, पुरोहित, मित्र, शिष्य आदि को प्रतिहस्तक (प्रतिनिधि या एवजी) बनाकर उनसे करावे। उपर्युक्त प्रतिनिधि प्राप्त न हो तो वह काम–ब्राह्मण से हो सकता है।

भर्ता पुत्रः पुरोधाश्च भ्राता पत्नी सखापि च।
यात्रायां धर्मकार्येषु कर्त्तव्याः प्रतिहस्तकाः।। (मदनरत्न)

अपि च, **पुत्राद् वा कारयेदाद्याद् ब्राह्मणाद् कपि कारयेत्।।** (वायुपुराण)

धर्मसिन्धु अनुसार व्रत, यज्ञ के प्रतिनिधि को भी व्रतादि का फल मिलता है।

(ii) श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्र/जप, दुर्गा-पाठ जोकि विशेषकर काम्य (कामना) हेतु करवाया जा रहा हो, तो गुरु/शुक्रास्तादि दोषों का विचार अवश्य करना चाहिए। परन्तु यदि जप निष्काम भाव से किया जा रहा हो अथवा किसी गम्भीर संकट या शरीर कष्ट आदि की निवृत्ति के लिए जप करना हो, तो गुरु-शुक्रास्त होने पर भी शुभ तिथियों में जप, पाठारम्भ करवा सकते हैं। अति आवश्यक परिस्थितिवश शुभ कार्यों को गुरु-शुक्र के अस्त में तत्ग्रह सम्बन्धी पूजनादि, दान, जप के बाद किए जा सकते हैं–

आचार्य बृहस्पति अनुसार– **शान्तिं कृत्वा तयोस्तद्वच्छुक्रदेवेन्द्रमन्त्रिणः।**
होमैर्दानैर्जपैर्वापि तपोरुकैश्च मन्त्रकैः।।

गुरु–शुक्रास्त काल में काम्य एवं शुभ कार्यों का निषेध ही माना गया है। केवल नित्य, नैमित्तिक कर्म तथा पहले से ही प्रारम्भ किए हुए किसी पाठ/जप के अनुष्ठान में हवन, शान्ति, दान, जप के बाद अस्त का विचार करने की आवश्यकता नहीं।

(2) वि. संवत् 2071 के 'पंचांगदिवाकर' में 'प्लवंग' नामक संवत्सर का नाम लिखा गया था। जबकि दिल्ली से प्रकाशित कुछ पंचांगकारों ने 'कीलक' संवत्सर लिखा था ? इस मतभेद को स्पष्ट करें ?

–पं. अनुपम शर्मा, AM Block, श्रीशिव मन्दिर, शालीमार बाग, दिल्ली-88

समाधान–इसके समाधान के लिए पृष्ठ 65 देखिए।

(3) वि. संवत् 2071 के 'पंचांगदिवाकर' में आश्विन संक्रान्ति 16 सितं. को लगाई गई थी। जबकि अन्य अनेक पंचांगों में यह 17 सितं. को थी। यह मतभेद क्यों हुआ ?

–पं. देवराज शास्त्री, VPO-जुखाला, जिला–हमीरपुर (हि.प्र.)

समाधान–जिस वार में सूर्य राशि परिवर्तन करता है, उसी वार को पश्चिमोत्तर भारत (विशेषकर पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू आदि) में संक्रान्ति पर्व मनाया जाता है और वहाँ उसी वार/दिन से सौर मास (सौर मास का प्रथम प्रविष्टा) शुरु होता है। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक नवीन **'वार'** का प्रारम्भ सूर्योदय से होता है। अतः सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक के समय को वार कहा जाता है। वि. संवत् 2071 में सूर्य का कन्या राशि में प्रवेश 17 सितं., बुधवार को प्रातः 6घं.–11मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ था। लगभग सभी पंचांगकारों ने 1-2 मिनट के अन्तर से यही समय लिखा था क्योंकि जालन्धर के सूर्योदय अनुसार **'पंचांगदिवाकर'** में घड़ी-पलादि दिए जाते हैं, अतएव 17 सितं. 2014 ई. को जालन्धर का सूर्योदय 6घं.–16मि. था। अतः स्पष्ट है कि जालन्धर तथा उन नगरों (कांगड़ा, हमीरपुर, धर्मशाला, ऊना) में जहाँ सूर्योदय 17 सितं. को 6घं.–11मि. के बाद था, वहाँ **'आश्विन संक्रान्ति'** 16 सितं., मंगलवार को ही थी। जिन नगरों (चण्डीगढ़, मण्डी, सोलन, शिमला, नाहन) में सूर्योदय 6घं.–11मि. से पहले हुआ था, वहाँ उन पंचांगों में **'आश्विन संक्रान्ति'** 17 सितं. को लिखी गई थी। अतएव यह भेद सूर्योदय अन्तर के कारण कभी भी घटित हो सकता है। यद्यपि आश्विन संक्रान्ति का स्नानदानादि पुण्यकाल **'पंचांगदिवाकर'** में लिखे अनुसार 17 सितं., बुधवार को दोपहर 12घं.–35मि. तक ही था।

पर्वों में सूर्योदय या चन्द्रोदय भेद के कारण यह अन्तर आना स्वाभाविक है।

नोट–स्थानाभाव के कारण कुछ समस्याओं के समाधान यहाँ नहीं दे सका, उन्हें अगले वर्ष के **'पंचांगदिवाकर'** में देने का प्रयास करूँगा।

–पं. विवेक शर्मा

सूर्य–चन्द्रग्रहण में जनन एवं प्रथम रजोदर्शन का फल

यदि किसी स्त्री को सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण में प्रसव हो अथवा किसी स्त्री को प्रथम बार मासिक धर्म हो, तो उसके कारण स्त्री या बालक/बालिका को व्याधि तथा पीड़ा होती है। यथा– **ग्रहणे चन्द्रसूर्यस्य प्रसूतिर्यदि जायते।**
व्याधिपीडा तथा स्त्रीणामादौ तु ऋतुदर्शनात्।।

इसकी शान्ति-विधि संक्षिप्त रूप से इस प्रकार वर्णित है–जिस नक्षत्र में ग्रहण लगा हो, उस नक्षत्र-देवता की सुवर्ण-प्रतिमा बनवाएं। यदि सूर्यग्रहण हो, तो सूर्य की मूर्त्ति स्वर्णधातु से तथा चन्द्रग्रहण हो, तो चन्द्रमा की मूर्त्ति चाँदी से बनवानी चाहिए। तदनन्तर राहु-प्रतिमा का नागधातु (सीसा) से बनवानी चाहिए। तदनन्तर हवन हेतु सूर्य, चन्द्रमा एवं राहु से सम्बन्धित वस्तुओं/पुष्प अर्पण करें तथा सूर्य, चंद्र व राहु की समिधा से हवन करना चाहिए। कलश-स्थापन, पूजन, अभिषेक करने के पश्चात् आचार्य-पूजन, ब्राह्मण-भोजन एवं दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करना चाहिए।

मेषादि राशियों का ग्रहगोचर अनुसार फलादेश–2015 ई०

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे–विद्या, व्यवसाय, नौकरी, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म-समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता का नाम एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। मध्यम विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 901, अधिक वृहद् विस्तृत की 1250 रु. से 2100 रुपए। सामान्य मध्यम जन्मपत्री की 801 रु., वार्षिक वर्षफल, उपायों आदि सहित की फीस 601 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 51 डालर होगी। डाक व्यय 50 रु. जोड़कर भेजें, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें– –पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब), फोन-0181-2457959

भविष्यफल–जनवरी–सन् 2015 ई.

मेष–मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल की उच्च एवं शुभ दृष्टि पड़ने से अचानक धन लाभ के अवसर मिलेंगे। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण मानसिक तनाव एवं घरेलु उलझने भी बढ़ेंगी। उत्तरार्द्ध भाग में वृथा दौड़ धूप अधिक तथा खर्च भी अधिक रहेंगे। क्रोधाधिक्य से बचें।

वृष–मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र भाग्य स्थान में होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। कुछ बिगड़े काम भी बनेंगे। मंगल के कारण खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 23 से व्यवसाय में दौड़ धूप बढ़ेगी। इन दिनों वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतें।

मिथुन–राशिस्वामी बुध अष्टमभाव में भौम युक्त है। व्यवसाय में भागदौड़ अधिक एवं खर्च भी अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य में विकार का भय है। किसी निकट बन्धु से मतान्तर हो। 5 जन. से हालात बेहतर हों। मकर संक्रांति को गर्म वस्त्र एवं तिलों का दान करना शुभ होगा।

कर्क–मासारम्भ में इस राशि पर वक्री गुरु का संचार बना हुआ है। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी। अत्यधिक परिश्रम के बाद गुजारे योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। खर्चों की भी विशेष अधिकता रहेगी। मासान्त में बनते कामों में विघ्न एवं खर्च अधिक होंगे।

सिंह–मासारम्भ में सूर्य पंचम में होने से कार्य-क्षेत्र में कुछ नवीन योजनाएँ बनेंगी। लेकिन धन स्थान में राहु होने से आर्थिक परेशानियों का सामना होगा। क्रोधावेश के कारण धन हानि के योग। शनि की ढैय्या होने से घरेलू उलझनों के कारण तनाव रहे। मकर सक्रांति को गर्म वस्त्र का दान करें।

कन्या–राशि पर राहु का संचार है। राशि-स्वामी बुध पंचम भाव में शुक्र युक्त है। विशेष संघर्ष के बाद निर्वाह-योग्य आय के साधन बनेंगे। अत्यधिक खर्च एवं घरेलू उलझनों के कारण तनाव रहेगा। बनते कामों में अड़चने पैदा होंगी।

तुला–राशिस्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में मंगल व बुध के साथ है। इन पर शनि की विशेष तृतीय दृष्टि भी है। कार्य/व्यवसाय सम्बन्धी कुछ नवीन योजनाएँ बनेंगी। अत्यधिक दौड़-धूप करने पर भी धन लाभ विशेष न हो पाए। माघ संक्रान्ति पर गर्म वस्त्र या धार्मिक पुस्तक मन्दिर में दान देना शुभ होगा।

वृश्चिक–राशि पर शनि का संचार है। ता. 4 जन. तक राशिस्वामी मंगल तृतीय स्थान में उच्च राशि में होने से पराक्रम में वृद्धि, कार्य में लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे। ता. 5 से मंगल चतुर्थ स्थान पर आने से अचानक खर्चों में वृद्धि एवं घरेलु परेशानियों का सामना होगा। लक्ष्मी चालीसा का पाठ करना शुभ होगा।

धनु–मासारम्भ में राशिस्वामी गुरु उच्चस्थ होने पर भी आठवें स्थान में होने से अत्यन्त कठिन परिस्थितियों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 14 जन. से भाग्येश सूर्य द्वितीय होने से आय कम व खर्च अधिक होंगे। माघ संक्राति को सूर्य उपासना करनी शुभ होगी।

मकर–मासारम्भ से इस राशि पर मंगल उच्चस्थ होकर संचरित है। पुरुषार्थ करने से धन लाभ एवं उन्नति के अवसर मिलेंगे। ता. 14 जन. से इस राशि पर सूर्य का संचार रहेगा। वृथा खर्च एवं परिवारिक उलझनें बढ़ेंगी। सूर्य उपासना करना शुभ होगा।

कुम्भ–मासारम्भ में राशिस्वामी शनि दशम स्थान में शत्रु राशिगत होने पर भी उस पर गुरु की दृष्टि है। ता. 5 से इस राशि पर मंगल का संचार रहेगा। कार्य/व्यवसाय में निर्वाह योग्य आय के स्रोत बनते रहेंगे। परंतु आकस्मिक खर्च भी अधिक होंगे। घरेलु उलझनों के कारण तनाव व परेशानियाँ होंगी।

मीन–इस राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि के कारण धन-लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। सोची हुई योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। धार्मिक कार्यों की ओर रुचि बढ़ेंगी। भाग्य स्थान में शनि कार्यों में विघ्नकारक होगा। खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेंगे। लग्नगत केतु के कारण गुप्त परेशानियाँ भी रहेंगी।

मेष राशि (Aries)

चु, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ

ग्रह गोचर–इस राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षभर रहेगा, वर्षारम्भ से राशिस्वामी मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ने से पुरुषार्थ में वृद्धि, कोई शुभ समाचार मिलेगा। फरवरी–मार्च में मंगल 12 वें स्थान में होने से वृथा दौड़–धूप अधिक तथा खर्च बढ़ेगा। सेहत में भी विकार रहे। 31 जुला. से 15 सितं. के मध्य मंगल नीचस्थ परन्तु गुरु की शुभ दृष्टि होने से मिले जुले प्रभाव होंगे।

भविष्यफल–फरवरी–सन् 2015 ई.

मेष–मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल एकादश भाव में (कुम्भ राशि) संचरित है। परिश्रम के बावजूद बनते कामों में अड़चने पैदा होंगी। कठिनाई से आय के साधन बनेंगे ता. 12 फर. से मंगल मीन (12वें स्थान) में जाने से वृथा भाग दौड़ एवं खर्च बढ़ेंगे।

वृष–मास के पूर्वार्द्ध तक दशम स्थान पर मंगल-शुक्र का योग होने से कठिनाईयों के बाद ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। निकटस्थ बन्धुओं के साथ वृथा मन-मुटाव रहे। उत्तरार्द्ध भाग में कार्यों में विघ्न/बाधाएँ एवं तनाव हो। श्रीदुर्गा पाठ करना शुभ होगा।

मिथुन–मासारम्भ से ही राशिस्वामी बुध अष्टम भाव में अस्तंगत है। कार्य-व्यवसाय में विघ्न बाधाओं का सामना रहे। आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे, जिससे

मानसिक तनाव व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ होगा।

कर्क–राशि पर गुरु उच्च स्थिति में संचार करता है, परन्तु 11 फर. तक कार्येश मंगल अष्टम स्थान में होने से बनते कामों में अड़चने रहेंगी। धन लाभ कम परन्तु खर्च अधिक होंगे ता. 12 फर. के मध्य धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

सिंह–मास के पूर्वार्द्ध में राशिस्वामी सूर्य छटे स्थान में संचरित है परन्तु उस पर शनि की दृष्टि होने से बनते कामों में अड़चनें होंगी। मानसिक तनाव तथा खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 13 से सूर्य की स्वगृही दृष्टि होने से मान-सम्मान में वृद्धि तथा धन लाभ हो।

कन्या–राशिस्वामी बुध पंचम भाव में सूर्य युक्त है। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु राहु के कारण मानसिक तनाव एवं उलझनें भी बढ़ेंगी। मासान्त में स्वास्थ्य में विकार-भय, क्रोधावेश से बचें।

तुला–पंचम स्थान में मंगल-शुक्र का योग बना हुआ है। पूर्वार्द्ध भाग में धन-लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे। नए वाहन आदि का सुख प्राप्त होगा। परन्तु मंगल के कारण मानसिक तनाव एवं आकस्मिक धन के खर्च बढ़ेंगे। दुर्घटना आदि का भय होगा, सावधानी बरतें।

वृश्चिक–शनि साढ़ेसाती लगी है। मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल चतुर्थ में होने से घर-परिवार सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। 13 जुला. तक गुरु की शुभ दृष्टि होने से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। धर्म की और रुचि बढ़ेगी।

धनु–राशिस्वामी गुरु उच्चस्थ होने से धार्मिक कार्यों की ओर रुझान बढ़ेगा, परन्तु वर्षारम्भ में अष्टम स्थान में होने से प्रत्येक कार्य में विघ्न बाधाएँ उत्पन्न होंगी। ता 14 जुला. से गुरु भाग्य स्थान में संचार करेगा। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मकर–मास के पूर्वार्द्ध भाग में इस राशि पर सूर्य, बुध का योग बना हुआ है तथा उस पर शनि की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। परिवारिक उलझनों एवं तनाव के बावजूद निर्वाह-योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मास के उत्तरार्ध भाग में आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल-शुक्र ग्रहों का योग बना है। शनि दशम में शत्रु राशिगत है, अत्यन्त कठिनाईयों के बाद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। ता. 13 फर. के बाद सूर्य का संचार होने से घरेलु उलझनों के कारण तनाव एवं खर्चों की अधिकता रहेगी।

मीन–मासारम्भ में इस राशि पर केतु का संचार बना हुआ है, परन्तु इस राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ने से आय के साधनों में सुधार होगा। बिगड़े कामों में सफलता प्राप्त होगी। परन्तु केतु के कारण स्वास्थ्य नर्म तथा खर्चों में विशेष तेज़ी रहेगी। श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

भविष्यफल–मार्च–सन् 2015 ई.

मेष–मासारम्भ में राशिस्वामी मंग. द्वादश भाव में केतु व शुक्र के साथ है। परिवारिक उलझनें तथा आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। अत्यधिक कठिन संघर्ष के बाद भी धन-लाभ कम रहेगा। ता. 15 के बाद सूर्य भी द्वादश होने से आँखों को कष्ट एवं रक्त विकार का भय।

वृष–मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र एकादश में भौम युक्त होकर उच्चक्षेत्री है। धन लाभ एवं गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। भूमि-वाहनादि

वृष राशि (Taurus)

इ, उ, ए, ओ, व, बि, वे, वो

ग्रह गोचर– वृष राशि पर शनि की सप्तम किंवा मित्र दृष्टि वर्षभर रहेगी। शुक्र का संचार भाग्य स्थान (मकर) में वर्षारम्भ से ता. 22 जन. तक होने से कार्य व्यवसाय सम्बन्धी कुछ नवीन योजनाएँ बनेंगी। 16 फर. से 11 मार्च के मध्य शुक उच्चस्थ होने से अकस्मात धन लाभ के चाँस। 12 मार्च से 5 अप्रै. शुक्र द्वादश भाव में स्वास्थ्य में खराबी, वृथा भागदौड़। 6 अप्रै. से 1 मई के मध्य शुक्र वृष राशि में संचार करने से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। 5 जुला. से शुक्र चतुर्थ होने से वाहन आदि पर खर्च होंगे। 25 जुला. से शुक्र वक्री तथा 5 अग. से 19 अग. के मध्य शुक्र अष्टमस्थ होने से बनते कार्यों में विघ्न बाधाओं के संकेत हैं। 3 नवं. से 29 नवं. के मध्य संघर्षपूर्ण हालात बने।

मिथुन राशि (Gemini)

क, कि, कु, घ, छ, के, ह

ग्रह गोचर– वर्षारम्भ से 8 मार्च तक राशि स्वामी बुध अष्टम भाव में होने से स्वास्थ्य नर्म, मानसिक तनाव रहेगा। 9 मार्च से 28 मार्च के मध्य बुध कुम्भस्थ होने से

सुखों की प्राप्ति होगी। किसी प्रियबन्धु से मुलाकात होगी। 12 मार्च से शुक्र द्वादशस्थ होने से आय कम व खर्च अधिक होंगे। परिवारिक उलझनें बढ़ेंगी।

मिथुन–मासारम्भ में राशिस्वामी बुध अष्टम में होने से कार्य/व्यवसाय में अड़चने एवं विलम्ब होगा। स्वास्थ्य में भी विकार उत्पन्न होंगे। ता. 9 मार्च से बुध नवम अर्थात् भाग्य स्थान पर संचार करने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ एवं उन्नति के अवसर मिलेंगे। सेहत में भी कुछ बेहतरी होगी।

कर्क–मासारम्भ में गुरु का शुभ संचार होगा, धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क होंगे। परन्तु धनेश सूर्य अष्टम में होने से विशेष लाभ नहीं उठा पाएँगे। ता. 15 मार्च से सूर्य भाग्य स्थान पर आने से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

सिंह–मास के पूर्वार्द्ध में राशिस्वामी सूर्य की इस राशि पर स्वगृही दृष्टि रहेगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उच्च प्रतिष्ठित मित्रों के साथ सम्पर्क बनेंगे। उत्तरार्द्ध में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। शनि की ढैय्या होने से धन लाभ अल्प रहेगा। ता. 10 के बाद आय के साधनों में विघ्नों के पश्चात् लाभ होगा।

कन्या–मासारम्भ में बुध पंचम स्थान पर (मित्र राशि) संचार करने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 9 मार्च से बुध छटे स्थान में होने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। खर्च अधिक होंगे। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के योग हैं, सावधानी बरतें। श्रीराम रक्षा स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

तुला–मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र छटे स्थान में उच्च राशिस्थ भौमयुक्त होकर संचरणशील है। संघर्ष के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे। सवारी, सिनेमा-संगीत, एवं विलास आदि कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। ता. 12 मार्च से तुला राशि पर शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने से बिगड़े कामों में सुधार होगा।

वृश्चिक–इस राशि पर गुरु की शुभ दृष्टि होने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। कोई रुका हुआ कार्य बनने के योग हैं। ता. 18–19 को विदेश सम्बन्धी कार्यों में कुछ विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 20–21 को नए-नए सम्पर्क एवं गठजोड़ भाग्यवृद्धि में सहायक होंगे। शनि के कारण मानसिक तनाव, खर्चों की अधिकता रहेगी।

धनु–विघ्न-बाधाओं के बावजूद प्रयोजन सिद्धि लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कुछ अप्रत्याशित सफलताएं प्राप्त होंगी। शत्रु प्रबल होंगे। अकस्मात् धन-लाभ, बन्धु मिलाप, स्त्री-सुख आदि शुभ समाचार मिलेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। नवीन कार्य की योजना बनेगी। श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

मकर–इस मास में रुकावटों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधन बढ़ेंगे। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। माता-पिता का सहयोग विशेष लाभकारी होगा। धार्मिक कार्य करने की इच्छा जागृत होगी। मासान्त में विदेशी मित्रों से दान एवं सुख प्राप्त होगा। गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें। श्रीदुर्गा सप्तशती तथा श्रीदुर्गा कवच का नित्य पाठ करना कल्याणकारी रहेगा।

कुम्भ–मासारम्भ में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु आरम्भ में इस राशि पर सूर्य का संचार होने से परिस्थितियां संघर्षपूर्ण रहेंगी। आराम कम व दौड़धूप अधिक रहेगी। भूमि व वाहन आदि पर खर्च होंगे। ता. 14 मार्च से शनि वक्री होगा। वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें। चोटादि का भय होगा। स्वास्थ्य में विकार एवं विघ्न तथा खर्च अधिक होंगे।

मीन–मासारम्भ में अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर में विकार एवं आँखों में कष्ट का भय

है। उत्तरार्द्ध भाग में किसी नए मित्र के साथ सम्पर्क पैदा होंगे। विद्या अथवा पूर्व में किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी।

भविष्यफल-अप्रैल-सन् 2015 ई.

मेष-राशि पर मंगल-शुक्र का योग बना हुआ है। यद्यपि निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे। संसारिक कार्यों में प्रगति होगी। गृह में खुशी का वातावरण बनेगा। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। **श्रीशिव उपासना** करना शुभ रहेगा।

वृष-राशिस्वामी शुक्र वृष राशि में 6 अप्रैल से संचार करेगा। जिससे मास के पूर्वार्द्ध में शुभाशुभ-दोनों प्रकार के फल प्राप्त होंगे। उत्तरार्द्ध में व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्ची अधिक होगी। गत किए प्रयासों में सफलता मिलेगी। गृह में कोई शुभ कार्य भी सम्पन्न होगा। शनि की दृष्टि होने के कारण आकस्मिक खर्च होंगे तथा मानसिक तनाव बना रहेगा।

मिथुन-राशिस्वामी बुध नीच राशिगत होने से वृथा भागदौड़ एवं खर्च की अधिकता रहेगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में कुछ प्रगति परन्तु विघ्नों के पश्चात् ही सफलता मिलेगी। ता. 12 के पश्चात् कुछ बिगड़ें काम बनेंगे एवं धन लाभ होगा। मासान्त में मानसिक तनाव, सिर पीड़ा व आर्थिक परेशानियाँ बढ़ेंगी। सूर्याराधना करना शुभ होगा।

कर्क-इस राशि पर गुरु उच्चस्थ होने से पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ व सुख साधनों में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म के कार्यों में रुचि रहेगी। परन्तु मंगल की नीच दृष्टि होने से खर्च अधिक, स्वास्थ्य ढ़ीला एवं मानसिक तनाव बना रहेगा।

सिंह-मास के पूर्वार्द्ध भाग में राशिस्वामी सूर्य आठवें भाव में केतु के साथ होने के कारण धन लाभ एवं बनते कामों में विघ्न बाधाएँ होंगी। स्वास्थ्य में विकार एवं वृथा खर्च बढ़ेंगे। ता. 14 से सूर्य भाग्यस्थान (मेष) में होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। वैशाख संक्रांति को यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल, मिष्टान्न आदि का दान करना शुभ होगा।

कन्या-इस राशि पर राहु का संचार है, जिससे वृथा भागदौड़ एवं धन का खर्च अधिक होगा। किसी निकट-बन्धु से मनमुटाव होंगे। क्रोध से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ेगा। आर्थिक-परेशानी होने से गृह में तनाव रहेगा। वाहन चलाने में सावधानी बरतें।

तुला-इस राशि पर मंगल-शुक्र की संयुक्त दृष्टियाँ पूर्वार्द्ध भाग तक रहेंगी। जिससे क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। आय कम व खर्च अधिक होंगे। परिवार में निकट बन्धु से तकरार हो। दुर्घटना से चोटादि का भय है। वैशाख संक्रांति को अनाज, गुड़, फल, वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

वृश्चिक-इस राशि पर शनि का संचार है, उस पर मंगल एवं गुरु की दृष्टि रहेगी। कार्य-व्यवसाय में अस्थिरता एवं हानि का सामना होगा। बड़ी कठिनता से निर्वाह योग्य धन के साधन बनेंगे। शनि साढ़ेसती के कारण क्रोध व उत्तेजना अधिक रहे, अचानक खर्च बढ़ेंगे।

धनु-लग्नेश गुरु यद्यपि उच्च राशिस्थ है, परन्तु भाग्येश सूर्य चतुर्थ में केतु-बुध के साथ है। कार्यों में विघ्न/बाधाओं का सामना होगा। आय की अपेक्षा खर्च अधिक होंगे। ता. 14 के बाद धन लाभ व सोची गई योजना में सफलता होगी।

मकर-राशि पर शनि की स्वगृही तथा गुरु की नीच दृष्टि पड़ रही है। विघ्न/बाधाओं के बावजूद गुज़ारे लायक धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। साधु-महात्मा या श्रेष्ठ जनों के साथ संम्पर्क बनेंगे। गुरु की दृष्टि के कारण सेहत में विकार एवं धन का अपव्यय रहेगा।

कुम्भ-राशिस्वामी शनि शत्रु राशिगत है। मास के पूर्वार्द्ध भाग में धन हानि व किसी उच्चाधिकारी से विरोध पैदा हो, शरीर कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहे। बनते कामों में रुकावटें पैदा हों। शनि पर गुरु की शुभ दृष्टि होने से उत्तरार्द्ध भाग में स्थिति में सुधार होगा। बिगड़े काम बनेंगे। निर्वाह योग्य धन लाभ होगा। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। श्रीदुर्गा कवच का नित्य पाठ करें।

मीन-इस मास में किसी मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा कार्य बने। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बने रहेंगे। परिवारिक व व्यवसायिक उलझनें भी होंगी। वृथा, वाद-विवाद से बचें। विद्यार्थी वर्ग को इन दिनों पढ़ाई की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सूर्य उपासना एवं गायत्री जाप करना शुभ रहेगा।

कर्क राशि (Cancer)

हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो

ग्रह गोचर-- कर्क राशि पर गुरु (बृहस्पति) का संचार उच्चस्थिति में 13 जुला. तक होगा। वर्षारम्भ में मंगल की अशुभ दृष्टि होगी। जिससे मानसिक तनाव विशेष रूप से अधिक रहेगा। 12 फर. से 22 मार्च के मध्य मंगल भाग्य स्थान में होने से विघ्न/बाधाओं के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। 23 मार्च से कार्य/व्यवसाय की स्थिति कुछ बेहतर परन्तु सेहत में अस्थिरता एवं विकार होंगे। 14 जुला. से गुरु सिंह राशिस्थ होने धन का खर्च अत्यधिक बढ़ेगा। घरेलु परेशानियाँ बढ़ेंगी। स्वास्थ्य हानि एवं तनाव होगा। भाग्योन्नति, एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बनेंगे। 29 मार्च से 11 अप्रै. तक बुध मीन (नीचस्थ) होने से परिवारिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। 12 अप्रै. से 26 अप्रै. के मध्य बुध लाभस्थ होने से धन लाभ के अवसर मिलेंगे। 27 अप्रै. से 4 जुला. के मध्य धन हानि एवं बनते कामों में परेशानी होगी। 5 से 19 जुला. के मध्य बुध मिथुन में (स्वराशि) होने से विलासादि कार्यों पर खर्च होगा। 23 अग. से 28 अक्तू. के मध्य स्वराशिस्थ होने से आय के साधनों में वृद्धि होगी। 17 नवं. से 5 दिसं. के मध्य वृश्चिक राशि में बुध के संचार करने से धन का खर्च अचानक बढ़ेगा।

भविष्यफल-मई-सन् 2015 ई.

मेष-मासारम्भ में राशि पर सूर्य, मंगल का योग है। धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। ता. 15 के बाद सू, बु, मं. दूसरे भाव में होने से कार्यों में विघ्न/बाधाएँ होंगी। आय कम व खर्च अधिक होंगे। श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ होगा।

वृष-रुके हुए कार्यों में कुछ सफलता मिलेगी, धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। इस राशि पर शुक्र के साथ ही मंगल का भी संचार होने से दुर्घटना से चोटादि लगने की आशंका है, सावधानी बरतें। द्वितीय भाग में अपव्यय बढ़ेगा। दौड़-धूप अधिक रहेगी। तनाव एवं उलझनें, खर्च भी बढ़ेंगे। हर शुक्रवार को श्री सूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

मिथुन-मासारम्भ से राशिस्वामी बुध एवं मंगल द्वादश भाव में तथा शुक्र इसी राशि (मिथुन) में संचार करेगा। कार्य/व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप अधिक होगी, धन के खर्च भी अधिक रहेंगे। वाहन एवं मनोरजंन आदि कार्यों पर खर्च विशेष होंगे। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। इस मास 9,13,17,24 व 29 तारीखें अशुभ होंगी।

कर्क-इस राशि पर गुरु का उच्च स्थिति में संचार है। इस मास में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। द्वितीयेश सूर्य दशम भाव में होने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के चाँस भी बनेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे।

सिंह-मासारम्भ में राशिस्वामी सूर्य नवम (भाग्य स्थान) में होने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी शुभ कार्य पर धन खर्च होगा। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण गुप्त चिन्ता व तनाव रहेगा। भलाई करने पर भी बुराई मिलेगी। आकस्मिक खर्च अधिक होंगे। आर्थिक परेशानियों के कारण गुप्त चिन्ताएँ होंगी।

कन्या-इस राशि पर राहु का संचार है। स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेजी तथा व्यर्थ की भागदौड़ अधिक होगी। विरोधी हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। मंगल-बुध का योग होने से किसी नवीन कार्य की योजना बनने पर भी आर्थिक आय के साधन सीमित रहेंगे। श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

तुला-मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य/मंगल की दृष्टि पड़ने से लाभ कम व खर्च अधिक होंगे। सिर में दर्द तथा आँखों में कष्ट के योग हैं। परन्तु राशिस्वामी

शुक्र भाग्य स्थान में होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गायत्री मंत्र सहित सूर्य उपासना करना शुभ होगा।

वृश्चिक–राशि पर शनि साढ़सती का प्रभाव है तथा मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। इस मास मिश्रित फल होंगे। व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई रुका हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। आर्थिक उलझनों के कारण तनाव व चिन्ताएँ रहेंगी। संक्रान्ति पर '**श्रीआदित्य हृदय स्तोत्र**' का पाठ करना शुभ होगा।

धनु–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल व शुक्र ग्रहों की दृष्टियां पड़ रही है जिससे पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ व सुख के साधनों में वृद्धि होगी। धर्म कर्म में रुचि होगी परन्तु आकस्मिक खर्चों के कारण घरेलू उलझनें व परेशानियां होंगी। श्रीनारायण कवच का पाठ करना शुभ होगा।

मकर–इस राशि पर राशिस्वामी शनि की स्वगृही तथा गुरु की नीच दृष्टि रहने से मिश्रित प्रभाव होंगे। संघर्ष एवं कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में धर्म-कर्म के कार्यो पर धन का खर्च होगा। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं वृथा भागदौड़ रहेगी।

कुम्भ–राशिस्वामी शनि दशम में शत्रुराशिगत है, जिससे व्यवसाय में लाभ कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। निकट-बन्धुओं से तकरार, आर्थिक उलझनें, परिवारिक कलह एवं मन अशान्त रहेगा। परन्तु शनि पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु खर्च भी विशेष अधिक होंगे।

मीन–राशिस्वामी गुरु उच्चस्थ होने से परिवार में शुभ मंगल कार्य होंगे। पंचम में शुक्र होने से कुछ सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। परन्तु इस राशि पर केतु का संचार होने से स्वास्थ्य की हानि तथा घरेलू उलझनों के कारण खर्च अधिक होंगे।

भविष्यफल–जून–सन् 2015 ई.

मेष–राशिस्वामी मंगल दूसरे भाव में अस्तंगत है। अत्यन्त कठिनाईयों के बाद आय के साधन बनेंगे। वृथा भागदौड़ एवं आकस्मिक खर्च अधिक होंगे। शनि की ढैय्या के कारण परिवार में मन-मुटाव एवं खर्च अधिक रहें। श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ होगा।

वृष–मासारम्भ में इस राशि पर सू.मं.बु. का संचार है। शुक्र तृतीय भाव में गुरु के साथ है। आय कम और खर्च अधिक रहेगा। पुरुषार्थ और परिश्रम करने पर गुजारे लायक धन प्राप्त होता रहेगा। व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव और कार्यशैली में परिवर्तन से लाभ के अवसर बढ़ेंगे। प्रियबन्धु से मुलाकात और धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में विशेष सावधानी रखें।

मिथुन–मास के शुरु में राशिस्वामी बुध द्वादशभाव में सूर्य, मंगल के साथ है। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्ची अधिक होगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। गृह में कोई मंगलकार्य भी आयोजित होगा। उत्तरार्ध में कुछ घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। खर्च भी बढ़-चढ़ कर होगा। बुधवार का व्रत रखना शुभ होगा।

कर्क–मासारम्भ में इस राशि पर गुरु व शुक्र ग्रहों का संचार होगा। पूर्वार्द्ध भाग में मानसिक तनाव एवं परिवार सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। खर्च भी अधिक रहेंगे। गुरु की स्थिति शुभ होने से पदोन्नति एवं धन लाभ के योग बनेंगे। किसी श्रेष्ठ एवं उच्चाधिकारी से सम्पर्क बढ़ेगा। नए कार्य की योजना बनेगी। इस राशिवालों को हर शुक्रवार को श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

सिंह–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल एवं शनि दोनों की शुभाशुभ दृष्टियाँ पड़ रही हैं। कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। मित्रों की सहायता से किसी कठिन कार्य में सिद्धि होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। परन्तु संघर्षपूर्ण परिस्थितियां होंगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। संक्रान्ति को तिल, अनाज, फलों व वस्त्रों का दान करना शुभ होगा।

कन्या–मासारम्भ में राशिस्वामी बुध नवम (भाग्य) स्थान में सूर्य, मंगल के साथ अस्त है। किसी शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। उत्तरार्ध में किसी प्रिय बन्धु से मन-मुटाव व गलतफहमी उत्पन्न हो। अकस्मात् धन का अपव्यय के योग हैं। सोच समझकर खर्च करें। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं। श्रीगणेश चालीसा का पाठ करना शुभ होगा।

तुला–राशिस्वामी शुक्र दशम में गुरु के साथ है। मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बनेगा। विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। परन्तु खर्च की भी अधिकता रहेगी। मासान्त में मानसिक तनाव बढ़ेगा। वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें। चोटादि का भय होगा। श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करें तथा दुर्घटनानाशक यंत्र का प्रयोग करें।

वृश्चिक–इस राशि पर शनि साढ़सती है। मासारम्भ में राशि पर गुरु, सूर्य, भौम, बुधादि ग्रहों की शुभाशुभ दृष्टियाँ पड़ रही हैं। संघर्ष के बावजूद धन लाभ सामान्य रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है। धन का अपव्यय बढ़ेगा। किसी नए मित्र के साथ सम्पर्क पैदा होंगे। विद्या अथवा पूर्व में किए गए प्रयासों में सफलता होगी। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि होगी।

धनु–व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। व्यस्तताएं बढ़ेंगी। किसी विदेशी सम्बन्धी से मुलाकात होगी। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक और धन लाभ में विघ्न होंगे। स्वास्थ्य में खराबी और पारिवारिक चिन्ता रहेगी। मासान्त में खर्चों की अधिकता के कारण घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। श्रीदुर्गा पाठ करना शुभ होगा।

मकर–पूर्वार्द्ध भाग में धन हानि एवं किसी उच्च अधिकारी से विरोध पैदा हो, शरीर कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहे। बनते कामों में रुकावटें पैदा हों। उत्तरार्द्ध भाग में स्थिति में सुधार होगा। बिगड़े काम बनेंगे। निर्वाह योग्य धन लाभ होगा। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। परंतु खर्च भी अधिक रहेंगे।

कुम्भ–राशिस्वामी शनि दशम में है, उसी पर सूर्य, भौम, गुरु की संयुक्त दृष्टियां हैं। मिश्रित फल प्राप्त होंगे। मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी गुज़ारे लायक ही धन प्राप्त होगा। अचानक खर्च भी अधिक होंगे। क्रोध एवं उत्तेजना से कार्य बिगड़ने के संकेत हैं। धन सम्बन्धी विशेष चिन्ता रहेगी धन लाभ के लिए लक्ष्मी एवं श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

मीन–मासारम्भ में केतु का संचार होने से व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्ची बढ़ेगी। कुछ बिगडे काम बनेंगे। गुरु की दृष्टि होने से गत किए गए प्रयासों में किंचित सफलता मिलेगी। गृह में कोई मंगलकार्य सम्पन्न होगा। परन्तु कुछ घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेंगे।

सिंह राशि (Leo)

म, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे

ग्रह गोचर– इस राशि पर शनि की ढैय्या वर्ष पर्यन्त रहेगी। वर्षारम्भ से सूर्य पंचम में होने से कार्यक्षेत्र में कुछ नवीन योजनाएं बनेंगी तथा गुप्त चिन्ताएँ भी रहेंगी। 14 जन. से 12 फर. तक सूर्य छटे भाव में होने से आय कम व खर्च अधिक होंगे। ता. 13 फर. से सूर्य की दृष्टि होने से गान सम्मान बढ़ेगा। (14 मार्च) से पुनः बनते कामों से विघ्न बाधाएँ होंगी। 14 अप्रै. से सूर्य उच्चस्थ होने से आय स्रोतों में वृद्धि तथा धन लाभ के अवसर बनेंगे। मई–जून में सूर्य-शनि में दृष्टि सम्बन्ध होने आय कम व खर्च बढ़ेंगे। जुला. अग. सूर्य द्वादशस्थ होने से संघर्ष बढ़ेंगे तथा धन हानि होने के संकेत हैं। 17 अग. से 16 सितं. के मध्य सूर्य–गुरु सिंह राशि में ही संचार करेंगे, जिससे बिगड़ें कामों में सुधार होगा धन लाभ के साधन बनेंगे। अक्तू.–नवं. में स्वास्थ्य में विकार, धन हानि तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी।

कन्या राशि (Virgo)

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

ग्रह गोचर– वर्षारम्भ से 8 मार्च तक राशिस्वामी बुध, पंचम में संचार करेगा। उस पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। राहु पूरा वर्ष संचार करेगा। संघर्ष

भविष्यफल–जुलाई–सन् 2015 ई.

मेष–मासारम्भ में मंगल तृतीय भाव में सूर्य के साथ अस्तंगत है। संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा। शनि ढैय्या के कारण बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। धन हानि, कार्य-विलम्ब होने की चिन्ता होगी। घरेलू व व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी।

वृष–मासारम्भ ता. 5 से राशिस्वामी शुक्र पर शनि की दृष्टि होगी। कार्य व्यवसाय में दौड़-धूप अधिक रहेगी। धार्मिक कार्यों पर भी खर्च होगा। धन लाभ कम, खर्च अधिक होंगे। वाहनादि साधनों पर भी विशेष खर्च रहेंगे। श्रीदुर्गासप्तशती व श्रीसूक्त का पाठ शुभ होगा।

मिथुन–मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य, मंगल ग्रहों का संचार है। ता. 5 से बुध भी इसी राशि पर संचार करेगा। विशेष संघर्ष के उपरांत ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। अकस्मात् खर्च भी अधिक होंगे। क्रोध के कारण बनते कामों में अड़चनें रहेंगी। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ लाभ के चाँस होंगे।

कर्क–पूर्वार्द्ध भाग में इस राशि पर गुरु का शुभ-स्थिति में संचार होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। शुक्र द्वितीयस्थ होने से मनोरंजन आदि कार्यों पर वृथा खर्च अधिक रहेंगे। उत्तरार्ध भाग में कार्य व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप एवं खर्च भी अधिक होंगे।

सिंह–मासारम्भ में खर्च अधिक होंगे, कार्य-व्यस्तताएँ भी रहेंगी। परन्तु संघर्ष के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 14 से गुरु का संचार होने से कार्य-व्यवसाय में लाभ व पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें भी रहेंगी।

कन्या–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की विशेष दृष्टि पड़ रही है। मानसिक तनाव एवं उलझनें अधिक रहेंगी। यद्यपि निर्वाह योग्य धन लाभ के स्रोत बनते रहेंगे। आय कम व खर्च भी अधिक होंगे। किसी प्रिय व्यक्ति से धोखा मिलने के संकेत हैं, सावधानी बरतें। श्रीदुर्गा सप्त. का पाठ करना शुभ होगा।

तुला–शनि साढ़ेसाती का प्रभाव अभी होगा। मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। खर्चों की अधिकता होगी। उत्तरार्द्ध भाग में रुके हुए कार्यों में सुधार, आय में वृद्धि, परन्तु खर्च अधिक होगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। नए लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। '**श्री सूक्तम्**' का पाठ करना शुभ होगा।

वृश्चिक–व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से व्यय अधिक होगा। शनि की साढ़ेसति के कारण मानसिक तनाव व धन का अपव्यय होगा। ता. 12-13 को परिवार सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

धनु–पूर्वार्द्ध भाग में परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कारोबार में उतार-चढ़ाव व आर्थिक परेशानियाँ रहेंगी। उत्तरार्द्ध भाग में गुरु की दृष्टि होने से आर्थिक क्षेत्र में उन्नति के योग हैं। किसी उच्चाधिकारी के साथ सम्पर्क बनेंगे।

मकर–राशिस्वामी शनि की स्वगृही तथा मंगल की उच्च दृष्टि होने से मान-सम्मान कार्यों की ओर अभिरुचि बढ़ेगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। तथा 29 मार्च से 11 अप्रै. के बीच बुध नीचस्थ से संघर्ष अधिक रहेगा तथा आय कम व खर्च भी बहुत होंगे। 23 मार्च से 2 मई तक बुध अष्टम होने से स्वास्थ्य में विकार हो। 15 जून से 29 जुला. के बीच स्वास्थ्य तथा बिगड़े कामों में सुधार होगा। नवं. में धन लाभ व स्रोतों में वृद्धि होगी। प्रतिदिन गाय को चार मीठी चपातियां और हरा चारा व गुड़ खिलाना शुभ रहेगा। यदि प्रतिदिन संभव न हो तो हर बुधवार को करें।

तुला राशि (Libra)

रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

ग्रह गोचर–वर्षारम्भ में राशिस्वामी शुक्र चतुर्थस्थ होने से अड़चनों के बाद कार्य/व्यवसाय में धन प्राप्ति व उन्नति के अवसर मिलेंगे। ता. 16 फर. से 11 मार्च तक उच्चस्थ होने से वाहन आदि सुख/साधनों पर खर्च अधिक होंगे। ता. 12 मार्च से 5 अप्रै. के मध्य शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने से धन लाभ व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 30 मई से 12 अग. तक शुक्र क्रमशः कर्क व सिंह में संचार होने से व्यवसाय में अस्थिरता व हानि का वातावरण बनेगा। 25 जुला. से 5 सितं. तक शुक्र वक्री होगा तथा 1 अक्टू. से 2 नवं. शुक्र सिंह में होने दौड़धूप ज्यादा और खर्च अधिक होंगे। नवं. में वृथा दौड़-धूप एवं धन हानि होगी, स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय को हरा चारा चापाती, द्वारा सेवा करना तथा रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती डालना शुभ होगा।
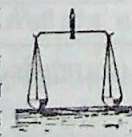
बढ़ेंगे, भूमि, सवारी आदि सुख-साधनों में वृद्धि होगी। महिलाओं को तनाव और धन की चिन्ता रहेगी। सुन्दरकाण्ड का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ–राशिस्वामी शनि दशम स्थान में होने से अत्यधिक क्रोध, व्यर्थ में धन का अपव्यय हो। पदोन्नति में विघ्न उत्पन्न होंगे। निकट सहयोगी से कपटपूर्ण धोखा मिले। शुभ कामों में प्रवृत्ति लगे। आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

मीन–अचानक धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे और नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु केतु के कारण उचित लाभ नहीं होगा। निकट बन्धुओं के साथ कलह-क्लेश एवं विवाद का भय। आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

भविष्यफल–अगस्त–सन् 2015 ई.

मेष–शुरु में ही राशिस्वामी मंगल अस्तंगत है, शनि की ढैय्या का प्रभाव भी है। फलस्वरूप अत्यधिक दौड़-धूप के बावजूद आय में कमी एवं खर्च अधिक होंगे। कार्य-व्यवसाय में उलझनें एवं रुकावटें पैदा होंगी। क्रोध अधिक एवं तनाव से परिवारिक जनों के साथ मनमुटाव हो। मंगलवार के व्रत रखना शुभ होगा।

वृष–मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र वक्री होकर चतुर्थ भाव में है। विशेष परिश्रम एवं भागदौड़ के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। व्यवसाय के क्षेत्र में धन लाभ कम तथा खर्च विशेष अधिक रहेंगे। शनि की दृष्टि के कारण घरेलू तनाव एवं उलझनें अधिक होंगी। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

मिथुन–राशिस्वामी बुध तृतीय भाव में गुरु, शुक्र ग्रहों के साथ है। इस मास में परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कारोबार में कई तरह के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेंगी। आकस्मिक खर्च होने के योग हैं। मासान्त में आर्थिक क्षेत्र में उन्नति के योग हैं। किसी उच्चाधिकारी के साथ सम्पर्क रहेंगे।

कर्क–मासारम्भ में मंगल नीच स्थिति में सूर्य के साथ संचार कर रहा है। मानसिक तनाव एवं क्रोध की भावना अधिक होगी। आलस्य में वृद्धि होगी। भाई-बन्धु से मनमुटाव, स्वास्थ्य में गड़बड़ी उत्पन्न हो, मासान्त में विदेश से कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। धन लाभ कम परन्तु खर्च अधिक रहेंगे।

सिंह–इस राशि पर गुरु व बुध का शुभ संचार है। धर्म-कर्म की ओर रुचि होगी एवं किसी शुभ कार्य पर खर्च होंगे। कठिनाई से धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। परन्तु राशि पर शनि की ढैय्या होने से मानसिक तनाव व खर्च अधिक होंगे। सूर्य देव को अर्घ्य प्रदान करना शुभ होगा।

कन्या–मासारम्भ में राशिस्वामी बुध अधिकांशतः द्वादशस्थ होने से दौड़ धूप अधिक रहेगी। आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। कार्य/व्यवसाय में संघर्ष अधिक रहेगा। निकटस्थ बन्धुओं के साथ तकरार रहे। ता. 23 के बाद हालात में सुधार के योग हैं।

तुला–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की दृष्टि होने से स्वभाव में क्रोध व तनाव अधिक रहे। शनि साढ़ेसाती के कारण अत्यधिक परिश्रम के पश्चात् ही निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। लेन-देन करते समय सावधानी बरतें। बनते कार्यों में विघ्न और विलम्ब पैदा होंगे। मंगल स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा। ता. 27 से स्थिति में कुछ सुधार होगा। परन्तु खर्चों की अधिकता रहेगी।

वृश्चिक–राशिस्वामी मंगल नीचस्थ एवं शनि साढ़ेसाती के कारण बनते

कामों में विघ्न और विलम्ब होगा। नौकरी में किसी से धोखा मिल सकता है। सावधानी बरतें। खर्च की अधिकता से मन परेशान और अशांत रहेगा। शरीर कष्ट और चोटादि का भय रहेगा। आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

धनु–इस राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। धर्म-कर्म में विशेष रुचि होगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो, परिवार में शुभ कार्यों पर व्यय होगा। मासान्त में व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बनें। ता. 23 का कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। शनि साढ़ेसति के कारण आकस्मिक खर्चों में विशेष वृद्धि होगी।

मकर–पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ एवं सुख साधनों की प्राप्ति होगी। वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। आमोद-प्रमोद आदि साधनों में विस्तार एवं वृद्धि होगी। धर्म कर्म में भी रूझान रहेगा। उत्तरार्द्ध में परिवारिक उलझनों के कारण मन संतप्त रहे। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण तनाव रहे। गुरुवार का व्रत करना शुभ होगा।

कुम्भ–आशाओं में किंचित सफलता प्राप्त होगी। शनि की स्थिति दशम स्थान पर होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। नवीन कार्य को कार्य रूप देने का प्रयास लाभकारी रहेगा। मासान्त में कार्य करने से कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। परन्तु धन का खर्च अधिक रहेगा। श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

मीन–इस राशि पर केतु का संचार होने से बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होगी। मन उदासीन रहेगा। ता. 26-27 को कुछ विवादास्पद मामले मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगी। धन का खर्च अधिक होगा। **श्री लक्ष्मी सूक्त** का पाठ करना शुभ होगा।

भविष्यफल–सितम्बर–सन् 2015 ई.

मेष–इस राशि पर गुरु की शुभ दृष्टि होने से अकस्मात् धन लाभ के अवसर मिलेंगे। प्रयास करने पर कोई रुका हुआ कार्य बनेगा। परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा। शनि की ढैय्या होने से ज़मीन-जायदाद व वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। घरेलू परिस्थितियों के कारण तनाव रहेगा। भगवान शिव मन्दिर में दूध, जल व बिल्वपत्र हर सोमवार व शनिवार को चढ़ाएं।

वृष–निर्वाह योग्य धन लाभ संघर्ष के पश्चात् ही प्राप्त होगा। शुभ कार्यों पर धन का व्यय अधिक होगा। कुछ बिगड़े कार्यों में सफलता मिलेगी। मानसिक तनाव एवं गुप्त परेशानियों का सामना होगा। अन्त में धन का अपव्यय अधिक रहेगा। **श्री शिव उपासना** करना शुभ होगा।

मिथुन–इस मास मिश्रित फल प्राप्त होंगे। ता. 10 सितं. तक मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनों के कारण चिन्ताएं अधिक रहेंगी। बनते कामों में रुकावटें पैदा होंगी। उत्तरार्द्ध के बाद बिगड़े कामों में सुधार होगा। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। परन्तु स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न होने के योग है।

कर्क–मंगल का नीच स्थिति में संचार है। पूर्वार्द्ध भाग में अत्यधिक परिश्रम करने पर भी लाभ प्राप्त नहीं होगा। व्यवसाय में उन्नति के अवसर कम प्राप्त होंगे। परन्तु घरेलू उलझनों के कारण रुकावटें आएंगी। खर्च भी बहुत होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में किसी मित्र की सहायता से कुछ बिगड़े काम बनेंगे। श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

सिंह–मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य-गुरु का संचार है। कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। व्यवसाय में

वृश्चिक राशि (Scorpio)

तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

ग्रहगोचर–शनि साढ़ेसती का प्रभाव सम्पूर्ण वर्ष रहेगा। राशिस्वामी मंगल उच्चराशिस्थ हेगा, उस पर शनि एवं गुरु की विशेष शुभाशुभ दृष्टियाँ हैं। प्रथम तीन मास संघर्षपूर्ण होंगे। 12 फर. से 22 मार्च तक मीन में होने से स्वास्थ्य में हानि तथा खर्च अधिक रहेंगे। 31 जुला. से 14 सितं. के मध्य मंगल नीचस्थ से संघर्ष अधिक और सेहत भी ठीक न रहे। 15 सितं. से 2 नवं. के मध्य मंगल दशम (सिंह) में आकर लग्न को शुभ दृष्टि से देखेगा। आगे लिखे उपाय करने शुभ होंगे। हर मंगलवार का विधिपूर्वक व्रत रखें तथा छोटी कन्याओं, लड़कों को मीठा प्रशाद बाँटें।

धनु राशि Sagittarius)

ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे

ग्रहगोचर–इस राशि पर शनि साढ़ेसाती रहेगी। राशि स्वामी गुरु उच्चराशिस्थअष्टम में है। उस पर मंगल, बुध एवं शुक्र ग्रहों की दृष्टियाँ पड़ रही हैं। वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग अत्यन्त संघर्ष परिस्थितियों से युक्त होगा। ता. 14 जुला. से गुरु **सिंह राशि** एवं भाग्यस्थान में आने से धार्मिक कार्यों की ओर रुचि बनेगी। परन्तु साढ़ेसाती के कारण मानसिक तनाव एवं खर्च भी बढ़ेंगे। लगभग सारा वर्ष बृहस्पतिवार का विधिपूर्वक व्रत रखना तथा पीला पुखराज धारण करना शुभ होगा।

संघर्षपूर्ण हालात के बाद लाभ होगा। शनि की ढैय्या के कारण घरेलू उलझनों से तनाव रहेगा। संक्रान्ति को **श्रीआदित्य हृदय स्तोत्र** का पाठ व यथाशक्ति दान करना शुभ होगा।

कन्या–मासारम्भ में इस राशि पर बुध स्वराशिगत है। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। एकादश में मंगल-शुक्र की स्थिति के कारण मनोरंजन एवं विलासादि वस्तुओं पर व्यय अधिक होगा। किसी प्रिय व्यक्ति से सम्बन्ध बनेंगे। आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे।

तुला–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की दृष्टि पड़ रही है। शनि साढ़ेसति भी लगी है। फलस्वरूप व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। ता. 16 के बाद भूमि, मकान एवं वाहन सम्बन्धी परेशानियां पैदा हों। परिवार में व्यर्थ का तनाव और खर्च की अधिकता रहेगी। **श्रीदुर्गा कवच** पाठ करना शुभ होगा।

वृश्चिक–मास के पूर्वार्द्ध भाग में मंगल नीच राशिस्थ है व्यवसाय की स्थिति अस्थिर रहे। सवारी का सुख मिले। उत्तरार्द्ध भाग में भी घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान रहे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हों। निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति हो, खर्चों की अधिकता रहे। **श्रीहनुमान कवच** का पाठ करना शुभ होगा।

धनु–इस राशि पर राशिस्वामी गुरु की शुभ दृष्टि से धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। भौम अष्टम होने के कारण मनोरंजन एवं विलासादि पर व्यय अधिक होंगे। चोटादि लगने का भय है, सावधानी बरतें। श्री हनुमत कवच का पाठ करें।

मकर–मासारम्भ में कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। किसी मित्र की सहायता से किसी कठिन कार्य में सिद्धि होगी। मंगल की शुभ दृष्टि होने से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। परन्तु व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। अकस्मात खर्च बढ़ेंगे।

कुम्भ–इस राशि पर गुरु की शुभ किन्तु सूर्य की अशुभ दृष्टि होने से व्यवसाय में उन्नति व प्रगति के कुछ मार्ग प्रशस्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। कुछ बिगड़े कार्यों में विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क करने से सुधार होगा। परिवार में सहयोग कम प्राप्त होगा। सूर्याष्टक स्तोत्र का पाठ करने से लाभ होगा।

मीन–इस राशि में केतु का संचार तथा बुध की नीच दृष्टि, मंगल पंचम स्थान में होने के कारण मानसिक तनाव एवं परेशानियों में कमी होगी। घरेलू एवं व्यवसायिक क्षेत्र में विघ्न बाधाओं व अड़चनों के बाद गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्च अधिक रहेंगे। इस राशि की स्त्रियों को अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखना होगा।। सुंदरकांड का पाठ करना शुभ होगा।

भविष्यफल–अक्तूबर–सन् 2015 ई.

मेष–मासारम्भ में इस राशि पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ रही है। किसी प्रतिष्ठित मित्र की सहायता से बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। नए कार्य की योजना बनेगी। शनि की ढैय्या होने से स्वास्थ्य में विकार और चोटादि का भय है। यद्यपि गत किए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी एवं खर्च अधिक रहेंगे। श्री गायत्री मंत्र का पाठ शुभ होगा।

वृष–इस राशि पर शनि की मित्र दृष्टि रहेगी। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। दाम्पत्य जीवन में मतभेद होंगे। परेशानी और उलझनें उत्पन्न होंगी। विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होगा। **'कार्तिक माहात्म्य'** का पाठ करना शुभ होगा।

पं. देवीदयालु संस्थान द्वारा प्रकाशित **'कार्तिक माहात्म्य'** में शुद्ध एवं सही जानकारी मिलेगी।

मिथुन–इस मास मिश्रित प्रभाव होगा। गत किए गए प्रयासों से किसी विशेष कार्य में सफलता मिले। विदेश सम्बन्धी कार्यों में विघ्नों का सामना रहेगा। ता. 17 के पश्चात् किसी नए कार्य में विनियोग का लाभ होने के योग हैं। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा। कार्तिक माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।

कर्क–मासारम्भ में कन्या राशि में सूर्य का संचार होने के कारण मिश्रित प्रभाव रहेंगे। नौकरी व व्यापार में यद्यपि उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु पारिवारिक एवं निजी उलझनों के कारण लाभ में कमी रहेगी। ता. 17 के पश्चात् कुछ बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। श्री दुर्गा पाठ करना शुभ होगा।

सिंह–इस राशि पर गुरु, मंगल ग्रहों का योग बना हुआ है। परिश्रम व दौड़-धूप रहेगी। फिर भी निर्वाह-योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव व अल्प परेशानियां रहेंगी। 17 ता. से तुला में सूर्य होने से सिर-दर्द, आँखों में कष्ट व चर्म रोग होने का भय रहेगा। विशेष सावधानी बरतें। सूर्य यंत्र का पूजन तथा भगवान् सूर्य को अर्घ्य देना शुभ होगा।

कन्या–ता. 16 तक सूर्य व बुध का संचार रहेगा। जिससे दैनिक कार्यों एवं सरकारी क्षेत्रों में कुछ रुके कार्यों में प्रगति होगी। यद्यपि आय के साधन सीमित रहेंगे। ता. 17 से राशिस्वामी सूर्य द्वितीयस्थ संचार करने से वृथा भ्रमण, व्यर्थ का खर्च एवं मुश्किल हालात में धन लाभ अल्प रहेगा। **कार्तिक माहात्म्य** का पाठ करना शुभ होगा।

तुला–द्वादश में सूर्य-राहु का योग होने से बनते कामों में अड़चनें, परिवार सम्बन्धी चिन्ता और मानसिक तनाव रहेगा। गुजारे लायक धन की प्राप्ति होगी। शनि साढ़ेसाती के कारण शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं। विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। ता. 17 से **कार्तिक माहात्म्य** का पाठ करना शुभ होगा।

वृश्चिक–इस राशि पर शनि का संचार होने से आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। परिवार सम्बन्धी उलझनें एवं चिन्ता बढ़ेगी। श्रीआदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

धनु–राशिस्वामी गुरु भाग्य स्थान पर होने से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। किसी विशेष कार्य में पारिवारिक सहयोग से सफलता मिलेगी। परन्तु मासान्त में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। आय से खर्च अधिक और वृथा वाद-विवाद में हानि होगी। **श्रीसूक्त** का पाठ करना शुभ होगा।

मकर–राशिस्वामी शनि की शुभ दृष्टि पड़ रही है। हालात में सुधार व कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल होगा। परन्तु संतान सम्बन्धी चिन्ता रहे। ता. 20 के पश्चात् परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। परन्तु भूमि-जायदाद के मतभेद दूर होने से विलम्ब होगा। **श्रीविष्णु सहस्रनाम** का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ–मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य-मंगल व शुक्र ग्रहों की सप्तम दृष्टि

मकर राशि (Capricorn)

भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी

ग्रह गोचर– मकर राशि पर मंगल, बुध व शुक्र ग्रहों का संचार है। उन पर गुरु व शनि दोनों की संयुक्त दृष्टियाँ पड़ रही हैं। जिससे अत्यन्त संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। 14 जन. से 12 फर. तक सूर्य (मकर) में होने से धर्म–कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी। (15) मार्च से 13 अप्रै. तक सूर्य तृतीय भाव में होने से शुभ कार्यों पर खर्च होगा। 16 जून से 14 सितं. के मध्य मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। ता. 14 जुला. से वर्षान्त तक गुरु अष्टम सिंह राशि में संचार करेगा। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों का सामना रहेगा। शनिवार को सरसों के तेल में अपना चेहरा (मुख) देखकर मन्त्र पढ़ते हुए सायंकाल के समय शनि मन्दिर चढ़ाना।

मन्त्र-" ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं सः शनयै नमः"

कुम्भ राशि (Aquarius)

गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द

ग्रह गोचर–राशि स्वामी शनि (शत्रु राशि) में एवं ता. 14 मार्च से 1 अग. तक वक्री रहेगा। कार्य व्यवसाय में अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। परन्तु लग्नेश शनि पर 13 जुला. तक गुरु की दृष्टि रहने से
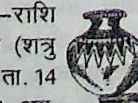
पड़ रही है। जिससे मिश्रित प्रभाव होंगे। उलझनों के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ काम पर खर्च भी होगा। सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिले। ता. 20 के बाद किसी मित्र की सहायता से नवीन कार्य की योजना बनेगी। विदेश यात्रा के भी योग है। सवारी आदि सुख प्राप्त होंगे। श्री सूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

मीन–मासारम्भ में केतु का संचार है तथा सूर्य-बुध आदि ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है जिससे इस मास मिश्रित फल प्राप्त होंगे। धन लाभ के साथ-साथ खर्चे भी अत्यधिक रहेगा। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी। ता. 15 के पश्चात् आकस्मिक धन लाभ हो, परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहे। देश विदेश में सम्पर्क सूत्र बढ़ेंगे। **श्री दुर्गा सप्त.** का पाठ करना शुभ होगा।

अपने भावी जीवन के लिए विशेष फल व उपाय जानने के लिए वर्ष/फल बनवाएँ। फीस 601/- रुपये।

भविष्यफल–नवम्बर–सन् 2015 ई.

मेष–मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य की उच्चदृष्टि होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन-लाभ के साथ-साथ खर्चों की भी अधिकता रहेगी। महत्त्वपूर्ण विदेशी कार्यों में कुछ प्रगति के आसार बनेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में क्रोध एवं आवेश से बचना चाहिए। गृह-कलह होने के योग हैं। **'कार्तिक माहात्म्य'** का पाठ करना शुभ होगा।

वृष–मासारम्भ में इस राशि पर शनि की सप्तम दृष्टि के कारण आय कम व खर्च अधिक होगा। उत्तेजना से बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। भाई-बन्धु से मन-मुटाव होगा। आर्थिक तंगी से परेशानी होगी। व्यवसाय में संघर्ष के पश्चात् भी धन की प्राप्ति अल्प होगी।

मिथुन–मासारम्भ में राशिस्वामी बुध पंचम भाव में सूर्य के साथ अस्तंगत है। आय कम व संघर्ष अधिक रहेगा। व्यवसायिक क्षेत्रों में दौड़-धूप अधिक एवं स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा। जमीन-जायदाद सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होंगी। **'कार्तिक माहात्म्य'** का पाठ करना शुभ होगा।

कर्क–मासारम्भ में मंगल शुक्र व राहु तृतीयस्थ होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। विशेष परिश्रम एवं संघर्ष के पश्चात् आय के निर्वाह योग्य साधन बनेंगे। वृथा भागदौड़ एवं क्रोध की अधिकता से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ेगा। मासान्त में परिवार में शुभ कार्य होंगे। **श्री दुर्गासप्तशती** का पाठ करना शुभ होगा।

सिंह–इस राशि पर गुरु का संचार है। पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ कार्य पर खर्च होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। आय कम और खर्च अधिक रहेंगे। **शनि स्तोत्र** का पाठ करना शुभ होगा।

कन्या–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल-शुक्र व राहु का संचार बना हुआ है। आरम्भ में आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। जमीन-जायदाद एवं वाहन सम्बन्धी समस्या उत्पन्न होगी। व्यवसायिक क्षेत्रों में दौड़-धूप अधिक परन्तु आय कम रहेगी। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा। वाहन से चोटादि का भय और शरीर कष्ट के योग हैं। **श्री दुर्गा-कवच** का पाठ करना शुभ होगा।

तुला–मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य-बुध का अशुभ संचार बना हुआ है।

आय कम और खर्च होंगे। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म रहेगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। मन में अशांति व क्रोध की मात्रा अधिक होगी। अधिकांश समय मनोरंजन एवं वृथा कामों में व्यतीत होगा। भगवान सूर्य को मंत्रपूर्वक अर्घ्य देना शुभ होगा।

वृश्चिक—व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम और व्यय अधिक रहेगा। विशेष परिश्रम करने पर भी धन लाभ अल्प होगा। परिवार में तनाव व मतभेद होंगे। आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान, वाहनादि पर व्यय होगा। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। **श्रीसुंदरकांड** का पाठ करना शुभ होगा।

धनु—शनि साढ़ेसाती होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ एवं मानसिक तनाव रहेगा। गुरु की दृष्टि होने से निर्वाह आय के साधन बनते रहेंगे। धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी। **श्रीगुरु गायत्री मंत्र** का जप करना शुभ होगा।

मकर—मासारम्भ में राशि पर स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। व्यवसाय की दृष्टि से शुभ होगा। नई योजना को कार्य रूप देने में अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। सरकारी कार्यों में कुछ विघ्नों के उपरान्त सफलता मिलेगी। मासान्त में घरेलू एवं आर्थिक उलझनें और परेशानियां बढ़ेंगी। आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे।

कुम्भ—मास के पूर्वार्द्ध भाग में धन हानि एवं किसी उच्च अधिकारी से विरोध पैदा हो, शरीर कष्ट व धन का खर्च अधिक रहे। बनते कामों में रुकावटें पैदा हों। उत्तरार्द्ध भाग में स्थिति में सुधार होगा। बिगड़े काम बनेंगे। निर्वाह योग्य धन लाभ होगा। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। किसी शुभ कार्य पर खर्च होंगे।

मीन—पूर्वार्द्ध भाग में विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। कलह-क्लेश के कारण गृह में अशान्ति होगी। आलस्य में वृद्धि होगी। धन का व्यय भी अधिक हो। **श्रीदुर्गासप्तशती** का पाठ करना शुभ होगा।

भविष्यफल—दिसम्बर—सन् 2015 ई.

मेष—शनि की ढैय्या तथा शुक्र की दृष्टि होने से मिले-जुले फल प्राप्त होंगे। व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। सवारी आदि सुख साधनों पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध में किसी विदेशी मित्र द्वारा धन प्राप्त होगा। अकस्मात् यात्रा के योग हैं। श्री सुन्दरकाण्ड का पाठ करना शुभ होगा।

वृष—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य व शनि की दृष्टियां पड़ रही है। व्यवसाय में संघर्ष एवं कठिन हालात के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ बिगड़ें कामों में सुधार एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। *श्री सूक्त* का पाठ करना शुभ होगा।

मिथुन—बुध की स्वगृही दृष्टि पड़ने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। दूसरे भाग में किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

कर्क—कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। गृहस्थ जीवन में तनाव निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। शुक्र भाग्य स्थान में होने से वाहन आदि सुख/साधनों का सुख होगा। हर शनिवार को भगवान शिव मन्दिर में कच्ची लस्सी, बिल्वपत्र, एक चुटकी शक्कर डालकर (ॐ नमः शिवाय) पढ़कर अभिषेक करें। तदुपरान्त पीपल को भी जल अर्पण करें।

मीन राशि (Pisces)

दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि

ग्रह गोचर—वर्षभर केतु का संचार एवं 13 जुला. तक राशिस्वामी गुरु की दृष्टि रहेगी। पूर्वार्द्ध भाग में उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रहेंगे। ता. 15 जुला. से मंगल नीच राशि (कर्क) में होने से अकस्मात् खर्च बढ़ेंगे तथा मानसिक तनाव रहेगा। ता. 15 सितं. से 23 दिसं. तक भाग्येश मंगल मित्र-दृष्टि पड़ने से बिगड़ें कामों में कुछ सुधार होने के योग है। परन्तु क्रोधावेश करने से हानि होने के संकेत हैं।

प्रत्येक वीरवार को केले के पौधे का पूजन करना, भगवान् शंकर की पूजा करके शिवलिङ्ग पर हल्दी मिलाकर जल **''ॐ नमः शिवायः''** मन्त्र पढ़ते हुए बेलपत्र सहित चढ़ाना शुभ होगा।

की स्थिति रहे। शरीर अस्वस्थ रहे। ता. 26 के बाद दौड़ धूप एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। आय के साधनों में विघ्न-बाधाएं रहेंगी।

सिंह—गुरु का संचार एवं शनि की ढैय्या होने से मिश्रित प्रभाव होगा। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति और धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे। परन्तु ता. 16 से सूर्य धनु राशिगत संचार करने से विघ्नों के बावजूद कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि परन्तु गुस्सा ज्यादा आएगा।

कन्या—मासारम्भ में मंगल-राहु का संचार होने के कारण व्यर्थ की भाग-दौड़, आकस्मिक खर्च और क्रोध के कारण हानि की आशंका रहेगी। उत्तरार्द्ध में बनते कामों में विघ्न, सुख-साधनों पर खर्च होगा। आँखों में कष्ट के योग हैं। **श्रीदुर्गा सप्तशती** का पाठ करना शुभ होगा।

तुला—मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र का संचार बना हुआ है। दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। परन्तु शनि साढ़ेसाति के कारण उत्तरार्द्ध भाग में आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। श्री सूक्त का पाठ करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य-शनि का संचार होने के कारण धन-लाभ व बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क होगा। विशेष अवसरों और उत्सवों में जाने से मान-सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु शनि के कारण मानसिक तनाव होगा। लाभ के मार्गों में रुकावटें आयेंगी। मासान्त में वृथा यात्रा होगी। चोटादि का भय रहे।

धनु—गुरु-मंगल की शुभ अशुभ दृष्टियां रहेंगी। जिससे स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेजी रहेगी। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक होगी। विरोधी हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी परन्तु आय के साधन सीमित रहेंगे। ता. 21 से 23 के मध्य निकट बन्धुओं से वैमनस्य एवं तनाव रहेगा। भाई-बहनों का सुख कम हो।

मकर—कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। उत्तरार्द्ध भाग में व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। **शनि स्तोत्र** का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ—मासारम्भ में राशिस्वामी शनि-सूर्य का योग दशम भाव में बना है। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी मनोनुकूल लाभ प्राप्त नहीं होगा। यद्यपि व्यवसाय में उन्नति के कुछ अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु घरेलू उलझनों के कारण अशान्ति रहेगी। किसी निकट बन्धु के द्वारा धोखा मिलने का योग है। किसी प्रियजन से मुलाकात होगी जो लाभदायक होगी। खर्च में वृद्धि होगी।

मीन—केतु का संचार व मंगल की सप्तम दृष्टि होने से भागदौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिजूल खर्ची बढ़ेगी। किसी निकट बन्धु से मनमुटाव पैदा हो। ता. 16 के बाद कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। कहीं यात्रा का भी प्रोग्राम बनेगा।

वि. संवत् २०७२ में संवत्सर एवं राजा-मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्-चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व प्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे। **'कीलक' नामक** नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे चत्वारिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१४०) वर्ष प्रवेशे पण्डित विवेक शर्मा ज्योतिषी अहं पुत्र दैवज्ञरत्न पण्डित श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी, कनिष्ठ भ्रातृ पण्डित पंकज शर्मा सहितोऽहं कुर्वे **पंचाँग दिवाकरम्।**

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,११६ के अन्तर्गत, **श्रीविक्रमी संवत् २०७२**, कलि (कल्कि) संवत् ५११६, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२५१, सप्तर्षि संवत् ५०९१, श्रीबुद्ध संवत् २६३८-३९, श्रीमहावीर निर्वाण संवत् २५४०-४१, शक संवत् १९३७-३८, हिजरी सन् १४३६-३७, ईंग्लिश सन् २०१५-१६ ईसवी, फसली सन् १४२२-२३, खालसा संवत् ३१६-१७, नानकशाही सम्वत् ५४६-४७, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

'कीलक' नामक सम्वत्सर का फल

कीलब्देतु ईतिभीतिश्च प्रजाक्षोभनृपाहवयौ।
तथापि वर्धते लोकः समधान्यार्ध वृष्टिभिः।।

अर्थात् कीलक नामक सम्वत्सर आवे, तो उस वर्ष फसलों को ईति भयः अर्थात् कहीं अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल, मूषकों, कृमियों, टिड्डी दलों आदि से फसलों की क्षति तथा लोगों में क्लिष्ट रोग भय एवं कष्ट-विक्षोभ अधिक हों। राजाओं (प्रशासकों) एवं लोगों में परस्पर टकराव बढ़े। तथापि वर्षा अच्छी होने से धान्यादि की फसलों में वृद्धि होगी तथा लोगों में खुशहाली बढ़े।

गुरु मान से शिव विंशति के अन्तर्गत **'कीलक'** नाम का नया विक्रमी सम्वत् २०७२ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अर्थात् **21 मार्च सन् 2015 ई०**, तदनुसार प्रविष्टे **८ चैत्र, शनिवार से** प्रारम्भ होगा। शनिवार से प्रारम्भ होने से आगामी वर्ष (सम्वत्) का राजा भी शनि होगा।

नव सम्वत् प्रवेश २१।१५

नवचैत्र शुक्ल प्रतिपदा का आरम्भ 20 मार्च, शुक्रवार की दुपैहर तीन बजकर 06 मिनट (२१।१५ घट्यादि) पर, उ.भा. नक्षत्र एवं शुक्ल योग कालीन, कर्क लग्न में होगा। परन्तु कीलक नामक नव सम्वत्सर तथा चैत्र नवरात्र का शुभारम्भ 21 मार्च, शनिवार की प्रातः सूर्योदय से होगा। जोकि 21 मार्च से 28 मार्च पर्यन्त रहेंगे। नवरात्र के प्रथम दिन किसी पण्डित जी द्वारा घटस्थापन, संवत्सर पूजन एवं श्रीगणेश, विष्णु, शिव एवं अन्य देवी पूजन करने का विशेष माहात्म्य होता है। प्रथम नवरात्र से सभी प्रकार के व्रतानुष्ठान, दानादि शुभ कार्यों के प्रारम्भ एवं अन्य संकल्पादि के कार्यों में **'कीलक'** नामक संवत्सर का प्रयोग होगा। श्री पण्डित जी अथवा किसी पूजनीय व्यक्ति के मुखारविन्द से परिवार को संवत् का नाम, संवत् का वास, राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना चाहिए। इससे सारा वर्ष मंगलमय व्यतीत होता है।

नोट–नवसंवत् (वर्ष-कुण्डली) के ग्रहों के अनुसार राजनैतिक व सामाजिक प्रभाव हेतु **ग्रहों की आकाशी कौंसिल का प्रभाव** के पृष्ठों का अवलोकन करें।

रोहिणी का वास–ज्योतिषीय गणनानुसार संवत् २०७२ में रोहिणी का वास समुद्र पर रहेगा। शास्त्र में इसका फल इस प्रकार लिखा गया है–

यदा पयोनिधि स्थले गतो विरंचिभं तदा।
अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्य वर्द्धनम्।।

अर्थात् जिस वर्ष रोहिणी नक्षत्र **'समुद्र'** पर आता हो, तो उस वर्ष बारिश अधिक होती है। गेहूँ, धान्यादि सभी की पैदावार भी अच्छी होगी। परन्तु मध्य भारत (जैसे-बिहार, म. प्र., उड़ीसा, उ. प्रदेश आदि) के कुछ स्थलों पर बाढ़ आदि प्रकोपों के कारण जन, धन, कृषि आदि फसलों की हानि होने के संकेत हैं। परन्तु कुछ भागों में धान्य, मक्का, चावल, तृण, फल-फूलों आदि की पैदावार अच्छी होगी।

समय अर्थात् संवत्सर का वास–माली के घर में होने से वर्षा विपुल मात्रा में होगी। ईख, धान्य, चावल, तृण, घास एवं फूल व फलों की पैदावार अच्छी होगी। परन्तु इन सबके बावजूद सब प्रकार के कृषि उत्पाद, घी, तेल, दैनिक भोग्य वस्तुएँ, दालें, दूध तथा सोना, ताम्बा, चान्दी आदि तेज भाव होंगी–

मालिने प्रचुरा वृष्टिः। सर्ववस्तु समर्घं स्यान्मालाकारगृहे।।

संवत् (समय) का वाहन–महिष

वर्ष का राजा शनि होने से संवत् का वाहन भैंसा (महिष) होगा। वर्षभर विषम वर्षा होगी। अर्थात् असमान् वर्षा होगी। कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहे तो कहीं अति वर्षा से बाढ़, भूस्खलन, फसलों की हानि एवं अन्य प्राकृतिक प्रकोपों से धन, जन, सम्पदा आदि की हानि होने का भय होगा। काले रंग की वस्तुएं अधिक प्रिय अर्थात् महँगी होंगी। लोगों की प्रवृत्ति तामसिक बनेंगी। पूर्व-दक्षिण के देशों एवं राज्यों में प्राकृतिक प्रकोप अधिक होंगे।

वि. संवत् २०७२ के दशाधिकारियों का फल

(1) वर्ष के राजा शनि का फल–

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गद–तस्कराद्यैः भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्चदेशान्।।

अर्थात् वर्ष का राजा शनि हो तो बेमौसमी एवं बेमौका (प्रतिकूल) वर्षा होने से लोग विभिन्न प्रकार के पेचीदा रोगों के कारण परेशान रहें। नेताओं में परस्पर वैमनस्य, विरोध एवं टकराव रहें। कहीं भूमण्डल पर युद्ध की स्थिति बने। चोरी, ठगी, डकैती एवं लूटमार आदि की घटनाएँ अधिक हों, जिस कारण लोग परेशान एवं दुःखी हों। किसी प्रदेश विशेष में लोग दुर्भिक्ष, बाढ़, आतंक आदि से परेशान (पीड़ित) होकर अन्य प्रदेशों में स्थानान्तरण करने को विवश होंगे।

(2) सम्वत् के मन्त्री मंगल का फल–

अवनिजो ननु मन्त्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिज वेदना।
जनपदेषु जयः सुख संचयो न बहुगोषु पयो द्विज कर्म च।।

सम्वत् का मन्त्री मंगल हो, तो उस वर्ष लोग चोरों, लुटेरों, तस्करों आदि के आतंक एवं विविध रोगों के कारण परेशान एवं पीड़ित रहें। अग्निकाण्ड, दुर्घटनाएं एवं हिंसक घटनाएं अधिक हों। अधिकांश लोग सुख-साधनों एवं सम्पन्नता की चाह में महानगरों की ओर जाने में अग्रसर होंगे। गाय, भैंस आदि के दूध में कमी होगी। ब्राह्मण लोग यज्ञादि कर्मकाण्ड आदि धार्मिक कामों में कम प्रवृत्त हों। सोना, ताम्बा, पीतल, जूट-पटसन, लाख, लाल मिर्च आदि लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज भाव होंगी।

(3) सस्येश गुरु का फल–

कणपतौ सुरराज पुरोहिते सकल सौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनिवसूनि वै।।

अर्थात्–गुरु (बृहस्पति) सस्येश हो, तो वेदों द्वारा निर्धारित धर्म-मार्ग का अनुसरण करने से ही लोगों को सुख-शान्ति एवं कल्याण की प्राप्ति हो। वर्षा अधिक हो। गेहूँ, धान्य, ईख, गोरस, दूध, घी एवं फलों आदि की पैदावार अधिक होगी। सर्व प्रकार की कृषि आदि का उत्पादन भी अच्छा होगा। खेतीकर एवं कृषि का व्यवसाय करने वाले व्यापारी अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकेंगे।

(4) धान्येश बुध का फल–

बुध धान्याधिपे मेघा जलं मुञ्चति वै भृशम्।
सैन्धवे लाटदेशे च माधवोऽल्पं च वर्षति।।

अर्थात्–जिस वर्ष धान्यपति बुध हो, उस वर्ष मेघों से वर्षा अच्छी होती है। सब प्रकार के अनाज आदि की पैदावार भी अच्छी होती है, परन्तु उस वर्ष सिन्ध प्रदेश तथा लाट प्रदेश (पंजाब, हरियाणा आदि) में अपेक्षाकृत वर्षा की कमी एवं कृषि का उत्पादन कम हो।

(5) मेघेश (वर्षा का स्वामी) चन्द्र–

शशिनि तोयदपे यदि गोमहिष्यज–खरादिषु दुग्धरसं तदा।
फलवती धन–धान्यवती विविध भोगवती ननु भामिनी।।

अर्थात्–मेघेश (वर्षा का स्वामी) यदि चन्द्रमा हो, तो गाय, भैंस, बकरी, गधी आदि चौपाय अधिक मात्रा में दूध देंगे। उस वर्ष पृथ्वी पर गेहूँ, धान्य, चावल आदि की फसलें अच्छी होंगी। वृक्षों पर फल, फूल आदि अधिक होंगे। पृथ्वी पर विविध प्रकार के उपभोग्य, सुख-साधन एवं ऐश्वर्य के स्रोतों में वृद्धि होगी। महिला समाज को भी सुख एवं ऐश्वर्य के साधनों की वृद्धि होगी।

(6) रसेश शनि का फल–

रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अजगवां गजवाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युताः।।

रसों का स्वामी शनि होने से संवत् में अनुकूल (उपयोगी) वर्षा की कमी रहेगी। रसदार वनस्पतियों (जैसे–ईख, गुड़, चीनी, घी, दूध, मक्खन, फल आदि) की पैदावार में कमी किंवा इन वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी होगी। अनेक प्रकार के क्लिष्ट रोगों से लोग परेशान रहें। गाय, भैंस, बकरी, हाथी, घोड़े, ऊँट आदि चौपायों में रोग आदि के कारण हानि हो। लोगों में परस्पर प्रेम-भावों की कमी होगी।

(7) नीरसेश गुरु का फल–

हरिद्रा पीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरूत्तमा।।

नीरसेश अर्थात् ठोस धातु पदार्थों का स्वामी गुरु (बृहस्पति) होने से हल्दी, पीले वस्त्र, सोना, पीतल आदि पीले वर्ण की वस्तुओं एवं धातुओं के प्रति लोगों का आकर्षण अर्थात् माँग विशेष अधिक बढ़े। फलस्वरूप इनके मूल्यों में भी और वृद्धि हो। लोगों की अभिरूचि धार्मिक विषयों की ओर एवं पारस्परिक प्रीति एवं सहयोग बढ़ेगा।

(8) फलेश चन्द्र का फल–

यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता वलिभिः कुसुमैर्युताः।
द्विजमुखावर भोग समन्विता नृपतयो नयनाटन तत्पराः।।

फलों का स्वामी चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष राजनेता प्रजा को न्याय प्रदान कराने में प्रवृत्त

होंगे। विद्वान्-ब्राह्मण (विप्र) भी विविध प्रकार के धन-धान्य एवं भोग्य पदार्थों से सम्मन्वित होंगे। वृक्षों एवं लताओं पर विभिन्न प्रकार के मौसमी फल, फूलों एवं अन्य वनस्पतियों की पैदावार अच्छी होगी। राजनेता देश, विदेश के स्थानों पर भ्रमण करने में उत्सुक रहेंगे, अर्थात् भ्रमणशील रहेंगे।

(9) धनेश गुरु का फल–

सुमनसां च गुरुः द्रविणाधिपो वणिज–वृत्तिपराः सुखभाजिनः।
फलित पुष्पित–भूमिरुहाः सदा विविध द्रव्ययुताभुवि मानवाः।।

अर्थात् गुरु (बृहस्पति) यदि धनेश (कोश-स्वामी) हो, तो व्यापारी अर्थात् वणिज वृत्ति करने वाले व्यापारी लोग व्यापार में लाभान्वित होकर सुखी एवं प्रसन्नचित्त हों। वृक्षों पर फूलों, फलों आदि की पैदावार अच्छी हो। कुछ विशिष्ट लोग धन, सम्पदाओं एवं विविध प्रकार के भौतिक सुखों से सम्पन्न हों।

(10) दुर्गेश (सेनापति) चन्द्र का फल–

गढपतिः शशलाञ्छनको यदा नृपसुराज्य विलासित पौरजाः।
बहुधनेक्षुज गोरसभोगिनो नखरा वरवर्णित विग्रहाः।।

यदि वर्ष में चन्द्रमा दुर्गेश (सेना का स्वामी) हो, तो उस वर्ष राजनेता (प्रशासक) प्रजा में सुचारू ढंग से शासन करने की चेष्टा करें। लोगों में कुछ प्रसन्नता का वातावरण बने। गुड़, चीनी, ईख (गन्ना), दूध, घी, गोरस आदि के क्रय-विक्रय (व्यापार) करने वाले व्यापारियों को अच्छा (समुचित) लाभ हो। उच्च-प्रतिष्ठित विशेष वर्ग के लोगों में परस्पर विग्रह हों।

नवमेघों में ''वरुण'' नामक मेघ का फल–

अग्निहोत्रकरणादराद्विजाः स्युः सदाधिकमुदोखिलाः प्रजाः।
अर्णवेणसहितं महीतलं वारुणे जलधरे भवेदलम्।।

अर्थात् यदि '**वरुण**' नाम का मेघ हो, तो समाज में कर्मकाण्डी एवं अग्निहोत्रादि करने वाले ब्राह्मणों का आदर बढ़े। प्रजा में सुख-साधनों की वृद्धि होगी। अनाज, धान्यादि का उत्पादन अच्छा होगा। कहीं अनुकूल एवं अच्छी वर्षा हो, कहीं अधिक वर्षा से भयंकर बाढ़ की स्थिति बनेगी।

द्वादश नागों में 'कंबल' नामक नाग का फल–

यदैवकंबलाभिधो भुजंगमः प्रजायते।
तदास्ति मध्यमजलं समस्त धान्यम् उत्तमम्।।

अर्थात् जिस वर्ष में '**कंबल**' नामक नाग हो, तो उस वर्ष वर्षा कम हो अर्थात् उपयोगी व अनुकूल वर्षा की कमी तथा फलस्वरूप अन्न का उत्पादन भी कम होगा।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश फल–वि. २०७२

(वर्षा एवं वायुमण्डल विचार)

वि. संवत् २०७२ में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रथम (अधिक) आषाढ़ शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, पू.फा. नक्षत्र एवं सिद्धि योग कालीन सायं 4 बजकर, 46 मिनट पर, 22 जून, सोमवार को वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेंगे। सूर्य आर्द्रा प्रवेश कालीन वृश्चिक लग्न उदित हुआ है। स्थिर लग्न एवं जल तत्त्व राशि में वायुतत्त्वकारक ग्रह शनि (शत्रुराशिस्थ) संचार कर रहा है। वृश्चिक राशि उत्तर दिशा की सांकेतिक राशि है। लग्नेश एवं अग्नितत्त्व ग्रह मंगल अष्टम भाव में सूर्यदेव के साथ वायु तत्त्व एवं पश्चिम दिशा की सांकेतिक राशि मिथुन में संचरित है। ग्रहस्थिति अनुसार भारत के उत्तर एवं पश्चिमी राज्यों (जैसे-पंजाब, राजस्थान, जम्मू-काश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, हि.प्र., उत्तराखण्ड आदि) में वायु प्रकोप के साथ गर्म हवाएँ तथा गर्मी बढ़ने के संकेत हैं। फलस्वरूप विपरीत जलवायु, विषम वर्षा तथा कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा से बाढ़ जैसे हालात तथा कुछ क्षेत्रों में अल्प वर्षा से अकाल जैसी परिस्थितियां बनेंगी। शनि के कारण धीमे वायु-वेग के कारण उपयोगी वर्षा की कमी रहे। गुरु, शुक्र, शनि–तीन ग्रह जल-तत्त्व राशियों में हैं तथा लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि भी है। जलीय ग्रह शुक्र भी गुरु के साथ ही जल राशि में है। फलस्वरूप विपरीत परिस्थितियों के बावजूद पूर्वी एवं दक्षिणी क्षेत्रों में व्यापक वर्षा होगी। उत्तर-पश्चिमी राज्यों (जैसे उ.प्र., हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, राज.) में भी कुछ विशेष क्षेत्रों में अच्छी वर्षा व अन्न-उत्पादन यथेष्ठ रहेगा तथा कुछ क्षेत्रों में वर्षा की कमी से अकाल की स्थिति बने। खण्ड वर्षा के योग हैं।

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुं.
22 जून, 2015 ई., 16घं. 46मि.

सूर्य द्वारा आर्द्रा प्रवेश सोमवार को होने से सुभिक्ष के संकेत हैं। अर्थात् पर्याप्त वर्षा होने से गेहूँ, अन्न आदि का उत्पादन अच्छा होगा तथा मूल्यों में विशेष अधिक वृद्धि न होगी।

शशिधरवारे स्मरहरधिष्ण्ये। दिनकरवेशे सतिहिसुभिक्षम्।।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में आर्द्रा प्रवेश करने से प्रधान-नेताओं की कीर्ति, यश उत्तरोत्तर बढ़ता है। परन्तु दोपहर बाद आर्द्राप्रवेश होने से खड़ी फसलों को नुकसान, धान्य, चावल, चना आदि अनाज महँगे हों तथा तृण, घास का किसी बिमारी के कारण नाश हो–

मध्याह्नकाले कृषिनाशनाय धान्यं महर्घं चतृणस्य नाशः।।

सिद्धि योग में आर्द्राप्रवेश होने से प्रजा में रोगों की वृद्धि हो, परन्तु धन, धान्य, वस्त्रादि की वृद्धि होगी।

शनि की दृष्टि—गतवर्ष वि. संवत् २०७१ में 2 नवं., 2014 ई. को शनिदेव ने वृश्चिक राशि में प्रवेश किया था। आगामी वि. संवत् २०७२ में शनि वृश्चिक राशि में ही रहेंगे। वृश्चिक राशि संचारकालीन शनि की मकर, वृष तथा सिंह राशियों पर दृष्टियाँ रहेंगी तथा तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि वाले जातकों/राष्ट्रों पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की ओर रहेगी। फलस्वरूप उत्तरी प्रान्तों तथा उत्तरी देशों (विशेषकर वृष, सिंह एवं मकर राशि वाले देशों/प्रान्तों) जैसे-आयरलैण्ड, मध्यप्रदेश, आस्ट्रेलिया, ईरान, सूरत, जर्मनी, बिहार, सिक्किम, दिल्ली, फ्रांस, अफगानिस्तान, छत्तीसगढ़, इटली, महाराष्ट्र, पंजाब, पश्चिम-बंगाल, बंगलादेश, उत्तराखण्ड, हि.प्र. में प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, तूफान, भूकम्प, आतंकवादी विस्फोट एवं हिंसक घटनाएं तथा राजनैतिक क्षेत्रों में उथल-पुथल, सत्ता-परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं बनेंगी।

गुर्राफल विचार (सन् 2015-16 ई.)

इस्लामी नववर्ष कुण्डली

2, 12 के., 3, 1, 11, 4 गु., 10, 7 सू. चं. शु. श., 5, 9 मं., 6 बु. रा., 8

हिजरी सन् 1436

सूर्यास्त 25 अक्तू., 2014

इस्लामी मतानुसार एकं (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् आरम्भ होता है।

वि. संवत् 2071 में 26 अक्तू., 2014 ई., रविवार को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1436 शुरु होगा। रविवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से इस्लामी वर्ष 1436 (2014-15 ई.) का बादशाह साल **सूरज (सूर्य)** होगा।

इस्लामी मतानुसार निर्धारित वर्षकुण्डली में मेष लग्न उदित हुआ है। लग्नेश मंगल अग्नितत्त्व राशिस्थ नवम भाव में शुभ है, परन्तु शनि द्वारा दृष्ट है। सप्तम भाव में सू., चं., शु., श. चार ग्रह लग्न भाव पर अशुभ दृष्टि डाल रहे हैं। इसके अतिरिक्त पाक, इराक (बगदाद), टर्की आदि मुस्लिम राष्ट्रों की प्रभाव राशि कन्या पापाक्रान्त है। फलस्वरूप पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, सूडान, मिस्र, लीबिया, यमन, सीरिया आदि मुस्लिम देशों में आन्तरिक, सामाजिक एवं राजनीतिक हालात अत्यन्त असमंजसपूर्ण, अस्थिर एवं संघर्षपूर्ण रहेंगे। शिया-सुन्नी-कुर्दों के बीच खूनी संघर्ष और उग्र हो जाएगा। इज़रायल-फिलिस्तीन में भी युद्धमय वातावरण रहेगा। तथा किसी भी समय एक-दूसरे पर प्राणघातक हथियारों का प्रयोग करेंगे। अफगानिस्तान, पाक आदि मुस्लिम देशों में आतंकवादी घटनाओं के कारण बेकसूर आम (साधारण) लोगों को जान-माल का खतरा होगा। कहीं भूकम्पादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण भी जन-धन की क्षति होने के योग हैं।

वि. संवत् 2072 में 15 अक्तू., 2015 ई., गुरुवार को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1437 शुरु होगा। गुरुवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से इस्लामी वर्ष 1437 (2015-16 ई.) का बादशाह गुरु (बृहस्पति) होगा।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली

1, 11, 2, 12 के., 10, 3, 9, 6 सू. बु. रा., 4, 8 श., 5 मं.गु.शु., 7 चं.

हिजरी सन् 1437 (2015-16)

सूर्यास्त 14 अक्तू., 2015 ई.

इस्लामी नववर्ष कुण्डली में मीन लग्न उदित हुआ है। साल का बादशाह और लग्नेश गुरु (बृहस्पति) षष्ठ भाव में सिंहस्थ होकर मंगल एवं शुक्र के साथ संचार कर रहा है। इन पर शनि की दृष्टि भी है। ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान, ईराक, अफगानिस्तान, सीरिया, लीबिया आदि कुछ कट्टरपंथी देशों में अनेक स्थलों पर आई.एस.आई.एस. एवं अलकायदा ग्रुप द्वारा विस्फोटक घटनाओं को अंजाम दिया जाएगा। ये देश स्वयं आतंकवाद एवं शिया-सुन्नी विवाद की आग में झुलसने लगेंगे। इन देशों में हिंसक आतंकवादी गतिविधियों में विशेष वृद्धि होगी। भारतादि पड़ोसी देशों के साथ यद्धमय वातावरण बनेगा। इन देशों में साम्प्रदायिक दंगे, जातीय-फिसाद एवं विस्फोटक घटनाएं अधिक बढ़ेंगी। मंगल-शनि के मध्य परस्पर दृष्टि सम्बन्ध (4-10) होने से इराक, सीरिया, टर्की, पाक, इज़रायल-गाज़ा में भयानक युद्धमय वातावरण बनेगा।

[**गतवर्ष के 'पंचांगदिवाकर'** पृष्ठ 68 पर ईराक में 'युद्ध जैसे हालात का संकेत दे रहे हैं।' स्पष्टतया लिखा गया था। 'आतंकवादी या विरोधी गुटों द्वारा युद्धमय वातावरण बनाया जाएगा।' आदि (प्रभुकृपावश यह भविष्यवाणी अक्षरशः अब प्रमाणित हो रही है।) जैसा कि **ईराक, सीरिया, सूडान के हालात सर्वविदित हैं।**]

जल आदि चार स्तम्भों का फल—संवत् २०७२

(1) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क केवल लगभग 12% है। फलस्वरूप आगामी वर्ष देश में कम वर्षा के योग हैं। कहीं खण्ड वर्षा एवं कहीं समयानुसार उपयोगी व अनुकूल वर्षा की कमी रहेगी। अधिक जलसिञ्चित धान्य (चावल) की फसल को हानि पहुँचेगी। कुछ क्षेत्रों में पेयजल की समस्याएं उत्पन्न होंगी। भूमिगत जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। दुर्भिक्ष, अकाल जन्य परिस्थितियां बनेंगी। परन्तु रोहिणी का वास समुद्र पर होने से कुछ क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा होने से खाद्यान्न उत्पादन यथेष्ट रहेगा।

(2) तृण स्तम्भ—वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क लगभग 30 प्रतिशत है। फलस्वरूप खण्ड एवं प्रतिकूल वर्षा के कारण भी तिनके, बाँस, घास, पुष्पों, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों तथा वन-औषधियों के उत्पादन में कमी रहेगी। पशुचारे का भी अभाव रहे तथा इनके मूल्यों में आशातीत वृद्धि होगी। फलस्वरूप गाय, भैंस आदि चौपाय पशुओं द्वारा दुग्ध उत्पादन में भी कमी रहे। तदनन्तर, आयुर्वैदिक औषधियों, दूध, पनीर, मक्खन, घी आदि डेयरी उत्पाद महंगे होंगे।

(3) वायु स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र के सम्पर्क का अभाव है। फलस्वरूप कुछ प्रदेशों में मेघों के संचालन एवं वायु वेग प्रतिकूल होने से बाढ़, चक्रवात,

तेज़-आँधियों व तूफ़ानों से खड़ी-फसलों, जन-धनादि सम्पदा को हानि पहुँचेगी। कृषि उत्पादन में कमी चिन्ताजनक रहेगी। वातावरण में ऊष्णता एवं आशातीत गर्मी का प्रकोप रहे।

(4) अन्य स्तम्भ–आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क मात्र 32 प्रतिशत है। जल एवं तृण स्तम्भ भी कमज़ोर होने के कारण चिन्ताजनक हालात बनेंगे। अन्न, धान्य आदि के उत्पादन में कमी के कारण इनके मूल्यों में निरन्तर वृद्धि होती जाएगी। वायुस्तम्भ भी नगण्य होने से हाढ़ी-सौणी की फसलों को प्राकृतिक प्रकोपों से हानि होगी। मूल्यों में वृद्धि होने से किसानों व विचौलियों को लाभ तथा साधारण जनता के लिए महँगाई में वृद्धि होगी।

ऊपरलिखित चार स्तम्भ वर्ष में किसी भी देश की आर्थिक सम्पन्नता को समझने एवं जानने के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वर्षा, मौनसून तथा अन्न उत्पादन पर ही निर्भर करती हैं।

आर्षमान द्वारा रक्षा फल–विचार

आर्षमान द्वारा वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले) को समृद्धि एवं सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

(1) प्रथम आर्ष–गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का स्पर्श 47 प्रतिशत है।

(2) द्वितीय आर्ष–वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का सम्पर्क 21 प्रतिशत है।

(3) तृतीय आर्ष–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का अभाव है।

(4) चतुर्थ आर्ष–कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का सम्पर्क 98 प्रतिशत है।

फल–इस वर्ष रक्षा के संकेतक प्रथम दो दुर्ग मध्यम बली, चतुर्थ दुर्ग सुदृढ़ हैं। केवल तृतीय दुर्ग का अभाव है। केन्द्र सरकार की ओर से देश को आर्थिक, राजनैतिक एवं सैन्य दृष्टि से सशक्त बनाने के लिए विशेष नीतियां बनाई एवं क्रियान्वित की जाएगी। विज्ञान, अन्तरिक्ष एवं रक्षा क्षेत्र में नवीन अनुसन्धान करके देश के सुरक्षा-क्षेत्र को सुदृढ़ किया जाएगा। परन्तु एक दुर्ग नगण्य होने से चीनी व बांग्लादेशी घुसपैठ से देश की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा को गम्भीर संकट उत्पन्न होने का भय है। यद्यपि पड़ौसी देशों के साथ नवीन समझौते किए जाएँगे, परन्तु ये प्रयास निरर्थक साबित होंगे। देश के सुरक्षा प्रबन्धों को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता होगी।

–वर्षादि के विश्वामान–

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होंगी। श्रावण संक्रां. अनुसार संवत् के विश्वामान भी अलग-अलग हो जाते हैं। जैसे-आगे वि. संवत् २०७२ में धान्य के विश्वा १५ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का पर्याप्त उत्पादन होगा।

वर्षा ७, धान्य १५, तृण ७, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १५, तृषा ३, निद्रा ५, आलस्य ७, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १५, पाप १५, पुण्य ३, व्याधि १, व्याधिनाश १५, आचार १५, अनाचार ३, मृत्यु १७, जन्म ९, देशउपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चोरभय ९, चोरनाश १, अग्नि १५, अग्निशान्त १, उद्भिज ११, जरायुज ३, अंडज ९, स्वेदज १५, टिड्डी १३, तोता ९, मूषक १७, सोना १७, तांबा १९, स्वचक्र ३, परचक्र ५, वृष्टि ७, अनावृष्टि १५, संवत्विश्वा १८॥

▲ सिंहस्थ गुरु का फल–सं. 2015 ई. ▲

सन् 2015 ई. के आरम्भ से ही गुरु कर्क राशि में वक्री होकर संचरणशील है। (8) अप्रै. को मार्गी होकर 14 जुलाई, 2015 ई. को गुरु सिंह राशि में प्रविष्ट होगा। कर्क व सिंह-दोनों राशियों में संचार का फल शास्त्रों में इस प्रकार से लिखा गया है।

कर्क राशि में गुरु का संचारफल

(वर्षारम्भ से 14 जुलाई तक)

बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पमेघः प्रवर्षति।
राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते॥ (अर्घप्रकाश)

अर्थात् बृहस्पति जब कर्क राशि में हो, तो उस वर्ष अनुकूल वर्षा की कमी होगी। कहीं दुर्भिक्ष, अर्थात् खाद्यान्न के उत्पादन में कमी हो। राजाओं अथवा राष्ट्राध्यक्षों में परस्पर टकराव एवं युद्ध का माहौल बनेगा। गेहूँ, धान्य, घी, चावल महँगे होंगे।

"उपरोक्त गतवर्षीय भविष्यवाणी के अनुसार ही इसका प्रभाव जून, जुलाई 2014 में देखने को मिला। उत्तर-पश्चिमी राज्यों में लगभग 50 प्रतिशत कम बारिश हुई, फिलीस्तीन-इज़रायल युद्ध, ईराक में शिया-सुन्नी युद्ध एवं खाद्य-वस्तुओं में महँगाई दर अधिक दर्ज हुई है।"

सिंहस्थ गुरु का प्रवेश एवं फल–संवत् २०७२

(14 जुलाई से संवतान्त तक)

यदासिंहेगुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते।
मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्याचमेदिनी॥

अर्थात् बृहस्पति देव जब सिंह राशि में आते हैं, तो उस वर्ष सुभिक्ष हो अर्थात् गेहूँ, धान्य, चना आदि अनाज का उत्पादन अधिक होगा एवं अनुकूल एवं वेग के साथ वर्षा होगी। विभिन्न प्रकार की फसलें, मिश्रित करके कई नए फल, फूल, तृण आदि की पैदावार होगी। गायें, चौपाये आदि दूध अधिक देंगे। भैंस, गाय आदि चौपायों में भी तेजी होगी। देवताओं, विद्वानों, महापुरुषों एवं ब्राह्मणों का आदर-सम्मान किया जाएगा। आषाढ़ और भाद्रपद मास में अच्छी वर्षा होगी। श्रावण में कम वर्षा तथा कार्तिक में सुकाल अर्थात् शुभ वातावरण एवं समय होगा।

सुभिक्षं सर्पदंशश्च मेघोप्याषाढ़भाद्रयोः। श्रावणे वृष्टिरल्पैवसुकालः कार्तिकेमतः॥

☆ वि. संवत् 2072 में लाभ-हानि चक्र ☆

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम परन्तु विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, घरेलू एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। जमीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
हानि	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

यमघण्टक योग ➡

क्रकय योग, संवर्त, दग्ध, कुलिक, उत्पात, यमघण्टक आदि योग मंगल कार्यों का सम्पादन करने के लिए त्याज्य माने गए हैं। वसिष्ट जी के अनुसार-**"शुभकार्य प्रसूतौ च सर्वदा परिवर्जयेत्।"** शुभ यात्रा एवं छोटे बच्चों के शुभ कार्यों के सम्पादन में तथा छोटे शिशुओं की पैदायश काल में भी इस योग का विचार किया जाता है। ऋषि वसिष्ठ अनुसार दिवसकाल में यमघंटक आदि दुष्ट योग हो तो मृत्युतुल्य कष्ट देता है, परन्तु रात्रिकाल में इसका फल अशुभ नहीं माना जाता है।

दिवा मृत्युप्रदाः पापा दोषस्त्वेतेन न रात्रिषु।

ध्यान रहे, किसी कुयोग के समय अन्य सिद्धि आदि सुयोग भी वर्तमान हो जाए, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है-

अयोगः सिद्धि योगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धि योगः प्रवर्त्तते॥ (राजमार्तण्ड)

ज्वालामुखी योग-(वि. संवत् २०७२)

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस प्रकार 5 नक्षत्रों एवं 5 तिथियों के संयोग से ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग के अशुभ फल को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित लोकोक्ति प्रचलित है-

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गाँव,
नारी पहने चूड़ियां, पुरुष विहीनी होय।
बोवे तो काटे नहीं, कुएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ति अतिशयोक्तपूर्ण हो सकती है, परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्बन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो तो उसे अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कूआँ खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीर्ष सूख जाए-यदि कोई रोगग्रस्त हो तो जल्दी ठीक न हो-इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

ज्वालामुखी योग (संवत् २०७२)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
3 जून	19	50	3 जून	21	02
3 सितं.	02	49	3 सितं.	07	36
7 अक्तू.	10	58	7 अक्तू.	17	10
11 दिसं.	25	21	12 दिसं.	16	04
15 फर16	04	11	15 फर16	24	27
16 फर.	03	09	16 फर.	23	05
12 मार्च	18	03	13 मार्च	11	07

यमघण्टक योग (सन् 2015 ई.)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
1 जन.	सू.	उ.	2 जन.	06	08
2 जन.	सू.	उ.	3 जन.	06	54
29 जन.	सू.	उ.	29 जन.	11	38
30 जन.	सू.	उ.	30 जन.	12	38
7 मार्च	14	37	8 मार्च	सू.	उ.
4 अप्रै.	सू.	उ.	4 अप्रै.	23	35
7 अप्रै.	04	05	7 अप्रै.	सू.	उ.
2 मई	सू.	उ.	2 मई	6	27
4 मई	10	32	5 मई	सू.	उ.
24 मई	26	28	25 मई	सू.	उ.
1 जून	सू.	उ.	1 जून	19	20
3 जून	19	50	4 जून	सू.	उ.
21 जून	10	41	22 जून	सू.	उ.
1 जुला.	सू.	उ.	1 जुला.	27	30
14 जुला.	13	06	15 जुला.	सू.	उ.
19 जुला.	सू.	उ.	19 जुला.	21	06
29 जुला.	सू.	उ.	29 जुला.	13	08
11 अग.	सू.	उ.	11 अग.	19	59
3 सितं.	25	19	4 सितं.	सू.	उ.
4 सितं.	24	26	5 सितं.	सू.	उ.
1 अक्तू.	10	08	2 सितं.	सू.	उ.
2 अक्तू.	8	27	3 अक्तू.	सू.	उ.
29 अक्तू.	सू.	उ.	29 अक्तू.	18	37
30 अक्तू.	सू.	उ.	30 अक्तू.	16	57
8 नवं.	05	03	8 नवं.	सू.	उ.
5 दिसं.	12	22	6 दिसं.	सू.	उ.
सन् 2016 ई.					
2 जन.	सू.	उ.	2 जन.	23	35

क्या गत 'प्लवंग' नामक संवत्सर (वि. संवत् २०७१) लुप्त सम्वत्सर था ?—एक सारगर्भित विश्लेषण

लगभग सभी पंचांगों में सर्वप्रथम प्रारम्भ में ही यह लिखा रहता है कि प्रस्तुत नवसंवत् का नाम 60 संवत्सरों में 'यह' है। 'अमुक संवत्' में कौन-सा संवत्सर है, इसे जानने के लिए तीन मत हैं। (1) नारद मुनि अनुसार प्रभवादि 60 संवत्सरों का ग्रहण सौर मास से करना चाहिए। (2) वेदाङ्ग ज्यो. अनुसार माघ शुक्ल (अर्थात् चान्द्र मास से) प्रभवादि की प्रवृत्ति करनी चाहिए। (3) परन्तु सभी प्रामाणिक संहिता ग्रन्थों के अनुसार संवत्सर का ज्ञान प्रभवादि गुरु (वृहस्पति) मान से ही करना चाहिए।

यथा—बार्हस्पत्येन षष्टयब्दं ज्ञेयं नान्यैस्तु नित्यशः (सूर्यसिद्धान्त)

लघुवसिष्ठसिद्धान्त, भास्कराचार्य, वसिष्ठ ऋषि, गर्गाचार्य, श्रीपति, वराह आदि ऋषियों ने तृतीय मत को स्वीकार किया है।

तदनुसार हमने गत वि. संवत् में गुरु मान से शिव विंशती (देवता-रुद्र) **'प्लवंग'** नामक संवत्सर लिखा था। यह शिव विंशती का प्रथम संवत्सर था। परन्तु उत्तरी भारत से प्रकाशित कुछ 2-3 पंचांगों में **'प्लवंग'** के स्थान पर **'आगामी कीलक'** संवत्सर का उल्लेख किया गया था, जिस कारण जनसामान्य एवं ब्राह्मण समाज में भ्रान्ति फैल गयी। हमें ब्राह्मण व विद्वत् जनों के असंख्य फोन एवं कुछ पत्र भी प्राप्त हुए हैं। जिसका सामार्थ्यनुसार समाधान एवं स्पष्टीकरण दिया गया था। स्वाभाविक भी है, क्योंकि पूजन, संकल्प आदि सभी कार्यों में इसका उल्लेख भी आवश्यक है तथा अशुद्ध एवं गल्त नाम उच्चारण से स्वयं ब्राह्मण एवं यजमान को प्राप्त होने वाला यथेष्ठ फल भी प्रश्नात्मक रहेगा। इसलिए पाठकों के संशय का शास्त्रविहित स्पष्टीकरण आवश्यक है।

प्रभवादि सम्वत्सर—जैसा कि पहले बताया है कि विक्रमी संवत् का नाम बाहर्स्पत्यमान अनुसार करना चाहिए। बृहस्पति मध्य गति से जितने समय में एक राशि का संचरण करता है, उसे बाहर्स्पत्य वर्ष कहते हैं। इसको सम्वत्सर भी कहते हैं, सम्वत्सरों की कुल संख्या साठ (60) है, जिसकी पुनरावृत्ति होती रहती है। विवाह, यज्ञ, अनुष्ठानादि शुभ कार्यों के आरम्भ में सम्वत्सर का उच्चारण अवश्य किया जाता है। सम्वत्सरों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

1. प्रभव	9. युव	17. सुभानु	25. खर	33. विकारी
2. विभव	10. धाता	18. तारण	26. नंदन	34. शार्वरी
3. शुक्ल	11. ईश्वर	19. पार्थिव	27. विजय	35. प्लव
4. प्रमोद	12. बहुधान्य	20. व्यय	28. जय	36. शुभकृत
5. प्रजापति	13. प्रमाथी	21. सर्वजित्	29. मन्मथ	37. शोभन
6. अंगिरा	14. विक्रम	22. सर्वधारी	30. दुर्मुख	38. क्रोधन
7. श्रीमुख	15. वृष	23. विरोधी	31. हेमलम्बी	39. विश्वावसु
8. भाव	16. चित्रभानु	24. विकृति	32. विलम्बी	40. पराभव
41. प्लवंग	45. विरोधकृत	49. राक्षस	53. सिद्धार्थ	57. रुधिरोद्गारी
42. कीलक	46. परिधावी	50. नल	54. रौद्र	58. रक्ताक्षी
43. सौम्य	47. प्रमादी	51. पिंगल	55. दुर्मति	59. क्रोधन
44. साधारण	48. आनन्द	52. कालयुक्त	56. दुंदुभि	60. क्षय

सम्वत्सर निकालने की विधि

जिस विक्रमी सम्वत् में सम्वत्सर जानना हो, उसमें 9 जोड़कर प्राप्त संख्या को 60 द्वारा भाग देने पर, जो शेष बचे, उसमें 1 जोड़ देने पर प्रभवादि सम्वत्सर होगा। **यथा**—यदि वि. संवत् 2071 में सम्वत्सर जानना हो, तो सम्वत् 2071 में 9 जमा कर देने पर 2080 वर्ष बने। इनको 60 द्वारा भाग देने पर 34 लब्धि तथा शेष 40 बचे, इस संख्या में 1 जमा कर देने से संख्या 41 बनी। उपरोक्त तालिका अनुसार वि. संवत् 2071 में 41वाँ अर्थात् **'प्लवंग'** नामक संवत्सर था। सम्वत्सर के नामानुसार ही उसके शुभाशुभ का संकेत मिल जाता है। प्रत्येक वर्ष की **'पंचांगदिवाकर'** में नवसम्वत्सर के देश, परिवेश एवं जातक के शुभाशुभ फल सम्बन्धी भविष्य कथन का वर्णन रहता है।

सम्वत्सर-स्वामी—साठ (60) सम्वत्सरों को द्वादश (12) भागों में विभाजित कर देने से प्रत्येक भाग में पाँच सम्वत्सर होते हैं। इस सम्वत्सर की पंच-कालावधि 'युग' कहलाती है। पाँच-पाँच सम्वत्सरों से निर्मित क्रमानुसार युगसमूह के अधिपति (स्वामी) इस प्रकार हैं। **उदाहरणार्थ**—प्रभव से प्रजापति सम्वत्सर का समूह प्रथम युग कहलाता है। इसका स्वामी विष्णु है।

पँच सम्वत्सर (युग) स्वामी

युग क्रम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्वामी	विष्णु	बृहस्पति	इन्द्र	अग्नि	विश्वकर्मा	अहिर्बुध्न्य	पितर	विश्वेदेवा	चन्द्र	इन्द्राग्नि	अश्विनी	भग

पँच सम्वत्सर (युग) स्वामी

20 सम्वत्सर का एक स्वामी होता है, 1 से 20 तक ब्रह्मा, 21 से 40 तक विष्णु, 41 से 60 तक रुद्र स्वामी होता है।

लुप्त संवत्सर कब होता है ?

जैसा कि पहले बताया गया है कि सम्वत्सर का आधार गुरुमान है। अतएव गुरु की गति अनुसार ही संवत्सर का निर्धारण होता है। गुरु सामान्यत: 1 राशि में 13 मास तक संचरण करता है। गत्यानुसार यह अवधि 1 मास (30 दिन) तक आगे-पीछे हो सकती है। किन्तु **अतिचारी होने पर 10-11 मास के भीतर ही उस राशि को भुक्त करके दूसरी राशि में पहुँच कर पुन: वक्री होकर उस राशि में लौटकर जब न आए, तो वह वर्ष लुप्त सम्वत्सर के नाम से पुकारा जाता है।** यहाँ यह विचारणीय है कि गुरु की एक राशि में व्याप्ति (संचरणकाल) कितने मास होनी चाहिए। हमारे ऋषियों एवं मुहूर्त ग्रन्थों में इस बारे स्पष्ट निर्देश दिए हैं–

ऋषि पराशर अनुसार दस (10) मास व कुछ दिन से पहले ही जब गुरु किसी राशि का भोग करके अतिचारवश दूसरी राशि में जाकर नहीं लौटता तो लुप्त संवत्सर होता है।

दशमासानन्तरमहानि कतिचिद्गुरुर्यदा भुङ्क्ते।
यद्यनायात्पूर्वर्क्षे तदा लुप्तसंवत्सरः प्रोक्तः।।

'मनु ऋषि' अनुसार जब गुरु 10 मास व कुछ दिन एक राशि का भोग करके दूसरी राशि में जाता है, तो लुप्त संवत् नहीं होता है।

अतिचारगतो जीवो दशमासात्परं यदि।
दिनानि कतिचिद्भुङ्क्ते न तदा लुप्तवत्सरः।। (मनु)

'मुहूर्त्ततत्त्व' ग्रन्थकार अनुसार भी जब गुरु एक वर्ष में तीन राशियों का स्पर्श करता है, तो लुप्त संवत् होता है। इसका समस्त शुभ कामों में त्याग करना चाहिए।

'यशोधरतन्त्र' अनुसार भी जब एक सौर वर्ष में दो गुरु वर्षों का अन्त होता है। इसलिए तीन राशि का स्पर्श होने से ही लुप्त संवत्सर होता है। यथा–

एकस्मिन् रविवर्षे गौरववर्षद्वयावसानं चेत्।
त्र्यब्दस्पृशमेनमेव विलुप्तसंवत्सरं प्राहुः।।

उपरोक्त शास्त्रीय विवेचना से यह स्पष्ट है कि गुरु का एक राशि में भोग्यकाल स्थूलमान से कम-से-कम 10 मास 20 दिन तो होना चाहिए। *वि. संवत् २०७० (सन् 2013-14 ई.) में गुरु ने अतिचार गति से 31 मई, 2013 ई. को मिथुन राशि में प्रवेश किया था। पुन: वि. संवत् २०७१ में 12 मास तथा 18 दिन के पश्चात् अतिचार गति से कर्क राशि में प्रवेश किया था। स्पष्ट है कि गुरु ने मिथुन राशि में अपना यथेष्ठ संचरणकाल पूरा कर लिया था। अतएव वि. संवत् २०७१ (प्लवंग नाम) लुप्त वर्ष नहीं था।* ब्राह्मण समाज एवं विद्वतजन किसी भी भ्रम में न रहें। ज्योतिषशास्त्रीय किसी विषय पर भ्रान्ति होने पर सामान्यजन एवं विद्वत्जन स्तरीय पंचांगों को ही प्रमाण मानें। ऐसे विषयों पर आप हमसे Telephone या पत्र द्वारा समाधान मांग सकते हैं। समय एवं सामार्थ्यानुसार हम आपकी समस्या का यथाशक्य निश्चित समाधान करेंगे।

शुभ चिन्तक–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, जालन्धर।

"आगामी वर्ष के दो महान् पुण्यपर्व"

आगामी वर्ष वि. संवत् 2073 में निम्नलिखित कुम्भ महापर्व घटित हो रहे हैं–

(1) अर्धकुम्भी पर्व, हरिद्वार (13 अप्रैल, बुधवार, 2016 ई.)
(2) कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व उज्जैन (21 मई, शनिवार, 2016 ई.)

एतदर्थ श्रद्धालु, ईश्वरविश्वासी, आस्तिक महानुभावों एवं कल्याणकामी सत्पुरुषों को कटिबद्ध रहना चाहिए। इनकी सभी स्नानतिथियों, माहात्म्य का विस्तृत विवरण तथा अन्य आवश्यक जानकारी वि. संवत् २०७३ के **'पंचांगदिवाकर'** में दी जाएगी।

नोट–अर्धकुम्भी (हरिद्वार) का स्नान, माहात्म्य 20 मार्च, 2016 ई. से ही प्रारम्भ हो जाएगा।

पं. विवेक शर्मा (पंचाँगकर्त्ता) द्वारा थापर इंस्टीच्यूट ऑफ एस्ट्रोलॉजी का उद्घाटन

दिनांक 24-11-2013 ई. को पं. विवेक शर्मा (सम्पादक: पंचांगदिवाकर) द्वारा श्रीकृष्ण गोपाल थापर (निवास: 3304, सेक्टर-49-D, चण्डीगढ़) द्वारा नवीन स्थापित थापर इंस्टीच्यूट ऑफ एस्ट्रोलॉजी का उद्घाटन किया गया। चण्डीगढ़-ज़ीरकपुर रोड पर स्थित इस इंस्टीच्यूट के उद्घाटन के अवसर पर पं. विवेक शर्मा द्वारा मुख्यातिथि के रूप में दीप-प्रज्वलन तथा ज्योतिषीय विषयों पर सम्भाषण दिया गया। पंडित जी को भव्य दुशाला, पुष्पमाल्यालंकरण के साथ सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर इंस्टीच्यूट के संस्थापक श्री के.जी. थापर, गुरु जी पं. ओमप्रकाश जी भारद्वाज (राजपुरा), पं. सोहित शर्मा, जालन्धर एवं गणमान्य विद्वत जन तथा विद्यार्थी उपस्थित थे।

वि. संवत् २०७२ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल व मुख्य भविष्यवाणियाँ

☛ नया *'कीलक'* नामक सम्वत् होने से फसलों को अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल (सूखा), टिड्डी दलों (कृमियों) से क्षति तथा लोगों में क्लिष्ट (पेचीदा) रोगों की वृद्धि होगी। विश्व के विभिन्न प्रशासकों (प्रधाननेता) एवं लोगों में टकराव बढ़ेगा।

☛ *राजा शनि* और *मन्त्री मंगल* होने से विश्व एवं भारत का सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध, अनिश्चित, तनावपूर्ण एवं अशान्त रहेगा। विश्व के अनेक देशों में टकराव, उपद्रव, विद्रोह एवं प्रतिद्वन्दिता की भावना बढ़ेगी। विभिन्न देशों में प्रभुसत्ता, टकराव, हिंसा एवं होड़ की प्रवृत्ति बढ़ेगी।

☛ दोनों मुख्य पद क्रूर ग्रहों को प्राप्त होने से चोरी, ठगी, भ्रष्टाचार, बेईमानी, जातीयता, दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि से जनाक्रोश बढ़ेगा। ये मुद्दे साधारण जनता को आन्दोलित एवं उद्वेलित करते रहेंगे।

☛ जगत् लग्न कुण्डली में ग्रहस्थिति अनुसार पश्चिमी एशियाई देशों जैसे—ईराक, मिस्त्र, सीरिया, नाईजीरिया, सूडान, फिलीस्तीन, इज़रायल आदि के आन्तरिक, सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियां विक्षुब्ध एवं अशान्तिपूर्ण होंगी। मोदी सरकार द्वारा पड़ोसी एवं अन्य अन्तर्राष्ट्रीय देशों—रूस, जापान, जर्मनी, अमरीका, ब्रिटेन आदि के साथ सम्बन्धों को विशेष बढ़ावा दिया जाएगा।

☛ मुस्लिम बाहुल्य पश्चिमी एशिया के देश एवं यहूदी देश धार्मिक विध्वंसता की आग में सुलगने लगेंगे। यहाँ तक की यूरोप, रूस, अमरीका आदि देश भी इस आग से त्रस्त हो जाएंगे। युद्धमय वातावरण के मध्य बड़े पैमाने पर साधारण जनता पलायन (विस्थापन) करेगी।

☛ *खप्पर योग*—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ (6 मार्च से 2 जून तक) मासों में क्रमशः पाँच शनि, पाँच रवि और पाँच मंगलवार होने से खप्पर योग बना है। फलस्वरूप विश्व एवं भारत के किसी राज्य में छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) या किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या मृत्यु के योग हैं। प्रतिकूल जलवायु एवं खण्ड वर्षा से अकालजन्य हालात रहेंगे। पेट्रोल, डीज़ल के मूल्यों में आशातीत वृद्धि होती रहेगी।

☛ जुला.-अग. में सिंहस्थ गुरु अतिचारी होने, गुरु-शुक्र योग एवं 1 अग. तक शनि वक्री रहने से इस्लामी देशों में कहीं युद्धमय वातावरण, हवाई अड्डों आदि पर आक्रमण, विस्फोट होंगे। सोने, कॉपर आदि धातुओं में असाधारण तेजी होगी।

☛ स्वतन्त्र कुं. में ग्रहस्थिति अनुसार नव सत्तारूढ़ मोदी सरकार विपरीत परिस्थितियों में भी अर्थव्यवस्था को सम्भालते हुए देश को विकास एवं प्रगति की दिशा में ले जाएगी। व्यवस्था में अनेक मौलिक एवं बुनियादी परिवर्तन कर गुणात्मक सुधार लाया जाएगा। संसद् में नए बिल प्रस्तावित किए जाएंगे।

☛ *पुनः खप्पर योग*—श्रावण से आश्विन मास पर्यन्त (1 अग. से 27 अक्तू., 2015 ई.) पुनः खप्पर योग बनने से देश में महँगाई, भ्रष्टाचार तथा सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ साधारण जनता तक न पहुँच पाने से जनता में आवेश एवं असन्तोष की भावना रहेगा।

☛ भारत में इसी वर्ष (अक्तू.-नवं., 2014 ई.) कुछ राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा स्पष्ट रूप से गठबन्धन करके विजयी होगी। हरियाणा में चुनावों बाद गठबन्धन करना पड़ेगा। जबकि जम्मू-काश्मीर में पी.डी.पी. की स्थिति सुदृढ़ होगी। भाजपा के प्रभावक्षेत्र में वृद्धि होगी।

☛ प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी की तथा भारत की मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्व में अन्तर्राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय तौर पर वृद्धि होगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में एक धूमकेतु की तरह उभरेंगे।

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष-ये वेद के छः अंग माने जाते हैं। भारतीय ज्योतिष को वैदिक साहित्य का अभिन्न अंग माना गया है। वेदांग ज्योतिष के प्रारम्भ में इस शास्त्र के महत्त्व को बतलाते हुए कहा गया है-

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्।।

ज्योतिष को ज्ञानरूपी शरीर का नेत्र कहा गया है, अर्थात् नेत्रों के अभाव में जैसे शरीर अपूर्ण और व्यर्थ है, उसी प्रकार ज्योतिष ज्ञान के बिना अन्य विषयों का ज्ञान अपूर्ण और अनुपयोगी है। वैदिक काल में ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान को व्यवहार-उपयोगी होने के साथ-साथ आत्मकल्याणकारी भी माना जाता रहा है। महर्षि पाणिनी ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है-**'ज्योतिषामयनं चक्षुः'**। आचार्य गर्गाचार्य के अनुसार-

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिज्ञानं तु वेद स याति परमां गतिम्।।

अर्थात् ज्योतिष्चक्र सम्पूर्ण लोक के शुभाशुभ को व्यक्त करने वाला है, अतः जो ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता है, वह परम कल्याण को प्राप्त होता है। नारद् संहिता, गर्ग संहिता आदि ग्रन्थों में ज्योतिष शास्त्र का विशद् वर्णन मिलता है।

ईसा पूर्व लगभग 180 वर्ष पूर्व में रचित व उपलब्ध सूर्य-सिद्धान्त ग्रन्थ सैद्धान्तिक ग्रन्थों में अधिक प्राचीन है, जिसमें ग्रहस्पष्ट विधि, विभिन्न ग्रहों की गति, कालगणना आदि का स्पष्ट वर्णन मिलता है। प्राचीन भारत में धर्मपरायण समाज के सभी वर्गों-श्रौत, स्मार्त और गृहस्थों के कार्य इस शास्त्र के बिना सफल नहीं माने जाते थे-

'वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिः शास्त्रमकल्पषम्।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्माणि न सिद्ध्यन्ति।।

भारतीय ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन आत्म-कल्याण के साथ लोक-व्यवहार का सम्पन्न करना है। लोक-व्यवहार के निर्वाह के लिए ज्योतिष के क्रियात्मक दो सिद्धान्त हैं-गणित और फलित। फलित ज्योतिष में जातक की जन्म-कुण्डली मनुष्य के पूर्वजन्मों के संचित एवं प्रारब्ध कर्मों की प्रतिमूर्त्ति है। अनेक जन्मों के पाप-पुण्य, शुभाशुभ कर्मों का फल कब प्रकट होगा ? और भविष्य में जातक को कैसी परिस्थितियों की सम्भावना है ? ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष शास्त्र अन्धेरे में दीप की भान्ति देता है-

'यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मणः पक्तिम्।
व्यंजति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव।।

परमपिता श्रीपरमात्मा की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **'पंचांगदिवाकर'**, **'मुफीद आलम जन्त्री'** (उर्दू-हिन्दी-पंजाबी) एवं तिथ-पत्रिका (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०७२ (2015-16 ई.) में गौरवशाली 140 वर्ष हो जाएंगे। पंचांगदिवाकर समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे परम पूज्य प्रपितामह (पितृ-पुरुष) विश्वविख्यात मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी (लाहौर वाले) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हो चुकी है, वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी हुई नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष जगत् के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुविज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि वह असली व प्रामाणिक पंचांगदिवाकर, तिथ-पत्रिका गुरुमुखी, मुफीद आलम जन्त्री तथा हमारी प्रकाशित **'अर्द्धशताब्दि पंचांग'** एवं **'दशवर्षीय पंचांगों'** के भीतर प्रथम पृष्ठ पर **स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी** का नाम व फोटो, गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल.एल.बी.) एवं पं. पंकज शर्मा तथा मुख्य वितरक **'जनरल बुक डिपो'** जालन्धर का नाम अवश्य पढ़ लिया करें, जिससे कि आप असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक जन्त्री/पंचाँग ही प्राप्त कर सकें।

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों में 'स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी' की भविष्यवाणियाँ जो अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं

स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की वाणी एवं लेखनी में सचमुच साक्षात् माता सरस्वती देवी का वास था। आगे हम संक्षिप्त रूप में पंडित पन्ना लाल ज्योतिषी जी की उन भविष्यवाणियों का उल्लेख कर रहे हैं जो ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं।

(1) **बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन (वि. संवत् २०२७)**

(2) **कांग्रेस (ई) की पराजय** (२०३३) तथा **पुनः सत्ता में आना (२०३६) ईरान-ईराक युद्ध (वि. संवत् २०३९)**

(3) **पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (वि. संवत् २०४१)**

(4) **पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (वि. संवत् २०४७)**

(5) **सन् 1988 में मोर्चा सरकार** (गुजराल सरकार) के पतन तथा मध्यावधि चुनाव की भविष्यवाणी स्पष्टतः पण्डित जी ने कर दी थी-वि. संवत् २०५५ के पृष्ठ 48 पर स्पष्टतः लिखा गया था-***'वर्तमान सत्तारूढ़ मोर्चा सरकार येनकेन प्रकारेन फरवरी, 1998 तक चल पाएगी, परन्तु मार्च, 1998 के उपरान्त केन्द्रीय मोर्चा सरकार का पूर्वार्द्ध भाग से पूर्व कभी भी टूटने की आशंका बनी रहेगी-ऐसे योग हैं।'*** साथ ही चुनावों से पूर्व ही 'दैनिक पंजाब केसरी' समाचार पत्र में दिनांक 19-02-1998 को ही भाजपा के पुनः सत्तारूढ़ होने की भविष्यवाणी की गई थी तथा इसी संवत् के 'पंचांगदिवाकर' के पृष्ठ 191 पर स्पष्ट पढ़ें-आगामी लोकसभा के निर्वाचनों में भाजपा निःसन्देह अग्रिम, बहुमत एवं सशक्त पार्टी के रूप में उभरेगी तथा केन्द्र में सत्तारूढ़ होगी।

(6) वि. संवत् २०५६ के 'पंचांगदिवाकर' के पृष्ठों 48/49/50 पृष्टों पर *''भाजपा सरकार के आकस्मिक गिर जाने के सम्बन्ध में भविष्यवाणी स्पष्ट तौर पर पढ़ें।'' पृष्ठ 47 पर कारगिल (जम्मू-कश्मीर) में पाक सैनिक घुसपैठ एवं युद्ध के बारे में भी स्पष्ट भविष्यवाणी कर दी थी।*

(7) वि. संवत् २०५७ के *'पंचांग' में पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलटना तथा मार्शल-लॉ का लगना, शासन परिवर्तन, हिंसक घटनाओं सम्बन्धित भविष्यवाणियाँ* पृष्ठ 50-51 पर स्पष्टतः लिखी थीं। पुनः इस वर्ष के पंचांग के पृष्ठ 52 पर *भाजपा सरकार का गिरकर केन्द्र में भाजपा गठबन्धन सरकार का पुनः सत्ता ग्रहण करने की भविष्यवाणी भी पढ़ सकते हैं।*

(8) वि. संवत् २०५८ के 'पंचांगदिवाकर' में पृष्ठ 56 पर **''अमरीका में 9/11** सम्बन्धित दुःखद त्रासदी के बारे में सांकेतिक भविष्यवाणी लिख दी गई थी।

(9) वि. संवत् २०५९ के 'पंचांग' के पृष्ठ 60 पर **''पंजाब विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी की विजय सम्बन्धित भविष्यवाणी''** भी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई।

(10) वि. संवत् २०६० में 'अमरीका-ईराक युद्ध' तथा ईराक में सत्ता-परिवर्तन के योग बारे भविष्यवाणी स्पष्टतः पृष्ठ 63 पर लिखी गई थी।

(11) वि. संवत् २०६१ (सं. 2004-05) की पंचांग में स्पष्टतः पढ़ें-आगामी लोकसभा **चुनावों में श्रीमती सोनिया गाँधी (कांग्रेस) की विजय तथा कांग्रेस पार्टी भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेगी।** (पृष्ठ 67)

(12) वि. संवत् २०६२ (2005-06) में **'पाकिस्तान और भारत के मध्य दोस्ती और शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ना'** (पृष्ठ 56)

(13) वि. संवत् २०६३ (2006-07) की पंचांग में **पंजाब, बिहार में नेतृत्व परिवर्तन के योग (पृष्ठ 55)-जैसा कि बादल सरकार एवं नितीश कुमार का सत्तासीन होना तथा पृष्ठ 59 पर मुम्बई में 11 जुलाई को बम-विस्फोट सम्बन्धित भविष्यवाणियां पं. जी की लेखन-आधिपत्य शैली तथा विद्वता की स्पष्ट प्रमाण थीं।**

(14) वि. संवत् २०६४ (2007-08) में पृष्ठ 56 पर मुख्य बॉक्स पर स्पष्टतः पढ़ें- **''उ. प्र., उत्तराखण्ड, पंजाब प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग होंगे।''** परिणाम आपके सामने थे।

(15) वि. संवत् २०६५ (2008-09) में पृष्ठ 59 पर स्पष्टतः पढ़ें- **''गुजरात में अनेक अवरोधों के बावजूद भाजपा एवं मोदी सरकार विजयी होगी।''**

(16) वि. संवत् २०६६ (2009-10 ई.) के पृष्ठ 71 पर अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को सफलता प्राप्ति होना, पृष्ठ 75 पर 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत- **'चुनावों में उमर-अब्दुल्ला की नैशनल-कांफ्रेंस गठबन्धन का प्रभावक्षेत्र बढ़ना तथा राजस्थान में भाजपा को चुनावों में हार का सामना।** कांग्रेस को विधानसभा में सफलता प्राप्त होना। इत्यादि।।

(17) संवत् २०६७ (2010-11) के पृष्ठ 67 पर **चीन, पाक की ओर से घुसपैठ** तथा पृष्ठ 75 पर **हरियाणा में कांग्रेस प्रत्याशी श्री भूपेन्द्र हुड्डा का पुनः जीत प्राप्त करने सम्बन्धी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।**

(18) वि. संवत् २०६८ (2011-12 ई.) में प्रधानमन्त्री की निर्णयात्मक पग उठाने में अक्षमता, अमरीका सहित कुछ देशों में आर्थिक मन्दी तथा लीबिया, मिस्र, सूडान, सीरिया, चिली आदि देशों में आन्तरिक क्रान्ति तथा सत्ता-परिवर्तन सम्बन्धी भविष्यवाणियाँ पं. जी की गहन व सूक्ष्म तत्त्वदर्शी विद्वता की परिचायक हैं।

(19) वि. संवत् २०६९ (2012-13 ई.) में भी पृष्ठ 66 पर उन्होंने स्पष्ट उद्घोषित कर लिखा था कि **'मुस्लिम बाहुल्य एवं कट्टर इस्लामी देशों में आन्तिरक गृह-युद्ध, सत्ता-परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं हैं।** पृष्ठ 68 पर भी उन्होंने लिखा था कि-'अनेकों घोटालों एवं महँगाई सम्बन्धी आरोपों के कारण भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली की गरिमा को गहरा धक्का पहुँचेगा।

इसी वर्ष पृ. 70 पर पंजाब में अकाली-भाजपा गठबन्धन के पुनर्विजयी सम्बन्धी भविष्यवाणी भी अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई।

(20) वि. संवत् २०७० (2013-14 ई.) में **पृष्ठ 66 पर अरब व खाड़ी देशों में क्रान्तिकारी परिवर्तन होने सम्बन्धी, प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह एवं यू.पी.ए. सरकार की विश्वसनीयता में ज़बरदस्त कमी आएगी। आगामी विधानसभा चुनावों में यू.पी.ए. कांग्रेस सरकार को भारी क्षति होने के योग हैं एवं च, उत्तराखण्ड में महावृष्टि के संकेत** पृष्ठ 73 कालम-II में स्पष्टतः लिखे थे। अन्य च, पृष्ठ 69, कालम-II पर स्पष्ट पढ़ें- **अरब एवं खाड़ी देशों जैसे-सीरिया, लीबिया, मिस्र, यूगाण्डा, सूडान आदि देशों में क्रान्तिकारी ग्रुप निरकुंश तानाशाही नेताओं के विरुद्ध बगावत पर उतर आएंगे। घटनाक्रम दुनिया के सामने है।**

(21) (*i*) गतवर्ष वि. संवत् २०७१ के **'पंचांगदिवाकर' में 'श्रीनरेन्द्र मोदी' के प्रधानमन्त्री बनने के योग के सम्बन्ध में स्पष्टतः भविष्यवाणी लिखी गई थी**-पढ़े पृष्ठ 76, कालम II (अन्तिम लाईन)-***''यद्यपि नरेन्द्र मोदी के ही प्रधानमन्त्री पद के प्रबल योग बन रहे हैं।''*** अन्यत्र भी (पृष्ठ 81) स्पष्ट रूप से लिखा गया था-***''कठिन चुनौतियों एवं अवरोधों के बावजूद उच्चतम पद प्राप्त करने के योग मिलते हैं।''***

(*ii*) पृष्ठ 81, कालम I पर श्रीराहुल गाँधी की कुण्डली विश्लेषण में स्पष्टतः पढ़ें- ***'उपरोक्त ज्योतिषीय कारणों से श्रीराहुल गाँधी का अभी प्रधानमन्त्री पद पर प्रतिष्ठित होना संदिग्ध लगता है।''***

(*iii*) पृष्ठ 71, मुख्य कॉलम में विधानसभा चुनावों से सम्बन्धित भविष्यवाणी स्पष्ट रूप से पढ़ें-***.....आगामी पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा तथा कांग्रेस में कांटे की टक्कर के बावजूद भाजपा की स्थिति बेहतर होगी।''*** परिणाम आपके समक्ष हैं। **अन्य च, केन्द्र में अप्रत्यशित रूप से नया नेतृत्व वजूद में आएगा।**

(*iv*) पृष्ठ 75, कालम I, में स्पष्ट रूप से पढ़ें-***'अर्थात् वृश्चिक लग्न में वर्ष प्रवेश होने से पश्चिमी क्षेत्रों में नौ मास में दुर्भिक्ष, उत्तरीय प्रदेशों में कृषि का उत्पादन आधा हो और लोहा, ताम्बा, सोना, पीतल, चाँदी आदि धातुओं में समर्घता (तेजी) हो।'*** जैसा कि विदित है कि सरकारी आंकड़ों के अनुसार भी जून-जुलाई में कम वर्षा के कारण कृषि उत्पादन 40% कम रहने का अनुमान है।

(v) पृष्ठ 75, कालम I में ही स्पष्टत: पढ़ें- *दक्षिणी एशिया एवं खाड़ी क्षेत्रों के मुस्लिम बाहुल्य देशों जैसे-मिस्त्र, ग्रीस, सीरिया, पाकिस्तान, ईराक, अफगानिस्तान आदि देशों में वर्तमान तानाशाही हुकमरानों के विरुद्ध जनाक्रोश, जनान्दोलन, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत मिलते हैं। कहीं छत्रभंग व सत्ता-परिवर्तन होने के योग हैं'*-जून-जुलाई, 2014 ई. में आई.एस.आई.एस. (I.S.I.S.) जैसे आतंकी संगठन द्वारा सीरिया, ईराक में जो उपद्रव एवं विध्वंसक कार्यवाहियां की गई हैं-वे स्पष्ट संकेत हैं तथा पंडित पन्ना लाल जी द्वारा दिया गया संकेत ईश्वर कृपावश या दुर्भाग्यवश सत्य प्रमाणित हो गया।

(vi) पृष्ठ 74 कालम II में स्पष्ट पढ़ें- *''ऋतुओं (मौसमों) के परिवर्तन में अनिश्चितता रहे। संवत् के प्रथम चार मासों के मध्य उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं से भारी क्षति होने के योग हैं। मेघों एवं सेना का स्वामी सूर्य होने से उपयोगी वर्षा में कमी रहे। आँधियां अधिक हों।''* जैसा कि मई मास के अन्त में उत्तर-भारत में तेज़ आँधियां चली एवं वर्षा की कमी रही।

(vii) पृष्ठ 74 कालम I में स्पष्ट पढ़ें- *''आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेज़ी होने से सामान्य लोगों में बेचैनी व कष्ट हों।'' अन्य च, पृष्ठ 77 कालम II,—''दैनिक उपभोग की वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी हो जाने से सामान्य लोगों का जीवन दूभर हो जाएगा। उपभोग्य वस्तुओं के दाम सामान्य लोगों की पहुँच से दूर होते जाएंगे।''*

(viii) पृष्ठ 80 पर **दिल्ली, उत्तर-प्रदेश एवं राजस्थान शीर्षकों के अन्तर्गत लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में भाजपा की सफलता प्राप्ति की भविष्यवाणियाँ** तथा पंजाब में कांग्रेस के प्रभावक्षेत्र में वृद्धि की भविष्यवाणी पं. विवेक शर्मा ने कर दी थी, जो ईश्वरकृपावश अक्षरश: सत्य सिद्ध हुई।

संवत् २०७२ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के दश पदाधिकारों में से तीन अधिक क्रूर ग्रहों को और सात अधिकार शुभ (सौम्य) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा, मन्त्री तथा रसों के मुख्य अधिकार क्रूर ग्रहों शनि एवं मंगल को प्राप्त हुए हैं। फलस्वरूप विश्व एवं भारत का सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध, अनिश्चित, तनावपूर्ण एवं अशान्त रहेगा। विश्व के अनेक देशों में टकराव, उपद्रव, विद्रोह एवं प्रतिद्वन्दिता की प्रवृत्तियां बढ़ेंगी। लोगों में क्रोध, उत्तेजना, लोभ एवं धन-लोलुपता की भावना अधिक बढ़े। झगड़े-फिसाद, अग्निकाण्ड, साम्प्रदायिक हिंसा, दुर्घटनाएं अधिक होंगी। प्रतिकूल वर्षा होने से एवं विभिन्न प्रकार के क्लिष्ट (पेचीदा) रोगों के कारण लोग परेशान रहेंगे। पृथ्वी के कुछ क्षेत्रों में युद्ध की स्थिति बनी रहेगी। चोरी, ठगी, लूटमार एवं डकैती आदि की घटनाएं अधिक होंगी। **'कीलक'** नामक संवत्सर होने से भी फसलों की हानि होगी तथा महँगाई में वृद्धि होगी। रसदार वनस्पतियों एवं फलों में रस तथा पैदावार की कमी रहेगी।

सस्येश (चौमासा फसलों का स्वामी), **नीरसेश** (धातुओं का स्वामी) तथा **धनेश** (कोश) के अधिकार **देवगुरु बृहस्पति (गुरु)** को प्राप्त होने से खेतीकर एवं कृषि से सम्बन्धित व्यवसाय करने वाले व्यापारी वर्ग को अच्छा मुनाफा प्राप्त होगा। पीतल, सुवर्ण, ताँबा, लौह आदि धातुएं एवं पुखराज, मोती, हीरे आदि जवाहारात तेज़ भाव होंगे। हल्दी, ग्वार में भी तेजी बनेगी। दूध, घी, गोरस की पैदावार अच्छी होगी, व्यापारी वर्ग अधिक सम्पन्न एवं खुशहाल होंगे। परन्तु **रसेश** उग्र ग्रह **शनि** होने से उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि होने से सामान्य लोग दु:खी एवं असन्तुष्ट रहेंगे। लोगों एवं परिवारों में परस्पर नीरसता अर्थात् प्रेम-भावना की कमी रहे। वैश्विक ऊष्णता से देश में कहीं न्यून व कहीं अधिक वर्षा से फसलों को हानि होगी।

धान्येश (शीतकालीन फसलों का स्वामी) बुध होने से पंजाब, राजस्थान, हरियाणा आदि तथा सिन्ध (पाक) प्रदेशों में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। कुछ क्षेत्रों में अच्छी वर्षा भी होगी। परन्तु **फलों एवं मेघ** (वर्षा) का स्वामी **चन्द्र** होने से कुछ प्रदेशों में फल, फूल, अनाज आदि की पैदावार अच्छी होने के संकेत हैं। उपभोग्य एवं सुख-सुविधाओं के साधनों में विस्तार होंगे। दूरसंचार के उपकरणों, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग, आभूषण, जवाहरात, रबड़ उद्योग एवं अन्य लघु उद्योगों तथा अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति होगी। **दुर्गेश** (सेना) भी **चन्द्रमा** होने से राजनेता (प्रशासक) लोगों में सुष्ठु ढंग से राज्य व्यवस्था करने तथा जनता को सुख-सुविधाएं प्रदान करने की चेष्टा करेंगे। विश्व के अनेक राष्ट्र प्रमुख परस्पर युद्धोन्मुख होंगे। अर्थात् परस्पर (आन्तरिक) तनाव एवं टकराव की स्थिति में होंगे।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यवाणियाँ

नववर्ष प्रवेश कुण्डली
20 मार्च, सन् 2015 ई., 15घं.-06मिं.
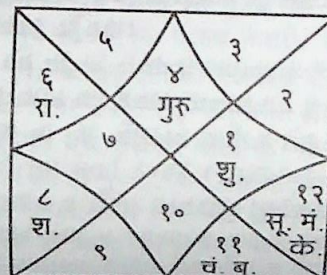
जगत् लग्नकुण्डली
14 अप्रैल, सन् 2015 ई., 13घं.-45मिं.
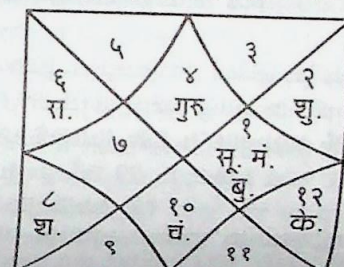
'कीलक' नामक नव वि. संवत् २०७२ का प्रवेश चैत्र अमावस की समाप्ति 20 मार्च की दोपहर 15घं.-06मिं. (२१/१५) पर, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, शुक्ल योग कालीन कर्क लग्न में होगा। वर्ष लग्नपति चन्द्रमा अष्टम भाव में शत्रुराशिगत परन्तु मित्र बुध के साथ स्थित है। शत्रुराशिगत एवं राजा शनि की इन पर गुप्त शत्रु दृष्टि भी पड़ रही है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का स्वामी (सप्तमधिपति) शनि पंचम भाव में शत्रुराशिगत है परन्तु उस पर उच्चस्थ गुरु की शुभ मित्र दृष्टि है। गुरु-शुक्र के मध्य परस्पर गुप्त शत्रु दृष्टि (4-10) सम्बन्ध भी होने से अन्तर्राष्ट्रीय एवं घरेलू हालात् अत्यन्त असमंजसपूर्ण एवं तनावमय होंगे।

ग्रहस्थिति अनुसार वर्ष के प्रारम्भिक पाँच मास भारतवर्ष के लिए विशेष घटनाक्रम एवं चुनौतियों से भरे रहेंगे। विश्व की प्रमुख शक्तियों-अमरीका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, कैनेडा, भारत, रूस आदि के सामने **'इस्लामी कट्टरवाद'** तथा **'शिया-सुन्नी'** संघर्ष एक प्रमुख मुद्दा **रहेगा।** गुरु-शुक्र के मध्य परस्पर गुप्त शत्रु दृष्टि के फलस्वरूप सम्पूर्ण ईराक, सीरिया, इज़रायल-फिलीस्तीन तथा **अन्य मुस्लिम राष्ट्र दीर्घ (लम्बे) गुरिल्ला युद्ध की ओर** अग्रसर होंगे। उच्चस्थ गुरु के प्रभावरूप अमरीका, भारत, रूस जैसे देशों द्वारा मध्यस्तता द्वारा युद्ध-विराम सम्बन्धी प्रयासों के बावजूद विश्व में अशान्ति एवं अस्थिरता का माहौल रहेगा। भारत के पश्चिमी, उत्तर-पश्चिमी, सीमावर्ती प्रदेशों की सीमाओं पर पाकिस्तान एवं चीनी फौजों द्वारा सीमा अतिक्रमण की घटनाओं से युद्धजन्य वातावरण बनेगा। गुरु के प्रभावस्वरूप विश्व में भारत की प्रतिष्ठा एवं प्रभाव में वृद्धि होगी। परन्तु भारत सरकार के समक्ष पाकिस्तान, चीन, बांगलादेश के साथ भौगोलिक विवाद, आतंकवाद, घुसपैठ से सम्बन्धित जटिल और परस्पर विरोधाभासी परिस्थितियां रहेंगी। आतंकवादी हिंसक एवं विस्फोटों के कारण पश्चिमी एशिया (ईराक, सीरिया, अफगानिस्तान) के कुछ देश विशेष रूप से प्रभावित होंगे। **पंचम (विकास व योजना भाव)** भाव में यद्यपि शनि शत्रुराशिगत है, परन्तु गुरु की मित्र दृष्टि होने से भारत सरकार की ओर से प्रजा की भलाई हेतु अनेक विकासोन्मुखी योजनाओं का आरम्भ तथा विस्तार किया जाएगा। वर्ष प्रवेश कुण्डली में कर्क लग्न के उदय का फल शास्त्रों में इस प्रकार से वर्णित है-

कर्के सुखं तु पूर्वस्याम् उत्तरस्यां तु विग्रहः।
स्याच्चासनबलं यावद् दुर्भिक्षं पश्चिमेदिशि।।

अर्थात् वर्ष प्रवेश कर्क लग्न में हो तो पूर्वी क्षेत्रों एवं देशों में सुख एवं ऐशो-आराम/वैभव के साधनों में वृद्धि तथा प्रगति होगी। उत्तर दिशा के क्षेत्रों/देशों में दुःख एवं दुर्घटनाएं अधिक होंगी। जबकि पश्चिमी देश/क्षेत्रों में दुर्भिक्ष, फसलों की हानि तथा लोगों में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति एवं भय रहे।

जगत् लग्न एवं घटनाक्रम

जगत् लग्न कुण्डली में भी वर्षप्रवेश कुं. की भान्ति कर्क (चर) लग्न उदित हुआ है। लग्न में सत्त्वगुणी एवं स्थिर संज्ञक ग्रह बृहस्पति उच्चस्थ होकर स्थित है। लग्नेश एवं कर्क राशि का स्वामी **चन्द्रमा** (जो देश की सामान्य प्रजा एवं स्त्री वर्ग का भी कारक होता है) **सप्तम भाव** (वैदेशिक सम्बन्ध) में गुरु एवं शुक्र द्वारा दृष्ट है। फलस्वरूप महिला विकास योजनाएं, रूस, जापान, अमरीका, चीन आदि पड़ोसी देशों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर विशेष बल एवं बढ़ावा दिया जाएगा। सौभाग्यवश भारत की विदेश-मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज महिला ही है। फलस्वरूप मोदी सरकार एवं विदेश मंत्रालय द्वारा विदेशी व्यापार, विदेशी निवेश, महिला सम्बन्धी योजनाओं के बनाने एवं क्रियान्वन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। ग्रहस्थिति अनुसार विश्व के अधिकांश देशों विशेषकर पश्चिमी एशियाई देशों के आन्तरिक, सामाजिक व राजनीतिक हालात् विक्षुब्ध एवं परेशानीकारक होंगे। विशेषकर ईराक, फिलीस्तीन, इज़रायल, सूडान, सीरिया, यूगाण्डा, मिस्र आदि देशों में आन्तरिक परिस्थितियां अस्थिर एवं अशान्तिपूर्ण होंगी। युद्धभय वातावरण के मध्य बड़े पैमाने पर साधारण जनता एक देश से दूसरे देश में पलायन करेगी। कुं. में मं.-शु. ग्रह स्वराशिगत तथा चंद्र, गुरु, सूर्य आदि ग्रह केन्द्रस्थ होने से कुछ देशों में सुभिक्ष अर्थात् धान्य, चना, दालों आदि का उत्पादन यथेष्ठ होगा-

धनेव्यये च सौम्यश्चकेन्द्र वा मेषसंक्रमे।
स्वर्क्षेशुभेसुहृद्दृष्टः सुभिक्षं व्यत्ययोऽन्यथा।।

अर्थात् यदि दूसरे, बारहवें अथवा केन्द्र में सौम्य ग्रह हों और स्वगृही हों तथा मित्र ग्रहों की उन पर दृष्टि हो तो सुभिक्ष होता है, अन्यथा दुर्भिक्ष होता है।

सन् 2015 ई. में ग्रहगोचर और विश्व के हालात

वर्षारम्भ माघ मास (ता. 6 जन. से 3 फर. तक) में पाँच मंगलवारों का समावेश होना, ता. 20 जन. को **भौमवती अमावस** तथा 29 दिसं., 2014 ई. से 21 जन., 2015 ई. तक गुरु-शुक्र के मध्य **समसप्तक योग** रहेगा। इस विपरीत ग्रहस्थिति के फलस्वरूप पाकिस्तान, ईराक, अफगानिस्तान, ईज़रायल-गाज़ा, लीबिया, यूक्रेन, सीरिया आदि मुस्लिम एवं यहूदी देशों में विस्फोटक, हिंसक एवं युद्धप्रेरक घटनाएं होंगी। सत्तारूढ़ एवं जेहादी (आतंकी) ग्रुपों के मध्य हिंसक टकराव के फलस्वरूप व्यापक बमबारी, अग्निकाण्ड, विस्फोट एवं मृत्यु-संहार के समाचार मिलेंगे। किसी देश के प्रमुख नेता के अपदस्थ, सत्ता-परिवर्तन (छत्रभंग) या मृत्यु के भी योग हैं-

यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।

फाल्गुन मास में (4 फर. से 5 मार्च तक) पाँच बुध एवं पांच बृहस्पतिवार का होना, लगभग सम्पूर्ण मास में मंगल-शुक्र का योग रहने से कहीं अतिवृष्टि, अनावृष्टि से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन व सम्पदा को क्षति पहुँचेगी। पश्चिमी देशों विशेषकर पश्चिमी एशिया के देशों में राज्य-परिवर्तन, हिंसा, छद्म युद्ध या गुरिल्ला युद्ध चलेगा।

'यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते।।'

चैत्र मास (ता. 6 मार्च से 4 अप्रै. तक) में पाँच शुक्र और पाँच शनिवारों का समावेश होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। जनसंख्या में वृद्धि तथा विश्व में धन-सम्पदा का प्रसार व नियोजन बढ़ेगा। पाँच शनिवार होने से शिया-सुन्नी-कुर्द, यहूदी आदि जातियों में हिंसा तथा साम्प्रदायकि दंगे-फ़िसाद बढ़ेंगे। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं एवं धान्यों के मूल्यों में वैश्विक स्तर (सम्पूर्ण विश्व में) पर तेजी होगी। **चैत्र संक्रान्ति** भी शनिवार को होने से विरोधी देशों **जैसे**–इज़रायल, फिलीस्तीन, ईराक-सीरिया, यूक्रेन-रूस, भारत-पाक में युद्धजन्य माहौल बनेगा–

'सौरश्चवारे रवि संक्रमश्चेद दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्।
पृथ्वी सरोगानृपतेः प्रजासु भवेन्महायुद्धभयं तदानीम्।।

वैशाख मास (5 अप्रै. से 4 मई के मध्य) में **पाँच रविवार** होने से भी विश्व के कुछ देशों विशेषकर एशिया में अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, सूखा व कहीं दुर्भिक्ष का भय सामान्य लोगों में रहेगा। कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), आतंकी हमले, जातीय हिंसा, आकस्मिक विस्फोट, अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं–

'यत्रमासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगस्यात् दास्ते च महद्भयम्।।'

14 अप्रै. को **मेष संक्रान्ति** भी **मंगलवार** को होने से पृथ्वी पर कहीं असामयिक वर्षा से कहीं समर्घता तथा कहीं दुर्भिक्ष रहे। व्यापारियों को लाभ, राजाओं (राज्याध्यक्षों) में परस्पर युद्ध की इच्छा, प्रजा में रोग-भय, गेहूँ, तिल, रुई के भावों में तेजी होगी। स्वामी--सेवक, पिता-पुत्र आदि निकट सम्बन्धों में भी विरोध रहे, जनता रोगग्रस्त रहे। अग्निकाण्ड, भूकम्प का भय रहेगा।–**'कुजे दिने चायनमेषराशेरभूत राजा खलु भूमिसुनुः।......सूर्योपरागः सुलभाच्च भीतिः भूकम्पनं स्याद्गदितं हि वर्षे।।'**

चान्द्र ज्येष्ठ मास (5 मई से 2 जून मध्य) में पाँच मंगलवार होने से कहीं हिंसक घटनाएं, उपद्रव व पश्चिमी देशों के मध्य युद्ध भय अर्थात् युद्धमय वातावरण रहेगा। किसी प्रमुख नेता (राज्याध्यक्ष) की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के भी योग हैं। यथा–**(मंगलेम्रियते राजा)।।**

खप्पर योग–चैत्र मास से ज्येष्ठ मास के मध्य (6 मार्च से 2 जून मध्य) क्रमानुसार पाँच शनि, पाँच रवि और पाँच मंगलवार होने से खप्पर योग बना है, जिसका फल शास्त्रकारों ने अशुभ एवं विनाशकारी बताया है। आगे 16 जुलाई को श्रावण संक्रान्ति का आषाढ़ी अमावस से योग होने को भी शास्त्रकारों ने **खप्पर योग** माना है। फलस्वरूप अफगानिस्तान, पाक, ईराक सहित अनेक देशों में राजनीतिक अस्थिरता, उथल-पुथल एवं अशान्ति व्याप्त होगी।

3 जून से 3 जुला. के मध्य **प्रथम चांद्र आषाढ़** मास में पाँच बुधवार एवं पाँच गुरुवार होंगे। फलस्वरूप विश्व में अमरीका, जापान, इन्डोनेशिया जैसे देशों में तूफान, आँधियाँ, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोप अधिक होंगे। ता. 30 मई से 4 जुला. के मध्य कर्क राशि में गुरु-शुक्र योग रहने एवं ता. 16 जून को **भौमवती अमावस** होने से अफगानिस्तान, ईराक, सीरिया, पाकिस्तान, सूडान आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में आतंकवाद की दावाग्नि पुनः भड़कने लगेगी। भारत, यूक्रेन, बर्मा, इण्डोनेशिया, मलेशिया, कुवैत आदि देश भी इसके प्रभाव में आ जाएंगे। इस अवधि में इज़रायल-फिलीस्तीन, यूक्रेन-रूस, भारत-पाक आदि विरोधी देशों में परस्पर युद्ध एवं सैनिक टकराव होने के योग हैं। पश्चिमी एशिया के क्षेत्रों में हिंसक व विस्फोटक घटनाएं होने से भयावहपूर्ण माहौल रहेगा। सूखे, अकाल के कारण लोग पलायन करेंगे।

गुरु–शुक्रौ यदेकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टि जगत्यां नात्र संशयः।।

14 जुला को **बृहस्पति** सिंह राशि में प्रवेश के बाद अतिचारी गति से संचार करेगा। गुरु-शुक्र का योग भी 14 जुला. से 12 अग. तक रहेगा। ता. 1 अग. तक शनि वक्री रहेगा। इस अवधि में पाक, ईराक, अफगानिस्तान, गाज़ा, सीरिया आदि इस्लामिक देशों में कहीं युद्धमय वातावरण, हवाई-अड्डों आदि पर आक्रमण, विस्फोट होंगे। कहीं दुर्भिक्ष (अनाज की कमी) व अराजकता फैलने का भय होगा–

अतिचारगते जीवे वक्री भूते शनैश्चरे।
हा ! हा ! भूतं जगत् सर्वं रुण्डमाला महीतले।।
अपरं च–शनि वक्रे दुर्भिक्षं च राज्ञां युद्धं परस्परम्।।

पाकिस्तान, मिस्र, सीरिया, सूडान, अफगानिस्तान, यूक्रेन आदि देशों में अप्रत्याशित घटनाएं घटित होने के संकेत हैं।

पुनः श्रावण मास (1 से 29 अग.) में **पाँच शनिवार** होने से पश्चिमी एशिया के देशों में छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), अग्निकाण्ड, यान-दुर्घटनाएं, किसी वरिष्ठ नेता या व्यक्ति की हत्या या निधन की सम्भावनाएं बनेंगी। परन्तु ता. 2 अग. से **शनि मार्गी** होने से विश्व में कुछ विरोधी देशों एवं गुटों के मध्य भी शान्ति वार्ताएं समायोजित होंगी। इज़रायल-गाज़ा, जिहादी (I.S.I.S.) ग्रुप तथा इराकी सरकार, भारत-पाक, भारत-चीन आदि विरोधी देशों के मध्य समझौते एवं शान्ति वार्ताओं की सम्भावनाएं बनेंगी। अमेरिका-रूस के मध्य तनाव को भी कम करने के लिए यूरोपीय देश प्रयास करेंगे, परन्तु शीत-युद्ध जैसा वातावरण बना रहेगा। रूस के कुछ देशों के साथ द्विपक्षीय सम्बन्ध प्रभावित होंगे।

भाद्रपद मास (30 अग. से 28 सितं. तक) में पाँच रविवार होने तथा 13 अग. से 14 सितं. तक मंगल-शुक्र योग होने से कुछ पश्चिमी एशियाई देशों, मुस्लिम बाहुल्य अफ्रीकी देशों में कहीं दुर्भिक्ष एवं छत्रभंग होने का भय होगा। कहीं उपद्रव, आतंक एवं हिंसक घटनाओं के कारण रोग, शोक तथा भूस्खलन, बाढ़, दुर्भिक्ष एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं का भय होगा।

तदनन्तर **आश्विन मास** में **पाँच मंगलवार** (29 सितं. से 27 अक्तू. तक) होने से विश्व में कहीं युद्ध भय, राजनीतिक उलट-फेर, उपद्रव तथा किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु होने के संकेत हैं।

पुनः खप्पर योग—श्रावण से आश्विन मास पर्यन्त (1 अग. से 27 अक्तू. मध्य) क्रमशः पाँच शनि, रवि एवं मंगलवार होने से पुनः खप्पर योग का प्रभाव रहेगा। विश्वभर में आर्थिक मन्दी, सत्ता-परिवर्तन, मुस्लिम देशों में आन्तरिक गृह युद्ध, आतंकी घटनाओं, जातीय हिंसा का बोलबाला रहेगा। लोग दूसरे देश में पलायन के लिए बाध्य हो जाएंगे।

कार्तिक मास (28 अक्तू. से 25 नवं. तक) में पाँच बुधवार तथा कन्या राशि में मंगल-शुक्र-राहु का योग विश्व में विशेष उथल-पुथल करेगा। राजनेताओं व राज्याध्यक्षों का आपस में युद्ध विग्रह होगा और युद्ध, आगज़नी, प्राकृतिक आपदाओं से पृथ्वी रक्त से पूरित हो जाएगी–

मंगलोराहुशुक्रौ च स्थिता यदि त्रयस्तुले। परस्परं नृपैः युद्धं रुधिरैः पूरिता मही।।

फलस्वरूप विरोधी देशों के मध्य युद्ध अथवा गुरिल्ला युद्ध के कारण व्यापक रूप से रक्तपात एवं जन-हानि का भय है।

आगे **मार्गशीर्ष मास** में पाँच गुरुवार एवं पाँच शुक्रवार होने से विश्व के कुछ देशों के आन्तरिक हालात् अस्थिर एवं उद्विग्न होंगे। इस समयावधि में मंगल-राहु योग होने से भी पाकिस्तान, ईराक, अफगानिस्तान, सीरिया, लीबिया, सूडान, यूक्रेन आदि कुछ देशों के नेतृत्व को गम्भीर चुनौतियों का सामना रहेगा। कुछ स्थलों पर विस्फोटक, आगज़नी व हिंसक घटनाएँ घटित होंगी।

विश्व के कुछ प्रसिद्ध देश

अमेरिका (America)–इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। जगत् लग्न में द्वादश भाव में राशि की स्थिति तथा राशिस्वामी बुध पर गुरु की गुप्त शत्रु दृष्टि है। फलस्वरूप ग्रहस्थिति अनुसार अमेरिका की व्यवसायिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार के बावजूद अर्थव्यवस्था विशेष सुदृढ़ नहीं हो पाएगी। पश्चिमी-एशिया के देशों जैसे-ईराक, सीरिया, इज़रायल-गाज़ा, अफगानिस्तान में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप की बजाए परोक्ष रूप से आतंक के विरुद्ध सहायता एवं सहयोग करता रहेगा। परन्तु अन्त में विवशतापूर्वक दूसरे देशों की गृह-युद्ध की आग में सम्मिलित होना पड़ेगा। यूक्रेन आदि के मुद्दों को लेकर रूस के साथ द्विपक्षीय सम्बन्ध कुछ देर के लिए रुक जाएंगे तथा तनावपूर्ण स्थिति रहेगी। पाक, ईराक, ईरान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों के साथ विदेश नीति का पुनरावलोकन करेगा तथा विशेष बदलाव दृष्टिगत होंगे। विश्व में अपना प्रभुत्व-प्रसार स्थायी रखने एवं बढ़ाने के लिए भारत, चीन जैसे विकासशील देशों के साथ नए राजनैतिक एवं व्यवसायिक अनुबन्ध करेगा। पश्चिमी एशिया के विरोधी देशों के मध्य शान्ति स्थापित करने हेतु शान्ति-वार्ताएं एवं मध्यस्ता भी समायोजित करेगा।

''पाठक ध्यान दें, गतवर्ष पृष्ठ 75 पर इसी कॉलम में हमने लिखा था–**''आतंकी हमलों एवं सुरक्षा सम्बन्धी खतरों की दृष्टि से कुछ खाड़ी देशों में अस्थाई तौर पर अपने दूतावासों को बन्द करने पर मज़बूर होगा।''** जैसे कि पाठक जानते हैं कि जून-जुला. में अमरीका को ईराक एवं अफगानिस्तान में अपनी सेना तथा उच्चायुक्त वापिस बुलाने पड़े। हम पाठकों का आभार व्यक्त करना चाहते हैं, जो फोन या पत्राचार के माध्यम से हमारी भविष्यवाणियां पढ़कर हमें बधाई देते हैं। जिससे हमें आगामी वर्षों में भी ईश्वर कृपावश ग्रह-अनुशीलन करके भविष्य-आकलन कर कुछ-न-कुछ लिखने की प्रेरणा मिलती है।

पाकिस्तान—जगत् लग्न में इसकी प्रभाव राशि कन्या पर राहु का संचार वर्षभर रहेगा। फलस्वरूप **पाकिस्तान एक ऐसा देश बन जाएगा जो पूरी तरह से खुद के विरुद्ध ही युद्धरत रहेगा।** दूसरे देशों के लिए भी खतरा बन जाएगा। अफगानिस्तान के सीमावर्ती इलाकों में तालिबान परस्पर आतंकवादी घटनाओं में वृद्धि होगी। यद्यपि पाक सेना द्वारा आतंकियों के विरुद्ध ज़मीनी और हवाई हमले किए जाएंगे। पाकिस्तान के मुख्य शहरों, हवाई अड्डों, सैनिक शिविरों पर आतंकी हमलों में जानो-माल की हानि होगी।

भारत के साथ शान्ति-वार्ताओं एवं व्यापारिक सन्धियों के बावजूद सीमा से उकसाने वाली हरकतों को जान-बूझकर अंजाम दिया जाएगा। पाकिस्तान सेना और जिहादी तत्त्वों को दोस्ती का माहौल रास नहीं आएगा तथा दोनों देशों के मध्य कश्मीर, घुसपैठ, सीमोल्लंघन आदि मुद्दों को जीवन्त रखकर तनावपूर्ण माहौल बनाने का प्रयास होता रहेगा। शरीफ सरकार को भी आन्तिरक विरोध का सामना करने पड़ेगा।

सन् 2015 ई. में मुस्लिम देशों के हालात

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् आरम्भ होता है। मुस्लिम मतानुसार निर्धारित वर्षकुण्डली में मेष लग्न उदित हुआ है। लग्नेश मंगल अग्नितत्त्व राशिस्थ नवम भाव में स्थित है। उस पर सू.-शु.-श. आदि ग्रहों की गुप्त शत्रु दृष्टियां पड़ रही है। प्रभावस्वरूप पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, सूडान, मिस्र, लीबिया, सीरिया आदि मुस्लिम देशों में आतंकी घटनाएं, सत्तारूढ़ हकूमतों तथा अलकायदा समर्थित जेहादी ग्रुपों के मध्य विध्वंसकारी एवं युद्ध-जन्य हालात रहेंगे। विस्फोट, सामूहिक हत्याएं तथा खूनी-संघर्ष ओर अधिक उग्र हो जाएगा। साधारण लोग एक देश से दूसरे देश में पलायन के लिए बाध्य हो जाएंगे। हवाई अड्डों पर बमबारी, प्रतिष्ठित संस्थानों आदि को विस्फोटों द्वारा विध्वंस कर दिए जाने सम्बन्धी अनेक हृदय विदीर्ण करने वाली घटनाएं घटित होंगी।

मुस्लिम देशों की कुण्डली
सूर्यास्त, 25 अक्तू., 2014 ई.

वि. सम्वत् २०७२ में गोचर ग्रहस्थिति और भारत का भविष्यफल

जन्मकुंडली स्वतंत्र भारत
15 अगस्त, 1947 ई.
($23^{घं.}$-$59^{मिं.}$) भा. स्टैं. टा.
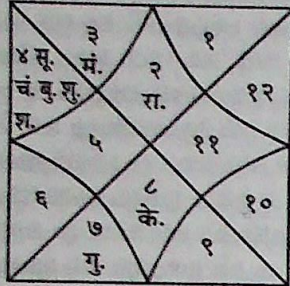
कुंडली गणतंत्र दिवस
26 जनवरी, 1950 ई.
$10^{घं.}$-$19^{मिं.}$ (भा. स्टैं. टा.)
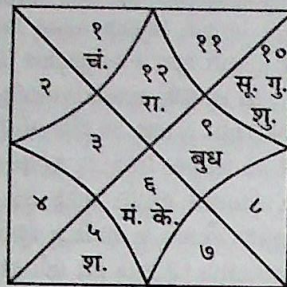
कुं. स्वतंत्र भारत (68वाँ वर्ष)
15 अग. 2014 ई.
($04^{घं.}$-$13^{मिं.}$) (दिल्ली)
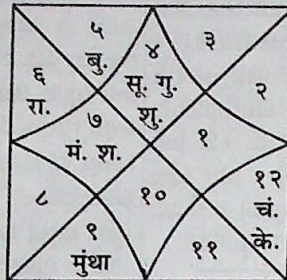
कुं. स्वतंत्र भारत, 69वाँ वर्ष
15-08-2015 ई.
($10^{घं.}$-$22^{मिं.}$) (दिल्ली)
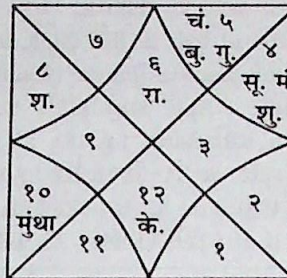
कुं. गणतन्त्र दिवस, 66वाँ वर्ष
26/27 जनवरी, 2015 ई.
($02^{घं.}$-$15^{मिं.}$) (A:M.), (दिल्ली)
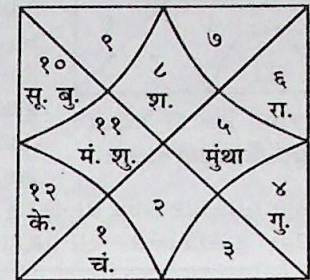
स्वतन्त्र भारत के 68वें वर्ष (15-08-2014 ई.) की वर्ष कुण्डली में कर्क लग्न उदित हो चुका है। लग्नेश चन्द्रमा नवम (विकास एवं योजना भाव) भाव में यद्यपि केतु युक्त है, परन्तु उच्चस्थ गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप नई मोदी सरकार द्वारा देश **की अर्थव्यवस्था को सम्भालते हुए उसे विकास एवं प्रगति की दिशा में ले जाने हेतु वित्तीय अवस्था में विशेष मौलिक एवं बुनियादी परिवर्तन किए जाएंगे।** व्यापक राष्ट्रहित में कई नई योजनाएं एवं नीतियां बनाकर फैसले लिए जाएंगे, परन्तु केतु के प्रभाव से कुछ क्षेत्रियों पार्टियों एवं विपक्ष का विरोध प्रखर रूप से सामने आएगा। मुंथा छठे भाव में एवं मुंथा स्वामी लग्न भाव में दैत्यगुरु एवं चतुर्थेश शुक्र के साथ स्थित है। जिसके प्रभावस्वरूप अगस्त, 2014 ई. से देश में आन्तरिक विरोध, आतंकी घटनाओं, दुर्घटनाओं, साम्प्रदायिक एवं जातीय हिंसा, अनावृष्टि से असमंजसपूर्ण वातावरण रहेगा। लोगों में महँगाई, मूल्यवृद्धि, बेरोजगारी, कुछ क्षेत्रों में अकालजन्य स्थिति के कारण अशान्ति व भय होगा।

गुरु-शुक्रौ यदेकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।। अकाले वा भवेद् वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः।।

केन्द्रीय सरकार को योजनाओं को क्रियान्वित करने में विशेष क्लिष्ट एवं पेचीदा समस्याओं तथा अवरोधों का सामना रहेगा। पुनः कुण्डली में दो विरोधी ग्रहों मंग.-शुक्र का चतुर्थ भाव में योग तथा षष्ठम भाव में मुंथा का होना व्यक्ति और देश-दोनों के लिए अनिष्टकारी होता है। फलस्वरूप विकास योजनाओं पर आशातीत खर्चों के बावजूद वांछित लाभ नहीं हो पाएंगे। लघु एवं वृहद् विकास योजनाओं में आकस्मिक अड़चनों एवं अनावश्यक खर्चों में वृद्धि के कारण विकास की गति धीमी रहेगी। प्राकृतिक प्रकोपों एवं अग्निकाण्ड आदि के कारण भी विकास की गति अवरुद्ध होगी।

यदा सौरि भौमे सुरराजमंत्री भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्या मध्यदेशे, लंकापुरे च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।

अयोध्या, मध्यप्रदेश, लंका, असम, उड़ीसा, पं. बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक, विस्फोटक घटनाएं तथा प्राकृतिक उपद्रव घटित होंगे। मुंथा के प्रभावस्वरूप पाक, चीन आदि विरोधी देशों के साथ व्यापारिक रिश्ते बढ़ने के बावजूद सीमा पर तनाव व घुसपैठ यथावत जारी रहेंगे। षष्ठ भाव में मुंथा (जोकि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष शत्रु का भाव भी है) के कारण मोदी सरकार के समक्ष पाक, चीन के साथ भौगोलिक विवाद, आतंकवाद सम्बन्धित जटिल और परस्पर विरोधाभासी स्थितियां रहेंगी, जो समय-समय पर सरकार की परीक्षा लेंगी। लोकसभा में अप्रत्याशित जीत की भान्ति आगामी कुछ राज्यों जैसे-महाराष्ट्र, हरियाणा, दिल्ली, झारखण्ड में भी भाजपा को विजय श्री प्राप्त होगी। परन्तु अपेक्षाकृत कम तथा गठजोड़ के उपरान्त ही सरकार बनाने में सफलता प्राप्त होगी। नए-नए समीकरण बनेंगे। विपक्षी पार्टियां आपस में गठजोड़ कर लेंगी।

66वें गणतन्त्र दिवस (26 जन., 2015 ई.) की कुण्डली में वृश्चिक लग्न उदित हुआ है। लग्न भाव में शत्रुराशिगत शनि का चतुर्थ शत्रु भावस्थ (सामान्य प्रजा की प्रसन्नता का भाव) मंगल के साथ परस्पर गुप्त शत्रु दृष्टि (४-१०) सम्बन्ध बन रहा है। जिसके प्रभावस्वरूप वर्ष के प्रारम्भिक महीनों में देश का राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण अत्यन्त विक्षुब्ध, अशान्त, तनावपूर्ण एवं अनिश्चित रहेगा। सत्तारूढ़ तथा विपक्षी पार्टियों के मध्य आरोप-प्रत्यारोप लगेगें। नवम (योजना) भाव में स्थित गुरु की लग्न भाव पर मित्र दृष्टि के प्रभावस्वरूप आधारभूत ढांचे को मज़बूत करके सरकारी कामकाज का स्तर सुधारा जाएगा तथा गुणात्मक सुधार लाकर सरकारी **योजनाओं का बेहतर तरीके से क्रियान्वयन किया जाएगा।** मुंथेश सूर्य तृतीय भाव (पड़ोसी देशों का भाव) में बुध के साथ स्थित है तथा गुरु के साथ प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि पड़ रही है। प्रभावस्वरूप भारत विदेश नीति के अन्तर्गत पड़ोसी देशों को विशेष महत्त्व देगा। परन्तु पाक-चीन भरोसे का कत्ल करना नहीं छोड़ेंगे। परन्तु फिर भी गुरु की लग्न पर दृष्टि के फलस्वरूप विकासशील देशों में भारत का प्रभाव एवं प्रभुत्व बढ़ेगा। मोदी सरकार अनेक नवीन योजनाओं जैसे-उद्योगों एवं रोजगार को

प्रोत्साहन देने के लिए विदेशी निवेश को आकर्षित करना, कृषि-सिंचाई के लिए देश की प्रमुख नदियों को जोड़ना, नमामि गंगा योजना, गांवों में ब्रॉडबेंड के लिए डिजिटल इण्डिया योजना, तीर्थ-यात्रा पर्यटन आदि विभिन्न योजनाओं द्वारा विकास की गति में तेज़ी लाई जाएगी। नई तीव्र गति की ट्रेनें चलाकर, सुशासन पर बल देकर आम साधारण जनता के मध्य सरकार की लोकप्रियता बढ़ाने का भी प्रयास किया जाएगा।

स्वतन्त्र भारत के 69वें वर्ष की कुण्डली में 15 अग., 2015 ई. को कन्या लग्न उदित होगा। इस वर्ष कुण्डली में भारत की प्रभावराशि (मकर) पर मुंथा पंचम भाव (प्रशासनिक बुद्धि) में शुभ है, परन्तु उस पर सूर्य-मंगल-शुक्र एवं शनि की शुभाशुभ दृष्टियां पड़ रही हैं। **फलस्वरूप आगामी वर्ष भी प्रधाननेता के लिए असमंजसपूर्ण एवं विवशतापूर्ण परिस्थितियों वाला रहेगा। भ्रष्टाचार एवं महँगाई का मुद्दा अभी आम आदमी को उद्वेलित और आन्दोलित करता रहेगा।** जिससे सरकार की छवि एवं प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। नए छोटे राज्यों के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी जाएगी। सरकार द्वारा पुराने कानूनों, धारा 370 तथा कॉमन सिविल कोड जैसे ज्वलन्त मुद्दों के प्रावधानों पर पुर्नविचार करने से विपक्षी दलों द्वारा आलोचना की जाएगी, जिससे ऐसी कई योजनाओं का क्रियान्वयन लम्बित हो जाएगा।

सन् 2015 ई. में गोचरग्रह और भारतवर्ष

वर्षारम्भ **माघ मास** (ता. 6 जन. से 3 फर. तक) में पाँच मंगलवार होने से देश के सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं है। देश में कहीं आतंकी एवं हिंसक घटनाओं की सम्भावना, राज्य परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय रहेगा। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं। ता. 29 दिसं., 2014 ई. से 21 जन., 2015 ई. तक **गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग** के प्रभावस्वरूप उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, असम आदि के पूर्वी क्षेत्रों में तथा जम्मू-कश्मीर के पश्चिमोत्तर भागों में व्यापक हिंसा, अग्निकाण्ड, उपद्रव एवं साम्प्रदायिक घटनाएं अधिक घटित होंगी। ता. 20 जन. को भौमवती अमावस भी राजनीतिक पक्ष से अशुभ मानी गई है।

राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्पवृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।।

अर्थात् देश में राजनीतिक टकराव या राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं आरोप-प्रत्यारोप हों, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव व हिंसक घटनाएं हों। अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी हो।

फाल्गुन मास में (4 फर. से 5 मार्च तक) पाँच बुध एवं पाँच बृहस्पतिवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पाँच बुधवारों के प्रभाव से अनाजादि की पैदावार में वृद्धि होगी तथा उच्चवर्ग में सुख-सुविधाओं के साधनों का विस्तार होगा। परन्तु पाँच बृहस्पतिवार होने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं अतिवृष्टि से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन-सम्पदा को क्षति पहुँचे। भारत के पश्चिमी प्रदेशों में एवं देश की पश्चिमी सीमाओं पर आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाएँ, जघन्य हत्याएं, उपद्रव एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। मास में **मंगल-शुक्र-केतु** योग रहने से विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के मध्य विरोध एवं टकराव का माहौल रहेगा। अनावृष्टि से फसलों को नुक्सान होगा-

शुक्रस्य यदि भौमेन-योगो वा समसप्तकम्। वृष्टिर्मासे तदाकाले।।

चैत्र मास (ता. 6 मार्च से 4 अप्रै. तक) में पाँच शुक्र और पाँच शनिवार होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। जनसंख्या में वृद्धि, विदेशी निवेश, शेयर-बाज़ार में तेजी तथा धन के प्रचार-प्रसार में वृद्धि होगी। देश में मुद्रा-स्फीति का प्रसार बढ़ेगा। पाँच शनिवारों के कारण जनापयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी तथा पूर्वोत्तर दिशा में कहीं राज्यभंग, अग्निकाण्ड व युद्धादि का भय हो।

शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणीः। ईशान देशभंगश्च वह्णि दाहो महर्घता।।

वैशाख मास (5 अप्रै. से 4 मई के मध्य) में पाँच रविवार होने के प्रभावस्वरूप अत्यधिक महँगाई एवं भ्रष्टाचार के कारण सामान्य लोगों में आर्थिक परेशानियां तथा सामाजिक असुरक्षा की भावना रहेगी। कहीं छत्रभंग, राजनैतिक अस्थिरता एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होने का भय है। **ता. 18 अप्रै. को शनिवारी अमावस्या** होने से गेहूँ, अनाजादि वस्तुओं में कमी के कारण जनता को दुर्भिक्ष जन्य स्थिति के कारण महान् दुःख तथा भयंकर कष्टप्रद परिस्थितियों का सामना रहे। पिता-पुत्र में पराङ्गमुखता हो अर्थात् बहुत निकट के रिश्तेदारों में प्रेम-भावना की कमी रहेगी। राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अति स्वार्थपरता के कारण साम्प्रदायिकता, कट्टरवाद का फैलाव तथा चरित्रिक मूल्यों का ह्रास होगा।

दुर्भिक्षं रौरवं घोरं महादुखं महद्भयम्। पराङ्गमुखाः पितुः पुत्रा व्यसनं शनिवासरे।।

चान्द्र ज्येष्ठ मास (5 मई से 2 जून तक) से पाँच मंगलवारों का होने किसी प्रधाननेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु होने के संकेत हैं। देश के किसी क्षेत्र विशेष में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), अग्निकाण्ड, उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे, तनाव एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं-

यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।

3 मई से 14 जून तक **मंगल-शनि** के मध्य **समसप्तक योग** होने से उत्तर-प्रदेश, मध्य-प्रदेश, बिहार, असम एवं अन्य कुछ राज्यों में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं-

यदा सौरि भौमे सुरराज मन्त्री, भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्या मध्यदेशे लंकापुरे, पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।

खप्पर योग-चैत्र से ज्येष्ठ मास के मध्य (6 मार्च से 2 जून तक) क्रमानुसार पाँच शनि, पाँच रवि और पाँच मंगलवार होने से खप्पर योग बना है। इसका फल शास्त्रों में अशुभ एवं भयकारक लिखा है व अति अनिष्ट एवं कष्टकारी घटनाएं घटित होने के संकेत हैं-

शनिः स्यादाद्यसंक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरः। तृतीयायां कुजो योगः खर्पराखयोति कष्टकृत।।

इस कालावधियों में चीन व पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकवादियों एवं शरारतपूर्ण कुटिल चालों से भारत में घुसपैठ तथा कोई बड़ी वारदात कराने के प्रयास करेंगे। सैन्य-टकराव व युद्धभय रहेगा।

प्रथम चान्द्र आषाढ़ मास (3 जून से 2 जुला. तक) में पाँच बुध एवं पाँच बृहस्पति वार होने, 4 जुला. तक कर्क राशि में गुरु-शुक्र योग रहने एवं 16 जून को भौमवती अमावस होने से देश के कुछ राज्यों में आन्तरिक कलह, उपद्रव एवं अशान्ति अथवा गुरिल्ला युद्ध जैसे हालात बनेंगे। कहीं छत्रभंग अथवा किसी विशिष्ट नेता के अपदस्थ या अपमृत्यु के योग हैं।

''यत्रमासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमी देशे खड्ग युद्धं च जायते।।''

द्वितीय आषाढ़ मास (3 जुला. से 31 जुला. तक) में पाँच शुक्रवार होने से धन-सम्पदा का प्रसार व अपव्यय बढ़ेगा। **'प्रजा वृद्धिस्तु भार्गवे।।**–जनसंख्या में विशेष वृद्धि होगी। ता. 14 जुला. को गुरु शीघ्र गति से सिंह राशि में आकर शुक्र के साथ 12 अग. तक रहेगा। इन पर वक्री शनि की दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप गेहूँ, तिल, उड़द, घी, चावल आदि दैनिक उपभोग्य वस्तुओं में अत्यधिक तेजी से लोगों में हाहाकार होगा। सोना, ताँबा आदि धातुएं भी तेज होंगी। आषाढ़ और भाद्रपद मास में अच्छी वर्षा होगी। श्रावण में कम वर्षा होगी।

गोधूमतिलमाषाज्य शालीनां च महर्घता।
सुवर्णरुप्यताम्रादेः प्रवालानां समर्घता।। श्रावणेवृष्टिरल्पैः....।।

ता. 16 जुला. को कर्क संक्रान्ति, गुरुवार को अमावस्या तिथि को होने से खप्पर योग का प्रभाव रहेगा। जिससे प्राकृतिक आपदाओं एवं अप्रत्याशित घटनाओं, अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि के कारण लोग भयभीत रहें। अत्यधिक महँगाई के कारण साधारण जन पीड़ित एवं क्रुद्ध रहेंगे।

श्रावण मास में (ता. 1 से 29 अग. तक) पाँच शनिवार पड़ने से आवश्यक वस्तुओं जैसे–दूध, ईंधन, सब्जियां, तेल आदि के भावों में अत्यधिक तेज़ी, सामान्य लोगों में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति, लोगों में पारस्परिक सौहार्द की कमी, राजनीतिक गठबन्धनों में परिवर्तन व साम्प्रदायिक टकराव हो–

शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायन्ते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी।।

बृहस्पति (गुरु) इस समय अतिचारी गति से संचार कर रहा है। देश में महँगाई, अनाज, आवश्यक वस्तुओं में कमी, लोगों के जीवन, धन-सम्पदा आदि की हानि होगी, कहीं दुर्भिक्ष, अकाल जन्य परिस्थितियां बनेंगी। प्रजा में विक्षोभ, राज्यों में राजनीतिक अस्थिरता, अशान्ति जैसे हालात बनेंगे।

यदा सौम्यग्रहः कोऽपि अतिचारोऽपि जायते।
दुर्भिक्षं नृपपीड़ाश्च शुभं न दृश्यते क्वचित्।।

अगस्त (श्रावण) में शुक्र का उदय एवं अस्त देवतागण में होने तथा एक ही मास में गुरु-शुक्र ग्रहों का अस्त होना अशुभ माना गया है। राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव पैदा होंगे। सामान्य लोगों में भय, महारोग एवं असुरक्षा की भावना बने। कहीं साम्प्रदायिक टकराव एवं हिंसक घटनाएँ घटित हो सकती हैं–**सिंहे नृणामरणं लोक धनादि नाशः।।** जन-धन एवं सम्पदा आदि की क्षति हो। गुजरात, राजस्थान, पश्चि. म.प्र. में उत्पन्न होने वाले धान्य, फसलों की हानि होगी।

भाद्रपद मास (30 अग. से 28 सितं. तक) में पाँच रविवार होने तथा 13 अग. से 14 सितं. तक मंगल-शुक्र योग होने से अत्यधिक महँगाई, दुर्भिक्ष अथवा अकाल जैसी स्थिति बनती है। सामान्य लोगों में महँगाई के कारण क्रोध व अशान्ति रहे। जम्मू-कश्मीर, उ.प्र., बिहार आदि राज्यों में लोगों में भय का वातावरण रहेगा।

यत्रमासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभङ्गस्यात् वह्णि दाहो महर्घता।।

तदनन्तर आश्विन मास में पाँच मंगलवार (29 सितं. से 27 अक्तू. तक) होने तथा कन्या राशि में सूर्य-बुध-राहु रहने से देश के किसी राज्य में सत्ता परिवर्तन, उपद्रव एवं साम्प्रदायिक दंगे अधिक होंगे। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं।.....

........रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभङ्गस्तदा भवेत्।।'

पुनः खप्पर योग–श्रावण मास से आश्विन मास पर्यन्त (1 अग. से 27 अक्तू. तक) खप्पर योग का प्रभाव रहने से देश में महँगाई, भ्रष्टाचार तथा सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ निम्न व गरीब वर्ग तक न पहुँच पाने के कारण जनता में आवेश एवं असन्तोष की भावना रहेगी।

कार्तिक मास (28 अक्तू. से 25 नवं. तक) में पाँच बुधवार होने से देश के कुछ हिस्सों में दुर्भिक्ष, अनाज एवं वर्षा की कमी रहेगी। अनाज के भावों तथा महँगाई में वृद्धि होगी।

मासाद्यादिवसे सोमसुतवारो यदा भवेत्।
धान्यं महर्घं त्रीन्मासान्भावे वर्षे हि दुःखकृत्।।

इस मास मंगल-शुक्र-राहु का योग भी राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में विशेष उथल-पुथल करेगा।

आगे मार्गशीर्ष मास (26 नवं. से 25 दिसं. तक) में पाँच गुरुवार एवं पाँच शुक्रवार समाविष्ट होने से जम्मू-कश्मीर, उत्तर-प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, असम आदि में साम्प्रदायिक तनाव, उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं। देश में भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी एवं अत्यन्त महँगाई के विरुद्ध सरकारी योजनाओं का क्रियान्वन पर्याप्त नहीं रहेगा। सरकारी तंत्र असहाय प्राय हो जाएगा। सम्भ्रांत लोगों में धन का प्रसार अधिक बढ़ेगा।

प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी एवं भाजपा सरकार
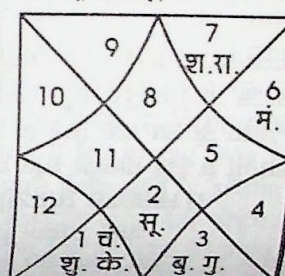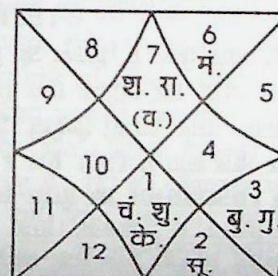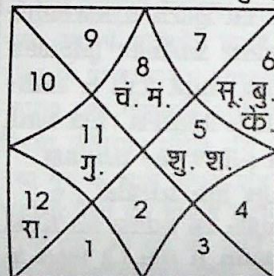
प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी का जन्म वृश्चिक लग्न में उदित हुआ है। लग्नेश मंगल लग्न भाव में ही स्वराशिगत होकर भाग्येश चन्द्रमा के साथ है। फलस्वरूप श्रीमोदी जी की कुण्डली में रूचक, राजयोग, नीचभंगराजयोग आदि अनेक शुभ योग बन रहे हैं। चन्द्रमा--मंगल योग लग्नस्थ होने से चंद्रमा का नीच योग भंग हो चुका है। वृश्चिक लग्न में भाग्येश चन्द्रमा की महादशा/अन्तर्दशा विशेष रूप से शुभ एवं भाग्योदयकारक होती है। गुरु-शुक्र-शनि ग्रह केन्द्र में हैं।

'जातक पारिजात ग्रन्थ' के अनुसार यदि नवमेश, लाभेश, धनेश, उनमें से एक भी चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो जातक को अखण्ड राज्य का पति बनावें।

धर्मेशलाभेश धनेश्वराणामेकोऽपि शीतद्युतिकेन्द्रवर्ती।-अखण्डसाम्राज्यपतित्वमेति।।

अन्यतर भी, यदि बृहस्पति, शुक्र और नवमेश केन्द्र या त्रिकोण या लाभ भाव में हों, तो जातक अनेक वाहनों से युक्त तथा भूमण्डल का राजा होता है।

गुरुशुक्रशुभाधीशाः केन्द्रकोणायगा यदि। अनेकपानसम्पन्नो मण्डलाधिपतिभवेत्।।

श्रीनरेन्द्र मोदी को चन्द्रमा की महादशा नवम्बर, 2011 से प्रारम्भ हो चुकी है। दिसम्बर, 2012 में श्री मोदी को पुनः तीसरी बार मुख्यमन्त्री पद प्राप्त हुआ। अब चन्द्र मध्य राहु की विषम परिस्थितियों से युक्त दशा में भारत देश का प्रधानमन्त्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। **गतवर्ष वि. संवत् २०७१ में हमने श्रीनरेन्द्र मोदी के प्रधानमन्त्री बनने की भविष्यवाणी स्पष्टतः कर दी गई थी। पृष्ठ 76 पर अन्तिम लाईन में पढ़ें–''यद्यपि नरेन्द्र के ही प्रदानमन्त्री पद के प्रबल योग बन रहे हैं।'' पुनः च, पृष्ठ 81 पर देखें–''कठिन चुनौतियों एवं अवरोधों के बावजूद उच्चतम पद प्राप्ति के योग हैं।''** जिन पाठकों ने पत्र या फोन द्वारा हमें प्रशंसापत्र एवं श्लाघा संदेश भेजे हैं, उनका हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

वर्तमान प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी ने 26 मई, 2014 ई. को सायं 6 बजकर 13 मिनट पर चर लग्न तुला में पद की शपथ ग्रहण की थी। जबकि उनके मंत्रीमण्डल ने स्थिर लग्न वृश्चिक में अपने-अपने पदों की शपथ ग्रहण की थी। प्रधानमन्त्री की शपथकालीन कुं. में स्थिरसंज्ञक ग्रह शनि अपनी उच्च राशि में संचार कर रहा है। उस पर योजना (नवम्) भाव में उच्चस्थ होकर बैठे गुरु की शुभ मित्र दृष्टि है। फलस्वरूप अनेक अवरोधों एवं आलोचनाओं के बावजूद मोदी सरकार भारत को विकास पथ पर अग्रसर करने में सफलता प्राप्त करेगी। मोदी सरकार के समक्ष देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं के सम्बन्ध में गम्भीर चुनौतियां एवं व्यवधान आएंगे। परन्तु अतिशीघ्र गति से बढ़ती महँगाई, बेमौसमी वर्षा, भ्रष्टाचार, पेयजल-बिजली व अन्य उपभोग्य, खाद्यान्न आदि वस्तुओं की कमी आदि समस्याओं का यथासम्भव निराकरण करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी लोकप्रियता बढ़ाएगी। वैश्विक जगत् पर मोदी जी के प्रभामंडल का प्रभाव बढ़ने के साथ--साथ भारत का भी गौरव बढ़ेगा।

श्री मोदी जी को वर्तमान काल में चन्द्र मध्ये राहु की अन्तर्दशा (6-05-2013 ई. से 5-11-2014 ई. तक) चल रही है। फलस्वरूप प्रधानमन्त्री पद सम्भालने के बाद पाँच मास तक मोदी जी के सामने देश की क्लिष्ट व पेचीदा आन्तरिक समस्याओं तथा विकट अन्तर्राष्ट्रीय (बाहरी) समस्याएं आएंगी। परन्तु जन्म कुं. में भी गुरु गोचरवश नवम भाव में आकर लग्न पर शुभ दृष्टि रखेगा। फलस्वरूप मोदी जी अपने विवेक एवं कुशल प्रबन्धन के बल सफलतापूर्वक अपना पद निर्वाह करेगें। आगे 5 नवं., 2014 ई. से 6 मार्च, 2016 ई. तक चंद्र मध्ये गुरु की अन्तर्दशा और भी शुभ एवं मोदी जी की प्रतिष्ठा व प्रभाव में वृद्धिकारक रहेगी।

शेष मन्त्रीमण्डल द्वारा वृश्चिक (स्थिर) लग्न में शपथ लेना भी सशक्त एवं प्रभावशाली सरकार का द्योतक है। लग्नेश (केन्द्रिय नेतृत्व, मंत्रीमण्डल के हालात का भाव) मंगल एकादश भाव (वाणिज्य, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, राष्ट्रीय आय का भाव) में होने से देश की अर्थव्यवस्था एवं व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाए जाएंगे। परन्तु द्वादश (गुप्त शत्रु, विपक्ष) भाव में **शनि-राहु** योग होने से अधिकतर समय आरोप-प्रत्यारोप में व्यतीत होगा।

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

हिमाचल प्रदेश–इसकी प्रभाव राशि **मीन** तथा नाम राशि **कर्क** है। 68वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में नाम राशि कर्क लग्न ही उदित हुआ है। लग्न में सूर्य, गुरु व शुक्र ग्रहों का संचार शुभ तथा प्रभाव राशि मीन पर चंद्र-केतु का संचार अशुभ परन्तु इस पर गुरु की दृष्टि होने से वर्ष 2015 ई. के पूर्वार्द्ध (जून) तक प्रदेश अनेक अवरोधों के बावजूद प्रगति मार्ग पर अग्रसर होगा। लग्न पर शनि की गुप्त शत्रु दृष्टि भी होने से प्रदेश एवं केन्द्रीय सरकार में खींचतान के कारण कुछ योजनाओं के क्रियान्वन में विलम्ब हो जाएगा। यद्यपि राज्य सरकार आम आदमी से लेकर उद्योगों, कृषकों को सस्ती बिजली उपलब्ध करवाकर अपनी प्रतिष्ठा एवं साख में वृद्धि करेगी। जुलाई, 2015 से वर्षान्त तक ग्रहस्थिति अनुसार विशेष प्राकृतिक आपदाएं, भूस्खलन, अतिवृष्टि एवं सड़क तथा प्राकृतिक दुर्घटनाओं के कारण कृषि, जन, धन आदि की हानि होने के संकेत हैं। सड़क एवं भवन-निर्माण तथा नवीन उद्योग स्थापन पर विशेष बल (ध्यान) दिया जाएगा।

पंजाब–इसकी नाम राशि कन्या तथा प्रभावराशि मीन है। गोचर ग्रहस्थिति अनुसार कन्या राशि पर वर्षभर राहु तथा मीन पर केतु का संचार रहेगा। भ्रष्टाचार एवं नशे की फैलती जड़ें लगातार गहरी होने से सरकार की प्रतिष्ठा व छवि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रदेश के कुछ भागों में कानून एवं व्यस्था की प्रणाली सुचारू न होकर असंतोषजनक रहेगी। बिजली तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि, महँगाई तथा ग्रामीण क्षेत्र की तुष्टीकरण नीति के कारण शहरी लोगों, छोटे व्यापारियों एवं उद्योगपतियों में गहन असन्तोष एवं आक्रोश की भावना रहेगी। आगामी वर्ष मन्त्रीमण्डल में विशेष परिवर्तन होंगे। अकाली पार्टी के अपने पुराने गठबन्धन भाजपा के साथ तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। अनेक क्लिष्ट एवं पेचीदा समस्याओं के बावजूद बादल सरकार द्वारा बिजली, सड़क-निर्माण, निर्माणाधीन पुलों, कृषि विकास, प्रापर्टी टैक्स में कमी या हटा करके यथासम्भव प्रयास करेगी तथा प्रान्त प्रगतिपथ पर अग्रसर होगा।

ध्यान दें, गतवर्ष इस कॉलम के अन्तर्गत पृष्ठ 79 पर लोकसभा चुनावों सम्बन्धी भविष्यवाणी स्पष्ट लिखी गई थी–'आगामी लोकसभा चुनावों में 13 में से यद्यपि कांग्रेस की अपेक्षा अकाली-भाजपा अधिक सीटों पर ही विजयी होंगे। परन्तु कुछ क्षेत्रों में कड़ी चुनौतियां तथा वोट प्रतिशत में कमी आएगी। कांग्रेस के प्रभाव में वृद्धि होगी।' पाठक जानते हैं कि यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।

जम्मू-कश्मीर–प्रभावराशि तुला तथा नाम राशि मकर है। प्रभावराशि पर शनि-साढ़ेसति का प्रभाव तथा मकर राशि पर सूर्य-बुध योग पर गुरु की अशुभ दृष्टि रहेगी। गतवर्ष इसी कॉलम में पृष्ठ 80 पर लोकसभा चुनावों सम्बन्धी भविष्यवाणी में स्पष्टतः लिखा गया था–***''आगामी विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों में पी.डी.पी. का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। जम्मू क्षेत्र से भाजपा के पुनः विजयी होने के संकेत हैं।''*** जोकि पूर्ण रूप से हू-ब-हू सत्य प्रमाणित हुई।

68वें स्वतन्त्र भारत कुं. में तुला राशि पर मंगल-शनि योग सत्तारूढ़ नैशनल कांफ्रेस पार्टी के लिए अशुभ प्रभाव करेगा। **आगामी अक्तू.-नवंबर, 2014 ई. में होने वाले विधानसभा चुनावों सम्बन्धी भविष्यवाणी हम गतवर्ष की पंचांग में ही कर चुके हैं। पुनः 68वें स्वतन्त्र भारत की कुं. में (15-08-2014 ई. के आगे) ग्रहस्थिति अनुसार पी.डी.पी. एवं भाजपा का जनाधार तथा सीटें बढ़ने के बावजूद स्पष्ट बहुमत किसी भी पार्टी को नहीं प्राप्त होगा। चुनाव पश्चात् गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आएगी। त्रिशंकु विधानसभा बनने के ही संकेत हैं।''** नवीन गठबन्धन सरकार राज्य में केन्द्रीय सहायता से अनेक स्पोटर्स, खेल, रेलवे, यातायात, स्वास्थ्य एवं पर्यटन सम्बन्धी अनेक योजनाओं का शिलान्यास तथा पुरानी योजनाओं को नई धार देकर अर्थव्यवस्था में सुधार लाया जाएगा। धारा 370 तथा कॉमन सिविल कोड सम्बन्धी ज्वलन्त मुद्दों पर केन्द्र एवं राज्य सरकार में वाद-विवाद जन्य माहौल रहेगा। आतंकवादी तत्त्व निरीह एवं निर्दोष लोगों को निमित्त बनाकर अपनी कुटिल स्वार्थपूर्ति एवं वारदातें करने में प्रयासरत होंगे।

हरियाणा–प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि मिथुन है। 68वें स्वतन्त्र भारत कुं. में मीन राशि पर चंद्र-केतु का संचार तथा मिथुन राशि द्वादशभावगत होगी। 26-01-2015 को 66वें गणतंत्र दिवस कुं. में भी वर्षभर मीन राशि पर केतु का संचार तथा मिथुन राशि अष्टमगत होगी। विपरीत ग्रहस्थिति अनुसार राज्य अक्तू.-नवं. में होने वाले विधानसभा चुनावों के बाद राजनीतिक अस्थिरता की ओर बढ़ेगा। इनैलो, हजकां, आप, भाजपा, कांग्रेस आदि पार्टियों के अतिरिक्त नई क्षेत्रीय पार्टियों का उदय होने से राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण रहेगा। यद्यपि भाजपा सबसे बड़े दल के रूप में उभरेगी, फलस्वरूप चुनाव पश्चात् परिस्थिति अनुसार इनैलो या हजकां से समर्थन लेकर या देकर गठबन्धन सरकार बनाई जा सकेगी। चुनाव पूर्व अपनी छवि को ठीक करने के लिए कांग्रेस सरकार लोकलुभावन विशेष राजनीतिक एवं सामाजिक कदम उठाएगी। नई सरकार पुराने कानूनों के प्रावधानों विशेषकर गुरुद्वारा कानून, भूमि अधिनियमों में विशेष रूप से परिवर्तन करेगी। अनेक मुद्दों पर पक्ष/प्रतिपक्ष द्वारा आरोप लगाए जाएंगे।

उत्तर-प्रदेश–प्रभाव राशि धनु तथा नाम राशि वृष है। 68वें स्वतन्त्र भारत (15-08-2014 ई.) की कुं. में धनु राशि षष्ठ भाव में मुंथा युक्त है तथा राशिस्वामी तथा मुंथेश गुरु लग्न भाव में उच्चराशिगत परन्तु अस्तगत है। मुंथा पर उच्च शनि की दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप सत्तारूढ़ सपा सरकार एवं केन्द्रीय सरकार के मध्य तनावपूर्ण सम्बन्ध बन सकते हैं। कानून एवं विकास की बिगड़ती व्यवस्था में सुधार हेतु उ.प्र. को छोटे राज्यों में विभाजित करने की माँग उठने लगेगी। इस सम्बन्ध कोई पुनर्गठन आयोग आदि कुछ स्थापित किया जा सकता है। कुछ क्षेत्रों से विरोध भावना का प्राकृटय होगा।

गतवर्ष के इसी कॉलम में पृष्ठ 80 पर स्पष्टतः पढ़ें–''भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा।''

दिल्ली–इसकी प्रभाव राशि मकर है। गतवर्ष इसी कॉलम में पृष्ठ 80 पर कांग्रेस सरकार के पदच्युत एवं भाजपा सम्बन्धी भविष्यवाणी स्पष्टतः पढ़ें–''---**एवं बढ़ती महँगाई शीला सरकार की साख एवं प्रतिष्ठा के लिए अत्यधिक क्षतिकारक सिद्ध होगी।** आगामी विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों में भाजपा निसन्देह सशक्त पार्टी के रूप **में उभरकर सामने आएगी। परन्तु सरकार बनाने के लिए आम पार्टी तथा स्वतन्त्र विधायकों का समर्थन लेना पड़ सकता है।''** जोकि वह नहीं ले पाई। तथा आप द्वारा अल्पकालिक सरकार बना ली गई। आगे जो हुआ, वह पाठकों को ज्ञात ही है।

आगामी 68वें (15-08-2014 ई.) स्वतन्त्र भारत कुं. तथा 66वें (26-01-2015 ई.) गणतन्त्र दिवस कुं. में ग्रहस्थिति अनुसार वर्षान्त तक पुनः चुनाव हो जाएंगे। वृश्चिक राशिस्थ शनि की मकर राशि पर दृष्टि रहेगी। वृश्चिक राशिस्थ शनि का अशुभ प्रभाव विशेष रूप से इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) पर पड़ता है–ऐसा शास्त्रों में वर्णित है।

यदा बृश्चिकगः सौरिः मेदिनी दुःख संयुता।
वर्षमात्रमथोचोर्ध्वामिंद्रप्रस्थो विनश्यति।।

अर्थात् एक वर्ष के भीतर दिल्ली शहर में नाशकारी (हिंसक) कृत्य अधिक हों। चुनावों में यद्यपि भाजपा को सशक्त बहुमत मिल जाएगा। परन्तु कांग्रेस भी सशक्त विपक्षी पार्टी के रूप में उभरकर सामने आएगी। आप का जनाधार कम होगा। आगे हरि इच्छा प्रबल है।

उपरोक्त भविष्यवाणियां देश, स्थान आदि की जन्म-कुण्डलियों में ग्रहों की स्थिति, दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव व संकेतानुसार अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वज्ञ एवं सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता तो स्वयं भगवान् ही हैं–

''फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।''

लेख लिपिबद्धम्–
श्रावण शुक्ल प्रतिपदा
10 अग., रविवार, 2014 ई.

शुभ चिन्तकः
पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र परम श्रद्धेय स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी,
जालन्धर (पंजाब)

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2015-16 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश (वर्षारम्भ में धनु में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	19/26	17 अग.	सिंह	12/25
13 फर.	कुम्भ	8/26	17 सितं.	कन्या	12/19
14 मार्च	मीन	29/18	17 अक्तू.	तुला	24/15
14 अप्रै.	मेष	13/45	16 नवं.	वृश्चिक	24/02
15 मई	वृष	10/37	16 दिसं.	धनु	14/42
15 जून	मिथुन	17/12	14 जन.(16)	मकर	25/25
16 जुला.	कर्क	28/02	13 फर.	कुम्भ	14/24
			14 मार्च	मीन	11/17

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
23 मार्च	मेष	22/46	15 सितं.	सिंह	21/29
3 मई	वृष	23/53	3 नवं.	कन्या	8/07
15 जून	मिथुन	25/08	24 दिसं.	तुला	05/57
30 जुला.	कर्क	26/18	20 फर.(16)	वृश्चिक	16/42

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
27 मार्च	मीन	25/34	29 अक्तू.	तुला	22/42
12 अप्रै.	मेष	8/40	17 नवं.	वृश्चिक	7/30
27 अप्रै.	वृष	12/04	6 दिसं.	धनु	12/01
19 मई	वक्री	7/17	26 दिसं.	मकर	23/49
11 जून	मार्गी	28/02	5 जन(16)	वक्री	18/34
5 जुला.	मिथुन	12/13	14 जन.	व. धनु	15/01
20 जुला.	कर्क	23/02	25 जन.	मार्गी	27/20
4 अग.	सिंह	18/16	8 फर.	मकर	27/06
23 अग.	कन्या	8/38	1 मार्च	कुम्भ	24/11
17 सितं.	वक्री	23/38	18 मार्च	मीन	28/36
9 अक्तू.	मार्गी	20/27	2 अप्रै.	मेष	27/44

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कर्क में वक्री)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
8 अप्रै.	मार्गी	22/23	8 जन.(16)	वक्री	10/05
14 जुला.	सिंह	6/23			

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
6 अप्रै.	वृष	19/43	5 जुला.	सिंह	9/50
2 मई	मिथुन	20/33	25 जुला.	वक्री	14/58
30 मई	कर्क	20/55	13 अग.	व. कर्क	17/23

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
6 सितं.	मार्गी	14/01
30 सितं.	सिंह	28/14
3 नवं.	कन्या	7/30
30 नवं.	तुला	7/45
25 दिसं.	वृश्चिक	15/14
(सन् 2016 ई.)		
19 जन.	धनु	6/20
12 फर.	मकर	14/49
7 मार्च	कुम्भ	21/06
31 मार्च	मीन	27/23

—शनि—

(संवतारम्भ में वृश्चिक में वक्री)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
2 अग.	मार्गी	11/24
25 मार्च(16)	वक्री	15/17

सारा संवत् वृश्चिक राशि में ही संचार करेगा।

राहु (संवतारम्भ में कन्या में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
29 जन.(16)	सिंह	25/21

—केतु—

(संवतारम्भ में मीन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
29 जन.(16)	कुम्भ	25/21

—यूरेनस—

सारा संवत् मीन राशि में ही संचार करेगा।

—नैपच्यून—

सारा संवत् कुम्भ राशि में ही संचार करेगा।

—प्लूटो—

वर्षभर धनु राशि में ही संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

सारा संवत् मार्गी अवस्था में ही संचार करेगा।

बुध

ता. मास		घं. मिं.
19 मई	वक्री	7/17
11 जून	मार्गी	28/02
17 सितं.	वक्री	23/38
9 अक्तू.	मार्गी	20/27
(सन् 2016 ई.)		
5 जन.	वक्री	18/34
25 जन.	मार्गी	27/20

गुरु

ता. मास		घं. मिं.
8 अप्रै.	मार्गी	22/23
8 जन.(16)	वक्री	10/05

शुक्र

ता. मास		घं. मिं.
25 जुला.	वक्री	14/58
6 सितं.	मार्गी	14/01

शनि

ता. मास		घं. मिं.
14 मार्च(15)	वक्री	20/21
2 अग.	मार्गी	11/24
25 मार्च(16)	वक्री	15/17

यूरेनस

ता. मास		घं. मिं.
26 जुला.	वक्री	16/02
26 दिसं.	मार्गी	9/19

नैपच्यून

ता. मास		घं. मिं.
12 जून	वक्री	14/32
18 नवं.	मार्गी	21/58

प्लूटो

ता. मास		घं. मिं.
17 अप्रै.	वक्री	09/18
25 सितं.	मार्गी	12/21

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०७२)

मंगल

ता. मास		घं. मिं.
10 अप्रै.	पश्चिम-अस्त	12/05
12 अग.	पूर्वोदय	25/34

बुध

ता. मास		घं. मिं.
27 मार्च	पूर्वेऽस्त	18/27
22 अप्रै.	पश्चिमोदय	7/54
22 मई	व. पश्चिम-अस्त	14/37
8 जून	व. पूर्वोदय	13/49
12 जुला.	पूर्व में अस्त	12/06
5 अग.	पश्चिमोदय	11/37
24 सितं.	व. पश्चिम-अस्त	20/56
7 अक्तू	व. पूर्वोदय	9/40
28 अक्तू	पूर्व में अस्त	5/01
11 दिसं.	पश्चिमोदय	15/49

बुध (2016 ई.)

ता. मास		घं. मिं.
8 जन.	व. पश्चिमाऽस्त	27/41
20 जन.	व. पूर्वोदय	11/44
8 मार्च	पूर्व में अस्त	25/07
5 अप्रै.	पश्चिम में उदय	19/53

गुरु

ता. मास		घं. मिं.
12 अग.	पश्चिम में अस्त	11/34
7 सितं.	पूर्व में उदय	15/52

शुक्र

ता. मास		घं. मिं.
5 अग.	पश्चिम में अस्त	10/12
20 अग.	पूर्व में उदय	20/17

शनि

ता. मास		घं. मिं.
13 नवं.	पश्चिम-अस्त	9/50
16 दिसं.	पूर्वोदय	23/53

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् २०७२ वि. (सं. 2015-16 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2015 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
18 मार्च	उ.भा. (1)	13/36
21 मार्च	उ.भा. (2)	22/03
25 मार्च	उ.भा. (3)	6/39
28 मार्च	उ.भा. (4)	16/15
31 मार्च	रेव. (1)	24/21
4 अप्रै.	रेव. (2)	9/31
7 अप्रै.	रेव. (3)	18/47
10 अप्रै.	रेव. (4)	28/11
14 अप्रै.	अश्वि(1)मेष	13/45
17 अप्रै.	अश्वि (2)	23/29
21 अप्रै.	अश्वि (3)	9/20
24 अप्रै.	अश्वि (4)	19/20
28 अप्रै.	भर. (1)	05/31
1 मई	भर. (2)	15/54
4 मई	भर. (3)	26/22
8 मई	भर. (4)	25/40
11 मई	कृति (1)	23/46
15 मई	कृति (2) वृष	10/37
18 मई	कृति (3)	21/37
22 मई	कृति (4)	8/39
25 मई	रोहि. (1)	19/53
29 मई	रोहि. (2)	7/13
1 जून	रोहि. (3)	18/40
5 जून	रोहि. (4)	6/13
8 जून	मृग. (1)	17/48
11 जून	मृग. (2)	29/29
15 जून	मृग(3)मिथुन	17/12
18 जून	मृग. (4)	28/56
22 जून	आर्द्रा (1)	16/46
25 जून.	आर्द्रा (2)	28/36
29 जून	आर्द्रा (3)	16/33
2 जुला.	आर्द्रा (4)	28/27
6 जुला.	पुन. (1)	16/25
9 जुला.	पुन. (2)	28/18

2015 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
13 जुला.	पुन. (3)	16/13
16 जुला.	पुन.(4)कर्क	28/02
20 जुला.	पुष्य (1)	15/51
23 जुला.	पुष्य (2)	27/38
27 जुला.	पुष्य (3)	15/24
30 जुला.	पुष्य (4)	27/07
3 अग.	आश्ले (1)	14/48
6 अग.	आश्ले (2)	26/21
10 अग.	आश्ले (3)	13/49
13 अग.	आश्ले (4)	25/10
17 अग.	मघा (1) सिंह	12/25
20 अग.	मघा (2)	23/33
24 अग.	मघा (3)	10/37
27 अग.	मघा (4)	21/34
31 अग.	पू.फा. (1)	8/24
3 सितं.	पू.फा. (2)	19/05
7 सितं.	पू.फा. (3)	5/39
10 सितं.	पू.फा. (4)	16/01
13 सितं.	उ.फा. (1)	26/15
17 सितं.	उफा(2)कन्या	12/19
20 सितं.	उ.फा. (3)	22/14
24 सितं.	उ.फा. (4)	8/02
27 सितं.	हस्त (1)	17/43
30 सितं.	हस्त (2)	27/15
4 अक्तू.	हस्त (3)	12/36
7 अक्तू.	हस्त (4)	21/45
11 अक्तू.	चित्रा (1)	6/45
14 अक्तू.	चित्रा (2)	15/34
17 अक्तू.	चित्रा(3)तुला	24/15
21 अक्तू.	चित्रा (4)	8/47
24 अक्तू.	स्वा. (1)	17/12
27 अक्तू.	स्वा. (2)	25/29
31 अक्तू.	स्वा. (3)	9/37
3 नवं.	स्वा. (4)	17/35

2015-16 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
6 नवं.	विशा. (1)	25/25
10 नवं.	विशा. (2)	9/05
13 नवं.	विशा. (3)	16/38
16 नवं.	विशा.(4)वृश्चि.	24/02
20 नवं.	अनु. (1)	7/22
23 नवं.	अनु. (2)	14/37
26 नवं.	अनु. (3)	21/46
29 नवं.	अनु. (4)	28/49
3 दिसं..	ज्ये. (1)	11/45
6 दिसं.	ज्ये. (2)	18/37
9 दिसं.	ज्ये. (3)	25/22
13 दिसं.	ज्ये. (4)	8/03
16 दिसं.	मूल (1) धनु	14/42
19 दिसं.	मूल (2)	21/17
22 दिसं.	मूल (3)	27/52
26 दिसं.	मूल (4)	10/27
29 दिसं.	पू.षा. (1)	16/59
(सन् 2016 ई.)		
1 जन.	पू.षा. (2)	23/29
5 जन.	पू.षा. (3)	05/58
8 जन.	पू.षा. (4)	12/27
11 जन.	उ.षा. (1)	18/55
14 जन.	उषा 2 मकर	25/25
18 जन.	उ.षा. (3)	7/58
21 जन.	उ.षा. (4)	14/35
24 जन.	श्रव. (1)	21/14
27 जन.	श्रव. (2)	27/57
31 जन.	श्रव. (3)	10/43
3 फर.	श्रव. (4)	17/31
6 फर.	धनि. (1)	24/24
10 फर.	धनि. (2)	7/21
13 फर.	धनि.(3)कुंभ	14/24
16 फर.	धनि. (4)	21/34
19 फर.	शत. (1)	28/52

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
23 फर.	शत. (2)	12/18
26 फर.	शत. (3)	19/50
29 फर.	शत. (4)	27/28
4 मार्च	पू.भा. (1)	11/14
7 मार्च	पू.भा. (2)	19/06
10 मार्च	पू.भा. (3)	27/08
14 मार्च	पूभा(4)मीन	11/17
17 मार्च	उ.भा. (1)	19/36
20 मार्च	उ.भा. (2)	28/06
24 मार्च	उ.भा. (3)	12/46
27 मार्च	उभा (4)	21/34
31 मार्च	रेव. (1)	6/32
3 अप्रै.	रेव. (2)	15/38
6 अप्रै.	रेव. (3)	24/51
10 अप्रै.	रेव. (4)	10/14

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रेव. (4) में)

23 मार्च	अश्वि(1)मेष	22/46
28 मार्च	अश्वि (2)	10/02
1 अप्रै.	अश्वि (3)	21/49
6 अप्रै.	अश्वि (4)	10/09
10 अप्रै.	भर. (1)	23/02
15 अप्रै.	भर. (2)	12/27
19 अप्रै.	भर. (3)	26/25
24 अप्रै.	भर. (4)	16/57
29 अप्रै.	कृति. (1)	8/07
3 मई	कृति (2)वृष	23/53
8 मई	कृति. (3)	16/17
13 मई	कृति. (4)	9/16
17 मई	रोहि. (1)	26/47
22 मई	रोहि. (2)	20/59
27 मई	रोहि. (3)	15/46
1 जून	रोहि. (4)	11/13
6 जून	मृग. (1)	7/16

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2015 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
10 जून	मृग. (2)	27/54
15 जून	मृग(3)मिथु.	25/08
20 जून	मृग. (4)	23/00
25 जून	आर्द्रा(1)	21/23
30 जून	आर्द्रा (2)	20/25
5 जुला.	आर्द्रा (3)	20/03
10 जुला.	आर्द्रा (4)	20/15
15 जुला.	पुन. (1)	20/54
20 जुला.	पुन. (2)	22/10
25 जुला.	पुन. (3)	23/58
30 जुला.	पुर्न 4 कर्क	26/18
4 अग.	पुष्य (1)	29/12
10 अग.	पुष्य (2)	8/32
15 अग.	पुष्य (3)	12/22
20 अग.	पुष्य (4)	16/41
25 अग.	आश्ले (1)	21/30
30 अग.	आश्ले (2)	26/49
5 सितं.	आश्ले (3)	8/37
10 सितं.	आश्ले (4)	14/48
15 सितं.	मघा(1)सिंह	21/29
20 सितं.	मघा (2)	28/38
26 सितं.	मघा (3)	12/18
1 अक्तू.	मघा (4)	20/25
7 अक्तू.	पू.फा. (1)	05/01
12 अक्तू.	पू.फा. (2)	14/07
17 अक्तू.	पू.फा. (3)	23/43
23 अक्तू.	पू.फा. (4)	9/54
28 अक्तू.	उ.फा. (1)	20/43
3 नवं.	उफा 2 कन्या	8/07
8 नवं.	उ.फा. (3)	20/07
14 नवं.	उ.फा. (4)	8/53
19 नवं.	हस्त (1)	22/28
25 नवं.	हस्त (2)	12/57
30 नवं.	हस्त (3)	28/20
6 दिसं.	हस्त (4)	20/44
12 दिसं.	चित्रा (1)	14/21

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2015-16 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
18 दिसं.	चित्रा (2)	9/22
24 दिसं.	चित्रा 3 तुला	5/57
29 दिसं.	चित्रा (4)	28/15
(सन् 2016 ई.)		
4 जन.	स्वा. (1)	28/33
11 जन.	स्वा. (2)	7/17
17 जन.	स्वा. (3)	12/53
23 जन.	स्वा. (4)	21/57
30 जन.	विशा. (1)	11/06
5 फर.	विशा. (2)	29/23
13 फर.	विशा. (3)	6/29
20 फर.	विशा 4 वृश्चि.	16/42
28 फर.	अनु. (1)	15/24
8 मार्च	अनु. (2)	9/29
18 मार्च	अनु. (3)	14/51
1 अप्रै.	अनु. (4)	14/59

बुध नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में शत. (4) में)

22 मार्च	पू.भा. (1)	7/12
24 मार्च	पू.भा. (2)	6/26
25 मार्च	पू.भा. (3)	28/33
27 मार्च	पूभा 4 मीन	25/34
29 मार्च	उ.भा. (1)	21/35
31 मार्च	उ.भा. (2)	16/51
2 अप्रै.	उ.भा. (3)	10/47
3 अप्रै.	उ.भा. (4)	28/06
5 अप्रै.	रेवती (1)	20/35
7 अप्रै.	रेव. (2)	12/25
8 अप्रै.	रेव. (3)	27/39
10 अप्रै.	रेव. (4)	18/20
12 अप्रै.	अश्वि (1) मेष	8/40
13 अप्रै.	अश्वि (2)	22/45
15 अप्रै.	अश्वि (3)	12/47
16 अप्रै.	अश्वि (4)	26/56

बुध नक्षत्र प्रवेश

2015 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
18 अप्रै.	भर. (1)	17/30
20 अप्रै.	भर. (2)	8/40
21 अप्रै.	भर. (3)	10/08
23 अप्रै.	भर. (4)	18/29
25 अप्रै.	कृति. (1)	13/59
27 अप्रै.	कृति 2 वृष	12/04
29 अप्रै.	कृति. (3)	13/43
1 मई	कृति. (4)	20/14
4 मई	रोहि. (1)	9/55
7 मई	रोहि. (2)	11/46
11 मई	रोहि. (3)	15/54
19 मई	वक्री	7/17
27 मई	व. रोहि. (2)	16/24
2 जून.	व. रोहि. (1)	18/36
11 जून	मार्गी	28/02
20 जून	रोहि. (2)	20/13
24 जून	रोहि. (3)	24/56
28 जून	रोहि. (4)	05/39
30 जून	मृग. (1)	22/24
3 जुला.	मृग (2)	7/57
5 जुला.	मृग 3 मिथुन	12/13
7 जुला.	मृग. (4)	12/41
9 जुला.	आर्द्रा (1)	10/12
11 जुला.	आर्द्रा (2)	05/25
12 जुला.	आर्द्रा (3)	22/44
14 जुला.	आर्द्रा (4)	14/42
16 जुला.	पुर्न (1)	05/39
17 जुला.	पुन. (2)	19/49
19 जुला.	पुन. (3)	9/33
20 जुला.	पुन.(4)कर्क	23/02
22 जुला.	पुष्य (1)	12/30
23 जुला.	पुष्य (2)	26/08
25 जुला.	पुष्य (3)	14/53
27 जुला.	पुष्य (4)	6/33
28 जुला.	आश्ले(1)	21/38
30 जुला.	आश्ले.(2)	13/26

2015 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
1 अग.	आश्ले (3)	6/03
2 अग.	आश्ले (4)	23/39
4 अग.	मघा(1)सिंह	18/16
6 अग.	मघा (2)	13/59
8 अग.	मघा (3)	10/53
10 अग.	मघा (4)	9/05
12 अग.	पू.फा. (1)	8/38
14 अग.	पू.फा. (2)	9/46
16 अग.	पू.फा. (3)	12/31
18 अग.	पू.फा. (4)	17/05
20 अग.	उ.फा. (1)	23/40
23 अग.	उफा (2) कं.	8/38
25 अग.	उ.फा. (3)	20/26
28 अग.	उ.फा. (4)	11/35
31 अग.	हस्त (1)	7/41
3 सितं.	हस्त (2)	10/27
6 सितं.	हस्त (3)	24/35
11 सितं.	हस्त (4)	18/16
17 सितं.	वक्री	23/38
23 सितं.	व. हस्त (3)	15/46
27 सितं.	व. हस्त (2)	13/05
30 सितं.	व. हस्त (1)	15/25
3 अक्तू.	व. उफा(4)	17/21
9 अक्तू.	मार्गी	20/27
15 अक्तू.	हस्त (1)	24/37
18 अक्तू.	हस्त (2)	24/00
21 अक्तू.	हस्त (3)	11/14
23 अक्तू.	हस्त (4)	17/09
25 अक्तू.	चित्रा (1)	20/18
27 अक्तू.	चित्रा (2)	21/56
29 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	22/42
31 अक्तू.	चित्रा (4)	23/06
2 नवं.	स्वा. (1)	23/22
4 नवं.	स्वा. (2)	23/43
6 नवं.	स्वा. (3)	24/16
8 नवं.	स्वा. (4)	25/01
10 नवं.	विशा. (1)	26/11

2015-16 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
12 नवं.	विशा. (2)	27/37
14 नवं.	विशा. (3)	29/24
17 नवं.	विशा. 4 वृश्चि.	7/30
19 नवं.	अनु. (1)	9/54
21 नवं.	अनु. (2)	15/07
23 नवं.	अनु. (3)	15/29
25 नवं.	अनु. (4)	18/35
27 नवं.	ज्ये. (1)	21/51
29 नवं.	ज्ये. (2)	25/15
1 दिसं.	ज्ये. (3)	28/45
4 दिसं.	ज्ये. (4)	8/23
6 दिसं.	मूल.(1)धनु	12/01
8 दिसं.	मूल (2)	15/47
10 दिसं.	मूल (3)	19/42
12 दिसं.	मूल (4)	23/50
14 दिसं.	पू.षा. (1)	28/18
17 दिसं.	पू.षा. (2)	9/22
19 दिसं.	पू.षा. (3)	15/22
21 दिसं.	पू.षा. (4)	22/54
24 दिसं.	उ.षा. (1)	9/01
26 दिसं.	उषा(2)मकर	23/49
29 दिसं.	उ.षा. (3)	25/03
(सन् 2016 ई.)		
3 जन.	उषा (4)	24/20
5 जन.	वक्री	18/34
7 जन.	व. उ.षा.(3)	11/16
11 जन.	व. उ.षा. (2)	22/17
14 जन.	व. उषा(1)धनु	15/01
16 जन.	व. पूषा (4)	28/35
20 जन.	व. पूषा (3)	27/44
25 जन.	मार्गी	27/20
1 फर.	पू.षा. (4)	18/45
5 फर.	उ.षा. (1)	20/19
8 फर.	उषा (2)मक	27/06
11 फर.	उ.षा. (3)	25/18
14 फर.	उ.षा. (4)	18/26

बुध नक्षत्र प्रवेश

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
17 फर.	श्रव. (1):	8/08
19 फर.	श्रव. (2)	19/08
21 फर.	श्रव. (3)	28/03
24 फर.	श्रव. (4)	11/16
26 फर.	धनि. (1)	16/54
28 फर.	धनि. (2)	21/10
1 मार्च	धनि. 3 कुंभ	24/11
3 मार्च	धनि. (4)	26/00
5 मार्च	शत. (1)	26/43
7 मार्च	शत. (2)	26/23
9 मार्च	शत. (3)	25/02
11 मार्च	शत. (4)	22/43
13 मार्च	पू.भा. (1)	19/28
15 मार्च	पू.भा. (2)	15/20
17 मार्च	पू.भा. (3)	10/22
18 मार्च	पूभा (4)मीन	28/36
20 मार्च	उ.भा. (1)	22/05
22 मार्च	उ.भा. (2)	14/55
24 मार्च	उ.भा. (3)	7/09
25 मार्च	उ.भा. (4)	22/55
27 मार्च	रेव. (1)	14/19
29 मार्च	रेव. (2)	05/29
30 मार्च	रेव (3)	20/38
1 अप्रै.	रेव. (4)	11/59
2 अप्रै.	अश्वि(1)मेष	27/44
4 अप्रै.	अश्वि (2)	20/24
6 अप्रै.	अश्वि (3)	14/17
8 अप्रै.	अश्वि (4)	9/59
10 अप्रै.	भर. (1)	8/24

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में आश्ले (1) में वक्री)

तिथि	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
8 अप्रै.	मार्गी	22/23
10 मई	आश्ले (2)	7/41
6 जून	आश्ले (3)	14/59
26 जून	आश्ले (4)	17/25
14 जुला.	मघा(1)सिंह	6/23
30 जुला.	मघा (2)	12/37

गुरु नक्षत्र प्रवेश

2015-16 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
14 अग.	मघा (3)	27/11
30 अग.	मघा (4)	8/32
14 सितं.	पू.फा. (1)	21/34
30 सितं.	पू.फा. (2)	18/10
17 अक्तू.	पू.फा. (3)	13/45
5 नवं.	पू.फा. (4)	8/08
28 नवं.	उ.फा. (1)	20/49
(सन् 2016 ई.)		
8 जन.	वक्री	10/05
17 फर.	व. पू.फा. (4)	25/04
15 मार्च	व. पू.फा. (3)	12/42

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अश्वि (4) में)

तिथि	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
23 मार्च	भर. (1)	19/22
26 मार्च	भर. (2)	14/10
29 मार्च	भर. (3)	9/10
31 मार्च	भर. (4)	28/26
3 अप्रै.	कृति (1)	23/57
6 अप्रै.	कृति 2 वृष	19/43
9 अप्रै.	कृति (3)	15/47
12 अप्रै.	कृति (4)	12/08
15 अप्रै.	रोहि. (1)	8/45
18 अप्रै.	रोहि. (2)	5/44
20 अप्रै.	रोहि. (3)	27/03
23 अप्रै.	रोहि. (4)	24/45
26 अप्रै.	मृग. (1)	22/52
29 अप्रै.	मृग. (2)	21/28
2 मई	मृग 3 मिथुन	20/33
5 मई	मृग. (4)	20/11
8 मई	आर्द्रा (1)	20/25
11 मई	आर्द्रा (2)	21/18
14 मई	आर्द्रा (3)	22/53
17 मई	आर्द्रा (4)	25/14
20 मई	पुर्न (1)	28/28
24 मई	पुर्न (2)	8/44
27 मई	पुर्न (3)	14/09

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2015 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
30 मई	पुर्न (4) कर्क	20/55
3 जून	पुष्य (1)	5/15
6 जून	पुष्य (2)	15/28
9 जून	पुष्य (3)	27/52
13 जून	पुष्य (4)	18/58
17 जून	आश्ले (1)	13/24
21 जून	आश्ले (2)	12/06
25 जून	आश्ले (3)	16/56
30 जून	आश्ले (4)	6/17
5 जुला.	मघा(1)सिंह	9/50
11 जुला.	मघा (2)	17/27
24 जुला.	मघा (3)	9/40
25 जुला.	वक्री	14/58
26 जुला.	व. मघा (2)	19/04
7 अग.	व. मघा (1)	18/15
13 अग.	व. आश्ले (4) कर्क	17/23
18 अग.	व. आश्ले(3)	27/17
24 अग.	व. आश्ले(2)	29/18
6 सितं.	मार्गी	14/01
19 सितं.	आश्ले (3)	14/13
25 सितं.	आश्ले (4)	24/35
30 सितं.	मघा(1)सिंह	28/14
5 अक्तू.	मघा (2)	16/54
9 अक्तू.	मघा (3)	20/34
13 अक्तू.	मघा (4)	18/03
17 अक्तू.	पू.फा. (1)	11/03
20 अक्तू.	पू.फा. (2)	24/36
24 अक्तू.	पू.फा. (3)	11/23
27 अक्तू.	पू.फा. (4)	19/53
30 अक्तू.	उ.फा. (1)	26/30
3 नवं.	उफा 2 कन्या	7/30
6 नवं.	उ.फा. (3)	11/06
9 नवं.	उ.फा. (4)	13/31
12 नवं.	हस्त (1)	14/55
15 नवं.	हस्त (2)	15/27
18 नवं.	हस्त (3)	15/10
21 नवं.	हस्त (4)	14/12
24 नवं.	चित्रा (1)	12/37

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2015-16 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
27 नवं.	चित्रा (2)	10/28
30 नवं.	चित्रा 3 तुला	7/45
2 दिसं.	चित्रा (4)	29/36
5 दिसं.	स्वा. (1)	25/00
8 दिसं.	स्वा. (2)	21/02
11 दिसं.	स्वा. (3)	16/45
14 दिसं.	स्वा. (4)	12/07
17 दिसं.	विशा. (1)	7/15
19 दिसं.	विशा. (2)	26/08
22 दिसं.	विशा. (3)	20/47
25 दिसं.	विशा 4 वृश्चि.	15/14
28 दिसं.	अनु. (1)	9/29
30 दिसं.	अनु. (2)	27/33
(सन् 2016 ई.)		
2 जन.	अनु. (3)	21/28
5 जन.	अनु. (4)	15/13
8 जन.	ज्ये. (1)	8/50
10 जन.	ज्ये. (2)	26/20
13 जन.	ज्ये. (3)	19/45
16 जन.	ज्ये. (4)	13/06
19 जन.	मूल (1) धनु	6/20
21 जन.	मूल (2)	23/31
24 जन.	मूल (3)	16/37
27 जन.	मूल (4)	9/39
29 जन.	पू.षा. (1)	26/38
1 फर.	पू.षा. (2)	19/33
4 फर.	पू.षा. (3)	12/25
6 फर.	पू.षा. (4)	29/15
9 फर.	उ.षा. (1)	22/02
12 फर.	उषा 2 मकर	14/49
15 फर.	उ.षा. (3)	7/34
17 फर.	उ.षा. (4)	24/18
20 फर.	श्रव. (1)	17/02
23 फर.	श्रव. (2)	9/45
25 फर.	श्रव. (3)	26/26
28 फर.	श्रव. (4)	19/07
2 मार्च	धनि. (1)	11/47
4 मार्च	धनि. (2)	28/26

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
7 मार्च	धनि. 3 कुंभ	21/06
10 मार्च	धनि. (4)	13/46
13 मार्च	शत. (1)	6/25
15 मार्च	शत. (2)	23/06
18 मार्च	शत. (3)	15/47
21 मार्च	शत. (4)	8/29
23 मार्च	पू.भा. (1)	25/12
26 मार्च	पू.भा. (2)	27/55
29 मार्च	पू.भा. (3)	10/39
31 मार्च	पूभा 4 मीन	27/23
3 अप्रै.	उ.भा. (1)	20/08
6 अप्रै.	उ.भा. (2)	12/54
9 अप्रै.	उ.भा. (3)	5/40

शनि नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अनु. (3) में वक्री)

16 अप्रै.	व. अनु. (2)	12/55
4 जून	व. अनु. (1)	11/36
2 अग.	मार्गी	11/24
27 सितं.	अनु. (2)	25/55
31 अक्तू.	अनु. (3)	27/15
29 नवं.	अनु. (4)	21/40
28 दिसं.	ज्ये. (1)	14/58
(सन् 2016 ई.)		
31 जन.	ज्ये. (2)	15/54
25 मार्च	वक्री	15/17

राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में हस्त (3) में)

21 मार्च	हस्त (2)	12/38
23 मई	हस्त (1)	10/30
25 जुला.	उ.फा. (4)	8/15
26 सितं.	उ.फा. (3)	5/59
27 नवं.	उ.फा. (2)	27/38
(सन् 2016 ई.)		
29 जन.	उफा 1 सिंह	25/21
1 अप्रै.	पू.फा. (4)	22/58

केतु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रेव (1) में)

2015-16 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
21 मार्च	उ.भा. (4)	12/36
23 मई	उ.भा. (3)	10/30
25 जुला.	उ.भा. (2)	8/15
26 सितं.	उ.भा. (1)	5/59
27 नवं.	पू.भा. (4)	27/38
(सन् 2016 ई.)		
27 जन.	पूभा 3 कुंभ	25/21
1 अप्रै.	पूभा (2)	22/58

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रेव. (2) में)

23 अप्रै.	रेव. (3)	21/23
26 जुला.	वक्री	16/02
9 नवं.	व. रेव. (2)	22/19
26 दिसं.	मार्गी	9/19
9 फर. (16)	रेव. (3)	16/11

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में शत. (3) में)

12 जून	वक्री	14/32
11 अक्तू.	व. शत. (2)	17/07
18 नवं.	मार्गी	21/58
25 दिसं.	शत. (3)	29/34
3 अप्रै. (16)	शत. (4)	11/48

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.षा. (3) में)

17 अप्रै.	वक्री	9/18
13 जुला.	व. पूषा (2)	7/40
25 सितं.	मार्गी	12/21
1 दिसं.	पू.षा. (3)	13/29
31 मार्च (16)	पूषा (4)	29/25

ग्रहों की अंशात्मक युतियां (सन् 2015-16 ई.)

30 जन.	सूर्य-बुध	(मकर)
20 फर.	मंग.-शुक्र	(मीन)
10 अप्रै.	सूर्य-बुध	(मीन)
23 अप्रै.	मंग.-बुध	(मेष)
27 मई	मंग.-बुध	(वृष)
14 जून	सूर्य-मंग.	(वृष)
1 जुला.	गुरु-शुक्र	(कर्क)
16 जुला.	मंग-बुध	(मिथुन)
23 जुला.	सूर्य-बुध	(मिथुन)
4 अग.	गुरु-शुक्र	(सिंह)
7 अग.	बुध-गुरु	(सिंह)
15 अग.	सूर्य-शुक्र	(कर्क)
26 अग.	सूर्य-गुरु	(सिंह)
29 अग.	बुध-राहु	(कन्या)
1 सितं.	मंग.-शुक्र	(कर्क)
24 सितं.	सूर्य-राहु	(कन्या)
30 सितं.	सूर्य-बुध	(कन्या)
18 अक्तू.	मंग.-गुरु	(सिंह)
25 अक्तू.	गुरु-शुक्र	(सिंह)
3 नवं.	मंग.-शुक्र	(सिंह)
7 नवं.	शुक्र-राहु	(कन्या)
10 नवं.	मंग.-राहु	(कन्या)
17 नवं.	सूर्य-बुध	(वृश्चिक)
25 नवं.	बुध-शनि	(वृश्चिक)
30 नवं.	सूर्य-शनि	(वृश्चिक)
(सन 2016 ई.)		
9 जन.	शुक्र-शनि	(वृश्चिक)
14 जन.	सूर्य-बुध	(धनु)
24 मार्च	सूर्य-बुध	(मीन)

द्विग्रही-योग—सन् 2015-16

बुध-शुक्र	1 जन. से 22 जन. (मकर)
सूर्य-शुक्र	14 जन. से 22 जन. (मकर)
मंग.-शुक्र	22 जन. से 12 फर. (कुम्भ)
मंग.-शुक्र	16 फर. से 12 मार्च (मीन)
सूर्य-मंग.	14 मार्च से 23 मार्च (मीन)
मंग.-शुक्र	23 मार्च से 6 अप्रै. (मेष)
सूर्य-बुध	27 मार्च से 12 अप्रै. (मीन)
मंग.-बुध	12 अप्रै. से 27 अप्रै. (मेष)
सूर्य-बुध	14 अप्रै. से 27 अप्रै. (मेष)
सूर्य-मंग.	14 अप्रै. से 3 मई (मेष)
मंग.-बुध	3 मई से 15 जून (वृष)
सूर्य-मंग.	15 मई से 16 जुला. (वृष, मिथुन)
सूर्य-बुध	15 मई से 15 जून (वृष)
गुरु-शुक्र	30 मई से 4 जुला. (कर्क)
मंग.-बुध	5 जुला. से 20 जुला. (मिथुन)
सूर्य-बुध	5 जुला. से 16 जुला. (मिथुन)
सूर्य-बुध	20 जुला. से 4 अग. (कर्क)
गुरु-शुक्र	14 जुला. से 13 अग. (सिंह)
सूर्य-मंग.	30 जुला. से 17 अग. (कर्क)
मंग.-शुक्र	13 अग. से 15 सितं. (कर्क)
बुध-राहु	23 अग. से 29 अक्तू. (कन्या)
मंग.-गुरु	15 सितं. से 3 नवं. (सिंह)
सूर्य-राहु	17 सितं. से 17 अक्तू. (कन्या)
सूर्य-बुध	29 अक्तू. से 16 नवं. (तुला)
सूर्य-शनि	16 नवं. से 16 दिसं. (वृश्चि.)
मंग.-राहु	3 नवं. से 24 दिसं. (कन्या)
मंग.-शुक्र	24 दिसं. से 25 दिसं. (तुला)
शुक्र-शनि	25 दिसं. से 19 जन. (वृश्चि.)

द्विग्रही-योग (सन 2016 ई.)

बुध-शुक्र	19 जन. से 8 फर. (धनु)
गुरु-राहु	29 जन. से संवतान्त तक (सिंह)
सूर्य-बुध	8 फर. से 13 फर. (मकर)
मंग.-शनि	20 फर. से संवतान्त तक (वृश्चिक)
बुध-शुक्र	7 मार्च से 18 मार्च (कुम्भ)

तीनग्रही-योग—सन् 2015-16

सूर्य+मंग.+बुध	14 अप्रै. से 27 अप्रै. (मेष)
सूर्य+मंग.+बुध	15 मई से 15 जून (वृष)
सूर्य+मंग.+बुध	5 जुला. से 16 जुला. (मिथुन)
सूर्य+मंग.+बुध	30 जुला. से 4 अग. (कर्क)
बुध+गुरु+शुक्र	4 अग. से 13 अग. (सिंह)
सूर्य+मंग.+शुक्र	13 अग. से 17 अग. (कर्क)
सूर्य+बुध+गुरु	17 अग. से 23 अग. (सिंह)
सूर्य+बुध+राहु	17 सितं. से 17 अक्तू. (कन्या)
मंग.+गुरु+शुक्र	30 सितं. से 3 नवं. (सिंह)
मंग.+शुक्र+राहु	3 नवं. से 30 नवं. (कन्या)
सूर्य+बुध+शनि	17 नवं. से 6 दिसं. (वृश्चि.)
सूर्य+बुध+शुक्र	7 मार्च से 14 मार्च (कुम्भ)

समसप्तक-योग—सन् 2015-16

शुक्र+शनि	6 अप्रै. से 1 मई (वृष, वृश्चि.)
मंग.+शनि	3 मई से 14 जून (वृष, वृश्चि.)
सूर्य+शनि	15 मई से 14 जून (वृष, वृश्चि.)
गुरु+शुक्र	7 मार्च (16) से 31 मार्च (सिंह, कुम्भ)

—षडाष्टक योग—

मंग.+शनि	23 मार्च से 2 मई (मेष, वृश्चि.)

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि.सं.२०७२

-पं. विवेक शर्मा

(1) अनङ्ग त्रयोदशी व्रत (1 अप्रैल, बुधवार)

यह व्रत पूर्वविद्धा चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को किया जाता है। इस वर्ष यह त्रयोदशी 1 अप्रैल, बुधवार को पूर्व (द्वादशी) विद्धा एवं प्रदोष-व्यापिनी है। अतएव यह '**व्रत एवं पूजन**' 1 अप्रैल को शास्त्रसम्मत होगा। धर्मसिन्धु अनुसार भी–

चैत्रशुक्लत्रयोदश्यामनंगपूजनव्रतम्। तत्र त्रयोदशी पूर्वविद्धा ग्राह्या।।

(2) भगवान् परशुराम जयन्ती (20 अप्रैल, सोमवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया को भगवान् परशुराम जयन्ती मनाई जाती है। भविष्यपुराण अनुसार वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि की रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाल) में भगवान् श्रीपरशुराम का अंशावतार हुआ था–

वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयां पुनर्वसौ।
निशाया: प्रथम यामे समाख्य: समये हरि:।।

धर्मसिन्धु के अनुसार भी इसे प्रदोष व्यापिनी तृतीया तिथि में ग्रहण करने का निर्देश दिया है।–"**इयं रात्रि प्रथमयामव्यापिनी ग्राह्या।।**"

इस वर्ष 20 अप्रैल, सोमवार को तृतीया तिथि सायं 7 बजकर 3 मिंट बाद रात्रि प्रथम-प्रहर (प्रदोष) व्यापिनी है, अतएव भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती 20 अप्रैल, सोमवार को ही शास्त्रसम्मत होगी। अगले दिन, 21 अप्रैल को तृतीया तिथि प्रदोषव्यापिनी नहीं है।

(3) वटसावित्री व्रत (अमा.-पक्ष) (17 मई, रविवार)

वटसावित्री व्रत के पालन में दो परम्पराएं (मत) प्रचलित हैं। स्कन्द और भविष्योत्तर पुराण के अनुसार यह व्रत ज्येष्ठ पूर्णिमा को और निर्णयामृतादि के अनुसार अमावस्या को किया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह व्रत पूर्व (चतुर्दशी) विद्धा अमावस या पूर्णिमा के दिन ही ग्रहण करने योग्य कहा गया है। धर्मसिन्धुकार अनुसार–

पूर्णिमास्यमावस्ये तु सावित्रीव्रतं विना परे ग्राह्ये।
कुलधर्मादौ पूर्वा गृह्यते तत्र मूलं मृग्यम्।।

स्कन्दपुराण, पुराणसमुच्चय भी चतुर्दशी विद्धा अमावस्या को ग्राह्य स्वीकार करते हैं। यथा–

चतुर्दश्याममावस्या यदा भवति नारद !।
तदैव सा पूजनीया वैधव्यं नाप्नुयु: स्त्रिय:।।
–ज्येष्ठेऽमावस्या तु पूर्वविद्धैव ग्राह्या।।

अपि च, स्कन्दपुराणकार ने सावित्री व्रत परविद्धा का निषेध कहा है–

'कृष्णाष्टमी चतुर्थी च सावित्री वटपैत्तिकी।
शुक्ला त्रयोदशी रम्भा नोपोष्या: परसंयुता।।

कुछ शास्त्रकारों के अनुसार यदि चतुर्दशी 18 घड़ी से अधिक हो, तो परवर्ती अमावस/पूर्णिमा तिथि को दूषित करती है। यथा–**भूतोऽष्टादशनाडीभि: दूषयत्यपरां तिथिमित्यस्याप्यन्यत्रते।।** परन्तु यह नियम तभी स्वीकार्य होगा, जब किसी तिथि का पूर्वविद्धा वेध वर्जित हो। यहाँ तो सभी शास्त्रकारों ने ज्येष्ठ अमावस चतुर्दशी विद्धा ही ग्रहण करने के लिए कहा है। यद्यपि चतुर्दशी तिथि का त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी होना आवश्यक माना गया है।

शास्त्रवचनानुसार इस वर्ष ज्येष्ठ अमावस वाला वटसावित्री व्रत चतुर्दशी विद्धा अमावस वाले दिन 17 मई, रविवार को होगा।

(4) श्रीजगन्नाथ भगवान् की रथयात्रा (पुरी)(17 जुला. शुक्रवार)

स्कन्दपुराण अनुसार आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को यह पर्व मनाया जाता है। यदि द्वितीया तिथि पुष्य नक्षत्र युक्त हो तो उसी काल में यह पर्व मनाना चाहिए। पुष्य नक्षत्र संयुक्त होने से ही इस पर्व का माहात्म्य होता है।

आषाढ़स्य सिते पक्षे द्वितीया पुष्यसंयुता।
तस्यां रथे समारोप्य रामं सौभद्रया सह।।
यात्रोत्सवं प्रवर्त्याथ भोजयेद्धि द्विजान् बहून्।
रिक्षाभावे तिथौ कार्या यात्रा सा प्रीतये ममेति।।

धर्म सिन्धुकार अनुसार भी पुष्यनक्षत्र से युक्त अथवा केवल आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को रथयात्रा-उत्सव पर्व मनाया जाता है–

'आषाढ़शुक्लद्वितीयायां पुष्यनक्षत्रयुतायां केवलायां वा श्रीरामस्य रथोत्सव:।।

इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया तिथि यद्यपि 18 जुलाई, शनिवार को प्रात: 8 बजकर 58 मिं. तक है, परन्तु 17 जुलाई, शुक्रवार को प्रात: 7 बजकर 40 मिं. बाद द्वितीया तथा पुष्य नक्षत्र का संयोग सायं 16घं.-25मिं. तक है। अतएव शास्त्रनियमानुसार श्रीजगन्नाथ भगवान् की रथयात्रा का उत्सव, पूजन इसी दिन करना श्रेयस्कर होगा।

(5) नाग-पंचमी (20 अगस्त, गुरुवार)

श्रावण शुक्ल पंचमी को नाग-पंचमी का व्रत एवं पूजन किया जाता है। धर्मसिन्धु के अनुसार यह उदय काल में कम-से-कम तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी) व्यापिनी, पर विद्धा ग्रहण करनी चाहिए। परन्तु अगले दिन यदि तीन मुहूर्त्त से न्यून पंचमी हो, तो ही पहले दिन ग्रहण करनी चाहिए। चतुर्थी का वेध हो, तो दो मुहूर्त्त भी अगले दिन षष्ठी विद्धा लेनी चाहिए–

इयमुदये त्रिमुहर्त्तव्यापिनी परविद्धा ग्राह्या।। परेद्युः त्रिमुहूर्त्तन्यूना पंचमी पूर्वेद्युः त्रिमुहूर्तन्यून चतुर्थ्यां विद्धा तदा पूर्वैव।। त्रिमुहूर्त्ताधिक चतुर्थीवेधे द्विमुहूर्त्तापि परैव ग्राह्या।। (धर्मसिन्धु)

नारद वाक्यानुसार भी षष्ठी युक्त त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी पंचमी ही ग्रहण करनी चाहिए।

यथा-**पञ्चमी तु प्रकर्त्तव्या षष्ठीयुक्तैव**......।

प्रस्तुत वर्ष में श्रावण शुक्ल पंचमी 19 अगस्त, बुधवार को ६० घड़ी अर्थात् पूरा दिन तथा अगले दिन 20 अगस्त, गुरुवार को (६ घड़ी) से अधिक काल तक विद्यमान् है। **अतएव 20 अगस्त, गुरुवार 2015 ई. परविद्धा नागपंचमी को ही व्रत, पूजनादि शुभकृत्य करने शास्त्र सम्मत होंगे।**

(6) दूर्वाष्टमी व्रत (22 अगस्त, शनिवार)

भाद्रपद शुक्ल अष्टमी (पूर्वविद्धा) को सन्तान सुख एवं वंश वृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। धर्मसिन्धु अनुसार-**दूर्वाष्टमी व्रतं पुण्यं यः करोतीह मानवः। न तस्य क्षयमाप्नोति सन्तानं साप्तपौरुषम्। नन्दते वद्धते नित्यं यथा दूर्वा तथाकुलम्।। भाद्रशुक्लाष्टमी दूर्वाष्टमी सा च पूर्वा ग्राह्या।।**

परन्तु यदि किसी वर्ष भाद्र-शुक्लाष्टमी के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए (ऐसा अधिकतर तब होता है जब अधिक मास आ जाए) अथवा अगस्त्य तारा का उदय हो जाए, तो उस स्थिति में पूर्ववर्ती किसी अन्य मास की अष्टमी (भाद्र. कृष्ण या श्रावण शुक्लाष्टमी) में यह व्रत करना चाहिए, जब अगस्त्य तारा अदृश्य (अस्तगत) हो-

सिंहार्के एव कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन्।
सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तम्।। (स्कन्दपुराण)
अन्येऽपि-**इदं दूर्वापूजनव्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्।।** (धर्मसिन्धु)

अपि च--यह व्रत '**रौहिण**' या ब्राह्म (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त (अथवा मध्याह्न से लेकर अपराह्न काल तक) अष्टमी में किया जाता है। यदि दोनों दिन अष्टमी नवम मुहूर्त्त व्याप्त हो, तो पूर्वविद्धा लेने का निर्देश है-

भाद्रशुक्लाष्टमी दूर्वाष्टमी सा पूर्वा ग्रह्या।।
एवं च,....उभयत्राष्टमीयोगे पूर्वैव।। (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष भाद्र शुक्लाष्टमी 21 सितंबर को है, परन्तु उस दिन सूर्य कन्या राशि में होगा। तब इस व्रत को भाद्र. कृष्ण अष्टमी के दिन करने की शास्त्रानुमति है। परन्तु यदि भाद्र. कृष्ण अष्टमी से भी पहले अगस्त्य तारा हो जाएगा, तब इस व्रत को श्रावण शुक्ल अष्टमी के दिन करने की शास्त्राज्ञा है। भाद्र. कृष्ण अष्टमी, 5 सितम्बर से पहले ही पंजाब, हि.प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, राज. तथा समस्त भारत में अगस्त्य-उदय 4/5 सितं. को हो चुका होगा।

अतएव इन प्रदेशों में शास्त्र निर्देशानुसार श्रावण शुक्लाष्टमी **22 अगस्त, शनिवार** को यह व्रत करना शुभ होगा। क्योंकि इस दिन अष्टमी पूर्वविद्धा एवं '**रौहिण**' (नवम) मुहूर्त्त व्यापिनी है।

(7) रक्षा-बन्धन (29 अगस्त, शनिवार)

रक्षा-बन्धन का पवित्र पर्व भद्रा रहित अपराह्न व्यापिनी पूर्णिमा में करने का शास्त्र विधान है-

''भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा''......।''

इस वर्ष 29 अगस्त, 2015 ई., शनिवार को श्रावण पूर्णिमा के दिन रक्षा-बन्धन का पवित्र कार्य होगा, परन्तु इस दिन दोपहर 13 घं. 50 मिं. तक भद्रा व्याप्ति (भूलोक पर) रहेगी। **अतएव शास्त्रानुसार दोपहर 13घं.-50मिं. तक के समय का बिल्कुल त्यागकर यह पर्व अपराह्ण काल में रक्षाबन्धन का शुभ कार्य करना प्रशस्त होगा।**

[पंजाब, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू, हरि. आदि क्षेत्रों में ता. 29 अग. को अपराह्ण काल लगभग 13घं.-44मिं. से 16घं.-17मिं. तक रहेगा।]

परन्तु आजकल की व्यवस्थाओं के दृष्टिगत अति आवश्यक परिस्थितिवश यदि भद्रा-काल में ही रक्षा-बन्धन आदि शुभ कार्य करना पड़े, तो शास्त्रकारों ने भद्रा-मुखकाल को छोड़कर भद्रा-पुच्छकाल में रक्षा-बन्धनादि शुभ कार्य करने की आज्ञा दी है। भविष्यपुराणानुसार भद्रा के पुच्छकाल में किए गए कृत्य में सिद्धि एवं विजय प्राप्त होती है, जबकि भद्रामुख में कार्य का नाश होता है-

''पुच्छे जयावहाः, मुखे कार्य विनाशाय..............।।''

[इस कारण यदि अत्यन्त आवश्यक परिस्थिति हो [इंटरव्यू, फौज आदि में ड्यूटी पर पहुँचना, किसी सम्बन्धी के अस्वस्थ होने की सूचना मिलने पर जाना हो इत्यादि), तो 29 अगस्त को प्रातः 10घं. 14मिं. से 11घं. 16मिं. तक भद्रापुच्छ काल में यह शुभ कार्य किया जा सकता है तथा दोपहर 11घं. 16मिं. से 12घं. 45मिं. तक भद्रा मुखकाल (रक्षा-बन्धन आदि कृत्य में) का विशेष रूप से त्याग करें।]

ये भद्रामुख-भद्रापुच्छ के परिहार-वाक्य अत्यन्त आवश्यक परिस्थितियां होने पर ही व्यवहार में लाना चाहिए, अन्यथा **सामान्य परिस्थितियों एवं कठिनाई के बावजूद 29 अगस्त, शनिवार को दोपहर 13घं. 50मिं. के बाद ही रक्षा-बन्धन का पवित्र कार्य करें।**

रक्षा-सूत्र (राखी) बान्धते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़ना चाहिए।-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामबुध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

(8) कुशोत्पाटिनी अमावस्या (भाद्रपद अमावस) (13 सितंबर, रविवार)

भाद्रपद मास की अमावस्या तिथि कुशोत्पाटिनी (या कुशाग्रहणी) अमावस के नाम से जानी जाती है। इस दिन कुशा-सञ्चय करने से वर्षभर उसकी शुद्धता रहती है। जिस कुश का मूल सुतीक्षण हो, जिसमें पत्ती हो, अग्रभाग कटा न हो और हरा हो, वह देव तथा पितृ दोनों कार्यों के लिए उपयुक्त होता है। यह तिथि पूर्वाह्नव्यापिनी तथा दिन के द्वितीय प्रहर व्याप्त अमावस ली जाती है। यथा-

मासे नभस्यमावास्या तस्यां दर्भौच्चयो मतः।
अयातयामास्ते दर्भा विनियोज्याः पुनः पुनः।।

एवं च, 'इयममावास्या द्वितीयप्रहरव्यापिनी ग्राह्या।।' (वर्षकृत्य)

स्कन्दपुराणानुसार भी **'दर्भाणां सञ्चये सङ्गवःकाल ईरितः।।** अर्थात् कुशों के संचय में संगवकाल (दिन के पाँच भागों में से दूसरा भाग)-व्यापिनी अमावस्या शुभ कही गई है।

आगामी वर्ष भाद्रपद अमावस दो दिन (ता. 12 एवं 13 सितं.) द्वितीय प्रहर को व्याप्त हो रही है। द्वितीय प्रहर (संगवकाल) लगभग प्रातः 8घं. 42मिं. से दोप. 11घं. 10मिं. तक रहेगा। अमावस्या तिथि द्वितीय प्रहर-व्यापिनी होने से **कुशोत्पाटन का कार्य 13 सितं., 2015 ई., रविवार को ही करना प्रशस्त होगा।** इस तिथि को दर्भस्थल पर जाकर पूर्व या उत्तराभिमुख बैठकर निम्न मन्त्र पढ़कर और **'हुँ फट्'** कहकर दाहिने हाथ से एक बार में कुश उखाड़े-

विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिन्निसर्गज। नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव।।

यद्यपि परम्परया कुछ प्रदेशों में परम्परागत मध्याह्न बाद कुशोत्पाटन करते हैं, जिससे वे 12 सितं. को ही कुशोत्पाटन कार्य कर लेंगे।

'व्रते पिठोरसंज्ञेऽमा मध्याह्नव्यापिनी शुभा।' वाक्य अनुसार पिठोरी अमावस्या 12 सितंबर को मान्य होगी।

(9) श्रवण द्वादशी (विष्णुश्रृंखल योग) (24 सितम्बर)

भाद्र. शुक्ल पक्ष में दिन के समय मुहूर्त्तमात्र भी द्वादशी एवं श्रवण नक्षत्र का योग हो तो श्रवण द्वादशी का का व्रत किया जाता है। यदि इस पक्ष में किसी दिन एकादशी, द्वादशी और श्रवण-तीनों परस्पर एक दूसरे को स्पर्श करें, तो उस दिन **'विष्णुश्रृंखल योग'** बनता है।

अत्र द्वादश्यां श्रवणयोगाभावे एकादश्यां श्रवणयोगे तत्रैव श्रवणद्वादशीव्रतं कार्यम्।। (धर्म सिन्धु)

विष्णुश्रृंखलयोग बनने पर श्रवणद्वादशी का व्रत उसी (विष्णुश्रृंखल योग वाले) दिन ही किया जाता है। शास्त्रानुसार यदि पहले दिन एकादशी युता द्वादशी दूसरे दिन भी विद्यमान् हो और श्रवण नक्षत्र का इन दोनों से संयोग हो, तो भी **'विष्णुश्रृंखल योग'** बनता है। परन्तु यह योग केवल रात्रि के प्रथम प्रहर तक स्वीकार्य है।

इस वर्ष भाद्र. शुक्ल एकादशी 24 सितं., गुरुवार को विष्णुश्रृंखल योग 28घं.-39मिं. तक है। अतएव श्रवण द्वादशी का व्रत इसी दिन करना शुभ होगा तथा आगामी दिन (25 सितं.) में ही पारणा करनी चाहिए।

(10) वामन द्वादशी (जयन्ती) (25 सितम्बर, शुक्रवार)

श्रीवामन् भगवान् का अवतार श्रवण नक्षत्र युत मध्याह्न-व्यापिनी भाद्र. शुक्ल द्वादशी तिथि को हुआ था। शास्त्रानुसार यह पर्व मध्याह्नव्यापिनी भाद्र. शुक्ल द्वादशी में अथवा मध्याह्न से अन्यत्र भी श्रवण नक्षत्र से युक्त हो, उस दिन मनाया जाता है। इस वर्ष द्वादशी तिथि केवल 25 सितंबर, शुक्रवार को है, यद्यपि इस दिन श्रवण नक्षत्र का अभाव है, परन्तु द्वादशी का अन्यत्र काल में 24 सितं. को श्रवण नक्षत्र से सम्पर्क हुआ है। परन्तु शास्त्रमतानुसार यह व्रत मध्याह्नव्यापिनी द्वादशी, 25 सितं., शुक्रवार को प्रशस्त होगा, क्योंकि 24 सितं. को श्रवण नक्षत्र का संयोग एकादशी द्वादशी दोनों से है। यथा-

''अतो मध्याह्नव्यापिनी द्वादशी मध्याह्ने ततोन्यत्र काले वा श्रवणयुता ग्राह्या।।'' (धर्मसिन्धु)

'वामन-जयन्ती' पर्व 25 सितंबर, शुक्रवार को शास्त्र-सम्मत होगा।

(11) शारदीय नवरात्रारम्भ (13 अक्तू., मंगलवार)

शास्त्रानुसार सूर्योदय के बाद 10 घड़ी तक या मध्याह्न में अभिजित् मुहूर्त्त (दिन के अष्टम मुहूर्त्त) के समय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ व कलशस्थापन किया जाता है। यदि प्रतिपदा तिथि सम्पूर्ण रूप (पूरी तरह) से चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग से दूषित हो, तो इसकी परवाह न करते हुए इस दिन अभिजित् मुहूर्त्तकाल में ही नवरात्रारम्भ, घटस्थापन कर लेना चाहिए। निर्णयसिन्धुकार अनुसार भी-

सम्पूर्णाप्रतिपद्येव चित्रायुक्तायदा भवेत्। वैधृत्यावापियुक्तास्यात्तदामध्यदिनेरवौ।।
अभिजित्तुमुहूर्त्तं यत्तत्र स्थापनमिष्यते।।

अन्य च, कलशस्थापननिर्णयः-चित्रावैधृति-योगत्वात् मध्याह्ने (अभिजिन्मुहूर्त्ते) अपि कलश स्थापनं कार्यम्।।

इस वर्ष यही स्थिति घटित हो रही है। आश्विन शुक्ल प्रतिपदा 13 अक्तू., 2015 ई. के दिन चित्रा का पूर्वार्द्ध भी 15घं.-10मिं. (भा.स्टैं.टा.) तक है। यहाँ अभिजित् मुहूर्त्त 11घं.-50मिं. से 12घं.-38मिं. (भा.स्टैं.टा.) तक है। स्पष्ट रूप से यहाँ चित्रा एवं वैधृति के पूर्वार्ध ने प्रतिपदा की सूर्योदयानन्तर की 10 घड़ियां तथा अभिजित् मुहूर्त्त का पूरा काल दूषित कर दिया है। इस स्थिति में उपरोक्त शास्त्रवाक्यानुसार अशुभ योग होने पर भी इनकी उपेक्षा कर इसी दिन (13 अक्तू., 2015 ई. को ही) अभिजित् मुहूर्त्त में (11घं.-50मिं. से 12घं.-38मिं. तक) ही नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, दीपपूजन आदि करने चाहिए।

(12) शरद् पूर्णिमा (26 अक्तूबर, सोमवार)

यह व्रत प्रदोष और निशीथ-दोनों में होने वाली (व्याप्त) पूर्णिमा के दिन किया जाता है। यदि पहले दिन निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिए-

यथा-आश्विनपौर्णमास्यां कोजागर व्रतम्।। सा पूर्वत्रैव निशीथव्याप्तौ पूर्वा।।

शास्त्र-वचनानुसार यह व्रत 26 अक्तू., सोमवार को होगा। शरद् पूर्णिमा की रात्रि में चन्द्रमा की चाँदनी में अमृत का निवास रहता है, इसलिए उसकी किरणों से अमृत और आरोग्य की प्राप्ति सुलभ होती है।

(13) श्रीसत्यनारायण व्रत (आश्विन-पूर्णिमा) (27 अक्तू., मंगलवार)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। क्योंकि यह व्रत नक्तव्रत है। इसलिए इसे नक्तव्रत की भान्ति प्रदोष काल में करने का विधान है। दोनों दिन प्रदोषकाल की व्याप्ति अथवा अव्याप्ति की परिस्थिति में यह व्रत दूसरे दिन ग्राह्य होगा। यथा-

सूर्यास्तोत्तरत्रिमुहूर्तात्मक प्रदोषव्यापिनी तिथिर्नक्ते ग्राह्या। अन्यतरदिने तद्याप्तौ तदेकदेशस्पर्शे वा सैव ग्राह्या।। ……… द्विनद्वये प्रदोषव्याप्तौ परा।। दिनद्वये प्रदोषव्याप्त्यभावे परत्रैव।।

अर्थात् पूर्णिमा की दोनों दिन प्रदोष में व्याप्ति हो, तो अगले दिन तथा यदि दोनों दिन प्रदोषकाल की व्याप्ति के अभाव में भी अगले दिन ही व्रत हेतु ग्रहण करें।

इस वर्ष आश्विन पूर्णिमा 27 अक्तू., 2015 ई. को 17घं. 35मिं. पर समाप्त हो रही है। ता. 26 अक्तू., को भी पूर्णिमा रात्रि 21घं. 10मिं. बाद से प्रारम्भ होगी। ता. 26 या 27 अक्तू. को पंजाब, हरियाणा, हिमाचलादि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में प्रदोषकाल लगभग 17घं. 40मिं. से 20घं. 16मिं. तक रहेगा। अतएव दोनों दिन प्रदोषकाल की अव्याप्ति की स्थिति में **यह सत्यनारायण व्रत दूसरे दिन 27 अक्तू., मंगलवार को रखना प्रशस्त होगा।**

(14) धन-त्रयोदशी (9 नवंबर, सोमवार)

धन-त्रयोदश (धन-तेरस) प्रदोषव्यापिनी कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को मनायी जाती है। इस दिन चाँदी, पीतल आदि का बर्तन खरीदना शुभ माना गया है। इस दिन सायंकाल के समय घर के मुख्य दरवाज़े पर यमराज के निमित्त दक्षिणाभिमुख करके एक दीपक तेल से भरकर प्रज्वलित करे तथा गन्धक्षतादि से पूजनकर एक पात्र में अनाज रखकर उस पर प्रज्वलित दीप रख देवें।

कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे। यम दीपं वह्णिर्दघात् अपमृत्यु विनश्यति।।

यह पर्व सूर्यास्त के बाद त्रि-मुहूर्त्त (६ घड़ी) व्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी चाहिए-

सूर्यास्तमानोत्तर त्रिमुहूर्तात्मक प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी ग्राह्या।। (धर्मसिन्धु)

परन्तु यदि दो दिन त्रयोदशी प्रदोष-व्यापिनी हो, तो अगली ग्रहण करनी चाहिए। यथा-

दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेकदेशस्पर्शे वा उत्तरा।।

अपि च, 'त्रयोदशी शुक्ला पूर्वा कृष्णोत्तरा।।' वाक्यानुसार हमने धन त्रयोदशी पर्व 9 नवंबर, सोमवार को लगाया गया है। तथापि कुछ प्रदेशों में यह पर्व 8 नवं. से ही प्रारम्भ हो जाएगा। परन्तु व्रत एवं दीपदान हेतु 9 नवं. ही प्रशस्त होगी।

(15) श्रीहनुमान जयन्ती (उ. भारत) (9 नवंबर, सोमवार)

व्रत रत्नाकर अनुसार आश्विन (कार्तिक) कृष्ण चतुर्दशी, भौमवार की महानिशा (अर्द्धरात्रि) में अञ्जनादेवी के उदर से श्रीहनुमान जी का जन्म हुआ था।

आश्विनस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि।
भौमवारेऽञ्जनादेवी हनूमन्तमजीजनत्।।

प्रस्तुत वर्ष 9 नवंबर, 2015 ई. को कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी निशीथव्यापिनी है, अतएव श्रीहनुमान जयन्ती पर्व इसी दिन प्रशस्त होगा। यह हनुमान जयन्ती उत्तर-भारतीय परम्परा अनुसार है, दक्षिण भारत में यह चैत्र पूर्णिमा को मनायी जाती है।

(16) भीष्मपंचक व्रत प्रारम्भ (21 नवंबर, शनिवार)

शास्त्रों में भीष्मपंचक व्रत का अनुष्ठान केवल पाँच दिन (कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक) निर्दिष्ट है। यदि शुद्धा एकादशी से उदयकालिक पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथि क्षय हो जाए और भीष्म-पंचकों के दिनों की संख्या चार ही रह जाए, तब दशमी विद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (जिसमें चतुर्दशी का वेध न हो) उदय-कालिक पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त किया जाए। इसी प्रकार, यदि इन पाँच तिथियों (एका. से पूर्णिमा तक) में से किसी एक तिथि की वृद्धि हो जाने से भीष्म पंचकों के 6 दिन बनते हों, तो शुद्ध एकादशी वाले दिन से प्रारम्भ करके चतुर्दशी-विद्धा पूर्णिमा के दिन ही भीष्म-पंचकों को समाप्त करना चाहिए। धर्मसिन्धु के अनुसार-

''एकादश्यादिदिनपंचके भीष्मपंचकव्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिक पौर्णमास्यां समापनीयम्।। यदि शुद्धैकादश्यामारंभे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मक व्रतसमाप्तिर्न घटते तदा विद्धैकादश्यामप्यारंभः।। शुद्धैकादश्यामारंभेपि दिनवृद्धिवशेन परविद्धपौर्णमास्यां समापने यदि षड्दिनापत्तिस्तदा चतुर्दशीविद्धपौर्णिमायामपि समाप्तिः कार्या।।''

इस वर्ष कार्तिक पूर्णिमा तिथि का क्षय हुआ है। अतएव उपरोक्त शास्त्र नियमानुसार **'भीष्मपंचक व्रत'** 21 नवंबर, 2015 ई., से 25 नवंबर, 2015 ई. तक पाँच दिन रहेंगे।

(17) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (24 दिसम्बर, गुरुवार)

मार्गशीर्ष पूर्णिमा की श्रीदत्तात्रेय जी का जन्म हुआ था। इसमें प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ली जाती है। यथा-

''मार्गशीर्षपौर्णमास्यां दत्तात्रेयोत्पत्तिः। इयं प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या।।'' (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष 24 दिसं., 2015 ई. को 18घं. 28 मिं. के बाद प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को दत्तात्रेय जयन्ती होगी। 25 दिसं. को पूर्णमाशी प्रदोषकाल से अव्याप्त है।

इसी प्रकार श्रीसत्यनारायण व्रत भी 24 दिसंबर को ग्राह्य होगा।

(18) होलिका-दहन (23 मार्च, बुधवार) 2016 ई.

फाल्गुन पूर्णिमा मन्वादि तिथि कहलाती है। साधारणतया प्रदोष-व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रारहित काल में होलिका-दहन किया जाता है। यदि पूर्णिमा दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी हो तथा अगले दिन (पूर्णिमा) प्रदोष के एकदेश को भी स्पर्श करें तो अगले दिन (पूर्णिमा) ही होलिका दहन करना चाहिए क्योंकि पहले दिन भद्रा का दोष है। पुनः यदि दूसरे दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी न हो तथा पहिले दिन पूर्णिमा के समय भद्रा हो, एवं च दूसरे दिन पूर्णिमा सूर्योदय से साढ़े तीन प्रहर तक या उससे भी अधिक काल तक हो और अगले दिन प्रतिपदा बढ़ गई हो (वृद्धिगामिनी) अर्थात् प्रतिपदा का मान (भोगकाल) पूर्णिमा के मान से अधिक हो, तो अगले दिन प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदा में ही होलिका दहन करना चाहिए।

द्वितीय मत-[परन्तु यदि प्रतिपदा पूर्णिमा से घट गई हो, अर्थात् प्रतिपदा का मान पूर्णिमा के मान से कम हो, तथा पहले दिन प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में भद्रा के मुख को त्यागकर भद्रा-पुच्छ में होलिका दहन करना चाहिए।] यथा-

--सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहिता ग्राह्या।। दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ परदिने प्रदोषैकदेशव्याप्तौ व परेव।। पूर्वदिने भद्रादोषात्। परदिने प्रदोषस्पर्शाभावे पूर्वदिने प्रदोषे भद्रासत्वे यदि पूर्णिमा परदिने सार्धत्रियामा ततोधिका वा तत्परदिने च प्रतिपद्-वृद्धिगामिनी तदा परदिने प्रतिपदि प्रदोषव्यापिन्यां होलिका।।

--उक्तविषये यदि प्रतिपदो ह्रासस्तदा पूर्वदिने भद्रामुखं मात्रं त्यक्त्वा भद्रायामेव वा होलिकादीपनम्।। निशीथोत्तरं भद्रासमाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव।। (धर्मसिन्धु)

तदनुसार आगामी फाल्गुन पूर्णिमा, 22 एवं 23 मार्च 2016 ई. दो दिन व्याप्त हो रही है। ता. 22 मार्च, मंगलवार को पूर्णिमा तिथि दोपहर 15घं. 13मिं. के बाद स्पष्ट रूप से प्रदोष व्यापिनी है। परन्तु 15घं.-13मिं. से अगले दिन 04घं. 22मिं. (28घं.-22मिं.) तक भद्रा व्यापिती भी रहेगी। अगले दिन 23 मार्च, बुधवार को पूर्णिमा प्रदोष-व्यापिनी नहीं है, परन्तु तीन प्रहर से अधिक समय तक (यामत्रयव्यापिनी) व्याप्त है। एवं प्रतिपदा तिथि '**वृद्धिगामिनी**' है। अतएव उपरोक्त शास्त्रमतानुसार प्रथम मतानुसार **23 मार्च, बुधवार को ही होलिका दहन करना शास्त्रसम्मत होगा।**

परन्तु अधिकतर शास्त्रकार दिन में होलिका दहन निषिद्ध मानते हैं-

दिवा होलिकादीपनं तु सर्वग्रन्थविरुद्धम्।। (धर्मसिन्धु)

अब '**वर्षकृत्य**' का यह वाक्य देखिए-

सायाह्ने होलिका कुर्यात् पूर्वाह्ने क्रीडनं गवाम्।। तथा

यदि पूर्वदिने सायाह्ने भद्राशून्या सा न लभ्यते तदा परदिने एव।।

ब्रह्मवैवर्तपुराण का यह स्पष्ट वाक्य सायाह्न-काल को होलिका दहन के लिए ग्राह्य मान रहा है-

होलिका पौर्णमासी तु सायाह्नव्यापिनी मता।।

तथा '**भविष्योत्तर पुराण**' के अनुसार भी यदि फाल्गुन पूर्णिमा साढ़े तीन याम (प्रहर) या इससे अधिक काल को व्याप्त करे और आगे प्रतिपदा वृद्धिगामिनी, हो, तो वहाँ होलिका-दहन सायाह्न-व्यापिनी पूर्णिमा में करना चाहिए-

सार्द्धयामत्रयं वा स्याद्द्वितीये दिवसे यदा। प्रतिपद्-वर्धमाना तु तदा सा होलिका मता।।

उपरोक्त शास्त्र-वचनों के अनुसार 23 मार्च, बुधवार को प्रदोष संयुक्त एवं पूर्णिमा व्याप्त '**सायाह्न-काल**' में होलिका दहन प्रशस्त रहेगा। ता. 23 मार्च को '**सायाह्न-काल**' यद्यपि उत्तरी-भारत में लगभग 16घं.-12मिं. से 18घं.-37मिं. तक रहेगा। तदनुसार पूर्णिमा-व्याप्त सायाह्न-काल में 16घं.-55मिं. से 17घं.-31मिं. के मध्यकाल तक होलिका-दहन कर लेना चाहिए।

श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) के शुभ काल

(11 नवम्बर, बुधवार 2015 ई.)

'**ब्रह्मपुराण**' के अनुसार अर्द्धरात्रि व्यापिनी अर्थात् आधी रात तक रहने वाली अमावस्या ही श्रेष्ठ होती है। यदि वह आधी रात तक न रहे, तो प्रदोषव्यापिनी लेनी चाहिए-

दीपन्दत्त्वा प्रदोषे तु लक्ष्मीं संपूज्य यथाविधि।

स्वालंकृतेन भोक्तव्यं सितवस्त्रोपशोभिना।।(निर्णयसिन्धुः)

लक्ष्मी-पूजा, दीपदानादि के लिए प्रदोषकाल ही विशेषतया प्रशस्त माना जाता है।

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण निशावर्धके।

तस्यां सम्पूज्येत देवीं भोग मोक्ष प्रदायिनीम्।।(भविष्यपुराण)

इस वर्ष 11 नवम्बर, 2015 ई., बुधवार को दीपावली स्वाती/विशाखा नक्षत्र, सौभाग्य योग कालीन प्रदोष, निशीथकाल एवं अल्पकाल के लिए महानिशीथ व्यापिनी अमावस्या युक्त होने से विशेषतः प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक रहेगी। दोपहर 13घं. 34मिं. तक स्वाती नक्षत्र विशेष रूप से प्रशस्त रहेगा। कार्तिक अमावस्या बुधवार को होने से व्यापारी वर्ग के लिए लाभप्रद रहेगी। दीपावली के दिन चौमुखा दीपक रातभर प्रदीप्त रहना शुभ एवं मंगलप्रदायक होता है। दीपावली में अमावस तिथि, प्रदोषकाल निशीथकाल, महानिशीथकाल तथा चौघड़ियां मुहूर्तों का अपना विशेष स्थान है।

प्रदोषकाल–11 नवं. को जालन्धर एवं निकटवर्ती नगरों में सूर्यास्त (17घं.-28मिं.) से लेकर 2घं.-42मिं. पर्यन्त (20घं.-10मिं. तक) प्रदोषकाल व्याप्त रहेगा। (प्रत्येक नगरके रात्रिमान के अनुसार इसका समय निर्धारण करें-देखें पृ. 259 (वि. संवत् २०६९)

सायं 17घं.-43मिं. से 19घं.-38मिं. तक वृष (स्थिर) लग्न भी विशेषतः प्रशस्त होगा। प्रदोषकाल में वृष लग्न, विशाखा नक्षत्र तथा तुला के सूर्य-चन्द्र होने से अत्यन्त शुभकाल रहेगा।

प्रदोषकाल में ही 19घं.-09मिं. से 20घं.-50मिं. तक '**शुभ**' चौघड़ियां भी रहने से इस योग से दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, कुबेर-पूजन, बही-खाता पूजन, धर्म एवं गृह-स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बाँटना शुभ होगा।

निशीथ-काल–11 नवंबर, बुधवार को जालन्धर में निशीथकाल 20घं.-10मिं. से 22घं.-52मिं. तक रहेगा। निशीथकाल में ही 21घं.-52मिं. तक मिथुन लग्न मध्यम, तदुपरान्त अर्द्धरात्रि तक 24घं.-14मिं. तक '**कर्क**' लग्न विशेष रूप से प्रशस्त होगा।

20घं.-50मिं. से 22घं.-31मिं. तक '**अमृत**' की चौघड़ियां भी शुभ रहेंगी। तदुपरान्त '**चर**' की चौघड़ियां भी अर्द्धरात्रि 24घं.-12मिं. तक शुभ ही होंगी। इस अवधि में श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र और लक्ष्मी स्तोत्र आदि मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिए।

इस वर्ष अमावस रात्रि 23घं.-17मिं. तक ही होने से निशीथकाल का भी विशेष माहात्म्य रहेगा तथा यथासम्भव इस काल तक पूजन आरम्भ कर लेना चाहिए।

महानिशीथकाल–रात्रि 22घं.-52मिं. से 25घं.-34मिं. तक महानिशीथकाल रहेगा। इस समयावधि में अमावस तिथि केवल 23घं.-17मिं. (कुल 25 मिनट) तक रहेगी। इसलिए यथासम्भव निशीथकाल में ही जपानुष्ठान प्रारम्भ कर लेना चाहिए। इसमें भी रात्रि 24घं.-14मिं. तक **कर्क लग्न** तदुपरान्त '**सिंह**' लग्न विशेष प्रशस्त रहेंगे। ध्यान दें, इसमें भी 24घं.-12मिं. तक चर की चौघड़ियां शुभ, तदुपरान्त 24घं.-12मिं. से रोग की चौघड़ियां रहेंगी। महानिशीथकाल में श्रीलक्ष्मी, महाशक्ति काली उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तथा तांत्रिक अनुष्ठान एवं साधनाएं की जाती हैं।

नोट–अपने स्थानीय नगर में चौघड़ियां मुहूर्त्त (समय) जानने के लिए पृष्ठ 255 देखें तथा महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त वृष, कर्क आदि लग्न के लिए पृष्ठ 263 का अवलोकन कर निकालें अथवा स्थानीय पंडित जी से '**पंचांगदिवाकर**' दिखाकर परामर्श लें।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत-महोत्सव

(5 सितम्बर, शनिवार—महापुण्यप्रदायक जयन्ती-योग)

श्रीमद्भागवत्, भविष्यादि सभी पुराणों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रकृष्ण अष्टमी तिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष के चन्द्रमा कालीन, अर्द्धरात्रि के समय हुआ था–

मासि भाद्रपदे, अष्टम्यां कृष्णपक्षेऽर्द्ध रात्रके।
वृष राशि स्थितो चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणी युते।।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व के समय छहों तत्त्वों भाद्र. कृष्ण पक्ष, अर्द्धरात्रिकाल, अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष का चन्द्र और बुधवार या सोमवार को विद्यमानता (सम्मिलन) बड़ी कठिनता से प्राप्त होती है। अनेक वर्षों में कई बार भाद्र. कृष्ण अष्टमी की अर्द्धरात्रि को वृष का चन्द्र तो होता है, परन्तु रोहिणी नक्षत्र नहीं होता। इसी कारण पंचांग में प्रायः सप्तमी विद्धा रोहिणी नक्षत्र नहीं होता। इसी कारण पंचांग में प्रायः सप्तमी विद्धा अष्टमी को स्मार्तानां (गृहस्थ) तथा नवमी विद्धा अष्टमी को वैष्णवानां लिखा होता है। इस वर्ष 5 सितं. को लगभग सभी तत्त्वों का दुर्लभ योग मिल रहा है अर्थात् 5 सितं. को श्रीकृष्णजन्माष्टमी को अर्द्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्रमा का पुण्यप्रदायक योग बन रहा है। प्रायः सभी शास्त्रकारों ने ऐसे दुर्लभ योग की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। **यथा**—निर्णयसिन्धु के अनुसार आधी रात के समय रोहिणी में यदि अष्टमी तिथि मिल जाए, तो उसमें श्रीकृष्ण का पूजनार्चन करने से तीन जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं–

''रोहिण्यां अर्द्धरात्रे च यदा कृष्णाष्टमी भवेत्।
तस्यांम्यर्चनं शौरेः हन्ति पापं त्रिजन्मजम्।। (निर्णय सिन्धु)

श्रीकृष्णजन्माष्टमी रोहिणी नक्षत्र-योग रहित हो तो **'केवला'** और रोहिणी नक्षत्र युक्त हो तो **'जयन्ती'** कहलाती है। **'जयन्ती'** में बुध-सोम का योग आ जाए तो वह अत्युत्कृष्ट फलदायक हो जाती है। **'केवलाष्टमी'** और **'जयन्ती'** में अधिक भिन्नता नहीं है, क्योंकि अष्टमी के बिना जयन्ती का स्वतन्त्र स्वरूप नहीं हो सकता। प्राचीनकाल से ही अर्द्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी में रोहिणी नक्षत्र के बिना भी व्रत-उपवास किया जाता है, परन्तु तिथि-योग के बिना रोहिणी में किसी प्रकार का स्वतन्त्र विधान नहीं है। अतः श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ही रोहिणी नक्षत्र के योग से जयन्ती बनती है। एतदर्थ कहा गया है कि **'रोहिणी-गुणविशिष्टा जयन्ती'**।। विष्णुरहस्य का भी यह श्लोक **'जयन्ती-योग'** की पुष्टि करता है–

अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणीऋक्षसंयुता।
भवेत्प्रौष्ठपदे मासि जयन्ती नाम सा स्मृता।।

अर्थात् भाद्रपद मास में कृष्ण पक्ष की अष्टमी यदि रोहिणी नक्षत्र से संयुक्त होती है, तो वह जयन्ती नाम से जानी जाती है।

अग्निपुराण अनुसार भी–

सप्तमी सहिताष्टम्यां निशीथे रोहिणी यदि।
भविता साष्टमी पुण्या यावत् चन्द्र दिवाकरौ।।

अर्थात् सप्तमी युक्त अष्टमी को आधी रात में रोहिणी होय, तो वह अष्टमी तब तक पुण्यप्रदायक है, जब तक सूर्य-चन्द्रमा हैं।

अपि च, जन्माष्टमी के व्रत में सोमवार या बुधवार का योग हो, तो यह श्रेष्ठता का द्योतक है, रोहिणी नक्षत्र के समान निर्णयकारक नहीं।

''अत्र व्रते बुध सोमवार योगः प्राशस्त्य विधायको न तु रोहिणीवत् निर्णायकः।। (धर्मसिन्धुः)

अस्तु, सभी धर्म एवं निबन्ध ग्रन्थों में ऐसे दुर्लभ योग की विशेष महिमा कही है।

उपरोक्त शास्त्रवचनों के अनुसार 5 सितं., शनिवार को प्रातः ध्वजारोहण एवं संकल्पपूर्वक व्रतानुष्ठान करके **'ॐ नमः भगवते वासुदेवाय। ॐ कृष्णाय वासुदेवाय गोविन्दाय नमो नमः'** आदि मन्त्र जप, श्रीकृष्ण नाम स्तोत्रपाठ, कीर्तनादि तथा रात्रि को श्रीकृष्ण बालरूप की पूजार्चन, ध्वजारोहण, झूला-झुलाना, चन्द्रार्घ्यदान, जागरण-कीर्तनादि शुभ कृत्य करने चाहिएं। रात्रि को 12 बजे गर्भ से जन्म लेने के प्रतीकस्वरूप खीरा फोड़कर एवं शंख ध्वनि सहित भगवान् का जन्मोत्सव मनाएँ। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्वलित कर सामूहिक स्वर से श्रीभगवान् की आरती-स्तुति करें। फिर शङ्ख में गंगाजल सहित दूध-जल, फल, कुश, कुसुम, गन्धादि डालकर निम्न मंत्र द्वारा चन्द्रमा को अर्घ्य देवें–

गृहाणार्घ्यं शशाङ्क इमं रोहिण्या सहितो मम। ज्योत्स्नापते नमस्तुम्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्।।

फिर नमस्कार करके प्रार्थना करें–

त्रांहि मां सर्वपापघ्नं दुखशोकार्णवात् प्रभो अर्थात्

हे प्रभो ! दुःख व शोकरूपी समुद्र से मेरी रक्षा करो। तत्पश्चात् मक्खन, मिश्री-धनिया, केले आदि फलों का प्रसाद ग्रहण करें। फिर भगवान् श्रीकृष्ण के ध्यान/नाम मन्त्रों का यथाशक्ति जाप करते रहें।

'ॐ नारायणाय नमः, अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, वासुदेवाय नमः।।'

दूसरे दिन मिष्ठान्न सहित प्रसाद बाँटना, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दान करके श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के दुर्लभ पर्व का अवश्य पुण्य-लाभ उठाना चाहिए।

इस दिन अभीष्ट सन्तान प्राप्ति के लिए विधिपूर्वक सन्तान गोपाल स्तोत्र का पाठ करने का विशेष माहात्म्य होगा। इस पर्व के सम्बन्ध में संशय या संदिग्ध कुछ भी नहीं है। फिर भी **'जयन्ती योग'** के उपलक्ष्य में माहात्म्य लिखा गया है। अपने स्थानीय नगर में **'श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी'** (5 सितं.) के दिन चन्द्रोदय जानने के लिए पृष्ठ 10-11 देखें। निवेदक-पं. विवेक शर्मा

आषाढ़ अधिक मास–संवत् २०७२ (सन् 2015 ई.)

(17 जून से 16 जुलाई, 2015 ई. तक)

आगामी वि. संवत् २०७२ (सन् 2015-16 ई.) में चान्द्र आषाढ़ मास अधिक मास होगा। इस चान्द्र मास की कालावधि 17 जून, बुधवार से लेकर 16 जुलाई, गुरुवार तक रहेगी।

अधिक-मास निर्णय–सूर्य सिद्धान्त, सिद्धान्त-शिरोमणि, ब्रह्म-सिद्धान्त आदि सिद्धान्तिक ग्रन्थों के अनुसार जिस चान्द्र-मास में सूर्य संक्रान्ति का अभाव हो, उस चान्द्र मास को अधिक मास कहते हैं।

यस्मिन् मासे न संक्रान्तिः, संक्रान्ति द्वयमेव वा। (ब्रह्मसिद्धान्त)

आचार्य चण्डेश्वर अनुसार भी–

दर्शद्वयमतिक्रम्य यदा सङ्क्रमते रविः।
मलमासः सः विज्ञेयः सर्वकर्मसु गर्हितः।।

यदि दो अमावस्याओं के अन्तर सूर्य की संक्रान्ति न हो, तो उक्त मास को मल मास कहते हैं। इस मास में समस्त शुभ काम नहीं करने चाहिए।

लोक-व्यवहार में अधिक मास को अधि-मास, मलमास एवं पुरुषोत्तम मास आदि नामों से भी जाना जाता है। ज्योतिषीय गणनानुसार एक सौर वर्ष 365 दिन, 6 घण्टे एवं 11 सैकिण्ड का होता है, जबकि एक चान्द्रवर्ष 354 दिन एवं लगभग 9 घण्टे का होता है। सौर वर्ष एवं चान्द्र वर्ष तथा सौर मास एवं च चान्द्रमास के मध्य सामञ्जस्य स्थापित करने के लिए ही भारतीय शास्त्रकारों द्वारा '**अधिक मास**' की परिकल्पना (व्यवस्था) की गई है। पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार एक अधिक मास से दूसरे अधिक (मल) मास तक की अवधि अर्थात् पुनरावृत्ति 28 मास से लेकर 36 मास के भीतर होना सम्भव है। इस प्रकार हर तीसरे वर्ष में अधिक मास अर्थात् पुरुषोत्तम मास की पुनरावृत्ति होना सम्भव है।

अधिक मास के आने पर जो व्यक्ति श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक व्रत, उपवास, श्रीविष्णु पूजन, पुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ, दान आदि शुभ कर्म करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है और अन्त में गोलोक पहुँचकर भगवान् श्रीकृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करता है।

वि. संवत् २०७२ में प्रथम आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार 17 जून, बुधवार से आषाढ़ अधिक मास प्रारम्भ होकर 16 जुलाई, गुरुवार तक व्याप्त रहेगा। प्र. आषाढ़ शुक्ल पक्ष और द्वितीय आषाढ़ कृष्ण पक्ष–दोनों पक्षों के अन्तराल में किसी संक्रान्ति का अभाव होने से आषाढ़ मास ही अधिक मास अर्थात् मलमास माना जाएगा।

शास्त्रों में आषाढ़ अधिक मास का फल इस प्रकार से वर्णित है–

द्वयाषाढ़े व्यथा किंचित् खण्डवृष्टिः क्वचित्पुनः।

अन्येत्र–यशः पुण्यं सुभिक्षं च द्विराषाढ़े महत् सुखम्।।

अर्थात् जिस वर्ष दो आषाढ़ आवें, तो उस वर्ष किसी प्रदेश में खण्ड वर्षा अर्थात् रुक-रुक कर अल्प वर्षा हों और कहीं अति वर्षा हो तथा किसी प्रदेश में विषम् वर्षा एवं प्राकृतिक प्रकोपों के कारण फसलों को हानि किंवा जन, धन और कृषि आदि को क्षति पहुँचने के संकेत हैं। कुछ प्रदेशों में फसलों का उत्पादन अच्छा होने पर भी प्राकृतिक आदि प्रकोपों से लोगों को कष्टपूर्ण परिस्थितियों का सामना हो। अन्य मतानुसार, जब आषाढ़ अधिक मास दो हों, तो पुण्य, यश, सुभिक्ष तथा प्रजा को अधिक सुख होता है।

भविष्योत्तरपुराण अनुसार पुरुषोत्तम (अधि. मास) मास में ईश्वर (भगवान् कृष्ण) के निमित्त जो व्रत, उपवास, स्नान, दान या पूजनादि किए जाते हैं, उन सबका अक्षय फल होता है और व्रती के सब अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं। पुराणों में, शास्त्रकारों ने सर्वपाप हरण करने वाले अधिमास काल में व्रत, उपवास, पूजन, दान आदि के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के विधान बतलाए गए हैं। हेमाद्रि अनुसार पुरुषोत्तम मास (अधिमास) आरम्भ होने पर प्रातः स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर एकभुक्त या नक्तव्रत रखकर भगवान् विष्णुस्वरूप सहस्रांशु (भास्कर) का मंत्रों द्वारा लालपुष्प सहित पूजन एवं स्तोत्र पाठ करके कांस्य पात्र में भरे हुए अन्न, फल, वस्त्रादि का दान किया जाता है। पूजनोपरान्त अथवा अधिकमास के अन्तिम दिन विविध प्रकार के घी, गुड़ और अन्न का दान करें तथा घी, गेहूँ और गुड़ के बनाए हुए तैंतीस (33) अपूप (पूओं) को पात्र में रखकर निम्न मन्त्र पढ़कर फलों, मिष्ठान्न, वस्त्र, दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करें–

"ॐ विष्णुरूपी सहस्रांशु सर्वपापप्रणाशनः। अपूपान्न प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु।।"

इसके बाद आगे लिखे मन्त्र से भगवान् विष्णु को प्रार्थना करें–

"यस्य हस्ते गदाचक्रे गरुडोयस्य वाहनम्। शङ्खः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु।।"

इसके अतिरिक्त आषाढ़ अधिक मास में प्रतिदिन श्रीपुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ एक निश्चित् समय पर श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। श्रीविष्णु स्तोत्र, श्रीविष्णु सहस्रनाम, श्रीसूक्त, पुरुषसूक्त आदि पाठ करना शुभ होगा। अधिकमास की समाप्ति पर स्नान, जप, पुरुषोत्तम मास पाठ एवं निम्न मन्त्रों सहित गुड़, गेहूँ, घृत, वस्त्र, मिष्ठान्न, दाख, केले, कूष्माण्ड, ककड़ी आदि वस्तुओं का दान-दक्षिणा सहित करके भगवान् को 3 बार अर्घ्य देवें। त्रयस्त्रिंशद् (३३) नाम मन्त्रों का जप करें–

(१) विष्णुं, (२) जिष्णुं, (३) महाविष्णुं, (४) हरिं, (५) कृष्णं, (६) अधोक्षजम्, (७) केशवं, (८) माधवं, (९) रामं, (१०) अच्युतं, (११) पुरुषोत्तमम्, (१२) गोविन्दं, (१३) वामनं, (१४) श्रीशं, (१५) श्रीकृष्णं, (१६) विश्वसाक्षिणं, (१७) नारायणं, (१८) मधुरिपुं, (१९) अनिरुद्धं, (२०) त्रिविक्रमम्, (२१) वासुदेवं, (२२) जगद्योनिं, (२३) अनन्तं, (२४) शेषशायिनम्, (२५) सकर्षणं, (२६) प्रद्युम्नं, (२७) दैत्यरिं, (२८) विश्वतोमुखम्, (२९) जनार्दनं, (३०) धरावासं, (३१) दामोदरं, (३२) मघार्दनं, (३३) श्रीपतिं च।।

❖ अधिक–मास में त्याज्य कर्म कार्य ❖

ज्योतिष-आचार्यों के मतानुसार अधिक (पुरुषोत्तम) मास में कुछ नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों को करने का निषेध माना गया है। जैसे–विवाह, यज्ञ, देव-प्रतिष्ठा, महादान, चूड़ाकर्म (मुण्डन), देवतीर्थों में गमन, नवगृह प्रवेश, वृषोत्सर्ग, भूमि आदि सम्पत्ति की खरीद (क्रय), नयी गाड़ी का क्रय आदि शुभ कार्यों का आरम्भ अधिक मास-काल में नहीं करने चाहिएं–

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च।
वेदव्रतवृषोत्सर्ग चूडाकरणमेखला:।।
गमनं देवतीर्थानां विवाहमभिषेचनम्।
यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत्।। (गर्गाचार्य)

इसके अतिरिक्त नववधू प्रवेश, नव-यज्ञोपवीत धारण, नव-अलंकार, नवीन वस्त्रादि धारण करना, कूआँ, तालाब, बावली, बाग आदि का खनन करना, भूमि, वाहनादि का क्रय करना, काम्य व्रत का आरम्भ, भूमि, सुवर्ण, तुला, गायादि का दान, अष्टका श्राद्ध, उपाकर्मादि कर्मों के सम्पादन का निषेध माना गया है।

⭘ अधिक (पुरुषोत्तम) मास में करणीय कर्म ⭘

अधिक (मल) मास में जिस काम्य कर्म के प्रयोग का आरम्भ अधिक मास से पहले ही हो चुका हो, उसकी सम्पूर्त्ति अधिक मास में विहित है। **मलमास में मरने वाले का वार्षिक श्राद्ध, पितरों की क्रिया करना, तीर्थ व गजच्छाया श्राद्ध,** यदि मध्य में किसी के मलमास हो तो एक मास का अधिक ही श्राद्ध होगा। अर्थात् जिस मास में यह प्राप्त होता है, उसकी द्विरावृत्ति होती है। यदि मलमास में ही किसी की मृत्यु हो, तो उससे जो 12वाँ मास हो, उसमें प्रेतक्रिया को समाप्त करना चाहिए। तीव्र ज्वर या प्राणघातक रोगादि की निवृत्ति के लिए रुद्रपूजादि अनुष्ठान, पुत्र/सन्तान जन्म के नामकरण, अन्नप्राशनादि सम्बन्धी आवश्यक (दिन-निर्धारित) कर्म, कपिल षष्ठी जैसे दुर्लभ योगों का प्रयोग, नित्य पूजा-जप-दानादि कर्म अथवा ग्रहण सम्बन्धी श्राद्ध, दान, जपादि किए जा सकते हैं–

आवश्यकर्म मासाख्यं मलमासमृताब्दिकम्।
तीर्थेभच्छाययो: श्राद्धमाधानाङ्ग पितृक्रियाम्।। (सूर्योदय) (ज्यो. नि.)

नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्राय: सभी शुभ **संस्कारों (विवाह-मुण्डनादि)** एवं **मन्त्र-जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। ''**चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि (ब्रह्मपुराण)।**'' सम्भवत: इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप-दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन-सम्पदा एवं सुख-शान्ति बनी रहती है। संवत् 2072 में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 21 मार्च ई., शनिवार से '**कीलक**' नामक नया संवत्सर प्रारम्भ होगा।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रात: तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट-स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत-मिट्टी में जौं-गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा-इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका '**पंचांगदिवाकर**' सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ ब्रह्मणे नम: से ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नम: परमात्म-विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च। फिर सम्वत्सर की मूर्त्ति अथवा प्रतीक रूप में सुपारी रखकर निम्न मन्त्रों से पूजन एवं प्रार्थना करें–

''भगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषत:।''

ॐ सम्वत्सराय नम:, चैत्राय नम:, वसन्ताय नम:। आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों नया पंचाँग दिवाकर आदि का दान करें।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र-पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम,** सम्वत् का **वास,** सवारी राजा, **मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्-विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप, पाठ करने का विधान है।

चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन प्रात: कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

वि. संवद् २०७२, चैत्र शुक्ल पक्ष शाक: १९३६–३७ **तारीखें**

सन् 2015 ई. (ता. 21 मार्च से 4 अप्रैल तक) हिजरी सन् 1436 — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	शक फाल्गु.	मुं. जमा.	मार्च	सौर प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन–प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, शनि याम्योत्तरवृत्त में दिखाई देगा, ता. 27 मार्च से बुध पूर्व में ही अस्त। सायं मं.–शु. पश्चिम क्षितिज में तथा गुरु पूर्वकपाल में दिखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३०.०३	१	शनि	१२	२३	उ.भा. रेव	६ ५९	८ ४८	ब्रह्म	४५	४८	बव	१२	२३	३०	२९	21	८	मे. ५९/४८	कीलक नाम वि. संवत् २०७२ प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) नवरात्रे(A)	११	०६	०१	३३	6	35	18	36
३०.०५	२	रवि	४	१५	अश्वि	५४	३३	ऐन्द्र	३६	४८	कौ	४	१५	चैत्र	जम	22	९	मेष	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, जमादि-उल्सानी (मुस्लि.)मास(B)	११	०७	०१	०८	6	34	18	36
अवम्	३	रवि	५७	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३०.१३	४	चंद्र	५१	४०	भर.	५०	५०	वैधृ	२८	५५	व	२४	२५	२	२	23	१०	मेष	भ. २४/२५ से ५१/४० तक, मंगल अश्वि (१) मेष में ४०/३५,(C)	११	०८	००	३८	6	32	18	37
३०.१८	५	मंग	४७	५३	कृति	४८	४८	विष्क	२२	२०	बव	१९	४७	३	३	24	११	वृ. ५/१०	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, स. सि. योग:	११	०९	००	०८	6	31	18	38
३०.२०	६	बुध	४६	००	रोहि	४८	४०	प्रीति	१७	१५	कौ	१६	५७	४	४	25	१२	वृष	स्कन्द षष्ठी व्रत, सर्वार्थ सिद्ध योग	११	०९	५९	३५	6	30	18	38
३०.२५	७	गुरु	४६	८	मृग	५०	२८	आयु	१३	४५	गर	१६	०४	५	५	26	१३	मि. १९/२०	भ. ४६/०८ से प्रारम्भ	११	१०	५९	०१	6	29	18	39
३०.३३	८	शुक्र	४८	८	आर्द्रा	५४	५	सौभा	११	४५	वि	१७	८	६	६	27	१४	मिथुन	भ. १७/०८ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, बुध मीन में ४७/४८D**	११	११	५८	२४	6	27	18	40
३०.३५	९	शनि	५१	५०	पुन	५९	१८	शोभ	११	१०	बा	१९	५९	७	७	28	१५	क. ४२/५३	**श्रीरामनवमी, नवरात्रे समाप्त**	११	१२	५७	४५	6	26	18	40
३०.४०	१०	रवि	५६	५५	पुष्य	६०	००	अति	११	५३	तै	२४	२३	८	८	29	१६	कर्क	बुध उ.भा. में ३७/५५, नवरात्रे-पारणा, स. सि. यो.	११	१३	५७	०२	6	25	18	41
३०.४३	११	चंद्र	६०	००	पुष्य	५	५५	सुक	१३	२८	व	२९	५८	९	९	30	१७	कर्क	भ. २९/०८ से प्रारम्भ, गण्डमूल (प्रातः 8/46 घं.मिं.) से प्रा.	११	१४	५६	१८	6	24	18	41
३०.५०	११	मंग	३	००	अश्ले	१३	१५	धृति	१५	४३	वि	३	००	१०	१०	31	१८	सिं. १३/१३	भ. ३/०० तक, **कामदा एकादशी व्रत**, सूर्य रेव. में ४४/५८, स.सि.यो.	११	१५	५५	३२	6	22	18	42
३०.५५	१२	बुध	९	३०	मघा	२१	३	शूल	१८	४५	बा	९	३०	११	११	अप्रै	१९	सिंह	प्रदोष व्रत, **अनङ्ग त्रयोदशी व्रत**, श्रीविष्णु दमनोत्सव, 1 अप्रै., गंडमूलादि	११	१६	५४	४२	6	21	18	43
३०.५८	१३	गुरु	१६	८	पूफा	२८	५०	गंड	२०	५०	तै	१६	८	१२	१२	2	२०	कं. ४५/४३	**श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)**	११	१७	५३	५१	6	20	18	43
३१.०३	१४	शुक्र	२२	२८	उफा	३६	२०	वृद्धि	२३	१३	व	२२	२८	१३	१३	3	२१	कन्या	भ. २२/२८ से ५५/२२ तक, गुड फ्राईडे, श्रीसत्यनारायण व्रत (F)	११	१८	५२	५९	6	19	18	44
३१.०८	१५	शनि	२८	१५	हस्त	४३	१३	ध्रुव	२५	१०	बव	२८	१५	१४	१४	4	२२	कन्या	चैत्र पूर्णिमा, **ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण** (देखें पृ. 15), **वैशाख स्नान**G	११	१९	५२	०४	6	18	18	45

(A) शुरू पंचक समाप्त (28/49 घं.मिं.), घटस्थापन, वर्षफल श्रवण, ध्वजारोहण, चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **(B)** प्रारम्भ, बुध पू.भा. में १/३५, शक चैत्र, व शक सं. १९३७ शुरु **(C)** शुक्र भरणी में ३२/०५, दमनक चतुर्थी **(D)** (घं. मिं. 25/34), बुध पूर्व में अस्त ३०/००, मेला बाहूफोर्ट (जम्मू), अशोकाष्टमी **(F)** शुक्र कृति (१) में ४४/०५, शिवदमनोत्सव **(G)** प्रारम्भ, श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत), गं.मू.

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	०	१०	३	०	७	५	११
११	०८	०२	२८	१८	१७	१०	१६	१६
५६	११	२६	३०	४६	२५	४३	२१	२१
०४	१३	५३	११	२६	५०	४९	५२	५२
59 23	753 5	44 41	107 23	2 18	71 39	1 17	3 10	3 10
उभा ३	आर्द्रा १	अश्वि १	पूभा ३	आश्ले १	भर २	अनु ३	हस्त २	उभा ४
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

मं.शु. १ | १२ सू. के. | बु. ११ | २ | १० | ३ चं. | ९ | ४ गु. | ६ रा. | ८ श. | ५ | ७

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	०	११	३	०	७	५	११
१९	१४	०८	१३	१८	२६	१०	१५	१५
५०	१८	२२	२६	३३	५६	३०	५६	५६
०८	१३	५५	४९	१७	२६	५४	२७	२७
59 6	719 55	44 17	118 6	0 48	70 54	2 2	3 11	3 11
रेव १	हस्त २	कृति ३	उभा ४	आश्ले १	कृति १	अनु ३	हस्त २	उभा ४
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

मं. शु. १ | १२ सू.बु. के. | ११ | २ | १० | ३ | ९ | ४ गु. | ६ चं.रा. | ८ श. | ५ | ७

चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र प्रतिपदा, शनिवार (21 मार्च) से '**कीलक**' नामक नया वि. २०७२ प्रारम्भ होगा। संवतारम्भ से व्रतानुष्ठान, होम-दानादि शुभ कार्यों के संकल्पादि में इसी नाम का प्रयोग होगा। नव सम्वत् का राजा शनि और मन्त्री मंगल होगा। फलस्वरूप चोरी, डकैती, तस्करी, विलिष्ट रोगों आदि की घटनाएँ अधिक होंगी। सामान्य लोग असुरक्षा की भावना एवं विलिष्ट रोगों के कारण भयभीत रहें। प्रतिपदा को शुभ मुहूर्त्त में श्रीदुर्गा मूर्ति के सम्मुख नारियल सहित घटस्थापन करके अखण्ड दीप मन्त्रपूर्वक जलाना चाहिए। फिर श्रीदुर्गा पूजन करके नवमी तक श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ नित्य नियमानुसार करना चाहिए। प्रतिपदा को ही समृद्धि के प्रतीक मिट्टी के पात्र में शुद्ध रेत/मिट्टी डालकर जौं के बीज बोकर, शुद्ध जल के छींटे डालकर मंगल मन्त्र पढ़ने चाहिए। इसी दिन ब्राह्मणमुख द्वारा नवसंवत्सर का पूजन, संवत् का नाम एवं राजा मन्त्री का फल श्रवण करके ब्राह्मण को यथाशक्ति नया पंचाँग, धर्मग्रंथ, फल, मिष्ठान्न, दक्षिण सहित दान करना चाहिए। इसी दिन ध्वजारोहण करने का विधान है। **लोकभविष्य**–चैत्र मास में **पाँच शनिवार** होने से कहीं छत्र-भंग (सत्ता परिवर्तन), नेताओं में परस्पर विरोध तथा कहीं साम्प्रदायिक टकराव एवं हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं। दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं के मूल्यों में और तेज़ी हो। 4 अप्रैल, शनिवार की रात्रि को ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण घटित होना भी आयन्दा विशेष तेजी का सूचक है। **आकाश लक्षण**–उ. भारत के विभिन्न क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक : १९३७ | **सन् 2015 ई. (ता. 5 अप्रैल से 18 अप्रैल तक)** हिजरी सन् 1436 | भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:

ग्रह दर्शन–प्रातः श. पश्चिमकपाल में होगा। बु. अभी अस्त है। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त के पास, मं.–शु. पश्चिम–क्षितिजासन्न होंगे। ता. 10 से मंग. पश्चिम में ही अस्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें: चैत्र शक.	जमा. सा.	अप्रैल	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल
३१.१३	१	रवि	३३	१८	चित्रा	४९	२३	व्या.	२६	३५	बा	०	४७	१५	१५	5	२३	तु. १६/२८
३१.१८	२	चंद्र	३७	२०	स्वा	५४	३५	हर्ष	२७	१५	तै	५	१९	१६	१६	6	२४	तुला
३१.२३	३	मंग	४०	१८	विशा	५८	४०	वज्र	२७	८	व	८	४९	१७	१७	7	२५	वृ. ४२/४५
३१.२५	४	बुध	४२	३	अनु	६०	००	सिद्धि	२६	५	बव	११	११	१८	१८	8	२६	वृश्चिक
३१.३३	५	गुरु	४२	३३	अनु	१	४०	व्य.	२४	५	कौ	१२	१८	१९	१९	9	२७	वृश्चिक
३१.३८	६	शुक्र	४१	४०	ज्ये.	३	२०	वरी	२१	३	गर	१२	७	२०	२०	10	२८	ध. ३/२०
३१.४०	७	शनि	३९	२३	मूल	३	३८	परि	१६	५५	वि	१०	३२	२१	२१	11	२९	धनु
३१.४५	८	रवि	३५	४८	पूषा	२	३५	शिव	११	४०	बा	७	३६	२२	२२	12	३०	म. १७/०८
३१.५०	९	चंद्र	३०	५३	उ.षा. श्रव.	० ५६	१५ ३८	सिद्ध साध्य	५ ५८	२३ ५	तै	३	२१	२३	२३	13	३१	मकर
३१.५३	१०	मंग	२४	५३	धनि	५२	३	शुभ	४९	५८	वि	२४	५३	२४	२४	14	वैश	कुं. २४/२८
३२.००	११	बुध	१७	५५	शत	४६	३८	शुक्ल	४१	१३	बा	१७	५५	२५	२५	15	२	कुम्भ
३२.०५	१२	गुरु	१०	१५	पूभा	४०	४०	ब्रह्म	३१	५५	तै	१०	१५	२६	२६	16	३	मी. २७/१०
३२.०८	१३	शुक्र	२	१०	उभा	३४	२८	ऐन्द्र	२२	२५	व	२	१०	२७	२७	17	४	मीन
अवम	१४	शुक्र	५३	५८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३२.१५	३०	शनि	४६	५	रेव	२८	२३	वैधृ	१२	५८	च	२०	२	२८	२८	18	५	मे. २८/२३

तिथि	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
१	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध रेवती में ३५/४८	११	२०	५१	०५	6	16	18	45
२	**शुक्र वृष में** ३३/४० (19घं.-43मिं.)	११	२१	५०	०६	6	15	18	46
३	भ. ८/४९ से ४०/१८ तक,	११	२२	४८	०६	6	14	18	47
४	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), **गुरु मार्गी ४०/२५**, स.सि.यो. **(A)**	११	२३	४८	०३	6	13	18	47
५	गण्डमूलादि प्रात: 6/51 उपरांत	११	२४	४६	५८	6	11	18	48
६	भ. ४१/४० से, मंगल भरणी में ४२/१०, **मंगल पश्चिम में अस्त (B)**	११	२५	४५	५०	6	10	18	49
७	भ. १०/३२ तक, गण्डमूल प्रात: 7/36 तक	११	२६	४४	४३	6	9	18	49
८	**बुध अश्वि. (१) मेष में** ६/२० (8घं.-40मिं.), स. सि. योग	११	२७	४३	३८	6	8	18	50
९	भ. ५७/५३ से प्रारम्भ, स. सि. योग:	११	२८	४२	२२	6	7	18	51
१०	भ. २४/५३ तक, **पंचक प्रारम्भ** २४/२८, **सूर्य अश्वि (१) मेष (C)**	११	२९	४१	०९	6	6	18	51
११	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, शुक्र रोहि. में ६/४३, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	०	००	३९	५४	6	4	18	52
१२	**प्रदोष व्रत**, वक्री शनि अनु. (२) में १७/१०	०	०१	३८	३८	6	3	18	53
१३	भ. २/१० से २८/०४ तक, मासशिवरात्रि व्रत	०	०२	३७	१८	6	2	18	53
१४	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३०	**वैशाख शनिवारी अमावस, पंचक समाप्त २८/२३**, बुध भरणी में D	०	०३	३५	५७	6	1	18	54

(A) सती अनुसूया जयन्ती **(B)** १४/४८, गं. मू. **(C)** में १९/०८ (13घं.-45मिं.), **वैशाख संक्रान्ति (वैशाखी)**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. प्रात: 7घं.-21मिं. बाद, **(D)** २८/४३, गण्डमूल विचार

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 12 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	११	३	१	७	५	११
२७	२५	१४	२९	१८	०६	१०	१५	१५
४२	४२	१५	४३	३२	२०	१२	३१	३१
०३	४७	४८	२४	११	४१	१४	०१	०१
58 51	832 15	44 3	125 -53	0 43	70 4	2 42	3 11	3 11
रेव ४	पूभा ४	भर १	रेव ४	आश्ले १	कृति ३	अनु ३	हस्त २	उभा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

१ मं. | १२ सू. बु. के. | ११ | १० | ९ चं. | ८ श. | ७ | ६ रा. | ५ | ४ गु. | ३ | २ शु.

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 18 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	०	३	१	७	५	११
०३	२२	१८	१२	१८	१३	०९	१५	१५
३४	४०	३८	१८	३९	१९	५४	११	११
४४	०८	२७	१२	१५	२१	४८	५६	५६
58 41	886 48	43 36	123 41	1 49	69 22	3 10	3 10	3 10
अश्वि २	रेव २	भर. २	अश्वि ४	आश्ले १	रोहि १	अनु २	हस्त २	उभा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रात: 5.30

१ सू. मं. बु. | १२ के. चं. | ११ | १० | ९ | ८ श. | ७ | ६ रा. | ५ | ४ गु. | ३ | २ शु.

वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास (चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक) में किसी तीर्थ स्थान पर अथवा अपने निवास पर ही गंगाजलादि मिश्रित पवित्र जल में स्नान करके भगवान् लक्ष्मी/नारायण की पूजार्चन करके नित्य श्रीविष्णु सहस्रनाम तथा **वैशाख माहात्म्य** का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए। वै. पूर्णिमा को ब्राह्मण को यथाशक्ति वस्त्र, मौसमी फल, अनाजादि का दान करना कल्याणकारी होगा। ता. 14 अप्रैल, मंगलवार को वैशाख संक्रान्ति ३० मुहूर्त्ति है। वैशाख मास में **पाँच रविवार** पड़ रहे हैं। इनके प्रभावस्वरूप अत्यधिक महँगाई व भ्रष्टाचार के कारण सामान्य लोगों में आर्थिक परेशानियाँ एवं सामाजिक असुरक्षा का भय होगा। कहीं छत्रभंग, राजनैतिक अस्थिरता एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होने का भय है–**यत्रमासे रविवारा: जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभङ्ग स्यात् दास्ते च महद्भयम्।।** इस पक्ष में **शनिवार** की अमावस्या होने से गेहूँ–अनाजादि वस्तुओं में दुर्लभता होने से आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी होगी। पिता–पुत्र जैसे निकट के रिश्तों में भी प्रेम भाव में कमी हो। राजनीति एवं सामाजिक क्षेत्र में अति स्वार्थपरता के कारण साम्प्रदायिकता, कट्टरवाद एवं चारित्रिक मूल्यों का ह्रास होगा। **संक्रान्ति राशिफल**–मेष, वृष, कर्क, सिंह, धन, मकर राशि वालों को संक्रान्ति का फल शुभ होगा। जबकि अन्य राशि वालों को मिश्रित फल प्राप्त होंगे। **मंगलवारी संक्रान्ति** होने के कारण तिल, तैल, घृत, गुड़, शक्कर, ईख, वनस्पति, रसादि सर्व प्रकार के माल पंसारी तेज होंगे। प्रजा में दुख-पीड़ा व असंतोष बढ़ेगा। कहीं छत्रभंग, उपद्रव व हिंसक घटनाएँ अधिक हों। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष में तेज हवाओं के साथ खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, वैशाख शुक्ल पक्ष शाक: १९३७ | **सन् 2015 ई. (ता. 19 अप्रैल से 4 मई तक)** हिजरी सन् 1436
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु: | भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें: शक	मुस्लिम	अंग्रेजी	सौर प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
३२.१८	१	रवि	३८	५३	अश्वि	२२	५३	विष्क प्रीति	१ ५५	५० २०	किं	१२	२९	२९	२९	19	६	मेष
३२.२०	२	चंद्र	३२	४०	भर.	१८	१५	आयु	४७	५०	बा	५	४७	३०	३०	20	७	वृष ३२/१८
३२.२५	३	मंग	२७	५०	कृति	१४	५८	सौभा	४१	३०	गर	२७	५०	वैश	रज	21	८	वृष
३२.३०	४	बुध	२४	४०	रोहि	१३	१५	शोभ	३६	३५	वि	२४	४०	२	२	22	९	मि. ४३/०३
३२.३३	५	गुरु	२३	२५	मृग	१३	२३	अति	३३	१३	बा	२३	१५	३	३	23	१०	मिथुन
३२.३८	६	शुक्र	२४	१०	आर्द्रा	१५	२५	सुक	३१	२५	तै	२४	१०	४	४	24	११	मिथुन
३२.४५	७	शनि	२६	५३	पुन	१९	२५	धृति	३१	८	व	२६	५३	५	५	25	१२	कर्क ३/१८
३२.४८	८	रवि	३१	१३	पुष्य	२५	३	शूल	३२	५	बव	३१	१३	६	६	26	१३	कर्क
३२.५३	९	चंद्र	३६	५०	अश्ले	३१	५५	गंड	३४	००	बा	४	२	७	७	27	१४	सिं. ३१/५५
३२.५८	१०	मंग	४३	१३	मघा	३९	३५	वृद्धि	३६	३०	तै	१०	२	८	८	28	१५	सिंह
३२.५८	११	बुध	४९	४०	पूफा	४७	२३	ध्रुव	३९	८	व	१६	२७	९	९	29	१६	सिंह
३३.०३	१२	गुरु	५५	५०	उफा	५४	५३	व्या.	४१	३८	बव	२२	४५	१०	१०	30	१७	कन्ये ४/२०
३३.०८	१३	शुक्र	६०	००	हस्त	६०	००	हर्ष	४३	३३	कौ	२८	३३	११	११	मई	१८	कन्या
३३.१०	१३	शनि	१	१५	हस्त	१	४०	वज्र	४४	४५	तै	१	१५	१२	१२	2	१९	तु. ३४/४०
३३.१५	१४	रवि	५	३३	चित्रा	७	२५	सिद्धि	४५	००	व	५	३३	१३	१३	3	२०	तुला
३३.२०	१५	चंद्र	८	३८	स्वा.	११	५८	व्य.	४८	१८	बव	८	३८	१४	१४	4	२१	वृ. ५९/३३

अंग्रेजी	प्रातः शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं गु. याम्योत्तर वृत्त के पास, शुक्र पश्चिम में होगा। 22 अप्रै. से बुध भी पश्चिमी में होगा। मंगल अस्त है।	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
19	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, स. सि. योग:, गं. मू. 15/09 तक	०	०४	३४	३६	6	००	18	55
20	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती** (देखें पृ. 83), **(A)**	०	०५	३३	१२	5	59	18	55
21	भ. ५६/१५ से, **अक्षय तृतीया**, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ, शक **B**	०	०६	३१	४६	5	58	18	56
22	भ. २४/४० तक, बुध पश्चिम में उदय ४/५३, स. सि. योग:	०	०७	३०	१८	5	57	18	57
23	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,**	०	०८	२८	४७	5	56	18	57
24	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,	०	०९	२७	१६	5	55	18	58
25	भ. २६/५३ से ५९/०३ तक, **श्रीगङ्गा-जयन्ती,** बुध कृति. में २०/१५,	०	१०	२५	४२	5	53	18	59
26	शुक्र मृग. में ४२/३०, **श्रीदुर्गाष्टमी, बगुलामुखी जयन्ती,** स.सि.यो.	०	११	२४	०५	5	52	18	59
27	**जानकी (सीता) नवमी,** सूर्य भर. में ५९/१०, **बुध वृष में १५/३३,** गं.मू.	०	१२	२२	२७	5	51	19	००
28	गंडमूलादि 21/40 घं.मिं. तक	०	१३	२०	४६	5	50	19	01
29	भद्रा १६/२७ से ४९/४० तक, **मोहिनी एकादशी व्रत,** मंगल कृति. में ५/४३	०	१४	१९	०३	5	50	19	01
30		०	१५	१७	१८	5	49	19	02
मई	**प्रदोष व्रत,** मई मास प्रारम्भ, **मई (श्रम) दिवस**	०	१६	१५	३२	5	48	19	03
2	**श्रीनृसिंह जयन्ती, शुक्र मिथुन में** ३६/५५ (20 घं. 33 मिं.)	०	१७	१३	४४	5	47	19	03
3	भ. ५/३३ से ३७/०५ तक, **मंगल वृष में ४५/२३, श्रीकूर्म जयन्ती C**	०	१८	११	५३	5	46	19	04
4	**वैशाख पूर्णिमा स्नानदानादि,** श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त **(D)**	०	१९	१०	०१	5	45	19	05

(A) शिवाजी जयन्ती, सूर्य सायन वृष में २३/०३, ग्रीष्म ऋतु आरम्भ **(B)** वैशाख प्रारम्भ, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रा., **अगस्त्यास्त** **(C)** श्रीसत्यनारायण व्रत **(D)** छिन्नमस्तिका जयन्ती, बुध रोहि. में १०/२५

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	०	३	१	७	५	११
११	११	२४	२७	१८	२२	०९	१४	१४
२३	२५	२५	४९	५८	३०	२७	४६	४६
१२	३५	५२	०८	५२	३४	३२	३०	३०
58 24	723 27	43 12	103 30	3 16	67 16	3 41	3 11	3 11
अश्वि ४	पुष्य ३	भर. ४	कृति १	आर्द्रा १	रोहि ४	अनु २	हस्त २	उफा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ सू. मं. बु.; २ शु.; ३; ४ चं. गु.; ५; ६ रा.; ७; ८ श.; ९; १०; ११; १२ के.

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१	१	३	२	७	५	११
१९	१७	००	०९	१९	०१	०८	१४	१४
०९	२२	१०	४६	२९	३२	५६	२१	२१
२७	५६	०१	५८	३७	१२	३५	०४	०४
58 8	755 18	42 48	70 37	4 36	66 57	4 5	3 10	3 10
भर. २	स्वा. ४	कृति २	कृति ४	आर्द्रा १	मृग ३	अनु २	हस्त २	उफा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१ सू.; २ बु. मं.; ३ शु.; ४ गु.; ५; ६ रा.; ७ चं.; ८ श.; ९; १०; ११; १२ के.

वैशाख शुक्ल पक्षफल—

भविष्य पुराणानुसार भगवान् के अंशावतार श्रीपरशुराम का जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाले) में हुआ था। तदनुसार सोमवार, 20 अप्रैल को सूर्यास्त के पश्चात् सायं 7/03 के बाद भगवान् परशुराम का जन्मोत्सव मनाना शुभ होगा। **अक्षय तृतीया** पर्व, 21 अप्रैल, मंगलवार की मध्याह्न 11/57 के बाद **रोहिणी नक्षत्र** कालीन मनाना विशेष प्रशस्त होगा। **यह स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त तिथि है।** इस दिन किए गए तप, जप, ध्यान, यज्ञ, दानादि शुभ कार्यों का अक्षुण्ण (अक्षय) फल होता है। इसदिन तीर्थ स्नान, समुद्र स्नान, श्रीविष्णु पूजन, श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ, ब्राह्मण भोजन, कलश, वस्त्र, फल, चावलादि अनाज एवं मिष्ठान्न दक्षिणासहित दान यथाशक्ति करने से अनन्त गुणा फल होता है। **श्रीगङ्गा जयंती** (25 अप्रै.) को श्रीगङ्गा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इस पक्ष में हरिद्वार में गंगा स्नान एवं पुष्पाक्षत व दीपादि द्वारा गंगा पूजन, जप-पाठ एवं अन्न, वस्त्र, फलों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। शक्तिरूपा **बगुलामुखी माता** (बगुलमुखी जयं. 26 अप्रै.) की पूजार्चन करने से व्यक्ति को ऋण, रोग एवं शत्रु भय नहीं होता। **वैशाख मास में पाँच रविवार** होने से भारत के कुछ राज्यों में राजनैतिक अस्थिरता एवं गतिरोध होने के संकेत हैं। लोगों में भय एवं विक्षोभ रहे। घी, खाद्य, तैल, दालें, चौपाय, पशुचारा तेज़ भाव हों। **आकाश लक्षण**—भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में तेज़ हवाओं के साथ वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक : १९३७ — सन् 2015 ई. (ता. 5 मई से 18 मई तक) हिजरी सन् 1436

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शनि पश्चिम में दिखाई देगा। सायं गुरु पश्चिम कपाल में, बुध, शुक्र भी पश्चिम क्षितिज में दिखाई देंगे। मंगल अभी अस्त रहेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें वैशा. शक	रज्जब मु.	मई	वैशा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३.२३	१	मंग	१०	२५	विशा	१५	१८	वरी	४२	३८	कौ	१०	२५	१५	१५	5	२२	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	०	२०	०८	०६	5	44	19	05
३३.२८	२	बुध	११	००	अनु	१७	२३	परि	४०	००	गर	११	००	१६	१६	6	२३	वृश्चिक	भ. ४०/४३ से, **श्रीनारद जयन्ती**, वीणादान, स. सि. यो.	०	२१	०६	११	5	43	19	06
३३.३३	३	गुरु	१०	२५	ज्ये.	१८	२५	शिव	३६	३३	वि	१०	२५	१७	१७	7	२४	ध. १८/२५	भ. १०/२५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), टैगोर जयन्ती	०	२२	०४	१४	5	42	19	07
३३.३५	४	शुक्र	८	४८	मूल	१८	२५	सिद्ध	३२	१५	बा	८	४८	१८	१८	8	२५	धनु	शुक्र आर्द्रा में ३६/५०, गण्डमूल विचार	०	२३	०२	१८	5	41	19	07
३३.३८	५	शनि	६	१०	पू.षा.	१७	२८	साध्य	२७	१३	तै	६	१०	१९	१९	9	२६	म. ३२/०५		०	२४	००	१७	5	41	19	08
३३.४३	६	रवि	२	४५	उ.षा.	१५	४३	शुभ	२१	३३	व	२	४५	२०	२०	10	२७	मकर	भद्रा २/४५ से ३०/३८ तक, गुरु आश्ले. (२) में ५/०३	०	२४	५८	१६	5	40	19	09
अवम्	७	रवि	५८	३०	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३.४५	८	चंद्र	५३	३५	श्रव	१३	१३	शुक्ल	१५	१५	बा	२६	३	२१	२१	11	२८	कुंभे ४१/४०	**पंचक प्रारम्भ ४१/४०**, सूर्य कृतिका में ४५/१७, स. सि. योगः	०	२५	५६	१३	5	39	19	09
३३.५०	९	मंग	४८	३	धनि	१०	००	ब्रह्म	८	२८	तै	२०	४९	२२	२२	12	२९	कुम्भ		०	२६	५४	११	5	38	19	10
३३.५३	१०	बुध	४१	५८	शत	६	१३	ऐन्द्र वैधृ	१ ५३	५ २०	व	१५	१	२३	२३	13	३०	मी. ४८/०३	भ. १५/०१ से ४१/५८ तक,	०	२७	५२	०६	5	38	19	11
३३.५८	११	गुरु	३५	३३	पू.भा. उ.भा.	१ ५७	५८ २३	विष्क	४५	२३	बव	८	४६	२४	२४	14	३१	मीन	**अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी (पं.)**	०	२८	४९	५९	5	37	19	12
३४.००	१२	शुक्र	२८	५५	रेव	५२	४३	प्रीति	३७	१५	कौ	२	१४	२५	२५	15	ज्ये	मे. ५२/४३	**पंचक समाप्त ५२/४३, सूर्य वृष में १२/३३, ज्येष्ठ संक्रान्ति,(A)**	०	२९	४७	५३	5	36	19	12
३४.०३	१३	शनि	२२	१८	अश्वि	४८	१०	आयु	२९	१०	व	२२	१८	२६	२६	16	२	मेष	भ. २२/१८ से ४९/११ तक, मासशिवरात्रि व्रत, स. सि. यो. **(B)**	१	००	४५	४४	5	36	19	13
३४.०७	१४	रवि	१६	३	भर.	४४	८	सौभा	२१	२५	शकु	१६	३	२७	२७	17	३	वृ. ५८/१३	मंगल रोहि. में ४३/००, **शनैश्चर जयन्ती**, अमावस (पितृकार्येषु) **(C)**	१	०१	४३	३४	5	35	19	13
३४.०८	३०	चंद्र	१०	२०	कृति	४०	५०	शोभ	१४	८	ना	१०	२०	२८	२८	18	४	वृष	**ज्येष्ठ सोमवती अमावस, स्नान-दानादि**, तीर्थस्नान पुण्यम्	१	०२	४१	२२	5	35	19	14

(A) मु. 30 पुण्यकाल सं. सूर्योदय से मध्याह्न बाद तक, प्रदोष व्रत, स. सि. योग, गं. मू. **(B)** सावित्री चौदश, वटसावित्री व्रत प्रा., गण्डमूल **(C)** भावुका अमावस, वटसावित्री व्रत (अमा.-पक्ष) (देखें पृ. 83)

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	१	१	३	२	७	५	११
२५	२०	०५	१६	२०	०९	०८	१३	१३
५५	१०	०८	२३	०५	१६	२७	५८	५८
५४	१६	३२	४५	००	५०	१४	४९	४९
57 58	843 21	42 28	37 30	5 40	65 36	4 19	3 11	3 11
भर. ४	श्रव. ४	कृति ३	रोहि. २	अश्ले २	आर्द्रा १	अनु २	हस्त २	उभा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ सू. ; २ बु. मं. ; ३ शु. ; ४ गु. ; ५ ; ६ रा. ; ७ ; ८ श. ; ९ ; १० चं. ; ११ ; १२ के.

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	१	३	२	७	५	११
०२	००	१०	१९	२०	१६	०७	१३	१३
४१	२२	०४	०१	४७	५१	५६	३६	३६
१५	१६	४५	४७	४४	२५	३१	३४	३४
57 49	841 56	42 7	2 46	6 41	64 1	4 27	3 11	3 11
कृति २	कृति २	रोहि. १	रोहि. ३	अश्ले २	आर्द्रा ४	अनु २	हस्त २	उभा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

२ सू. चं. मं. बु. ; ३ शु. ; ४ गु. ; ५ ; ६ रा. ; ७ ; ८ श. ; ९ ; १० ; ११ ; १२ के. ; १

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—

ज्येष्ठ मास में एकादशी, संक्रान्ति, अमावस्या, शुक्लाष्टमी, गंगादशमी, निर्जला एकादशी, पूर्णमाशी आदि पर्वों पर जलपात्र, गेहूँ-चावल, सत्तू, चने आदि अनाज, दूध, चीनी, शक्कर, पंखा, छाता, आम-खरबूज़ा आदि फल, वस्त्र तथा अन्य ग्रीष्म उपयोगी वस्तुओं का संकल्पपूर्वक सुपात्र ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान करने का विशेष महत्त्व है। इस पक्ष की **अपरा एकादशी** (14 मई) का व्रत रखकर किसी गरीब परिवार की अन्न-धनादि से सहायता करना विशेष शुभ होता है। ता. 15 को **ज्येष्ठ संक्रान्ति** शुक्रवार को ३० मुहूर्त्ति है। नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नाम संक्रांति राजनेताओं के लिए सुखकारक होगी। ३० मुहूर्त्ति इस संक्रान्ति के स्नान, दान, जपादि का पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से लेकर मध्याह्न बाद तक रहेगा। **ज्येष्ठ मास में पाँच (५) मंगलवार** होने से देश में कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), साम्प्रदायिक उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। किसी प्रमुख नेता का आकस्मिक निधन या अपदस्थ होने के योग हैं—**यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।** गेहूँ, चने, घृत, दालें, खाद्य तैल, खल, बिनौले आदि माल पंसारी, सोना, पीतल आदि तेज़ भाव होंगे। इस पक्ष में शनि अभी वक्री होकर वृश्चिक राशि में संचरित है। जिससे कहीं अनाज की कमी एवं नेताओं में परस्पर टकराव हों। पक्ष में **सोमवारी अमावस्या** (18 मई) को तीर्थ स्नान, भगवान् शिव की पूजार्चना, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणा आदि का दान करना विशेष पुण्यप्रदायक माना जाता है। **आकाश लक्षण**—पक्ष में उ. भारत में कहीं तेज हवाओं के साथ तीव्र बौछारें एवं गर्मी का प्रकोप रहेगा।

वि. संवत् २०७२, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाकः १९३७ — सन् 2015 ई. (ता. 19 मई से 2 जून तक) हिजरी सन् 1436

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः श. पश्चिम में होगा। सायं, बु., गु. व शु. पश्चिम में होंगे। ता. 22 मई से बु. पश्चिम में ही अस्त हो जाएगा। मं. भी अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें: शाके ज्ये.	मुस्लि.	मई	प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	व्रत-पर्व	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.१३	१	मंग	५	३८	रोहि	३८	४३	अति	७	४३	बव	५	३८	२९	२९	19	५	वृष	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, **बुध वक्री 7घं.-17मिं.**, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ,	१	०३	३९	११	5	34	19	15
३४.१५	२	बुध	२	१३	मृग	३८	३	सुक/धृति	२/५८	२०/१०	कौ	२	१३	३०	श.	20	६	मिथु. ८/१३	**रम्भा तृतीया व्रत,** शुक्र पुन. में ५७/१८, शव्वान (मुस्लि.) मास **(A)**	१	०४	३६	५७	5	33	19	15
३४.१८	३	गुरु	०	१८	आर्द्रा	३८	५८	शूल	५५	२५	गर	०	१८	३१	२	21	७	मिथुन	भ. ३०/१४ से, महाराणा प्रताप जयन्ती, सूर्य सायन मिथुन में २१/४५	१	०५	३४	४०	5	33	19	16
३४.२३	४	शुक्र	०	१०	पुन	४१	४५	गंड	५४	१०	वि	०	१०	ज्ये.	३	22	८	कर्क २५/५५	भ. ०/१० तक, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, **वक्री बुध पश्चिम में अस्त** २२/४३	१	०६	३२	२५	5	32	19	17
३४.२३	५	शनि	१	५३	पुष्य	४६	१८	वृद्धि	५४	१५	बा	१	५३	२	४	23	९	कर्क	राहु हस्त (१), केतु उ.भा. (३) में १२/२५, विन्ध्य वासिनी पूजा	१	०७	३०	०८	5	32	19	17
३४.२८	६	रवि	५	२५	अश्ले	५२	२३	ध्रुव	५५	३५	तै	५	२५	३	५	24	१०	सिं. ५२/२३	अरण्य षष्ठी, गण्डमूल विचार,	१	०८	२७	४७	5	31	19	18
३४.३०	७	चंद्र	१०	२३	मघा	५१	३०	व्या.	५७	४५	व	१०	२३	४	६	25	११	सिंह	भ. १०/२३ से ४३/२२ तक, सूर्य रोहि. में ३५/५५, गं.मू. 29/19 घं. तक	१	०९	२५	२७	5	31	19	19
३४.३०	८	मंग	१६	२०	पूफा	६०	००	हर्ष	६०	००	बव	१६	२०	५	७	26	१२	सिंह	**श्रीदुर्गाष्टमी,** धूमावती जयन्ती, **मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)**	१	१०	२३	०४	5	31	19	19
३४.३५	९	बुध	२२	४३	पूफा	७	१५	हर्ष	०	२३	कौ	२२	४३	६	८	27	१३	कं. २४/१०	उमा ब्राह्मणी व्रत	१	११	२०	४१	5	30	19	20
३४.३५	१०	गुरु	२८	४८	उफा	१४	५०	वज्र	२	५८	गर	२८	४८	७	९	28	१४	कन्या	**श्रीगङ्गा दशहरा पर्व (हरिद्वार), हस्त नक्षत्र 11/26 बजे बाद,**	१	१२	१८	१७	5	30	19	20
३४.४०	११	शुक्र	३४	८	हस्त	२१	४८	सिद्धि	५	८	व	१	२८	८	१०	29	१५	तु. ५४/५०	भ. १/२८ से ३४/८ तक, **निर्जला एकादशी व्रत**	१	१३	१५	४८	5	29	19	21
३४.४२	१२	शनि	३८	५	चित्रा	२७	३३	व्य.	६	२३	बव	६	७	९	११	30	१६	तुला	**शुक्र कर्क में ३८/३५ (20घं.-55मिं.),** चम्पक-द्वादशी	१	१४	१३	२०	5	29	19	22
३४.४३	१३	रवि	४०	३५	स्वा	३१	५३	वरी	६	३३	कौ	९	२०	१०	१२	31	१७	तुला	प्रदोष व्रत, **वटसावित्री व्रतारम्भ**	१	१५	१०	५२	5	29	19	22
३४.४५	१४	चंद्र	४१	२८	विशा	३४	३८	परि	५	३०	गर	११	२	११	१३	जून	१८	वृ. १९/०५	भ. ४१/२८ से, **जून मास** प्रारम्भ,	१	१६	०८	२०	5	29	19	23
३४.४८	१५	मंग	४०	५३	अनु	३५	५८	शिव/सिद्ध	३/५९	१८/५०	वि	११	११	१२	१४	2	१९	वृश्चिक	भ. ११/११ तक, **ज्येष्ठ पूर्णिमा, वटसावित्री व्रत** (पूर्णिमा-पक्ष) **(B)**	१	१७	०५	४९	5	28	19	23

(A) प्रारम्भ, उमा-अवतार, महाराणा प्रताप जयन्ती (राजस्थाने), स. सि. यो. **(B)** सन्त कबीर जयन्ती, शुक्र पुष्य में ५९/२८ (29घं.-15मिं.), श्रीसत्यनारायण व्रत

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	१	३	२	७	५	११
१०	१३	१५	१७	२१	२५	०७	१३	१३
२३	२५	४०	२२	४४	१६	२०	११	११
०६	२३	२५	१४	५६	०५	४५	०८	०८
57 37	709 8	41 45	28 24	7 44	61 46	4 28	3 11	3 11
रोहि १	पूफा १	रोहि २	रोहि ३	अश्ले २	पुन २	अनु २	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

३ शु. | २ सू. मं. बु. | १ | १२ के. | ४ गु. | ५ चं. | ११ | ६ रा. | ८ श. | १० | ७ | ९

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	१	३	३	७	५	११
१७	०८	२०	१३	२२	०२	०६	१२	१२
०५	४९	३१	३७	४१	२१	४९	४८	४८
५६	२७	३६	१९	३४	२०	४६	५३	५३
57 28	790 37	41 25	31 44	8 34	59 18	4 21	3 11	3 11
रोहि ३	अनु २	रोहि ४	रोहि २	अश्ले २	पुन ४	अनु २	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

३ | २ सू. मं. बु. | १ | १२ के. | ४ गु. शु. | ५ | ११ | ६ रा. | ८ चं. श. | १० | ७ | ९

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की तृतीया तिथि (20 मई) को गौरी माता की प्रसन्नता के लिए रम्भा तृतीया का व्रत किया जाता है। इसमें विवाह, संतान व सौभाग्य की प्राप्ति होती है। देवी माँ की पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करके निम्न मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए—**देवि ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहि गृहं देहि सुतान् देहि नमोऽस्तुते।** माता पार्वती का जन्म भी इसी तिथि को हुआ था। इस पक्ष में शुक्लाष्टमी के दिन जम्मू-कश्मीर में भगवती दुर्गा माता के मन्दिरों में क्षीर, मेवे आदि सहित भोग लगाकर क्षीर भवानी का उत्सव मनाया जाता है। हरिद्वार में **गंगा दशमी** (28 मई) के दिन श्रीगंगा स्नान के उपरान्त पुष्प, अक्षत, धूप-दीप, नारियलादि, द्रव्यों सहित गंगा जी का पूजन करके यथाशक्ति दान करना चाहिए। **निर्जला एकादशी** (29 मई) को स्नानादि के पश्चात् संकल्पपूर्वक निराहार व्रत रखकर भगवान् सत्यनारायण की पूजार्चना के बाद यथाशक्ति आम, खरबूजे आदि फल, दूध, वस्त्र, छाता, पंखे, जलयुक्त घड़ा आदि का दान ब्राह्मण को दक्षिणा सहित किया जाता है। ऋषि व्यास जी अनुसार यदि सभी एकादशियों के व्रत न हो सकें, तो केवल निर्जला एकादशी का व्रत रखने से साल भर की एकादशियों के समान पुण्यफल प्राप्त हो जायेगा। **ज्येष्ठ पूर्णिमा** (2 जून) के दिन जलापूरित घट, आम, खरबूज़े, वस्त्र, सत्तू, चावल, गेहूँ, शक्कर, पंखे आदि ग्रीष्म मौसमोपयोगी वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित सुपात्र विप्र को देना शुभ होगा। ज्येष्ठ में पाँच मंगलवार होने से कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव भय, किसी राजनैतिक प्रमुख के अपदस्थ या मृत्यु होने के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में उ. भारत में तेज हवाओं के साथ गर्म लू एवं कहीं-कहीं खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, प्रथम (शुद्ध) आषाढ़ कृष्ण शाक: १९३७ | **सन् 2015 ई. (ता. 3 जून से 16 जून तक)** हिजरी सन् 1436 | भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः

ग्रह दर्शन– ता. 8 जून से प्रातः बुध पूर्वी क्षितिज में दिखाई देगा। सायं शनि पूर्व में, गु.-शु. पश्चिमक्षितिज में होंगे। मंगल 10 अप्रैल से अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें: शकं रा.	शाबान	अंग्रे.	प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
३४.५०	१	बुध	३८	५५	ज्ये.	३५	५५	साध्य	५५	२५	बा	९	५४	१३	१५	3	२०	धनु ३५/५५
३४.५०	२	गुरु	३५	५०	मूल	३४	४५	शुभ	५०	८	तै	७	२३	१४	१६	4	२१	धनु
३४.५३	३	शुक्र	३१	५८	पू.षा.	३२	४५	शुक्ल	४४	१५	व	३	५४	१५	१७	5	२२	म. ४७/०८
३४.५३	४	शनि	२७	२५	उषा	३०	८	ब्रह्म	३७	५३	बा	२७	२५	१६	१८	6	२३	मकर
३४.५८	५	रवि	२२	३३	श्रव	२७	१०	ऐन्द्र	३१	१५	तै	२२	३३	१७	१९	7	२४	कुं. ५५/३५
३४.५८	६	चंद्र	१७	२०	धनि	२३	५८	वैधृ	२४	२३	व	१७	२०	१८	२०	8	२५	कुम्भ
३५.००	७	मंग	१२	३	शत	२०	३५	विष्क	१७	२८	बव	१२	३	१९	२१	9	२६	कुम्भ
३५.००	८	बुध	६	४०	पूभा	१७	१३	प्रीति	१०	२८	कौ	६	४०	२०	२२	10	२७	मीने ३/०३
३५.००	९	गुरु	१	२०	उभा	१३	५०	आयु सौभा	३ ५६	३० ३५	गर	१	२०	२१	२३	11	२८	मीन
अवम	१०	गुरु	५६	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	००
३५.०३	११	शुक्र	५०	५८	रेव	१०	३३	शोभ	४९	४८	बव	२३	३२	२२	२४	12	२९	मेषे १०/३३
३५.०३	१२	शनि	४६	८	अश्वि	७	२८	अति	४३	१५	कौ	१८	३३	२३	२५	13	३०	मेष
३५.०५	१३	रवि	४१	४८	भर	४	४३	सुक	३७	५	गर	१३	५८	२४	२६	14	३१	वृष १९/०५
३५.०६	१४	चंद्र	३८	५	कृति	२	२८	धृति	३१	३०	वि	९	५७	२५	२७	15	आ.	वृष
३५.०६	३०	मंग	३५	२०	रोहि	१	००	शूल	२६	३५	चतु	६	४३	२६	२८	16	२	मि. ३०/४०

अंग्रे.	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
3	प्रथम (शुद्ध) आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	१	१८	०३	१७	5	28	19	24
4	वक्री शनि अनु. (१) में १५/२०, गण्डमूल (19/22 घं. मिं. तक)	१	१९	००	४४	5	28	19	24
5	भ. ३/५४ से ३१/५८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11)	१	१९	५८	१०	5	28	19	25
6	मंगल मृग. में ४/३०, गुरु आश्ले (३) में २३/४८, स.सि.यो. 17/31 उप.	१	२०	५५	३६	5	28	19	25
7	**पंचक प्रारम्भ ५५/३५** (27 घं. 41 मिं.)	१	२१	५३	००	5	27	19	26
8	भ. १७/२० से ४४/४२ तक, सूर्य मृग. में ३०/५३, **वक्री बुध पूर्व (A)**	१	२२	५०	२१	5	27	19	26
9		१	२३	४७	४५	5	27	19	27
10		१	२४	४५	०८	5	27	19	27
11	भ. २८/४३ से ५६/०५ तक, स. सि. यो. 10/59 (घं.मिं.) उप., गंडमूल 10/59 घं. बाद	१	२५	४२	३०	5	27	19	27
००	दशमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
12	**पंचक समाप्त १०/३३, योगिनी एकादशी व्रत** (स्मार्त), गण्डमूलादि	१	२६	३९	५२	5	27	19	28
13	**योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**, गंडमूलादि प्रातः 8/26 तक	१	२७	३७	१३	5	27	19	28
14	भ. ४१/४८ से, **प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत	१	२८	३४	३४	5	27	19	29
15	भ. ९/५७ तक, **सूर्य मिथुन में २९/२३, आषाढ़ संक्रान्ति**, मु. ४५**(B)**	१	२९	३१	५५	5	27	19	29
16	**आषाढ़ भौमवती अमावस, स्नान, दानादि**	२	००	२९	१५	5	27	19	29

(A) में उदय २०/५५, **(B)** स्नानदानादि का पुण्यकाल सं. प्रातः 10/48 से, **मंगल मिथुन** में ४९/१३ (25 घं. 08 मिं.), स. सि. योगः

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	१	३	३	७	५	११
२४	२९	२६	१०	२३	१०	०६	१२	१२
४५	१८	०१	३७	५३	०३	१५	२३	२३
१८	५६	३९	३७	०२	४९	४५	२७	२७
57 22	847 52	41 4	6 18	9 25	55 45	4 6	3 11	3 11
मृग १	पूभा ३	मृग १	रोहि १	आश्ले ३	पुष्य ३	अनु १	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

३
२ सू. मं. बु.
१
४ गु. शु.
१२ के.
५
११ चं.
६ रा.
८ श.
१०
७
९

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	२	१	३	३	७	५	११
००	२३	००	११	२४	१५	०५	१२	१२
२९	०८	०७	०६	५०	३०	५१	०४	०४
२५	०७	२६	४४	५७	२९	४९	२२	२२
57 19	805 54	40 48	20 42	9 58	52 27	3 50	3 11	3 11
मृग ३	रोहि ४	मृग ३	रोहि १	आश्ले ३	पुष्य ४	अनु १	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

४ शु. गु.
३ सू. मं.
२ बु. चं.
५
१
६ रा.
१२ के.
७
९
११
८ श.
१०

प्रथम (शुद्ध) आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् लक्ष्मीनारायण की कृपा प्राप्ति के लिए, ब्रह्मचारी रहते हुए, नित्यप्रति स्नानादि के पश्चात् भगवान् की पूजार्चना करके श्रीविष्णु सहस्रनाम अथवा श्रीहरिहर स्तोत्र का पाठ करना कल्याणप्रद होता है। इसके अतिरिक्त एकादशी, आषाढ़ संक्रान्ति, अमावस्या और पूर्णमाशी के दिन ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्टान्न सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति आम, खरबूजे आदि मौसमी फल, जलपूरित घड़ा, पंखा, छाता, आँवले, वस्त्र, अनाज आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। **स्वास्थ्य**–आषाढ़ मास में स्वयं को विशेषकर शिर को तेज धूप व ऊष्णता से बचाना चाहिए तथा इस मास सादा भोजन, छाछ व शीतल पेय का प्रयोग करना चाहिए। इस पक्षमें **आषाढ़ संक्रान्ति**, 15 जून, सोमवार को सायं 5 बजकर 12 मिनट पर **वृश्चिक लग्न** में प्रवेश करेगी। स्नान दान आदि का पुण्यकाल प्रातः 10/48 से प्रारम्भ होगा। संक्रान्ति लग्न (कुण्डली) पर शनि का संचार है तथा पक्षारम्भ में गुरु-शुक्र का योग होने से देश के कुछ भागों में आन्तरिक कलह, उपद्रव एवं अशान्ति का वातावरण होगा। राजनेताओं एवं लोगों में परस्पर कलह-क्लेश, विग्रह हो। किसी विशिष्ट नेता के अपदस्थ या अपमृत्यु के योग हैं। कहीं असामयिक वर्षा से हानि हो तथा दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में तेजी के कारण लोगों में विक्षोभ हो–''**गुरू शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले व भवेद् वृष्टिः जगत्यांनात्र संशय।।**'' **मंगलवारी अमावस्या** (16 जून) होने से कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), राजनीतिक टकराव, अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं।

आकाश लक्षण–सं. कुं. में चन्द्र-बुध पर शनि की दृष्टि है तथा मंगल के साथ षडाष्टक योग बना है। ... भारत में उपयोगी वर्षा का बाधक व विलम्ब योग बना हुआ है।

वि. संवत् २०७२, प्रथम (अधि.) आषाढ़ शुक्ल शाक: १९३७ | तारीखें | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल

सन् 2015 ई. (ता. 17 जून से 2 जुला. तक) हिजरी सन् 1436 — भा. स्टैं. टा. जालन्धर

सूर्य उत्तर-दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः

ग्रह दर्शन—बुध प्रातः पूर्व क्षितिज में दिखेगा। शनि सायं पूर्व में, गु.-शु. पश्चिमक्षितिज में पास-पास होंगे। मं. अभी मंगल अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	शक	हिजरी	जून	आषा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३५.०६	१	बुध	३३	४५	मृग	०	३३	गंड	२२	३५	किं	४	३३	२७	२९	17	३	मिथुन	**आषाढ़-अधिक मास प्रारम्भ** (देखें पृ. 89), शुक्र आश्लेषा में १९/५०	२	०१	२६	३४	5	28	19	30
३५.०७	२	गुरु	३३	३८	आर्द्रा	१	२३	वृद्धि	११	४३	बा	३	४२	२८	३०	18	४	क. ४८/००	**चन्द्रदर्शन**, मु. ४५, स. सि. योगः	२	०२	२३	५३	5	28	19	30
३५.०८	३	शुक्र	३५	३	पुन	३	४३	ध्रुव	१८	५	तै	४	२१	२९	रम	19	५	कर्क	रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, रोज़े शुरु	२	०३	२१	१४	5	28	19	30
३५.०८	४	शनि	३८	५	पुष्य	७	३८	व्या.	१७	४३	व	६	३४	३०	२	20	६	कर्क	भ. ६/३४ से ३८/०५ तक, गण्डमूल 8/31 से, **विनायक चतुर्थी**	२	०४	१८	३१	5	28	19	30
३५.०८	५	रवि	४२	३८	अश्ले	१३	३	हर्ष	१८	३३	बव	१०	२२	३१	३	21	७	सिंहे १३/०३	सूर्य सायन कर्क में ४१/४३, **सायन दक्षिणायन प्रारम्भ**, वर्षा ऋतु प्रा.	२	०५	१५	४८	5	28	19	31
३५.०८	६	चंद्र	४८	१५	मघा	२०	३३	वज्र	२०	२०	कौ	१५	२७	आ.	४	22	८	सिंह	सूर्य आर्द्रा में २८/१५, शक आषाढ़ प्रारम्भ, गण्डमूल 13/21 घं.मिं. तक	२	०६	१३	०४	5	28	19	31
३५.०७	७	मंग	५४	३०	पूफा	२७	१०	सिद्धि	२२	४५	गर	२१	२३	२	५	23	९	कन्ये ४४/०८	भ. ५४/३० से प्रारम्भ	२	०७	१०	११	5	29	19	31
३५.०७	८	बुध	६०	००	उफा	३४	५५	व्य.	२५	२८	वि	२७	३७	३	६	24	१०	कन्या	भ. २७/३७ तक,	२	०८	०७	३६	5	29	19	31
३५.०६	८	गुरु	०	४३	हस्त	४२	१५	वरी	२७	५३	बव	०	४३	४	७	25	११	कन्या	मंगल आर्द्रा में ३९/४५	२	०९	०४	५०	5	29	19	31
३५.०६	९	शुक्र	६	१८	चित्रा	४८	३३	परि	२९	३५	कौ	६	१८	५	८	26	१२	तु. १५/३३	गुरु आश्लेषा (४) में २९/५०	२	१०	०२	०६	5	29	19	32
३५.०५	१०	शनि	१०	३०	स्वा	५३	१८	शिव	३०	१०	गर	१०	३०	६	९	27	१३	तुला	भ. ४१/४९ से शुरू, स. सि. योगः	२	१०	५९	११	5	30	19	32
३५.०५	११	रवि	१३	८	विशा	५६	२०	सिद्ध	२९	२५	वि	१३	८	७	१०	28	१४	वृ. ४०/४५	भ. १३/०८ तक, **पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत**	२	११	५६	३२	5	30	19	32
३५.०४	१२	चंद्र	१३	५३	अनु	५७	३३	साध्य	२७	१३	बा	१३	५३	८	११	29	१५	वृश्चिक	**सोम प्रदोष व्रत**, स. सि. योगः, गण्डमूल 28/31 से,	२	१२	५३	४३	5	30	19	32
३५.०४	१३	मंग	१२	४५	ज्ये.	५६	५८	शुभ	२३	२८	तै	१२	४५	९	१२	30	१६	धनु ५६/५८	बुध मृग. में ४२/१५, गण्डमूल विचार	२	१३	५०	५७	5	30	19	32
३५.०३	१४	बुध	९	५८	मूल	५४	५८	शुक्ल	१८	२८	व	९	५८	१०	१३	जुला	१७	धनु	भ. ९/५८ से ३७/५२ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 27/30 तक	२	१४	४८	०८	5	31	19	32
३५.०२	१५	गुरु	५	४५	पूषा	५१	४८	ब्रह्म	१२	१८	बव	५	४५	११	१४	2	१८	धनु	**अधि. आषाढ़ पूर्णिमा**, स्नान-दान आदि	२	१५	४५	२१	5	32	19	32

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	२	१	३	३	७	५	११
०८	०३	०५	१५	२६	२२	०५	११	११
०७	०८	३२	५५	१३	११	२२	३८	३८
४१	०७	४५	२४	१४	२४	५०	५६	५६
57 14	709 30	40 28	55 5	10 40	46 46	3 21	3 11	3 11
आर्द्रा १	उफा २	मृग ४	रोहि २	आश्ले ३	आश्ले २	अनु १	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

४ शु. गु. | ३ सू. मं. | २ बु. | ५ | १ | ६ चं. रा. | १२ के. | ७ | ९ | ११ | ८ श. | १०

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	२	१	३	३	७	५	११
१५	१४	१०	२५	२७	२७	०४	११	११
४५	२९	५५	०५	४०	५९	५८	१३	१३
१९	३६	२४	१३	३६	५९	०२	३०	३०
57 11	845 53	40 9	85 41	11 15	39 2	2 46	3 11	3 11
आर्द्रा ३	पूषा १	आर्द्रा २	मृग १	आश्ले ४	आश्ले ४	अनु १	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

४ शु. गु. | ३ सू. मं. | २ बु. | ५ | १ | ६ रा. | १२ के. | ७ | ९ चं. | ११ | ८ श. | १०

प्रथम (अधि.) आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की प्रतिपदा अर्थात् 17 जून, बुधवार से 16 जुला. गुरुवार पर्यन्त **आषाढ़ अधि-मास** की व्याप्ति रहेगी। इस अवधि में **विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, काम्य व्रतानुष्ठान**, नवीन आभूषण बनवाना, नई गाड़ी की खरीद करना आदि अन्य काम्य शुभ कार्यारम्भ करना वर्जित माने जाते हैं। यद्यपि इस अवधि में वर्षफल-जन्मदिन, गर्भाधान, पुंसवन, विशेष रोग कष्ट निवृत्ति के लिए जप, पाठ दानादि कृत्य किए जा सकते हैं, अथवा पहले से आरम्भ किए गए निर्माण कार्य किए जा सकते हैं। **भविष्य पुराण** के अनुसार अधिक मास में **भगवान् विष्णु** के निमित्त मुख्य पर्व-तिथियों पर जो विशिष्ट स्नान, पूजन, व्रत-उपवास आदि किए जाते हैं, उनका सबका अक्षय फल होता है। इस मास में प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर एकभुक्त या नक्त व्रत रखकर भगवान् भास्कर की मन्त्रों सहित रक्त पुष्पों द्वारा पूजा करके सूर्य अष्टकादि स्तोत्रों एवं पुरुषोत्तम मास का पाठ करना एवं कांस्य-पात्र में अक्षत, फल, गुड़, वस्त्र, फलों आदि का दान करने का विधान है। विशेष जानकारी के लिए गत पृष्ठों (नं. 89) पर लिखे गए **आषाढ़-अधि मास** फल के विवरण सम्बन्धी लेख पढ़ें। इसके अतिरिक्त आषाढ़-अधि मास से प्रतिदिन श्रीपुरुषोत्तम माहात्म्य का श्रद्धापूर्वक प्रातः (एक निश्चित समय पर) पाठ करना शुभ होगा। इस पक्ष के आरम्भ से ही **कर्क राशि पर गुरु-शुक्र** का योग बना हुआ है, जिससे देश के पश्चिमोतरीय भागों में आन्तरिक उपद्रव, साम्प्रदायिक तनाव एवं हिंसक घटनाओं का भय होगा–**गुरू-शुक्रौ यदैक्यस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद् वृष्टिः जगत्यां नात्र संशय। आकाश लक्षण**–इस पक्ष में उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रुक-रुक कर वर्षा होगी।

वि. संवत् २०७२, द्वितीय (अधि.) आषाढ़ कृष्ण शाक: १९३७

सन् 2015 ई. (ता. 3 जुलाई से 16 जुलाई तक) हिजरी सन् 1436

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

प्रातः पूर्व में दिखाई दे रहा बुध 12 जुला. से अस्त हो जाएगा। सायं शनि पूर्व में, गु.-शु. पश्चिम में दिखाई देंगे। मं. अभी अस्त है।

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें आषा. शक	रमजान मु.	जुलाई	आषा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५.०१	१	शुक्र	०	२८	उषा	४७	५०	ऐन्द्र वैधृ	५ ५७	२० ४८	कौ	०	२८	१२	१५	3	१९	मक. ५/५३	**द्वितीय (अधिक) आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**	२	१६	४२	३२	5	32	19	32
अवम	२	शुक्र	५४	२५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.००	३	शनि	४८	००	श्रव.	४३	२८	विष्क	४९	५५	व	२१	१३	१३	१६	4	२०	मकर	भ. २१/१३ से ४८/०० तक,	२	१७	३९	४३	5	32	19	32
३४.५८	४	रवि	४१	२८	धनि	३८	५५	प्रीति	४१	५५	बव	१४	४४	१४	१७	5	२१	कुं. ११/१०	**पंचक प्रारम्भ** ११/१०, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), **बुध (A)**	२	१८	३६	५७	5	33	19	32
३४.५५	५	चंद्र	३५	५	शत	३४	३३	आयु	३४	५	कौ	८	१७	१५	१८	6	२२	कुम्भ	सूर्य पुन. में २७/१०	२	१९	३४	१०	5	33	19	31
३४.५३	६	मंग	२९	००	पूभा	३०	२८	सौभा	२६	३०	गर	२	३	१६	१९	7	२३	मो. १६/२५	भ. २९/०० से ५६/१३ तक,	२	२०	३१	२३	5	34	19	31
३४.५३	७	बुध	२३	२५	उभा	२६	५५	शोभ	१९	२०	बव	२३	२५	१७	२०	8	२४	मीन		२	२१	२८	३५	5	34	19	31
३४.५०	८	गुरु	१८	२०	रेव	२३	५०	अति	१२	३३	कौ	१८	२०	१८	२१	9	२५	मेषे २३/५०	**पंचक समाप्त २३/५०**, बुध आर्द्रा में ११/३३, स. सि. योग, गं. मू.	२	२२	२५	४७	5	35	19	31
३४.५०	९	शुक्र	१३	५५	अश्वि	२१	२५	सुक	६	२०	गर	१३	५५	१९	२२	10	२६	मेष	भ. ४२/०० से, प्रा., स. सि. योग 14/09 घं. मिं. तक, गं. मू.	२	२३	२३	००	5	35	19	31
३४.४६	१०	शनि	१०	५	भर	१९	३५	धृति शूल	० ५५	३३ २३	वि	१०	५	२०	२३	11	२७	वृ. ३४/१५	भ. १०/०५ तक,	२	२४	२०	१६	5	36	19	30
३४.४५	११	रवि	६	५८	कृति	१८	३०	गंड	५०	४८	बा	६	५८	२१	२४	12	२८	वृष	**पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत, बुध पूर्व में अस्त** १६/१५	२	२५	१७	२९	5	36	19	30
३४.४३	१२	चंद्र	४	३५	रोहि	१८	८	वृद्धि	४६	५०	तै	४	३५	२२	२५	13	२९	मि. ४८/१८	**सोम प्रदोष व्रत**, स. सि. योग:	२	२६	१४	४५	5	37	19	30
३४.४३	१३	मंग	३	५	मृग	१८	४३	ध्रुव	४३	४०	व	३	५	२३	२६	14	३०	मिथुन	भ. ३/०५ से ३२/४९ तक, **गुरु मघा (१) सिंह में** १/५५, 6घं.-23मिं., मासशिवरात्रि	२	२७	१२	०२	5	37	19	30
३४.३८	१४	बुध	२	३३	आर्द्रा	२०	१३	व्या	४१	२३	शकु	२	३३	२४	२७	15	३१	मिथुन	**अमावस (पितृकार्येषु)**, मंगल पुन में ३८/१०	२	२८	०९	२७	5	38	19	29
३४.३८	३०	गुरु	३	१०	पुन	२२	५८	हर्ष	४०	३	ना	३	१०	२५	२८	16	श्रा.	कर्क ७/१०	**अमावस (स्नानदानादि), आषाढ़ अधिकमास समाप्त, सूर्य कर्क में B**	२	२९	०६	३२	5	38	19	29

A मिथुन में १६/४० (12घं. 13मिं.), शुक्र मघा (१) सिंह में १०/४३ (9घं. 50मिं.) (B) ५६/०० (घं.मिं. 28/02) **श्रावण संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रात: 10/26 तक, बुध पुन. में ०/०३, निर. दक्षिणायन प्रा., सिंहस्थ पर्व शुरु

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 9 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	२	२	३	४	७	५	११
२२	२४	१५	०६	२९	०२	०४	१०	१०
२५	२३	३५	१८	००	०७	४०	५१	५१
३८	३०	३९	३६	३७	४३	१८	१५	१५
57 13	836 57	39 54	109 26	11 40	30 8	2 12	3 11	3 11
पुन १	रेव ३	आर्द्रा ३	मृग ४	आश्ले ४	मघा १	अनु १	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

भाव	राशि	ग्रह
1	३	सू. मं. बु.
2	४	गु.
3	५	शु.
4	६	रा.
5	७	
6	८	श.
7	९	
8	१०	
9	११	
10	१२	चं. के.
11	१	
12	२	

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 16 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	२	२	४	४	७	५	११
२९	२८	२०	१९	००	०५	०४	१०	१०
०६	२५	१४	५९	२३	०५	२६	२८	२८
१५	०१	१२	१०	३२	५५	४१	५९	५९
57 15	756 5	39 38	125 20	12 3	18 41	1 36	3 11	3 11
पुन ३	पुन ३	पुन १	आर्द्रा ४	मघा १	मघा २	अनु १	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रात: 5.30

भाव	राशि	ग्रह
1	३	सू. चं. मं. बु.
2	४	
3	५	गु. शु.
4	६	रा.
5	७	
6	८	श.
7	९	
8	१०	
9	११	
10	१२	के.
11	१	
12	२	

द्वितीय (अधि.) आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

इस पक्षारम्भ (3 जुला.) से 16 जुला. तक आषाढ़ अधि-मास की व्याप्ति रहेगी। जिस कारण इस अवधि के मध्य विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश आदि शुभ कार्य तथा आभूषण, गाड़ी, भूमि आदि बहुमूल्य वस्तु के क्रय करने का निषेध रहेगा। यद्यपि **पुरुषोत्तमा एकादशी**, पूर्णमाशी आदि पर्वों पर एकभुक्त व्रत रखकर भगवान् सहस्रांशु (सूर्य) का पूजन, मन्त्र एवं सूर्य स्तोत्र व पुरुषोत्तम मास माहात्म्य का पाठ करना एवं यथाशक्ति फलों, वस्त्र, अन्नापूरित कांस्य पात्र का दक्षिणा सहित ब्राह्मणों को दान करने का विशेष माहात्म्य होगा। शास्त्रमतानुसार **आषाढ़ अधिमास** का फल इस प्रकार से लिखा गया है–"**द्वयाषाढ़े व्यथा किंचित् खण्ड वृष्टि क्वचित्पुन:**" अर्थात् जिस वर्ष दो **आषाढ़ आवें**, उस वर्ष देश में कहीं खण्ड वर्षा या अल्प वर्षा हो, और कहीं अति वर्षा के कारण बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन व कृषि को क्षति पहुँचे। खाद्य उत्पादनों में जबरदस्त महँगाई बढ़े। **सौर-आषाढ़ मास में पाँच मंगलवार** होने से देश में कहीं सत्ता परिवर्तन, साम्प्रदायिक टकराव एवं हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं। किसी प्रमुख नेता के निधन या अपदस्थ होने के योग हैं। **यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।** ता. 16 जुला. कर्क संक्रान्ति गुरुवार को, अर्द्ध रात्रि के बाद 17 जुला. की प्रात: 4 बजकर 2 मिंट पर मिथुन लग्न में प्रविष्ट होगी। संक्रान्ति पुण्यकाल 17 जुला. की प्रात: 10/26 तक रहेगा। अमावस्या तिथि को संक्रान्ति होने से **खप्पर योग** का प्रभाव रहेगा। **आषाढ़े कर्कसंक्रान्तौ गुरौ तु प्रबलोनिल:।।** जिससे प्राकृतिक आपदाओं एवं अप्रत्याशित घटनाओं के कारण लोग भयभीत रहें। अत्यधिक महँगाई के कारण आम लोग पीड़ित हों। **आकाश लक्षण**–उत्तरी भारत के राज्यों दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल, पंजाब, जम्मू-कश्मीर में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, द्वि. (शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल | शाक: १९३७

सन् 2015 ई. (ता. 17 जुला. से 31 जुलाई तक) हिजरी सन् 1436

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–मंगल अभी अस्त चल रहा है। सायं श. पूर्वकपाल में, गुरु-शुक्र पश्चिमक्षितिज में दिखाई देंगे। बुध अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	आषा. प्र.	रमजा. मु.	जुलाई	श्राव. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३४.३३	१	शुक्र	५	३	पुष्य	२६	५५	वज्र	३९	४३	बव	५	३	२६	२९	17	२	कर्क	द्वितीय (शुद्ध) आषाढ़ शुक्लपक्ष, रथ-यात्रा (श्रीजगन्नाथ पुरी) देखें पृ.83(A)	३	००	०३	४९	5	39	19	28
३४.३०	२	शनि	८	१५	अश्ले	३२	८	सिद्धि	४०	२५	कौ	८	१५	२७	३०	18	३	सिं. ३२/०८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, गण्डमूल विचार	३	०१	०१	०५	5	40	19	28
३४.२८	३	रवि	१२	४५	मघा	३८	३५	व्य.	४२	३	गर	१२	४५	२८	श.	19	४	सिंह	भ. ४५/३२ से, शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गंडमूल 21/06 तक	३	०१	५८	२३	5	40	19	27
३४.२५	४	चंद्र	१८	१८	पूफा.	४५	५५	वरी	४४	२३	वि	१८	१८	२९	२	20	५	सिंह	भ. १८/१८ तक, सूर्य पुष्य में २५/२५, **बुध कर्क में ४३/२३**	३	०२	५५	४१	5	41	19	27
३४.२५	५	मंग	२४	३५	उ.फा.	५३	४५	परि	४७	८	बा	२४	३५	३०	३	21	६	कन्ये २/५०	स. सि. योग:	३	०३	५२	५९	5	41	19	27
३४.२०	६	बुध	३१	००	हस्त	६०	००	शिव	४९	४८	तै	३१	००	३१	४	22	७	कन्या	**स्कन्द षष्ठी, कुमार-षष्ठी**, बुध पुष्य में १७/००, स. सि. यो.	३	०४	४९	१८	5	42	19	26
३४.१५	७	गुरु	३७	००	हस्त	१	२५	सिद्ध	५२	००	गर	३	५०	श्रा.	५	23	८	तुला ३५/०३	भ. ३७/०० से, सूर्य सायन सिंह में ८/१३, शक श्रावण प्रारम्भ, (B)	३	०५	४७	३७	5	43	19	25
३४.१५	८	शुक्र	४१	५५	चित्रा	८	२८	साध्य	५३	२०	वि	९	२८	२	६	24	९	तुला	भ. ९/२८ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**	३	०६	४४	५४	5	43	19	25
३४.१०	९	शनि	४५	१५	स्वा	१४	१०	शुभ	५३	२३	बा	१३	३५	३	७	25	१०	तुला	**शुक्र वक्री २३/०५**, राहु उ.फा. (४) केतु उ.भा. (२) में ६/१८, C	३	०७	४२	१५	5	44	19	24
३४.१०	१०	रवि	४६	४३	विशा	१८	१३	शुक्ल	५१	५३	तै	१५	५९	४	८	26	११	वृश्चि २/२३		३	०८	३९	३३	5	44	19	24
३४.०५	११	चंद्र	४६	५	अनु	२०	१५	ब्रह्म	४८	४५	व	१६	२४	५	९	27	१२	वृश्चिक	भ. १६/२४ से ४६/०५ तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत**, चातुर्मास्य व्रत D	३	०९	३६	५४	5	45	19	23
३४.००	१२	मंग	४३	२५	ज्ये.	२०	१५	ऐन्द्र	४४	००	बव	१४	४५	६	१०	28	१३	धनु २०/१५	बुध आश्ले. में ३९/४०, गण्डमूल विचार	३	१०	३४	१६	5	46	19	22
३४.००	१३	बुध	३९	००	मूल	१८	२५	वैधृ	३७	५०	कौ	११	१३	७	११	29	१४	धनु	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 13/08 तक,	३	११	३१	३७	5	46	19	22
३४.५५	१४	गुरु	३३	५	पू.षा.	१४	५८	विष्क	३०	२५	गर	६	३	८	१२	30	१५	म. २८/५३	भ. ३३/०५ से ५९/३५ तक, **मंगल कर्क में ५१/१८** (घं.मिं. 26/18)E	३	१२	२८	५७	5	47	19	21
३३.५३	१५	शुक्र	२६	५	उ.षा.	१०	१५	प्रीति	२२	५	बव	२६	५	९	१३	31	१६	मकर	**आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा**, वायु परीक्षा, स.सि.यो.F	३	१३	२६	२०	5	47	19	20

A आषाढ़ गुप्त नवरात्रे शुरू, मनोरथ द्वितीया व्रत **(B)** विवस्वत सप्तमी **(C)** भढली नवमी, गुप्त नवरात्रे समाप्त, **मेला शरीक भवानी (काश्मीर)** **(D)** नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु शयनोत्सव, स. सि. योग 13/51 तक, गं. मू. **(E)** गुरु मघा (२) में १७/०५, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर) **(F)** 9/53 (घं. मिं. बाद)

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	२	३	४	४	७	५	११
०६	०४	२५	०६	०२	०६	०४	१०	१०
४४	५२	३०	५७	०१	३९	१६	०३	०३
२६	०५	२३	५०	१६	३९	३३	३३	३३
57	726	39	126	12	2	0	3	3
18	52	21	35	25	3	50	11	11
पुष्य २	चित्रा ४	पुन २	पुष्य २	मघा १	मघा २	अनु १	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

५ गु. शु. | ३ मं. | ६ रा. | ४ सू. बु. | २ | ७ चं. | १ | ८ श. | १० | १२ के. | ९ | ११

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 31 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	३	३	४	४	७	५	११
१३	०७	००	२१	०३	०६	०४	०९	९
२५	२०	०५	१९	२८	०४	१२	४१	४१
४०	१६	१२	४५	५२	३५	४१	१७	१७
57	879	39	117	12	14	0	3	3
21	29	6	37	37	34	11	11	11
पुष्य ४	उफा ४	पुन ४	आश्ले २	मघा २	मघा २	अनु १	उफा ४	उभा २
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

५ शु. गु. | ३ | ६ रा. | ४ सू. मं. बु. | २ | ७ | १ | ८ श. | १० चं. | १२ के. | ९ | ११

द्वि. (शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया तिथि (पुष्य नक्षत्रयुक्त होने से), 17 जुलाई को भगवान् **श्रीजगन्नाथ की रथ यात्रा** का भव्य उत्सव विशेषकर जगन्नाथ पुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य भागों में भी बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। इसी पक्ष में होने वाली **हरिशयनी एकादशी** (27 जुला.) से चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ होंगे, जोकि **कार्तिक शुक्ला एका.** अर्थात् हरिप्रबोधिनी एकादशी (22 नवं.) तक की अवधि पर्यन्त रहेंगे। धर्मपरायण तपस्वी लोग यह अवधि चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए चार मास नित्य भगवान् विष्णु की पूजा-अर्चना, स्तोत्र-पाठ आदि में व्यतीत करते हैं। **आषाढ़ पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा,** 31 जुला.) के दिन भगवान् विष्णु और ऋषि वेदव्यास की पूजा-अर्चना एवं स्तोत्र-पाठ करके अपने **इष्ट गुरु** की यथाशक्ति वस्त्र, फल, मिष्टान्न, धनादि द्वारा सेवा करनी चाहिए।

ग्रह गोचर–इस पक्ष के आरम्भ में ही देव गुरू एवं दैत्य गुरु-शुक्र सिंह राशि में संचार कर रहे हैं, जिससे ताम्बा, सोना, लाल वर्ण के चौपाय एवं सर्व प्रकार के अनाज, धान्यादि दिन प्रतिदिन महँगे होंगे। **यदादेवगुरूः दैत्यगुरुश्च सिंहे हेमरक्त चतुष्पदः। धान्यानि च महर्घाणियावन्ति हि दिनानि च।।** इसी पक्ष के अन्त में **मंगल भी कर्क राशि** में आकर ईख, चने एवं सर्व प्रकार के अनाजों में तेजीकारक होगा। किसी प्रमुख नेता के लिए अरिष्टकार होगा। **आकाश लक्षण**–भारत के उत्तर पश्चिमी एवं पर्वतीय क्षेत्रों पर रुक-रुक कर व्यापक वर्षा के योग हैं। **शकुन**–आ.शु. पंचमी को बादल चाल एवं इन्द्रधनुष दिखे तो खाद्य एवं वनस्पति तेलों के भाव तीन महीनों में डेढ़ गुणा लाभ प्रदायक होंगे।

वि. संवत् २०७२, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक : १९३७

सन् 2015 ई. (ता. 1 अगस्त से 14 अगस्त तक) हिजरी सन् 1436

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

10 अप्रै. से अस्त चला आ रहा मं. 12 अग. से प्रातः पूर्वक्षितिज में दिखाई देगा। सायं श. पूर्वकपाल में तथा 5 अग. से बु. पश्चिम में होगा। ता. 5 से शुक्र तथा 12 से गुरु पश्चिम में अस्त होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	श्रा. शक	श्वा. मु.	अगस्त	श्राव. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
३३.५०	१	शनि	१८	२०	श्रव. धनि	४ ५८	४३ ४५	आयु	१३	५	कौ	१८	२०	१०	१४	1	१७	कुं. ३१/४५
३३.४५	२	रवि	१०	१५	शत.	५२	४५	सौभा शोभ	३ ५४	४८ ३३	गर	१०	१५	११	१५	2	१८	कुम्भ
३३.४३	३	चंद्र	२	१५	पू.भा.	४७	५	अति	४५	३५	वि	२	१५	१२	१६	3	१९	मी. ३३/२८
अवम्	४	चंद्र	५४	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३३.३८	५	मंग	४७	३८	उ.भा.	४२	००	सुक	३७	३	कौ	२१	९	१३	१७	4	२०	मीन
३३.३३	६	बुध	४१	३०	रेव	३७	४५	धृति	२९	१३	गर	१४	३४	१४	१८	5	२१	मे. ३७/४५
३३.३३	७	गुरु	३६	२३	अश्वि	३४	३३	शूल	२२	१३	वि	८	५७	१५	१९	6	२२	मेष
३३.२८	८	शुक्र	३२	२०	भर.	३२	२३	गंड	१६	५	बा	४	२२	१६	२०	7	२३	वृ. ४७/०३
३३.२३	९	शनि	२९	२८	कृति	३१	२३	वृद्धि	१०	५०	तै	०	५४	१७	२१	8	२४	वृष
३३.२०	१०	रवि	२७	४५	रोहि	३१	३३	ध्रुव	६	३५	वि	२७	४५	१८	२२	9	२५	वृष
३३.१५	११	चंद्र	२७	१०	मृग	३२	४८	व्या.	३	१३	बा	२७	१०	१९	२३	10	२६	मि. २/००
३३.१३	१२	मंग	२७	४५	आर्द्रा	३५	१३	हर्ष वज्र	० ५९	४८ १५	तै	२७	४५	२०	२४	11	२७	मिथुन
३३.०८	१३	बुध	२९	२५	पुन	३८	४०	सिद्धि	५८	३३	व	२९	२५	२१	२५	12	२८	क. २२/४०
३३.०३	१४	गुरु	३२	१३	पुष्य	४३	१३	व्य.	५८	४३	वि	०	४९	२२	२६	13	२९	कर्क
३३.००	३०	शुक्र	३६	८	अश्ले	४८	५०	वरी	५९	४३	चतु	४	११	२३	२७	14	३०	सिं. ४८/५०

अगस्त	व्रत, पर्व एवं विशेष विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
1	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **पंचक प्रारम्भ ३१/४५** अशून्यशयन व्रत, **A**	३	१४	२३	४१	5	48	19	20
2	भ. ३६/१५ से, **शनि मार्गी** १३/५८ (11घं. 24मिं.), **शुक्र वार्धक्य B**	३	१५	२१	०७	5	49	19	19
3	भ. २/१५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ.10-11), सूर्य आश्ले. में २२/२८	३	१६	१८	३२	5	49	19	18
०	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
4	**नागपंचमी** (राज. व बंगाल), मंगल पुष्य में ५८/२५, **बुध मघा (१) C**	३	१७	१५	५६	5	50	19	17
5	भ. ४१/३० से, **पंचक समाप्त ३७/४५, शुक्र पश्चिमे अस्त** १०/५३**D**	३	१८	१३	२४	5	51	19	16
6	भ. ८/५७ तक, स. सि. यो., गण्डमूल	३	१९	१०	५०	5	51	19	16
7		३	२०	०८	२३	5	52	19	15
8	भ. ५८/३७ से प्रारम्भ	३	२१	०५	५४	5	53	19	14
9	भ. २७/४५ तक, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ १४/०८	३	२२	०३	२५	5	53	19	13
10	**कामिका एकादशी व्रत**, स. सि. योग	३	२३	०१	००	5	54	19	12
11	**भौम प्रदोष व्रत**	३	२३	५८	३५	5	54	19	11
12	भ. २९/२५ से, **मंगल पूर्व में उदय** ४९/०८, बुध पू.फा. में ६/४८ **(E)**	३	२४	५६	१०	5	55	19	10
13	भ. ०/४९ तक, वक्री **शुक्र कर्क में** २८/३८ (17घं.-23मिं.), गुरुपुष्य योग	३	२५	५३	३९	5	56	19	09
14	**हरियाली अमावस** स्नानदानादि, गुरु मघा (३) में ५३/०८, गण्डमूलादि	३	२६	५१	२७	5	56	19	08

शुक्र अस्त, 5 अग.

गुरु अस्त 12 अग.

(A) अगस्त मास प्रारम्भ, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव **(B)** प्रारम्भ १०/५८ **(C)** सिंह में ३१/०५ (18घं.-16मिं.), स.सि.यो. **D** बुध पश्चिम में उदय १४/२८ गं.मू. **E** गुरु पश्चिम में अस्त १४/०८, मासशिवरात्रि व्रत

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	३	४	४	४	७	५	११
२०	१९	०४	०४	०४	०३	०४	०९	०९
०७	०१	३८	२९	५७	३५	१३	१९	१९
३२	४७	२६	५७	५९	४१	३१	०२	०२
57 29	822 7	38 55	106 32	12 50	29 23	0 30	3 11	3 11
अश्ले २	पु. २	पुष्य १	मघा २	मघा २	मघा २	अनु १	उफा ४	उभा २
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

गु. ५ शु.बु. | ४ सू. मं. | ३ | २ | १ चं. | १२ के. | ११ | १० | ९ | ८ श. | ७ | ६ रा.

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	४	४	३	७	५	११
२६	१९	०९	१६	०६	२९	०४	०८	०८
५०	५२	१०	२२	२८	४१	१९	५६	५६
२५	४३	१४	५८	१६	३३	०७	४६	४६
57 38	729 11	38 44	95 45	12 59	37 1	1 11	3 11	3 11
अश्ले ४	अश्ले १	पुष्य २	पूफा १	मघा २	अश्ले ४	अनु १	उफा ४	उभा २
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

५ बु. गु. | ४ सू चं मं शु. | ३ | २ | १ | १२ के. | ११ | १० | ९ | ८ श. | ७ | ६ रा.

श्रावण कृष्ण पक्षफल–

श्रावण मास में भगवान् शिव की प्रसन्नता के लिए प्रत्येक सोमवार का फलाहार व्रत रखकर बिल्वपत्र, पंचामृत, गंगाजल, दूध, अक्षत, पुष्पों, फलादि के साथ शिवपूजन एवं पंचाक्षरी मन्त्रों के साथ भगवान् शिव का अभिषेक करने से अभीष्ट फलों की प्राप्ति होती है। श्रावण मास में ही श्रीशिवमहापुराण या श्रावण माहात्म्य का नित्य पाठ करने से भी पुण्यफलों की प्राप्ति होती है। इस मास के सभी मंगलवारों का विधिपूर्वक व्रत, पूजादि करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। (14 अग.) को **हरियाली अमावस** होगी। इसदिन गङ्गा आदि तीर्थ पर स्नान, जप, दान आदि करने से (शास्त्रमतानुसार) एक हज़ार गोदानों का पुण्य फल मिलता है। इसी पक्ष में दो प्रमुख ग्रहों, **शुक्र एवं गुरू** का (क्रमशः 5 अग. एवं 12 अग.) श्रावण मास में अस्त हो रहा है। शास्त्र में इसका फल अशुभ माना गया है। राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव पैदा होंगे। सामान्य लोगों में भय एवं असुरक्षा की भावना बने। कहीं साम्प्रदायिक टकराव एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं–**सिंहेनृणांमरण लोक धनादि नाशः।** जन-धन एवं सम्पदा आदि की क्षति हो। **चान्द्र श्रावण मास में** पांच शनिवार होने से देश के कुछ भागों में क्लिष्ट रोगोत्पत्ति, जातीय हिंसा, कहीं छत्रभङ्ग और बाढ़ादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण कहीं खड़ी फसलों एवं जन, धनादि की भारी क्षति होने के संकेत हैं एवं सामान्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी होने से लोगों में आक्रोश बढ़ेगा। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष में भारत के उत्तरी-पश्चिमी एवं मध्यवर्ती पूर्वी क्षेत्रों में व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, श्रावण शुक्ल पक्ष शाक: १९३७

सन् 2015 ई. (ता. 15 अग. से 29 अगस्त तक) हिजरी सन् 1436

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रातः मंग. पूर्व में तथा 20 अग. से शुक्र भी पूर्व में दिखाई देना शुरु हो जाएगा। सायं बु. पश्चिम में व शनि याम्योत्तर वृत्तासन्न, गुरु अभी अस्त होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें श्राव. शक	शव्वा. मु.	अंग्रेजी	प्र. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
३२.५५	१	शनि	४१	३	मघा	५५	२३	परि	६०	००	किं	८	३६	२४	२८	15	३१	सिंह	श्रावण शुक्ल पक्षारम्भ, भारत स्वतन्त्रता दिवस, मेला चिन्तपूर्णी प्रा., गं. मू.	३	२७	४९	०५	5	57	19	07
३२.५०	२	रवि	४६	४८	पूफा.	६०	००	परि	१	२३	बा	१३	५६	२५	२९	16	३२	सिंह	चन्द्रदर्शन, मु. ३०	३	२८	४६	४८	5	58	19	06
३२.४८	३	चंद्र	५३	१०	पूफा.	२	४३	शिव	३	४३	तै	१९	५९	२६	जि	17	भा.	कन्ये १९/३८	**सूर्य मघा (१) सिंह में १६/०८, भाद्रपद संक्रान्ति, मु. ४५, (A)**	३	२९	४४	२९	5	58	19	05
३२.४३	४	मंग	५९	४५	उफा.	१०	३०	सिद्ध	६	२३	व	२६	२८	२७	२	18	२	कन्या	भ. २६/२८ से ५९/४५ तक, **वरद् चतुर्थी**, दूर्वा गणपति व्रत, स. सि. यो.	४	००	४२	१४	5	59	19	04
३२.४०	५	बुध	६०	००	हस्त	१८	२८	साध्य	९	१५	बव	३२	५५	२८	३	19	३	तु. ५२/२०	स. सि. योग:	४	०१	३९	५७	5	59	19	03
३२.३५	५	गुरु	६	५	चित्रा	२६	००	शुभ	११	४८	बा	६	५	२९	४	20	४	तुला	**नाग पंचमी** (देखें पृ. 83), कल्कि जयन्ती, **शुक्र पूर्व में उदय ३५/४३(B)**	४	०२	३७	४३	6	00	19	02
३२.३०	६	शुक्र	११	४०	स्वा.	३२	३८	शुक्ल	१३	४३	तै	११	४०	३०	५	21	५	तुला		४	०३	३५	२८	6	01	19	01
३२.२८	७	शनि	१५	५८	विशा	३७	५५	ब्रह्म	१४	४०	व	१५	५८	३१	६	22	६	वृ. २१/४५	भ. १५/५८ से ४७/१४ तक, गोस्वामी तुलसीदास जयं., दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 84), श्रीशीतला पूजन	४	०४	३३	१७	6	01	19	00
३२.२३	८	रवि	१८	३०	अनु.	४१	२५	ऐन्द्र	१४	१५	बव	१८	३०	भा.	७	23	७	वृश्चिक	**श्रीदुर्गाष्टमी, बुध कन्या में ६/३०**, सूर्य सायन कन्या में **(C)**	४	०५	३१	०८	6	02	18	59
३२.२०	९	चंद्र	१९	८	ज्ये.	४२	५५	वैधृ	१२	२०	कौ	१९	८	२	८	24	८	ध. ४२/५५	गण्डमूल विचार	४	०६	२८	५८	6	02	18	57
३२.१३	१०	मंग	१७	३५	मूल	४२	२०	विष्क	८	४५	गर	१७	३५	३	९	25	९	धनु	भ. ४५/४८ से, मंगल आश्ले में ३८/३८, गण्डमूल, झूलन यात्रा प्रा.	४	०७	२६	४८	6	03	18	56
३२.०८	११	बुध	१४	००	पू.षा.	३९	४८	प्रीति आयु	३ ५६	३० ४५	वि	१४	००	४	१०	26	१०	म. ५३/५५	भ. १४/०० तक, **पवित्रा एकादशी व्रत सर्वेषाम्**	४	०८	२४	४३	6	04	18	55
३२.०५	१२	गुरु	८	४०	उ.षा.	३५	३८	सौभा	४८	४३	बा	८	४०	५	११	27	११	मकर	प्रदोष व्रत	४	०९	२२	३७	6	04	18	54
३२.००	१३	शुक्र	१	४८	श्रव.	३०	५	शोभ	३९	३५	तै	१	४८	६	१२	28	१२	कुं. ५६/५८	भ. ५३/४५ से, पंचक प्रारम्भ ५६/१८, ऋग्वेदि उपाकर्म	४	१०	२०	३१	6	05	18	53
००.००	१४	शुक्र	५३	४५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि क्षय** ०० (भद्रा 29 अग. को दुपै. 13/50 तक)	०	०	०	०	०	०	०	०
३१.५८	१५	शनि	४५	००	धनि.	२३	३८	अति	२९	४८	वि	१९	२३	७	१३	29	१३	कुम्भ	भ. १९/२३ तक, **श्रावण पूर्णिमा, रक्षा-बन्धन** (भद्रा बाद) (देखें पृ.84), यजुर्वेदि-**(D)**	४	११	१८	२८	6	05	18	52

शुक्र उदय 20 अग.

(A) पुण्यकाल सं. सारा दिन, **कुम्भ महापर्व (नासिक)** स्नान शुरु (देखें पृ. 12), **मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज**, जिल्काद (मु.) मास प्रारम्भ **(B)** बुध उ.फा. में ४४/१० **(C)** २५/१५, **शरद् ऋतु प्रारम्भ, शुक्र बाल्यत्व समाप्त** ३५/४३, शक भाद्रपद प्रा., मेला चिन्तपूर्णी, चामुण्डादेवी, नैनादेवी (हि.प्र.) **(D)** अथर्ववेदि उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, गायत्री जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, **ऋषि तर्पण, संस्कृत दिवस**, हयग्रीव जयन्ती,

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	३	४	४	३	७	५	११
०५	०७	१४	२९	०८	२४	०४	०८	०८
२९	३९	५७	४९	२५	१९	३३	२८	२८
५३	१४	३३	२०	२३	५०	१५	१०	१०
57 48	762 46	38 26	81 45	13 3	30 53	2 2	3 11	3 11
मघा २	अनु २	पुष्य ४	उफा १	मघा ३	आश्ले ३	अनु १	उफा ४	उभा २
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

५ सू. बु. गु. | ६ रा. | ४ शु. मं. | ३ | २ | १ | १२ के. | ११ | १० | ९ | ८ चं. श. | ७

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	३	५	४	३	७	५	११
११	००	१८	०७	०९	२१	०४	०८	०८
१७	२३	४७	३३	४३	४२	४६	०९	०९
०४	५१	४४	५७	४१	३७	५२	०५	०५
57 57	902 22	38 16	70 59	13 3	18 50	2 36	3 10	3 10
मघा ४	धनि ३	आश्ले १	उफा ४	मघा ३	आश्ले २	अनु १	उफा ४	उभा २
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

५ सू. गु. | ६ रा. बु. | ४ शु. मं. | ३ | २ | १ | १२ के. | ११ चं. | १० | ९ | ८ श. | ७

श्रावण शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की प्रतिपदा (15 अग.) से अष्टमी तिथि (23 अग.) तक माता छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी), माता **ज्वालामुखी** एवं **चामुण्डा** (कांगड़ा) में जागरण, कीर्तन, लंगर आदि सम्बन्धी भव्य मेले आयोजित होते हैं। तृतीया सोमवार (17 अग.) को **भाद्रपद संक्रान्ति** दुपै. 12/25 पर **तुला लग्न** में प्रवेश करेगी। संक्रान्ति के स्नान जप, पाठ, दानादि का पुण्यकाल सोमवार की प्रातः 6 बजकर 1 मिंट से शुरु होगा। हरियाली तीज का पर्व भी इसी दिन होगा। इसी दिन से कुम्भ महापर्व (नासिक) में भी शाही स्नान प्रारम्भ हो जाएंगे (देखें पृ. 12)। **नाग पंचमी** (20 अग.) गुरुवार को 3 मुहूर्त्त अर्थात् 6 घड़ी से अधिक होने से पर विद्धा, अर्थात् 20 अग. को मान्य होगी। इसदिन घर के बाह्य द्वार पर गोबर से सर्पाकृति बना कर, उसकी, दूध, दूर्वा, कुशा, पुष्पाक्षत एवं शक्कर-गुड़ादि नैवेद्य आदि के साथ पूजन करके **नाग स्तोत्र** का पाठ करना चाहिए। **श्रीदुर्गाष्टमी** (23 अग.) को **माता छिन्नमस्तिका** का अन्तिम भव्य मेला होगा। ता. 22 को **दूर्वाष्टमी** का पर्व भी मनाया जाएगा (देखें पृ. 84), ता. 29 अग. को **श्रावण पूर्णिमा** के दिन भाई-बहन के पवित्र सम्बन्धों का पर्व रक्षा-बन्धन होगा। भद्रा दुपै. 13/50 तक व्याप्त रहेगी। शास्त्रनियम अनुसार **रक्षा बन्धन** का पर्व भद्रोत्तरे दुपै. 13/50 के बाद ही परम्परानुसार मनाना शुभ होगा (देखें पृ. 84)।।

रक्षा-सूत्र बन्धन मन्त्र–येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां अनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

वि. संवत् २०७२, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९३७ — सन् 2015 ई. (ता. 30 अग. से 13 सितम्बर तक) हिजरी सन् 1436

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:

प्रातः मं.-शु., पूर्वक्षितिज में ता. 7 सितं. से गुरु भी पूर्व में उदित होगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर, बुध पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें भाद्र. शक	जिल्काद मु.	अगस्त	भाद्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३१.५३	१	रवि	३५	५३	शत	१६	३८	सुक	१९	३५	बा	१०	१७	८	१४	30	१४	मी. ५६/१८	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रा., गुरु मघा (४) में ६/०५, **गायत्री जपम्**	४	१२	०६	२५	6	06	18	51
३१.४५	२	चंद्र	२६	४८	पू.भा.	९	३३	धृति / शूल	९ / ५९	१८ / २०	तै	१	२१	९	१५	31	१५	मीन	भ. ५२/३१, सूर्य पू.फा. में ५/४३, बुध हस्त में ३/५५, कज्जली तीज **A**	४	१३	१४	२७	6	07	18	49
३१.४३	३	मंग	१८	१३	उ.भा. / रेव	२ / ५६	४८ / ४५	गंड	४९	५५	वि	१८	१३	१०	१६	सितं	१६	मे. ५६/४५	भ. १८/१३ तक, **पंचक समाप्त ५६/४५, अंगारकी श्रीगणेश (B)**	४	१४	१२	२९	6	07	18	48
३१.३८	४	बुध	१०	२३	अश्वि	५१	४३	वृद्धि	४१	१५	बा	१०	२३	११	१७	2	१७	मेष	गण्डमूल 26/49 तक,	४	१५	१०	३३	6	08	18	47
३१.३५	५	गुरु	३	४०	भर.	४७	५८	ध्रुव	३३	४०	तै	३	४०	१२	१८	3	१८	मेष	भ. ५८/२० से, **चन्दन षष्ठी व्रत, चन्द्रोदय 22[घं.] 18[मिं.] (जालन्धर)**, हल षष्ठी	४	१६	०८	३८	6	08	18	46
अवम	६	गुरु	५८	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१.२८	७	शुक्र	५४	२८	कृति	४५	४३	व्या.	२७	१५	वि	२६	२४	१३	१९	4	१९	वृषे २/१३	भ. २६/२४ तक, शीतला सप्तमी, अगस्त्योदय [गुरोदय पूर्व 7 सितं.]	४	१७	०६	४४	6	09	18	44
३१.२३	८	शनि	५२	१०	रोहि	४५	००	हर्ष	२२	५	बा	२३	१९	१४	२०	5	२०	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत,** जयंती योगे (देखें पृ. 88), स. सि. यो.	४	१८	०४	५५	6	10	18	43
३१.२०	९	रवि	५१	३५	मृग	४५	५५	वज्र	१८	१५	तै	२१	५३	१५	२१	6	२१	मि. १५/१५	**श्रीगुग्गा-नवमी, शुक्र मार्गी १९/३८,** गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	४	१९	०३	०६	6	10	18	42
३१.१५	१०	चंद्र	५२	३०	आर्द्रा	४८	२३	सिद्धि	१५	४०	व	२२	३	१६	२२	7	२२	मिथुन	भ. २२/०३ से ५२/३० तक, **गुरु पूर्व में उदय २४/१३**	४	२०	०१	१८	6	11	18	41
३१.१०	११	मंग	५४	५३	पुन	५२	१५	व्य.	१४	१८	बव	२३	४२	१७	२३	8	२३	क. ३६/०८	**अजा एकादशी व्रत सर्वेषाम्**	४	२०	५९	३३	6	11	18	39
३१.०५	१२	बुध	५८	३०	पुष्य	५७	१८	वरी	१३	५५	कौ	२६	४२	१८	२४	9	२४	कर्क	**वत्स द्वादशी (पूजा)** [कुम्भ महापर्व नासिक (13 सितं.)]	४	२१	५७	४९	6	12	18	38
३१.०३	१३	गुरु	६०	००	अश्ले	६०	००	परि	१४	३३	गर	३०	५०	१९	२५	10	२५	कर्क	प्रदोष व्रत, गुरु बाल्यत्व समाप्त २४/१३, गंडमूलादि, कैलाशयात्रा प्रा. 2 दिन	४	२२	५६	१०	6	12	18	37
३०.५८	१३	शुक्र	३	१०	अश्ले	३	२३	शिव	१५	५३	व	३	१०	२०	२६	11	२६	सिंहे ३/२३	भ. ३/१० से ३५/५७ तक, मासशिवरात्रि व्रत, **अघोरा**-डाकिनी **C**	४	२३	५४	२९	6	13	18	36
३०.५०	१४	शनि	८	४३	मघा	१०	१५	सिद्ध	१७	५०	शकु	८	४३	२१	२७	12	२७	सिंह	अमावस (पितृकार्येषु), पिठोरी अमावस, गण्डमूलादि	४	२४	५२	५१	6	14	18	34
३०.४८	३०	रवि	१४	५३	पू.फा.	१७	४८	साध्य	२०	१५	ना	१४	५३	२२	२८	13	२८	कं. ३४/४३	**भाद्रपद अमावस** (देवकार्येषु), **कुम्भ महापर्व (नासिक)** (देखें पृ. 12)**(D)**	४	२५	५०	४९	6	14	18	33

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

(A) (चं. उ. व्यापिनी) **(B) बहुला चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 10-11), सितं. मास आरम्भ **(C)** चतुर्दशी, गंडमूलादि **(D)** मुख्य स्नानदानादि, **कुशाग्रहणी अमावस** (देखें पृ. 84), **'ॐ हुँ फट् स्वाहा'** 'इह मंत्रेण कुशोत्पाटनम्', सूर्य उ.फा. में ५०/०३, स.सि.यो., लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला (झुंझुनूं) (राज.)

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 5 सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	३	५	४	३	७	५	११
१८	१२	२३	१५	११	२०	०५	०७	०७
०३	५२	१५	०४	१४	२०	०६	४६	४६
१८	५९	०४	४०	५४	५४	५१	५०	५०
58 9	804 8	38 7	54 25	13 1	2 2	3 12	3 11	3 11
पूफा २	रोहि १	अश्ले २	हस्त २	मघा ४	अश्ले २	अनु १	उफा ४	उभा २
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

६ रा. बु. | ४ मं. शु. | ५ सू. गु. | ७ | ३ | ८ श. | २ चं. | ९ | ११ | १ | १० | १२ के.

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 13 सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	३	५	४	३	७	५	११
२५	२२	२८	२०	१२	२१	०५	०७	०७
४९	४८	१९	४४	५८	०८	३४	२१	२१
३०	१५	०५	३४	३२	३५	४८	२४	२४
58 25	708 16	37 53	24 4	12 52	15 36	3 53	3 11	3 11
पूफा ४	पूफा ३	अश्ले ४	हस्त ४	मघा ४	अश्ले २	अनु १	उफा ४	उफा २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

६ रा. बु. | मं. ४ शु. | ५ सू. चं. गु. | ७ | ३ | ८ श. | २ | ९ | ११ | १ | १० | १२ के.

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में अंगारकी बहुलाचौथ (1 सितं.) का व्रत रखकर सायंकाल में श्रीगणेश जी का व्रत, पूजन एवं लड्डुओं का भोग लगाकर मन्त्र जप करें। तत्पश्चात् चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य प्रदान करने से मनोवाँछित फलों की प्राप्ति होती है। ता. 3 सितं. को **चन्दन-षष्ठी** का व्रत रखकर सूर्य व चन्द्र की पूजार्चना करने से धन, सन्तति व सौभाग्य में वृद्धि होती है। 5 सितं. **शनिवार** को **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** का व्रत रखकर भगवान् कृष्ण की कथा श्रवण/पाठ करना तथा रात्रि को पुष्पाक्षत एवं फलों सहित पूजन करने से अनेक कायिक व मानसिक दुःखों की निवृत्ति होती है। जन्माष्टमी को रोहिणी नक्षत्र का योग होने से जयन्ती नामक प्रशस्त योग बनता है, इसमें श्रीकृष्ण स्तोत्र का पाठ करना विशेष पुण्यकारक होगा। **जन्माष्टमी** के दूसरे दिन गोकुल में **नन्दोत्सव** मनाया जाता है। **अजा एकादशी** (8 सितं.) का विधिपूर्वक व्रत करने से जन्म-जन्म के कष्टों से निवृत्ति होती है। **वत्स द्वादशी** (9 सितं.) प्रातः बछड़े सहित गाय का पूजन करके मूँग, मोठ और बाजरा सहित भोजन का भोग लगाते हैं। इस दिन गाय का दूध दही या गोघृत से परहेज करके भैंस का दूध, प्रयोग में लाते हैं। **कुशाग्रहणी अमावस** (13 सितं.) को देव-पितृ कार्यों के लिए पूर्व या उत्तर दिशा में बैठकर मन्त्रपूर्वक कुशा ग्रहण करनी चाहिए। भाद्रपद अमावस्या (13 सितं. रविवार) को **नासिक तीर्थ पर कुम्भ महापर्व के स्नान-दानादि** का विशेष (मुख्य) माहात्म्य रहेगा। भाद्र-मास में **५ रविवार** पड़ने से कहीं प्रतिकूल वर्षा के कारण फसलों को हानि, छत्रभंग, उपद्रव आदि हिंसक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७२,	भाद्रपद शुक्ल पक्ष	शाक : १९३७												तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	भाद्र शुक्ल	जिल्हिज्जा मु.	सितंबर	भाद्र प्रवि.	
३०.४३	१	चंद्र	२१	२५	उ.फा.	२५	३५	शुभ	२२	५३	बव	२१	२५	२३	२९	14	२९	कन्या
३०.३८	२	मंग	२८	३	हस्त	३३	३०	शुक्ल	२५	३८	कौ	२८	३	२४	३०	15	३०	कन्या
३०.३३	३	बुध	३४	२५	चित्रा	४१	८	ब्रह्म	२८	८	तै	१	१४	२५	जि.	16	३१	तुले ७/२०
३०.२८	४	गुरु	४०	१०	स्वा.	४८	८	ऐन्द्र	३०	१३	व	७	१८	२६	२	17	आ.	तुला
३०.२५	५	शुक्र	४४	५८	विशा	५४	१०	वैधृ	३१	३८	बव	१२	३४	२७	३	18	२	वृ. ३७/४५
३०.१८	६	शनि	४८	२५	अनु.	५८	५०	विष्क	३२	३	कौ	१६	४२	२८	४	19	३	वृश्चिक
३०.१५	७	रवि	५०	१५	ज्ये.	६०	००	प्रीति	३१	१५	गर	१९	२०	२९	५	20	४	वृश्चिक
३०.१०	८	चंद्र	५०	१०	ज्ये.	१	५३	आयु	२९	३	वि	२०	१३	३०	६	21	५	धनु १/५३
३०.०८	९	मंग	४८	१३	मूल	३	८	सौभा	२५	२३	बा	१९	१२	३१	७	22	६	धनु
३०.००	१०	बुध	४४	२०	पू.षा. उ.षा.	२ ५१	२५ ५८	शोभ	२०	८	तै	१५	४७	आ	८	23	७	म. १६/५८
२९.५५	११	गुरु	३८	४३	श्रव.	५५	४५	अति	१३	२३	व	११	३२	२	९	24	८	मकर
२९.५०	१२	शुक्र	३१	३८	धनि	५०	१३	सुक धृति	५ ५६	२३ १८	बव	५	११	३	१०	25	९	कुं. २३/०८
२९.४५	१३	शनि	२३	२३	शत	४३	३३	शूल	४६	१८	तै	२३	२३	४	११	26	१०	कुम्भ
२९.४३	१४	रवि	१४	२३	पूभा	३६	२०	गंड	३५	५०	व	१४	२३	५	१२	27	११	मीने २३/१०
२९.३८	१५	चंद्र	४	५५	उभा	२८	५०	वृद्धि	२५	१०	बव	४	५५	६	१३	28	१२	मीन

सन् 2015 ई. (ता. 14 सितं. से 28 सितं. तक) हिजरी सन् 1436 सूर्य दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
प्रातः गुरु पूर्वक्षितिज में, उससे ऊपर मंगल तथा शुक्र होंगे। सायं बु. पश्चिमक्षितिज में होगा, परन्तु 24 सितं. से लुप्त हो जाएगा। शनि पश्चिम कपाल में होगा।	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घ्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुरु पू.फा. (१) में ३८/१८	४	२६	४९	४५	6	15	18	32
चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **मंगल** मघा (१) **सिंह में ३८/०५**, सामवेदि उपाकर्म	४	२७	४८	१२	6	15	18	30
हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, जिल्हिजा (मु.)**A**	४	२८	४६	४३	6	16	18	29
भ. ७/१८ से ४०/१० तक, **सूर्य कन्या में १५/०५, आश्विन संक्रान्ति,B**	४	२९	४५	१५	6	17	18	28
ऋषि-पंचमी, कुम्भमहापर्व (नासिक) स्नान तिथि (देखें पृ. 12)**C**	५	००	४३	५०	6	17	18	27
सूर्य षष्ठी व्रत, स. सि. यो.	५	०१	४२	२४	6	18	18	25
भ. ५०/१५ से, मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत, गण्डमूल विचार	५	०२	४१	०२	6	18	18	24
भ. २०/१३ तक, **श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ**, दधीची जयंती	५	०३	३९	४१	6	19	18	23
श्रीचन्द्र नवमी (उदा.-सम्प्र.), **श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ**, गंडमूल	५	०४	३८	२३	6	19	18	21
सूर्य सायन तुला में १८/४८, दक्षिण गोल प्रारम्भ, विष्णुश्रृंखल योग **(D)**	५	०५	३७	०४	6	20	18	20
भ. ११/३२ से ३८/४३ तक, **पद्मा एकादशी व्रत, (E)**	५	०६	३५	४९	6	21	18	19
पंचक प्रारम्भ २३/०८, प्रदोष व्रत, श्रीवामन जयंती (देखें पृ. 85)+	५	०७	३४	३३	6	21	18	17
+राहु उ.फा. (३) केतु उ.भा. (१) में ५९/०५	५	०८	३३	१९	6	22	18	16
भ. १४/२३ से ३९/३९ तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत**, सूर्य हस्त में २८/२३**F**	५	०९	३२	०९	6	22	18	15
भाद्रपद पूर्णिमा, स्नानदानादि, **पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रा.**, प्रतिपदा का श्राद्ध**(G)**	५	१०	३०	५९	6	23	18	14

(A) मास प्रारम्भ, कुम्भपर्व स्नान तिथि (नासिक) **(B)** मुहूर्त्ति १५, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से मध्याह्न तक, **सिद्धि विनायक व्रत, कलंक-चतुर्थी** (चन्द्रदर्शन-निषेध), चन्द्रास्त 20/56, **बुध वक्री** ४३/२३, पत्थर चौथ, विश्वकर्मा पूजन **(C)** सम्वत्सरी महापर्व (जैन) **(D)** 30घं.-19मिं. से, **शक आश्विन प्रारम्भ** **(E)** श्रवण द्वादशी (21/50 बाद), **वक्री बुध पश्चिम में अस्त** ३६/२८, विष्णुश्रृंखल योग 28/39 तक, विष्णु करवट परिवर्तन उत्सव, **(F)** शनि अनु. (२) में ४८/५३, श्रीसत्यनारायण व्रत, कदली व्रत, **मेला सोढल (जालन्धर)**, प्रोष्ठपदी महालय श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध **(G) ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण** (देखें पृ. 16)

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	७	४	५	४	३	७	५	११
०३	२९	०३	२१	१४	२४	०६	०६	०६
३७	०९	२१	१५	४०	०४	०७	५५	५५
४२	४५	२२	३१	५०	५१	५५	५८	५८
58 39	721 52	37 40	25 41	12 40	29 35	4 28	3 11	3 11
उफा ३	ज्ये. ४	मघा २	हस्त ४	पूफा १	आश्ले. ३	अनु. १	उफा ४	उभा २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

६ सू. बु. रा. | ५ गु. मं. | ४ शु. | ३ | २ | १ | १२ के. | ११ | १० | ९ | ८ चं. श. | ७

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	४	५	४	३	७	५	११
१०	०८	०७	१५	१६	२८	०६	०६	०६
२८	४७	४४	५७	०८	०१	४०	३३	३३
५१	३६	२४	०४	४३	३६	४३	४३	४३
58 51	912 49	37 28	65 49	12 24	39 2	4 57	3 11	3 11
हस्त १	उभा २	मघा ३	हस्त २	पूफा १	आश्ले. ४	अनु. २	उफा ३	उभा १
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

६ सू. बु. रा. | ५ गु. मं. | ४ शु. | ३ | २ | १ | १२ चं. के. | ११ | १० | ९ | ८ श. | ७

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया को **सौभाग्यवती** स्त्रियों को अखण्ड सुहाग की कामना से **हरितालिका तीज** (16 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक करना चाहिए। सिद्धि विनायक श्रीगणेश ४ **(पत्थर चौथ)** (17 सितं.) को व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन व लड्डुओं का भोग लगाना शुभ होगा। इस दिन सायं को चन्द्रदर्शन करने का निषेध माना जाता है। 17 सितं. गुरुवार को आश्विन संक्रान्ति १५ मुहूर्त्ति दुपै. 12 बजकर 19 मिनट पर वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। संक्रान्ति के स्नान, दानादि का पुण्यकाल प्रातः सू.उ. से लेकर मध्याह्न बाद तक रहेगा। **मुक्ताभरण**, 20 सितं. को सन्तान सप्तमी का व्रत सन्तान सुख की कामना से पति-पत्नी दोनों के द्वारा रखकर भगवान् शिव-पार्वती एवं सूर्य देव की पूजा की जाती है। ता. 21 को श्री राधाष्टमी एवं महालक्ष्मी का पूजन एवं व्रत सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग एवं सन्तान सुख के लिए करती हैं। ता. 25 सितं. को भगवान् विष्णु के **वामन अवतार** की पुण्य तिथि होगी। इस दिन भगवान् विष्णु का पुष्पाक्षत द्वारा पूजन, स्तोत्र एवं मन्त्र पाठ, जप, दानादि करने का विशेष माहात्म्य होगा। इस दिन कुम्भ महापर्व (नासिक) का स्नान माहात्म्य समाप्त हो जाएगा। ता. 27 सितं. को **अनन्त चौदश** का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के **अनन्त स्वरूप** का ध्यान, जप, पाठ एवं दानादि किया जाता है। इसी दिन जालन्धर में भगवान् शिव के अंशावतार बाबा सोढल का भव्य मेला आयोजित होता है। ता. 28 को पूर्णिमा मात्र प्रातः 8घं. 21मिं. तक होगी। तदुपरान्त आश्विनकृष्ण प्रतिपदा का प्रारम्भ होने से **प्रतिपदा का श्राद्ध** इसीदिन बाद दुपैहर को होगा। पूर्णिमा का श्राद्ध (ता. 27 को) 12 बजकर 10 मिंट के पश्चात् करना प्रशस्त होगा।

वि. संवत् २०७२, आश्विन कृष्ण पक्ष शाकः १९३७

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें [illegible]	तारीखें [illegible]	तारीखें सितंबर	तारीखें आश्विन प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
अवम्	१	चंद्र	५५	३०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
२९.३०	२	मंग	४६	२८	रेव	२१	३०	ध्रुव	१४	३८	तै	२०	५९	७	१४	29	१३	मेष २१/३०
२९.२८	३	बुध	३८	१८	अश्वि	१४	५३	व्या./हर्ष	४/५५	१५/२३	व	१२	२३	८	१५	30	१४	मेष
२९.२०	४	गुरु	३१	१८	भर.	९	१८	वज्र	४७	१३	बव	४	४८	९	१६	अक्टू	१५	वृष २३/०५
२९.१५	५	शुक्र	२५	५०	कृति	५	३	सिद्धि	४०	२०	तै	२५	५०	१०	१७	2	१६	वृष
२९.१३	६	शनि	२२	१३	रोहि	२	३३	व्य.	३४	५८	व	२२	१३	११	१८	3	१७	मि. ३२/००
२९.०८	७	रवि	२०	२८	मृग	१	५५	वरी	३१	८	बव	२०	२८	१२	१९	4	१८	मिथुन
२९.०३	८	चंद्र	२०	४८	आर्द्रा	३	१५	परि	२८	५३	कौ	२०	४८	१३	२०	5	१९	क. ५०/२८
२८.५८	९	मंग	२२	५५	पुन	६	२३	शिव	२८	३	गर	२२	५५	१४	२१	6	२०	कर्क
२८.५३	१०	बुध	२६	४३	पुष्य	११	१३	सिद्ध	२८	२८	वि	२६	४३	१५	२२	7	२१	कर्क
२८.५०	११	गुरु	३१	५३	अश्ले	१७	२५	साध्य	२९	५३	बा	३१	५३	१६	२३	8	२२	सिंहे १७/२५
२८.४३	१२	शुक्र	३७	५३	मघा	२४	३३	शुभ	३१	५५	कौ	४	५३	१७	२४	9	२३	सिंह
२८.४०	१३	शनि	४४	२५	पूफा.	३२	१३	शुक्ल	३४	२५	गर	११	९	१८	२५	10	२४	कं. ४९/१०
२८.३५	१४	रवि	५१	१०	उफा.	४०	८	ब्रह्म	३७	५	वि	१७	४८	१९	२६	11	२५	कन्या
२८.३०	३०	चंद्र	५७	४०	हस्त	४७	५३	ऐन्द्र	३९	३५	चतु	२४	२५	२०	२७	12	२६	कन्या

सन् 2015 ई. (ता. 29 सितं. से 12 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1436

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः

ग्रह दर्शन—प्रातः मं., गु. व शु. पूर्व क्षितिज के ऊपर होंगे। ता. 7 अक्तू. से बुध भी पूर्व में दिखेगा। सायं शनि पश्चिम कपाल में दिखाई देगा।

विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
पंचक समाप्त २१/३०, द्वितीया का श्राद्ध, गण्डमूल विचार	५	११	२९	५२	6	24	18	12
भ. १२/२३ से ३८/१८ तक, गुरु पू.फा. (२) में २९/२५, **शुक्र** मघा (१)**A**	५	१२	२८	४९	6	24	18	11
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 10-11), चतुर्थी का श्राद्ध	५	१३	२७	४६	6	25	18	09
महात्मा गाँधी जयन्ती, पंचमी का श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी	५	१४	२६	४४	6	26	18	08
भ. २२/१३ से ५१/२१ तक, वक्री बुध उ.फा. (४) में २७/१८, **षष्ठी का श्राद्ध**	५	१५	२५	४८	6	26	18	07
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (चं. उ. व्यापिनी), **सप्तमी का श्राद्ध B**	५	१६	२४	५०	6	27	18	06
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (सू.उ. व्यापिनी), अष्टमी का श्राद्ध **C**	५	१७	२३	५७	6	27	18	04
भ. ५४/४९ से, मातृ नवमी, मंगल पू.फा. (१) में ५६/२३, सौभाग्यवतियों **D**	५	१८	२३	०४	6	28	18	03
भ. २६/४३ तक, वक्री बुध पूर्व में उदय ७/५८, दशमी का श्राद्ध	५	१९	२२	१७	6	29	18	02
इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध	५	२०	२१	३१	6	29	18	01
बुध मार्गी ३४/५३, संन्यासीनां श्राद्ध, **द्वादशी का श्राद्ध**	५	२१	२०	४५	6	30	17	59
भ. ४४/२५ से, **शनि प्रदोष व्रत,** त्रयोदशी का श्राद्ध	५	२२	२०	०४	6	31	17	59
भ. १७/४८ तक, सूर्य चित्रा में ०/३५, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि से मृतकों का श्राद्ध	५	२३	१९	२४	6	31	17	57
महालय, सोमवती अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, पितृ-विसर्जन **E**	५	२४	१८	४८	6	32	17	56

A सिंह में ५४/३५ (28/14 घं.मिं.), भरणी श्राद्ध, तृतीया का श्राद्ध **B** (दोपहर 2/38 से पूर्व) **C** जीवित्पुत्रिका व्रत **D** एवं नवमी का श्राद्ध **E** चतुर्दशी/अमावस का श्राद्ध, मेला फाल्गु. व कपालमोचन (कुरुक्षेत्र) हरि.

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 5 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	४	५	४	४	७	५	११
१७	१८	१२	०८	१७	०२	०७	०६	०६
२१	४८	०६	४०	३४	५७	१६	११	११
३७	०३	१०	५४	३९	५९	४६	२७	२७
59 7	761 59	37 16	42 00	12 6	46 23	5 25	3 11	3 11
हस्त ३	आर्द्रा ४	मघा ४	उफा ४	पूफा २	मघा १	अनु २	उफा ३	उभा १
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

७ | ६ सू. बु. रा. | मं. ५ गु.शु. | ८ श. | ४ | ९ | ३ चं. | १० | १२ के. | २ | ११ | १

चंद्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	४	५	४	४	७	५	११
२४	१३	१६	०७	१८	०८	०७	०५	०५
१६	२४	२६	१९	५८	४०	५५	४९	४९
१५	२९	४२	१६	१२	२६	४९	१२	१२
59 23	708 40	37 7	29 44	11 42	52 1	5 48	3 11	3 11
चित्रा १	हस्त २	पूफा १	उफा ४	पूफा २	मघा ३	अनु २	उफा ३	उभा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

७ | ६ सू. चं. बु. रा. | मं. ५ गु.शु. | ८ श. | ४ | ९ | ३ | १० | १२ के. | २ | ११ | १

आश्विन कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में अपने दिवंगत पितरों के निमित्त मृत्यु तिथि पर जो व्यक्ति तिल, जौं, अक्षत, कुशा सहित संकल्पपूर्वक पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्र दक्षिणा आदि का दान करता है, उसके पितर संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन-यश-सम्पदा आदि का आशीर्वाद देते हैं—''आयु पुत्रान् यशः स्वर्ग कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून् सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।।'' जो व्यक्ति जान-बूझकर श्राद्धकर्म नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं अभावों से पीड़ित रहता है। इस पक्ष की अष्टमी तिथि (5 अक्तू.) को श्रीमहालक्ष्मी एवं जीवित्पुत्रिका व्रत पूजनादि करने से सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग एवं सन्तान की दीर्घायु की कामना से करती हैं। ज्ञात या अज्ञात तिथियों में मृतकजनों के निमित्त श्राद्ध कर्म करने से पितरों की शान्ति तथा श्राद्ध-कर्ता के गृह में सुख-शान्ति एवं परिवारिक सौभाग्य में वृद्धि होती है। शास्त्र में मध्याह्न विशेषकर अपराह्न काल में श्राद्ध कर्म करने का विधान कहा गया है। उस दिन गौ ग्रास एवं पीपल पर जल-तिलाञ्जली अर्पण करना शुभ होता है। सायंकाल को गृहद्वार के बाहिर दीप प्रज्वलित करके श्रद्धापूर्वक पितृ विसर्जन करना चाहिए। सोमवार की अमावस्या (12 अक्तू.) को करना विशेष शुभ होगा। **सोमवती अमावस्या** को गंगादि तीर्थस्थान पर स्नान, जप, श्राद्ध, तर्पणादि एवं दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन व दानादि करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। (देखें पृष्ठ 35)

वि. संवत् २०७२, आश्विन शुक्ल पक्ष शाक : १९३७

सन् 2015 ई. (ता. 13 से 27 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1436-37

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्-हेमन्त ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः बुध पूर्व क्षितिज में दिखेगा। इससे कुछ ऊपर मं., गु. एवं शु. पास-पास होंगे। सायं शनि पश्चिमक्षितिज के पास होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	राष्ट्रीय शक	मुस्लिम	अंग्रेजी	सौर प्रविष्टे	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२८.२५	१	मंग	६०	००	चित्रा	५५	१३	वैधृ	४१	५०	किं	३०	५४	२१	२८	13	२७	तुले २१/३५	शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, घटस्थापन (अभिजित में) (देखें पृ. 85), दुर्गापूजन (A)	५	२५	१८	१३	6	33	17	55
२८.२३	१	बुध	३	४३	स्वा.	६०	००	विष्क	४३	३८	बव	३	४३	२२	२९	14	२८	तुला	**चन्द्रदर्शन**, मु. १५,	५	२६	१७	३८	6	33	17	54
२८.१५	२	गुरु	९	५	स्वा.	१	५८	प्रीति	४४	४८	कौ	९	५	२३	मुह	15	२९	वृ. ५१/३०	बुध हस्त में ४५/०८, **मुहर्रम** (मु.) सं. 1437 हिजरी प्रारम्भ	५	२७	१७	०७	6	34	17	52
२८.१०	३	शुक्र	१३	३५	विशा	७	५०	आयु	४५	१३	गर	१३	३५	२४	२	16	३०	वृश्चिक	भ. ४५/१९ से प्रा., स. सि. योग 9/43 से प्रारम्भ	५	२८	१६	३८	6	35	17	51
२८.०५	४	शनि	१७	३	अनु	१२	४५	सौभा	४४	४५	वि	१७	३	२५	३	17	का	वृश्चिक	भ. १७/०३ तक, **सूर्य तुला में ४४/०८, कार्तिक संक्रान्ति**, मु.१५(B)	५	२९	१६	०९	6	36	17	50
२८.०३	५	रवि	११	१५	ज्ये.	१६	३३	शोभ	४३	२०	बा	११	१५	२६	४	18	२	धनु १६/३३	सरस्वती आवाहन मूलभे	६	००	१५	४४	6	36	17	49
२७.५८	६	चंद्र	२०	५	मूल	१८	५५	अति	४०	४५	तै	२०	५	२७	५	19	३	धनु	सरस्वती पूजन पू.षाभे	६	०१	१५	२०	6	37	17	48
२७.५३	७	मंग	१९	२३	पूषा.	१९	५०	सुक	३६	५८	व	१९	२३	२८	६	20	४	म. ३४/५०	भ. १९/२३ से ४८/१७ तक, सरस्वती बलिदान उ.षाभे, भद्रकाली जयंती	६	०२	१४	५६	6	38	17	47
२७.५०	८	बुध	१७	१०	उषा.	१९	१५	धृति	३१	५५	बव	१७	१०	२९	७	21	५	मकर	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, सरस्वती विसर्जन श्रवणे, मेला काँगड़ा, (C)	६	०३	१४	३७	6	38	17	46
२७.४५	९	गुरु	१३	२०	श्रव	१७	५	शूल	२५	३८	कौ	१३	२०	३०	८	22	६	कुं. ४५/२८	**महानवमी**, नवरात्र समाप्त, **विजयादशमी** (**दशहरा**), अपराजिता D	६	०४	१४	२०	6	39	17	45
२७.४०	१०	शुक्र	८	००	धनि	१३	२५	गंड	१८	१०	गर	८	००	का	९	23	७	कुम्भ	भ. ३४/४० से, सूर्य सायन वृश्चिक में ४१/३३, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ (E)	६	०५	१४	०४	6	40	17	44
२७.३५	११	शनि	१	२०	शत	८	३०	वृद्धि	९	३८	वि	१	२०	२	१०	24	८	मी. ४९/०८	भ. १/२० तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत, सूर्य स्वा.** में २६/१८, (F)	६	०६	१३	४७	6	41	17	43
००.००	१२	शनि	५३	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.३३	१३	रवि	४५	८	पू.भा. उ.भा.	२ ५५	३३ ५३	ध्रुव व्या.	० ५०	१८ २०	कौ	१९	२३	३	११	25	९	मीन	प्रदोष व्रत, बुध चित्रा में ३४/०३, स.सि.यो. 7/42 (घं. मिं.) से	६	०७	१३	३३	6	41	17	42
२७.२८	१४	चंद्र	३६	१०	रेव	४८	४८	हर्ष	३९	५८	गर	१०	३९	४	१२	26	१०	मेषे ४८/४८	भ. ३६/१० से, **पंचक समाप्त ४८/४८, शरद् पूर्णिमा व्रत** (देखें पृ. 85)G	६	०८	१३	२३	6	42	17	41
२७.२३	१५	मंग	२७	१०	अश्वि	४१	४५	वज्र	२९	३८	वि	१	४०	५	१३	27	११	मेष	भ. १/४० तक, **आश्विन पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **महर्षि वाल्मीकि जयं. H**	६	०९	१३	१३	6	43	17	40

(A) मातामह (नाना) का श्राद्ध, महाराजा अग्रसेन जयन्ती **B** पुण्यकाल सं. दोपहर 12/15 बाद से अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु पू.फा. (३) में १७/५३, शुक्र पू.फा. में ११/०८, उपाङ्ग ललिता व्रत, आकाश-दीपदान प्रा. **(C)** व ज्वालामुखी (हि.प्र.) **(D)** /शस्त्रादि पूजन, पंचक शुरू ४५/२८, **(E)** नवरात्र-पारणा, शक कार्तिक प्रारम्भ, भरत-मिलाप **(F)** पद्मनाथ द्वादशी **G** कोजागर व्रत, **(H)** श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 85), कार्तिक स्नान प्रा., बुध पूर्व में **अस्त** ५५/४५, स. सि. यो.

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	४	५	४	४	७	५	११
०३	०५	२१	१६	२०	१६	०८	०५	०५
११	००	५९	१९	४१	५१	४९	२०	२०
४९	२६	३५	१६	११	३७	५०	३५	३५
59	821	36	86	11	57	6	3	3
39	35	51	37	6	28	15	11	11
चित्रा ३	उषा ३	पूफा ३	हस्त २	पूफा ३	पूफा २	अनु २	उफा ३	उभा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

८ श. | ७ सू. | ६ रा. बु. | ५ मं. गु. शु. | ४ | ३ | २ | १ | १२ के. | ११ | १० चं. | ९

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	४	५	४	४	७	५	११
०९	०२	२५	२५	२१	२२	०९	०५	०५
१०	०४	४०	३३	४६	४३	२७	०१	०१
११	१३	०८	१३	३५	४९	५३	३०	३०
59	903	36	97	10	60	6	3	3
50	58	39	34	37	19	29	11	11
स्वा. १	अश्वि १	पूफा ४	चित्रा १	पूफा ३	पूफा ३	अनु २	उफा ३	उभा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

८ श. | ७ सू. | ६ रा. बु. | ५ मं. गु. शु. | ४ | ३ | २ | १ चं. | १२ के. | ११ | १० | ९

आश्विन शुक्ल पक्षफल—

प्रतिपदा (13 अक्तू.) से शरदीय नवरात्र का शुभारम्भ होगा। इस दिन श्रीदुर्गा माता के सम्मुख अखण्डदीप प्रज्वलन, श्री दुर्गा पूजन, कलश स्थापन, प्रमुख देवी देवता-आवाहन, पूजनादि के बाद श्री दुर्गा सप्तशती का पाठारम्भ किया जाता है। प्रतिपदा के दिन चित्रा नक्षत्र या वैधृति-अशुभ योग होने से शास्त्रानुसार अभिजित मुहूर्त्त (दुपै. 11/50 से 12 बजकर 38 मिंट) तक के काल में कलश (घट) स्थापन करना शुभ होगा। (देखें पृष्ठ 85) **नवरात्रों** में श्रीदुर्गा-पूजन, कुमारी कन्या पूजन एवं दानादि करने का विशेष महत्त्व होता है। **पूजन मन्त्र—'ॐ जयन्ती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी।--ॐ नमश्चण्डिकायै आगच्छ वरदे देवि पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।''** ता. 17 अक्तू. **कार्तिक संक्रांति** १५ मुहूर्त्ति शनिवार को होगी। स्नान, दान, जपादि का पुण्यकाल दुपै. 12/15 बजे से शुरु होगा। ता. 22 अक्तू. गुरूवार को दुपै. 11/59 के बाद श्रवण नक्षत्र एवं दशमी तिथि व्यापिनी **विजयादशमी** पर्व समस्त भारत वर्ष में मनाया जाएगा। सायंकाल में **रावण दहन** से पूर्व देवताओं, आयुध, अपराजिता पूजन और पूजनीय गुरुजनों की यथाविधि पूजा करने की भी परम्परा है। **शरद् पूर्णिमा** (26 अक्तू.) सोमवार की रात्रि को मेवा, बादाम, किशमिश सहित खीर को छिटकती चाँदनी में रात भर सुरक्षित रखकर दूसरे दिन भगवान् विष्णु को भोग लगाकर परिवार सहित स्वयं ग्रहण करने से अनेक प्रकार के विलिष्ट, शारीरिक व मानसिक रोगों की शान्ति होती है। आश्विन मास में पाँच मंगलवार होने से देश में कहीं युद्ध भय, हिंसक घटनाओं की संभावना, छत्रभङ्ग एवं साम्प्रदायिक घटनाओं का भय होगा। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं।

वि. संवत् २०७२, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाके : १९३७

सन् 2015 ई. (ता. 28 अक्तू. से 11 नवंबर तक) हिजरी सन् 1437 — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

ग्रह दर्शन—पक्षारम्भ से ही बुध अस्त है। प्रातः मं.-शु. पूर्व में दिखेंगे। इनसे ऊपर गुरु होगा। सायं शनि पश्चिमक्षितिज के पास होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें कार्ति. शक	मुहर्रम मु.	अक्टू.	कार्ति. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२७.१८	१	बुध	१८	३३	भर	३५	१५	सिद्धि	१९	३८	कौ	१८	३३	६	१४	28	१२	वृषे ४८/४५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,** मंगल उ.फा. में ३४/५८	६	१०	१३	०३	6	44	17	39
२७.१३	२	गुरु	१०	४३	कृति	२९	४०	व्य.	१०	१५	गर	१०	४३	७	१५	29	१३	वृष	भ. ३७/२७ से, **बुध तुला में ३९/५३** (22घं. 42मि.)	६	११	१२	५८	6	45	17	38
२७.१०	३	शुक्र	४	१०	रोहि	२५	३०	वरी परि	१ ५४	५५ ५५	वि	४	१०	८	१६	30	१४	मि. ५४/००	भ. ४/१० तक, **व्रत करवा चौथ** (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु **(A)**	६	१२	१२	५४	6	45	17	37
अवम्	४	शुक्र	५९	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.०५	५	शनि	५६	८	मृग	२३	००	शिव	४९	२०	कौ	२७	४१	९	१७	31	१५	मिथुन	शनि अनु. (३) में ५१/१३	६	१३	१२	५३	6	46	17	36
२७.००	६	रवि	५५	१०	आर्द्रा	२२	२८	सिद्ध	४५	२८	गर	२५	३९	१०	१८	नवं	१६	मिथुन	भ. ५५/१० से शुरु, **स्कन्द षष्ठी व्रत,** नवम्बर मास प्रारम्भ	६	१४	१२	५३	6	47	17	35
२६.५५	७	चंद्र	५६	२३	पुन	२४	३	साध्य	४३	१३	वि	२५	४७	११	१९	2	१७	कर्के ८/२५	भ. २५/४७ तक, बुध स्वाती में ४१/२५	६	१५	१२	५४	6	48	17	34
२६.५३	८	मंग	५९	३५	पुष्य	२७	४०	शुभ	४२	३५	बा	२७	५९	१२	२०	3	१८	कर्क	**अहोई अष्टमी व्रत, कालाष्टमी, मंगल कन्या में** ३/१५, **शुक्र (B)**	६	१६	१२	५८	6	49	17	34
२६.५०	९	बुध	६०	००	अश्ले	३३	५	शुक्ल	४३	२०	तै	३२	०२	१३	२१	4	१९	सिं. ३३/०५	**Z कुबेर पूजा,** सायं दीपदान देवालये, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), **काली पूजन**	६	१७	१३	०६	6	49	17	33
२६.४५	९	गुरु	४	२८	मघा	३९	५३	ब्रह्म	४५	५	गर	४	२८	१४	२२	5	२०	सिंह	भ. ३७/३२ से, गुरु पू.फा. (४) में ३/१५	६	१८	१३	१६	6	50	17	32
२६.४०	१०	शुक्र	१०	३५	पूफा	४७	३३	ऐन्द्र	४७	२८	वि	१०	३५	१५	२३	6	२१	सिंह	भ. १०/३५ तक, सूर्य विशा. में ४६/२५	६	१९	१३	२४	6	51	17	31
२६.३८	११	शनि	१७	१८	उफा	५५	२८	वैधृ	५०	३	बा	१७	१८	१६	२४	7	२२	कन्ये ४/२८	**रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी** (प्रदोषकाले), कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	६	२०	१३	३७	6	52	17	31
२६.३३	१२	रवि	२४	८	हस्त	६०	००	विष्क	५२	३०	तै	२४	८	१७	२५	8	२३	कन्या	**धन त्रयोदशी पर्व प्रारम्भ** (प्रदोषकाल से), स. सि. यो.	६	२१	१३	५३	6	53	17	30
२६.२८	१३	चंद्र	३०	३३	हस्त	३	१०	प्रीति	५४	३३	व	३०	३३	१८	२६	9	२४	तु. ३६/५०	भ. ३०/३३ से, **सोम प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी** (देखें पृ. 86), धनवन्तरी जयं. **(C)**	६	२२	१४	०८	6	54	17	29
२६.२५	१४	मंग	३६	१३	चित्रा	१०	२०	आयु	५६	००	वि	३	२३	१९	२७	10	२५	तुला	भ. ३/२३ तक, **नरक चौदश,** बुध विशा. में ४८/१३, रूप चौदश **D**	६	२३	१४	२५	6	54	17	28
२६.२३	३०	बुध	४०	५५	स्वा	१६	३८	सौभा	५६	३८	चतु	८	३४	२०	२८	11	२६	तुला	**कार्तिक** अमावस, **दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (देखें पृ. 87) **Z**	६	२४	१४	४६	6	55	17	28

(A)देखें पृ. 10-11, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** शुक्र उ.फा. में ४९/२३, दशरथ चतुर्थी **B**कन्या में १/४३ (8घं.-07मि.), दम्पत्य अष्टमी **C** यमाय प्रीत्यर्थं दीपदान, **श्रीहनुमान जयन्ती** (देखें पृ. 86), मासशिवरात्रि व्रत **D** यमाय तर्पण, श्रीहनुमान जयं, पूजनार्चनाय, च

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	४	६	४	४	७	५	११
१६	१०	२९	०७	२२	२९	१०	०४	०४
०९	१४	५६	०५	५९	५४	१३	३९	३९
४३	२६	०३	२२	०४	४६	५८	१५	१५
60 6	743 23	36 25	99 19	9 57	63 5	6 42	3 11	3 11
स्वा 3	पुष्य 3	उफा 9	स्वा 9	पूफा 3	उफा 9	अनु 3	उफा 3	उभा 9
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

७ सू. बु. · ८ श. · ६ रा. · ५ मं. गु. शु. · ४ चं. · ९ · १० · ११ · १ · ३ · १२ के. · २

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	५	६	४	५	७	५	११
२४	१५	०४	२०	२४	०८	११	०४	०४
११	५५	४६	१३	१६	२८	०८	१३	१३
१९	४२	३४	२९	०९	३५	२६	४९	४९
60 20	730 24	36 10	97 13	9 10	65 34	6 56	3 11	3 11
विशा 2	स्वा 3	उफा 3	विशा 9	पूफा 4	उफा 4	अनु 3	उफा 3	उभा 9
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

७ सू. चं. बु. · ८ श. · ६ रा. शु. मं. · ५ गु. · ४ · ९ · १० · ११ · १ · ३ · १२ के. · २

कार्तिक कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में **करवा चौथ** (30 अक्तू.) का व्रत **सुहागिन स्त्रियां** पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। सायं श्रीगणेश पूजन करके चन्द्रमा को अर्ध्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (3 नवं.) का व्रत एवं सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। **रमा. एकादशी** (7 नवम्बर) का विधिपूर्वक व्रत रखने से अनेक पापों का क्षय होता है तथा चिर तक धन सम्पदा सुख होता है। **धन-त्र्योदशी** (9 नवं.) को नवीन बर्तन का क्रय करना, सायंकाल को श्रीलक्ष्मी नारायण का पूजन करने के बाद अनाज, वस्त्र, औषधियाँ एवं दीपदान करने से अकालमृत्यु का भय नहीं रहता। इसी दिन **वैद्यराज धनवंतरी** जी की जयन्ती मनाई जाती है। 10 नवं. को नरक चौदश के दिन बिजली, अग्नि, उल्का आदि से मृतकों की शान्ति के लिए चार मुख वाले दीपक को प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान करें। सायंकाल को दक्षिण दिशा की ओर मुख करके जल, तिल और कुश लेकर तर्पण करें। इस दिन की अर्धरात्रि के समय घृतपूर्ण दीपक जलाकर **श्रीहनुमान** जयन्ती मनाई जाती है। उन्हें मोदक, केले, फलादि अर्पण करके एवं सुन्दरकाण्ड का पाठ करें। ता. 11 नवं., बुधवार को कार्तिक अमावस्या को प्रदोष काल में दीपदान करके, अपने गृह के पूजा स्थान में मन्त्रपूर्वक दीप प्रज्वलित करके **श्रीमहालक्ष्मी** की यथाविधि पूजा करनी चाहिए। लोक-भविष्य—3 नवं. से मंगल-शुक्र-राहु तीनों ग्रह कन्या राशि में होने से विभिन्न मुस्लिम राष्ट्रों तथा एशियाई देशों में आतंकवादी एवं हिंसक घटनाएं होंगी। विस्फोटक कार्यवाईयों से व्यापक जन-धन की हानि होगी।

यथा-मंगलोराहुशुक्रौ च स्थिता यदि त्रयस्तुले। परस्परं नृपैः युद्धं रुधिरैः पूरितामहि।। शकुन—बुधवार की कार्तिक अमावस व्यापारियों के लिए शुभ एवं लाभदायक होगी।

वि. संवत् २०७२, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाक : १९३७														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	सन् 2015 ई. (ता. 12 नवं. से 25 नवंबर तक) हिजरी सन् 1437 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	कार्ति. शक	मुहर्र. मु.	नवंबर	कार्ति. प्र.		ग्रह दर्शन–प्रातः मंग.–शुक्र पूर्वकपाल में, गुरु याम्योत्तरवृत्त में होगा। बुध अभी अस्त है। ता. 13 नवं. से शनि भी पश्चिम में अस्त होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.१८	१	गुरु	४४	३५	विशा	२१	५५	शोभ	५६	२८	किं	१२	४५	२१	२९	12	२७	वृश्चि. ५/४३	शुक्र हस्त में १९/५८, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलि व मार्गपाली A	६	२५	१५	०९	6	56	17	27
२६.१५	२	शुक्र	४७	८	अनु	२६	१३	अति	५५	३०	बा	१५	५२	२२	३०	13	२८	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, मु. १५, भ्रातृ (भाई)-दूज, यम-द्वितीया, यमुना-स्नान B	६	२६	१५	३१	6	57	17	27
२६.१०	३	शनि	४८	३८	ज्ये.	२९	२८	सुक	५३	४०	तै	१७	५३	२३	सफ	14	२९	ध. २९/२८	बाल-दिवस, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, नेहरू जयंती	६	२७	१६	००	6	58	17	26
२६.०५	४	रवि	४९	३	मूल	३१	४०	धृति	५१	३	व	१८	५१	२४	२	15	३०	धनु	भ. १८/५१ से ४९/०३ तक, दूर्वा गणपति व्रत, स. सि. यो.	६	२८	१६	३०	6	59	17	25
२६.०३	५	चंद्र	४८	२८	पू.षा.	३२	५३	शूल	४७	३८	बव	१८	४६	२५	३	16	मा.	मक ४८/००	सूर्य वृश्चिक में ४२/३५, मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु. ४५, पुण्यकाल C	६	२९	१६	५८	7	00	17	25
२५.५८	६	मंग	४६	४८	उषा	३३	३	गंड	४३	२३	कौ	१७	३८	२६	४	17	२	मकर	सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार), बुध वृश्चिक में 7/30 (घं. मिं.)	७	००	१७	३०	7	01	17	24
२५.५८	७	बुध	४४	५	श्रव	३२	१३	वृद्धि	३८	२०	गर	१५	२७	२७	५	18	३	मकर	भ. ४४/०५ से शुरू,	७	०१	१८	०१	7	01	17	24
२५.५३	८	गुरु	४०	१८	धनि	३०	१८	ध्रुव	३२	२०	वि	१२	१२	२८	६	19	४	कुं. १/२३	भ. १२/१२ तक, पंचक शुरू १/२३, गोपाष्टमी, मंगल हस्त में (D)	७	०२	१८	३५	7	02	17	23
२५.५०	९	शुक्र	३५	२५	शत	२७	१८	व्या.	२५	३३	बा	७	५२	२९	७	20	५	कुम्भ	अक्षय-नवमी, कूष्माण्ड नवमी, सूर्य अनु. में ०/४८, आरोग्य व्रत	७	०३	१९	१०	7	03	17	23
२५.४८	१०	शनि	२९	३३	पू.भा.	२३	२०	हर्ष	१७	५५	तै	२	२९	३०	८	21	६	मीन ९/२३	भ. ५६/१२ से शुरू, भीष्मपंचक प्रारम्भ (देखें पृ. 86), ब्रह्मप्राप्ति व्रत	७	०४	१९	४३	7	04	17	23
२५.४३	११	रवि	२२	५०	उभा	१८	३०	वज्र	९	३३	वि	२२	५०	मा.	९	22	७	मीन	भ. २२/५० तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत, (E)	७	०५	२०	२०	7	05	17	22
२५.४०	१२	चंद्र	१५	२८	रेव	१३	००	सिद्धि व्य.	० ५१	४० २५	बा	१५	२८	२	१०	23	८	मेष १३/००	पंचक समाप्त १३/००, सोम प्रदोष व्रत, तुलसी विवाह (F)	७	०६	२०	५८	7	06	17	22
२५.३८	१३	मंग	७	४८	अश्वि	७	८	वरी	४२	३	तै	७	४८	३	११	24	९	मेष	वैकुण्ठ चतुर्दशी, शुक्र चित्रा में १३/४५, स. सि. योग	७	०७	२१	३७	7	07	17	22
२५.३३	१४	बुध	०	५	भ. कृति	१ ५५	१५ ४८	परि	३२	५३	व	०	५	४	१२	25	१०	वृष १४/५०	भ. ०/०५ से २६/२५ तक, कार्तिक पूर्णिमा (प्रातः 7/10 बाद), (G)	७	०८	२२	१८	7	08	17	21
अवम	१५	बुध	५२	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	पूर्णिमा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

(A) पूजा, गोक्रीडा, **विश्वकर्मा दिवस** (पंजाब) **(B)** **शनि पश्चिम** में अस्त ७/१३, विश्वकर्मा पूजन, कलम-दवात पूजन **(C)** सं. दोपहर 12/02 से अगले दिन तक, ज्ञान पंचमी, जया पंचमी **(D)** ३८/३५, बुध अनु. में ७/१० **E** नियमादि समाप्त, सूर्य सायन धनु में ३४/३५, शक मार्गशीर्ष प्रारंभ, स. सि. योग **(F)** हरिप्रबोधोत्सव **(G)** स्नान, दानादि, **श्रीगुरु नानक जयन्ती, भीष्मपंचक समाप्त**, कार्तिक स्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्करतीर्थ (राज.), त्रिपुरोत्सव, स. सि. यो. 7/38 से, 'महाकार्तिकी'*

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ०२ १४ ४४	९ २८ ४८ ४०	५ ०९ ३४ ४०	७ ०३ ०२ ३६	४ २५ २६ १४	५ १७ २० १०	७ १२ ०४ १९	५ ०३ ४८ २२	११ ०३ ४८ २२
60 32	832 33	35 50	94 55	8 13	67 29	7 3	3 10	3 10
विशा ४	धनि २	उफा ४	विशा ४	पूफा ४	हस्त ३	अनु ३	उफा ३	उभा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

९ | ८ सू. बु. श. | ७ | ६ रा. मं. शु. | १० चं. | ५ गु. | ११ | १२ के. | २ | ४ | १ | ३

बुधे चतुर्दश्याम् ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ०८ १८ १४	० २५ २१ २१	५ १३ ०८ ५८	७ १२ २८ ५३	४ २६ १३ ३६	५ २४ ०८ ११	७ १२ ४६ ४६	५ ०३ २९ १८	११ ०३ २९ १८
60 39	880 24	35 34	93 46	7 27	68 41	7 6	3 11	3 11
अनु २	भ ४	हस्त १	अनु ३	पूफा ४	चित्रा १	अनु ३	उफा ३	उभा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30

९ | ८ सू. बु. श. | ७ | ६ रा. मं. शु. | १० | ५ गु. | ११ | १२ के. | २ | ४ | १ चं. | ३

कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

का. शु. प्रतिपदा (12 नवं.) को गोवर्द्धन पूजा एवं अन्नकूट का पर्व उत्तर भारत में विशेषकर मथुरा में मनाया जाता है। द्वितीया (13 नवं.) को **भाई दूज** के दिन स्नान उपरांत शिव-पार्वती एवं यम पूजनोपरान्त बहनें अपने भाई की मंगल कामना हेतु उसे तिलक लगाती हैं। भाई अपनी बहन को श्रद्धाभाव से वस्त्राभूषण आदि का उपहार देता है। **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** (16 नवं.), **सोमवार** को ४५ मुहूर्त्ती होगी। वारानुसार नन्दा नामक यह संक्रान्ति व्यापारियों को लाभप्रद एवं शुभकारी होगी। स्नान, दान का विशेष पुण्यकाल अगले दिन सूर्योदय से होगा। **अक्षय नवमी** (20 नवं.) को किया हुआ पूजा-पाठ और दिया हुआ दान-पुण्य अक्षय होता है। **भीष्मपंचक** पंचदिनात्मक होने से 21 नवं. से 25 नवं. तक रहेंगे। **हरिप्रबोधिनी एकादशी** (22 नवं.) से चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त होंगे। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजार्चना तथा श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ करना शुभ है। ता. 23 नवं. सोमवार को तुलसी विवाह रेवती एवं अश्विनी नक्षत्र कालीन होगा। यद्यपि व्यतीपात योग विचारणीय होगा। परन्तु अर्धरात्रि बाद तुला लग्न में व्यतिपात का अभाव होगा। ता. 25, कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्नान, जप, पाठादि का विशेष महत्त्व होगा। इसी दिन **श्रीगुरुनानक** जयन्ती का मुख्य पर्व होगा। **"कार्तिक्यां कृत्तिकायोगे कार्तिकेयदर्शनम्।।'** के अनुसार कृतिकायुता कार्तिकी पूर्णिमा होने पर स्वामी कार्तिकेय दर्शन करने से सात जन्मों तक वेदज्ञ और धनाढ्य होता है। जो नक्तव्रत करता है, वह शिवपद प्राप्त करता है। यह शिवव्रत ही है।

आकाश लक्षण–पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व जम्मू-कश्मीर के उत्तरी भागों में तेज हवाओं के साथ बौछारें पडने के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक: १९३७ | **सन् 2015 ई. (ता. 26 नवं. से 11 दिसंबर तक)** हिजरी सन् 1437 | भा.स्टैं.टा.

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु: | **जालन्धर**

प्रातः मंग.–शुक्र पूर्वकपाल में, गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा। बु. व शनि अभी अस्त हैं। ता. 11 दिसं. से सायं बु. पश्चिम में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें मार्ग. शक	सफर मु.	नवंबर	मार्ग. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.३२	१	गुरु	४६	१५	रोहि	५१	१०	शिव	२४	१३	बा	१९	३०	५	१३	26	११	वृष	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	७	०९	२३	०१	7	08	17	21
२५.३०	२	शुक्र	४०	५५	मृग	४७	४३	सिद्ध	१६	२३	तै	१३	३५	६	१४	27	१२	मि. १९/१३	बुध ज्ये. में ३६/४५	७	१०	२३	४५	7	09	17	21
२५.२८	३	शनि	३७	८	आर्द्रा	४५	५०	साध्य	९	४०	व	९	२	७	१५	28	१३	मिथुन	भ. ९/०२ से ३७/०८ तक, गुरु उ.फा. (१) में ३४/०८, सौभाग्य-**(A)**	७	११	२४	३०	7	10	17	21
२५.२५	४	रवि	३५	१८	पुन	४५	५३	शुभ	४	२३	बव	६	१३	८	१६	29	१४	क. ३०/४०	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), शनि अनु. (४) में ३६/१३	७	१२	२५	१३	7	11	17	21
२५.२०	५	चंद्र	३५	३०	पुष्य	४७	५८	शुक्ल / ब्रह्म	० / ५८	३८ / ३५	कौ	५	२४	९	१७	30	१५	कर्क	**शुक्र तुला राशि में १/२३** (7घं.-45मिं.), स. सि. योग:	७	१३	२६	००	7	12	17	20
२५.१८	६	मंग	३७	५३	अश्ले	५२	३	ऐन्द्र	५८	५	गर	६	४२	१०	१८	दिसं	१६	सिं. ५२/०३	भ. ३७/५३ से शुरू, दिसम्बर मास प्रारम्भ, गण्डमूलादि विचार	७	१४	२६	४९	7	13	17	20
२५.१८	७	बुध	४२	१०	मघा	५७	५५	वैधृ	५८	५८	वि	१०	२	११	१९	2	१७	सिंह	भ. १०/०२ तक, गण्डमूल 30घं.-23मिं. तक	७	१५	२७	३९	7	13	17	20
२५.१५	८	गुरु	४७	५३	पूफा	६०	००	विष्क	६०	००	बा	१५	२	१२	२०	3	१८	सिंह	**कालभैरवाष्टमी**, सूर्य ज्येष्ठा में ११/१८	७	१६	२८	२९	7	14	17	20
२५.१३	९	शुक्र	५४	३३	पूफा	४	५८	विष्क	०	४५	तै	२१	१३	१३	२१	4	१९	कं. २१/५५	स. सि. योग 9/14 तक	७	१७	२९	२२	7	15	17	20
२५.१०	१०	शनि	६०	००	उ.फा.	१२	४५	प्रीति	३	८	व	२७	५७	१४	२२	5	२०	कन्या	भ. २७/५७ से, शुक्र स्वाति में ४४/२०	७	१८	३०	१४	7	16	17	20
२५.०८	१०	रवि	१	२०	हस्त	२०	३५	आयु	५	३५	वि	१	२०	१५	२३	6	२१	तु. ५४/२०	भ. १/२० तक, **बुध मूल (१) धनु में ११/५०**, स. सि. योग	७	१९	३१	१०	7	17	17	20
२५.०८	११	चंद्र	७	४५	चित्रा	२७	५०	सौभा	७	४५	बा	७	४५	१६	२४	7	२२	तुला	**उत्पन्ना एकादशी व्रत सर्वेषाम्**	७	२०	३२	०८	7	17	17	20
२५.०५	१२	मंग	१३	१३	स्वा	३४	५	शोभ	९	१०	तै	१३	१३	१७	२५	8	२३	तुला	**भौम प्रदोष व्रत**, स. सि. योग:	७	२१	३३	०६	7	18	17	20
२५.०५	१३	बुध	१७	२५	विशा	३९	३	अति	९	३८	व	१७	२५	१८	२६	9	२४	वृ. २२/५५	भ. १७/२५ से ४८/४८ तक, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी जयन्ती	७	२२	३४	०६	7	19	17	21
२५.०३	१४	गुरु	२०	१०	अनु	४२	४०	सुक	९	०५	शकु	२०	१०	१९	२७	10	२५	वृश्चिक	देविका स्नान (का.), मेला पुरमण्डल (जम्मू), गण्डमूल 24घं.-24मिं. से	७	२३	३५	०७	7	20	17	21
२५.०३	३०	शुक्र	२१	३८	ज्ये.	४५	३	धृति	७	२८	ना	२१	३८	२०	२८	11	२६	धनु ४५/०३	**मार्गशीर्ष अमावस**, स्नान-दानादि, बुध पश्चिम में उदय २१/१३, **(B)**	७	२४	३६	०८	7	20	17	21

(A) सुन्दरी व्रत **(B)** गण्डमूल विचार

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	५	७	४	६	७	५	११
१६	१२	१७	२४	२७	०३	१३	०३	०३
२४	५३	५२	५५	०९	२२	४३	०३	०३
०८	४६	१६	५७	१२	३८	३८	५२	५२
60	715	35	93	6	70	7	3	3
50	38	12	1	18	2	7	11	11
अनु	मघा	हस्त	ज्ये.	उफा	चित्रा	अनु	उफा	पूभा
४	४	३	३	१	४	४	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

८ सू. बु. श. | ९ | ७ शु. | १० | ६ मं. रा. | ११ | ५ चं. गु. | १२ के. | २ | ४ | १ | ३

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	५	८	४	६	७	५	११
२४	१९	२२	०७	२७	१२	१४	०२	०२
३१	२२	३२	१७	५५	४६	४०	३८	३८
२९	२५	२५	४२	१६	४५	२०	२५	२५
61	772	34	92	5	71	7	3	3
00	21	46	8	2	5	2	10	10
ज्ये.	ज्ये.	हस्त	मूल	उफा	स्वा.	अनु	उफा	पूभा
३	१	४	३	१	२	४	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

८ सू. चं. श. | ९ बु. | ७ शु. | १० | ६ मं. रा. | ११ | ५ गु. | १२ के. | २ | ४ | १ | ३

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की मध्याह्नव्यापिनी अष्टमी को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप **महाकाल भैरव** की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। इस दिन **'जागरं चोपवासं च कृत्वा कालाष्टमीदिने। प्रयतः पापनिर्मुक्तः शैवो भवति शोभनः।।'** के अनुसार उपवास करके रात्रि में जागरण करने से सब पाप दूर होते हैं और व्रती कल्याण प्राप्त करता है। **'उत्पन्ना एकादशी'** (7 दिसं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्वप्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। इस दिन प्रातः स्नानादि के पश्चात् **'ममाखिलपापक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीतिकामनया मार्गशीर्ष कृष्णैकादशीव्रतं करिष्ये।'** यह संकल्प करके उपवास करें। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका-स्नान का पुण्य पर्व जम्मू व कुरुक्षेत्र में मनाया जाता है। ***लोक-भविष्य*–मार्गशीर्ष मास** में पाँच **गुरुवार** एवं पाँच शुक्रवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पाँच **गुरुवार** होने से देश में कहीं उपद्रव, बाढ़, हिंसा आदि की घटनाएँ होंगी। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष का भी भय रहेगा–**'यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च वृहत्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।।'** दैनिक जन-उपयोगी वस्तुओं, धान्यादि की कीमतों में वृद्धि के कारण सामान्य वर्ग में गहन असन्तोष रहेगा। परन्तु पाँच शुक्रवार भी होने से कुछ क्षेत्रों में अनाजादि की फसल अच्छी होगी। कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी। अधिकांश अमीर लोग भोग-विलासादि कार्यों में प्रवृत्त रहेंगे। जनसंख्या में असंयमित रूप से वृद्धि होगी। **आकाश लक्षण**–भारत के उत्तर-पश्चिम तथा पहाड़ी क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं। कहीं शीत लहरों के चलने से खड़ी फसलों को हानि के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, *मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष* शाक : १९३७ | तारीखें | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल

सन् 2015 ई. (ता. 12 दिसं. से 25 दिसम्बर तक) हिजरी सन् 1437
सूर्य दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतुः

भा.स्टैं.टा. — **जालन्धर**

ग्रह दर्शन—ता. 16 दिसं. से शनि प्रातः पूर्वक्षितिज में दिखेगा। इससे कुछ ऊपर शु. तथा फिर मं. दिखेगा। गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा। सायं बु. पश्चिम में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मार्ग. शक	सफर मु.	दिसंबर	मार्ग. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन / विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.०१	१	शनि	२१	४८	मूल	४६	१३	शूल	४	५०	बव	२१	४८	२१	२९	12	२७	धनु	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल चित्रा में १७/३०, गण्डमूल 25घं.–50मिं. तक	७	२५	३७	११	7	21	17	21
२४.५९	२	रवि	२०	५३	पू.षा.	४६	२८	गंड वृद्धि	१ ५७	२३ १०	कौ	२०	५३	२२	रबि	13	२८	धनु	रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	७	२६	३८	१२	7	22	17	21
२४.५९	३	चंद्र	१९	८	उषा	४५	५५	ध्रुव	५२	२३	गर	१९	८	२३	२	14	२९	मक. १/२३	भ. ४७/५२ से, बुध पू.षा. में ५२/२०	७	२७	३९	१७	7	22	17	22
२४.५८	४	मंग	१६	३५	श्रव	४४	४०	व्या.	४७	००	वि	१६	३५	२४	३	15	३०	मकर	भ. १६/३५ तक,	७	२८	४०	२२	7	23	17	22
२४.५५	५	बुध	१३	२८	धनि	४२	५३	हर्ष	४१	१०	बा	१३	२८	२५	४	16	पौ.	कुंभे १३/४८	**पंचक शुरू १३/४८, सूर्य मूल (१) धनु में १८/१५ (14घं.–42मिं.), पौष A**	७	२९	४१	२५	7	24	17	22
२४.५८	६	गुरु	९	४८	शत	४०	३५	वज्र	३४	५८	तै	९	४८	२६	५	17	२	कुम्भ	शुक्र विशा. में 7/15 (घं. मिं.), स्कन्द (गुहा षष्ठी), **चम्पा षष्ठी**	८	००	४२	३०	7	24	17	23
२४.५५	७	शुक्र	५	३५	पूभा	३७	४५	सिद्धि	२८	२०	व	५	३५	२७	६	18	३	मी. २३/३०	भ. ५/३५ से ३३/१४ तक, **मित्र (विष्णु) सप्तमी**	८	०१	४३	३४	7	25	17	23
२४.५५	८	शनि	०	५३	उभा	३४	२८	व्या.	२१	१८	बव	०	५३	२८	७	19	४	मीन	गण्डमूल 21घं.–23मिं. से शुरु	८	०२	४४	४१	7	26	17	24
००.००	९	शनि	५५	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**नवमी तिथि का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२४.५६	१०	रवि	५०	१३	रेव	३०	४८	वरी	१३	५८	तै	२२	५९	२९	८	20	५	मे. ३०/४८	**पंचक समाप्त ३०/४८** (19घं.–45मिं.), गण्डमूल विचार	८	०३	४५	४८	7	26	17	25
२४.५५	११	चंद्र	४४	२३	अश्वि	२६	४५	प्री शिव	६ ५८	१५ २८	व	१७	१८	३०	९	21	६	मेष	भ. १७/१८ से ४४/२३ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयन्ती**	८	०४	४६	५२	7	27	17	25
२४.५५	१२	मंग	३८	२८	भर	२२	३८	सिद्ध	५०	३५	बव	११	२६	पौ	१०	22	७	वृ. ३६/३५	सूर्य सायन मकर में ७/०८, **सायन उत्तरायण प्रा,**, शिशिर ऋतु प्रा., **B**	८	०५	४७	५९	7	27	17	25
२४.५५	१३	बुध	३२	४३	कृति	१८	३०	साध्य	४२	५५	कौ	५	३६	२	११	23	८	वृष	प्रदोष व्रत, **मंगल तुला में ५६/१३, अनङ्ग त्रयोदशी, स. सि. योगः**	८	०६	४९	०५	7	28	17	26
२४.५६	१४	गुरु	२७	३०	रोहि	१४	५०	शुभ	३५	४०	गर	०	७	३	१२	24	९	मि. ४३/१५	भ. २७/३० से ५५/१७ तक, बुध उ.षा. में ३/५३, पिशाचमोचन श्राद्ध,**C**	८	०७	५०	१०	7	28	17	26
२४.५६	१५	शुक्र	२३	३	मृग	११	५३	शुक्ल	२९	८	बव	२३	३	४	१३	25	१०	मिथुन	मार्गशीर्ष पूर्णिमा, शुक्र वृश्चिक में १९/२३, त्रिपुरभैरव जयंती, **क्रिसमिस डे (क्रिश्चियन)**	८	०८	५१	१६	7	29	17	27

(A) **संक्रान्ति, मु. ३०,** पुण्यकाल सं. प्रातः 8/18 से, शनि पूर्व में उदय ४१/१३, श्रीराम-विवाहोत्सव, श्रीपञ्चमी, नाग-पंचमी **B** शक पौष प्रा., अखण्ड द्वादशी **C** श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (देखें पृ. 86), श्रीसत्यनारायण व्रत, शिवचतुर्दशी व्रत

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	५	८	४	६	७	५	११
०२	०७	२७	१९	२८	२२	१५	०२	०२
३९	२५	०८	२३	३०	१८	३६	१२	१२
४९	२१	४७	५३	५१	१५	१३	५९	५९
61 5	848 1	34 15	87 46	3 40	71 51	6 54	3 11	3 11
मूल १	उभा २	चित्रा २	पूषा २	उफा १	विशा १	अनु ४	उफा २	पूभा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१०, ८ श., ९ सू. बु., ७ शु., ११, १२ चं. के., ६ मं. रा., १, ३, ५ गु., २, ४

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	६	८	४	६	७	५	११
०८	०२	००	२७	२८	२९	१६	०१	०१
४६	४५	३३	४७	५०	३०	१७	५३	५३
१९	३५	१६	३५	११	४०	१४	५५	५५
61 6	830 10	33 51	77 23	2 36	72 22	6 45	3 11	3 11
मूल ३	मृग ३	चित्रा ३	उषा १	उफा १	विशा ३	अनु ४	उफा २	पूभा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१०, ८ श., ९ सू. बु., ७ मं. शु., ११, १२ के., ६ रा., १, ३ चं., ५ गु., २, ४

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम-विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन श्रीपंचमी को कमलासन पर विराजित एवं कमल पुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी मूर्ति (ताम्र/चांदी) (जिसको दो गजेन्द्र दोनों ओर से स्नानार्थ दूध या जल अर्पण करा रहे हों) को सुवर्णादि कलश पर स्थापित कर गणपति पूजन, मातृका पूजन एवं पंचादि उपचारों द्वारा लक्ष्मी का पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का पाठ करें, तदुपरान्त ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। मार्ग. शुक्ल षष्ठी को कार्तिकेय जी तारकासुर को मारकर अभिषिक्त हुए थे। इसमें स्नान, दान और व्रत करने से पुण्य होता है। ता. 21 को **मोक्षदा एकादशी** का विधिपूर्वक व्रत रखने तथा भगवान् विष्णु का पूजार्चन एवं यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसीदिन **श्रीगीता जयन्ती** के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके **श्रीमद्भगवद्गीता** का पाठ एवं उत्सव करना चाहिए। ता. 24 दिसं. को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। चन्द्रोदय व्यापिनी पूर्णिमा का व्रत भी इसी दिन रखना प्रशस्त होगा। ***लोक-भविष्य***—मार्गशीर्ष पक्ष में पौष संक्रान्ति का प्रवेश होने से राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के संकेत हैं। कहीं अनाज की कमी के कारण महँगाई एवं अराजकता व्याप्त हो। **मार्गशीर्ष धनुषि हि यदाऽयाति दिवाकरः। तदा दुर्भिक्षं ज्ञेयः विपरीत सुखं भवेत्।।** अत्यधिक महंगाई के कारण सामान्य लोगों में सुख की कमी रहेगी। पौष संक्रान्ति 16 दिसं., बुधवार को ३० मुहूर्त्ति, धनिष्ठा नक्षत्र कालीन दोपहर 2 बजकर 42 मिनट से मीन लग्न में प्रारम्भ होगी। स्नानदान, जपादि का पुण्यकाल प्रातः 8/18 से शुरू होगा।

संक्रान्ति राशिफल—मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर राशि वालों के लिए लाभदायक व शुभ रहेगी। अन्य राशि वालों को मध्यम फली होगी।

वि. संवत् २०७२, पौष कृष्ण पक्ष शाक : १९३७

सन् 2015-16 ई. (ता. 26 दिसं. (2015) से 9 जन., 2016 तक) हिजरी सन् 1437
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रातः शु.-श. पास-पास पूर्वक्षितिज, इनसे ऊपर मं. पूर्वकपाल में, गुरु याम्योत्तर वृत्त से पश्चिम में दिखेगा। सायं बु. पश्चिमक्षितिज में दिखाई देगा। ता. 8 से पश्चिम में ही अस्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें पौष शक	रवि मं.	दिसम्बर	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२४.५७	१	शनि	१९	४८	आर्द्रा	१०	३	ब्रह्म	२३	३३	कौ	१९	४८	५	१४	26	११	क. ५४/३३	पौष कृष्णप्रतिपदा, बुध मकर में ४०/५० ($23^{घं.}$ $49^{मि.}$)	८	०९	५२	२४	7	29	17	27
२४.५८	२	रवि	१८	३	पुन.	९	३५	ऐन्द्र	१९	१३	गर	१८	३	६	१५	27	१२	कर्क	भ. ४८/०३ से, **रविपुष्य योग** एवं स. सि. यो. 11/19 से	८	१०	५३	३१	7	29	17	28
२४.५८	३	चंद्र	१८	३	पुष्य	१०	४८	वैधृ	१६	१०	वि	१८	३	७	१६	28	१३	कर्क	भ. १८/०३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, शुक्र अनु. में ४/५८, **(A)**	८	११	५४	४०	7	30	17	28
२४.५९	४	मंग	१९	५८	अश्ले	१३	५३	विष्क	१४	३५	बा	१९	५८	८	१७	29	१४	सिं. १३/५३	सूर्य पू.षा. में २३/४३, स. सि. योगः, गण्डमूल आदि	८	१२	५५	४८	7	30	17	29
२४.५९	५	बुध	२३	४३	मघा	१८	४०	प्रीति	१४	२८	तै	२३	४३	९	१८	30	१५	सिंह	गण्डमूल विचार 14/58 तक	८	१३	५६	५५	7	30	17	30
२५.००	६	गुरु	२८	५८	पूफा	२४	५८	आयु	१५	२८	व	२८	५८	१०	१९	31	१६	कं. ४१/४५	भ. २८/५८ से शुरू	८	१४	५८	०७	7	31	17	31
२५.०१	७	शुक्र	३५	२०	उफा	३२	२०	सौभा	१७	२३	वि	२	९	११	२०	जन	१७	कन्या	भ. २/०९ तक, **जनवरी, सन् 2016 ई. प्रारम्भ**	८	१५	५९	१५	7	31	17	31
२५.०३	८	शनि	४२	८	हस्त	४०	१०	शोभ	१९	४५	बा	८	४४	१२	२१	2	१८	कन्या	**रुक्मिणी अष्टमी**, अष्टका श्राद्ध (राजस्थान)	८	१७	००	२७	7	31	17	32
२५.०५	९	रवि	४८	४०	चित्रा	४७	४३	अति	२२	८	तै	१५	२४	१३	२२	3	१९	तु. १४/००		८	१८	०१	३६	7	31	17	33
२५.०५	१०	चंद्र	५४	१५	स्वा	५४	२५	सुक	२३	५८	व	२१	२८	१४	२३	4	२०	तुला	भ. २१/२८ से ५४/१५ तक, मंगल स्वाती में ५२/३५	८	१९	०२	४६	7	31	17	33
२५.०५	११	मंग	५८	२५	विशा	५९	४५	धृति	२७	२३	बव	२६	२०	१५	२४	5	२१	वृ. ४३/३३	**सफला एकादशी व्रत** (स्मार्त), **बुध वक्री २७/३५**	८	२०	०३	५६	7	32	17	34
२५.०८	१२	बुध	६०	००	अनु	६०	००	शूल	२४	३८	कौ	२९	४२	१६	२५	6	२२	वृश्चिक	**सफला एकादशी व्रत** (वैष्णव), स. सि. योगः सू.उ. से,	८	२१	०५	०६	7	32	17	35
२५.१०	१२	गुरु	०	५८	अनु	३	३३	गंड	२३	८	तै	०	५८	१७	२६	7	२३	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल वि. प्रातः 8/57 से	८	२२	०६	१६	7	32	17	36
२५.१३	१३	शुक्र	१	४५	ज्ये.	५	३८	वृद्धि	२०	१८	व	१	४५	१८	२७	8	२४	धनु ५/३८	भ. १/४५ से ३१/२० तक, **गुरु वक्री** ६/२३, शुक्र ज्ये. में ३/१५ **(B)**	८	२३	०७	२६	7	32	17	37
२५.१३	१४	शनि	०	५५	मूल	६	१३	ध्रुव	१६	१५	शकु	०	५५	१९	२८	9	२५	धनु	**पौष शनिवारी अमावस** (प्रातः 7/54 बाद), स्नान दान, गण्डमूल 10/01 तक	८	२४	०८	३६	7	32	17	37
अवम	३०	शनि	५८	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	अमावस्या तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

(A) शनि ज्ये. (१) में १८/४०, **(B)** वक्री बुध पश्चिम में अस्त ५०/२३, मासशिवरात्रि व्रत, **गण्डमूलादि विचार**

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	६	९	४	७	७	५	११
१६	१४	०५	०५	२९	०९	१७	०१	०१
५५	२७	०१	५१	०५	११	१०	२८	२८
१९	०४	५४	५०	४५	३३	१६	२९	२९
61	707	33	31	1	72	6	3	3
9	47	13	7	6	54	29	11	11
पूषा २	हस्त २	चित्रा ४	उषा ३	उफा १	अनु २	ज्ये. १	उफा २	पूभा ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१० बु., ८ श. शु., ९ सू., ७ मं., ११, १२ के., ६ चं. रा., १, ३, ५ गु., २, ४

शनौ चतुर्दश्याम् ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	६	९	४	७	७	५	११
२४	१०	०८	०५	२९	१७	१७	०१	१
०३	४९	५२	४७	०९	४३	५४	०६	६
२८	४०	३४	५५	२२	०३	४२	१३	१३
61	807	32	45	0	73	6	3	3
11	31	35	59	15	17	11	10	10
पूषा ४	मूल ४	स्वा. १	उषा ३	उफा १	ज्ये. १	ज्ये. १	उफा २	पूभा ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30

१० बु., ८ श. शु., ९ सू. चं., ७ मं., ११, १२ के., ६ रा., १, ३, ५ गु., २, ४

पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में धान्य, गेहूँ, चावल, चने आदि अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 28 दिसं. को **श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत रखने से मनोवांछित कामना पूर्ण होती है। ता. 2 जन. **रूक्मिणी अष्टमी** को कृष्ण, रूक्मिणी और प्रद्युम्न की मूर्त्तियों का गन्धयुक्त पूजनकर उत्तम पदार्थ अर्पण करें और सामर्थ्यानुसार सौभाग्यवती आठ स्त्रियों को भोजन करवाकर दक्षिणा दे तो रूक्मिणी जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। ता. 5 जन. को स्मार्तों की तथा 6 जन. को वैष्णव सम्प्रदाय का सफला एकादशी का व्रत, एकादशी माहात्म्य का पाठ, जप, श्रीविष्णु स्तोत्र पाठ एवं यथाशक्ति अन्न, गुड़, गर्मवस्त्र का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

लोक-भविष्य–पौष मास में **पाँच शनिवार** होने से सर्वप्रकार के अनाज, दालें एवं खाद्य तैलों में तेजी होगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध व टकराव हो। कहीं उपद्रव, झगड़े, फिसाद एवं जनांदोलन के संकेत हैं। जातीय उत्पात और साम्प्रदायिक दंगे फसाद बढ़ेंगे। कहीं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी का रूझान होगा। **शनिवाराः यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्।** महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी। 8 जन. को **गुरु सिंह राशि में वक्री** होने से अनाज आदि की पैदावार अच्छी होगी। दूध, घी आदि तथा सुख के साधन बढ़ेंगे। **वक्रभूतो यदा जीवः सुभिक्षं भूतले भवेत्। जनभूपाल सौख्यं स्यान् समर्घं गोरसं घृतम्।।** ***आकाश लक्षण***–पक्ष में शीत लहर का प्रकोप बढ़ेगा। ता. 27 से कहीं-कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, पौष शुक्ल पक्ष शाक: १९३७ तारीखें

सन् 2016 ई. (ता. 10 जन. से 23 जनवरी तक) हिजरी सन् 1437 — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	पौष शुक्ल	रवि मु.	जनवरी	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
२५.१५	१	रवि	५५	२०	पू.षा.	५	२५	व्या.	११	१०	किं	२७	२	२०	२९	10	२६	म. २०/०३
२५.१८	२	चंद्र	५१	१०	उषा	३	३३	हर्ष वज्र	५ ५८	१५ ४५	बा	२३	१५	२१	३०	11	२७	मकर
२५.२०	३	मंग	४६	२५	श्रव. धनि	० ५७	५८ ५०	सिद्धि	५१	४८	तै	१८	४८	२२	रवि	12	२८	कुं. २९/२५
२५.२३	४	बुध	४१	२३	शत	५४	२८	व्य.	४४	३८	व	१३	५४	२३	२	13	२९	कुम्भ
२५.२५	५	गुरु	३६	१३	पू.भा.	५०	५८	वरी	३७	२३	बव	८	४८	२४	३	14	मा	मी. ३६/५०
२५.२५	६	शुक्र	३१	३	उभा	४७	३३	परि	३०	८	कौ	३	३८	२५	४	15	२	मीन
२५.३०	७	शनि	२६	३	रेव	४४	१५	शिव	२३	००	व	२६	३	२६	५	16	३	मे. ४४/१५
२५.३३	८	रवि	२१	८	अश्वि	४१	८	सिद्ध	१५	५५	बव	२१	८	२७	६	17	४	मेष
२५.३५	९	चंद्र	१६	२५	भर	३८	१३	साध्य	९	३	कौ	१८	५५	२८	७	18	५	वृ. ५२/३०
२५.३८	१०	मंग	१२	३	कृति	३५	३८	शुभ शुक्ल	२ ५६	२३ ३	गर	१२	३	२९	८	19	६	वृष
२५.४३	११	बुध	८	३	रोहि	३३	३०	ब्रह्म	५०	५	वि	८	३	३०	९	20	७	वृष
२५.४५	१२	गुरु	४	३५	मृग	३१	५८	ऐन्द्र	४४	४०	बा	४	३५	मा	१०	21	८	मि. २/३८
२५.४८	१३	शुक्र	१	५०	आर्द्रा	३१	१५	वैधृ	३९	५८	तै	१	५०	२	११	22	९	मिथुन
२५.५३	१४	शनि	०	५	पुन	३१	३५	विष्क	३६	५	व	०	५	३	१२	23	१०	क. १६/२५
अवम	१५	शनि	५९	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००

प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में, ता. 20 से बु. भी पूर्वक्षितिज में, श. पूर्वकपाल में, मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा।

तिथि	व्रत, पर्व, विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
१	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, स. सि. यो. 9/42 से प्रारम्भ	८	२५	०९	४७	7	32	17	38
२	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, सूर्य उ.षा. में २८/२८, आरोग्य व्रत, स. सि. योग:	८	२६	१०	५६	7	32	17	39
३	पंचक प्रा. २९/२५, रबि-उल्सानी (मुस्लि.), **स्वा. विवेकानन्द जयं.**+	८	२७	१२	०६	7	32	17	40
४	भ. १३/५४ से ४१/२३ तक, **लोहड़ी पर्व** (पंजाब, हरि., दिल्ली आदि)	८	२८	१३	१५	7	32	17	41
५	**सूर्य मकर में ४४/४३, मकर (माघ) संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **A**	८	२९	१४	२१	7	32	17	42
६	+ गौरी पूजन	९	००	१५	२९	7	32	17	42
७	भ. २६/०३ से ५३/३६ तक, **पंचक समाप्त** ४४/१५, वक्री बुध **(B)**	९	०१	१६	३६	7	31	17	43
८	**श्रीदुर्गाष्टमी**, स. सि. योग:	९	०२	१७	४३	7	31	17	44
९	**शुक्र मूल (१) धनु में ५७/०३** (30/20 घं. मिं.)	९	०३	१८	४५	7	31	17	45
१०	भ. ४०/०३ से, स. सि. योग:	९	०४	१९	५०	7	31	17	46
११	भ. ८/०३ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत, वक्री बुध पूर्व** में उदय १०/३५**C**	९	०५	२०	५४	7	30	17	47
१२	सुजन्म द्वादशी, **प्रदोष व्रत**, शक माघ प्रारम्भ	९	०६	२१	५८	7	30	17	48
१३	ईशान व्रत **D** प्रा., शाकंभरी जयन्ती, नेताजी सुभाषचन्द्र जयं., श्रीसत्यनारायण व्रत	९	०७	२२	५७	7	30	17	49
१४	भ. ०/०५ से २९/४७ तक, **पौष पूर्णिमा** (प्रातः 7/31 बाद), माघस्नान**D**	९	०८	२३	५९	7	29	17	50
१५	पूर्णिमा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

(A) सं. अगले दिन मध्याह्न तक, **वक्री बुध धनु में** १८/४३, निरयण उत्तरायण प्रा. **(B)** पू.षा. (४) में ५२/४०, मार्तण्ड, सप्तमी, **श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती (C)** सूर्य सायन कुम्भ में ३३/३८, स.सि.यो.

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	६	८	४	७	७	५	११
०२	०२	१३	२६	२९	२७	१८	००	००
१२	३०	१०	३७	०१	३०	४२	४०	४०
३८	५९	१४	०६	५३	१७	४२	४७	४७
61 5	843 36	31 40	71 27	1 48	73 34	5 46	3 11	3 11
उषा २	अश्वि १	स्वा. २	पूषा ४	उफा १	ज्ये. ४	ज्ये. १	उफा २	पूभा ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

शनौ चतुर्दश्याम् ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	६	८	४	८	७	५	११
०८	२५	१६	२१	२८	०४	१९	००	००
१९	१७	१८	२५	४८	५२	१६	२१	२१
००	१२	४५	४६	१५	०६	२४	४२	४२
61 00	789 58	31 00	20 45	2 55	73 44	5 25	3 10	3 10
उषा ४	मृग २	स्वा. ३	पूषा ३	उफा १	मूल २	ज्ये. १	उफा २	पूभा ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30

पौष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके बालेन्दु (द्वितीया) के चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करना चाहिए। स्वयं भूमि पर शयन करने से रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। ता. 13 जन. को **लोहड़ी पर्व** समस्त पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू आदि प्रदेशों में गृहों में अग्नि प्रज्जवलित करके तिल-समिधा, रेवड़ियां आदि सहित अग्नि पूजनोपरान्त उत्सव मनाया जाता है। ता. 14 जन., गुरुवार को मकर संक्रान्ति, अर्द्धरात्रि कालीन 1 बजकर 25 मिनट पर पू.भा. नक्षत्रकालीन तुला लग्न में प्रविष्ट होगी। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार घोरा नाम की यह संक्रान्ति ब्राह्मणों तथा दुष्टजनों-दोनों के लिए लाभप्रद रहेगी। इस संक्रान्ति के स्नान, जप-पाठ, दानादि का **पुण्यकाल अगले दिन ता. 15 जन. के मध्याह्न तक रहेगा।** प्रातः स्नानादि के पश्चात् भगवान् विष्णु पूजन, सूर्यजप, पुरुषसूक्त, स्तोत्र-पाठ, तिल-घृतादि सहित होम, तिल सहित तर्पण, ब्राह्मण भोजन एवं अनाज, वस्त्र, फल, गुड़, तिलादि के दान का विशेष महत्त्व होता है। इस दिन हरिद्वार, प्रयागराज, काशी, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर स्नान-दान, जपादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन से माघ माहात्म्य का पाठ आरम्भ करके माघ-मासान्त तक नित्यप्रति पाठ करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 23 जन., पौष पूर्णिमा के दिन से माघ स्नान का प्रारम्भ होगा। ता. 20 जन. को **पुत्रदा एकादशी** का विधिपूर्वक एवं संकल्पपूर्वक व्रत रखकर भगवान् कृष्ण-राधा तथा भगवान् शिव-पार्वती की उपासना करने से मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। **संक्रान्ति राशिफल**–माघ संक्रान्ति मकर, कुम्भ, वृष, कर्क, तुला राशि वालों के लिए शुभ एवं कल्याणकारक रहेगी। **शकुन**–पौष शु. ९ या ११ को बादल चाल हो, तो सब धान्य महंगे होंगे।

वि. संवत् २०७२, माघ कृष्ण पक्ष शाक: १९३७

सन् 2016 ई. (ता. 24 जन. से 8 फरवरी तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः बु.-शु. पास-पास पूर्वक्षितिज में, श. पूर्वकपाल में तथा मं. याम्योत्तरवृत्त में तथा गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ रा.	रबि उ.	जनवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.५५	१	रवि	६०	००	पुष्य	३३	८	प्रीति	३३	१३	बा	२९	५१	४	१३	24	११	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य श्रवण में ३४/२३, स. सि. यो.	९	०९	२४	५९	7	29	17	51
२६.००	१	चंद्र	०	१३	अश्ले	३६	५	आयु	३१	३०	कौ	०	१३	५	१४	25	१२	सिं. ३६/०५	**बुध मार्गी** ४९/४० (27$^{घं.}$-20$^{मिं.}$)	९	१०	२५	५७	7	28	17	52
२६.०३	२	मंग	२	२५	मघा	४०	२८	सौभा	३०	५३	गर	२	२५	६	१५	26	१३	सिंह	भ. ३४/५७ से, **भारत गणतन्त्र दिवस (67 वाँ)**	९	११	२६	५७	7	28	17	53
२६.०७	३	बुध	६	१३	पू.फा.	४६	१८	शोभ	३१	२३	वि	७	२८	७	१६	27	१४	सिंह	भ. ७/२८ तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11) **(A)**	९	१२	२७	५६	7	27	17	54
२६.०८	४	गुरु	११	१८	उ.फा.	५३	१०	अति	३०	२०	बा	११	१८	८	१७	28	१५	कं. २/५५	शनि ज्येष्ठा (१) में १८/४८, जन्म दि. लाला लाजपतराय	९	१३	२८	५१	7	27	17	54
२६.१३	५	शुक्र	१७	२८	हस्त	६०	००	सुक	३४	५८	तै	१७	२८	९	१८	29	१६	कन्या	शुक्र पू.षा. में ४८/००, राहु उ.फा. १ **सिंह, केतु** पू.भा. ३ **कुम्भ में ४४/५८**	९	१४	२९	४८	7	26	17	55
२६.१५	६	शनि	२४	८	हस्त	०	४८	धृति	३७	२३	व	२४	८	१०	१९	30	१७	तु. ३४/४३	भ. २४/०८ से ५७/२८ तक, मंगल विशाखा में ९/१०	९	१५	३०	४२	7	26	17	56
२६.२०	७	रवि	३०	४८	चित्रा	८	३५	शूल	३९	४०	बव	३०	४८	११	२०	31	१८	तुला	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (मतान्तरे), **त्रिपुष्कर योग**	९	१६	३१	३८	7	25	17	57
२६.२३	८	चंद्र	३६	४३	स्वा.	१५	५३	गंड	४१	२०	बा	३	४६	१२	२१	फर	१९	तुला	**फरवरी**, सं. 2016 ई. प्रारम्भ	९	१७	३२	३१	7	25	17	58
२६.२८	९	मंग	४१	२३	विशा	२२	१०	वृद्धि	४२	३	तै	९	३	१३	२२	2	२०	वृ. ५/४३		९	१८	३३	२५	7	24	17	59
२६.३३	१०	बुध	४४	२०	अनु	२६	५३	ध्रुव	४१	३०	व	१२	५२	१४	२३	3	२१	वृश्चिक	भ. १२/५२ से ४४/२० तक, स. सि. यो.	९	१९	३४	१७	7	23	18	00
२६.३५	११	गुरु	४५	२०	ज्ये.	२९	४८	व्या.	३९	२८	बव	१४	५०	१५	२४	4	२२	ध. २९/४८	**षट्तिला एकादशी व्रत सर्वेषाम्**	९	२०	३५	१०	7	23	18	01
२६.४०	१२	शुक्र	४४	२५	मूल	३०	५३	हर्ष	३५	५८	कौ	१४	५३	१६	२५	5	२३	धनु	तिल द्वादशी, बुध उ.षा. में ३२/२३,	९	२१	३५	५९	7	22	18	02
२६.४५	१३	शनि	४१	४५	पू.षा.	३०	१०	वज्र	३१	००	गर	१३	५	१७	२६	6	२४	म. ४४/४३	भ. ४१/४५ से, शनि प्रदोष व्रत, सूर्य धनि. में ४२/३८, मासशिवरात्रि व्रत	९	२२	३६	४८	7	21	18	03
२६.४८	१४	रवि	३७	३०	उषा	२७	५३	सिद्धि	२४	५०	वि	९	३८	१८	२७	7	२५	मकर	भ. ९/३८ तक, **महोदय योग 22/20 से प्रारम्भ**, स. सि. यो.	९	२३	३७	३५	7	20	18	03
२६.५०	३०	चंद्र	३२	३	श्रव.	२४	१८	व्य.	१७	३५	चतु	४	४७	१९	२८	8	२६	कुं. ५२/१०	**पंचक प्रा. ५२/१०, माघ (मौनी) अमावस, सोमवती अमावस B**	९	२४	३८	२१	7	20	18	04

(A) सौभाग्य सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी, वक्रतुण्डचतुर्थी **(B) बुध मकर में** ४९/२५, **महोदय योग** 14/22 तक, मेला हरिद्वार, प्रयागराज, स. सि. यो.

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 1 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	६	८	४	८	७	४	१०
१७	१५	२०	२२	२८	१५	२०	२९	२९
२७	५३	५२	५७	१५	५६	०२	५३	५३
४२	१९	५८	२९	३१	४२	४५	०६	०६
60 54	719 58	29 45	40 52	4 30	73 58	41 49	3 11	3 11
श्रव. ३	स्वा. ३	विशा १	पूषा ३	उफा १	पूषा १	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

११ के.
९ बु. शु.
१२
१० सू.
८ श.
१
७ चं. मं.
२
४
६
३
५ गु. रा.

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	६	८	४	८	७	४	१०
२४	१६	२४	२९	२७	२४	२०	२९	२९
३३	२८	१७	०२	४०	३४	३४	३०	३०
४५	३५	५१	१०	३८	५२	५३	५०	५०
60 47	858 32	28 34	64 15	5 36	74 5	4 17	3 10	3 10
धनि १	श्रव. २	विशा २	उषा १	उफा १	पूषा ४	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

११ के.
९ बु. शु.
१२
१० सू. चं.
८ श.
१
७ मं.
२
४
६
३
५ गु. रा.

माघ कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की चतुर्थी (27 जन.) को श्रीगणेश संकट चौथ के व्रत का संकल्प **''गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये''** पढ़कर व्रत करके '**ॐ गं गणपतये नमः**' मन्त्र जप व स्तोत्र का पाठ करें। रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर '**ॐ सोम् सोमाय नमः**' द्वारा अर्घ्य देने से भगवान् गणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। षट्तिला एकादशी (4 फर.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। श्रीकृष्ण के '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः**' का 108 बार या यथाशक्ति पाठ करें। फिर तिल युक्त सामग्री द्वारा हवन करें एवं बर्फी, लड्डुओं आदि का भोग लगाकर स्वयं ग्रहण करने से पापों का नाश होता है। ता. 8 फर. को मौनी अमावस को स्नान, दान, जप एवं ध्यान आदि मौन होकर करने चाहिए। इस दिन सोमवती अमावस्या होने से तीर्थों पर स्नान, जप, दान आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा। **लोक भविष्य**—माघ मास में पाँच रविवार एवं पाँच सोमवार आ रहे हैं। जिससे राजनीतिक एवं सामाजिक माहौल विक्षुब्ध एवं अशान्त रहेगा। कहीं शासन-परिवर्तन (छत्रभंग), दुर्भिक्ष, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि एवं कहीं युद्ध का भय होगा। '**माघ मासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंग स्यात् दास्ते च महद्भयं।।**' अत्यधिक महँगाई के कारण लोगों का जीना दूभर हो जाएगा। परन्तु पाँच सोमवार होना समर्घता कारक एवं प्रशासन की ओर से लोक भलाई के लिए नई नीतियों की घोषणा होगी। **आकाश लक्षण**—शीत लहर में कुछ ठहराव आएगा तथा जलवायु अनुकूल रहेगी। **शकुन**—माघ कृ. ५ को यदि वर्षा हो तो, भाद्रपद मास में अनाज आदि सस्ते होंगे।

वि. संवत् २०७२,	माघ शुक्ल पक्ष				शाक: १९३७									तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	सन् 2016 ई. (ता. 9 से 22 फरवरी तक) हिजरी सन् 1437 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर-वसन्त ऋतु:					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ शक	हिजरी जमा.	फरवरी	फाल्गुन प्रवि.		ग्रह दर्शन—प्रातः बु.-शु. पूर्वक्षितिज में पास-पास, श. याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा मंग. याम्योत्तरवृत्त में तथा गुरु पश्चिम में दिखाई देगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.५५	१	मंग.	२५	४५	धनि	१९	५३	वरी	९	३५	बव	२५	४५	२०	२९	9	२७	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, मु. १५, शुक्र उ.षा. में ३६/४८	९	२५	३९	०४	7	19	18	05
२७.००	२	बुध	१८	५५	शत	१४	५३	परि शिव	९ ५२	८ २०	कौ	१८	५५	२१	जमा	10	२८	मी. ५५/५८	जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	९	२६	३९	५१	7	18	18	06
२७.०५	३	गुरु	११	५५	पू.भा.	९	४३	सिद्ध	४३	३८	गर	११	५५	२२	२	11	२९	मीन	भ. ३८/२८ से, **गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत, श्रीगणेश तिल चतुर्थी A**	९	२७	४०	३३	7	17	18	07
२७.०८	४	शुक्र	५	००	उ.भा. रेव	६ ५९	३५ ५०	साध्य	३५	८	वि	५	००	२३	३	12	३०	मे. ५९/५०	भ. ५/०० तक, **पंचक समाप्त** ५९/५०, **वसन्त (श्री) पंचमी, शुक्र B**	९	२८	४१	१४	7	17	18	08
००.००	५	शुक्र	५८	२८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	पंचमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.१३	६	शनि	५२	३३	अश्वि	५५	४३	शुभ	२७	३	कौ	२५	३१	२४	४	13	फा	मेष	**सूर्य कुम्भ में १७/५०, फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल (C)	९	२९	४१	५४	7	16	18	09
२७.१८	७	रवि	४७	२३	भर	५२	२०	शुक्ल	१९	३३	गर	१९	५८	२५	५	14	२	मेष	भ. ४७/२३ से, रथ-आरोग्य सप्तमी, पुत्र सप्तमी, अचला-भानु (D)	१०	००	४२	३२	7	15	18	10
२७.२०	८	चंद्र	४३	३	कृति	४९	४८	ब्रह्म	१२	४०	वि	१५	१३	२६	६	15	३	वृ. ६/३८	भ. १५/१३ तक, भीष्माष्टमी	१०	०१	४३	०८	7	14	18	10
२७.२५	९	मंग	३९	४०	रोहि	४८	१३	ऐन्द्र	६	३०	बा	११	२२	२७	७	16	४	वृष		१०	०२	४३	४२	7	13	18	11
२७.३०	१०	बुध	३७	१८	मृग	४७	३५	वैधृ विष्क	१ ५६	८ ३०	तै	८	२९	२८	८	17	५	मि. १७/४८	बुध श्रव. में २/२०, वक्री गुरु पू.फा. (४) में ४४/४०, स. सि. यो.	१०	०३	४४	१५	7	12	18	12
२७.३५	११	गुरु	३५	५८	आर्द्रा	४८	३	प्रीति	५२	४५	व	६	३८	२९	९	18	६	मिथुन	भ. ६/३८ से ३५/५८ तक, **जया एकादशी व्रत**	१०	०४	४४	४६	7	11	18	13
२७.४०	१२	शुक्र	३५	४३	पुन	४९	३३	आयु	४९	५३	बव	५	५१	३०	१०	19	७	क. ३४/०३	सूर्य शत. में ५४/१५, भीष्म-द्वादशी, सूर्य सायन मीन में ९/४५ (E)	१०	०५	४५	१५	7	10	18	14
२७.४३	१३	शनि	३६	३५	पुष्य	५२	८	सौभा	४७	५३	कौ	६	९	फा	११	20	८	कर्क	शनि प्रदोष व्रत, **मंगल वृश्चिक में** २३/५३, शुक्र श्रवण में २४/४३,(F)	१०	०६	४५	४२	7	09	18	14
२७.४८	१४	रवि	३८	३५	अश्ले	५५	५०	शोभ	४६	४५	गर	७	३५	२	१२	21	९	सिं. ५५/५०	भ. ३५/३५ से, गण्डमूल विचार	१०	०७	४६	०८	7	08	18	15
२७.५३	१५	चंद्र	४१	४८	मघा	६०	००	अति	४६	३०	वि	१०	१२	३	१३	22	१०	सिंह	भ. १०/१२ तक, **माघ पूर्णिमा**, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास (G)	१०	०८	४६	३१	7	07	18	16

(A) वरद् (कुन्द) चतुर्थी **(B) मकर में १८/५०**, सरस्वती पूजन, वागेश्वरी जयन्ती, स. सि. यो. **(C)** सं. प्रात: 8/00 से **(D)** सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती **(E)** वसन्त ऋतु प्रारम्भ, स. सि. यो., तिल द्वादशी **(F)** शक फाल्गुन प्रारम्भ, मेला जैसलमेर (राज.) प्रारम्भ-3 दिन **(G)** जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीललिता जयन्ती

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 15 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	६	९	४	९	७	४	१०
०१	२७	२७	०७	२६	०३	२१	२९	२९
३८	२६	३३	१५	५८	१३	०३	०८	०८
४९	३६	५३	०१	३७	३८	११	३५	३५
60 36	834 42	27 12	77 23	6 32	74 7	3 42	3 11	3 11
धनि ३	कृति १	चित्रा ३	उषा ४	उफा १	उषा २	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

भाव	ग्रह
११	सू. के.
१२	
१	चं.
२	
३	
४	
५	गु. रा.
६	
७	मं.
८	श.
९	
१०	बु. शु.

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 22 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	७	९	४	९	७	४	१०
०८	००	००	१६	२६	११	२१	२८	२८
४२	०१	३९	४४	१०	५२	२७	४६	४६
३०	२२	४९	५६	५१	४२	२०	२०	२०
60 25	741 27	25 39	86 20	7 12	74 11	3 6	3 11	3 11
शत १	मघा १	चित्रा ४	श्रव ३	पूफा ४	श्रव १	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30

भाव	ग्रह
११	सू. के.
१२	
१	
२	
३	
४	
५	चं. गु. रा.
६	
७	
८	मं. श.
९	
१०	बु. शु.

माघ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में गौरी तृतीया (11 फर.) को उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर–इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन कराएं। श्रीगणेश तिल चतुर्थी (11 फर.) को श्रीगणेश जी का व्रत एवं पूजन तिल, फल व गुड़, लड्डुओं सहित करने का विधान है। वसन्त पंचमी (12 फर.) को भगवान् श्रीविष्णु, सरस्वती व श्रीकृष्ण-राधा की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नेवैद्य आदि द्वारा करके फिर पीले एवं मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** (14 फर.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। अत: यह सूर्य जयन्ती भी है। विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र-सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **जया-एकादशी** (18 फर.) का विधिवत् व्रत, पाठादि करने से पिशाचादि योनियों से छुटकारा मिलता है। **माघ पूर्णिमा** (22 फर.) को तीर्थजल से स्नान करके देवताओं, पितरों आदि का तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य व फल होता है। **फाल्गुन संक्रान्ति**–ता. 13 फर., शनिवार को फा. संक्रां., दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार ध्वांक्षी नामक यह संक्रां. व्यापारियों तथा दुष्टों के लिए लाभप्रद रहेगी। सं. शनिवार के दिन होने से सभी प्रकार के अनाज, धान्यादि महँगे होंगे। लोगों में शोक, असन्तोष एवं विचित्र प्रकार के रोगों की बहुलता होगी। लोगों में तनाव एवं विग्रह की प्रवृत्ति अधिक बढ़े। राजनीतिक पार्टियों में भी परस्पर विरोध एवं टकराव अधिक बढ़े–**सौरेश्च वारे रविसंक्रमश्चेद् दुर्भिक्षमायातिच सर्वधान्यम्। पृथ्वी सरोगनृपतेः प्रजासु भवेन्महायुद्धभयं तदानीम्।।**

संक्रांति फल–वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु व मीन राशि वालों को शुभ फलदायक रहेगी। **शकुन**–वसन्त पंचमी (मा. शु. ५) को बादल चाल हो, तो सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७२, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाक : १९३७

सन् 2016 ई. (ता. 23 फर. से 9 मार्च तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतुः

प्रातः बु.-शु. पूर्वक्षितिज में होंगे। ता. 8 मार्च से बु. पूर्व में ही अस्त हो जाएगा। श. याम्योत्तरवृत्त में तथा मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा। गु. पश्चिम में दिखेगा।

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें फाल्गु.	जमा.	फरवरी	फाल्गु. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२७.५८	१	मंग	४६	५	मघा	०	४०	सुक	४७	८	बा	१३	५७	४	१४	23	११	सिंह	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 7 घं.-22 मिं. तक	१०	०९	४६	५३	7	06	18	17
२८.०३	२	बुध	५१	२५	पू.फा.	६	३३	धृति	४८	३०	तै	१८	४५	५	१५	24	१२	कं. २३/१०		१०	१०	४७	१४	7	05	18	18
२८.०५	३	गुरु	५७	३३	उ.फा.	१३	२०	शूल	५०	३०	व	२४	२९	६	१६	25	१३	कन्या	भ. २४/२९ से ५७/३३ तक	१०	११	४७	३३	7	04	18	18
२८.१०	४	शुक्र	६०	००	हस्त	२०	४८	गंड	५२	५३	बव	३०	५३	७	१७	26	१४	तु. ५४/३८	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), बुध धनि. में २४/३८	१०	१२	४७	५१	7	03	18	19
२८.१५	४	शनि	४	१३	चित्रा	२८	३५	वृद्धि	५५	२०	बा	४	१३	८	१८	27	१५	तुला		१०	१३	४८	०६	7	02	18	20
२८.२०	५	रवि	१०	५०	स्वा.	३६	१३	ध्रुव	५७	३३	तै	१०	५०	९	१९	28	१६	तुला	मंगल अनु. में २०/५८	१०	१४	४८	२१	7	01	18	21
२८.२३	६	चंद्र	१७	००	विशा	४३	१३	व्या.	५९	१०	व	१७	००	१०	२०	29	१७	वृ. २६/३५	भ. १७/०० से ४९/३८ तक,	१०	१५	४७	३४	7	00	18	21
२८.३०	७	मंग	२२	१५	अनु	४९	८	हर्ष	५९	४८	बव	२२	१५	११	२१	मार्च	१८	वृश्चिक	मार्च, सन् 2016 ई. प्रारम्भ, **बुध कुम्भ में ४३/०३ (24 घं.-11 मिं.)**	१०	१६	४८	४५	6	58	18	22
२८.३५	८	बुध	२५	५८	ज्ये.	५३	२८	वज्र	५९	१०	कौ	२५	५८	१२	२२	2	१९	ध. ५३/२८	शुक्र धनि. में १२/०५, गण्डमूल विचार	१०	१७	४८	५४	6	57	18	23
२८.४०	९	गुरु	२७	५३	मूल	५६	००	सिद्धि	५७	३	गर	२७	५३	१३	२३	3	२०	धनु	भ. ५७/५१ से, रामदास नवमी, गण्डमूल 29 घं.-20 मिं. तक	१०	१८	४९	०२	6	56	18	24
२८.४३	१०	शुक्र	२७	४८	पूषा	५६	३३	व्य.	५३	२३	वि	२७	४८	१४	२४	4	२१	धनु	भ. २७/४८ तक, सूर्य पू.भा. में १०/४८,	१०	१९	४९	०९	6	55	18	24
२८.४८	११	शनि	२५	४५	उषा	५५	१०	वरी	४८	८	बा	२५	४५	१५	२५	5	२२	म. ११/२३	**विजया एकादशी व्रत**, बुध शत. में ४९/३३	१०	२०	४९	१५	6	54	18	25
२८.५३	१२	रवि	२१	४८	श्रव	५२	५	परि	४१	२८	तै	२१	४८	१६	२६	6	२३	मकर	प्रदोष व्रत	१०	२१	४९	१६	6	53	18	26
२८.५८	१३	चंद्र	१६	१५	धनि	४७	३३	शिव	३३	३८	व	१६	१५	१७	२७	7	२४	कुं. २०/००	भ. १६/१५ से ४२/४८ तक, **पंचक प्रारम्भ २०/००, श्रीमहाशिवरात्रि A**	१०	२२	४९	१८	6	51	18	26
२९.०३	१४	मंग	९	२०	शत	४१	५५	सिद्ध	२४	४५	शकु	९	२०	१८	२८	8	२५	कुम्भ	**भौमवती अमावस** (पितृकार्येषु) (प्रातः 10/34 बाद), बुध पूर्व में अस्त ४५/४३	१०	२३	४९	१९	6	50	18	27
२९.०८	३०	बुध	१	३०	पूभा	३५	३३	साध्य	१५	१३	ना	१	३०	१९	२९	9	२६	मी. २२/१०	**फाल्गुन अमावस**, ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ.18)	१०	२४	४९	१७	6	49	18	28

(A) व्रत, शुक्र कुम्भ में ३५/३८, 'शिव' नाम योग होने से शिवरात्रि व्रत का विशेष माहात्म्य होगा

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	७	१०	४	९	७	४	१०
१७	१८	०४	००	२५	२३	२१	२८	२८
४५	०८	२१	२१	०३	००	५१	१७	१७
१७	३६	३४	०३	३९	३३	५९	४३	४३
60	748	23	96	7	74	2	3	3
10	7	16	00	44	14	17	11	11
शत ४	ज्ये. १	अनु १	धनि ३	पूफा ४	श्रव ४	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

११ — सू. बु. के.; १२; १० — शु.; १; ९; २; ८ — चं. मं. श.; ३; ७; ५ — गु. रा.; ४; ६

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	७	१०	४	१०	७	४	१०
२४	२३	०६	११	२४	०१	२२	२७	२७
४६	३८	५७	५५	०९	४०	०५	५५	५५
००	४१	४७	३९	०३	१४	५२	२७	२७
61	899	20	103	8	74	1	3	3
59	4	59	38	00	14	35	11	11
पूभा २	पूभा २	अनु २	शत २	पूफा ४	धनि ३	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

११ — सू. चं. बु. शु. के.; १२; १०; १; ९; २; ८ — मं. श.; ३; ७; ५ — गु. रा.; ४; ६

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की चतुर्थी को **श्रीगणेश चतुर्थी** (26 फर.) का व्रत रखकर सायंकाल पुनः स्नान करके लाल वस्त्र धारण कर गन्ध-पुष्पादि से गणेश जी का लड्डुओं सहित पूजन कर चन्द्रोदय होने पर मंत्रपूर्वक अर्ध्य देकर नमस्कार करें, फिर भोग लगाकर स्वयं परिवार सहित भोजन करने से सुख-सौभाग्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। **विजया एकादशी** (5 मार्च) को विधिवत् व्रत रखने से हर प्रकार के वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होती है। ता. 7 मार्च, सोमवार को (एवं 'शिव' योग कालीन) श्रीमहाशिवरात्रि का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेध यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों सहित स्नानकर व्रत पालन कर रात्रि में भगवान् शिव-शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिवकथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण को भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। ता. 8 मार्च को **भौमवती अमावस** होने से इस दिन रुद्र, अग्नि और ब्राह्मणों का पूजन करके उन्हें उड़द, दही और पूरी आदि का नैवेद्य अर्पण करें और स्वयं भी एक बार भोजन करें। भौमवती अमावस सूर्यग्रहण तुल्य फल देने वाली होती है। **अमा सोमे शनौ भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्।।** फाल्गुनी अमा. के दिन पित्रादिकों का अपिण्ड श्राद्ध करना चाहिए। **लोक-भविष्य**–फाल्गुन मास में पाँच मंगलवार होने से आवश्यक वस्तुओं में अत्यधिक तेजी होगी। प्रजा में असन्तोष एवं उपद्रव की घटनाएँ अधिक रहें। कहीं छत्रभंग एवं देश में शासन परिवर्तन होने के संकेत हैं। सीमाओं पर युद्ध के बादल मण्डराएँगे–'**यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।**' देश के किसी प्रमुख नेता का निधन होने के योग हैं।

आकाश लक्षण–फा. कृ. ८ तक कहीं-कहीं खण्ड वर्षा सम्भव है। [illegible] अन्न, सरसों का संग्रह करने से छठे मास लाभ प्राप्त होता है।

शकुन-विचार—यदि फाल्गुन अमावस को बादल चाल रहे तो चावल, अन्न, सरसों का संग्रह करने से छठे मास लाभ प्राप्त होता है।

वि. संवत् २०७२, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाक: १९३७–३८

सन् 2016 ई. (ता. 10 मार्च से 23 मार्च तक) हिजरी सन् 1437
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतु: — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—बुध अभी अस्त है। प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में, मं.–श. याम्योत्तर–वृत्त से पश्चिम की ओर दिखेंगे। सायं गु. पूर्वक्षितिज में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	फाल्गुन शक	जमा. मु.	मार्च	फाल्गुन प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
००.००	१	बुध	५३	००	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.१३	२	गुरु	४४	२५	उ.भा.	२८	५३	शुभ शुक्ल	५/५५	१५/१३	बा	१८	४३	२०	३०	10	२७	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती	१०	२५	४९	१४	6	48	18	29
२९.१५	३	शुक्र	३६	३	रेव	२२	१८	ब्रह्म	४५	२८	तै	१०	१४	२१	जमा	11	२८	मे. २२/१८	**पंचक समाप्त २२/१८,** जमादि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ	१०	२६	४९	०८	6	47	18	29
२९.२३	४	शनि	२८	१५	अश्वि	१६	१५	ऐन्द्र	३६	१८	व	२	९	२२	२	12	२९	मेष	भ. २/०९ से २८/१५ तक, अविघ्नकर व्रत	१०	२७	४८	५८	6	45	18	30
२९.२८	५	रवि	२१	२०	भर	१०	५८	वैधृ	२७	५०	बा	२१	२०	२३	३	13	३०	वृ. २४/५०	याज्ञवल्क्य जयंती, बुध पू.भा. में ३१/५०, शुक्र शत. में 06/25 (घं.मिं.)	१०	२८	४८	४९	6	44	18	31
२९.३०	६	चंद्र	१५	३८	कृति	६	५०	विष्क	२०	२३	तै	१५	३८	२४	४	14	चैत्र	वृष	**सूर्य मीन में ११/२५, चैत्र संक्रान्ति,** मु. ४५, पुण्यकाल सं. सारा दिन **A**	१०	२९	४८	३७	6	43	18	31
२९.३५	७	मंग	११	१५	रोहि	४	३	प्रीति	१४	३	व	११	१५	२५	५	15	२	मि. ३३/१०	भ. ११/१५ से ३९/५२ तक, वक्री गुरु पू.फा. (३) में १५/००, लक्ष्मी-सीताष्टमी	११	००	४८	२१	6	42	18	32
२९.४३	८	बुध	८	२८	मृग	२	४८	आयु	८	५८	बव	८	२८	२६	६	16	३	मिथुन	**होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा अष्टमी, बुधाष्टमी**	११	०१	४८	०५	6	40	18	33
२९.४५	९	गुरु	७	१३	आर्द्रा	३	३	सौभा	५	८	कौ	७	१३	२७	७	17	४	क. ४९/१३	सूर्य उ.भा. में ३२/२३, स. सि. योग: 7/52 से,	११	०२	४७	४६	6	39	18	33
२९.५०	१०	शुक्र	७	३३	पुन	४	४८	शोभ	२	२८	गर	७	३३	२८	८	18	५	कर्क	भ. ८/२६ से, **बुध मीन में ५४/०५**	११	०३	४७	२३	6	38	18	34
२९.५५	११	शनि	९	१८	पुष्य	८	०	अति	१	००	वि	९	१८	२९	९	19	६	कर्क	भ. ९/१८ तक, **आमलकी एकादशी व्रत,** गोविन्द द्वादशी	११	०४	४६	५९	6	37	18	35
३०.००	१२	रवि	१२	२३	अश्ले	१२	३०	सुक	०	३३	बा	१२	२३	३०	१०	20	७	सिं. १२/३०	प्रदोष व्रत, बुध उ.भा. में ३८/४५, सूर्य सायन मेष में ८/३३, **(B)**	११	०५	४६	३२	6	35	18	35
३०.०५	१३	चंद्र	१६	३५	मघा	१८	००	धृति	०	५८	तै	१६	३५	चैत्र	११	21	८	सिंह	शक चैत्र एवं सन् 1938 प्रारम्भ	११	०६	४६	०७	6	34	18	36
३०.१०	१४	मंग	२१	४०	पू.फा.	२४	२५	शूल	२	८	व	२१	४०	२	१२	22	९	कं. ४१/०८	भ. २१/४० से ५४/३४ तक, महेश्वर व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत **(C)**	११	०७	४५	३७	6	33	18	37
३०.१३	१५	बुध	२७	२८	उफा	३१	२८	गंड	३	५०	बव	२७	२८	३	१३	23	१०	कन्या	**फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन** (देखें पृ.86), **होलाष्टक समाप्त,D**	११	०८	४५	०२	6	32	18	37

(A) स. सि. योग: 9/27 से **(B)** सूर्य का उत्तर गोल में प्रवेश, महाविषुव दिन, अर्द्धकुम्भी स्नान प्रा. (हरिद्वार) **C** वृषदान व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत **D** होली पर्व (पं.), शुक्र पू.भा. में ४६/४०, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	७	१०	४	१०	७	४	१०
०१	०५	०९	२४	२३	१०	२२	२७	२७
४५	२३	१६	२५	१४	१९	१४	३३	३३
१०	२०	५६	१७	३६	४९	५५	१२	१२
59 44	799 13	18 20	111 48	7 39	74 13	0 53	3 11	3 11
पूभा ४	मृगा ४	अनु २	पूभा २	पूफा ३	शत २	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ | के. ११ शु. बु. | १२ सू. | २ | १० | ३ चं. | ९ | ४ | ६ | ८ मं. श. | ५ गु. रा. | ७

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	७	११	४	१०	७	४	१०
०८	०३	११	०७	२२	१८	२२	२७	२७
४२	१४	१६	५२	२२	५९	१९	१०	१०
३०	३१	२३	०३	१३	०८	०३	५६	५६
59 29	713 51	15 17	119 33	7 13	74 10	0 11	3 11	3 11
उभा २	उफा २	अनु ३	उभा २	पूफा ३	शत ४	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१ | ११ के. शु. | १२ सू. बु. | २ | १० | ३ | ९ | ४ | ६ चं. | ८ मं. श. | ५ गु. रा. | ७

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

फाल्गुन शुक्लाष्टमी (16 मार्च) से होलाष्टक प्रारम्भ होंगे। इन दिनों विशेषकर उत्तरी भारत में गृहप्रवेश, विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है। अन्य प्रदेशों में विशेष विचार नहीं किया जाता है। **आमलकी एकादशी** (19 मार्च) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। रात्रि जागरण कर दूसरे दिन पारण करें। इससे पापों का क्षय तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है। ता. 23 मार्च को पूर्णिमा के प्रदोषकाल होलिका दहन करने का विधान है। यद्यपि पूर्णिमा केवल 17/31 तक है अर्थात् प्रदोषव्यापिनी नहीं है। परन्तु फिर भी अगले दिन प्रतिपदा वृद्धिगामिनी होने से इसी दिन (23 मार्च) सायाह्न-काल में (सायं 16घं.-55मिं. से 17घं.-31मिं. तक) होलिका दहन करना चाहिए। (देखें पृ.–)। (धर्मसिन्धु)।। ता. 23 मार्च, **फाल्गुन पूर्णिमा** (उदय व्या.), बुधवार को होली का त्यौहार पंजाबादि में तथा कुछ प्रदेशों (विशेषकर मथुरा नगरी) में ता. 24 मार्च को बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाएगा। इसी दिन परमभक्त चैतन्य महाप्रभु की जयन्ती भी मनाई जाती है। **चैत्र संक्रान्ति**—ता. 14 मार्च, सोमवार को प्रातः 11 बजकर, 17 मिनट पर रोहिणी नक्षत्र कालीन वृष लग्न में प्रवेश करेगी। सं. का पुण्यकाल लगभग सारा दिन रहेगा। वारानुसार ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. व्यापारियों तथा ब्राह्मणों के लिए सुखकर रहेगी। ता. 7 मार्च से गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग होने से राजनैतिक वातावरण अशान्त तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। लोगों में रोग-शोक आदि दुःखों की बहुलता होगी। **सं. राशिफल**—यह सं. वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, मकर, मीन, राशि वालों के लिए शुभ एवं कल्याणकारी रहेगी। **आकाश लक्षण**—उत्तर-पश्चिम भारत में कहीं धूल भरी आँधी एवं कहीं खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७२, चैत्र कृष्ण पक्ष शाक: १९३८ — सन् 2016 ई. (ता. 24 मार्च से 7 अप्रैल तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में, मं.–श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर दिखेंगे। सायं गु. पश्चिम में तथा 5 अप्रै. से बु. पूर्व में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें भा. शक	हिज. मु.	मार्च	पंजाब प्रविष्टे	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३०.२०	१	गुरु	३३	४५	हस्त	३९	००	वृद्धि	६	३	बा	०	३७	४	१४	24	११	कन्या	वसन्तोत्सव,, होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब) (A)	११	०९	४४	२८	6	30	18	38
३०.२५	२	शुक्र	४०	१५	चित्रा	४६	४३	ध्रुव	८	२८	तै	७	००	५	१५	25	१२	तु. १२/५३	**शनि वक्री २२/००**, सन्त तुकाराम जयन्ती	११	१०	४३	५१	6	29	18	39
३०.२८	३	शनि	४६	४३	स्वा.	५४	२३	व्या.	१०	५८	व	१३	२९	६	१६	26	१३	तुला	भ. १३/२९ से ४६/४३ तक, स. सि. योग:	११	११	४३	१४	6	28	18	39
३०.३३	४	रवि	५२	४८	विशा	६०	००	हर्ष	१३	१८	बव	१९	४६	७	१७	27	१४	वृ. ४४/५०	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), बुध रेवती में १९/४० (B)	११	१२	४२	३४	6	27	18	40
३०.४०	५	चंद्र	५८	१०	विशा	१	४०	वज्र	१५	१८	कौ	२५	२९	८	१८	28	१५	वृश्चिक	श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ, मेला गुरु रामराय (C)	११	१३	४१	५३	6	25	18	41
३०.४३	६	मंग	६०	००	अनु	८	१३	सिद्धि	१६	३८	गर	३०	१९	९	१९	29	१६	वृश्चिक	एकनाथ षष्ठी, गण्डमूल 9/41 बाद,	११	१४	४१	०७	6	24	18	41
३०.४८	६	बुध	२	२८	ज्ये.	१३	३५	व्य.	१७	३	व	२	२८	१०	२०	30	१७	ध. १३/३५	भ. २/२८ से ३३/५३ तक,	११	१५	४०	२१	6	23	18	42
३०.५३	७	गुरु	५	१८	मूल	१७	३३	वरी	१६	२०	बव	५	१८	११	२१	31	१८	धनु	सूर्य रेवती में ०/२५, **शुक्र मीन में ५२/३३**, शीतला सप्तमी (पूजन)	११	१६	३९	३५	6	22	18	43
३०.५८	८	शुक्र	६	२५	पू.षा.	१९	५३	परि	१४	१८	कौ	६	२५	१२	२२	अप्रै	१९	म. ३५/०८	अप्रैल, 2016 ई. प्रारम्भ, शीतलाष्टमी व्रत, राहु पू.फा. (४) केतु (D)	११	१७	३८	४३	6	20	18	43
३१.०३	९	शनि	५	३८	उ.षा.	२०	१८	शिव	१०	४३	गर	५	३८	१३	२३	2	२०	मकर	भ. ३४/१७ से, **बुध अश्वि (१) मेष में ५३/३३**	११	१८	३७	५२	6	19	18	44
३१.०८	१०	रवि	२	५५	श्रव	१८	५०	सिद्ध साध्य	५ ५१	३८ ३	वि	२	५५	१४	२४	3	२१	कुं. ४७/२३	भ. २/५५ तक, **पंचक प्रारम्भ** ४७/२३, पापमोचनी एकादशी व्रत (E)	११	१९	३७	०१	6	18	18	45
००.००	११	रवि	५८	२०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१.१०	१२	चंद्र	५२	५	धनि	१५	३५	शुभ	५१	१०	कौ	२५	१३	१५	२५	4	२२	कुम्भ	**पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**, वारुणी योग 27/07 से	११	२०	३६	०७	6	17	18	45
३१.१८	१३	मंग	४४	३३	शत	१०	५०	शुक्ल	४२	१०	गर	१८	१९	१६	२६	5	२३	मी. ५१/२०	भ. ४४/३३ से, **भौम प्रदोष व्रत**, बुध पश्चिम में उदय ३४/०५ (F)	११	२१	३५	०९	6	15	18	46
३१.२३	१४	बुध	३५	५८	पू.भा. उ.भा.	४ ५७	४५ ४५	ब्रह्म	३२	१५	वि	१०	१६	१७	२७	6	२४	मीन	भ. १०/१६ तक, मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा), मासशिवरात्रि व्रत	११	२२	३४	११	6	14	18	47
३१.२५	३०	गुरु	२६	४३	रेव	५०	२३	ऐन्द्र	२१	५०	च	१	२१	१८	२८	7	२५	मे. ५०/२३	**चैत्र अमावस, पंचक समाप्त** ५०/२३, वि. संवत् २०७२ पूर्ण, स.सि.यो.	११	२३	३३	१२	6	13	18	47

(A) ध्वजारोहण, धुलण्डी, होली पर्व (उ.प्र., दिल्ली आदि) B श्रीभगवान्नारायण जयन्ती C (देहरादून), स. सि. यो. D पू.भा. (२) में ४१/३५ E (स्मार्त), शुक्र उ.भा. में ३४/३५ F वारुणी योग 10/35 तक

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 1 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	७	११	४	११	७	४	१०
१७	२१	१३	२६	२१	००	२२	२६	२६
३६	५५	१५	०७	२०	०६	१७	४२	४२
४०	१२	५०	१९	४१	३१	१०	१९	१९
59 12	786 4	10 35	121 17	6 18	74 16	0 42	3 11	3 11
रेव १	पूषा ३	अनु ३	रेव ३	पूफा ३	पूभा ४	ज्ये. २	उफा १	पूभा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ | ११ के. | १२ सू. बु. शु. | २ | १० | ३ | ९ चं. | ४ | ६ | ८ मं. श. | ५ गु. रा. | ७

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	७	०	४	११	७	४	१०
२३	१६	१४	०७	२०	०७	२२	२६	२६
३१	४६	१०	५१	४४	३१	११	२३	२३
२६	१६	१९	०६	४५	१६	२९	१५	१५
59 1	913 33	6 54	109 7	5 31	74 7	1 17	3 11	3 11
रेव ३	रेव १	अनु ४	अश्वि ३	पूफा ३	उभा २	ज्ये. २	पूफा ४	पूभा २
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

१ बु. | ११ के. | १२ सू. चं. शु. | २ | १० | ३ | ९ | ४ | ६ | ८ मं. श. | ५ गु. रा. | ७

चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (24 मार्च) को होला मेला, धुलण्डी व वसन्तोत्सव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल-प्रदेश आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। कई मन्दिरों एवं ठाकुर द्वारों में ध्वजारोहण भी किया जाता है। ता. 27 मार्च को चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी को **श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन, मन्त्र जप (**ॐ गं गणपत्ये नमः**) करने से विघ्न दूर होते हैं, मनोकामनाओं की पूर्ति तथा पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति होती है। **पापमोचनी एकादशी** (4 अप्रै.-वैष्णवों के लिए) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 5 अप्रैल को वारुणी पर्व पर तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। इसका माहात्म्य ग्रहण तुल्य होता है। चतुर्दशी को पिहोवा (कुरुक्षेत्र) पर मेला पृथूदक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। **लोक-भविष्य**–ता. 25 मार्च को शनि वक्री होने से सत्तारूढ़ व विपक्षी दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी। सत्तारूढ़ गठबन्धन की विभिन्न पार्टियों में आपसी सामंजस्य में कमी व तनाव रहे। बढ़ती महँगाई के विरुद्ध उपद्रव, जनांदोलन एवं तोड़-फोड़ की घटनाएँ बढ़ेंगी। सुख में कमी हो, देश के कुछ भागों में युद्ध जैसे हालात बनेंगे। कहीं दुर्भिक्ष एवं कहीं सीमावर्ती क्षेत्रों में युद्ध का आतंक छाया रहे–'**शनि वक्रे दुर्भिक्षं च राज्ञां युद्धं परस्परम्। रूण्ड मुण्ड च मेदिनीम्।।**' चैत्र मास में पाँच वृहस्पतिवार होने से देश में कहीं उपद्रव, बाढ़, हिंसा आदि की घटनाएँ होंगी। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष का भी भय रहेगा–'**यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते।।**' दैनिक जन-उपयोगी वस्तुओं, तेलादि की कीमतों में वृद्धि के कारण सामान्य वर्ग में गहन असन्तोष रहेगा। **आकाश लक्षण**–चैत्र कृ. १ या अमावस को वर्षा या बूंदा-बांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे।

वि. संवत् 2071-72, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] वसन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
फा. शु.	1	११	रवि	14	03	पुन.	23	54	सौभा	29	50	क. 17/17	भ. 14/03 तक, **आमलकी एकादशी व्रत**, शुक्र रेवती में 19/26 **(A)**	1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
	2	१२	चंद्र	16	06	पुष्य	26	33	शोभ	30	29	कर्क	गोविन्द द्वादशी, सोम प्रदोष व्रत	2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/01	18/40
	3	१३	मंग.	18	26	आश्ले	29	27	अति	–	–	सिं.29/27	बुध धनि. में 30/15,	3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
	4	१४	बुध	20	58	मघा	–	–	अति	7	18	सिंह	भ. 20/58 से, सूर्य पू.भा. में 29/08, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत	4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
	5	१५	गुरु	23	36	मघा	8	29	सुक	8	14	सिंह	भ. 10/17 तक, **फाल्गुन पूर्णिमा**, होलिका दहन (प्रदोषकाले), मंगल **(B)**	5	6/58	18/26	6/46	18/19	6/49	18/20	7/00	18/42
चैत्र कृष्ण पक्ष	6	१	शुक्र	26	13	पू.फा.	11	34	धृति	9	12	कं.18/20	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रा., वसन्तोत्सव, होला-मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा सा.)	6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/48	18/20	6/59	18/42
	7	२	शनि	28	44	उ.फा.	14	37	शूल	10	8	कन्या	सन्त तुकाराम जयन्ती	7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
	8	३	रवि	–	–	हस्त	17	30	गंड	10	59	कन्या	भ. 17/53 से, **बुध कुम्भ में 30/30**, वक्री गुरु आश्ले (1) में 23/06,	8	6/54	18/29	6/43	18/21	6/45	18/22	6/57	18/43
	9	३	चंद्र	7	1	चित्रा	20	8	वृद्धि	11	38	तु. 6/51	भ. 7/01 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), श्रीभगवान्नारायण जयं.	9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
	10	४	मंग.	8	58	स्वा.	22	22	ध्रुव	12	1	तुला		10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
	11	५	बुध	10	26	विशा	24	4	व्या.	12	1	वृ. 17/42	श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ, मे. गुरु रामराय (देहरादून)	11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/42	18/24	6/54	18/44
	12	६	गुरु	11	18	अनु.	25	10	हर्ष	11	34	वृश्चिक	भ. 11/18 से 23/24 तक, **शुक्र अश्वि (1) मेष में 18/07**, एकनाथ षष्ठी	12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
	13	७	शुक्र	11	29	ज्ये.	25	33	वज्र	10	35	ध. 25/33	शीतला सप्तमी (पूजन), बुध शत. में 21/11	13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
	14	८	शनि	10	56	मूल	25	13	सिद्धि	9	2	धनु	**सूर्य मीन में 29/18, चैत्र संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले दिन,**C**	14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/26	6/52	18/44
	15	९	रवि	9	38	पू.षा.	24	10	व्य. वरी	6 28	54 12	म. 29/48	भ. 20/39 से,	15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
	16	१०	चंद्र	7	39	उ.षा.	22	29	परि	24	59	मकर	भ. 7/39 तक, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)	16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
	०	११	चंद्र	29	2	००	00	00	00	00	00	00	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	17	१२	मंग.	25	56	श्रव.	20	15	शिव	21	21	मकर	**पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**	17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/35	18/27	6/50	18/44
	18	१३	बुध	22	28	धनि.	17	38	सिद्ध	17	23	कुं. 6/59	भ. 22/28 से, **पंचक प्रा. 06/59**, प्रदोष व्रत, सूर्य उ.भा. में 13/36 **(D)**	18	6/42	18/35	6/32	18/27	6/34	18/27	6/49	18/45
	19	१४	गुरु	18	48	शत.	14	47	साध्य	13	14	मी.30/35	भ. 8/38 तक, मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	19	6/41	18/36	6/31	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
	20	३०	शुक्र	15	6	पू.भा.	11	52	शुभ शुक्ल	9 28	1 52	मीन	**चैत्र अमावस्या**, वि. संवत् 2071 पूर्ण, सूर्य सायन मेष 28/16, सूर्य का **E**	20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/31	18/29	6/47	18/45
चैत्र शुक्ल पक्ष	21	१	शनि	11	32	उ.भा. रेव	9 30	2 30	ब्रह्म	24	54	मे. 30/30	**कीलक नाम वि. संवत् 2072 प्रारम्भ**, चैत्र (वासन्त), **नवरात्रे शुरु (F)**	21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/30	18/30	6/46	18/45
	22	२	रवि	8	16	अश्वि	28	23	ऐन्द्र	21	17	मेष	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, जमादि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रा.**G**	22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/29	18/30	6/45	18/46
	०	३	रवि	29	26	००	00	00	00	00	00	00	तृतीया तिथि का क्षय ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	23	४	चंद्र	27	12	भर.	26	52	वैधृ	18	6	मेष	भ. 16/19 से 27/12 तक, **मंगल अश्वि (1) मेष में 22/46**, शुक्र **(H)**	23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
	24	५	मंग.	25	40	कृति.	26	2	विष्क	15	27	वृ. 8/35	श्री (लक्ष्मी) पंचमी,	24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
	25	६	बुध	24	53	रोहि.	25	57	प्रीति	13	23	वृष	स्कन्द षष्ठी व्रत	25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/25	18/32	6/44	18/47
	26	७	गुरु	24	55	मृग.	26	39	आयु	11	58	मि.14/12	भ. 24/55 से,	26	6/33	18/41	6/22	18/31	6/24	18/33	6/43	18/47
	27	८	शुक्र	25	42	आर्द्रा	28	5	सौभा	11	9	मिथुन	भ. 13/19 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, भवान्युत्पत्ति, बुध मीन में 25/34, **(I)**	27	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47
	28	९	शनि	27	10	पुर्न	30	9	शोभ	10	54	क.23/35	**श्रीरामनवमी, नवरात्रे समाप्त**	28	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
	29	१०	रवि	29	10	पुष्य	–	–	अति	11	9	कर्क	बुध उ.भा. में 21/35, नवरात्र-पारणा	29	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48
	30	११	चंद्र	–	–	पुष्य	8	46	सुक	11	46	कर्क	भ. 18/22 से प्रा., गण्डमूल विचार 8/46 उप.	30	6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48
	31	११	मंग.	7	34	आश्ले	11	40	धृति	12	39	सिं.11/40	भ. 7/34 तक, **कामदा एकादशी व्रत**, सूर्य रेव. में 24/21, गण्डमूल विचार	31	6/25	18/44	6/17	18/34	6/16	18/36	6/38	18/49

(A) मार्च-सन् 2015 ई. प्रारम्भ, नैपच्यून शत. (3) में 24/45, **(B)** रेवती में 30/28, होलाष्टक समाप्त, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत **(C) शनि वक्री 20/21**, श्रीशीतलाष्टमी **(D)** वारुणी योग 17/38 से 22/28 तक, मासशिवरात्रि व्रत **(E)** उत्तर गोल मे प्रवेश, महाविपुव दिन **(F) पंचक समाप्त 30/30**, घटस्थापन, वर्षफल श्रवण, ध्वजारोहण, चन्द्रदर्शन, मु. 30, **(G) बुध पू.भा. में 7/12**, शक चैत्र व सन् 1937 प्रारम्भ **(H)** भर. में 19/22, दमनक चतुर्थी **(I)** मेला बाहूफोर्ट (जम्मू), बुध पूर्व में अस्त 18/27, अशोकाष्टमी

वि. संवत् 2072, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
चैत्र शु.	1	१२	बुध	10	9	मघा	14	46	शूल	13	39	सिंह	अप्रैल मास प्रा., प्रदोष व्रत, श्रीविष्णु दमनोत्सव, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत (देखें पृ. 83)	1	6/24	18/45	6/16	18/35	6/16	18/37	6/36	18/49
	2	१३	गुरु	12	47	पू.फा.	17	52	गंड	14	40	क. 24/37	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),	2	6/23	18/45	6/15	18/35	6/15	18/38	6/35	18/49
	3	१४	शुक्र	15	18	उ.फा.	20	51	वृद्धि	15	36	कन्या	भ. 15/18 से 28/27 तक, शुक्र कृति. में 23/57, गुड फ्राइडे, श्रीसत्यनारायण व्रत, शिवदमनोत्सव	3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/14	18/38	6/34	18/49
	4	१५	शनि	17	36	हस्त	23	35	ध्रुव	16	22	कन्या	चैत्र पूर्णिमा, ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (देखें पृ. 15), श्रीहनुमान जयंती (A)	4	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
वैशाख कृष्ण पक्ष	5	१	रवि	19	35	चित्रा	26	1	व्या.	16	54	तु. 12/51	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध रेवती में 20/35,	5	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	२	चंद्र	21	11	स्वा.	28	5	हर्ष	17	9	तुला	**शुक्र वृष में 19/43,**	6	6/17	18/49	6/10	18/38	6/10	18/40	6/32	18/49
	7	३	मंग.	22	21	विशा	29	42	वज्र	17	5	वृ. 23/20	भ. 9/46 से 22/21 तक,	7	6/16	18/50	6/09	18/39	6/09	18/41	6/31	18/49
	8	४	बुध	23	2	अनु.	—	—	सिद्धि	16	39	वृश्चिक	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), सती अनुसूया जयन्ती, **गुरु मार्गी 22/23**	8	6/15	18/51	6/08	18/39	6/08	18/42	6/30	18/50
	9	५	गुरु	23	12	अनु.	6	51	व्य.	15	49	वृश्चिक	गण्डमूल 6/51 बाद से,	9	6/14	18/52	6/07	18/40	6/06	18/42	6/30	18/50
	10	६	शुक्र	22	50	ज्ये.	7	30	वरी	14	35	ध. 7/30	भ. 22/50 से, मंगल भर. में 23/02, **मंगल पश्चिम में अस्त 12/05**	10	6/12	18/52	6/06	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
	11	७	शनि	21	54	मूल	7	36	परि	12	55	धनु	भ. 10/22 तक, गण्डमूल 7/36 तक,	11	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
	12	८	रवि	20	27	पू.षा.	7	10	शिव	10	48	म. 12/59	**बुध अश्वि (1) मेष में 8/40**	12	6/10	18/54	6/03	18/41	6/03	18/45	6/28	18/51
	13	९	चंद्र	18	28	उ.षा. / श्रव.	6 / 28	13 / 46	सिद्ध / साध्य	8 / 29	16 / 21	मकर	भ. 29/16 से,	13	6/08	18/54	6/02	18/42	6/02	18/45	6/27	18/51
	14	१०	मंग.	16	3	धनि	26	55	शुभ	26	5	कुं.15/53	भ. 16/03 तक, **पंचक प्रा. 15/53, सूर्य** अश्वि (1) **मेष में 13/45 (B)**	14	6/07	18/55	6/01	18/43	6/01	18/46	6/26	18/51
	15	११	बुध	13	14	शत.	24	43	शुक्ल	22	33	कुम्भ	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** शुक्र रोहि. में 8/45, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	15	6/06	18/56	6/00	18/43	5/59	18/46	6/25	18/52
	16	१२	गुरु	10	9	पू.भा.	22	19	ब्रह्म	18	49	मी.16/55	प्रदोष व्रत, वक्री शनि अनु. (2) में 12/55,	16	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
	17	१३	शुक्र	6	54	उ.भा.	19	49	ऐन्द्र	15	0	मीन	भ. 6/54 से 17/16 तक, मासशिवरात्रि व्रत	17	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
	००	१४	शुक्र	27	37	००	०	०	००	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	18	३०	शनि	24	27	रेव.	17	22	वैधृ	11	12	मे.17/22	**वैशाख शनिवारी अमावस, पंचक समाप्त 17/22,** बुध भर. में 17/30,	18	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
वैशाख शुक्ल पक्ष	19	१	रवि	21	33	अश्वि	15	9	विष्क / प्रीति	7 / 28	32 / 8	मेष	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 15/09 तक,	19	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
	20	२	चंद्र	19	3	भर.	13	17	आयु	25	7	वृ.18/54	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती** (देखें पृ. 83), **(C)**	20	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
	21	३	मंग	17	6	कृति	11	57	सौभा	22	34	वृष	भ. 28/28 से, **अक्षय तृतीया,** केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ, शक वैशाख **(D)**	21	5/59	19/00	5/54	18/46	5/53	18/50	6/21	18/53
	22	४	बुध	15	49	रोहि	11	15	शोभ	20	35	मि.23/10	भ. 15/49 तक, बुध पश्चिम में उदय 7/54	22	5/58	19/00	5/53	18/47	5/52	18/51	6/20	18/54
	23	५	गुरु	15	18	मृग	11	17	अति	19	13	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	23	5/57	19/01	5/52	18/48	5/51	18/52	6/19	18/54
	24	६	शुक्र	15	35	आर्द्रा	12	5	सुक	18	29	मिथुन	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती	24	5/55	19/02	5/51	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
	25	७	शनि	16	38	पुन.	13	39	धृति	18	20	क. 7/12	भ. 16/38 से 29/30 तक, **श्रीगङ्गा-जयन्ती,** बुध कृति. में 13/59	25	5/54	19/02	5/50	18/49	5/49	18/53	6/18	18/54
	26	८	रवि	18	21	पुष्य	15	53	शूल	18	42	कर्क	शुक्र मृग. में 22/52, **श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती,** रविपुष्य योग	26	5/53	19/03	5/49	18/49	5/48	18/54	6/17	18/55
	27	९	चन्द्र	20	35	आश्ले	18	37	गंड	19	27	सिं.18/37	**जानकी (सीता) नवमी,** सूर्य भर. में 29/31, **बुध वृष में 12/04,**	27	5/52	19/04	5/48	18/50	5/47	18/54	6/17	18/55
	28	१०	मंग.	23	7	मघा	21	40	वृद्धि	20	26	सिंह	गण्डमूल 21/40 तक,	28	5/51	19/05	5/47	18/50	5/46	18/55	6/16	18/56
	29	११	बुध	25	42	पू.फा.	24	47	ध्रुव	21	29	सिंह	भ. 12/25 से 25/42 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत,** मंगल कृति. में 8/07	29	5/50	19/06	5/47	18/51	5/45	18/55	6/16	18/56
	30	१२	गुरु	28	9	उ.फा.	27	46	व्या.	22	28	कं. 7/33		30	5/49	19/07	5/46	18/52	5/44	18/56	6/15	18/56

(A) (दक्षिण-भारत), वैशाख स्नान प्रारम्भ **(B) वैशाख संक्रान्ति,** मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रातः 7/21 बाद, **वैशाखी (पं.),** हरि., हिमा., दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, डॉ० अम्बेदकर जयंती
(C) शिवाजी जयन्ती, सूर्य सायन वृष में 15/12, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ **(D)** प्रारम्भ, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, अगस्त्यास्त

वि. संवत् 2072, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — ग्रीष्म ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
वैशा. शु.	1	१३	शुक्र	पूरा	दिन	हस्त	पूरा	दिन	हर्ष	23	13	कन्या	मई मास प्रारम्भ, प्रदोष व्रत, श्रम दिवस	1	5/48	19/08	5/45	18/52	5/43	18/57	6/15	18/56
	2	१३	शनि	6	17	हस्त	6	27	वज्र	23	41	तु. 19/39	श्रीनृसिंह जयन्ती, **शुक्र मिथुन में 20/33,**	2	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
	3	१४	रवि	7	59	चित्रा	8	44	सिद्धि	23	46	तुला	भ. 7/59 से 20/36 तक, **मंगल वृष में 23/53**, श्रीकूर्म जयन्ती, **(A)**	3	5/46	19/09	5/43	18/54	5/41	18/58	6/14	18/57
	4	१५	चंद्र	9	12	स्वा.	10	32	व्य.	23	28	वृ. 29/34	वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीछिन्नमस्तिका जयंती, वैशाख स्नान **(B)**	4	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	5	१	मंग.	9	54	विशा	11	51	वरी	22	47	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,	5	5/44	19/10	5/41	18/55	5/40	18/59	6/13	18/58
	6	२	बुध	10	7	अनु.	12	40	परि	21	43	वृश्चिक	भ. 22/00 से, श्रीनारद जयंती, वीणादान, स.सि.यो., गण्डमूल	6	5/43	19/11	5/40	18/55	5/39	19/00	6/12	18/58
	7	३	गुरु	9	52	ज्ये.	13	4	शिव	20	19	ध.13/04	भ. 9/52 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), श्रीटैगोर जयन्ती	7	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
	8	४	शुक्र	9	12	मूल	13	3	सिद्ध	18	35	धनु	शुक्र आर्द्रा में 20/25, गण्डमूल 13/03 तक	8	5/42	19/12	5/39	18/56	5/37	19/01	6/12	18/59
	9	५	शनि	8	9	पू.षा.	12	40	साध्य	16	34	म.18/31	टैगोर जयं. (मतान्तरे)	9	5/41	19/13	5/38	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
	10	६	रवि	6	46	उ.षा.	11	57	शुभ	14	17	मकर	भ. 6/46 से 17/55 तक, गुरु आश्ले. (2) में 7/41	10	5/41	19/14	5/38	18/57	5/36	19/03	6/11	18/59
	००	७	रवि	29	4	००	०	०	००	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	11	८	चंद्र	27	5	श्रव.	10	56	शुक्ल	11	45	कुं. 22/19	पंचक प्रारम्भ 22/19, सूर्य कृति. में 23/46	11	5/40	19/15	5/37	18/58	5/35	19/03	6/10	19/01
	12	९	मंग.	24	51	धनि.	9	38	ब्रह्म	9	1	कुम्भ		12	5/39	19/16	5/36	18/59	5/34	19/04	6/10	19/01
	13	१०	बुध	22	25	शत.	8	7	ऐंद्र वैधृ	6 26	4 58	मी. 24/51	भ. 11/38 से 22/25 तक,	13	5/39	19/17	5/36	18/59	5/34	19/05	6/09	19/01
	14	११	गुरु	19	50	पू.भा. उ.भा.	6 28	24 34	विष्क	23	46	मीन	**अपरा एकादशी व्रत**, भद्रकाली एकादशी (पंजाब)	14	5/38	19/17	5/35	19/00	5/33	19/05	6/09	19/02
	15	१२	शुक्र	17	10	रेव	26	41	प्रीति	20	30	मे. 26/41	पंचक समाप्त 26/41, **सूर्य वृष में 10/37, ज्येष्ठ संक्रान्ति**, मु. 30, **(C)**	15	5/37	19/18	5/34	19/00	5/32	19/06	6/09	19/02
	16	१३	शनि	14	31	अश्वि	24	52	आयु	17	16	मेष	भ. 14/31 से 25/16 तक, मासशिवरात्रि व्रत, वट-सावित्री व्रत प्रारम्भ	16	5/36	19/18	5/34	19/01	5/32	19/07	6/09	19/02
	17	१४	रवि	12	0	भर.	23	14	सौभा	14	9	वृ. 28/52	मंगल रोहि. में 26/47, **शनैश्चर जयन्ती**, अमावस (पितृकार्येषु), **(D)**	17	5/36	19/11	5/33	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
	18	३०	चंद्र	9	43	कृति	21	55	शोभ	11	14	वृष	**ज्येष्ठ-सोमवती अमावस** (स्नानदानादि), करवीर व्रत	18	5/35	19/20	5/33	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	19	१	मंग	7	49	रोहि	21	3	अति	8	39	वृष	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ, **(E)**	19	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
	20	२	बुध	6	26	मृग	20	46	सुक धृति	6 28	29 49	मि. 8/50	**रम्भा तृतीया व्रत**, शुक्र पुन. में 28/28, शब्बान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, **(F)**	20	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
	21	३	गुरु	5	40	आर्द्रा	21	8	शूल	27	43	मिथुन	भ. 17/38 से, महाराणा प्रताप जयन्ती, सूर्य सायन मिथुन में 14/15	21	5/33	19/22	5/31	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
	22	४	शुक्र	5	36	पुन.	22	14	गंड	27	12	क. 15/54	भ. 5/36 तक, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, **वक्री बुध पश्चिम में** अस्त 14/37	22	5/33	19/23	5/31	19/05	5/28	19/11	6/07	19/04
	23	५	शनि	6	17	पुष्य	24	3	वृद्धि	27	14	कर्क	राहु हस्त (1), केतु उ.भा. (3) में 10/30, विन्ध्यवासिनी पूजा	23	5/32	19/24	5/30	19/05	5/28	19/11	6/06	19/05
	24	६	रवि	7	41	आश्ले	26	28	ध्रुव	27	45	सिं. 26/28	**अरण्य षष्ठी**, गण्डमूल विचार,	24	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	25	७	चंद्र	9	40	मघा	29	19	व्या.	28	37	सिंह	भ. 9/40 से 22/52 तक, **सूर्य रोहि. में 19/53**, गण्डमूल 29/19 तक	25	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	26	८	मंग	12	3	पू.फा.	–	–	हर्ष	–	–	सिंह	श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, **मेला क्षीर भवानी** (काश्मीर)	26	5/30	19/25	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	27	९	बुध	14	35	पू.फा.	8	24	हर्ष	5	39	कं.15/10	उमा ब्राह्मणी व्रत	27	5/30	19/26	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	28	१०	गुरु	17	1	उ.फा.	11	26	वज्र	6	41	कन्या	**श्रीगङ्गा दशहरा पर्व (हरिद्वार)**	28	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
	29	११	शुक्र	19	8	हस्त	14	12	सिद्धि	7	32	तु. 27/25	भ. 6/05 से 19/08 तक, **निर्जला एकादशी व्रत**	29	5/29	19/27	5/28	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
	30	१२	शनि	20	43	चित्रा	16	30	व्य.	8	2	तुला	**शुक्र कर्क में 20/55**, चम्पक द्वादशी	30	5/29	19/28	5/28	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
	31	१३	रवि	21	43	स्वा.	18	14	वरी	8	6	तुला	प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ	31	5/29	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, **(B)** समाप्त, बुध रोहि. में 9/55 **(C)** पुण्यकाल सं. सूर्योदय से मध्याह्न बाद तक, प्रदोष व्रत, **(D)** वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष) (देखें पृ. 83), भावुका अमावस **(E)** बुध वक्री 7/17 **(F)** उमा-अवतार, महाराणा प्रताप जयंती (राज.)

वि. संवत् 2072, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश (सूर्य उत्तर-दक्षिणायन, घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.], ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
ज्ये.शु.	1	१४	चंद्र	22	4	विशा	19	20	परि	7	41	वृ.13/07	भ. 22/04 से, जून मास प्रारम्भ,	1	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08
	2	१५	मंग.	21	49	अनु.	19	51	शिव सिद्ध	6 29	47 24	वृश्चिक	भ. 9/57 तक, ज्येष्ठ पूर्णिमा, **वटसावित्री व्रत** (पूर्णिमा पक्ष), **(A)**	2	5/28	19/29	5/28	19/10	5/24	19/16	6/05	19/09
प्रथम (शुद्ध) आषाढ़ कृष्ण पक्ष	3	१	बुध	21	2	ज्ये.	19	50	साध्य	27	38	ध.19/50	प्रथम (शुद्ध) आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	3	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	4	२	गुरु	19	48	मूल	19	22	शुभ	25	31	धनु	वक्री शनि अनु. (1) में 11/36, अशून्यशयन व्रत, गण्डमूल 19/22 तक,	4	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	5	३	शुक्र	18	15	पू.षा.	18	34	शुक्ल	23	10	म.24/19	भ. 7/02 से 18/15 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11),	5	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	6	४	शनि	16	26	उ.षा.	17	31	ब्रह्म	20	37	मकर	मंगल मृग. में 7/16, गुरु आश्ले (3) में 14/59, स.सि.यो. 17/31 बाद	6	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	7	५	रवि	14	28	श्रव.	16	19	ऐन्द्र	17	57	कुं.27/41	**पंचक प्रारम्भ 27/41**	7	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/10
	8	६	चंद्र	12	23	धनि.	15	2	वैधृ	15	12	कुम्भ	भ. 12/23 से 23/20 तक, सूर्य मृग. में 17/48, वक्री बुध पूर्व में उदय 13/49	8	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/11
	9	७	मंग.	10	16	शत	13	41	विष्क	12	26	कुम्भ		9	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	10	८	बुध	8	7	पू.भा.	12	20	प्रीति	9	38	मी. 6/40		10	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	11	९	गुरु	5	59	उ.भा.	10	59	आयु सौभा	6 28	51 5	मीन	भ. 16/56 से 27/53 तक, गण्डमूलादि 10/59 बाद	11	5/26	19/34	5/27	19/14	5/23	19/21	6/05	19/11
	००	१०	गुरु	27	53	००	०	०	००	०	०	००	दशमी तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	12	११	शुक्र	25	50	रेव	9	40	शोभ	25	22	मे. 9/40	**पंचक समाप्त 9/40**, योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त), गण्डमूलादि	12	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	13	१२	शनि	23	54	अश्वि	8	26	अति	22	45	मेष	**योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**, गंडमूल प्रातः 8/26 तक	13	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	14	१३	रवि	22	10	भर.	7	20	सुक	20	17	वृ.13/05	भ. 22/10 से, प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत	14	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	15	१४	चंद्र	20	41	कृति	6	26	धृति	18	3	वृष	भ. 9/26 तक, **सूर्य मिथुन में 17/12, आषाढ़ संक्रान्ति**, मु. 45, **(B)**	15	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	16	३०	मंग.	19	35	रोहि	5	51	शूल	16	5	मि.17/43	**आषाढ़ (भौमवती) अमावस**, स्नानदानादि	16	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/13
प्रथम (अधि.) आषाढ़ शुक्ल पक्ष	17	१	बुध	18	58	मृग.	5	41	गंड	14	30	मिथुन	**आषाढ़-अधिक मास प्रारम्भ** (देखें पृ. 89), शुक्र आश्लेषा में 13/24,	17	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	18	२	गुरु	18	55	आर्द्रा	6	1	वृद्धि	13	21	क.24/40	चन्द्रदर्शन, मु. 45, स.सि.योग	18	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	19	३	शुक्र	19	29	पुन.	6	57	ध्रुव	12	42	कर्क	रमजान (मुस्लिम) मास प्रारम्भ,	19	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	20	४	शनि	20	42	पुष्य	8	31	व्या.	12	33	कर्क	भ. 8/06 से 20/42 तक, गण्डमूल 8/31 बाद	20	5/27	19/37	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/14
	21	५	रवि	22	31	आश्ले	10	41	हर्ष	12	53	सिं.10/41	**सूर्य सायन** कर्क में 22/08, **सायन दक्षिणायन प्रारम्भ**, वर्षा ऋतु प्रारम्भ,	21	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
	22	६	चंद्र	24	46	मघा	13	21	वज्र	13	36	सिंह	सूर्य आर्द्रा में 16/46, शक आषाढ़ प्रारम्भ, गण्डमूल 13/21 तक	22	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/07	19/14
	23	७	मंग.	27	17	पू.फा.	16	21	सिद्धि	14	35	क.23/08	भ. 27/17 से,	23	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	24	८	बुध	–	–	उ.फा.	19	27	व्य.	15	40	कन्या	भ. 16/32 तक,	24	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	25	८	गुरु	5	46	हस्त	22	23	वरी	16	38	कन्या	मंगल आर्द्रा में 21/23,	25	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
	26	९	शुक्र	8	0	चित्रा	24	54	परि	17	19	तु.11/42	गुरु आश्ले. (4) में 17/25,	26	5/29	19/38	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
	27	१०	शनि	9	42	स्वा.	26	49	शिव	17	34	तुला	भ. 22/14 से, स.सि.यो.	27	5/30	19/38	5/29	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	28	११	रवि	10	45	विशा	28	2	सिद्ध	17	16	वृ.21/48	भ. 10/45 तक, **पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत**,	28	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	29	१२	चंद्र	11	3	अनु.	28	31	साध्य	16	23	वृश्चिक	सोम प्रदोष व्रत, स.सि.यो., गण्डमूल 28/31 से	29	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/08	19/16
	30	१३	मंग.	10	37	ज्ये.	28	18	शुभ	14	54	ध.28/18	बुध मृग. में 22/24, गण्डमूल विचार	30	5/31	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16

(A) सन्त कबीर जयन्ती, शुक्र पुष्य में 29/15, श्रीसत्यनारायण व्रत [illegible] **(B)** [illegible] मंगल मिथुन में 25/08, स.सि. योग

वि. संवत् 2072, जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
आ.शु.	1	१४	बुध	9	30	मूल	27	30	शुक्ल	12	54	धनु	भ. 9/30 से 20/40 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 27/30 तक,	1	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/09	19/16
	2	१५	गुरु	7	50	पू.षा.	26	15	ब्रह्म	10	27	धनु	अधि. आषाढ़ी पूर्णिमा,	2	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
द्वितीय (अधि.) आषाढ़ कृष्ण पक्ष	3	१	शुक्र	5	43	उ.षा.	24	40	ऐन्द्र वैधृ.	7 28	40 39	म. 7/53	द्वितीय (अधिक) आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,	3	5/32	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
	००	२	शुक्र	27	18	००	०	०	००	०	०	००	द्वितीया तिथि क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	4	३	शनि	24	44	श्रव.	22	55	विष्क	25	30	मकर	भ. 14/01 से 24/44 तक,	4	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
	5	४	रवि	22	8	धनि.	21	7	प्रीति	22	19	कुं.10/01	पंचक प्रारम्भ 10/01, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 10-11), (A)	5	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
	6	५	चंद्र	19	35	शत.	19	22	आयु	19	11	कुम्भ	सूर्य पुर्न. में 16/25,	6	5/33	19/38	5/33	19/18	5/29	19/25	6/11	19/16
	7	६	मंग.	17	10	पू.भा.	17	45	सौभा	16	10	मी.12/08	भ. 17/10 से 28/03 तक,	7	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
	8	७	बुध	14	56	उ.भा.	16	20	शोभ	13	18	मीन	गण्डमूल 16/20 से,	8	5/34	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/12	19/16
	9	८	गुरु	12	55	रेव	15	7	अति	10	36	मे.15/07	पंचक समाप्त 15/07, बुध आर्द्रा में 10/12, गण्डमूल विचार	9	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	10	९	शुक्र	11	9	अश्वि	14	9	सुक	8	7	मेष	भ. 22/24 से, गण्डमूल 14/09 तक	10	5/35	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	11	१०	शनि	9	38	भर.	13	26	धृति शूल	5 27	49 45	वृ.19/18	भ. 9/38 तक,	11	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
	12	११	रवि	8	23	कृति	13	0	गंड	25	55	वृष	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत, बुध पूर्व में अस्त 12/06	12	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
	13	१२	चंद्र	7	27	रोहि	12	52	वृद्धि	24	21	मि.24/56	सोम प्रदोष व्रत	13	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/16
	14	१३	मंग.	6	51	मृग.	13	6	ध्रुव	23	5	मिथुन	भ. 6/51 से 18/45 तक, गुरु मघा (1) सिंह में 6/23, मासशिवरात्रि व्रत	14	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/14	19/16
	15	१४	बुध	6	39	आर्द्रा	13	43	व्या.	22	11	मिथुन	अमावस (पितृकार्येषु), मंगल पुन. में 20/54,	15	5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/16
	16	३०	गुरु	6	54	पुर्न.	14	49	हर्ष	21	39	क. 8/30	अमावस (स्नानदानादि), आषाढ़ अधिक (मल) मास समाप्त (देखें पृ. 89) (B)	16	5/38	19/36	5/37	19/16	5/34	19/22	6/14	19/16
द्वितीय (शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल पक्ष	17	१	शुक्र	7	40	पुष्य	16	25	वज्र	21	32	कर्क	द्वितीय (शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, रथयात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी),C	17	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
	18	२	शनि	8	58	आश्ले	18	31	सिद्धि	21	50	सिं.18/31	चंद्रदर्शन, मु. 30, गण्डमूल विचार	18	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/21	6/15	19/15
	19	३	रवि	10	46	मघा	21	6	व्य.	22	29	सिंह	भ. 23/53 से, शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ,	19	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/15
	20	४	चंद्र	13	0	पू.फा.	24	3	वरी	23	26	सिंह	भ. 13/00 तक, सूर्य पुष्य में 15/51, बुध कर्क में 23/02	20	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
	21	५	मंग.	15	31	उ.फा.	27	11	परि	24	32	क. 6/49		21	5/41	19/34	5/40	19/14	5/37	19/20	6/16	19/14
	22	६	बुध	18	6	हस्त	–	–	शिव	25	37	कन्या	स्कन्द-षष्ठी, कुमार षष्ठी, बुध पुष्य में 12/30	22	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
	23	७	गुरु	20	31	हस्त	6	17	सिद्ध	26	31	तु.19/44	भ. 20/31 से, सूर्य सायन सिंह में 9/00, शक श्रावण प्रा., विवस्वत सप्तमी	23	5/42	19/33	5/41	19/13	5/38	19/19	6/16	19/13
	24	८	शुक्र	22	29	चित्रा	9	06	साध्य	27	3	तुला	भ. 9/30 तक, श्रीदुर्गाष्टमी	24	5/43	19/32	5/42	19/13	5/39	19/19	6/17	19/13
	25	९	शनि	23	56	स्वा.	11	24	शुभ	27	5	तुला	भढली नवमी, गुप्त नवरात्रे समाप्त, मेला शरीक भवानी (काश्मीर), (D)	25	5/44	19/32	5/42	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
	26	१०	रवि	24	25	विशा	13	01	शुक्ल	26	29	वृ. 6/41		26	5/45	19/31	5/43	19/12	5/40	19/17	6/17	19/12
	27	११	चंद्र	24	11	अनु.	13	51	ब्रह्म	25	15	वृश्चिक	भ. 12/18 से 24/11 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत, (E)	27	5/45	19/30	5/43	19/11	5/41	19/17	6/18	19/12
	28	१२	मंग	23	8	ज्ये.	13	52	ऐन्द्र	23	22	ध.13/52	बुध आश्ले में 21/38, गण्डमूल विचार	28	5/46	19/30	5/44	19/11	5/41	19/16	6/18	19/12
	29	१३	बुध	21	22	मूल	13	08	वैधृ	20	54	धनु	प्रदोष व्रत, गण्डमूल 13/08 तक	29	5/47	19/29	5/44	19/10	5/42	19/15	6/18	19/11
	30	१४	गुरु	19	1	पू.षा.	11	46	विष्क	17	57	म.17/20	भ. 19/01 से 29/37 तक, मंगल कर्क में 26/18, गुरु मघा (2) में (F)	30	5/47	19/27	5/45	19/10	5/43	19/15	6/19	19/11
	31	१५	शुक्र	16	13	उ.षा.	9	53	प्रीति	14	37	मकर	आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, वायु परीक्षा, स.सि.यो. 9/53 बाद	31	5/48	19/27	5/46	19/09	5/43	19/14	6/19	19/10

पुरुषोत्तम मास 16 जुलाई तक

(A) बुध मिथुन में 12/13, शुक्र मघा (1) सिंह में 9/50 **B** सूर्य कर्क में 28/02, श्रावण संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. अगले दिन 10/26 तक, बुध पुन. में 5/39, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ, सिंहस्थ पर्व प्रा. **C** (देखें पृ. 83), गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ **(D)** शुक्र वक्री 14/58, राहु उ.फा. (4), केतु उ.भा. (2) में 8/15 **(E)** नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णुशयनोत्सव **(F)** 12/37, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर)

वि. संवत् 2072, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2015 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा-शरद् ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
श्रावण कृष्ण पक्ष	1	१	शनि	13	8	श्रव. धनि.	7 29	41 18	आयु	11	2	कुं.18/30	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक शुरु 18/30, अशून्यशयन व्रत, **(A)**	1	5/48	19/25	5/46	19/08	5/44	19/13	6/20	19/10
	2	२	रवि	9	55	शत	26	55	सौभा शोभ	7 27	20 38	कुम्भ	भ. 20/19 से, शनि मार्गी 11/24, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 10/12	2	5/49	19/25	5/47	19/08	5/44	19/12	6/20	19/09
	3	३	चंद्र	6	43	पूभा	24	39	अति.	24	3	मी.19/12	भ. 6/43 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 10-11), सूर्य आश्ले में 14/48	3	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
	००	४	चंद्र	27	41	००	०	०	००	०	०	००	चतुर्थी तिथि क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	4	५	मंग	24	53	उ.भा.	22	38	सुक	20	39	मीन	नाग-पंचमी (राज. व बंगाल), मंगल पुष्य में 29/12, **बुध** मघा (1) **(B)**	4	5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19/08
	5	६	बुध	22	27	रेव	20	57	धृति	17	32	मे.20/57	भ. 22/27 से, **पंचक समाप्त 20/57**, बुध पश्चिम में उदय 11/37, **(C)**	5	5/51	19/23	5/48	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
	6	७	गुरु	20	24	अश्वि	19	40	शूल	14	44	मेष	भ. 9/26 तक, स.सि.योग, गण्डमूल — शुक्र अस्त 5 अग.	6	5/52	19/22	5/49	19/05	5/47	19/09	6/21	19/07
	7	८	शुक्र	18	48	भर	18	49	गंड	12	18	वृ.24/41		7	5/52	19/21	5/49	19/04	5/47	19/08	6/22	19/07
	8	९	शनि	17	40	कृति	18	26	वृद्धि	10	13	वृष	भ. 29/19 से प्रारम्भ,	8	5/53	19/20	5/50	19/03	5/43	19/07	6/22	19/06
	9	१०	रवि	16	59	रोहि	18	30	ध्रुव	8	31	वृष	भ. 16/59 तक, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 11/34	9	5/53	19/19	5/51	19/02	5/49	19/06	6/22	19/05
	10	११	चंद्र	16	46	मृग	19	1	व्या	7	11	मि. 6/42	**कामिका एकादशी व्रत, स.सि.यो.** — गुरु अस्त 12 अग.	10	5/54	19/18	5/51	19/01	5/49	19/05	6/22	19/05
	11	१२	मंग	17	0	आर्द्रा	19	59	हर्ष वज्र	6 29	13 36	मिथुन	भौम प्रदोष व्रत	11	5/55	19/17	5/52	19/01	5/50	19/04	6/22	19/04
	12	१३	बुध	17	41	पुन	21	23	सिद्धि	29	20	क.14/59	भ. 17/41 से, बुध पू.फा. में 8/38, मासशिवरात्रि व्रत, मंगल पूर्व में **D**	12	5/56	19/16	5/52	19/00	5/51	19/03	6/23	19/03
	13	१४	गुरु	18	49	पुष्य	23	13	व्य.	29	25	कर्क	भ. 6/15 तक, वक्री शुक्र आश्ले. (4) कर्क में 17/23, **गुरुपुष्य योग**	13	5/57	19/15	5/53	18/59	5/51	19/02	6/23	19/03
	14	३०	शुक्र	20	23	अश्ले	25	28	वरी	29	49	सिं.25/28	**हरियाली अमावस**, गुरु मघा (3) में 27/11, गण्डमूल विचार	14	5/57	19/13	5/53	18/58	5/52	19/02	6/23	19/02
श्रावण शुक्ल पक्ष	15	१	शनि	22	22	मघा	28	6	परि	–	–	सिंह	श्रावण शुक्ल पक्षारम्भ, **मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ, (E)**	15	5/58	19/12	5/54	18/57	5/52	19/01	6/23	19/02
	16	२	रवि	24	41	पू.फा.	–	–	परि	6	31	सिंह	चन्द्रदर्शन, मु. 30	16	5/59	19/11	5/54	18/56	5/53	19/00	6/24	19/01
	17	३	चंद्र	27	14	पू.फा.	7	03	शिव	7	27	कं.13/49	**सूर्य मघा (1) सिंह में 12/25, भाद्रपद संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल **F**	17	5/59	19/10	5/55	18/55	5/54	18/59	6/24	19/01
	18	४	मंग	29	53	उ.फा.	10	11	सिद्ध	8	32	कन्या	भ. 16/34 से 29/53 तक, वरद् चतुर्थी, दूर्वा गणपति व्रत, स.सि.यो.	18	6/00	19/09	5/55	18/54	5/54	18/58	6/24	19/00
	19	५	बुध	–	–	हस्त	13	22	साध्य	9	41	तु.26/55	स.सि.यो.	19	6/00	19/08	5/56	18/53	5/55	18/56	6/24	19/00
	20	५	गुरु	8	26	चित्रा	16	24	शुभ	10	43	तुला	**नाग-पंचमी (देखें पृ. 83), श्रीकल्कि जयन्ती, शुक्र पूर्व में उदय 20/17, बुध उ.फा. में 23/40**	20	6/01	19/06	5/56	18/52	5/55	18/55	6/24	19/00
	21	६	शुक्र	10	41	स्वा	19	4	शुक्ल	11	30	तुला	+(देखें पृ. 84), श्रीशीतला पूजन	21	6/01	19/05	5/57	18/51	5/56	18/54	6/25	18/59
	22	७	शनि	12	24	विशा	21	11	ब्रह्म	11	53	वृ.14/43	भ. 12/24 से 24/55 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, **दूर्वाष्टमी व्रत +**	22	6/02	19/04	5/58	18/50	5/56	18/53	6/25	18/58
	23	८	रवि	13	26	अनु.	22	36	ऐन्द्र	11	44	वृश्चिक	श्रीदुर्गाष्टमी, **बुध कन्या में 8/38**, सूर्य सायन कन्या में 16/07 **G**	23	6/02	19/03	5/58	18/49	5/57	18/52	6/25	18/57
	24	९	चंद्र	13	41	ज्ये.	23	12	वैधृ	10	58	ध.23/12	गण्डमूल विचार	24	6/03	19/02	5/59	18/48	5/58	18/51	6/25	18/56
	25	१०	मंग.	13	5	मूल	22	59	विष्क	9	33	धनु	भ. 24/23 से, मंगल आश्ले. में 21/30, गण्डमूल 22/59 तक, झूलन यात्रा	25	6/04	19/01	5/59	18/47	5/58	18/50	6/26	18/55
	26	११	बुध	11	40	पू.षा.	21	59	प्रीति आयु	7 28	28 46	म.27/38	भ. 11/40 तक, **पवित्रा एकादशी व्रत**	26	6/04	19/00	6/00	18/46	5/59	18/49	6/26	18/54
	27	१२	गुरु	9	32	उ.षा.	20	19	सौभा	25	33	मकर	प्रदोष व्रत,	27	6/05	18/59	6/00	18/45	5/59	18/47	6/26	18/53
	28	१३	शुक्र	6	48	श्रव.	18	7	शोभ	21	55	कुं.28/52	भ. 27/35 से, **पंचक प्रारम्भ 28/52**, ऋग्वेदि उपाकर्म — शुक्र उदय 20 अग.	28	6/06	18/57	6/01	18/44	6/00	18/46	6/27	18/52
	००	१४	शुक्र	27	35	००	०	०	००	०	०	००	चतुर्दशी तिथि क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	29	१५	शनि	24	5	धनि.	15	32	अति	18	0	कुम्भ	भ. 13/50 तक, **रक्षा-बन्धन** (भद्रा बाद) (देखें पृ. 84), श्रावण पूर्णिमा, **(H)**	29	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
भा.कृ.	30	१	रवि	20	27	शत.	12	45	सुक	13	56	मी.28/37	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु मघा (4) में 8/32, गायत्री जपम्	30	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
	31	२	चंद्र	16	50	पू.भा.	9	56	धृति शूल	9 29	50 51	मीन	भ. 27/07 से, सूर्य पू.फा. में 8/24, बुध हस्त में 7/41, कज्जली-तृतीया (चं.उ.व्या.)	31	6/08	18/53	6/02	18/41	6/02	18/43	6/28	18/49

(A) लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव, अगस्त मास प्रारम्भ **(B)** सिंह में 18/16 **(C)** शुक्र पश्चिम में अस्त 10/12 **(D)** उदय 25/34, गुरु पश्चिम में अस्त 11/34 **(E)** भारत स्वतन्त्रता दिवस **(F)** सं. सारा दिन, कुम्भ महापर्व (नासिक) स्नान प्रारम्भ (देखें पृ. 12), मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज, जिल्काद (मु.) मास प्रारम्भ **(G)** शरद् ऋतु प्रारम्भ, शक भाद्रपद प्रारम्भ, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 20/17, मेला चिंतपूर्णी (हि.प्र.) समाप्त **(H)** यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, गायत्री जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, ऋषि तर्पण, संस्कृत दिवस, हयग्रीव जयन्ती

वि. संवत् 2072, सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद् ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मि.	जम्मू सूर्यास्त घं.मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मि.	मुम्वई सूर्योदय घं.मि.	मुम्वई सूर्यास्त घं.मि.
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	३	मंग.	13	24	उ.भा. रेव	7 28	14 49	गंड	26	5	मे.28/49	भ. 13/24 तक, पंचक समाप्त 28/49, अंगारकी श्रीगणेश बहुला चतुर्थी (A)	1	6/08	18/52	6/03	18/39	6/02	18/42	6/29	18/48
	2	४	बुध	10	17	अश्वि	26	49	वृद्धि	22	38	मेष	गण्डमूल 26/49 तक,	2	6/09	18/51	6/03	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
	3	५	गुरु	7	36	भर.	25	19	ध्रुव	19	36	मेष	भ. 29/28 से, चन्दन षष्ठी व्रत, चन्द्रोदय 22/18 (जालन्धर), हल षष्ठी	3	6/10	18/50	6/04	18/36	6/03	18/40	6/29	18/46
	००	६	गुरु	29	28	००	०	०	००	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	4	७	शुक्र	27	56	कृत्ति	24	26	व्या.	17	3	वृ. 7/02	भ. 16/42 तक, शीतला सप्तमी, अगस्त्योदय	4	6/11	18/49	6/04	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
	5	८	शनि	27	2	रोहि	24	10	हर्ष	15	0	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (देखें पृष्ठ 88) (जयन्ती योगे)	5	6/11	18/48	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
	6	९	रवि	26	48	मृग	24	32	वज्र	13	28	मि.12/16	श्रीगुग्गा-नवमी, शुक्र मार्गी 14/01, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	6	6/12	18/47	6/05	18/33	6/05	18/35	6/29	18/44
	7	१०	चंद्र	27	11	आर्द्रा	25	32	सिद्धि	12	27	मिथुन	भ. 14/59 से 27/11 तक, गुरु पूर्व में उदय 15/52	7	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
	8	११	मंग	28	8	पुन	27	5	व्य.	11	54	क.20/38	अजा एकादशी व्रत	8	6/13	18/43	6/06	18/31	6/06	18/33	6/30	18/43
	9	१२	बुध	29	36	पुष्य	29	7	वरी	11	46	कर्क	वत्स द्वादशी (पूजा),	9	6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
	10	१३	गुरु	–	–	अश्ले	–	–	परि	12	1	कर्क	प्रदोष व्रत, गुरु बाल्यत्वदोष समाप्त 15/52, कैलाश यात्रा प्रा.	10	6/14	18/40	6/07	18/28	6/07	18/30	6/30	18/41
	11	१३	शुक्र	7	29	अश्ले	7	34	शिव	12	34	सिं. 7/34	भ. 7/29 से 20/36 तक, मासशिवरात्रि व्रत, अघोरा-डाकिनी चतुर्दशी,(B)	11	6/15	18/38	6/07	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
	12	१४	शनि	9	43	मघा	10	20	सिद्ध	13	22	सिंह	अमावस (पितृकार्येषु), पिठोरी अमावस, गण्डमूल 10/20 तक	12	6/16	18/37	6/08	18/26	6/08	18/28	6/30	18/40
	13	३०	रवि	12	11	पू.फा.	13	21	साध्य	14	20	कं.20/07	भाद्रपद अमावस (स्नानदानादि), कुम्भ महापर्व (नासिक) (देखें पृ.12)(C)	13	6/16	18/37	6/08	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	14	१	चंद्र	14	49	उ.फा.	16	29	शुभ	15	24	कन्या	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुरु पू.फा. (1) में 21/34,	14	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
	15	२	मंग	17	28	हस्त	19	39	शुक्ल	16	30	कन्या	चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल मघा (1) सिंह में 21/29, सामवेदि उपाकर्म	15	6/17	18/35	6/09	18/22	6/10	18/24	6/30	18/37
	16	३	बुध	20	2	चित्रा	22	43	ब्रह्म	17	31	तु. 9/12	हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, जिल्हिजा (मु.) मास प्रा.	16	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
	17	४	गुरु	22	21	स्वा.	25	32	ऐन्द्र	18	22	तुला	भ. 9/12 से 22/21 तक, सूर्य कन्या में 12/19, आश्विन संक्रान्ति, (E)	17	6/18	18/31	6/10	18/20	6/11	18/22	6/31	18/35
	18	५	शुक्र	24	16	विशा	27	57	वैधृ	18	56	वृ.21/23	ऋषि-पंचमी, सम्वत्सरी महापर्व (जैन), कुम्भ महापर्व (नासिक) स्नान तिथि (F)	18	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
	19	६	शनि	25	40	अनु.	29	50	विष्क	19	7	वृश्चिक	सूर्य षष्ठी व्रत, स. सि. यो.	19	6/20	18/28	6/11	18/17	6/12	18/19	6/31	18/34
	20	७	रवि	26	24	ज्ये.	–	–	प्रीति	18	48	वृश्चिक	भ. 26/24 से, मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत, गण्डमूल विचार	20	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
	21	८	चंद्र	26	23	ज्ये.	7	4	आयु	17	56	ध. 7/04	भ. 14/24 तक, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, दधीची जयन्ती	21	6/22	18/26	6/12	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
	22	९	मंग	25	36	मूल	7	34	सौभा	16	28	धनु	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन-सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ, गण्डमूल	22	6/22	18/25	6/13	18/14	6/14	18/15	6/32	18/31
	23	१०	बुध	24	4	पू.षा. उ.षा.	7 30	18 19	शोभ	14	23	म.13/07	सूर्य सायन तुला में 13/51, दक्षिण गोल प्रारम्भ, विष्णुश्रृंखल योग (G)	23	6/23	18/24	6/13	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
	24	११	गुरु	21	50	श्रव.	28	39	अति	11	42	मकर	भ. 10/57 से 21/50 तक, पद्मा एकादशी व्रत, श्रवण द्वादशी (21/50 बाद), H	24	6/24	18/23	6/14	18/12	6/15	18/13	6/32	18/29
	25	१२	शुक्र	19	0	धनि	26	26	सुक धृति	8 28	30 52	कुं.15/36	पंचक प्रारम्भ 15/36, प्रदोष व्रत, राहु उ.फा. (3), केतु उ.भा. (I)	25	6/24	18/21	6/14	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
	26	१३	शनि	15	43	शत	23	47	शूल	24	53	कुम्भ		26	6/25	18/20	6/15	18/09	6/16	18/10	6/33	18/27
	27	१४	रवि	12	7	पू.भा.	20	54	गंड	20	42	मी.15/38	भ. 12/07 से 22/14 तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोढल (जालन्धर)J	27	6/25	18/18	6/15	18/08	6/17	18/09	6/33	18/2[illegible]
	28	१५	चंद्र	8	21	उ.भा.	17	55	वृद्धि	16	27	मीन	भाद्रपद पूर्णिमा, पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध, ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण (देखें पृ. 16)	28	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
आ. कृष्ण	००	१	चंद्र	28	35	००	०	०	००	०	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	29	२	मंग	24	59	रेव	15	00	ध्रुव	12	15	मे. 15/00	पंचक समाप्त 15/00, द्वितीया का श्राद्ध, गण्डमूल विचार	29	6/26	18/15	6/16	18/06	6/18	18/06	6/33	18/24
	30	३	बुध	21	43	अश्वि	12	21	व्या. हर्ष	8 28	14 33	मेष	भ. 11/21 से 21/43 तक, भरणी श्राद्ध, गुरु पू.फा. (2) में 18/10, (K)	30	6/27	18/14	6/17	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

गुरु उदय 7 सितं.

कुम्भ महापर्व (नासिक) 13 सितम्बर

A व्रत (देखें पृ. 10-11), सितम्बर मास प्रारम्भ **(B)** कैलाश यात्रा **(C)** मुख्यशाही स्नान, **कुशाग्रहणी अमावस, ॐ हुँ फट् स्वाहा'** इह मंत्रेण कुशोत्पाटनम् (देखें पृ. 84), सूर्य उ.फा. में 26/15, लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला (झुंझुनूं) (राज.) **(E)** मु. 15, पुण्यकाल सं. सारा दिन, **सिद्धि विनायक व्रत**, कलक- चतुर्थी (चन्द्रदर्शन-निषेध) चन्द्रास्त 20/56 (जालन्धर), पत्थर चौथ, विश्वकर्मा पूजन, **बुध वक्री 23/38** **F** (देखें पृ 12), **(G)** 30/19 से, शक आश्विन प्रारम्भ **(H)** विष्णुश्रृंखल योग 28/39 तक (देखें पृ. 84), विष्णुकरवट परिवर्तन उत्सव, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 20/56 **(I)** (1) में 29/59, **वामन द्वादशी (जयंती)** (देखें पृ. 85), **J** सूर्य हस्त में 17/43, शनि अनु. (2) में 25/55, श्रीसत्यनारायण व्रत, कदली व्रत, प्रोष्ठपदी/महालय श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध **(K) शुक्र** मघा (1) **सिंह में 28/14**, तृतीया का श्राद्ध

वि. संवत् 2072, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

सूर्य दक्षिणायन | घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] | शरद्-हेमन्त ऋतुः

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश
आश्विन कृष्ण पक्ष	1	४	गुरु	18	56	भर.	10	8	वज्र	25	18	वृ.15/39	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 10-11), अक्तू. मास प्रारम्भ,चतुर्थी का श्राद्ध
	2	५	शुक्र	16	46	कृति	8	27	सिद्धि	22	34	वृष	महात्मा गाँधी जयन्ती, पंचमी का श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी
	3	६	शनि	15	19	रोहि	7	27	व्य.	20	25	मि.19/14	भ. 15/19 से 26/59 तक, वक्री बुध उ.फा. (4) में 17/21, षष्ठी का श्राद्ध
	4	७	रवि	14	38	मृग	7	13	वरी	18	54	मिथुन	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (चं.उ. व्यापिनी), सप्तमी का श्राद्ध (14/38 तक) (A)
	5	८	चंद्र	14	46	आर्द्रा	7	45	परि	18	0	क.26/38	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त** (सू.उ. व्यापिनी), अष्टमी का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत
	6	९	मंग	15	38	पुन	9	1	शिव	17	41	कर्क	भ. 28/24 से, मंगल पू.फा. (1) में 29/01, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध
	7	१०	बुध	17	10	पुष्य	10	58	सिद्ध	17	52	कर्क	भ. 17/10 तक, वक्री बुध पूर्व में उदय 9/40, दशमी का श्राद्ध,
	8	११	गुरु	19	14	आश्ले	13	27	साध्य	18	26	सिं.13/27	**इन्दिरा एकादशी व्रत**, एकादशी का श्राद्ध
	9	१२	शुक्र	21	39	मघा	16	19	शुभ	19	16	सिंह	सन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध, **बुध मार्गी 20/27**
	10	१३	शनि	24	17	पू.फा.	19	24	शुक्ल	20	17	कं.26/11	भ. 24/17 से, शनि प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध
	11	१४	रवि	26	59	उ.फा.	22	34	ब्रह्म	21	21	कन्या	भ. 13/38 तक, सूर्य चित्रा में 6/45, मासशिवरात्रि व्रत, शस्त्र-विष-(B)
	12	३०	चंद्र	29	36	हस्त	25	41	ऐन्द्र	22	22	कन्या	महालय अमावस, **सोमवती अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध**, पितृ विसर्जन, (C)
आश्विन शुक्ल पक्ष	13	१	मंग	–	–	चित्रा	28	38	वैधृ	23	17	तु.15/11	आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, घटस्थापन-अभिजित (मुहूर्त में), महाराजा अग्रसेन जयन्ती, D
	14	१	बुध	8	2	स्वा.	–	–	विष्क	24	0	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. 15
	15	२	गुरु	10	12	स्वा.	7	21	प्रीति	24	29	वृ.27/10	बुध हस्त में 24/37, मुहर्रम (मु.) सं. 1437 हिजरी प्रारम्भ,
	16	३	शुक्र	12	1	विशा	9	43	आयु	24	40	वृश्चिक	भ. 24/43 से, स. सि. यो. 9/43 से
	17	४	शनि	13	25	अनु.	11	42	सौभा	24	30	वृश्चिक	भ. 13/25 तक, **सूर्य तुला में 24/15, कार्तिक संक्रान्ति**, मु. 15, (E)
	18	५	रवि	14	18	ज्ये.	13	13	शोभ	23	56	ध.13/13	सरस्वती आवाहन मूलभे
	19	६	चंद्र	14	39	मूल	14	11	अति	22	55	धनु	सरस्वती पूजन पू.षाभे
	20	७	मंग	14	23	पू.षा.	14	34	सुक	21	25	म.20/34	भ. 14/23 से 25/57 तक, सरस्वती बलिदान उ.षाभे, भद्रकाली जयंती
	21	८	बुध	13	30	उ.षा.	14	20	धृति	19	24	मकर	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, सरस्वती विसर्जन श्रवणे, मेला काँगड़ा, (F)
	22	९	गुरु	11	59	श्रव.	13	29	शूल	16	54	कुं.24/50	महानवमी, **नवरात्रे समाप्त, विजयादशमी (दशहरा)**, अपराजिता/शस्त्रादि (G)
	23	१०	शुक्र	9	52	धनि.	12	2	गंड	13	56	कुम्भ	भ. 20/33 से, सूर्य सायन वृश्चिक में 23/17, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, (H)
	24	११	शनि	7	13	शत	10	5	वृद्धि	10	32	मी.26/20	भ. 7/13 तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत**, सूर्य स्वा. में 17/12, पद्मनाथ द्वादशी
	oo	१२	शनि	28	8	oo	o	o	oo	o	o	oo	द्वादशी तिथि क्षय oo oo
	25	१३	रवि	24	44	पू.भा. / उ.भा.	7 / 29	42 / 2	ध्रुव / व्या.	6 / 26	48 / 49	मीन	प्रदोष व्रत, बुध चित्रा में 20/18, स. सि. यो. 7/42 से
	26	१४	चंद्र	21	10	रेव	26	13	हर्ष	22	41	मे.26/13	भ. 21/10 से, **पंचक समाप्त 26/13, शरद् पूर्णिमा व्रत** (देखें पृ.85) कोजागर(I)
	27	१५	मंग	17	35	अश्वि	23	25	वज्र	18	34	मेष	भ. 7/23 तक, **आश्विन पूर्णिमा** (स्नानदानादि), महर्षि वाल्मीकि जयन्ती,J
कार्ति. कृष्ण	28	१	बुध	14	9	भर.	20	50	सिद्धि	14	35	वृ.26/14	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल उ.फा. में 20/43,
	29	२	गुरु	11	2	कृति	18	37	व्य.	10	51	वृष	भ. 21/44 से, **बुध तुला में 22/42,**
	30	३	शुक्र	8	25	रोहि	16	57	वरी / परि	7 / 28	31 / 43	मि.28/21	भ. 8/25 तक, **व्रत करवा-चौथ** (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु (देखें पृ.10-11), K
	oo	४	शुक्र	30	26	oo	o	o	oo	o	o	oo	चतुर्थी तिथि का क्षय oo oo
	31	५	शनि	29	13	मृग	15	58	शिव	26	30	मिथुन	शनि अनु. (3) में 27/15,

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
2	6/28	18/10	6/18	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
3	6/29	18/09	6/19	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
4	6/30	18/08	6/19	17/59	6/22	18/00	6/34	18/21
5	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
6	6/31	18/06	6/20	17/57	6/23	17/58	6/35	18/19
7	6/31	18/05	6/21	17/56	6/23	17/56	6/35	18/19
8	6/32	18/04	6/22	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
9	6/33	18/03	6/22	17/54	6/25	17/54	6/35	18/17
10	6/33	18/01	6/23	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
11	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
12	6/35	17/59	6/24	17/50	6/27	17/51	6/36	18/14
13	6/36	17/57	6/24	17/49	6/27	17/49	6/36	18/14
14	6/37	17/55	6/25	17/48	6/28	17/48	6/37	18/13
15	6/38	17/54	6/26	17/47	6/29	17/47	6/37	18/12
16	6/38	17/53	6/26	17/46	6/29	17/46	6/37	18/11
17	6/39	17/52	6/27	17/45	6/30	17/45	6/38	18/10
18	6/40	17/51	6/27	17/44	6/31	17/44	6/38	18/09
19	6/41	17/50	6/28	17/43	6/31	17/43	6/38	18/08
20	6/41	17/49	6/29	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
21	6/42	17/48	6/29	17/41	6/33	17/41	6/39	18/06
22	6/43	17/47	6/30	17/40	6/34	17/40	6/39	18/06
23	6/43	17/46	6/31	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
24	6/44	17/45	6/31	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
o	oo	oo	oo	oo	oo	oo	oo	oo
25	6/45	17/44	6/32	17/37	6/36	17/37	6/40	18/04
26	6/46	17/43	6/33	17/37	6/37	17/36	6/41	18/04
27	6/47	17/42	6/33	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
28	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
29	6/49	17/39	6/35	17/34	6/39	17/33	6/42	18/03
30	6/50	17/38	6/36	17/34	6/40	17/32	6/42	18/03
o	oo	oo	oo	oo	oo	oo	oo	oo
31	6/51	17/38	6/36	17/33	6/40	17/31	6/43	18/02

(A) (दोपहर 2/38 से पूर्व) **(B)** दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध, **(C)** चतुर्दशी/अमावस का श्राद्ध, मेला फाल्गु. व कपालमोचन (कुरुक्षेत्र) (हरि.) **(D)** मातामह (नाना) का श्राद्ध **(E)** पुण्यकाल सं. दोप. 12/15 बाद तथा अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु पू.फा. (3) में 13/45, शुक्र पू.फा. में 11/03, उपाङ्ग ललिता व्रत, आकाश दीपदान प्रारम्भ **(F)** ज्वालामुखी (हि.प्र.) **(G)** पूजा, पंचक प्रारम्भ 24/50 **(H)** नवरात्रे पारणा, शक कार्तिक प्रारम्भ, विजयादशमी (बंगाल, केरला), माधवाचार्य जयन्ती, भरत मिलाप **(I)** व्रत, **(J)** कार्तिक स्नान प्रारम्भ, बुध पूर्व में अस्त 29/01, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 85) महारास पूर्णिमा (ब्रजभूमि) **(K)** श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, शुक्र उ.फा. में 26/30, दशरथ चतुर्थी

वि. संवत् 2072, नवंबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश [सूर्य दक्षिणायन] घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] [हेमन्त ऋतुः]	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	६	रवि	28	51	आर्द्रा	15	46	सिद्ध	24	58	मिथुन	भ. 28/51 से, स्कन्द षष्ठी व्रत, नवम्बर मास प्रारम्भ	1	6/51	17/35	6/37	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	७	चंद्र	29	21	पुन	16	25	साध्य	24	5	क.10/10	भ. 17/06 तक, बुध स्वा. में 23/22	2	6/52	17/34	6/37	17/34	6/41	17/30	6/44	18/01
	3	८	मंग	30	39	पुष्य	17	53	शुभ	23	51	कर्क	**अहोई अष्टमी व्रत**, कालाष्टमी, दम्पत्य अष्टमी, **मंगल कन्या में 8/07**,A	3	6/53	17/33	6/38	17/33	6/42	17/29	6/44	18/01
	4	९	बुध	–	–	आश्ले	20	3	शुक्ल	24	9	सिं.20/03		4	6/54	17/32	6/39	17/32	6/43	17/28	6/45	18/00
	5	९	गुरु	8	37	मघा	22	47	ब्रह्म	24	52	सिंह	भ. 21/51 से, गुरु पू.फा. (4) में 8/08	5	6/54	17/31	6/39	17/31	6/44	17/27	6/45	18/00
	6	१०	शुक्र	11	5	पू.फा.	25	52	ऐन्द्र	25	50	सिंह	भ. 11/05 तक, सूर्य विशा. में 25/25	6	6/55	17/30	6/40	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
	7	११	शनि	13	47	उ.फा.	29	3	वैधृ	26	53	कं. 8/39	**रमा एकादशी व्रत**, गोवत्स द्वादशी (प्रदोषे), कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	7	6/56	17/30	6/41	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
	8	१२	रवि	16	32	हस्त	–	–	विष्क	27	53	कन्या	धन त्रयोदशी पर्व प्रारम्भ (प्रदोषकाल से), स. सि. यो.	8	6/57	17/29	6/42	17/29	6/46	17/25	6/46	17/58
	9	१३	चंद्र	19	7	हस्त	8	10	प्रीति	28	43	तु.21/38	भ. 19/07 से, सोम प्रदोष व्रत, धनत्रयोदशी (देखें पृ. 86), श्रीधनवन्तरी जयन्ती,(B)	9	6/58	17/28	6/43	17/28	6/47	17/24	6/47	17/58
	10	१४	मंग	21	23	चित्रा	11	2	आयु	29	18	तुला	भ. 8/15 तक, नरक चौदश, रूप चौदश, यमाय तर्पण, (C)	10	6/59	17/28	6/43	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
	11	३०	बुध	23	17	स्वा.	13	34	सौभा	29	34	तुला	कार्तिक अमावस, दीपावली, **श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (देखें पृ. 87), (D)	11	7/00	17/27	6/44	17/27	6/49	17/23	6/48	17/57
कार्तिक शुक्ल पक्ष	12	१	गुरु	24	46	विशा	15	42	शोभ	29	31	वृ. 9/13	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र हस्त में 14/55, अन्नकूट-गोवर्धन पूजा,E	12	7/01	17/26	6/45	17/26	6/50	17/22	6/49	17/57
	13	२	शुक्र	25	48	अनु	17	26	अति	29	9	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, मु. 15, भ्रातृ-दूज, यम-द्वितीया, यमुना-स्नान, विश्वकर्मा पूजन F	13	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	14	३	शनि	26	25	ज्ये.	18	45	सुक	28	26	ध.18/45	बाल-दिवस, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, नेहरू जयन्ती	14	7/03	17/26	6/46	17/25	6/51	17/21	6/50	17/56
	15	४	रवि	26	36	मूल	19	39	धृति	27	24	धनु	भ. 14/31 से 26/36 तक, दूर्वा गणपति व्रत, आकाशदीप दान समाप्ति	15	7/04	17/25	6/47	17/25	6/52	17/21	6/50	17/56
	16	५	चंद्र	26	23	पू.षा.	20	9	शूल	26	3	म.26/12	**सूर्य वृश्चिक में 24/02, मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल (G)	16	7/05	17/25	6/48	17/24	6/53	17/20	6/51	17/56
	17	६	मंग	25	44	उ.षा.	20	14	गंड	24	22	मकर	**सूर्य षष्ठी पर्व** (बिहार), बुध वृश्चिक में 7/30,	17	7/06	17/24	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/55
	18	७	बुध	24	39	श्रव	19	54	वृद्धि	22	21	मकर	भ. 24/39 से,	18	7/07	17/23	6/50	17/23	6/55	17/19	6/52	17/55
	19	८	गुरु	23	9	धनि	19	9	ध्रुव	19	58	कुं. 7/35	भ. 11/54 तक, **पंचक प्रारम्भ 7/35**, गोपाष्टमी, मंगल हस्त में 22/28,H	19	7/08	17/23	6/50	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	20	९	शुक्र	21	13	शत	17	58	व्या.	17	16	कुम्भ	अक्षय-नवमी, कूष्माण्ड नवमी, सूर्य अनु. में 7/22, आरोग्य व्रत	20	7/09	17/23	6/51	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
	21	१०	शनि	18	53	पू.भा.	16	24	हर्ष	14	14	मी.10/49	भ. 29/33 से, ब्रह्मप्राप्ति व्रत, **भीष्मपंचक प्रारम्भ** (देखें पृ. 86),	21	7/10	17/22	6/52	17/22	6/57	17/18	6/54	17/55
	22	११	रवि	16	13	उ.भा.	14	29	वज्र	10	54	मीन	भ. 16/13 तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत**, चातुर्मास्य व्रत, (I)	22	7/11	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
	23	१२	चंद्र	13	17	रेव	12	18	सिद्धि व्य.	7 27	22 40	मे.12/18	पंचक समाप्त 12/18, **सोम प्रदोष व्रत**, हरिप्रबोधोत्सव, **तुलसी विवाह** J	23	7/12	17/22	6/54	17/21	6/59	17/18	6/55	17/55
	24	१३	मंग	10	14	अश्वि	9	58	वरी	23	56	मेष	वैकुण्ठ चतुर्दशी, शुक्र चित्रा में 12/37, स. सि. यो.	24	7/13	17/21	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	25	१४	बुध	7	10	भर. कृति	7 29	38 27	परि	20	17	वृ.13/04	भ. 7/10 से 17/42 तक, **कार्तिक पूर्णिमा** (7/10 बाद), श्रीगुरु नानक जयं. (K)	25	7/14	17/21	6/55	17/21	7/01	17/17	6/56	17/55
	००	१५	बुध	28	14	००	०	०	००	०	०	००	पूर्णिमा तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
मार्ग. कृष्ण	26	१	गुरु	25	38	रोहि	27	36	शिव	16	49	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ,	26	7/15	17/21	6/56	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
	27	२	शुक्र	23	31	मृग	26	14	सिद्ध	13	42	मि.14/50	बुध ज्येष्ठा में 21/51	27	7/16	17/20	6/57	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	28	३	शनि	22	1	आर्द्रा	25	30	साध्य	11	2	मिथुन	भ. 10/46 से 22/01 तक, गुरु उ.फा. (1) में 20/49, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	28	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	29	४	रवि	21	18	पुर्न	25	32	शुभ	8	56	क.19/27	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), शनि अनु. (4) में 21/40	29	7/17	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/58	17/55
	30	५	चंद्र	21	24	पुष्य	26	23	शुक्ल ब्रह्म	7 30	27 38	कर्क	**शुक्र तुला में 7/45**, स. सि. यो.	30	7/18	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/59	17/55

(A) शुक्र कन्या में 7/30, दम्पत्य अष्टमी **(B)** यमाय प्रीत्यर्थं दीपदान, **श्रीहनुमान जयन्ती** (निशीथव्यापिनी) (देखें पृ. 86), मासशिवरात्रि व्रत **(C)** बुध विशा. में 26/11, **(D)** कुबेर पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), काली पूजन, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न **(E)** बलि व मार्गपाली पूजा, गोक्रीडा, विश्वकर्मा दिवस (पंजाब) **(F) शनि पश्चिम में अस्त 9/50**, कलम-दवात पूजन **(G)** सं. दोप. 12/02 से अगले दिन मध्याह्न तक, ज्ञान पंचमी, जया पंचमी **(H)** बुध अनु. में 9/54 **(I)** नियमादि समाप्त, सूर्य सायन धनु में 20/55, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ **(J)** (विवाह नक्षत्रे-अश्वि व रेव.), **(K)** भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, त्रिपुरोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्कर तीर्थ (राज.), **'महाकार्तिकी'**

वि. संवत् 2072, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिण/उत्तरायणे — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — हेमन्त/शिशिर ऋतुः
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	1	६	मंग.	22	22	आश्ले	28	2	ऐन्द्र	30	27	सिं.28/02	भ. 22/22 से, दिसम्बर मास प्रारम्भ, गण्डमूल विचार
	2	७	बुध	24	5	मघा	30	23	वैधृ	30	48	सिंह	भ. 11/14 तक, गण्डमूल 30/23 तक
	3	८	गुरु	26	23	पू.फा.	–	–	विष्क	–	–	सिंह	**कालभैरवाष्टमी**, सूर्य ज्ये. में 11/45
	4	९	शुक्र	29	4	पू.फा.	9	14	विष्क	7	33	कं.16/01	स. सि. यो. 9/14 तक
	5	१०	शनि	–	–	उ.फा.	12	22	प्रीति	8	31	कन्या	भ. 18/27 से, शुक्र स्वाति में 25/00
	6	१०	रवि	7	49	हस्त	15	31	आयु	9	31	तु.29/01	भ. 7/49 तक, **बुध मूल (1) धनु में 12/01**, स. सि. यो.
	7	११	चंद्र	10	23	चित्रा	18	25	सौभा	10	23	तुला	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**
	8	१२	मंग	12	35	स्वा.	20	56	शोभ	10	58	तुला	भौम प्रदोष व्रत, स. सि. यो.
	9	१३	बुध	14	17	विशा	22	56	अति	11	10	वृ.16/29	भ. 14/17 से 26/51 तक, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी जयन्ती,
	10	१४	गुरु	15	24	अनु.	24	24	सुक	10	58	वृश्चिक	देविका स्नान (का.), मेला पुरमण्डल (जम्मू), गण्डमूल 24/24 से
	11	३०	शुक्र	15	59	ज्ये.	25	21	धृति	10	19	ध.25/21	**मार्गशीर्ष अमावस**, बुध पश्चिम में उदय 15/49, गण्डमूल विचार
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	12	१	शनि	16	4	मूल	25	50	शूल	9	17	धनु	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल चित्रा में 14/21
	13	२	रवि	15	43	पू.षा.	25	57	गंड वृद्धि	7 30	55 14	धनु	रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ,
	14	३	चंद्र	15	1	उ.षा.	25	44	ध्रुव	28	19	म. 7/55	भ. 26/31 से, बुध पू.षा. में 28/18
	15	४	मंग.	14	1	श्रव.	25	15	व्या.	26	11	मकर	भ. 14/01 तक,
	16	५	बुध	12	47	धनि	24	33	हर्ष	23	52	कुं.12/55	पंचक प्रारम्भ 12/55, **सूर्य मूल (1) धनु में 14/42, पौष संक्रान्ति, A**
	17	६	गुरु	11	19	शत.	23	38	वज्र	21	23	कुम्भ	शुक्र विशा. में 7/15, स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी
	18	७	शुक्र	9	39	पू.भा.	22	31	सिद्धि	18	45	मी.16/49	भ. 9/39 से 20/43 तक, मित्र (विष्णु) सप्तमी
	19	८	शनि	7	47	उ.भा.	21	13	व्य.	15	57	मीन	
	००	९	शनि	29	44	००	०	०	००	०	०	००	नवमी तिथि का क्षय ०० ००
	20	१०	रवि	27	31	रेव	19	45	वरी	13	1	मे.19/45	**पंचक समाप्त 19/45,**
	21	११	चंद्र	25	12	अश्वि	18	9	परि शिव	9 30	57 50	मेष	भ. 14/22 से 25/12 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती**
	22	१२	मंग	22	50	भर.	16	30	सिद्ध	27	41	वृ.22/05	सूर्य सायन मकर में 10/18, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रा. (B)
	23	१३	बुध	20	33	कृति	14	52	साध्य	24	38	वृष	प्रदोष व्रत, **मंगल तुला में 29/57**, अनङ्ग त्रयोदशी,
	24	१४	गुरु	18	28	रोहि	13	24	शुभ	21	44	मि.24/46	भ. 18/28 से 29/35 तक, बुध उ.षा. में 9/01, पिशाचमोचन श्राद्ध, (C)
	25	१५	शुक्र	16	42	मृग	12	14	शुक्ल	19	8	मिथुन	मार्गशीर्ष पूर्णिमा, **शुक्र वृश्चिक में 15/14**, त्रिपुरभैरव जयन्ती, (D)
पौष कृष्ण पक्ष	26	१	शनि	15	24	आर्द्रा	11	30	ब्रह्म	16	54	क.29/18	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **बुध मकर में 23/49**
	27	२	रवि	14	42	पुर्न	11	19	ऐन्द्र	15	10	कर्क	भ. 26/43 से, रविपुष्य योग 11/19 से
	28	३	चंद्र	14	43	पुष्य	11	49	वैधृ	13	58	कर्क	भ. 14/43 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10–11), शुक्र अनु. में 9/29,E
	29	४	मंग	15	29	अश्ले	13	3	विष्क	13	20	सिं.13/03	सूर्य पू.षा. में 16/59, गण्डमूल विचार
	30	५	बुध	16	59	मघा	14	58	प्रीति	13	17	सिंह	गण्डमूल 14/58 तक
	31	६	गुरु	19	6	पू.फा.	17	30	आयु	13	42	कं.24/13	भ. 19/06 से प्रारम्भ

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	7/19	17/20	7/00	17/20	7/06	17/16	6/59	17/56
2	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
3	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
4	7/21	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
5	7/22	17/20	7/03	17/20	7/09	17/16	7/02	17/57
6	7/23	17/20	7/04	17/20	7/10	17/16	7/03	17/57
7	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
8	7/24	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/04	17/57
9	7/25	17/20	7/06	17/21	7/12	17/17	7/05	17/58
10	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
11	7/27	17/21	7/07	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
12	7/28	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/07	17/59
13	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/18	7/07	17/59
14	7/29	17/22	7/09	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
15	7/30	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
16	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
17	7/31	17/23	7/11	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
18	7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/20	7/10	18/01
19	7/32	17/23	7/12	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
०	००	००	००	००	००	००	००	००
20	7/32	17/23	7/13	17/24	7/19	17/20	7/11	18/02
21	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
22	7/33	17/24	7/14	17/25	7/20	17/21	7/12	18/03
23	7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
24	7/34	17/26	7/15	17/26	7/21	17/23	7/13	18/04
25	7/35	17/26	7/15	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
26	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
27	7/36	17/27	7/16	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
28	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
29	7/36	17/29	7/17	17/29	7/23	17/26	7/15	18/06
30	7/37	17/30	7/17	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
31	7/37	17/31	7/18	17/31	7/24	17/27	7/15	18/07

(A) मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रातः 8/18 से, श्रीराम विवाहोत्सव, श्रीपञ्चमी, नाग-पंचमी, शनि पूर्व में उदय 23/53, (B) शक पौष प्रारम्भ, अखण्ड द्वादशी (C) शिवचतुर्दशी व्रत, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (देखें पृ. 86), श्रीसत्यनारायण व्रत (D) क्रिसमिस डे (क्रिश्चियन) (E) शनि ज्ये. (1) में 14/58, गण्डमूल 11/49 से,

वि. संवत् 2072, जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचाङ्ग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2016 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य उत्तरायण — घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
पौष कृष्ण पक्ष	1	७	शुक्र	21	39	उ.फा.	20	27	सौभा	14	28	कन्या	भ. 8/23 तक, जनवरी सन् 2016 ई. प्रारम्भ,	1	7/37	17/29	7/18	17/31	7/24	17/28	7/16	18/08
	2	८	शनि	24	22	हस्त	23	35	शोभ	15	25	कन्या	रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	2	7/37	17/30	7/18	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
	3	९	रवि	26	59	चित्रा	26	36	अति	16	22	तु.13/07		3	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
	4	१०	चंद्र	29	13	स्वा.	29	17	सुक	17	6	तुला	भ. 16/06 से 29/13 तक, मंगल स्वाती में 28/33,	4	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
	5	११	मंग	30	54	विशा	31	26	धृति	17	29	वृ.24/57	सफला एकादशी व्रत (स्मार्त), **बुध वक्री 18/34**	5	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	6	१२	बुध	दि.	रा.	अनु.	–	–	शूल	17	23	वृश्चिक	**सफला एकादशी व्रत (वैष्णव)**, स. सि. यो.	6	7/38	17/33	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	7	१२	गुरु	7	55	अनु.	8	57	गंड	16	47	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, गण्डमूल 8/57 से प्रा.,	7	7/38	17/34	7/19	17/35	7/25	17/32	7/17	18/12
	8	१३	शुक्र	8	14	ज्ये.	9	47	वृद्धि	15	39	ध. 9/47	भ. 8/14 से 20/04 तक, **गुरु वक्री 10/05**, शुक्र ज्येष्ठा में 8/50, **(A)**	8	7/38	17/36	7/19	17/36	7/25	17/33	7/17	18/12
	9	१४	शनि	7	54	मूल	10	1	ध्रुव	14	2	धनु	पौष शनिवारी अमावस (प्रातः 7/54 बाद), गण्डमूल 10/01 तक	9	7/39	17/37	7/19	17/37	7/25	17/34	7/17	18/13
	००	३०	शनि	31	1	००	०	०	००	०	०	००	अमावस तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
पौष शुक्ल पक्ष	10	१	रवि	29	40	पू.षा.	9	42	व्या.	12	0	म.15/33	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,	10	7/39	17/38	7/19	17/38	7/25	17/35	7/18	18/14
	11	२	चंद्र	28	0	उ.षा.	8	57	हर्ष वज्र	9 31	38 2	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य उ.षा. में 18/55, आरोग्य व्रत	11	7/39	17/38	7/20	17/38	7/25	17/36	7/18	18/14
	12	३	मंग	26	6	श्रव. धनि.	7 30	55 40	सिद्धि	28	15	कुं.19/18	**पंचक प्रारम्भ 19/18**, रबि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, +	12	7/38	17/39	7/20	17/39	7/25	17/36	7/18	18/15
	13	४	बुध	24	5	शत.	29	19	व्य.	25	23	कुम्भ	भ. 13/06 से 24/05 तक, **लोहड़ी पर्व** (पंजाब, हरि., दिल्ली आदि)	13	7/38	17/39	7/19	17/40	7/25	17/37	7/19	18/16
	14	५	गुरु	22	1	पू.भा.	27	55	वरी	22	29	मी.22/16	**सूर्य मकर में 25/25, मकर (माघ) संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल **(B)**	14	7/38	17/40	7/19	17/41	7/25	17/38	7/19	18/17
	15	६	शुक्र	19	57	उ.भा.	26	33	परि	19	35	मीन	+स्वा. विवेकानंद जयं.	15	7/38	17/42	7/19	17/42	7/25	17/39	7/19	18/17
	16	७	शनि	17	56	रेव	25	13	शिव	16	43	मे.25/13	भ. 17/56 से 28/57 तक, **पंचक समाप्त 25/13**, वक्री बुध पू.षा. (4)**C**	16	7/37	17/43	7/19	17/42	7/25	17/40	7/19	18/18
	17	८	रवि	15	58	अश्वि	23	58	सिद्ध	13	53	मेष	श्रीदुर्गाष्टमी,	17	7/37	17/43	7/19	17/43	7/24	17/41	7/19	18/18
	18	९	चंद्र	14	5	भर.	22	48	साध्य	11	8	वृ.28/31	**शुक्र मूल (1) धनु में 30/20**	18	7/37	17/44	7/19	17/44	7/24	17/42	7/19	18/19
	19	१०	मंग	12	20	कृति	21	46	शुभ शुक्ल	8 29	28 56	वृष	भ. 23/32 से,	19	7/36	17/45	7/18	17/45	7/24	17/43	7/19	18/20
	20	११	बुध	10	43	रोहि	20	54	ब्रह्म	27	32	वृष	भ. 10/43 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**, वक्री बुध पूर्व में उदय 11/44, **(D)**	20	7/36	17/46	7/18	17/46	7/24	17/43	7/19	18/20
	21	१२	गुरु	9	20	मृग.	20	17	ऐन्द्र	25	22	मि. 8/33	सुजन्म द्वादशी, प्रदोष व्रत, शक माघ प्रारम्भ	21	7/36	17/47	7/18	17/47	7/24	17/44	7/19	18/21
	22	१३	शुक्र	8	14	आर्द्रा	20	0	वैधृ	23	29	मिथुन	ईशान व्रत	22	7/35	17/48	7/18	17/47	7/23	17/45	7/19	18/22
	23	१४	शनि	7	31	पुन.	20	7	विष्क	21	55	क.14/03	भ. 7/31 से 19/24 तक, **पौष पूर्णिमा** (प्रातः 7/31 बाद), माघस्नान प्रा.**E**	23	7/35	17/49	7/17	17/48	7/23	17/46	7/19	18/22
	००	१५	शनि	31	16	००	०	०	००	०	०	००	पूर्णिमा तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
माघ कृष्ण पक्ष	24	१	रवि	–	–	पुष्य	20	44	प्रीति	20	46	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य श्रवण में 21/14, रविपुष्य योग	24	7/35	17/50	7/17	17/49	7/23	17/47	7/19	18/23
	25	१	चंद्र	7	33	अश्ले	21	54	आयु	20	4	सिं.21/54	**बुध मार्गी 27/20,**	25	7/35	17/51	7/17	17/50	7/22	17/48	7/19	18/23
	26	२	मंग	8	26	मघा	23	39	सौभा	19	49	सिंह	भ. 21/11 से, **भारत गणतन्त्र दिवस (67वाँ)**	26	7/34	17/52	7/16	17/51	7/22	17/49	7/18	18/24
	27	३	बुध	9	56	पू.फा.	25	58	शोभ	20	0	सिंह	भ. 9/56 तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), सौभाग्य**(F)**	27	7/33	17/53	7/16	17/52	7/21	17/50	7/18	18/24
	28	४	गुरु	11	58	उ.फा.	28	43	अति	20	35	कं. 8/37	शनि ज्येष्ठा (1) में 14/58, जन्मदिन लाला लाजपतराय जी	28	7/32	17/54	7/16	17/52	7/21	17/51	7/18	18/25
	29	५	शुक्र	14	25	हस्त	–	–	सुक	21	25	कन्या	शुक्र पू.षा. में 26/38, राहु उ.फा. (1) सिंहे, केतु पू.भा. (3) कुम्भ में 25/21	29	7/32	17/55	7/15	17/53	7/20	17/52	7/18	18/25
	30	६	शनि	17	5	हस्त	7	45	धृति	22	23	तु.21/19	भ. 17/05 से 30/25 तक, मंगल विशाखा में 11/06	30	7/31	17/56	7/15	17/54	7/20	17/53	7/18	18/26
	31	७	रवि	19	44	चित्रा	10	51	शूल	23	17	तुला	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (मतान्तरे), त्रिपुष्कर योग	31	7/31	17/57	7/14	17/55	7/19	17/54	7/18	18/27

(A) मासशिवरात्रि व्रत, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 27/41 **(B)** सं. अगले दिन मध्याह्न तक, **वक्री बुध धनु में 15/01**, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ **(C)** में 28/35, मार्तण्ड सप्तमी, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती **(D)** सूर्य सायन कुम्भ में 20/57 **(E)** श्रीशाकंभरी जयन्ती, नेताजी सुभाषचंद्र जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत **(F)** सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी, वक्रतुण्ड चतुर्थी

वि. संवत् 2072, फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर-वसन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
माघ कृष्ण पक्ष	1	८	चंद्र	22	6	स्वा.	13	46	गंड	23	57	तुला	फरवरी, मास सं. 2016 ई. प्रारम्भ	1	7/30	17/57	7/14	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	2	९	मंग	23	57	विशा	16	16	वृद्धि	24	13	वृ. 9/41		2	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
	3	१०	बुध	25	7	अनु	18	8	ध्रुव	23	59	वृश्चिक	भ. 12/32 से 25/07 तक, स. सि. यो.	3	7/29	17/58	7/12	17/57	7/17	17/56	7/17	18/29
	4	११	गुरु	25	31	ज्ये.	19	18	व्या.	23	10	ध.19/18	**षट्तिला एकादशी व्रत,**	4	7/28	17/59	7/12	17/58	7/17	17/57	7/16	18/29
	5	१२	शुक्र	25	8	मूल	19	43	हर्ष	21	45	धनु	तिल द्वादशी, बुध उ.षा. में 20/19	5	7/28	18/00	7/11	17/59	7/16	17/58	7/16	18/30
	6	१३	शनि	24	3	पू.षा.	19	25	वज्र	19	45	म.25/14	भ. 24/03 से, शनि प्रदोष व्रत, सूर्य धनि. में 24/24, मासशिवरात्रि व्रत	6	7/27	18/02	7/11	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
	7	१४	रवि	22	20	उ.षा.	18	29	सिद्धि	17	16	मकर	भ. 11/12 तक, महोदय योग 22/20 से प्रा.	7	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
	8	३०	चंद्र	20	9	श्रव.	17	3	व्य.	14	22	कुं.28/12	पंचक प्रारम्भ 28/12, **माघ (मौनी) अमावस, सोमवती अमावस, (A)**	8	7/25	18/04	7/09	18/01	7/14	18/00	7/15	18/31
माघ शुक्ल पक्ष	9	१	मंग	17	37	धनि	15	16	वरी	11	9	कुम्भ	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, शुक्र उ.षा. में 22/02,	9	7/24	18/05	7/09	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
	10	२	बुध	14	52	शत	13	15	परि शिव	7 28	45 14	मी.29/41	जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ,	10	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
	11	३	गुरु	12	3	पू.भा.	11	10	सिद्ध	24	44	मीन	भ. 22/40 से, **गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत, श्रीगणेश तिल चतुर्थी, (B)**	11	7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
	12	४	शुक्र	9	17	उ.भा. रेव	9 31	7 13	साध्य	21	20	मे.31/13	भ. 9/17 तक, **पंचक समाप्त 31/13, वसन्त (श्री) पंचमी, शुक्र (C)**	12	7/22	18/07	7/06	18/05	7/11	18/04	7/13	18/33
	००	५	शुक्र	30	40	००	०	०	००	०	०	००	पंचमी तिथि क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	13	६	शनि	28	17	अश्वि	29	33	शुभ	18	5	मेष	**सूर्य कुम्भ में 14/24, फाल्गुन संक्रान्ति,** मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रातः 8/00 से,	13	7/21	18/08	7/05	18/05	7/10	18/04	7/12	18/34
	14	७	रवि	26	12	भर.	28	11	शुक्ल	15	4	मेष	भ. 26/12 से, रथ-आरोग्य सप्तमी, पुत्र सप्तमी व्रत, अचला-भानु (D)	14	7/20	18/09	7/05	18/06	7/09	18/05	7/12	18/34
	15	८	चंद्र	24	27	कृति	27	9	ब्रह्म	12	18	वृ. 9/53	भ. 13/20 तक, भीष्माष्टमी	15	7/19	18/09	7/04	18/07	7/08	18/06	7/11	18/35
	16	९	मंग	23	5	रोहि	26	30	ऐन्द्र	9	49	वृष		16	7/18	18/10	7/03	18/08	7/07	18/07	7/11	18/35
	17	१०	बुध	22	7	मृग	26	14	वैधृ विष्क	7 29	39 48	मि.14/19	बुध श्रव. में 8/08, वक्री गुरु पू.फा. (4) में 25/04, स. सि. यो.	17	7/17	18/11	7/02	18/08	7/06	18/08	7/10	18/36
	18	११	गुरु	21	34	आर्द्रा	26	24	प्रीति	28	17	मिथुन	भ. 9/51 से 21/34 तक, **जया एकादशी व्रत**	18	7/16	18/12	7/01	18/09	7/05	18/09	7/09	18/36
	19	१२	शुक्र	21	27	पुर्न	26	59	आयु	27	7	क.20/47	सूर्य शत. में 28/52, भीष्म-द्वादशी, सूर्य सायन मीन में 11/04, (E)	19	7/15	18/13	7/00	18/10	7/04	18/09	7/09	18/37
	20	१३	शनि	21	47	पुष्य	28	0	सौभा	26	18	कर्क	शनि प्रदोष व्रत, **मंगल वृश्चिक में** 16/42, शुक्र श्रवण में 17/02, (F)	20	7/14	18/14	6/59	18/11	7/03	18/10	7/08	18/37
	21	१४	रवि	22	34	अश्ले	29	28	शोभ	25	50	सिं.29/28	भ. 22/34 से, गण्डमूल विचार	21	7/13	18/15	6/59	18/11	7/02	18/11	7/08	18/37
	22	१५	चंद्र	23	50	मघा	–	–	अति	25	43	सिंह	भ. 11/12 तक, **माघ-पूर्णिमा,** माघस्नान समाप्त, **श्रीगुरु रविदास (G)**	22	7/12	18/16	6/58	18/12	7/01	18/12	7/07	18/38
फाल्गुन कृष्ण	23	१	मंग	25	32	मघा	7	22	सुक	25	57	सिंह	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 7/22 तक	23	7/11	18/17	6/57	18/13	7/00	18/13	7/06	18/38
	24	२	बुध	27	39	पू.फा.	9	42	धृति	26	29	कं.16/21		24	7/10	18/17	6/56	18/13	6/59	18/14	7/06	18/38
	25	३	गुरु	30	5	उ.फा.	12	24	शूल	27	16	कन्या	भ. 16/52 से 30/05 तक,	25	7/09	18/18	6/55	18/14	6/58	18/15	7/05	18/39
	26	४	शुक्र	–	–	हस्त	15	22	गंड	28	12	तु.28/54	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), बुध धनि. में 16/54,	26	7/07	18/19	6/54	18/15	6/57	18/15	7/04	18/39
	27	४	शनि	8	43	चित्रा	18	28	वृद्धि	29	10	तुला		27	7/06	18/20	6/53	18/15	6/56	18/16	7/03	18/39
	28	५	रवि	11	21	स्वा.	21	30	ध्रुव	30	2	तुला	मंगल अनुराधा में 15/24,	28	7/05	18/20	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39
	29	६	चंद्र	13	48	विशा	24	17	व्या.	30	40	वृ.17/38	भ. 13/48 से 26/50 तक,	29	7/05	18/20	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39

(A) बुध मकर में 27/06, महोदय योग 14/22 तक, मेला हरिद्वार, प्रयागराज आदि **(B)** वरद् (कुन्द) चतुर्थी **(C)** मकर में 14/49, सरस्वती पूजन, वागेश्वरी जयन्ती **(D)** सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती
(E) तिल द्वादशी, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, **(F)** शक फाल्गुन प्रारम्भ, मेला जैसलमेर (राज.) प्रारम्भ-3 दिन **(G)** जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीललिता जयन्ती

वि. संवत् 2072, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण, वसन्त ऋतुः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	1	७	मंग.	15	52	अनु.	26	37	हर्ष	30	53	वृश्चिक	मार्च, सन् 2016 ई. प्रारम्भ, **बुध कुम्भ में 24/11,**
	2	८	बुध	17	20	ज्ये.	28	20	वज्र	30	37	ध.28/20	शुक्र धनि. में 11/47, गण्डमूल विचार,
	3	९	गुरु	18	5	मूल	29	20	सिद्धि	29	45	धनु	भ. 30/04 से, रामदास नवमी, गण्डमूल 29/20 तक
	4	१०	शुक्र	18	2	पू.षा.	29	32	व्य.	28	16	धनु	भ. 18/02 तक, सूर्य पू.भा. में 11/14
	5	११	शनि	17	12	उ.षा.	28	58	वरी	26	9	म.11/27	**विजया एकादशी व्रत**, बुध शत. में 26/43
	6	१२	रवि	15	36	श्रव	27	43	परि	23	28	मकर	प्रदोष व्रत
	7	१३	चंद्र	13	21	धनि	25	52	शिव	20	18	कुं.14/51	भ. 13/21 से 23/58 तक, पंचक प्रारम्भ 14/51, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, A**
	8	१४	मंग.	10	34	शत	23	36	सिद्ध	16	44	कुम्भ	अमावस (पितृकार्येषु), बुध पूर्व में अस्त 25/07
	9	३०	बुध	7	25	पू.भा.	21	2	साध्य	12	54	मी.15/41	फाल्गुन अमावस-स्नानदानादि, ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) देखें पृ.18
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	oo	१	बुध	28	1	oo	o	o	oo	o	o	oo	प्रतिपदा तिथि का क्षय oo oo
	10	२	गुरु	24	34	उ.भा.	18	21	शुभ शुक्ल	8 28	54 53	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. 30, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती
	11	३	शुक्र	21	12	रेव	15	42	ब्रह्म	24	58	मे.15/42	**पंचक समाप्त 15/42**, जमादि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ
	12	४	शनि	18	3	अश्वि	13	15	ऐन्द्र	21	16	मेष	भ. 7/38 से 18/03 तक, अविघ्नकर व्रत
	13	५	रवि	15	16	भर	11	7	वैधृ	17	52	वृ.16/40	याज्ञवल्क्य जयन्ती, बुध पू.भा. में 19/28, शुक्र शत. में 06/25,
	14	६	चंद्र	12	58	कृति	9	27	विष्क	14	52	वृष	**सूर्य मीन में 11/17, चैत्र संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल सं. सारा दिन,
	15	७	मंग	11	12	रोहि	8	19	प्रीति	12	19	मि.19/58	भ. 11/12 से 22/38 तक, वक्री गुरु पू.फा. (3) में 12/42, लक्ष्मी-सीता अष्टमी
	16	८	बुध	10	3	मृग	7	47	आयु	10	15	मिथुन	**होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा-अष्टमी, बुधाष्टमी
	17	९	गुरु	9	32	आर्द्रा	7	52	सौभा	8	42	क.26/20	सूर्य उ.भा. में 19/36, स. सि. यो. 7/52 से
	18	१०	शुक्र	9	39	पुन	8	33	शोभ	7	37	कर्क	भ. 22/00 से, **बुध मीन में 28/36,**
	19	११	शनि	10	20	पुष्य	9	49	अति	7	1	कर्क	भ. 10/20 तक, **आमलकी एकादशी व्रत**, गोविन्द द्वादशी
	20	१२	रवि	11	32	अश्ले	11	35	सुक	6	48	सिं.11/35	प्रदोष व्रत, बुध उ.भा. में 22/05, सूर्य सायन मेष में 10/00, उत्तर गोल **B**
	21	१३	चंद्र	13	12	मघा	13	46	धृति	6	57	सिंह	शक चैत्र एवं सन् 1938 प्रारम्भ
	22	१४	मंग	15	13	पू.फा.	16	19	शूल	7	24	कं.23/00	भ. 15/13 से 28/22 तक, महेश्वर व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत **C**
	23	१५	बुध	17	31	उ.फा.	19	7	गंड	8	4	कन्या	फाल्गुन पूर्णिमा, **होलिका दहन** (देखें पृ. 86), शुक्र पू.भा. में 25/12 **D**
चैत्र कृष्ण पक्ष	24	१	गुरु	20	0	हस्त	22	6	वृद्धि	8	55	कन्या	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, **होला-मेला** (श्रीआनन्दपुर व **E**
	25	२	शुक्र	22	35	चित्रा	25	10	ध्रुव	9	52	तु.11/38	**शनि वक्री 15/17**, सन्त तुकाराम जयन्ती
	26	३	शनि	25	9	स्वा.	28	13	व्या.	10	51	तुला	भ. 11/52 से 25/09 तक, स. सि. यो.
	27	४	रवि	27	34	विशा	–	–	हर्ष	11	46	वृ.24/23	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 10-11), बुध रेवती में 14/19, श्रीभगवान्नारायण जयं.
	28	५	चंद्र	29	41	विशा	7	5	वज्र	12	32	वृश्चिक	श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ, मे. गुरु रामराय (देहरादून)
	29	६	मंग	–	–	अनु	9	41	सिद्धि	13	3	वृश्चिक	एकनाथ षष्ठी, गण्डमूलादि 9/41 उपरान्त
	30	६	बुध	7	22	ज्ये.	11	49	व्य.	13	12	ध.11/49	भ. 7/22 से 19/56 तक,
	31	७	गुरु	8	29	मूल	13	23	वरी	12	54	धनु	सूर्य रेवती में 6/32, **शुक्र मीन में 27/23**, शीतला सप्तमी (पूजन)

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/01	18/40
3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
5	6/58	18/26	6/46	18/19	6/49	18/20	7/00	18/42
6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/48	18/20	6/59	18/42
7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
8	6/54	18/29	6/43	18/21	6/45	18/22	6/57	18/43
9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
o	oo	oo	oo	oo	oo	oo	oo	oo
10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/42	18/24	6/54	18/44
12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/26	6/52	18/44
15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/35	18/27	6/50	18/44
18	6/42	18/35	6/32	18/27	6/34	18/27	6/49	18/45
19	6/41	18/36	6/31	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/31	18/29	6/47	18/45
21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/30	18/30	6/46	18/45
22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/29	18/30	6/45	18/46
23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/25	18/32	6/44	18/47
26	6/33	18/41	6/22	18/31	6/24	18/33	6/43	18/47
27	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47
28	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
29	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48
30	6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48
31	6/25	18/44	6/17	18/34	6/16	18/36	6/38	18/49

(A) शुक्र कुम्भ में 21/06, 'शिव' नाम योग होने से शिवरात्रि व्रत का विशेष माहात्म्य होगा **(B)** में सूर्य का प्रवेश, महाविषुव दिन, **अर्द्धकुंभी स्नान प्रारम्भ (हरिद्वार) (C)** वृषदान व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत **(D)** होलाष्टक समाप्त, होली पर्व (पं.), श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, **(E)** पांओटा साहिब), ध्वजारोहण धुलण्डी, **होली (उ.प्र., दिल्ली)**

वि. संवत् 2072, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	८	शुक्र	8	54	पू.षा.	14	17	परि	12	3	म.20/23	अप्रैल मास (2016 ई.) प्रारम्भ, शीतलाष्टमी व्रत, राहु पू.फा. (4), **(A)**	1	6/24	18/45	6/16	18/35	6/16	18/37	6/36	18/49
	2	९	शनि	8	34	उ.षा.	14	26	शिव	10	36	मकर	भ. 20/01 से, **बुध अश्वि (1) मेष में 27/44,**	2	6/23	18/45	6/15	18/35	6/15	18/38	6/35	18/49
	3	१०	रवि	7	28	श्रव	13	50	सिद्ध साध्य	8 29	33 55	कुं.25/15	भ. 7/28 तक, **पंचक प्रारम्भ 25/15, पापमोचनी एकादशी (B)**	3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/14	18/38	6/34	18/49
	००	११	रवि	29	38	००	०	०	००	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	4	१२	चंद्र	27	7	धनि	12	31	शुभ	26	45	कुम्भ	**पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव),** वारुणी योग 27/07 से	4	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
	5	१३	मंग	24	4	शत.	10	35	शुक्ल	23	7	मी.26/47	भ. 24/04 से, भौम प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में उदय 19/53, **(C)**	5	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	१४	बुध	20	37	पू.भा. उ.भा.	8 29	8 20	ब्रह्म	19	8	मीन	भ. 10/21 तक, मेला पृथूदव-पिहोवातीर्थ (हरियाणा), मासशिवरात्रि व्रत	6	6/17	18/49	6/10	18/38	6/10	18/40	6/32	18/49
	7	३०	गुरु	16	54	रेव	26	22	ऐन्द्र	14	57	मे.26/22	**चैत्र अमावस, पंचक समाप्त 26/22,** वि. संवत् 2072 पूर्ण,	7	6/16	18/50	6/09	18/39	6/09	18/41	6/31	18/49

(A) केतु पू.भा. (2) में 22/58 **(B)** (स्मार्त), शुक्र उ.भा. में 20/08 **(C)** वारुणी पर्व, शतभिषा 10/35 तक

पंचक नक्षत्र विचार

पंचक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि–दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झौंपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पंचकों में हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में तीन गुना तथा द्विपुष्कर में दोगुणा लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है। प्रेत दाह अथवा किसी अन्य कारण से हानि की आशंका हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान् ब्राह्मण से पंचक शान्ति करवाने का विधान होता है।

ध्यान रहे, मुहूर्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू–प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षा–बन्धन, भैय्या दूज आदि पर्वों में पंचक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

बृहद् ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धिप्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं जबकि पू. भाद्रपद एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धि कारक माने गए हैं।

—सम्पादक।

–विवाह में दोष निवृत्ति के लिए पुनर्विवाह का विचार–

आचार्य श्रीधर के अनुसार–स्त्री और पुरुष का विवाह हो जाने के बाद मिलान, विवाह मुहूर्त्त आदि के दोष बारे में ज्ञान के बाद मिलान, विवाह मुहूर्त्त आदि के दोष सम्बन्धी ज्ञान हो जाने पर, उन दोनों (वर और वधू) को फिर से विवाह कर लेना चाहिए। लग्न तथा चन्द्र लग्न के दोष में, ग्रह तारा आदि के मिलान की स्थिति में और अन्य कालों में, दुष्टयोगादि की सम्भावना में और विवाह में दम्पत्ति के अशौच आदि की स्थिति में उनके दोष की निवृत्ति अर्थात् दोष की शान्ति के लिए वर–वधू में परस्पर फिर से विवाह (पुनर्विवाह) कराने का परामर्श दिया गया है–**पुनर्विवाहं वक्ष्यामि दम्पत्योः शुभवृद्धिदम्॥ लग्नेन्दुलग्न योर्दोषे ग्रहतारादि सम्भवे। अन्येष्व–शुभकालेषु दुष्टयोगादि सम्भवे। विवाहेचापि–दम्पत्यो राशौचादि समुद्भवे॥ तस्य दोषस्य शान्त्यर्थं पुनर्वैवाह्यमिष्यते॥** (निर्णय सिन्धुः)

"पंचांग श्रवण का माहात्म्य"

तिथिवारं च नक्षत्रं योगः करणमेव च। यत्रैतत्पञ्चकं स्पष्टं पञ्चांङ्ग तन्निगद्यते॥
जानाति काले पञ्चाङ्गं तस्य पापं न विद्यते। तिथेस्तु श्रियमाप्नोति वारादापुष्यवर्धनम्॥
नक्षत्राद्धरते पापं योगाद्रोगनिवारणाम्। करणात्कार्यसिद्धिः स्यात्पञ्चाङ्ग फलमुच्यते॥ पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत्॥

तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण–इन पाँचों का जिसमें स्पष्ट मानादि रहता है, उसे पंचांग कहते हैं। जो यथासमय पंचांग का ज्ञान रखता है, उसे पाप स्पर्श नहीं कर सकता। तिथि का श्रवण करने से श्री की प्राप्ति होती है, वार के श्रवण से आयु की वृद्धि होती है, नक्षत्र का श्रवण पाप को नष्ट करता है, योग के श्रवण से रोग का निवारण होता है और करण के श्रवण से कार्य की सिद्धि होती है। यह पंचांगश्रवण का फल कहा गया है। पंचांग के फल को सुनने से गंगास्नान का फल प्राप्त होता है।

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् २०७२ (सन् 2015-16 ई.)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2015	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
21/22 मार्च	रेवती	9	02	14	24	19	46	1	08
22 मार्च	अश्वि.	6	30	11	58	17	27	22	55
23 मार्च	भरणी	4	23	10	00	15	38	21	15
24 मार्च	कृति	2	52	8	35	14	27	20	14
25 मार्च	रोहि.	2	02	8	01	13	59	19	58
26 मार्च	मृग.	1	57	8	03	14	12	20	28
27 मार्च	आर्द्रा	2	39	9	00	15	22	21	43
28 मार्च	पुर्न	4	05	10	36	17	05	23	35
29/30 मार्च	पुष्य	6	09	12	48	19	27	2	06
30/31 मार्च	अश्ले.	8	45	15	29	22	12	4	56
31मा/1 अप्रै.	मघा	11	40	18	26	1	13	7	59
1/2 अप्रै.	पू.फा.	14	46	21	32	4	19	11	05
2/3 अप्रै.	उ.फा.	17	52	0	37	7	21	14	06
3/4 अप्रै.	हस्त	20	51	3	32	10	13	16	54
4/5 अप्रै.	चित्रा	23	35	6	11	12	51	19	24
6 अप्रै.	स्वा.	2	01	8	32	15	03	21	34
7 अप्रै.	विशा	4	05	10	29	16	54	23	20
8/9 अप्रै.	अनु.	5	42	11	59	18	17	0	34
9/10 अप्रै.	ज्ये.	6	51	13	01	19	10	1	20
10/11 अप्रै.	मूल	7	30	13	31	19	33	1	34
11/12 अप्रै.	पू.षा.	7	36	13	29	19	23	1	16
12/13 अप्रै.	उ.षा.	7	10	12	59	18	41	0	27
13 अप्रै.	श्रव.	6	13	11	51	17	30	23	08
14 अप्रै.	धनि.	4	46	10	18	15	53	21	23
15 अप्रै.	शत.	2	55	8	22	13	49	19	16
16 अप्रै.	पू.भा.	0	43	6	07	11	31	16	55
16/17 अप्रै.	उ.भा.	22	19	3	41	9	04	14	26
17/18 अप्रै.	रेवती	19	49	1	02	6	36	11	59
18/19 अप्रै.	अश्वि	17	22	22	49	4	15	9	42
19/20 अप्रै.	भरणी	15	09	20	41	2	13	7	45
20/21 अप्रै.	कृति	13	17	18	54	0	37	6	17
21/22 अप्रै.	रोहि	11	57	17	46	23	36	5	25
22/23 अप्रै.	मृग	11	15	17	15	23	10	5	17
23/24 अप्रै.	आर्द्रा	11	17	17	29	23	41	5	53
24/25 अप्रै.	पुर्न	12	05	18	28	0	52	7	12

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अप्रै. 2015	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
25/26 अप्रै.	पुष्य	13	39	20	12	2	46	9	19
26/27 अप्रै.	अश्ले	15	53	22	34	5	15	11	56
27/28 अप्रै.	मघा	18	37	1	23	8	08	14	54
28/29 अप्रै.	पू.फा.	21	40	4	27	11	13	18	00
30 अप्रै.	उ.फा.	0	47	7	33	14	16	21	01
1 मई	हस्त	3	46	10	26	17	07	23	47
2/3 मई	चित्रा	6	27	13	01	19	39	2	10
3/4 मई	स्वा.	8	44	15	11	21	38	4	05
4/5 मई	विशा	10	32	16	52	23	11	5	34
5/6 मई	अनु.	11	51	18	03	0	16	6	28
6/7 मई	ज्ये.	12	40	18	46	0	52	6	58
7/8 मई	मूल	13	04	19	03	1	03	7	03
8/9 मई	पू.षा.	13	03	18	57	0	52	6	46
9/10 मई	उ.षा.	12	40	18	31	0	19	6	08
10/11 मई	श्रव.	11	57	17	42	23	26	5	11
11/12 मई	धनि.	10	56	16	36	22	19	3	58
12/13 मई	शत.	9	38	15	15	20	53	2	30
13/14 मई	पूभा	8	07	13	41	19	16	0	51
14 मई	उभा	6	24	11	56	17	29	23	02
15 मई	रेवती	4	34	10	06	15	37	21	09
16 मई	अश्वि	2	41	8	14	13	46	19	19
17 मई	भरणी	0	52	6	27	12	03	17	39
17/18 मई	कृति	23	14	4	52	10	35	16	15
18/19 मई	रोहि.	21	55	3	42	9	29	15	16
19/20 मई	मृग	21	03	2	59	8	50	14	50
20/21 मई	आर्द्रा	20	46	2	51	8	57	15	02
21/22 मई	पुर्न	21	08	3	24	9	41	15	54
22/23 मई	पुष्य	22	14	4	41	11	09	17	36
24 मई	अश्ले	0	03	6	39	13	16	19	52
25 मई	मघा	2	28	9	11	15	53	22	36
26/27 मई	पू.फा.	5	19	12	05	18	52	1	38
27/28 मई	उ.फा.	8	24	15	10	21	55	4	40
28/29 मई	हस्त	11	26	18	07	0	49	7	31
29/30 मई	चित्रा	14	12	20	46	3	25	9	55
30/31 मई	स्वा.	16	30	22	56	5	22	11	48

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जून 2015	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
31मई/1 जून	विशा.	18	14	0	30	6	47	13	07
1/2 जून	अनु.	19	20	1	28	7	35	13	43
2/3 जून	ज्ये.	19	51	1	50	7	50	13	50
3/4 जून	मूल	19	50	1	43	7	36	13	29
4/5 जून	पू.षा.	19	22	1	10	6	58	12	46
5/6 जून	उ.षा.	18	34	0	19	6	03	11	47
6/7 जून	श्रव.	17	31	23	13	4	55	10	37
7/8 जून	धनि.	16	19	22	00	3	41	9	21
8/9 जून	शत.	15	02	20	42	2	21	8	01
9/10 जून	पू.भा.	13	41	19	21	1	00	6	40
10/11 जून	उ.भा.	12	20	18	00	23	39	5	19
11/12 जून	रेवती	10	59	16	39	22	20	4	00
12/13 जून	अश्वि.	9	40	15	21	21	03	2	44
13/14 जून	भरणी	8	26	14	09	19	53	1	37
14/15 जून	कृति	7	20	13	05	18	53	0	40
15/16 जून	रोहि.	6	26	12	17	18	09	0	01
16 जून	मृग.	5	51	11	48	17	43	23	43
17 जून	आर्द्रा	5	41	11	46	17	51	23	56
18/19 जून	पुर्न	6	01	12	15	18	29	0	40
19/20 जून	पुष्य	6	57	13	20	19	44	2	07
20/21 जून	अश्ले.	8	31	15	03	21	36	4	09
21/22 जून	मघा	10	41	17	21	0	01	6	41
22/23 जून	पू.फा.	13	21	20	06	2	51	9	36
23/24 जून	उ.फा.	16	21	23	08	5	54	12	40
24/25 जून	हस्त	19	27	2	11	8	55	15	39
25/26 जून	चित्रा	22	23	5	01	11	42	18	16
27 जून	स्वा.	0	54	7	23	13	51	20	20
28 जून	विशा.	2	49	9	07	15	26	21	48
29 जून	अनु.	4	02	10	09	16	17	22	24
30 जून	ज्ये.	4	31	10	28	16	24	22	21
1 जुला	मूल	4	18	10	06	15	54	21	42
2 जुला	पू.षा.	3	30	9	11	14	53	20	34
3 जुला	उ.षा.	2	15	7	53	13	28	19	04
4 जुला	श्रव.	0	40	6	14	11	47	17	21
4/5 जुला	धनि.	22	55	4	28	10	01	15	34

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जुला. 2015	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
5/6 जुला.	शत.	21	07	2	41	8	14	13	48
6/7 जुला.	पू.भा.	19	22	0	58	6	33	12	08
7/8 जुला.	उ.भा.	17	45	23	24	5	02	10	41
8/9 जुला.	रेवती	16	20	22	02	3	43	9	25
9/10 जुला.	अश्वि	15	07	20	52	2	38	8	24
10/11 जुला	भरणी	14	09	19	58	1	48	7	37
11/12 जुला	कृति	13	26	19	18	1	13	7	07
12/13 जुला	रोहि.	13	00	18	58	0	56	6	54
13/14 जुला	मृग	12	52	18	55	0	59	7	02
14/15 जुला	आर्द्रा	13	06	19	15	1	25	7	34
15/16 जुला	पुर्न	13	43	19	59	2	16	8	30
16/17 जुला	पुष्य	14	49	21	13	3	37	10	01
17/18 जुला	अश्ले.	16	25	22	56	5	28	12	00
18/19 जुला	मघा	18	31	1	10	7	48	14	27
19/20 जुला	पू.फा.	21	06	3	50	10	35	17	19
21 जुला.	उ.फा.	0	03	6	49	13	37	20	24
22 जुला.	हस्त	3	11	9	57	16	44	23	30
23/24 जुला	चित्रा	6	17	12	59	19	44	2	24
24/25 जुला	स्वा.	9	06	15	40	22	15	4	49
25/26 जुला	विशा	11	24	17	48	0	13	6	41
26/27 जुला	अनु.	13	01	19	13	1	26	7	38
27/28 जुला	ज्ये.	13	51	19	51	1	52	7	52
28/29 जुला	मूल	13	52	19	41	1	30	7	19
29/30 जुला	पू.षा.	13	08	18	47	0	27	6	06
30/31 जुला	उ.षा.	11	46	17	20	22	49	4	21
31जु./1अग.	श्रव.	9	53	15	20	20	47	2	14
1 अग.	धनि.	7	41	13	05	18	30	23	54
2 अग.	शत.	5	18	10	42	16	07	21	31
3 अग.	पू.भा.	2	55	8	21	13	47	19	12
4 अग.	उ.भा.	0	39	6	09	11	39	17	08
4/5 अग.	रेवती	22	38	4	13	9	47	15	22
5/6 अग.	अश्वि	20	57	2	38	8	18	13	59
6/7 अग.	भरणी	19	40	1	27	7	15	13	02
7/8 अग.	कृति	18	49	0	41	6	38	12	32
8/9 अग.	रोहि.	18	26	0	27	6	28	12	29
9/10 अग.	मृग.	18	30	0	38	6	42	12	53

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अग. 2015	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
10/11 अग.	आर्द्रा	19	01	1	15	7	30	13	45
11/12 अग.	पुर्न	19	59	2	20	8	41	14	59
12/13 अग.	पुष्य	21	23	3	50	10	18	16	45
13/14 अग.	अश्ले	23	13	5	32	11	50	18	09
15 अग.	मघा	1	28	8	07	14	47	21	26
16/17 अग.	पू.फा.	4	06	10	50	17	35	0	19
17/18 अग.	उ.फा.	7	03	13	49	20	37	3	24
18/19 अग.	हस्त	10	11	16	59	23	46	6	34
19/20 अग.	चित्रा	13	22	20	07	2	55	9	38
20/21 अग.	स्वा.	16	24	23	04	5	44	12	24
21/22 अग.	विशा.	19	04	1	36	8	07	14	43
22/23 अग.	अनु.	21	11	3	32	9	54	16	15
23/24 अग.	ज्ये.	22	36	4	45	10	54	17	03
24/25 अग.	मूल	23	12	5	09	11	05	17	02
25/26 अग.	पू.षा.	22	59	4	44	10	29	16	14
26/27 अग.	उ.षा.	21	59	3	38	9	09	14	44
27/28 अग.	श्रव.	20	19	1	46	7	13	12	40
28/29 अग.	धनि.	18	07	23	28	4	52	10	11
29/30 अग.	शत.	15	32	20	50	2	09	7	27
30/31 अग.	पू.भा.	12	45	18	03	23	20	4	37
31/1 सितं	उ.भा.	9	56	15	15	20	35	1	55
1 सितं	रेवती	7	14	12	38	18	01	23	25
2 सितं	अश्वि	4	49	10	19	15	49	21	19
3 सितं	भरणी	2	49	8	26	14	04	19	42
4 सितं	कृति.	1	19	7	02	12	52	18	39
5 सितं	रोहि.	0	26	6	22	12	18	18	14
6 सितं	मृग	0	10	6	15	12	16	18	27
7 सितं	आर्द्रा	0	32	6	47	13	02	19	17
8 सितं	पुर्न	1	32	7	55	14	19	20	38
9 सितं	पुष्य	3	05	9	35	16	06	22	36
10/11 सितं	अश्ले.	5	07	11	44	18	20	0	57
11/12 सितं	मघा	7	34	14	15	20	57	3	38
12/13 सितं	पू.फा.	10	20	17	05	23	51	6	36
13/14 सितं	उ.फा.	13	21	20	07	2	55	9	42
14/15 सितं	हस्त	16	29	23	16	6	04	12	51
15/16 सितं	चित्रा	19	39	2	25	9	12	15	57

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
सितं. 2015	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
16/17 सितं.	स्वा.	22	43	5	25	12	08	18	50
18 सितं.	विशा.	1	32	8	08	14	45	21	23
19 सितं.	अनु.	3	57	10	25	16	54	23	22
20/21 सितं.	ज्ये.	5	50	12	08	18	27	0	45
21/22 सितं.	मूल	7	04	13	11	19	19	1	26
22/23 सितं.	पू.षा.	7	34	13	30	19	26	1	22
23/24 सितं.	उ.षा.	7	18	13	07	18	49	0	34
24 सितं.	श्रव.	6	19	11	54	17	29	23	04
25 सितं.	धनि.	4	39	10	06	15	36	20	59
26 सितं.	शत.	2	26	7	46	13	07	18	27
26/27 सितं.	पू.भा.	23	47	5	04	10	20	15	38
27/28 सितं.	उ.भा.	20	54	2	09	7	25	12	40
28/29 सितं.	रेवती	17	55	23	11	4	28	9	44
29/30 सितं.	अश्वि	15	00	20	20	1	41	7	01
30सितं/1 अक्तू.	भरणी	12	21	17	48	23	14	4	41
1/2 अक्तू.	कृति	10	08	15	39	21	17	2	52
2/3 अक्तू.	रोहि.	8	27	14	12	19	57	1	42
3/4 अक्तू.	मृग	7	27	13	23	19	14	1	16
4/5 अक्तू.	आर्द्रा	7	13	13	21	19	29	1	37
5/6 अक्तू.	पुर्न	7	45	14	04	20	23	2	38
6/7 अक्तू.	पुष्य	9	01	15	30	22	00	4	29
7/8 अक्तू.	अश्ले	10	58	17	35	0	13	6	50
8/9 अक्तू.	मघा	13	27	20	10	2	53	9	36
9/10 अक्तू.	पू.फा.	16	19	23	05	5	51	12	38
11/12 अक्तू.	उ.फा.	19	24	2	11	8	59	15	47
12/13 अक्तू.	हस्त	22	34	5	21	12	07	18	54
13 अक्तू.	चित्रा	1	41	8	25	15	11	21	54
14/15 अक्तू.	स्वा.	4	38	11	19	17	59	0	40
15/16 अक्तू.	विशा	7	21	13	56	20	32	3	10
16/17 अक्तू.	अनु.	9	43	16	13	22	42	5	12
17/18 अक्तू.	ज्ये.	11	42	18	05	0	27	6	50
18/19 अक्तू.	मूल	13	13	19	27	1	42	7	56
19/20 अक्तू.	पू.षा.	14	11	20	17	2	22	8	28
20/21 अक्तू.	उ.षा.	14	34	20	34	2	27	8	24
21/22 अक्तू.	श्रव.	14	20	20	07	1	55	7	42
22/23 अक्तू.	धनि.	13	29	19	07	0	50	6	24

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
अक्तू. 2015	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23/24अक्तू.	शत.	12 02	17 33	23 03	4 34
24/25अक्तू.	पू.भा.	10 05	15 29	20 54	2 20
25 अक्तू.	उ.भा.	7 42	13 02	18 22	23 42
26 अक्तू.	रेवती	5 02	10 20	15 37	20 55
27 अक्तू.	अश्वि	2 13	7 31	12 49	18 07
27/28अक्तू.	भरणी	23 25	4 46	10 08	15 29
28/29अक्तू.	कृति.	20 50	2 14	7 43	13 10
29/30अक्तू.	रोहि.	18 37	0 12	5 47	11 22
30/31अक्तू.	मृग.	16 57	22 42	4 21	10 13
31अक्तू/1नवं.	आर्द्रा	15 58	21 55	3 52	9 49
1/2 नवं.	पुर्न	15 46	21 56	4 05	10 10
2/3 नवं.	पुष्य	16 25	22 47	5 09	11 31
3/4 नवं.	अश्ले.	17 53	0 25	6 58	13 31
4/5 नवं.	मघा	20 03	2 44	9 25	16 06
5/6 नवं.	पू.फा.	22 47	5 33	12 20	19 06
7 नवं.	उ.फा.	1 52	8 39	15 27	22 15
8/9 नवं.	हस्त	5 03	11 50	18 36	1 23
9/10 नवं.	चित्रा	8 10	14 53	21 38	4 19
10/11 नवं.	स्वा.	11 02	17 40	0 18	6 56
11/12 नवं.	विशा	13 34	20 06	2 38	9 13
12/13 नवं.	अनु.	15 42	22 08	4 34	11 00
13/14 नवं.	ज्ये.	17 26	23 46	6 05	12 25
14/15 नवं.	मूल	18 45	0 58	7 12	13 26
15/16 नवं.	पू.षा.	19 39	1 46	7 54	14 01
16/17 नवं.	उ.षा.	20 09	2 12	8 12	14 13
17/18 नवं.	श्रव.	20 14	2 09	8 04	13 59
18/19 नवं.	धनि.	19 54	1 43	7 35	13 20
19/20 नवं.	शत.	19 09	0 51	6 34	12 16
20/21 नवं.	पू.भा.	17 58	23 34	5 11	10 49
21/22 नवं.	उ.भा.	16 24	21 55	3 27	8 58
22/23 नवं.	रेवती	14 29	19 56	1 24	6 51
23/24 नवं.	अश्वि	12 18	17 43	23 08	4 33
24/25 नवं.	भरणी	9 58	15 23	20 48	2 13
25/26 नवं.	कृति	7 38	13 04	18 33	0 00
26 नवं.	रोहि.	5 27	10 59	16 32	22 04
27 नवं.	मृग.	3 36	9 15	14 50	20 34

चन्द्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
नवं. 2015	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
28 नवं.	आर्द्रा	2 14	8 03	13 52	19 41
29 नवं.	पुर्न	1 30	7 30	13 31	19 27
30 नवं.	पुष्य	1 32	7 45	13 57	20 10
1 दिसं.	अश्ले	2 23	8 48	15 12	21 37
2 दिसं.	मघा	4 02	10 37	17 13	23 48
3/4 दिसं.	पू.फा.	6 23	13 06	19 48	2 31
4/5 दिसं.	उ.फा.	9 14	16 01	22 48	5 35
5/6 दिसं.	हस्त	12 22	19 09	1 57	8 44
6/7 दिसं.	चित्रा	15 31	22 14	5 01	11 41
7/8 दिसं.	स्वा.	18 25	1 03	7 40	14 18
8/9 दिसं.	विशा.	20 56	3 26	9 56	16 29
9/10 दिसं.	अनु.	22 56	5 18	11 40	18 02
11 दिसं.	ज्ये.	0 24	6 38	12 53	19 07
12 दिसं.	मूल	1 21	7 28	13 36	19 43
13 दिसं.	पू.षा.	1 50	7 52	13 53	19 55
14 दिसं.	उ.षा.	1 57	7 55	13 50	19 47
15 दिसं.	श्रव.	1 44	7 37	13 29	19 22
16 दिसं.	धनि.	1 15	7 04	12 55	18 44
17 दिसं.	शत.	0 33	6 19	12 06	17 52
17/18दिसं.	पू.भा.	23 38	5 21	11 05	16 49
18/19दिसं.	उ.भा.	22 31	4 11	9 52	15 32
19/20दिसं.	रेवती	21 13	21 51	8 29	14 07
20/21दिसं.	अश्वि	19 45	1 21	6 57	12 33
21/22दिसं.	भरणी	18 09	23 44	5 20	10 55
22/23दिसं.	कृति.	16 30	22 05	3 41	9 16
23/24दिसं.	रोहि.	14 52	20 30	2 08	7 46
24/25दिसं.	मृग.	13 24	19 06	0 46	6 31
25/26दिसं.	आर्द्रा	12 14	18 03	23 52	5 41
26/27दिसं.	पुर्न	11 30	17 27	23 25	5 18
27/28दिसं.	पुष्य	11 19	17 26	23 34	5 41
28/29दिसं.	अश्ले	11 49	18 07	0 26	6 44
29/30दिसं.	मघा	13 03	19 32	2, 00	8 29
30/31दिसं.	पू.फा.	14 58	21 36	4 14	10 52
31दिसं/1जन.16	उ.फा.	17 30	0 13	6 59	13 43
1/2 जन.	हस्त	20 27	3 14	10 01	16 48
2/3 जन.	चित्रा	23 35	6 20	13 07	19 51

चन्द्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
जन. 2016	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
4 जन.	स्वा.	2 36	9 16	15 57	22 37
5/6 जन.	विशा.	5 17	11 49	18 22	0 57
6/7 जन.	अनु.	7 26	13 49	20 11	2 34
7/8 जन.	ज्ये.	8 57	15 09	21 22	3 35
8/9 जन.	मूल	9 47	15 50	21 54	3 57
9/10 जन.	पू.षा.	10 01	15 56	21 52	3 47
10/11 जन.	उ.षा.	9 42	15 33	21 19	3 08
11/12 जन.	श्रव.	8 57	14 41	20 26	2 10
12/13 जन.	धनि.	7 55	13 36	19 18	0 59
13 जन.	शत.	6 40	12 20	17 59	23 39
14 जन.	पू.भा.	5 19	10 58	16 37	22 16
15 जन.	उ.भा.	3 55	9 34	15 14	20 53
16 जन.	रेवती	2 33	8 13	13 53	19 33
17 जन.	अश्वि	1 13	6 54	12 36	18 17
17/18 जन.	भरणी	23 58	5 40	11 23	17 05
18/19 जन.	कृति	22 48	4 31	10 17	16 01
19/20 जन.	रोहि.	21 46	3 33	9 20	15 07
20/21 जन.	मृग.	20 54	2 45	8 33	14 26
21/22 जन.	आर्द्रा	20 17	2 13	8 08	14 04
22/23 जन.	पुर्न	20 00	2 02	8 03	14 03
23/24 जन.	पुष्य	20 07	2 16	8 26	14 35
24/25 जन.	अश्ले.	20 44	3 01	9 19	15 37
25/26 जन.	मघा	21 54	4 20	10 47	17 13
26/27 जन.	पू.फा.	23 39	6 14	12 48	19 23
28 जन.	उ.फा.	1 58	8 37	15 21	22 02
29/30 जन.	हस्त	4 43	11 28	18 14	0 59
30/31 जन.	चित्रा	7 45	14 31	21 19	4 04
31जन./1फर.	स्वा.	10 51	17 35	0 18	7 02
1/2 फर.	विशा.	13 46	20 23	3 01	9 41
2/3 फर.	अनु.	16 16	22 44	5 12	11 40
3/4 फर.	ज्ये.	18 08	0 25	6 43	13 00
4/5 फर.	मूल	19 18	1 24	7 31	13 37
5/6 फर.	पू.षा.	19 43	1 38	7 34	13 29
6/7 फर.	उ.षा.	19 25	1 14	6 57	12 43
7/8 फर.	श्रव.	18 29	0 07	5 46	11 25
8/9 फर.	धनि.	17 03	22 36	4 12	9 43

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
फर. 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9/10 फर.	शत.	15	16	20	46	2	15	7	45
10/11 फर.	पू.भा.	13	15	18	44	0	12	5	41
11/12 फर.	उ.भा.	11	10	16	39	22	09	3	38
12/13 फर.	रेवती	9	07	14	38	20	10	1	42
13 फर.	अश्वि	7	13	12	48	18	23	23	58
14 फर.	भरणी	5	33	11	12	16	52	22	31
15 फर.	कृति	4	11	9	53	15	40	21	25
16 फर.	रोहि.	3	09	8	59	14	50	20	40
17 फर.	मृग	2	30	8	26	14	19	20	18
18 फर.	आर्द्रा	2	14	8	16	14	19	20	22
19 फर.	पुर्न	2	24	8	33	14	41	20	47
20 फर.	पुष्य	2	59	9	14	15	30	21	45
21 फर.	अश्ले	4	00	10	22	16	44	23	06
22/23 फर.	मघा	5	28	11	56	18	25	0	53
23/24 फर.	पू.फा.	7	22	13	57	20	32	3	07
24/25 फर.	उ.फा.	9	42	16	21	23	03	5	43
25/26 फर.	हस्त	12	24	19	08	1	53	8	37
26/27 फर.	चित्रा	15	22	22	08	4	54	11	41
27/28 फर.	स्वा.	18	28	1	13	7	59	14	45
28/29 फर.	विशा	21	30	4	12	10	53	17	38
1 मार्च	अनु	0	17	6	52	13	27	20	02
2 मार्च	ज्ये.	2	37	9	03	15	28	21	54
3 मार्च	मूल	4	20	10	35	16	50	23	05
4 मार्च	पू.षा.	5	20	11	23	17	26	23	29
5 मार्च	उ.षा.	5	32	11	27	17	15	23	06
6 मार्च	श्रव.	4	58	10	39	16	21	22	02
7 मार्च	धनि.	3	43	9	15	14	51	20	20
8 मार्च	शत.	1	52	7	18	12	44	18	10
8/9 मार्च	पू.भा.	23	36	4	57	10	19	15	41
9/10 मार्च	उ.भा.	21	02	2	22	7	41	13	01
10/11 मार्च	रेवती	18	21	23	41	5	02	10	22
11/12 मार्च	अश्वि	15	42	21	05	2	29	7	52
12/13 मार्च	भरणी	13	15	18	43	0	11	5	39
13/14 मार्च	कृति	11	07	16	40	22	17	3	52
14/15 मार्च	रोहि	9	27	15	10	20	53	2	36
15/16 मार्च	मृग	8	19	14	11	19	58	1	55

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
16/17 मार्च	आर्द्रा	7	47	13	48	19	50	1	51
17/18 मार्च	पुर्न	7	52	14	02	20	13	2	20
18/19 मार्च	पुष्य	8	33	14	52	21	11	3	30
19/20 मार्च	अश्ले.	9	49	16	15	22	42	5	09
20/21 मार्च	मघा	11	35	18	08	0	40	7	13
21/22 मार्च	पू.फा.	13	46	20	24	3	03	9	41
22/23 मार्च	उ.फा.	16	19	23	00	5	43	12	25
23/24 मार्च	हस्त	19	07	1	52	8	36	15	21
24/25 मार्च	चित्रा	22	06	4	52	11	38	18	24
26 मार्च	स्वा.	1	10	7	56	14	41	21	27
27/28 मार्च	विशा.	4	13	10	56	17	39	0	23
28/29 मार्च	अनु.	7	05	13	44	20	23	3	02
29/30 मार्च	ज्ये.	9	41	16	13	22	45	5	17
30/31 मार्च	मूल.	11	49	18	12	0	36	6	59
31मार्च/1 अप्रै.	पू.षा.	13	23	19	36	1	50	8	04
1/2 अप्रै.	उ.षा.	14	17	20	23	2	22	8	24
2/3 अप्रै.	श्रवण	14	26	20	17	2	08	7	59
3/4 अप्रै.	धनि.	13	50	19	30	1	15	6	51
4/5 अप्रै.	शत.	12	31	18	02	23	33	5	04
5/6 अप्रै.	पू.भा.	10	35	15	58	21	21	2	47
6/7 अप्रै.	उ.भा.	8	08	13	26	18	44	0	02
7 अप्रै.	रेवती	5	20	10	35	15	51	21	06

मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न आदि काल

दो घटी अर्थात् अड़तालीस (48) मिनट का एक मुहूर्त होता है। पन्द्रह मुहूर्त्त का एक दिन और पन्द्रह मुहूर्त्त की एक रात होती है। सूर्योदय से तीन मुहूर्त्त का 'प्रातःकाल', फिर तीन मुहूर्त्त का 'संगवकाल', फिर तीन मुहूर्त्त का 'मध्याह्नकाल', फिर तीन मुहूर्त्त का 'अपराह्नकाल' और उसके बाद तीन मुहूर्त्त का 'सायाह्न काल' होता है।

मनुष्य को चाहिए कि वह स्नान आदि से शुद्ध होकर पूर्वाह्न में देवता सम्बन्धी कार्य (दानादि), मध्याह्न में मनुष्य सम्बन्धी कार्य और अपराह्न में पितर सम्बन्धी कार्य करें। असमय में किया हुआ दान राक्षसों का भाग माना गया है।

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रात: साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं–मान लीजिए, आपको 5 अप्रैल, 2015 ई. की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में 5 अप्रैल के सामने सूर्य स्पष्ट (11-20°-49′-14″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रात: साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (6) अप्रै. में से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59′/04″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.26) हुई, इसको 5 अप्रैल प्रातः सूर्य स्पष्ट में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11-21°-07′-40″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2072 (सन् 2015-16 ई.)

नोट-अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। *(20 मार्च से 24 अप्रै. तक)* 1 अप्रैल, 2015 ई० को अयनांश = 24°/04'/15"

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि(वक्री)	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	
मार्च	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	अं.क.	अं.क.	
20	11 4 59 15	10 29 18 55	11 27 12 49	10 16 34 54	3 19 7 46	0 9 2 0	7 10 50 6	5 16 44 08	5 15 53 44	-00 22	-01 14	20
21	11 5 58 54	11 14 27 2	11 27 57 50	10 18 13 16	3 19 4 10	0 10 14 13	7 10 49 30	5 16 40 57	5 15 53 30	+0 1	+03 30	21
22	11 6 58 31	11 29 23 19	11 28 42 48	10 19 52 53	3 19 0 45	0 11 26 21	7 10 48 48	5 16 37 46	5 15 53 47	0 25	07 57	22
23	11 7 58 6	0 14 0 10	11 29 27 43	10 21 33 47	3 18 57 31	0 12 38 25	7 10 48 0	5 16 34 35	5 15 54 24	0 49	11 49	23
24	11 8 57 39	0 28 12 30	0 0 12 35	10 23 15 57	3 18 54 28	0 13 50 24	7 10 47 7	5 16 31 25	5 15 55 07	1 12	14 53	24
25	11 9 57 10	1 11 58 1	0 0 57 25	10 24 59 24	3 18 51 38	0 15 2 18	7 10 46 7	5 16 28 14	5 15 55 46	1 36	16 59	25
26	11 10 56 38	1 25 16 54	0 1 42 10	10 26 44 7	3 18 48 55	0 16 14 6	7 10 44 0	5 16 25 03	5 15 56 10	2 00	18 04	26
27	11 11 56 4	2 8 11 13	0 2 26 53	10 28 30 11	3 18 46 26	0 17 25 50	7 10 43 49	5 16 21 52	5 15 56 19	2 23	18 10	27
28	11 12 55 27	2 20 44 18	0 3 11 34	11 0 17 34	3 18 44 8	0 18 37 29	7 10 42 32	5 16 18 42	5 15 56 15	2 47	17 22	28
29	11 13 54 49	3 3 0 13	0 3 56 12	11 2 6 16	3 18 42 1	0 19 49 3	7 10 41 9	5 16 15 31	5 15 56 3	3 10	15 46	29
30	11 14 54 8	3 15 3 16	0 4 40 47	11 3 56 18	3 18 40 6	0 21 0 31	7 10 39 41	5 16 12 20	5 15 55 52	3 34	13 30	30
31	11 15 53 24	3 26 57 35	0 5 25 18	11 5 47 43	3 18 38 21	0 22 11 53	7 10 38 6	5 16 9 10	5 15 55 45	3 57	10 42	31
अप्रै.	11 16 52 39	4 8 47 1	0 6 9 47	11 7 40 28	3 18 36 48	0 23 23 10	7 10 36 26	5 16 5 59	5 15 55 47	4 20	07 28	अप्रै.
2	11 17 51 51	4 20 35 2	0 6 54 13	11 9 34 34	3 18 35 26	0 24 34 21	7 10 34 41	5 16 2 48	5 15 55 56	4 43	03 57	2
3	11 18 51 1	5 2 24 35	0 7 38 36	11 11 30 2	3 18 34 16	0 25 45 27	7 10 32 50	5 15 59 37	5 15 56 8	5 6	+10 16	3
4	11 19 50 8	5 14 18 13	0 8 22 55	11 13 26 49	3 18 33 17	0 26 56 26	7 10 30 54	5 15 56 27	5 15 56 16	5 29	-03 27	4
5	11 20 49 14	5 26 18 8	0 9 7 12	11 15 24 55	3 18 32 29	0 28 7 20	7 10 28 52	5 15 53 16	5 15 56 13	5 52	-07 04	5
6	11 21 48 18	6 8 26 11	0 9 51 26	11 17 24 17	3 18 31 53	0 29 18 7	7 10 26 45	5 15 50 05	5 15 55 54	6 15	-10 26	6
7	11 22 47 20	6 20 44 9	0 10 35 37	11 19 24 53	3 18 31 28	1 0 28 49	7 10 24 33	5 15 46 54	5 15 55 15	6 38	-13 23	7
8	11 23 46 20	7 3 13 45	0 11 19 45	11 21 26 40	3 18 31 14	1 1 39 24	7 10 22 15	5 15 43 44	5 15 54 20	7 00	-15 45	8
9	11 24 45 20	7 15 56 43	0 12 3 49	11 23 29 30	3 18 31 11	1 2 49 52	7 10 19 52	5 15 40 33	5 15 53 15	7 23	-17 25	9
10	11 25 44 15	7 28 54 48	0 12 47 52	11 25 33 20	3 18 31 19	1 4 0 15	7 10 17 24	5 15 37 22	5 15 52 11	7 45	-18 12	10
11	11 26 43 10	8 12 9 41	0 13 31 51	11 27 38 1	3 18 31 40	1 5 10 31	7 10 14 52	5 15 34 11	5 15 51 22	8 7	-18 01	11
12	11 27 42 3	8 25 42 47	0 14 15 48	11 29 43 24	3 18 32 11	1 6 20 41	7 10 12 14	5 15 31 01	5 15 50 58	8 29	-16 49	12
13	11 28 40 54	9 9 35 2	0 14 59 51	0 1 49 17	3 18 32 54	1 7 30 45	7 10 9 32	5 15 27 50	5 15 51 6	8 51	-14 37	13
14	11 29 39 43	9 23 46 7	0 15 43 32	0 3 55 30	3 18 33 48	1 8 40 42	7 10 6 44	5 15 24 39	5 15 51 43	9 13	-11 30	14
15	0 0 38 31	10 8 14 29	0 16 27 20	0 6 1 46	3 18 34 53	1 9 50 32	7 10 3 52	5 15 21 29	5 15 52 40	9 35	-07 38	15
16	0 1 37 17	10 22 56 42	0 17 11 5	0 8 7 50	3 18 36 9	1 11 0 15	7 10 0 55	5 15 18 18	5 15 53 38	9 56	-03 14	16
17	0 2 36 2	11 7 47 31	0 17 54 47	0 10 13 25	3 18 37 36	1 12 9 51	7 9 57 54	5 15 15 07	5 15 54 16	10 17	+01 25	17
18	0 3 34 44	11 22 40 8	0 18 38 27	0 12 18 12	3 18 39 15	1 13 19 21	7 9 54 48	5 15 11 56	5 15 54 14	10 38	+06 00	18
19	0 4 33 25	0 7 26 56	0 19 22 3	0 14 21 53	3 18 41 4	1 14 28 43	7 9 51 38	5 15 8 46	5 15 53 20	10 59	10 11	19
20	0 5 32 4	0 22 0 30	0 20 5 35	0 16 24 5	3 18 43 3	1 15 37 56	7 9 48 23	5 15 5 35	5 15 51 31	11 20	13 40	20
21	0 6 30 40	1 6 14 40	0 20 49 6	0 18 24 31	3 18 45 15	1 16 47 3	7 9 45 3	5 15 2 24	5 15 48 58	11 41	16 15	21
22	0 7 29 15	1 20 5 10	0 21 32 33	0 20 22 51	3 18 47 37	1 17 56 2	7 9 41 41	5 14 59 13	5 15 46 1	12 1	17 47	22
23	0 8 27 47	2 3 30 14	0 22 15 58	0 22 18 46	3 18 50 10	1 19 4 53	7 9 38 14	5 14 56 02	5 15 43 7	12 21	18 17	23
24	0 9 26 18	2 16 30 13	0 22 59 19	0 24 11 58	3 18 52 54	1 20 13 36	7 9 34 44	5 14 52 52	5 15 40 42	12 41	17 47	24

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रात: 5/30 बजे (25 अप्रै. से 2 जून 2015 ई. तक) 1 मई, 2015 ई. को अयनांश 24°/04′/18″ 1 जून 2015 ई. को अयनांश 24°/04′/22″

ति.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	तारीख
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
25	0 10 24 46	2 29 7 28	0 23 42 38	0 26 2 10	3 18 55 48	1 21 22 10	7 9 31 10	5 14 49 41	5 15 39 8	13 01	16 24	25
26	0 11 23 12	3 11 25 35	0 24 25 52	0 27 49 8	3 18 58 52	1 22 30 34	7 9 27 32	5 14 46 30	5 15 38 35	13 20	14 18	26
27	0 12 21 36	3 23 29 2	0 25 9 4	0 29 32 38	3 19 2 8	1 23 38 50	7 9 23 51	5 14 43 19	5 15 39 4	13 40	11 37	27
28	0 13 19 58	4 5 22 40	0 25 52 13	1 1 12 30	3 19 5 34	1 24 46 57	7 9 20 6	5 14 40 9	5 15 40 22	13 59	08 28	28
29	0 14 18 17	4 17 11 22	0 26 35 18	1 2 48 31	3 19 9 9	1 25 54 55	7 9 16 18	5 14 36 58	5 15 42 5	14 18	05 01	29
30	0 15 16 35	4 28 59 43	0 27 18 21	1 4 20 36	3 19 12 55	1 27 2 43	7 9 12 28	5 14 33 47	5 15 43 44	14 36	+01 22	30
मई	0 16 14 51	5 10 51 52	0 28 1 21	1 5 48 35	3 19 16 51	1 28 10 21	7 9 8 34	5 14 30 37	5 15 44 45	14 55	–02 22	मई
2	0 17 13 5	5 22 51 23	0 28 44 17	1 7 12 23	3 19 20 56	1 29 17 48	7 9 4 37	5 14 27 26	5 15 44 40	15 13	–06 03	2
3	0 18 11 17	6 5 1 3	0 29 27 11	1 8 31 52	3 19 25 12	2 0 25 5	7 9 0 37	5 14 24 15	5 15 43 8	15 31	–09 32	3
4	0 19 9 27	6 17 22 56	1 0 10 1	1 9 46 58	3 19 29 37	2 1 32 12	7 8 56 35	5 14 21 4	5 15 40 1	15 48	–12 39	4
5	0 20 7 35	6 29 58 14	1 0 52 49	1 10 57 35	3 19 34 13	2 2 39 9	7 8 52 30	5 14 17 54	5 15 35 27	16 06	–15 15	5
6	0 21 5 42	7 12 47 28	1 1 35 33	1 12 3 41	3 19 38 57	2 3 45 54	7 8 48 23	5 14 14 43	5 15 29 49	16 23	–17 09	6
7	0 22 3 47	7 25 50 34	1 2 18 14	1 13 5 9	3 19 43 50	2 4 52 28	7 8 44 13	5 14 11 32	5 15 23 46	16 40	–18 11	7
8	0 23 1 51	8 9 7 5	1 3 0 53	1 14 1 58	3 19 48 54	2 5 58 51	7 8 40 1	5 14 8 21	5 15 18 1	16 56	–18 15	8
9	0 23 59 53	8 22 36 18	1 3 43 29	1 14 54 2	3 19 54 7	2 7 5 3	7 8 35 47	5 14 5 11	5 15 13 16	17 13	–17 18	9
10	0 24 57 54	9 6 17 36	1 4 26 2	1 15 41 19	3 19 59 29	2 8 11 2	7 8 31 32	5 14 2 0	5 15 10 3	17 29	–15 21	10
11	0 25 55 54	9 20 10 16	1 5 8 32	1 16 23 45	3 20 5 0	2 9 16 50	7 8 27 14	5 13 58 49	5 15 8 34	17 44	–12 29	11
12	0 26 53 52	10 4 13 37	1 5 51 0	1 17 1 15	3 20 10 40	2 10 22 26	7 8 22 55	5 13 55 38	5 15 8 36	18 00	–08 52	12
13	0 27 51 49	10 18 26 35	1 6 33 24	1 17 33 50	3 20 16 29	2 11 27 49	7 8 18 34	5 13 52 28	5 15 9 35	18 15	–04 43	13
14	0 28 49 45	11 2 47 32	1 7 15 45	1 18 1 25	3 20 22 26	2 12 32 58	7 8 14 11	5 13 49 17	5 15 10 42	18 30	–00 14	14
15	0 29 47 39	11 17 13 49	1 7 58 4	1 18 24 0	3 20 28 32	2 13 37 55	7 8 9 48	5 13 46 6	5 15 11 1	18 44	+04 18	15
16	1 0 45 32	0 1 41 41	1 8 40 20	1 18 41 34	3 20 34 48	2 14 42 39	7 8 5 23	5 13 42 56	5 15 9 47	18 58	08 35	16
17	1 1 43 24	0 16 6 19	1 9 22 34	1 18 54 9	3 20 41 12	2 15 47 9	7 8 0 57	5 13 39 45	5 15 6 30	19 12	12 21	17
18	1 2 41 15	1 0 22 16	1 10 4 45	1 19 1 47	3 20 47 44	2 16 51 25	7 7 56 31	5 13 36 34	5 15 1 9	19 26	15 20	18
19	1 3 39 4	1 14 24 12	1 10 46 52	1 19 4 33	3 20 54 25	2 17 55 26	7 7 52 4	5 13 33 23	5 14 54 5	19 39	17 21	19
20	1 4 36 52	1 28 7 39	1 11 28 57	1 19 2 33	3 21 1 14	2 18 59 13	7 7 47 36	5 13 30 13	5 14 46 2	19 52	18 18	20
21	1 5 34 38	2 11 29 40	1 12 10 59	1 18 55 54	3 21 8 11	2 20 2 43	7 7 43 7	5 13 27 2	5 14 37 53	20 04	18 13	21
22	1 6 32 23	2 24 29 20	1 12 52 58	1 18 44 52	3 21 15 16	2 21 5 57	7 7 38 38	5 13 23 51	5 14 30 31	20 16	17 09	22
23	1 7 30 6	3 7 7 30	1 13 34 54	1 18 29 39	3 21 22 30	2 22 8 56	7 7 34 10	5 13 20 40	5 14 24 39	20 28	15 16	23
24	1 8 27 47	3 19 26 51	1 14 16 47	1 18 10 34	3 21 29 51	2 23 11 37	7 7 29 41	5 13 17 30	5 14 20 41	20 40	12 44	24
25	1 9 25 27	4 1 31 13	1 14 58 38	1 17 47 57	3 21 37 20	2 24 14 0	7 7 25 13	5 13 14 19	5 14 18 39	20 51	09 42	25
26	1 10 23 6	4 13 25 23	1 15 40 25	1 17 22 14	3 21 44 56	2 25 16 5	7 7 20 45	5 13 11 8	5 14 18 14	21 1	06 19	26
27	1 11 20 43	4 25 14 31	1 16 22 10	1 16 53 50	3 21 52 40	2 26 17 51	7 7 16 17	5 13 7 57	5 14 18 49	21 12	+02 41	27
28	1 12 18 19	5 7 3 55	1 17 3 51	1 16 23 16	3 22 0 31	2 27 19 18	7 7 11 50	5 13 4 47	5 14 19 34	21 22	–01 03	28
29	1 13 15 53	5 18 58 40	1 17 45 29	1 15 51 2	3 22 8 29	2 28 20 24	7 7 7 22	5 13 1 36	5 14 19 36	21 31	–04 46	29
30	1 14 13 25	6 1 3 22	1 18 27 5	1 15 17 45	3 22 16 35	2 29 21 11	7 7 2 57	5 12 58 25	5 14 18 6	21 41	–08 21	30
31	1 15 10 57	6 13 21 48	1 19 8 38	1 14 43 59	3 22 24 48	3 0 21 36	7 6 58 32	5 12 55 14	5 14 14 29	21 50	–11 38	31
जून	1 16 8 27	6 25 56 42	1 19 50 8	1 14 10 19	3 22 33 8	3 1 21 39	7 6 54 8	5 12 52 4	5 14 8 28	21 58	–14 28	जून
2	1 17 5 56	7 8 49 27	1 20 31 36	1 13 37 19	3 22 41 34	3 2 21 20	7 6 49 46	5 12 48 53	5 14 0 13	+22 6	–16 40	2

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे

(3 जून से 11 जुलाई 2015 ई. तक) 1 जुलाई 2015 ई. को अयनांश 24°/04′/27″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि(वक्री)	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
3	1 18 3 24	7 22 0 4	1 21 13 1	1 13 05 35	3 22 50 8	3 3 20 38	7 6 45 25	5 12 45 42	5 13 50 19	22 14	–18 02	3
4	1 19 0 51	8 5 27 11	1 21 54 23	1 12 35 36	3 22 58 48	3 4 19 31	7 6 41 6	5 12 42 31	5 13 39 41	22 21	–18 26	4
5	1 19 58 17	8 19 8 18	1 22 35 41	1 12 7 53	3 23 7 34	3 5 17 59	7 6 36 47	5 12 39 21	5 13 29 27	22 28	–17 46	5
6	1 20 55 43	9 3 0 15	1 23 16 58	1 11 42 55	3 23 16 27	3 6 16 2	7 6 32 31	5 12 36 10	5 13 20 40	22 35	–16 04	6
7	1 21 53 7	9 16 59 49	1 23 58 12	1 11 21 5	3 23 25 27	3 7 13 40	7 6 28 17	5 12 32 59	5 13 14 7	22 41	–13 24	7
8	1 22 50 31	10 1 4 9	1 24 39 24	1 11 2 44	3 23 34 33	3 8 10 51	7 6 24 4	5 12 29 48	5 13 10 9	22 47	–09 56	8
9	1 23 47 55	10 15 11 0	1 25 20 33	1 . 10 48 10	3 23 43 45	3 9 7 35	7 6 19 54	5 12 26 38	5 13 8 30	22 52	–05 54	9
10	1 24 45 18	10 29 18 56	1 26 1 39	1 10 37 37	3 23 53 2	3 10 3 49	7 6 15 45	5 12 23 27	5 13 8 23	22 57	–01 31	10
11	1 25 42 40	11 13 26 48	1 26 42 43	1 10 31 19	3 24 2 27	3 10 59 34	7 6 11 39	5 12 20 16	5 13 8 39	23 2	+02 57	11
12	1 26 40 2	11 27 33 28	1 27 23 44	1 10 29 23	3 24 11 57	3 11 54 50	7 6 7 35	5 12 17 5	5 13 8 3	23 6	07 15	12
13	1 27 37 23	0 11 37 28	1 28 4 43	1 10 31 54	3 24 21 34	3 12 49 34	7 6 3 35	5 12 13 55	5 13 5 28	23 10	11 08	13
14	1 28 34 44	0 25 36 35	1 28 45 40	1 10 38 57	3 24 31 16	3 13 43 46	7 5 59 37	5 12 10 44	5 13 0 13	23 13	14 21	14
15	1 29 32 5	1 9 27 54	1 29 26 34	1 10 50 33	3 24 41 4	3 14 37 25	7 5 55 41	5 12 7 33	5 12 52 12	23 16	16 44	15
16	2 0 29 25	1 23 8 7	2 0 7 26	1 11 6 44	3 24 50 57	3 15 30 29	7 5 51 49	5 12 4 22	5 12 41 50	23 19	18 06	16
17	2 1 26 44	2 6 34 1	2 0 48 14	1 11 27 26	3 25 0 55	3 16 22 56	7 5 47 59	5 12 1 11	5 12 30 2	23 21	18 26	17
18	2 2 24 3	2 19 43 6	2 1 29 0	1 11 52 38	3 25 10 0	3 17 14 47	7 5 44 13	5 11 58 0	5 12 17 55	23 23	17 46	18
19	2 3 21 21	3 2 34 0	2 2 9 44	1 12 22 20	3 25 21 10	3 18 5 59	7 5 40 31	5 11 54 50	5 12 6 38	23 24	16 12	19
20	2 4 18 38	3 15 6 49	2 2 50 26	1 12 56 24	3 25 31 25	3 18 56 31	7 5 36 51	5 11 51 39	5 11 57 9	23 25	13 53	20
21	2 5 15 55	3 27 23 10	2 3 31 5	1 13 34 49	3 25 41 45	3 19 46 22	7 5 33 16	5 11 48 28	5 11 50 2	23 25	11 00	21
22	2 6 13 11	4 9 25 58	2 4 11 40	1 14 17 29	3 25 52 9	3 20 35 27	7 5 29 43	5 11 45 17	5 11 45 26	23 25	07 42	22
23	2 7 10 26	4 21 19 20	2 4 52 14	1 15 4 22	3 26 2 39	3 21 23 49	7 5 26 14	5 11 42 7	5 11 43 4	23 25	04 08	23
24	2 8 7 41	5 3 8 7	2 5 32 45	1 15 55 24	3 26 13 14	3 22 11 24	7 5 22 50	5 11 38 56	5 11 42 14	23 24	+00 25	24
25	2 9 4 55	5 14 57 37	2 6 13 13	1 16 50 29	3 26 23 54	3 22 58 10	7 5 19 29	5 11 35 45	5 11 42 1	23 23	–03 19	25
26	2 10 2 8	5 26 53 20	2 6 53 39	1 17 49 34	3 26 34 38	3 23 44 5	7 5 16 12	5 11 32 34	5 11 41 23	23 21	–06 57	26
27	2 10 59 21	6 9 0 33	2 7 34 3	1 18 52 36	3 26 45 27	3 24 29 8	7 5 13 0	5 11 29 24	5 11 39 23	23 19	–10 21	27
28	2 11 56 34	6 21 23 58	2 8 14 24	1 19 59 33	3 26 56 20	3 25 13 16	7 5 9 52	5 11 26 13	5 11 35 14	23 17	–13 23	28
29	2 12 53 45	7 4 7 18	2 8 54 43	1 21 10 19	3 27 7 18	3 25 56 28	7 5 6 48	5 11 23 2	5 11 28 35	23 14	–15 51	29
30	2 13 50 57	7 17 12 48	2 9 34 58	1 22 24 53	3 27 18 20	3 26 38 39	7 5 3 47	5 11 19 51	5 11 19 31	23 11	–17 35	30
जुला	2 14 48 8	8 0 40 48	2 10 15 12	1 23 43 12	3 27 29 25	3 27 19 51	7 5 0 52	5 11 16 41	5 11 08 37	23 7	–18 24	जुला
2	2 15 45 19	8 14 29 36	2 10 55 24	1 25 5 13	3 27 40 36	3 27 59 59	7 4 58 2	5 11 13 30	5 10 56 51	23 3	–18 10	2
3	2 16 42 30	8 28 35 29	2 11 35 33	1 26 30 54	3 27 51 51	3 28 39 1	7 4 55 16	5 11 10 19	5 10 45 26	22 59	–16 49	3
4	2 17 39 41	9 12 53 16	2 12 15 39	1 28 00 12	3 28 3 8	3 29 16 53	7 4 52 33	5 11 7 8	5 10 35 30	22 54	–14 25	4
5	2 18 36 52	9 27 17 13	2 12 55 43	1 29 33 3	3 28 14 30	3 29 53 35	7 4 49 57	5 11 3 58	5 10 27 57	22 49	–11 07	5
6	2 19 34 3	10 11 41 54	2 13 35 46	2 1 9 24	3 28 25 56	4 0 29 4	7 4 47 25	5 11 0 47	5 10 23 9	22 43	–07 08	6
7	2 20 31 14	10 26 2 57	2 14 15 46	2 2 49 10	3 28 37 26	4 1 3 17	7 4 44 58	5 10 57 36	5 10 20 56	22 37	–02 46	7
8	2 21 28 26	11 10 17 22	2 14 55 44	2 4 32 16	3 28 49 0	4 1 36 11	7 4 42 36	5 10 54 25	5 10 20 28	22 31	+1 44	8
9	2 22 25 38	11 24 23 30	2 15 35 39	2 6 18 36	3 29 0 37	4 2 7 43	7 4 40 18	5 10 51 15	5 10 20 37	+22 24	06 06	9
10	2 23 22 51	0 8 20 37	2 16 15 33	2 8 8 2	3 29 12 17	4 2 37 51	7 4 38 6	5 10 48 4	5 10 20 4	22 17	10 04	10
11	2 24 20 4	0 22 8 23	2 16 55 25	2 10 0 24	3 29 24 2	4 3 6 30	7 4 35 59	5 10 44 53	5 10 17 42	22 9	13 27	11

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रात: 5/30 बजे

(12 जुला. से 19 अग. 2015 ई. तक) 1 अग. 2015 ई. को अयनांश 24°/04′/32″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जुला	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	जुला.
12	2 25 17 17	1 5 46 29	2 17 35 14	2 11 55 33	3 29 35 49	4 3 33 39	7 4 33 57	5 10 41 42	5 10 12 46	22 1	16 3	12
13	2 26 14 31	1 19 14 16	2 18 15 1	2 13 53 13	3 29 47 39	4 3 59 12	7 4 31 59	5 10 38 32	5 10 5 7	21 53	17 43	13
14	2 27 11 45	2 2 30 45	2 18 54 47	2 15 53 14	3 29 59 34	4 4 23 9	7 4 30 8	5 10 35 21	5 9 55 9	21 44	18 24	14
15	2 28 9 0	2 15 34 41	2 19 34 30	2 17 55 19	4 0 11 31	4 4 45 24	7 4 28 22	5 10 32 10	5 9 43 42	21 35	18 05	15
16	2 29 6 15	2 28 25 1	2 20 14 12	2 19 59 10	4 0 23 32	4 5 5 55	7 4 26 41	5 10 28 59	5 9 31 52	21 25	16 51	16
17	3 0 3 30	3 11 1 6	2 20 53 50	2 22 4 30	4 0 35 35	4 5 24 36	7 4 25 5	5 10 25 48	5 9 20 47	21 16	14 49	17
18	3 1 0 46	3 23 23 7	2 21 33 27	2 24 11 1	4 0 47 41	4 5 41 25	7 4 23 35	5 10 22 38	5 9 11 24	21 5	12 8	18
19	3 1 58 2	4 5 32 10	2 22 13 1	2 26 18 24	4 0 59 50	4 5 56 19	7 4 22 11	5 10 19 27	5 9 4 19	20 55	8 59	19
20	3 2 55 18	4 17 30 29	2 22 52 34	2 28 26 19	4 1 12 2	4 6 9 12	7 4 20 52	5 10 16 16	5 8 59 45	20 44	5 30	20
21	3 3 52 35	4 29 21 15	2 23 32 4	3 0 34 30	4 1 24 17	4 6 20 2	7 4 19 39	5 10 13 5	5 8 57 30	20 33	+1 50	21
22	3 4 49 52	5 11 8 31	2 24 11 33	3 2 42 39	4 1 36 34	4 6 28 46	7 4 18 31	5 10 9 55	5 8 56 59	20 21	–1 53	22
23	3 5 47 9	5 22 57 4	2 24 50 59	3 4 50 31	4 1 48 54	4 6 35 19	7 4 17 29	5 10 6 44	5 8 57 23	20 9	–5 32	23
24	3 6 44 26	6 4 52 5	2 25 30 23	3 6 57 50	4 2 1 16	4 6 39 39	7 4 16 33	5 10 3 33	5 8 57 47	19 57	–9 00	24
25	3 7 41 44	6 16 58 57	2 26 9 44	3 9 4 25	4 2 13 41	4 6 41 42	7 4 15 43	5 10 0 22	5 8 57 16	19 44	–12 8	25
26	3 8 39 2	6 29 22 52	2 26 49 4	3 11 10 4	4 2 26 7	4 6 41 28	7 4 14 58	5 9 57 11	5 8 55 7	19 31	–14 49	26
27	3 9 36 21	7 12 8 17	2 27 28 21	3 13 14 36	4 2 38 35	4 6 38 51	7 4 14 18	5 9 54 0	5 8 50 56	19 18	–16 51	27
28	3 10 33 40	7 25 18 32	2 28 7 37	3 15 17 58	4 2 51 7	4 6 33 52	7 4 13 45	5 9 50 50	5 8 44 43	19 5	–18 4	28
29	3 11 30 59	8 8 55 0	2 28 46 50	3 17 19 59	4 3 3 41	4 6 26 30	7 4 13 18	5 9 47 39	5 8 36 53	18 51	–18 18	29
30	3 12 28 19	8 22 56 46	2 29 26 2	3 19 20 36	4 3 16 15	4 6 16 44	7 4 12 57	5 9 44 28	5 8 28 12	18 37	–17 27	30
31	3 13 25 40	9 7 20 16	3 0 5 12	3 21 19 45	4 3 28 52	4 6 4 35	7 4 12 41	5 9 41 17	5 8 19 41	18 22	–15 29	31
अग.	3 14 23 1	9 21 59 45	3 0 44 18	3 23 17 22	4 3 41 30	4 5 50 1	7 4 12 30	5 9 38 6	5 8 12 16	18 7	–12 29	अग.
2	3 15 20 24	10 6 47 18	3 1 23 24	3 25 13 26	4 3 54 11	4 5 33 6	7 4 12 26	5 9 34 56	5 8 6 44	17 52	–8 40	2
3	3 16 17 47	10 21 35 35	3 2 2 28	3 27 7 55	4 4 6 53	4 5 13 54	7 4 12 27	5 9 31 45	5 8 3 25	17 37	–4 19	3
4	3 17 15 11	11 6 17 30	3 2 41 30	3 29 0 49	4 4 19 37	4 4 52 28	7 4 12 34	5 9 28 34	5 8 2 13	17 21	+0 17	4
5	3 18 12 37	11 20 47 45	3 3 20 30	4 0 52 7	4 4 32 23	4 4 28 54	7 4 12 47	5 9 25 23	5 8 2 33	17 5	04 48	5
6	3 19 10 3	0 5 3 2	3 3 59 29	4 2 41 50	4 4 45 10	4 4 3 15	7 4 13 6	5 9 22 12	5 8 3 31	16 49	08 58	6
7	3 20 7 32	0 19 1 47	3 4 38 26	4 4 29 57	4 4 57 59	4 3 35 41	7 4 13 31	5 9 19 2	5 8 4 8	16 32	12 32	7
8	3 21 5 1	1 2 43 54	3 5 17 21	4 6 16 29	4 5 10 49	4 3 6 18	7 4 14 1	5 9 15 51	5 8 3 31	16 16	15 20	8
9	3 22 2 32	1 16 9 57	3 5 56 14	4 8 1 26	4 5 23 41	4 2 35 17	7 4 14 38	5 9 12 40	5 8 1 5	15 59	17 15	9
10	3 23 0 4	1 29 20 56	3 6 35 5	4 9 44 49	4 5 36 33	4 2 2 43	7 4 15 19	5 9 9 29	5 7 56 42	15 41	18 11	10
11	3 23 57 37	2 12 17 49	3 7 13 55	4 11 26 40	4 5 49 27	4 1 28 53	7 4 16 7	5 9 6 18	5 7 50 37	15 24	18 09	11
12	3 24 55 12	2 25 1 34	3 7 52 43	4 13 6 58	4 6 2 23	4 0 53 57	7 4 17 2	5 9 3 7	5 7 43 26	15 6	17 12	12
13	3 25 52 48	3 7 32 55	3 8 31 30	4 14 45 44	4 6 15 19	4 0 18 6	7 4 18 1	5 8 59 57	5 7 35 56	14 48	15 26	13
14	3 26 50 25	3 19 52 43	3 9 10 14	4 16 22 58	4 6 28 16	3 29 41 33	7 4 19 7	5 8 56 46	5 7 28 55	14 30	12 59	14
15	3 27 48 3	4 2 1 54	3 9 48 58	4 17 58 41	4 6 41 15	3 29 4 32	7 4 20 18	5 8 53 35	5 7 23 4	+14 11	10 00	15
16	3 28 45 43	4 14 1 53	3 10 27 38	4 19 32 52	4 6 54 14	3 28 27 20	7 4 21 35	5 8 50 24	5 7 18 52	13 52	06 37	16
17	3 29 43 24	4 25 54 31	3 11 6 18	4 21 5 33	4 7 7 13	3 27 50 6	7 4 22 58	5 8 47 14	5 7 16 30	13 34	+03 02	17
18	4 0 41 6	5 7 42 19	3 11 44 54	4 22 36 43	4 7 20 14	3 27 13 8	7 4 24 27	5 8 44 4	5 7 15 49	13 14	–00 40	18
19	4 1 38 49	5 19 28 25	3 12 23 30	4 24 6 21	4 7 33 15	3 26 36 38	7 4 26 1	5 8 40 53	5 7 16 30	12 55	–04 19	19

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे

(20 अग. से 27 सितं. 2015 ई. तक) 1 सितंबर, 2015 ई. को अयनांश 24°/04′/35″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
20	4 2 36 33	6 1 16 38	3 13 2 3	4 25 34 27	4 7 46 17	3 26 0 50	7 4 27 41	5 8 37 42	5 7 17 58	12 35	-07 49	20
21	4 3 34 18	6 13 11 19	3 13 40 34	4 27 0 59	4 7 59 18	3 25 25 57	7 4 29 26	5 8 34 31	5 7 19 39	12 16	-11 02	21
22	4 4 32 5	6 25 17 13	3 14 19 4	4 28 25 57	4 8 12 20	3 24 52 13	7 4 31 17	5 8 31 21	5 7 20 54	11 56	-13 49	22
23	4 5 29 53	7 7 39 14	3 14 57 33	4 29 49 20	4 8 25 23	3 24 19 50	7 4 33 15	5 8 28 10	5 7 21 14	11 36	-16 03	23
24	4 6 27 41	7 20 22 0	3 15 35 59	5 1 11 5	4 8 38 26	3 23 48 57	7 4 35 17	5 8 24 59	5 7 20 21	11 15	-17 33	24
25	4 7 25 31	8 3 29 27	3 16 14 24	5 2 31 10	4 8 51 29	3 23 19 46	7 4 37 26	5 8 21 48	5 7 18 12	10 55	-18 12	25
26	4 8 23 23	8 17 4 11	3 16 52 47	5 3 49 34	4 9 4 32	3 22 52 25	7 4 39 39	5 8 18 38	5 7 15 2	10 34	-17 50	26
27	4 9 21 15	9 1 6 41	3 17 31 8	5 5 6 12	4 9 17 35	3 22 27 2	7 4 41 59	5 8 15 27	5 7 11 16	10 13	-16 23	27
28	4 10 19 9	9 15 34 52	3 18 9 26	5 6 21 0	4 9 30 38	3 22 3 43	7 4 44 22	5 8 12 16	5 7 7 29	9 52	-13 52	28
29	4 11 17 4	10 0 23 51	3 18 47 44	5 7 33 57	4 9 43 41	3 21 42 37	7 4 46 52	5 8 9 5	5 7 4 13	9 31	-10 24	29
30	4 12 15 1	10 15 26 13	3 19 26 0	5 8 44 56	4 9 56 44	3 21 23 47	7 4 49 28	5 8 5 55	5 7 1 55	9 10	-06 13	30
31	4 13 13 0	11 0 33 7	3 20 4 15	5 9 53 55	4 10 9 46	3 21 7 16	7 4 52 8	5 8 2 44	5 7 0 46	8 48	-01 36	31
सितं	4 14 11 0	11 15 35 27	3 20 42 27	5 11 0 47	4 10 22 49	3 20 53 9	7 4 54 54	5 7 59 33	5 7 0 44	8 27	+03 06	सितं
2	4 15 9 2	0 0 25 16	3 21 20 39	5 12 5 24	4 10 35 51	3 20 41 27	7 4 57 46	5 7 56 22	5 7 1 32	8 5	07 32	2
3	4 16 7 4	0 14 56 45	3 21 58 50	5 13 7 40	4 10 48 52	3 20 32 10	7 5 0 42	5 7 53 12	5 7 2 43	7 43	11 25	3
4	4 17 5 10	0 29 6 24	3 22 36 58	5 14 7 30	4 11 1 54	3 20 25 19	7 5 3 44	5 7 50 1	5 7 3 48	7 21	14 32	4
5	4 18 3 18	1 12 52 59	3 23 15 4	5 15 4 40	4 11 14 54	3 20 20 54	7 5 6 51	5 7 46 50	5 7 4 24	6 59	16 43	5
6	4 19 1 27	1 26 17 7	3 23 53 11	5 15 59 5	4 11 27 55	3 20 18 52	7 5 10 3	5 7 43 39	5 7 4 16	6 37	17 55	6
7	4 19 59 39	2 9 20 33	3 24 31 15	5 16 50 32	4 11 40 54	3 20 19 13	7 5 13 20	5 7 40 29	5 7 3 19	6 14	18 07	7
8	4 20 57 52	2 22 5 41	3 25 9 16	5 17 38 48	4 11 53 52	3 20 21 52	7 5 16 43	5 7 37 18	5 7 1 42	5 52	17 24	8
9	4 21 56 8	3 4 35 15	3 25 47 17	5 18 23 43	4 12 6 50	3 20 26 51	7 5 20 10	5 7 34 7	5 6 59 39	5 29	15 51	9
10	4 22 54 26	3 16 51 53	3 26 25 17	5 19 5 2	4 12 19 47	3 20 34 3	7 5 23 43	5 7 30 56	5 6 57 30	5 7	13 35	10
11	4 23 52 45	3 28 58 4	3 27 3 15	5 19 42 27	4 12 32 43	3 20 43 27	7 5 27 20	5 7 27 46	5 6 55 33	4 44	10 46	11
12	4 24 51 7	4 10 56 8	3 27 41 11	5 20 15 44	4 12 45 38	3 20 54 59	7 5 31 2	5 7 24 35	5 6 54 3	4 21	07 31	12
13	4 25 49 30	4 22 48 15	3 28 19 5	5 20 44 34	4 12 58 32	3 21 8 35	7 5 34 48	5 7 21 24	5 6 53 7	3 58	04 00	13
14	4 26 47 55	5 4 36 31	3 28 56 58	5 21 8 38	4 13 11 24	3 21 24 11	7 5 38 41	5 7 18 13	5 6 52 47	3 35	+00 20	14
15	4 27 46 22	5 16 23 10	3 29 34 49	5 21 27 37	4 13 24 15	3 21 41 45	7 5 42 37	5 7 15 3	5 6 52 58	3 12	-03 20	15
16	4 28 44 51	5 28 10 38	4 0 12 39	5 21 41 9	4 13 37 5	3 22 1 14	7 5 46 39	5 7 11 52	5 6 53 30	2 49	-06 52	16
17	4 29 43 23	6 10 1 41	4 0 50 27	5 21 48 53	4 13 49 53	3 22 22 31	7 5 50 45	5 7 8 41	5 6 54 14	2 26	-10 09	17
18	5 0 41 55	6 21 59 27	4 1 28 13	5 21 50 29	4 14 2 40	3 22 45 35	7 5 54 55	5 7 5 30	5 6 54 57	2 3	-13 02	18
19	5 1 40 29	7 4 7 30	4 2 5 58	5 21 45 38	4 14 15 25	3 23 10 22	7 5 59 11	5 7 2 20	5 6 55 31	1 40	-15 24	19
20	5 2 39 5	7 16 29 37	4 2 43 41	5 21 34 3	4 14 28 8	3 23 36 49	7 6 3 30	5 6 59 9	5 6 55 50	1 16	-17 06	20
21	5 3 37 42	7 29 9 45	4 3 21 22	5 21 15 31	4 14 40 50	3 24 4 51	7 6 7 55	5 6 55 58	5 6 55 55	+0 53	-18 01	21
22	5 4 36 21	8 12 11 37	4 3 59 2	5 20 49 50	4 14 53 30	3 24 34 26	7 6 12 23	5 6 52 47	5 6 55 51	0 30	-18 01	22
23	5 5 35 1	8 25 38 18	4 4 36 39	5 20 17 2	4 15 6 7	3 25 5 30	7 6 16 55	5 6 49 36	5 6 55 42	+0 6	-17 01	23
24	5 6 33 44	9 9 31 30	4 5 14 15	5 19 37 11	4 15 18 42	3 25 38 2	7 6 21 33	5 6 46 26	5 6 55 37	-0 15	-15 00	24
25	5 7 32 28	9 23 51 3	4 5 51 50	5 18 50 38	4 15 31 16	3 26 11 57	7 6 26 14	5 6 43 15	5 6 55 39	-0 38	-12 00	25
26	5 8 31 14	10 8 34 16	4 6 29 23	5 17 57 53	4 15 43 47	3 26 47 13	7 6 30 59	5 6 40 4	5 6 55 48	-1 2	-08 10	26
27	5 9 30 1	10 23 35 45	4 7 6 54	5 16 59 51	4 15 56 16	3 27 23 47	7 6 35 49	5 6 36 53	5 6 55 59	-1 25	-03 45	27

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे (28 सितं. से 5 नवं. 2015 ई. तक) 1 अक्तू. 2015 ई. को अयनांश 24°/04'/37", 1 नवं. 2015 ई. को अयनांश 24°/04'/40"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	तिथि
सितं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
28	5 10 28 51	11 8 47 36	4 7 44 24	5 15 57 4	4 16 8 43	3 28 1 36	7 6 40 43	5 6 33 43	5 6 56 7	–1 48	+00 59	28
29	5 11 27 42	11 24 0 25	4 8 21 52	5 14 51 15	4 16 21 7	3 28 40 38	7 6 45 40	5 6 30 32	5 6 56 2	–2 12	05 39	29
30	5 12 26 36	0 9 4 35	4 8 59 19	5 13 43 44	4 16 33 29	3 29 20 51	7 6 50 42	5 6 27 21	5 6 55 41	–2 35	09 54	30
अक्तू	5 13 25 31	0 23 51 42	4 9 36 44	5 12 46 14	4 16 45 49	4 0 2 11	7 6 55 47	5 6 24 10	5 6 55 3	–2 58	13 27	अक्तू
2	5 14 24 29	1 8 15 39	4 10 14 8	5 11 30 26	4 16 58 6	4 0 44 36	7 7 0 57	5 6 20 59	5 6 54 16	–3 23	16 04	2
3	5 15 23 30	1 22 13 6	4 10 51 31	5 10 28 9	4 17 10 20	4 1 28 4	7 7 6 10	5 6 17 49	5 6 53 28	–3 46	17 38	3
4	5 16 22 32	2 5 43 24	4 11 28 52	5 9 31 7	4 17 22 31	4 2 12 33	7 7 11 27	5 6 14 38	5 6 52 53	–4 8	18 08	4
5	5 17 21 37	2 18 48 3	4 12 6 10	5 8 40 54	4 17 34 39	4 2 57 59	7 7 16 46	5 6 11 27	5 6 52 42	–4 32	17 39	5
6	5 18 20 44	3 1 30 2	4 12 43 28	5 7 58 54	4 17 46 45	4 3 44 22	7 7 22 11	5 6 8 16	5 6 53 2	–4 54	16 17	6
7	5 19 19 54	3 13 53 10	4 13 20 45	5 7 26 9	4 17 58 48	4 4 31 38	7 7 27 39	5 6 5 6	5 6 53 52	–5 17	14 11	7
8	5 20 19 6	3 26 1 34	4 13 58 0	5 7 3 30	4 18 10 47	4 5 19 47	7 7 33 10	5 6 1 55	5 6 55 5	–5 40	11 29	8
9	5 21 18 20	4 7 59 20	4 14 35 13	5 6 51 25	4 18 22 43	4 6 8 47	7 7 38 45	5 5 58 44	5 6 56 27	–6 3	08 21	9
10	5 22 17 36	4 19 50 15	4 15 12 24	5 6 50 6	4 18 34 36	4 6 58 34	7 7 44 23	5 5 55 33	5 6 57 40	–6 26	04 53	10
11	5 23 16 55	5 1 37 40	4 15 49 34	5 6 59 29	4 18 46 26	4 7 49 8	7 7 50 4	5 5 52 23	5 6 58 25	–6 49	+01 15	11
12	5 24 16 15	5 13 24 29	4 16 26 42	5 7 19 16	4 18 58 12	4 8 40 26	7 7 55 49	5 5 49 12	5 6 58 24	–7 11	–02 25	12
13	5 25 15 38	5 25 13 9	4 17 3 49	5 7 49 0	4 19 9 54	4 9 32 27	7 8 1 37	5 5 46 1	5 6 57 27	–7 34	–06 01	13
14	5 26 15 3	6 7 5 53	4 17 40 54	5 8 28 4	4 19 21 33	4 10 25 10	7 8 7 29	5 5 42 50	5 6 55 29	–7 56	–09 23	14
15	5 27 14 29	6 19 4 38	4 18 17 57	5 9 15 45	4 19 33 8	4 11 18 33	7 8 13 23	5 5 39 40	5 6 52 38	–8 19	–12 24	15
16	5 28 13 58	7 1 11 18	4 18 54 58	5 10 11 17	4 19 44 39	4 12 12 34	7 8 19 21	5 5 36 29	5 6 49 8	–8 41	–14 55	16
17	5 29 13 29	7 13 27 56	4 19 31 57	5 11 13 52	4 19 56 6	4 13 7 13	7 8 25 21	5 5 33 18	5 6 45 25	–9 3	–16 48	17
18	6 0 13 1	7 25 56 41	4 20 8 55	5 12 22 42	4 20 7 29	4 14 2 28	7 8 31 24	5 5 30 7	5 6 41 58	–9 25	–17 55	18
19	6 1 12 35	8 8 40 1	4 20 45 50	5 13 37 2	4 20 18 46	4 14 58 17	7 8 37 30	5 5 26 56	5 6 39 13	–9 47	–18 10	19
20	6 2 12 11	8 21 40 26	4 21 22 43	5 14 56 7	4 20 30 1	4 15 54 41	7 8 43 39	5 5 23 46	5 6 37 34	–10 8	–17 28	20
21	6 3 11 49	9 5 0 26	4 21 59 35	5 16 19 16	4 20 41 11	4 16 51 37	7 8 49 50	5 5 20 35	5 6 37 8	–10 30	–15 49	21
22	6 4 11 28	9 18 42 1	4 22 36 26	5 17 45 53	4 20 52 17	4 17 49 5	7 8 56 5	5 5 17 24	5 6 37 48	–10 51	–13 14	22
23	6 5 11 9	10 2 46 12	4 23 13 14	5 19 15 23	4 21 3 18	4 18 47 4	7 9 2 22	5 5 14 13	5 6 39 10	–11 12	–09 49	23
24	6 6 10 52	10 17 12 27	4 23 50 0	5 20 47 17	4 21 14 14	4 19 45 32	7 9 8 41	5 5 11 2	5 6 40 39	–11 33	–05 43	24
25	6 7 10 36	11 1 58 4	4 24 26 44	5 22 21 9	4 21 25 6	4 20 44 30	7 9 15 3	5 5 7 52	5 6 41 34	–11 54	–01 11	25
26	6 8 10 23	11 16 57 49	4 25 3 27	5 23 56 33	4 21 35 53	4 21 43 55	7 9 21 27	5 5 4 41	5 6 41 18	–12 15	+03 30	26
27	6 9 10 11	0 2 4 13	4 25 40 8	5 25 33 13	4 21 46 35	4 22 43 49	7 9 27 53	5 5 1 30	5 6 39 28	–12 35	08 00	27
28	6 10 10 1	0 17 8 11	4 26 16 47	5 27 10 49	4 21 57 12	4 23 44 8	7 9 34 22	5 4 58 19	5 6 36 2	–12 56	11 58	28
29	6 11 9 53	1 2 0 25	4 26 53 24	5 28 49 8	4 22 7 44	4 24 44 54	7 9 40 53	5 4 55 9	5 6 31 17	–13 16	15 06	29
30	6 12 9 47	1 16 32 41	4 27 29 58	6 0 27 58	4 22 18 9	4 25 46 5	7 9 47 25	5 4 51 58	5 6 25 50	–13 36	17 12	30
31	6 13 9 43	2 0 39 49	4 28 6 32	6 2 7 8	4 22 28 31	4 26 47 41	7 9 54 0	5 4 48 47	5 6 20 25	–13 55	18 10	31
नवं.	6 14 9 41	2 14 18 37	4 28 43 4	6 3 46 30	4 22 38 47	4 27 49 40	7 10 0 37	5 4 45 36	5 6 15 48	–14 15	18 02	नवं.
2	6 15 9 42	2 27 29 20	4 29 19 34	6 5 25 57	4 22 48 58	4 28 52 2	7 10 7 17	5 4 42 26	5 6 12 33	–14 34	16 55	2
3	6 16 9 43	3 10 14 26	4 29 56 3	6 7 5 22	4 22 59 4	4 29 54 46	7 10 13 58	5 4 39 15	5 6 10 56	–14 53	14 59	3
4	6 17 9 49	3 22 37 49	5 0 32 28	6 8 44 41	4 23 9 1	5 0 57 51	7 10 20 40	5 4 36 4	5 6 10 53	–15 12	12 24	4
5	6 18 9 56	4 4 44 21	5 1 8 52	6 10 23 52	4 23 18 55	5 2 1 17	7 10 27 24	5 4 32 53	5 6 12 0	–15 30	09 20	5

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(6 नवं. 14 दिसं. 2015 ई. तक)

1 दिसंबर 2015 ई. को अयनांश 24°/04′/44″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
नवं.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क..वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	अं. क.	अं. क.	
6	6 19 10 4	4 16 39 10	5 1 45 15	6 12 2 49	4 23 28 43	5 3 5 3	7 10 34 11	5 4 29 43	5 6 13 37	−15 49	05 56	6
7	6 20 10 15	4 28 27 17	5 2 21 35	6 13 41 32	4 23 38 24	5 4 9 9	7 10 40 59	5 4 26 32	5 6 14 56	−16 06	+02 19	7
8	6 21 10 28	5 10 13 21	5 2 57 53	6 15 19 59	4 23 48 0	5 5 13 34	7 10 47 49	5 4 23 21	5 6 15 9	−16 24	−01 23	8
9	6 22 10 43	5 22 1 23	5 3 34 9	6 16 58 8	4 23 57 29	5 6 18 17	7 10 54 40	5 4 20 10	5 6 13 37	−16 42	−05 02	9
10	6 23 11 0	6 3 54 39	5 4 10 23	6 18 35 58	4 24 6 52	5 7 23 17	7 11 1 32	5 4 16 59	5 6 9 53	−16 59	−08 31	10
11	6 24 11 19	6 15 55 42	5 4 46 34	6 20 13 29	4 24 16 9	5 8 28 35	7 11 8 26	5 4 13 49	5 6 3 52	−17 16	−11 41	11
12	6 25 11 39	6 28 6 16	5 5 22 44	6 21 50 42	4 24 25 19	5 9 34 9	7 11 15 22	5 4 10 38	5 5 55 49	−17 32	−14 24	12
13	6 26 12 1	7 10 27 29	5 5 58 51	6 23 27 35	4 24 34 22	5 10 40 0	7 11 22 18	5 4 7 27	5 5 46 22	−17 48	−16 30	13
14	6 27 12 25	7 22 59 59	5 6 34 56	6 25 4 9	4 24 43 19	5 11 46 5	7 11 29 16	5 4 4 16	5 5 36 22	−18 04	−17 51	14
15	6 28 12 50	8 5 44 10	5 7 10 57	6 26 40 24	4 24 52 7	5 12 52 25	7 11 36 14	5 4 1 6	5 5 26 51	−18 20	−18 20	15
16	6 29 13 16	8 18 40 24	5 7 46 57	6 28 16 22	4 25 0 50	5 13 59 0	7 11 43 14	5 3 57 55	5 5 18 46	−18 35	−17 53	16
17	7 0 13 45	9 1 49 17	5 8 22 53	6 29 52 3	4 25 9 25	5 15 5 50	7 11 50 15	5 3 54 44	5 5 12 52	−18 50	−16 28	17
18	7 1 14 14	9 15 11 41	5 8 58 48	7 1 27 29	4 25 17 53	5 16 12 53	7 11 57 17	5 3 51 33	5 5 9 26	−19 05	−14 09	18
19	7 2 14 44	9 28 48 40	5 9 34 40	7 3 2 36	4 25 26 14	5 17 20 10	7 12 4 19	5 3 48 22	5 5 8 15	−19 19	−11 01	19
20	7 3 15 16	10 12 41 13	5 10 10 30	7 4 37 31	4 25 34 27	5 18 27 39	7 12 11 22	5 3 45 12	5 5 8 35	−19 33	−07 13	20
21	7 4 15 49	10 26 49 45	5 10 46 16	7 6 12 10	4 25 42 32	5 19 35 20	7 12 18 25	5 3 42 1	5 5 9 23	−19 47	−02 56	21
22	7 5 16 24	11 11 13 32	5 11 22 0	7 7 46 38	4 25 50 29	5 20 43 15	7 12 25 29	5 3 38 50	5 5 9 24	−20 00	+01 36	22
23	7 6 16 59	11 25 50 5	5 11 57 42	7 9 20 53	4 25 58 20	5 21 51 22	7 12 32 34	5 3 35 39	5 5 7 33	−20 13	06 07	23
24	7 7 17 36	0 10 34 52	5 12 33 21	7 10 54 58	4 26 6 2	5 22 59 40	7 12 39 40	5 3 32 28	5 5 3 8	−20 26	10 17	24
25	7 8 18 14	0 25 21 21	5 13 8 58	7 12 28 53	4 26 13 36	5 24 8 11	7 12 46 46	5 3 29 18	5 4 56 1	−20 38	13 49	25
26	7 9 18 53	1 10 1 45	5 13 44 32	7 14 2 39	4 26 21 3	5 25 16 52	7 12 53 52	5 3 26 7	5 4 46 36	−20 49	16 27	26
27	7 10 19 34	1 24 28 14	5 14 20 4	7 15 36 18	4 26 28 21	5 26 25 45	7 13 0 59	5 3 22 56	5 4 35 48	−21 01	17 59	27
28	7 11 20 16	2 8 34 11	5 14 55 32	7 17 9 47	4 26 35 31	5 27 34 48	7 13 8 4	5 3 19 45	5 4 24 48	−21 12	18 22	28
29	7 12 20 59	2 22 15 15	5 15 30 59	7 18 43 12	4 26 42 32	5 28 44 2	7 13 15 11	5 3 16 35	5 4 14 48	−21 22	17 40	29
30	7 13 21 44	3 5 29 51	5 16 6 22	7 20 16 31	4 26 49 26	5 29 53 27	7 13 22 18	5 3 13 24	5 4 6 44	−21 32	16 00	30
दिसं	7 14 22 30	3 18 18 52	5 16 41 43	7 21 49 44	4 26 56 10	6 1 3 1	7 13 29 25	5 3 10 13	5 4 1 9	−21 42	13 36	दिसं
2	7 15 23 18	4 0 45 22	5 17 17 2	7 23 22 53	4 27 2 46	6 2 12 45	7 13 36 32	5 3 7 3	5 3 58 2	−21 52	10 37	2
3	7 16 24 8	4 12 53 46	5 17 52 16	7 24 55 57	4 27 9 12	6 3 22 38	7 13 43 38	5 3 3 52	5 3 56 56	−22 00	07 15	3
4	7 17 24 58	4 24 49 24	5 18 27 28	7 26 28 58	4 27 15 30	6 4 32 40	7 13 50 45	5 3 0 41	5 3 56 59	−22 09	+03 39	4
5	7 18 25 50	5 6 37 40	5 19 2 37	7 28 1 54	4 27 21 39	6 5 42 51	7 13 57 51	5 2 57 30	5 3 57 5	−22 17	−00 04	5
6	7 19 26 44	5 18 24 36	5 19 37 44	7 29 34 47	4 27 27 39	6 6 53 11	7 14 4 57	5 2 54 19	5 3 56 9	−22 25	−03 46	6
7	7 20 27 39	6 0 14 45	5 20 12 47	8 1 7 35	4 27 33 30	6 8 3 38	7 14 12 3	5 2 51 9	5 3 53 12	−22 32	−07 20	7
8	7 21 28 35	6 12 12 43	5 20 47 47	8 2 40 17	4 27 39 11	6 9 14 14	7 14 19 8	5 2 47 58	5 3 47 34	−22 39	−10 39	8
9	7 22 29 32	6 24 21 57	5 21 22 43	8 4 12 54	4 27 44 43	6 10 24 58	7 14 26 13	5 2 44 47	5 3 39 2	−22 45	−13 34	9
10	7 23 30 30	7 6 44 48	5 21 57 36	8 5 45 23	4 27 50 5	6 11 35 48	7 14 33 17	5 2 41 36	5 3 27 51	−22 51	−15 56	10
11	7 24 31 29	7 19 22 25	5 22 32 25	8 7 17 42	4 27 55 16	6 12 46 45	7 14 40 20	5 2 38 25	5 3 14 44	−22 56	−17 35	11
12	7 25 32 29	8 2 14 46	5 23 7 11	8 8 49 50	4 28 0 18	6 13 57 50	7 14 47 22	5 2 35 15	5 3 0 49	−23 01	−18 23	12
13	7 26 33 30	8 15 20 53	5 23 41 54	8 10 21 44	4 28 5 11	6 15 9 1	7 14 54 24	5 2 32 4	5 2 47 21	−23 06	−18 14	13
14	7 27 34 33	8 28 39 10	5 24 16 32	8 11 53 20	4 28 9 54	6 16 20 19	7 15 1 25	5 2 28 53	5 2 35 38	−23 10	−17 05	14

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे (15 दिस. 2015 से 22 जन. 2016 ई. तक) 1 जनवरी 2016 ई. को अयनांश 24°/04′/49″

दि.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	दि.
दिसं	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा.अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	अं.क.	अं.क.	
15	7 28 35 35	9 12 7 54	5 24 51 6	8 13 24 33	4 28 14 25	6 17 31 42	7 15 8 25	5 2 25 42	5 2 26 35	–23 13	–14 58	15
16	7 29 36 38	9 25 45 36	5 25 25 38	8 14 55 20	4 28 18 47	6 18 43 12	7 15 15 24	5 2 22 31	5 2 20 40	–23 16	–12 01	16
17	8 0 37 41	10 9 31 18	5 26 0 5	8 16 25 34	4 28 22 59	6 19 54 47	7 15 22 21	5 2 19 21	5 2 17 42	–23 19	–08 22	17
18	8 1 38 45	10 23 24 34	5 26 34 28	8 17 55 8	4 28 27 0	6 21 6 28	7 15 29 18	5 2 16 10	5 2 16 52	–23 21	–04 14	18
19	8 2 39 49	11 7 25 21	5 27 8 47	8 19 23 53	4 28 30 51	6 22 18 15	7 15 36 13	5 2 12 59	5 2 16 55	–23 23	+00 11	19
20	8 3 40 54	11 21 33 22	5 27 43 2	8 20 51 39	4 28 34 31	6 23 30 6	7 15 43 7	5 2 9 48	5 2 16 23	–23 24	04 37	20
21	8 4 41 58	0 5 47 43	5 28 17 13	8 22 18 14	4 28 38 1	6 24 42 3	7 15 50 0	5 2 6 38	5 2 13 58	–23 25	08 49	21
22	8 5 43 2	0 20 6 16	5 28 51 20	8 23 43 25	4 28 41 20	6 25 54 5	7 15 56 51	5 2 3 27	5 2 8 47	–23 25	12 31	22
23	8 6 44 8	1 4 25 25	5 29 25 22	8 25 6 55	4 28 44 27	6 27 6 11	7 16 3 39	5 2 0 16	5 2 0 33	–23 25	15 29	23
24	8 7 45 13	1 18 40 22	5 29 59 21	8 26 28 26	4 28 47 25	6 28 18 23	7 16 10 28	5 1 57 5	5 1 49 40	–23 25	15 29	24
25	8 8 46 19	2 2 45 35	6 0 33 16	8 27 47 35	4 28 50 11	6 29 30 40	7 16 17 14	5 1 53 55	5 1 37 5	–23 23	18 23	25
26	8 9 47 25	2 16 35 45	6 1 7 7	8 29 4 58	4 28 52 47	7 0 43 2	7 16 23 59	5 1 50 44	5 1 24 5	–23 22	18 11	26
27	8 10 48 32	3 0 6 42	6 1 40 52	9 0 17 5	4 28 55 11	7 1 55 27	7 16 30 41	5 1 47 33	5 1 12 0	–23 20	16 57	27
28	8 11 49 38	3 13 16 2	6 2 14 34	9 1 26 25	4 28 57 25	7 3 7 58	7 16 37 22	5 1 44 22	5 1 1 56	–23 17	14 50	28
29	8 12 50 46	3 26 3 23	6 2 48 11	9 2 31 19	4 28 59 28	7 4 20 32	7 16 44 1	5 1 41 12	5 0 54 32	–23 14	12 02	29
30	8 13 51 53	4 8 30 20	6 3 21 44	9 3 31 5	4 29 1 19	7 5 33 12	7 16 50 38	5 1 38 1	5 0 49 58	–23 11	08 45	30
31	8 14 53 2	4 20 40 12	6 3 55 12	9 4 25 0	4 29 2 59	7 6 45 55	7 16 57 13	5 1 34 50	5 0 47 52	–23 07	05 11	31
2016 जन.	8 15 54 10	5 2 37 23	6 4 28 35	9 5 12 12	4 29 4 28	7 7 58 42	7 17 3 46	5 1 31 39	5 0 47 26	–23 03	+01 28	2016 जन.
2	8 16 55 19	5 14 27 4	6 5 1 54	9 5 51 50	4 29 5 45	7 9 11 33	7 17 10 16	5 1 28 29	5 0 47 37	–22 58	–02 17	2
3	8 17 56 28	5 26 14 51	6 5 35 7	9 6 22 57	4 29 6 51	7 10 24 27	7 17 16 45	5 1 25 18	5 0 47 18	–22 52	–05 55	3
4	8 18 57 38	6 8 6 17	6 6 8 15	9 6 44 40	4 29 7 45	7 11 37 25	7 17 23 10	5 1 22 7	5 0 45 28	–22 47	–09 20	4
5	8 19 58 48	6 20 6 35	6 6 41 18	9 6 56 7	4 29 8 27	7 12 50 26	7 17 29 34	5 1 18 56	5 0 41 22	–22 41	–12 25	5
6	8 20 59 58	7 2 20 17	6 7 14 15	9 6 56 36	4 29 8 59	7 14 3 31	7 17 35 55	5 1 15 46	5 0 34 41	–22 34	–15 01	6
7	8 22 1 8	7 14 50 53	6 7 47 8	9 6 45 32	4 29 9 18	7 15 16 39	7 17 42 14	5 1 12 35	5 0 25 31	–22 27	–16 59	7
8	8 23 2 18	7 27 40 31	6 8 19 54	9 6 22 38	4 29 9 27	7 16 29 50	7 17 48 30	5 1 9 24	5 0 14 28	–22 19	–18 09	8
9	8 24 3 28	8 10 49 40	6 8 52 34	9 5 47 55	4 29 9 22	7 17 43 3	7 17 54 42	5 1 6 13	5 0 2 29	–22 11	–18 23	9
10	8 25 4 39	8 24 17 11	6 9 25 9	9 5 1 56	4 29 9 7	7 18 56 20	7 18 0 53	5 1 3 3	4 29 50 46	–22 03	–17 37	10
11	8 26 5 48	9 8 0 25	6 9 57 37	9 4 5 36	4 29 8 40	7 20 9 39	7 18 7 1	5 0 59 52	4 29 40 28	–21 54	–15 49	11
12	8 27 6 58	9 21 55 43	6 10 30 0	9 3 0 25	4 29 8 1	7 21 23 0	7 18 13 6	5 0 56 41	4 29 32 31	–21 45	–13 04	12
13	8 28 8 7	10 5 59 5	6 11 2 16	9 1 48 15	4 29 7 11	7 22 36 24	7 18 19 7	5 0 53 30	4 29 27 24	–21 35	–09 33	13
14	8 29 9 16	10 20 6 49	6 11 34 26	9 0 31 22	4 29 6 9	7 23 49 49	7 18 25 6	5 0 50 19	4 29 25 0	–21 25	–05 28	14
15	9 0 10 24	11 4 15 57	6 12 6 28	8 29 12 12	4 29 4 54	7 25 03 16	7 18 30 1	5 0 47 9	4 29 24 42	–21 14	–01 04	15
16	9 1 11 31	11 18 24 27	6 12 38 24	8 27 53 20	4 29 3 29	7 26 16 46	7 18 36 53	5 0 43 58	4 29 25 27	–21 03	+03 24	16
17	9 2 12 38	0 2 30 59	6 13 10 14	8 26 37 6	4 29 1 53	7 27 30 17	7 18 42 42	5 0 40 47	4 29 26 0	–20 52	07 39	17
18	9 3 13 43	0 16 34 35	6 13 41 57	8 25 25 39	4 29 0 5	7 28 43 51	7 18 48 28	5 0 37 36	4 29 25 11	–20 40	11 27	18
19	9 4 14 48	1 0 34 14	6 14 13 33	8 24 20 42	4 28 58 5	7 29 57 27	7 18 54 10	5 0 34 25	4 29 22 15	–20 28	14 35	19
20	9 5 15 52	1 14 28 31	6 14 45 2	8 23 23 32	4 28 55 55	8 1 11 4	7 18 59 49	5 0 31 15	4 29 16 52	–20 16	16 51	20
21	9 6 16 56	1 28 15 24	6 15 16 24	8 22 35 4	4 28 53 33	8 2 24 43	7 19 5 25	5 0 28 4	4 29 9 19	–20 03	18 07	21
22	9 7 17 58	2 11 52 30	6 15 47 38	8 21 55 44	4 28 50 59	8 3 38 23	7 19 10 56	5 0 24 53	4 29 0 19	–19 50	18 20	22

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे (23 जन. से 2 मार्च 2016 ई. तक)

1 फरवरी 2016 ई. को अयनांश 24°/04′/54″ 1 मार्च, 2016 ई. को अयनांश 24°/04′/57″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
23	9 8 19 0	2 25 17 12	6 16 18 45	8 21 25 46	4 28 48 15	8 4 52 6	7 19 16 24	5 0 21 42	4 28 50 51	–19 36	17 30	23
24	9 9 20 0	3 8 27 10	6 16 49 45	8 21 5 01	4 28 45 20	8 6 5 50	7 19 21 49	5 0 18 32	4 28 41 59	–19 22	15 45	24
25	9 10 21 0	3 21 20 55	6 17 20 38	8 20 53 12	4 28 42 14	8 7 19 36	7 19 27 10	5 0 15 21	4 28 34 38	–19 08	13 14	25
26	9 11 22 0	4 3 58 1	6 17 51 23	8 20 49 51	4 28 38 57	8 8 33 24	7 19 32 27	5 0 12 10	4 28 29 23	–18 53	10 09	26
27	9 12 22 59	4 16 19 16	6 18 22 0	8 20 54 29	4 28 35 28	8 9 47 13	7 19 37 40	5 0 8 59	4 28 26 24	–18 38	06 40	27
28	9 13 23 57	4 28 26 41	6 18 52 27	8 21 6 29	4 28 31 49	8 11 1 3	7 19 42 48	5 0 5 49	4 28 25 30	–18 22	+02 58	28
29	9 14 24 54	5 10 23 25	6 19 22 48	8 21 25 21	4 28 28 0	8 12 14 56	7 19 47 54	5 0 2 38	4 28 26 10	–18 07	–00 47	29
30	9 15 25 50	5 22 13 34	6 19 53 0	8 21 50 29	4 28 24 0	8 13 28 50	7 19 52 55	4 29 59 27	4 28 27 40	–17 51	–04 28	30
31	9 16 26 46	6 4 1 49	6 20 23 3	8 22 21 22	4 28 19 50	8 14 42 45	7 19 57 52	4 29 56 16	4 28 29 11	–17 34	–07 58	31
फर.	9 17 27 42	6 15 53 19	6 20 52 58	8 22 57 29	4 28 15 31	8 15 56 42	7 20 2 45	4 29 53 6	4 28 29 58	–17 17	–11 10	फर.
2	9 18 28 36	6 27 53 17	6 21 22 43	8 23 38 21	4 28 11 1	8 17 10 40	7 20 7 34	4 29 49 55	4 28 29 26	–17 00	–13 56	2
3	9 19 29 30	7 10 6 47	6 21 52 20	8 24 23 33	4 28 6 21	8 18 24 39	7 20 12 18	4 29 46 44	4 28 27 15	–16 43	–16 08	3
4	9 20 30 23	7 22 38 17	6 22 21 46	8 25 12 41	4 28 1 31	8 19 38 41	7 20 16 58	4 29 43 33	4 28 23 26	–16 26	–17 38	4
5	9 21 31 15	8 5 31 14	6 22 51 3	8 26 5 26	4 27 56 32	8 20 52 42	7 20 21 34	4 29 40 23	4 28 18 16	–16 08	–18 17	5
6	9 22 32 6	8 18 47 37	6 23 20 9	8 27 1 26	4 27 51 22	8 22 6 44	7 20 26 4	4 29 37 12	4 28 12 20	–15 50	–17 58	6
7	9 23 32 56	9 2 27 24	6 23 49 5	8 28 0 26	4 27 46 4	8 23 20 47	7 20 30 31	4 29 34 1	4 28 6 24	–15 31	–16 38	7
8	9 24 33 45	9 16 28 35	6 24 17 51	8 29 2 10	4 27 40 38	8 24 34 52	7 20 34 53	4 29 30 50	4 28 1 10	–15 12	–14 16	8
9	9 25 34 32	10 0 47 7	6 24 46 25	9 0 6 25	4 27 35 2	8 25 48 57	7 20 39 10	4 29 27 40	4 27 57 16	–14 53	–10 59	9
10	9 26 35 19	10 15 17 27	6 25 14 49	9 1 12 59	4 27 29 18	8 27 3 2	7 20 43 22	4 29 24 29	4 27 55 2	–14 34	–07 00	10
11	9 27 36 4	10 29 53 20	6 25 43 1	9 2 21 41	4 27 23 25	8 28 17 8	7 20 47 30	4 29 21 18	4 27 54 27	–14 15	+02 34	11
12	9 28 36 48	11 14 28 42	6 26 11 2	9 3 32 22	4 27 17 24	8 29 31 15	7 20 51 32	4 29 18 7	4 27 55 11	–13 55	+02 01	12
13	9 29 37 30	11 28 58 22	6 26 38 51	9 4 44 54	4 27 11 16	9 0 45 22	7 20 55 30	4 29 14 57	4 27 56 37	–13 35	06 26	13
14	10 0 38 10	0 13 18 30	6 27 6 28	9 5 59 9	4 27 5 0	9 1 59 30	7 20 59 23	4 29 11 46	4 27 58 5	–13 15	10 26	14
15	10 1 38 49	0 27 26 36	6 27 33 53	9 7 15 1	4 26 58 37	9 3 13 38	7 21 3 11	4 29 8 35	4 27 58 56	–12 55	13 46	15
16	10 2 39 25	1 11 21 18	6 28 1 5	9 8 32 24	4 26 52 5	9 4 27 45	7 21 6 53	4 29 5 24	4 27 58 43	–12 34	16 15	16
17	10 3 40 1	1 25 2 6	6 28 28 5	9 9 51 14	4 26 45 29	9 5 41 54	7 21 10 31	4 29 2 13	4 27 57 16	–12 13	17 46	17
18	10 4 40 34	2 8 28 56	6 28 54 53	9 11 11 27	4 26 38 45	9 6 56 3	7 21 14 3	4 28 59 3	4 27 54 44	–11 52	18 15	18
19	10 5 41 6	2 21 42 0	6 29 21 27	9 12 32 59	4 26 31 56	9 8 10 12	7 21 17 31	4 28 55 52	4 27 51 27	–11 31	17 44	19
20	10 6 41 35	3 4 41 31	6 29 47 48	9 13 55 46	4 26 25 0	9 9 24 22	7 21 20 52	4 28 52 41	4 27 47 56	–11 10	16 17	20
21	10 7 42 4	3 17 27 50	7 0 13 56	9 15 19 46	4 26 17 59	9 10 38 32	7 21 24 9	4 28 49 30	4 27 44 40	–10 48	14 03	21
22	10 8 42 30	4 0 1 22	7 0 39 49	9 16 44 56	4 26 10 51	9 11 52 42	7 21 27 20	4 28 46 20	4 27 42 4	–10 27	11 11	22
23	10 9 42 55	4 12 22 49	7 1 5 28	9 18 11 16	4 26 3 39	9 13 6 53	7 21 30 26	4 28 43 9	4 27 40 24	–10 05	07 51	23
24	10 10 43 18	4 24 33 15	7 1 30 54	9 19 38 43	4 25 56 23	9 14 21 4	7 21 33 27	4 28 39 58	4 27 39 45	–09 43	04 14	24
25	10 11 43 40	5 6 34 19	7 1 56 4	9 21 7 17	4 25 49 2	9 15 35 16	7 21 36 23	4 28 36 47	4 27 40 0	–09 21	+00 30	25
26	10 12 44 0	5 18 28 11	7 2 20 59	9 22 36 55	4 25 41 37	9 16 49 28	7 21 39 13	4 28 33 37	4 27 40 56	–08 59	–03 13	26
27	10 13 44 18	6 0 17 42	7 2 45 39	9 24 7 38	4 25 34 8	9 18 3 40	7 21 41 57	4 28 30 26	4 27 42 15	–08 36	–06 47	27
28	10 14 44 35	6 12 6 19	7 3 10 2	9 25 39 24	4 25 26 35	9 19 17 53	7 21 44 36	4 28 27 15	4 27 43 38	–08 14	–10 05	28
29	10 15 44 51	6 23 58 1	7 3 34 10	9 27 12 14	4 25 18 59	9 20 32 6	7 21 47 9	4 28 24 4	4 27 44 49	–07 51	–12 58	29
मार्च	10 16 45 5	7 5 57 14	7 3 58 1	9 28 46 7	4 25 11 20	9 21 46 19	7 21 49 37	4 28 20 53	4 27 45 35	–07 28	–15 21	मार्च
2	10 17 45 17	7 18 8 36	7 4 21 34	10 0 21 3	4 25 3 39	9 23 0 33	7 21 51 59	4 28 17 43	4 27 45 51	07 05	17 05	2

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (13 मार्च से 10 अप्रै. 2016 ई. तक) 1 अप्रै., 2016 ई. को अयनांश 24°/05′/00″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	मार्च
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
3	10 18 45 27	8 0 36 43	7 4 44 50	10 1 57 3	4 24 55 55	9 24 14 47	7 21 54 16	4 28 14 32	4 27 45 39	–06 42	–18 03	3
4	10 19 45 37	8 13 25 48	7 5 7 48	10 3 34 7	4 24 48 10	9 25 29 2	7 21 56 27	4 28 11 21	4 27 45 4	–06 19	–18 08	4
5	10 20 45 45	8 26 39 7	7 5 30 28	10 5 12 15	4 24 40 23	9 26 43 16	7 21 58 32	4 28 8 10	4 27 44 18	–05 56	–17 15	5
6	10 21 45 51	9 10 18 34	7 5 52 46	10 6 51 27	4 24 32 33	9 27 57 30	7 22 0 30	4 28 5 0	4 27 43 32	–05 33	–15 22	6
7	10 22 45 56	9 24 23 57	7 6 14 46	10 8 31 45	4 24 24 44	9 29 11 45	7 22 2 23	4 28 1 49	4 27 42 56	–05 09	–12 31	7
8	10 23 45 59	10 8 52 41	7 6 36 27	10 10 13 9	4 24 16 54	10 0 25 59	7 22 4 10	4 27 58 38	4 27 42 36	–04 46	–08 49	8
9	10 24 46 0	10 23 38 41	7 6 57 47	10 11 55 39	4 24 9 3	10 1 40 14	7 22 5 52	4 27 55 27	4 27 42 30	–04 23	–04 30	9
10	10 25 45 59	11 8 37 45	7 7 18 46	10 13 39 17	4 24 1 13	10 2 54 28	7 22 7 27	4 27 52 16	4 27 42 35	–03 59	+00 09	10
11	10 26 45 56	11 23 38 34	7 7 39 24	10 15 24 3	4 23 53 24	10 4 8 42	7 22 8 57	4 27 49 6	4 27 42 44	–03 36	04 48	11
12	10 27 45 51	0 8 33 41	7 7 59 40	10 17 9 57	4 23 45 36	10 5 22 56	7 22 10 20	4 27 45 55	4 27 42 50	–03 12	09 07	12
13	10 28 45 44	0 23 15 55	7 8 19 33	10 18 57 1	4 23 37 47	10 6 37 10	7 22 11 38	4 27 42 44	4 27 42 48	–02 48	12 48	13
14	10 29 45 35	1 7 39 56	7 8 39 4	10 20 45 16	4 23 30 2	10 7 51 23	7 22 12 49	4 27 39 33	4 27 42 40	–02 25	15 37	14
15	11 0 45 24	1 21 42 43	7 8 58 12	10 22 34 41	4 23 22 18	10 9 5 36	7 22 13 55	4 27 36 22	4 27 42 29	–02 01	17 26	15
16	11 1 45 10	2 5 23 20	7 9 16 56	10 24 25 17	4 23 14 36	10 10 19 49	7 22 14 55	4 27 33 12	4 27 42 25	–01 37	18 11	16
17	11 2 44 54	2 18 42 33	7 9 35 16	10 26 17 5	4 23 6 57	10 11 34 2	7 22 15 48	4 27 30 1	4 27 42 32	–01 13	17 54	17
18	11 3 44 36	3 1 42 11	7 9 53 11	10 28 10 3	4 22 59 20	10 12 48 13	7 22 16 35	4 27 26 50	4 27 42 54	–00 50	16 40	18
19	11 4 44 15	3 14 24 42	7 10 10 42	11 0 4 12	4 22 51 47	10 14 2 24	7 22 17 17	4 27 23 39	4 27 43 31	–00 26	14 37	19
20	11 5 43 53	3 26 52 43	7 10 27 47	11 1 59 30	4 22 44 18	10 15 16 36	7 22 17 52	4 27 20 28	4 27 44 17	–00 02	11 56	20
21	11 6 43 28	4 9 8 48	7 10 44 26	11 3 55 57	4 22 36 52	10 16 30 47	7 22 18 22	4 27 17 18	4 27 45 0	+00 19	08 45	21
22	11 7 43 0	4 21 15 21	7 11 0 38	11 5 53 29	4 22 29 30	10 17 44 57	7 22 18 45	4 27 14 7	4 27 45 28	+00 43	05 14	22
23	11 8 42 30	5 3 14 31	7 11 16 23	11 7 52 3	4 22 22 13	10 18 59 8	7 22 19 3	4 27 10 56	4 27 45 29	+01 07	+01 32	23
24	11 9 41 59	5 15 8 22	7 11 31 40	11 9 51 36	4 22 15 0	10 20 13 18	7 22 19 14	4 27 7 45	4 27 44 54	+01 30	–02 12	24
25	11 10 41 26	5 26 58 51	7 11 46 29	11 11 52 2	4 22 7 53	10 21 27 28	7 22 19 20	4 27 4 34	4 27 43 39	+01 54	–05 49	25
26	11 11 40 51	6 8 48 7	7 12 0 48	11 13 53 15	4 22 0 51	10 22 41 38	7 22 19 19	4 27 1 24	4 27 41 49	02 18	–09 12	26
27	11 12 40 14	6 20 38 28	7 12 14 37	11 15 55 6	4 21 53 54	10 23 55 47	7 22 19 13	4 26 58 13	4 27 39 33	02 41	–12 13	27
28	11 13 39 35	7 2 32 39	7 12 27 56	11 17 57 26	4 21 47 3	10 25 9 57	7 22 19 0	4 26 55 2	4 27 37 7	03 04	–14 45	28
29	11 14 38 54	7 14 33 44	7 12 40 44	11 20 0 3	4 21 40 18	10 26 24 6	7 22 18 42	4 26 51 51	4 27 34 52	03 28	–16 40	29
30	11 15 38 11	7 26 45 17	7 12 53 0	11 22 2 46	4 21 33 39	10 27 38 15	7 22 18 18	4 26 48 41	4 27 33 6	03 51	–17 52	30
31	11 16 37 27	8 9 11 7	7 13 4 41	11 24 5 17	4 21 27 7	10 28 52 24	7 22 17 47	4 26 45 30	4 27 32 6	04 14	–18 14	31
अप्रै.	11 17 36 40	8 21 55 12	7 13 15 50	11 26 7 19	4 21 20 41	11 0 6 31	7 22 17 10	4 26 42 19	4 27 31 57	04 38	–17 43	अप्रै.
2	11 18 35 52	9 5 1 16	7 13 26 25	11 28 8 36	4 21 14 23	11 1 20 40	7 22 16 28	4 26 39 8	4 27 32 36	05 01	–16 14	2
3	11 19 35 3	9 18 32 20	7 13 36 25	0 0 8 47	4 21 8 12	11 2 34 48	7 22 15 40	4 26 35 58	4 27 33 49	05 24	–13 50	3
4	11 20 34 11	10 2 30 4	7 13 45 49	0 2 7 29	4 21 2 8	11 3 48 56	7 22 14 46	4 26 32 47	4 27 35 10	05 47	–10 33	4
5	11 21 33 18	10 16 54 9	7 13 54 37	0 4 4 22	4 20 56 13	11 5 3 3	7 22 13 46	4 26 29 36	4 27 36 9	06 09	–06 33	5
6	11 22 32 23	11 1 41 31	7 14 2 47	0 5 59 2	4 20 50 25	11 6 17 10	7 22 12 41	4 26 26 25	4 27 36 19	06 33	–02 02	6
7	11 23 31 26	11 16 46 16	7 14 10 19	0 7 51 6	4 20 44 45	11 7 31 16	7 22 11 29	4 26 23 15	4 27 35 18	06 55	+02 42	7
8	11 24 30 27	0 1 59 49	7 14 17 13	0 9 40 13	4 20 39 14	11 8 45 23	7 22 10 12	4 26 20 4	4 27 33 3	+07 17	07 18	8
9	11 25 29 25	0 17 12 12	7 14 23 28	0 11 26 2	4 20 33 52	11 9 59 28	7 22 8 49	4 26 16 53	4 27 29 44	+07 40	11 25	9
10	11 26 28 22	1 2 13 16	7 14 29 3	0 13 8 11	4 20 28 39	11 11 13 33	7 22 7 21	4 26 13 42	4 27 25 47	+08 02	14 43	10

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. २०७२ (2015-16 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
21	11 21 26 39	10 14 03	8 21 18
24	11 21 36 38	10 14 09	8 21 20
27	11 21 46 50	10 14 15	8 21 22
31	11 22 00 27	10 14 24	8 21 24
अप्रै.	11 22 03 50	10 14 26	8 21 25
4	11 22 14 03	10 14 31	8 21 26
7	11 22 24 21	10 14 37	8 21 27
10	11 22 34 39	10 14 43	8 21 28
13	11 22 45 02	10 14 48	8 21 28
16	11 22 55 09	10 14 53	8 21 28
19	11 23 05 21	10 14 58	8 21 28
22	11 23 15 27	10 15 03	8 21 28
25	11 23 25 27	10 15 08	8 21 27
28	11 23 35 14	10 15 12	8 21 26
मई	11 23 45 03	10 15 16	8 21 25
4	11 23 54 39	10 15 20	8 21 24
7	11 24 04 03	10 15 23	8 21 22
10	11 24 13 21	10 15 27	8 21 20
13	11 24 22 27	10 15 30	8 21 18
16	11 24 31 15	10 15 33	8 21 16
19	11 24 40 01	10 15 35	8 21 13
22	11 24 48 15	10 15 37	8 21 10
25	11 24 56 27	10 15 39	8 21 07
28	11 25 04 15	10 15 41	8 21 04
31	11 25 11 51	10 15 42	8 21 01
जून	11 25 14 15	10 15 43	8 20 59
4	11 25 21 27	10 15 44	8 20 56
7	11 25 28 15	10 15 44	8 20 52
10	11 25 34 45	10 15 45	8 20 48
13	11 25 41 01	10 15 45	8 20 44
16	11 25 46 45	10 15 45	8 20 40
19	11 25 52 09	10 15 44	8 20 36
22	11 25 57 08	10 15 43	8 20 31
25	11 26 01 51	10 15 42	8 20 27

2015	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
28	11 26 06 09	10 15 41	8 20 23
जुला	11 26 10 01	10 15 39	8 20 18
4	11 26 13 27	10 15 37	8 20 14
7	11 26 16 27	10 15 35	8 20 09
10	11 26 19 03	10 15 33	8 20 05
13	11 26 21 15	10 15 30	8 20 00
16	11 26 23 01	10 15 27	8 19 56
19	11 26 24 15	10 15 24	8 19 51
22	11 26 25 09	10 15 21	8 19 47
25	11 26 25 33	10 15 17	8 19 43
28	11 26 25 33	10 15 13	8 19 39
31	11 26 25 03	10 15 09	8 19 35
अग.	11 26 24 51	10 15 08	8 19 33
4	11 26 23 50	10 15 04	8 19 30
7	11 26 22 21	10 15 00	8 19 26
10	11 26 20 27	10 14 55	8 19 22
13	11 26 18 09	10 14 51	8 19 19
16	11 26 15 27	10 14 46	8 19 16
19	11 26 12 21	10 14 41	8 19 13
22	11 26 08 51	10 14 36	8 19 10
25	11 26 05 01	10 14 32	8 19 07
28	11 26 00 39	10 14 27	8 19 05
31	11 25 56 03	10 14 22	8 19 03
सितं.	11 25 54 27	10 14 20	8 19 02
4	11 25 49 27	10 14 15	8 19 00
7	11 25 44 03	10 14 10	8 18 58
10	11 25 38 27	10 14 05	8 18 57
13	11 25 32 33	10 14 00	8 18 56
16	11 25 26 21	10 13 56	8 18 55
19	11 25 20 01	10 13 51	8 18 54
22	11 25 13 21	10 13 46	8 18 54
25	11 25 06 33	10 13 42	8 18 54
28	11 24 59 39	10 13 38	8 18 54
अक्टू	11 24 52 33	10 13 33	8 18 55

2015	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अक्टू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
4	11 24 45 27	10 13 29	8 18 55
7	11 24 38 09	10 13 25	8 18 56
10	11 24 30 51	10 13 22	8 18 57
13	11 24 23 32	10 13 18	8 18 59
16	11 24 16 15	10 13 15	8 19 01
19	11 24 09 01	10 13 12	8 19 03
22	11 24 01 45	10 13 09	8 19 05
25	11 23 54 39	10 13 07	8 19 08
28	11 23 47 39	10 13 04	8 19 11
31	11 23 40 51	10 13 02	8 19 14
नवं.	11 23 38 33	10 13 02	8 19 15
4	11 23 32 01	10 13 00	8 19 19
7	11 23 25 33	10 12 59	8 19 22
10	11 23 19 21	10 12 58	8 19 26
13	11 23 13 27	10 12 57	8 19 30
16	11 23 07 51	10 12 57	8 19 35
19	11 23 02 33	10 12 56	8 19 39
22	11 22 57 33	10 12 57	8 19 44
25	11 22 52 51	10 12 57	8 19 49
28	11 22 48 33	10 12 58	8 19 54
दिसं.	11 22 44 39	10 12 59	8 19 59
4	11 22 41 09	10 13 01	8 20 05
7	11 22 38 03	10 13 02	8 20 10
10	11 22 35 21	10 13 04	8 20 16
13	11 22 33 09	10 13 07	8 20 22
16	11 22 31 21	10 13 09	8 20 27
19	11 22 30 01	10 13 12	8 20 33
22	11 22 29 09	10 13 15	8 20 39
25	11 22 28 39	10 13 19	8 20 46
28	11 22 28 45	10 13 23	8 20 52
31	11 22 29 15	10 13 27	8 20 58
जन.16	11 22 29 33	10 13 28	8 21 00
4	11 22 30 39	10 13 32	8 21 06
7	11 22 32 15	10 13 37	8 21 12

2016	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
10	11 22 34 21	10 13 42	8 21 19
13	11 22 36 51	10 13 47	8 21 25
16	11 22 39 51	10 13 52	8 21 31
19	11 22 43 15	10 13 57	8 21 37
22	11 22 47 09	10 14 03	8 21 43
25	11 22 51 27	10 14 09	8 21 49
28	11 22 56 09	10 14 15	8 21 55
31	11 23 01 21	10 14 21	8 22 01
फर.	11 23 03 09	10 14 23	8 22 03
4	11 23 08 45	10 14 29	8 22 08
7	11 23 14 51	10 14 36	8 22 14
10	11 23 21 15	10 14 42	8 22 19
13	11 23 28 03	10 14 49	8 22 25
16	11 23 35 09	10 14 56	8 22 30
19	11 23 42 39	10 15 02	8 22 34
22	11 23 50 27	10 15 09	8 22 39
25	11 23 58 27	10 15 16	8 22 44
28	11 24 06 45	10 15 23	8 22 48
मार्च	11 24 12 27	10 15 27	8 22 51
4	11 24 21 15	10 15 34	8 22 55
7	11 24 30 15	10 15 41	8 22 58
10	11 24 39 27	10 15 48	8 23 02
13	11 24 48 51	10 15 54	8 23 05
16	11 24 58 21	10 16 01	8 23 08
19	11 25 08 09	10 16 08	8 23 11
22	11 25 18 01	10 16 14	8 23 14
25	11 25 28 01	10 16 20	8 23 16
28	11 25 38 03	10 16 27	8 23 18
31	11 25 48 09	10 16 33	8 23 19
अप्रै.	11 25 51 33	10 16 35	8 23 20
4	11 26 01 51	10 16 41	8 23 21
7	11 26 12 03	10 16 47	8 23 22
10	11 26 22 21	10 16 52	8 23 23
13	11 26 32 39	10 16 58	8 23 24

जालन्धर में दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2015-16 ई.)

तारीख	जनवरी 2015		फरवरी 2015		मार्च 2015		अप्रैल 2015		मई 2015		जून 2015		जुलाई 2015		अगस्त 2015		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	14 45	3 36	16 01	5 06	14 50	3 50	16 15	4 24	16 44	4 06	18 14	4 28	18 50	4 43	20 02	6 33	1
2	15 32	4 34	16 53	5 52	15 42	4 33	17 06	4 57	17 37	4 37	19 10	5 12	19 45	5 40	20 47	7 39	2
3	16 22	5 29	17 46	6 33	16 35	5 11	17 58	5 30	18 31	5 13	20 07	6 01	20 36	6 40	21 29	8 46	3
4	17 13	6 21	18 40	7 11	17 27	5 48	18 50	6 04	19 26	5 52	21 01	6 54	21 23	7 44	22 12	9 52	4
5	18 07	7 09	19 32	7 48	18 20	6 22	19 44	6 38	20 22	6 32	21 53	7 52	22 09	8 49	22 53	10 57	5
6	18 59	7 54	20 24	8 21	19 11	6 56	20 38	7 14	21 17	7 18	22 41	8 52	22 50	9 54	23 37	12 01	6
7	19 54	8 35	21 15	8 54	20 03	7 29	21 33	7 53	22 13	8 08	23 26	9 55	23 31	10 58	— —	13 04	7
8	20 46	9 12	22 07	9 27	20 55	8 03	22 28	8 34	23 04	9 01	— —	10 58	— —	12 02	0 21	14 04	8
9	21 39	9 47	23 00	10 01	21 49	8 36	23 23	9 21	23 54	9 59	0 09	12 02	0 12	13 05	1 08	15 01	9
10	22 30	10 20	23 54	10 36	22 43	9 13	— —	10 11	— —	10 59	0 49	13 05	0 53	14 08	1 59	15 56	10
11	23 22	10 53	— —	11 13	23 38	9 52	0 16	11 06	0 40	12 02	1 30	14 09	1 36	15 10	2 50	16 46	11
12	— —	11 26	0 49	11 54	— —	10 35	1 07	12 05	1 24	13 04	2 10	15 12	2 22	16 10	3 44	17 33	12
13	0 15	12 00	1 45	12 40	0 33	11 23	1 57	13 06	2 07	14 09	2 52	16 15	3 10	17 06	4 38	18 16	13
14	1 08	12 36	2 42	13 31	1 27	12 16	2 43	14 11	2 48	15 13	3 37	17 18	4 02	18 01	5 32	18 54	14
15	2 04	13 15	3 39	14 28	2 22	13 14	3 28	15 17	3 30	16 19	4 25	18 18	4 55	18 50	6 26	19 30	15
16	3 01	14 01	4 34	15 30	3 14	14 16	4 11	16 23	4 13	17 24	5 16	19 15	5 50	19 36	7 20	20 04	16
17	4 00	14 51	5 27	16 36	4 04	15 21	4 53	17 30	4 57	18 29	6 10	20 08	6 44	20 18	8 12	20 37	17
18	4 58	15 47	6 17	17 45	4 51	16 29	5 37	18 37	5 44	19 32	7 04	20 56	7 40	20 55	9 02	21 11	18
19	5 56	16 48	7 04	18 55	5 37	17 38	6 22	19 43	6 35	20 32	8 00	21 41	8 33	21 31	9 55	21 44	19
20	6 51	17 54	7 49	20 03	6 21	18 45	7 07	20 48	7 28	21 27	8 54	22 20	9 26	22 04	10 46	22 19	20
21	7 44	19 02	8 32	21 10	7 04	19 53	7 57	21 50	8 22	22 18	9 49	22 56	10 18	22 37	11 39	22 56	21
22	8 31	20 10	9 15	22 16	7 48	21 00	8 48	22 46	9 17	23 03	10 42	23 31	11 09	23 10	12 33	23 36	22
23	9 16	21 18	9 59	23 20	8 34	22 05	9 42	23 39	10 12	23 45	11 35	— —	12 02	23 44	13 27	— —	23
24	9 58	22 23	10 42	— —	9 20	23 07	10 35	— —	11 06	— —	12 26	0 04	12 54	— —	14 22	0 22	24
25	10 40	23 27	11 29	0 21	10 10	— —	11 29	0 26	11 59	0 22	13 18	0 37	13 49	0 20	15 16	1 11	25
26	11 20	— —	12 17	1 19	11 00	0 05	12 23	1 09	12 51	0 57	14 12	1 09	14 44	0 58	16 10	2 07	26
27	12 03	0 30	13 07	2 13	11 52	0 57	13 16	1 47	13 44	1 31	15 05	1 45	15 40	1 42	17 01	3 06	27
28	12 45	1 31	13 58	3 03	12 44	1 47	14 08	2 24	14 35	2 04	16 01	2 23	16 36	2 31	17 50	4 10	28
29	13 31	2 29	— —	— —	13 37	2 31	15 00	2 57	15 28	2 37	16 57	3 05	17 31	3 25	18 37	5 17	29
30	14 19	3 24	— —	— —	14 30	3 11	15 52	3 31	16 22	3 11	17 54	3 52	18 25	4 24	19 21	6 25	30
31	15 09	4 17	— —	— —	15 22	3 49	— —	— —	17 16	3 49	— —	— —	19 15	5 26	20 05	7 34	31

जालन्धर में दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2015-16 ई.)

तारीख	सितम्बर 2015		अक्तूबर 2015		नवम्बर 2015		दिसम्बर 2015		जनवरी 2016		फरवरी 2016		मार्च 2016		अप्रैल 2016		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	20 48	8 41	20 57	9 41	22 21	11 21	22 54	11 29	— —	11 49	0 41	12 05	0 18	11 19	1 36	12 27	1
2	21 33	9 48	21 48	10 44	23 15	12 10	23 48	12 07	0 15	12 22	1 34	12 42	1 10	12 03	2 25	13 24	2
3	22 18	10 53	22 41	11 44	— —	12 53	— —	12 43	1 07	12 54	2 28	13 24	2 03	12 50	3 11	14 25	3
4	23 06	11 57	23 35	12 39	0 10	13 32	0 41	13 15	1 59	13 30	3 21	14 11	2 54	13 43	3 56	15 29	4
5	23 56	12 56	— —	13 29	1 03	14 09	1 32	13 49	2 51	14 07	4 15	15 02	3 45	14 40	4 40	16 35	5
6	— —	13 52	0 29	14 14	1 56	14 42	2 24	14 22	3 46	14 47	5 07	15 59	4 33	15 41	5 22	17 43	6
7	0 47	14 44	1 23	14 54	2 48	15 15	3 16	14 55	4 40	15 33	5 59	16 59	5 21	16 46	6 07	18 51	7
8	1 40	15 31	2 17	15 32	3 40	15 49	4 09	15 32	5 35	16 23	6 48	18 02	6 07	17 52	6 50	20 00	8
9	2 34	16 15	3 09	16 08	4 32	16 22	5 03	16 12	6 29	17 17	7 33	19 08	6 51	18 59	7 38	21 08	9
10	3 27	16 54	4 02	16 40	5 24	16 56	5 57	16 54	7 20	18 15	8 18	20 13	7 34	20 07	8 27	22 16	10
11	4 22	17 31	4 53	17 14	6 17	17 34	6 51	17 41	8 11	19 16	9 00	21 19	8 18	21 15	9 19	23 16	11
12	5 14	18 06	5 45	17 47	7 11	18 14	7 46	18 33	8 57	20 20	9 42	22 25	9 02	22 21	10 14	— —	12
13	6 07	18 39	6 37	18 21	8 05	18 58	8 38	19 28	9 40	21 23	10 24	23 30	9 48	23 26	11 10	0 14	13
14	6 58	19 12	7 29	18 56	8 58	19 47	9 28	20 26	10 23	22 27	11 08	— —	10 37	— —	12 07	1 06	14
15	7 49	19 45	8 22	19 34	9 51	20 38	10 15	21 26	11 02	23 30	11 53	0 34	11 29	0 28	13 03	1 53	15
16	8 41	20 20	9 16	20 16	10 41	21 34	10 58	22 28	11 43	— —	12 41	1 35	12 23	1 26	13 59	2 35	16
17	9 34	20 56	10 09	21 00	11 29	22 32	11 41	23 30	12 24	0 34	13 33	2 35	13 17	2 21	14 53	3 13	17
18	10 27	21 34	11 01	21 50	12 15	23 33	12 20	— —	13 07	1 37	14 26	3 31	14 13	3 09	15 47	3 49	18
19	11 20	22 17	11 53	22 42	12 57	— —	13 0	0 33	13 54	2 40	15 21	4 23	15 08	3 54	16 38	4 23	19
20	12 13	23 03	12 43	23 39	13 39	0 35	13 41	1 36	14 43	3 41	16 18	5 11	16 04	4 34	17 30	4 56	20
21	13 06	23 55	13 31	— —	14 20	1 38	14 24	2 40	15 36	4 40	17 13	5 55	16 57	5 12	18 23	5 28	21
22	13 59	— —	14 16	0 39	15 02	2 42	15 09	3 45	16 32	5 36	18 09	6 34	17 51	5 48	19 14	6 03	22
23	14 49	0 50	15 00	1 42	15 45	3 49	15 58	4 49	17 29	6 28	19 03	7 12	18 43	6 21	20 06	6 38	23
24	15 38	1 51	15 43	2 46	16 30	4 54	16 51	5 52	18 26	7 15	19 57	7 46	19 35	6 54	20 59	7 15	24
25	16 24	2 55	16 26	3 54	17 18	6 02	17 47	6 51	19 23	7 59	20 49	8 20	20 27	7 27	21 52	7 57	25
26	17 10	4 01	17 09	5 00	18 11	7 07	18 44	7 47	20 18	8 37	21 41	8 54	21 19	8 02	22 42	8 41	26
27	17 54	5 09	17 56	6 09	19 06	8 10	19 42	8 37	21 12	9 13	22 33	9 27	22 12	8 38	23 32	9 29	27
28	18 38	6 17	18 43	7 16	20 04	9 07	20 40	9 23	22 05	9 47	23 25	10 02	23 03	9 16	— —	10 20	28
29	19 22	7 26	19 34	8 23	21 01	10 00	21 36	10 03	22 57	10 21	— —	10 38	23 55	9 58	0 20	11 15	29
30	20 09	8 34	20 28	9 26	21 58	10 47	22 30	10 40	23 50	10 53	— —	— —	— —	10 44	1 06	12 12	30
31	— —	— —	21 23	10 25	— —	— —	23 23	11 15	— —	11 28	— —	— —	0 46	11 33	— —	— —	31

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त्त-सं. २०७२ वि. (सन् 2015-16 ई.)

समय शुद्धि विचार••••••

✡ **आषाढ़ अधि-मास**–17 जून से 16 जुलाई तक आषा. अधि-मास।

✡ **शुक्रास्त**–5 अग. से 19 अग. के मध्य शुक्र पश्चिम में अस्त रहेगा। ता. 2 अग. से 4 अग. तक शुक्र वार्धक्य तथा 20 अग. से 22 अग. तक शुक्र बाल्यत्व दोष होगा।

✡ **गुरु अस्त**–12 अग. से 7 सितं. तक गुरु अस्त। ता. 9 अग. से 11 अग. तक गुरु वार्धक्य तथा ता. 10 सितं. तक बाल्यत्व दोष रहेगा।

✡ **सिंह नवांशक**–14 सितं. से 30 सितं. के मध्य गुरु सिंह नवांश में रहेगा।

✡ **श्राद्ध दिन**–27 सितं. से 12 अक्तू. तक श्राद्ध दिन रहेंगे।

✡ **ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण**–9 मार्च, 2016 ई. को खण्डग्रास सूर्यग्रहण घटित होगा। जो पंजाब, जम्मू-कश्मीर, पश्चिमी हि.प्र., पश्चि. राज., पश्चि. गुजरात, पश्चि. महाराष्ट्र को छोड़कर भारत के शेष सभी प्रदेशों में खण्डग्रास के रुप में सूर्योदय के समय कुछ देर के लिए दिखाई देगा। जिन स्थानों पर यह ग्रहण दिखाई देगा, उन स्थानों पर 10 से 12 मार्च, 2016 वाले विवाह मुहूर्त्त ग्रहण वेध (शूल) के कारण त्याज्य होंगे-विद्वतजनों को यह ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि शास्त्रानुसार ग्रहण से तीन दिन तक ग्रहणवेध रहता है। जहाँ ग्रहण दिखाई नहीं देगा, वहाँ ग्रहण-वेध का विचार नहीं होगा। (देखें पृ. 18)

नीचे लिखे विवाह मुहूर्त्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्तिसाम्य (९), दग्धा तिथि (१०)–इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) **दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य**, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। **परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। मुहूर्त्तों में सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।**

विवाह मुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण–**विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष,** २ को वृष, **३ को मिथुन, ४ को कर्क,** ५ को सिंह, **६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को मीन लग्न जानें॥**

दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न–

आवश्यक नोट–जिस मुहूर्त्त में गुरु की केन्द्र-त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरु की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त्त, लग्न को शुभ मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है।

❋ वैशाख मास (अप्रैल–मई) ❋ सन् 2015 ईसवी

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
वैशा. शुक्ल १, रवि	19 अप्रै.	६ वैशा.	अश्वि	मेष	मेष	।।ऽसू. ।।।ऽविष्क ।।।	दि. ल. ३ (सू. चं. रा. दा.), ४ (सू. चं. मं. दा.), ५ (सू. चं. गु. दा., सिंह लग्न दुपै. 15/10 तक), सूर्य युति परिहार–आवश्यके
वैशा. शुक्ल ३, मंग	21 अप्रै.	८ वैशा.	रोहिणी	मेष	वृष	ऽमं. ।ऽशु. ।ऽश. ।।।।।	दि. ल. ४ (11/57 बाद) (चं. मं. दा.), ५ (मं. दा.), गोधू., रात्रि ल. १० (गु. दा.), ११ (चं. गु. दा.) शुक्र-युति परिहार, भद्रा परिहार
वैशा. शुक्ल ४, बुध	22 अप्रै.	९ वैशा.	रोहिणी	मेष	वृष	ऽमं. ।ऽशु. ।ऽश. ।।।।।	दि. ल. ३ (मिथुने चंद्र, शुक्र, राहु दान) भद्रा स्वर्गगते एवं शुक्र युति परिहार:
वैशा. शु. ४/५, बुध	22 अप्रै.	९ वैशा.	मृग	मेष	वृष/मिथु.	।।।।।ऽरो. ऽऽ।।	दि. ल. ४ (मं. दा.), ५ (मं. दा.), गोधू., रा. ल. १० (चं., गु., पू. दान व), ११ (गु. दान) मकरे चंद्र छटे परिहार
वैशा. शुक्ल ५, गुरु	23 अप्रै.	१० वैशा.	मृग	मेष	मिथुन	।।।।।ऽरो. ऽऽ।।	दि. ल. ४ (कर्के चं., मं. पू. दान व) (लग्न केवल 11/17 तक)
वैशा. शुक्ल ९, चंद्र	27 अप्रै.	१४ वैशा.	मघा	मेष	सिंह	।ऽ।।।ऽरा. ।ऽऽ।	रात्रि ल. ११ (कुम्भे चंद्र, गुरु दान)
वैशा. शुक्ल१०, मंग.	28 अप्रै.	१५ वैशा.	मघा	मेष	सिंह	।।।।।ऽरा. ऽ।ऽ।	दि. ल. ३ (बु., रा. दान), ४ (चं., मं. दान), गोधूलि (मं. शनि पूजा)
वैशा. शुक्ल११, बुध	29 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.फा.	मेष	सिंह	।।।।।ऽचौ. ऽ।।।	रात्रि ल. ११ (कुम्भे चंद्र, गुरु दान) (25/05 तक व्याघात दोष)
वैशा. शुक्ल१२, गुरु	30 अप्रै.	१७ वैशा.	उ.फा.	मेष	कन्या	।।।।।ऽचौ. ऽ।।।	दि. ल. ३ (बु., रा. दान), ४ (मं. दा.), ५ (चं. गु. दा.), गोधूलि (सू. मं. दा.) रा. ल. १० (मं., गु. का दान), कुम्भे चन्द्राष्टम दोष:

शुभ विवाह मुहूर्त्त—वैशाख मास (अप्रैल-मई)—सन् 2015 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
वैशा. शुक्ल १३, शनि	2 मई	१९ वैशा.	चित्रा	मेष	कन्ये/तुले	ऽ गु. । । । । ऽ रो. ऽ व. । । ।	दि. ल. ३ (बु. रा. दा.), ४ (मं. दा.), ५ (गु. दा.), रात्रि ल. ११ (गु. श. दा.)
वै. शु. १४/१५, रवि	3 मई	२० वैशा.	चित्रा	मेष	तुला	ऽ गु. । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ३ (बु. रा. दा., मिथुन ल. 8/44 तक)
वैशा. शुक्ल १५, रवि	3 मई	२० वैशा.	स्वा.	मेष	तुला	। । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (8/44 बाद) (बु. रा. दान), ४ (मं. दा.), ५ (गु. दा.), रात्रि लग्ने व्यतिपात दोष
ज्ये. कृ. ३/४, गुरु	7 मई	२४ वैशा.	मूल	मेष	धनु	। । । । ऽ शु. ऽ रा. । ऽ । ।	दि. ल. ५ (13/04 बाद) (मं., श. गु. का दान), गोधू., रा. ल. ११ (मं. गु. दान)
ज्ये. कृष्ण ४, शुक्र	8 मई	२५ वैशा.	मूल	मेष	धनु	। । । । ऽ शु. । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (चं., मं., रा. दान), ५ (सिंह) (मं., श., गु. दा., सिंह ल. 13/03 तक)
ज्ये. कृ. ५/६, शनि	9 मई	२६ वैशा.	उ.षा.	मेष	धनु/मक	ऽ रा. ऽ । । । ऽ चौ. । । । ऽ	दि. ल. ५ (गु., मं. श. दा., सिंह ल. 13/50 उपरान्त), गोधू., रात्रि ल. ११ (चं. गु. दा.) दिने दुपै. 13/49 तक क्रान्तिसाम्य दोष, दग्धातिथि परिहार (गु. दा.)
ज्ये. कृष्ण ६/७, रवि	10 मई	२७ वैशा.	उ.षा.	मेष	मकर	ऽ रा. ऽ । । । । । । । ।	दि. ल. ४ (चं. गु. दान, कर्क लग्न प्रात: 11/57 तक) भद्रा परिहार
ज्ये. कृष्ण ७, रवि	10 मई	२७ वैशा.	श्रवण	मेष	मकर	। । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ४ (चं. गु. दा.), ५ (चं. मं. श. दान), षष्ठे चंद्र परि., गोधू., रा. ल. ११ (चं. गु. दान)
ज्ये. कृष्ण ८, चंद्र	11 मई	२८ वैशा.	श्रवण	मेष	मकर	। । । । । ऽ रो. । । । ।	दि. ल. ४ (चं. शु. दान, कर्क लग्न प्रात: 10/56 तक)
ज्ये. कृष्ण ८, चंद्र	11 मई	२८ वैशा.	धनि.	मेष	मक/कुंभ	। । । ऽ गु. ऽ गु. ऽ रो. । ऽ । ।	दि. ल. ४ (चं. शु. दान), ५ (चंद्र दान व पूजा) [षष्ठे चंद्र परिहार], **गोधूलि च, रात्रि ल. ११** (चं., गु. दान), कुम्भ लग्न बुध-शुक्र केन्द्र-त्रिकोणस्थौ, लग्नस्थ चंद्र परिहार, पादेन गुरू वेधऽभाव:
ज्ये. कृष्ण ९, मंग.	12 मई	२९ वैशा.	धनि.	मेष	कुम्भ	। । । ऽ गु. ऽ गु. । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (मिथुने मं., बु., राहु का दान) (ल. 9/38 तक)

✲ ज्येष्ठ मास (मई—जून) ✲ सन् 2015 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
ज्ये. शुक्ल १/२, मंग.	19 मई	५ ज्येष्ठ	रोहिणी	वृष	वृष	। । ऽ मं. बु. । ऽ श.ऽरा. । । । ।	दि. ल. ३ (चं., मं. बु. रा. दान), ४ (शु. दा.), ५ (मं., गु., श. दान), **गोधू., रात्रौ लग्नऽभावः,** —चन्द्र उच्चस्थ होने से भौम युति परिहार:
ज्ये. शुक्ल २, मंग.	19 मई	५ ज्येष्ठ	मृग.	वृष	वृष	। । । । । ऽ रा. ऽ । । ।	रात्रि ल. ११ (चं., मं. दान), १ (मेषे चन्द्र, शुक्र दान)
ज्ये. शुक्ल २/३, बुध	20 मई	६ ज्येष्ठ	मृग.	वृष	वृष/मि.	। । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ३ (चं., मं., बु., रा. दान) (लग्नस्थ चंद्र परिहार), ४ (शु., श. दान), ५ (मं., गु., श. दान), गोधू.
ज्ये. शुक्ल ६/७, रवि	24 मई	१० ज्येष्ठ	मघा	वृष	सिंह	। । । । । । । ऽ । ।	रात्रि ल. १ (मेषे मंगल, शुक्र के. दान) 27/45 बाद व्याघात विचार
ज्ये. शुक्ल ७, चन्द्र	25 मई	११ ज्येष्ठ	मघा	वृष	सिंह	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ३ (मं., बु. रा. दान), ल. ४ (शु., श. दान), (ल. 9/40 तक, तदुपरान्त भद्रा दोष) सायं 19/55 बाद मृत्युबाण दोष
ज्ये. शुक्ल ९, बुध	27 मई	१३ ज्येष्ठ	उ.फा.	वृष	सिं/कन्ये	। । । । । ऽ अ. । । । ।	दि. ल. ३ (प्रात: 8/24 बाद) (मं., बु. रा. के. दान), ल. ४ (शु., श. दान), ७ (गुरु-शुक्र केन्द्र त्रिकोणस्थ एवं मं. अस्त होने से अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधू., रात्रि ल. १ (चं., मं., शु. दान:—गुरु केन्द्रगते चन्द्र छटे परिहार:)
ज्ये. शुक्ल १०, गुरू	28 मई	१४ ज्येष्ठ	उ.फा.	वृष	कन्या	। । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ३ (मं., बु. रा. दान), ४ (चं., शु. दान), ५ (मं., गु. दान) सिंह लग्न प्रात: 11/26 तक
ज्ये. शुक्ल १२, शनि	30 मई	१६ ज्येष्ठ	चित्रा	वृष	तुला	ऽ गु. ऽ । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ३ (मं., बु. रा. दान), ल. प्रात: 8/02 बजे के बाद), ४ (चं., शु. दान), ५ (सिंह लग्ने चं., मं. गु. दान)— प्रात: 8/02 तक व्यतिपात दोष, ल. ७ (16/30 तक) (अष्टमस्थ मं. परिहार)
ज्ये. शुक्ल १२, शनि	30 मई	१६ ज्येष्ठ	स्वाती	वृष	तुला	ऽ सू. । । । । ऽ चौ. । । । ।	सायं ल. ७ (16/30 बाद, अष्टमस्थ मं. परिहार), ल. गोधू., रात्रि ल. ११ (मं., गु. दान), १ (मेषे-चंद्र-शुक्र दान)
ज्ये. शुक्ल १३, रवि	31 मई	१७ ज्येष्ठ	स्वाती	वृष	तुला	ऽ सू. । । । । ऽ चौ. । । । ।	दि. ल. ३ (मं., बु. रा. दान—मिथुन ल. प्रात: 8/06 तक) 8/06 बाद परिघ योग (पूर्वार्द्ध) त्याज्य
आषा. कृ. १, बुध	3 जून	२० ज्येष्ठ	मूल	वृष	धनु	। । । । । । । । । । ।	रात्रि ल. ११ (मं., गु., शु. दान), १ (मं. श. दान) (कुम्भ लग्ने छटे शुक्र शत्रु राशिगते परिहार:)

शुभ विवाह मुहूर्त–ज्येष्ठ मास (मई-जून)–सन् 2015 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
प्र.आषा. कृ. ३, शुक्र	5 जून	२२ ज्येष्ठ	उ.षा.	वृष	धनु/मक	ऽ रा. । । । । ऽ अ. । ऽ ऽ ऽ	ल. गोधू., रा. ल. ११ (चं., गु. शु. दान) शुक्र छटे परिहार, १ (मं.-श. दान) (मेष लग्ने दग्धा तिथि परिहार:)
प्र.आषा.कृ.४/५, शनि	6 जून	२३ ज्येष्ठ	श्रवण	वृष	मकर	। । । । ऽ शु. । । ऽ ऽ ।	गोधूलि, रा. ल. ११ (चं., गु., शु. दान) शुक्र छटे परिहार, १ (शुक्र दान)
प्र.आषा. कृ. ५, रवि	7 जून	२४ ज्येष्ठ	श्रवण	वृष	मकर	। । । । ऽ शु. ऽ रा. । ऽ ऽ ।	दि. ल. ४ (चं. दान), ५ (चं., मं., शु. दान सिंहे छटे चंद्र परिहार:), ७ (अष्टमस्थ भौम परि. मं. दा.)
प्र.आषा.कृ. ९/१०, गुरु	11 जून	२८ ज्ये.	रेवती	वृष	मीन	। । । । ऽ रा. ऽ रो. । ऽ । ।	दि. ल. ५ (चं., मं. दान, सिंह ल. 10/59 के बाद) चंद्रोपरि. गुरू दृष्टि शुभप्रदा), ल. ७ (16/56 तक) (अष्टमस्थ भौम परिहार) रात्रौ भद्रा दोष व्याप्ति।
प्र.आषा. कृ.११, शुक्र	1ऽ जून	२९ ज्ये.	रेवती	वृष	मीन	। । । । ऽ रा. । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (मं., बु. रा. दान), ४ (चं., शु. दान, कर्क लग्न प्रात: 9/40 तक)
प्र.आषा. कृ.११, शुक्र	12 जून	२९ ज्ये.	अश्वि.	वृष	मेष	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ४ (चं. शु. दान), ५ (मं. दा.), ७ (मं. दा.), रा. ल. ११ (गु. शु. दान) कुम्भे छटे शुक्र परिहार:
प्र.आषा. कृ.१२, शनि	13 जून	३० ज्ये.	अश्वि.	वृष	मेष	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ३ (मं., बु. रा. दान), ४ (चं., शु. दान, कर्क ल. प्रात: 8/26 तक)
17 जून से 16 जुलाई तक आषाढ़ अधिक मास							
श्रावण मास (जुलाई–अगस्त) सन् 2015 ई.							
द्वि.आषा.शु.४/५, चंद्र	20 जुला	५ श्राव.	उ.फा.	कर्क	सिंह	। । । । । । ऽ ऽ । ।	रात्रि ल. १ (श. दान)
द्वि.आषा.शु.५/६, मंग.	21 जुला	६ श्राव.	उ.फा.	कर्क	कन्या	। । । । । ऽ रा. ऽ ऽ । । (ऽ)	दि. ल. ५ (सू., चं., श. दान), ७ (चं., श. दान), गोधू. रा. ल. १ (चं. दान छटे चंद्र परि.)–रात्रौ दग्धा ति. परिहार:
द्वि.आषा.शु. ७, गुरु	23 जुला	८ श्राव.	चित्रा	कर्क	कं./तुले	। । । । । ऽ चौ. ऽ ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू., श. चं. दान), ७ (चं. रा. दान), गोधू. रा. ल. १ (चं. दान) गुरु-शुक्र त्रिकोणे शुभा:, भद्रा परिहार
द्वि.आषा. शु. ८, शुक्र	24 जुला	९ श्राव.	चित्रा	कर्क	तुला	। । । । । ऽ चौ. । ऽ । ।	दि. ल. ५ (प्रात: 9/06 तक) (सू. श. दान), चन्द्र तुला में होने से भद्रा का परिहार (पाताले)
द्वि.आषा. शु. ८, शुक्र	24 जुला	९ श्राव.	स्वा.	कर्क	तुला	ऽ गु. ऽ । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ५ (9/06 बाद) (सू. श. दान), गोधू., रात्रि ल. १ (मेषे चंद्र दान)
द्वि.आषा. शु. ९, शनि	25 जुला	१० श्राव.	स्वा.	कर्क	तुला	ऽ गु. ऽ । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू. श. दान)
द्वि.आषा.शु.१४, गुरु	30 जुला	१५ श्राव.	उ.षा.	कर्क	मकर	। । । । ऽ मं. ऽ रा. । ऽ । ।	दि. ल. ७ (सू. दान), गोधू., रात्रि ल. १ (मेषे चं. श. दान)
द्वि.आषा. पूर्णिमा,शुक्र	31 जुला	१६ श्राव.	उ.षा.	कर्क	मकर	। । । । ऽ मं. ऽ रा. । ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू., श., बु. दान) षष्ठे चंद्र परिहार
द्वि.आषा. पूर्णिमा,शुक्र	31 जुला	१६ श्राव.	श्रवण	कर्क	मकर	। । । ऽ गु. ऽ सू. । । ऽ । ।	दि. ल. ७ (चं., श. दान), गोधूलि, रा. ल. १ (श. का दान)–पादेन गुरुवेधऽभाव:
श्राव. कृष्ण १, शनि	1 अग.	१७ श्राव.	श्रवण	कर्क	मकर	। । । ऽ गु. ऽ सू. । । ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू.-श. दान, सिं. ल. प्रात: 7/41 तक, पादेन गु. वेधऽभाव
श्राव. कृ. १/२, शनि	1 अग.	१७ श्राव.	धनि.	कर्क	मक/कुंभ	। । । ऽ बु.ऽसू.ऽचौ. ऽ । । ।	दि. ल. ५ (सू. श. दा.), ७ (चं., मं., श. दान), ९ (मं. श. दा.) (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधू., रा. ल. १ (मं. श. दान), ३ (मिथुने, बुध-राहु दान), पादेन बुध वेधऽभाव:)

ता. 2 अग. से शुक्र वार्धक्यदोष एवं 5 अग. से 19 अग. तक शुक्रास्त तथा 12 अग. से 7 सितं. तक गुरू अस्त और 10 सितं. तक गुरु बाल्यत्व दोष तत्पश्चात् ता. 14 सितं. से 30 सितं. तक की अवधि (गुरु का सिंह राशि में सिंह के ही नवांश में होने से) त्याज्य होगी। पुनश्च ता. 28 सितं. से 12 अक्तू. तक की अवधि में श्राद्ध पक्ष रहेगा।

शुभ विवाह मुहूर्त—आश्विन मास (सितं.-अक्तू.)—सन् 2015 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आश्वि. शु.१/२, बुध	14 अक्तू	२८ आश्वि	स्वाती	कन्या	तुला	।।।।।ऽरो.।।।।	दि. ल. ९ (शु. के दान), गोधू., रा. ल. १ (चं., सू. श. दान), ३ (शु., रा. दान), ४ (चं., मं. दान)

✲ कार्तिक मास (अक्तू.—नवंबर) ✲ (पर्वतीय प्रदेशों के लिए)–2015 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आश्वि शु. ५/६, रवि	18 अक्तू	२ कार्ति	मूल	तुला	धनु	।।।।।ऽ।।।।	ल. गोधू., रा. ल. ३ (सू., चं. रा. दान) (24/15 से मृत्युबाण) क्षीण सूर्यांशे सूर्य पूज्य-आवश्यके
आश्वि शु. ७/८, मंग.	20 अक्तू	४ कार्ति	उ.षा.	तुला	धनु/मक	।।।।।।।ऽ।।	ल. गोधू., रा. ल. ४ (कर्क लग्ने चं. श. दान), भद्रा परिहार:
आश्वि शुक्ल ८, बुध	21 अक्तू	५ कार्ति	उ.षा.	तुला	मकर	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (चं. श. दान)
आश्वि शु. ८/९, बुध	21 अक्तू	५ कार्ति	श्रवण	तुला	मकर	।।।।।ऽरा.।।।।	ल. गोधूली, रात्रि 21/24 तक शूल योग विशेष चिन्तनीय तदुपरांत रा. ल. ४ (चं. दा.)
आश्वि शुक्ल१०/११, शुक्र	23 अक्तू	७ कार्ति	धनि.	तुला	कुम्भ	।ऽगं.।।।।ऽऽऽ	दि. ल. ९ (शनि. दान), धनु ल. दुपै. 12/02 तक
आश्वि शुक्ल१३, रवि	25 अक्तू	९ कार्ति	उ.भा.	तुला	मीन	ऽसू.।ऽके.ऽबु.ऽरा.ऽरो.ऽ।।।	दि. ल. ९ (श. दान), गोधू., रा. ल. ३ (चं., रा., के. दान), ४ (चं.-श.-के. दा.) केतु युति परिहार (आवश्यके)
कार्ति. कृ. २/३, गुरु	29 अक्तू	१३ कार्ति	रोहि.	तुला	वृष	।।।।ऽश.।।।।।	रा. ल. ३ (चं. रा. दान), ४ (मं. शु. दान)
कार्ति. कृ. ३.४, शुक्र	30 अक्तू	१४ कार्ति	रोहि.	तुला	वृष	।।।।ऽश.।।।।।	दि. ल. ९ (चं. श. दान, गुरु-शुक्र त्रिकोणेन शत्रु राशिस्थ चंद्र छठे परिहार)
कार्ति. कृ. ३/४, शुक्र	30 अक्तू	१४ कार्ति	मृग.	तुला	वृ./मिथु	।।।।।ऽरा.ऽऽ।।	ल. गोधू., रा. ल. ३ (चं. रा. दान), ४ (मं. शु. दान)
कार्ति. कृष्ण ५, शनि	31 अक्तू	१५ कार्ति	मृग.	तुला	मिथुन	।।।।।ऽरा.ऽऽ।।	दि. ल. ९ (श. चं. दान)
कार्ति. कृष्ण ९, बुध	4 नवं.	१९ कार्ति	मघा	तुला	सिंह	।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ३ (मं. रा. दान), ४ (मं., शु. दान), ५ (चं. श. दान)
कार्ति. कृ.९/१०, गुरू	5 नवं.	२० कार्ति	मघा	तुला	सिंह	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (श. दान), गोधू., रा. ल. ३ (मं. रा. दान), ४ (मं., शु. दान), कर्क ल. रात 10/47 तक)
कार्ति. शुक्ल ३, शनि	14 नवं.	२९ कार्ति	मूल	तुला	धनु	।।।।।ऽ।।।।	रा. ल. ३ (चं., रा. दान), ४ (चं. दान, षष्ठ चन्द्रोपरि गुरु दृष्टि प्रशस्ता-आवश्यके), रा. ल. ५ (श. के. दा.) (24/21 तक) 24/22 से मृत्युबाण

✲ मार्गशीर्ष मास (नवम्बर—दिसम्बर) ✲ सन् 2015 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
कार्ति. शुक्ल ६, मंग.	17 नवं.	२ मार्ग	उ.षा.	वृश्चिक	मकर	।।।।।ऽ।।।।	दि. ल. ९ (मं., श., सू. दान), गोधूली च.
कार्ति. शुक्ल ६, मंग.	17 नवं.	२ मार्ग	श्रवण	वृश्चिक	मकर	।ऽगं.।।।ऽ।ऽ।।	रा. ल. ४ (चं., शु. दान, कर्क ल. रात 11/48 तक) रात्रि 11/48 बाद मृत्युबाण दोष.
कार्ति. शुक्ल ७, बुध	18 नवं.	३ मार्ग	श्रवण	वृश्चिक	मकर	।।।।।ऽ।ऽ।।	दोप. 11/48 तक मृत्युबाण दोष, दि. ल. ११ (मं. शु. रा. चं. दा.), १ (मं. शु. दा.), गोधू., रा. ल. ३ (बुध छटे पूज्य एवं अष्टम चंद्र परि.) (19/54 तक)
कार्ति. शुक्ल ७, बुध	18 नवं.	३ मार्ग	धनि.	वृश्चिक	मकर	।।।।।ऽअग्नि ऽऽ।।	रा. ल. ३ (चं. बु. दा.), ४ (चंद्र दान), ५ (चं. रा. दान, छटे चन्द्र परि.), ७ (मं., शु. दान) (भद्रा परिहार)
कार्ति. शुक्ल ८, गुरु	19 नवं.	४ मार्ग	धनि.	वृश्चिक	कुम्भ	।।।।।ऽअग्नि ऽऽ।।	दि. ल. १० (गुरु पूज्य दान व मकर ल. प्रातः 11/54 बाद भद्रोत्तरे) ११ (लग्नस्थ चंद्र, अष्टमस्थ मंगल-शुक्र परिहार), सायं ल. १ (लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि शुभ, षष्ठस्थ मं.-शु. परिहार), गोधूलि
का.शु. १२/१३, चन्द्र	23 नवं.	८ मार्ग	अश्वि	वृश्चिक	मेष	ऽसू.ऽ।ऽगु.।।ऽ।।।	रात्रि ल. ७ (चं., मं., शु. दान), पादेन गुरु वेधाभावः, तुला लग्ने व्यतिपात अभावः

शुभ विवाह मुहूर्त–मार्गशीर्ष मास (नव.-दिस.) सन् 2015 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
कार्ति.शुक्ल १३, मंग.	24 नवं.	९ मार्ग	अश्वि	वृश्चिक	मेष	ऽ सू. ऽ व. । ऽ गु.ऽ शु. । ऽ । । ।	दि. ल. ९ (सू., श. दान, धनु लग्न प्रात: 9/58 तक), पादेन गुरु वेधाभाव
मार्ग. कृष्ण १, गुरु	26 नवं.	११ मार्ग	रोहि.	वृश्चिक	वृष	। । । । ऽ सू. बु. श. । । ऽ । ।	दि. ल. ९ (लग्नोऽपरि गु. दृष्टि, षष्ठ-चंद्र परि.), ११ (गु., मं., शु. दान) (अष्टमस्थ मं. परिहार) गोधूलि, रा. ल. ४ (शु. दान-कर्क ल. रात 21/48 तक, रात्रि 9/48 बाद मृत्युबाण
मार्ग. कृष्ण २, शुक्र	27 नवं.	१२ मार्ग	मृग	वृश्चिक	वृ./मि.	। । । । । (ऽ बु.) । ऽ । । ।	प्रात: 9/36 तक मृत्युबाण, दि. ल. १० (गु. पूज्य व दान), ११ (मं. गु. शु. दा.) (अष्टमस्थ मं. परिहार), सायं गोधूलि, रा. ल. ४ (चं., मं., शु. दान), ५ (मं., शु. दान)
मार्ग. कृष्ण ९, शुक्र	4 दिसं.	१९ मार्ग	उ.फा.	वृश्चिक	कन्या	ऽ बु. ।ऽ गु. रा. ।ऽ के. ।ऽ ऽ । ।	दि. ल. ९ (प्रात: 9/14 बाद) (सू. मं. श. दा.), ११ (चं. मं. गु. दा.) (अष्टमस्थ मंगल परिहार), गोधूलि, रा. ल. ४ (चं. दा.), ५ (चं. शु. दा.), ७ (चं. शु. दा.) (मित्रक्षेत्री चंद्रगते गुरु-राहु युति परिहार)
मार्ग. कृष्ण १०, शनि	5 दिसं.	२० मार्ग.	उ.फा.	वृश्चिक	कन्या	ऽ बु. । ऽ गु. रा. । ऽ के. ।ऽऽ । ऽ	दि. ल. ९ (सू. श. दा.) (लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि शुभ:) (गुरु-राहु युति परिहार) १० (गुरु अष्टमस्थ पूज्य) शुक्र केन्द्रगते शुभ:
मार्ग. कृष्ण ११, चंद्र	7 दिसं.	२२ मार्ग.	स्वाति	वृश्चिक	तुला	ऽ मं. । ऽ शु. । । । । ऽ । ।	रा. ल. ३ (बु., रा. पूज्य दान व), मिथुन ल. रात्रि 18/25 बाद, ४ (चं. दान), ५ (चं., शु. दान), शुक्र युति परिहार
मार्ग. कृष्ण १२, मंग.	8 दिसं.	२३ मार्ग.	स्वाति	वृश्चिक	तुला	ऽ मं. । ऽ शु. । । ऽ रा. । ऽ । ।	दि. ल. ९ (सू., श. दान), ११ (मं., गु. दान), गोधू. च., रात्रि ल. ३ (बु., रा. पूज्य दान व), ४ (चं. दान, कर्क ल. 20/55 तक) शुक्रयुति परिहार
मार्ग. शुक्ल १, शनि	12 दिसं.	२७ मार्ग.	मूल	वृश्चिक	धनु	। ऽ ऽ बु. । । ऽ रा. । । । ।	दि. ल. ११ (मं., गु. दान), गोधू., रा. ल. ३ (चं., बु. रा. दान), ५ (मं., शु. दान)–बुध युति परि.
मार्ग. शुक्ल २, रवि	13 दिसं.	२८ मार्ग.	उ.षा.	वृश्चिक	धनु	। । । । । । । । । ।	रा. ल. ७ (मं., श. दान)
मार्ग. शुक्ल ३, चंद्र	14 दिसं.	२९ मार्ग.	उ.षा.	वृश्चिक	मकर	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ९ (सू., श. दान), ११ (चं., गु. मं., दान), दुपै. 15/30 बाद मृत्युबाण
मार्ग. शुक्ल ३, चंद्र	14 दिसं.	२९ मार्ग.	श्रवण	वृश्चिक	मकर	। । । । । । । । ऽ । ।	रा. ल. ७ (तुला लग्ने मं. श. दान) (27/16 तक मृत्युबाण)
✲ माघ मास (जनवरी–फरवरी) ✲ सन् 2016 ई.							
पौष शुक्ल ६, शुक्र	15 जन.	२ माघ	उ.भा.	मकर	मीन	। । । । ऽ गु. रा. । ऽ । । ।	दि. ल. ११ (सू., चं., गु. दान), गोधूली च.
पौष शुक्ल ७, शनि	16 जन.	३ माघ	अश्वि	मकर	मेष	। । । । । ऽ अ. ऽ ऽ । ।	रात्रि ल. ९ (चं., श. दान) (लग्न उपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा:)
पौष शुक्ल ८, रवि	17 जन.	४ माघ	अश्वि	मकर	मेष	। । । । । ऽ अ. ऽ ऽ । ।	दि. ल. ११ (सू., गु. दान), ३ (बु., शु. रा. दान), गोधू., रात्रि ल. ५ (श. दा.) [गुरु केन्द्रगते षष्ठे सूर्य परिहार]
पौ. शु. १०/११, मंग	19 जन.	६ माघ	रोहिणी	मकर	वृष	। । । । । । । । ऽ ।	रा. ल. ५ (श. दा. सिंह ल. रात 9/45 बाद), ९ (चं. पूज्य दानं व) चंद्रोपरि भौम दृष्टि व लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि प्रशस्त:
पौ. शु. ११/१२, बुध	20 जन.	७ माघ	रोहिणी	मकर	वृष	। । । । । । । । ऽ । (ऽ)	दि. ल. ११ (सू., गु. दान), गोधूलि, रात्रि ल. ५ (मं., श. दान) सिंह ल. रात 8/54 तक, दग्धा ति. परिहार
माघ कृष्ण ३/४, बुध	27 जन.	१४ माघ	उ.फा.	मकर	सिंहे	। । ऽ गु. रा. । ऽ के.ऽरा. ।ऽ । ।	रा. ल. ९ (बु., शु. रा. दा.), गुरु दृष्टि शुभ (चंद्रमा मित्रक्षेत्री होने से गुरु-राहु युति परिहार–आवश्यके
माघ कृष्ण ४/५, गुरु	28 जन.	१५ माघ	उ.फा.	मकर	सिं./कं.	। । ऽ गु. रा. । ऽ के. । । ऽ । ।	दि. ल. ११ (चं. गु. दा.) (अष्टम चंद्र परिहार), गोधूलि, रा. ल. ५ (सू. चं. दा.), ९ (श. दा.), (धनु लग्न 29 जन. की प्रात: 04/42 तक) गुरु-राहु युति परिहार–आवश्यके

विवाह मुहूर्त—माघ मास (जनवरी—फरवरी, सन् 2016 ई.)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
माघ कृ. ४/५, गुरु	28 जन.	१५ माघ	हस्त	मकर	कन्या	।।।।।।ऽऽ।।	रा. ल. ९ (सू. श. रा. दान)
माघ कृष्ण ५, शुक्र	29 जन.	१६ माघ	हस्त	मकर	कन्या	।।।।।ऽचौ.ऽऽ।।	दि. ल. ११ (सू. चं. गु. दान) चंद्र अष्टम परि., ३ (बु. शु. रा. दान), गोधूली, रा. ल. ५ (सू. दा.), ९ (धनुषि चं., श. दान)
माघ कृष्ण ७, रवि	31 जन.	१८ माघ	स्वाती	मकर	तुला	।ऽ।।।ऽरो.ऽऽ।।	रा. ल. ६ (शु., दा. कन्या ल. रात 23/17 उप.), ९ (शनि दान)
माघ कृष्ण ११, गुरु	4 फर.	२२ माघ	मूल	मकर	धनु	।।।।।।ऽहर्षऽ।ऽ	रा. ल. ६ (गु., शु. दान), रा. ल. ९ (चंद्र, रा. दान, लग्नोपरि गुरु दृष्टि होने से लग्न चंद्र का परि.)
माघ कृष्ण १२, शुक्र	5 फर.	२३ माघ	मूल	मकर	धनु	।।।।।ऽरा.ऽऽ।ऽ	दि. ल. १२ (मं. दा.), गोधूली, रा. ल. ५ (मं., श. रा. दान, सिंह लग्न रात 7/43 तक) दग्धा तिथि परिहार:—आवश्यके

✲ फाल्गुन मास (फरवरी—मार्च) ✲ सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
माघ शु. ८/९, चंद्र	15 फर.	३ फागु.	रोहिणी	कुम्भ	वृष	।।।।।ऽअ.ऽ।।।	रात्रि लग्न ९ (धनु ल., चं. श. रा. दान)—गुरु त्रिकोणे चंद्र षष्ठे परिहार:
माघ शुक्ल १०, बुध	17 फर.	५ फागु.	मृग	कुम्भ	मिथुन	।ऽ।ऽशु.ऽश.ऽनृ.।ऽ।।	ल. गोधूलि, रा. ल. ६ (मं., गु. दान), पादेन शुक्र वेधाभाव
माघ शु. पूर्णिमा, चंद्र	22 फर.	१० फागु.	मघा	कुम्भ	सिंह	।।।ऽबु. शु.।।।ऽ।।	सायं ल. ४ (बु. शु. पूज्य व दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (चं., गु. रा.), ७ (श. दा.), ९ (श. दा.), १० (बु. शु. गु. रा. दान)
फागु. कृष्ण २, बुध	24 फर.	१२ फागु.	उ.फा.	कुम्भ	सिं./कन्ये	।।ऽरा.।ऽके.ऽअ.।।।।	ल. गोधूलि, रा. ल. ७ (चं., श. रा. दान)—रात्रि 2/29 के बाद शूल योग, राहु युति परिहार:
फागु. कृष्ण ३, गुरु	25 फर.	१३ फागु.	हस्त	कुम्भ	कन्या	।ऽ।।।।ऽ।।।	रात्रि ल. ९ (मं., श. दान, धनु ल. अर्द्ध रात्रि 3/16 बाद (शूल योग 27/16 तक) भद्रा परिहार:
फागु. कृष्ण ४, शुक्र	26 फर.	१४ फागु.	हस्त	कुम्भ	कन्या	।ऽ।।।ऽनृ.ऽ।।ऽ	दि. ल. १२ (सू., चं., गु. दान) दग्धा तिथौ चंद्र पूज्य दान व—(आवश्यके)
फागु. कृ. ६/७, चंद्र	29 फर.	१७ फागु.	अनु.	कुम्भ	वृश्चि.	ऽबु.।ऽमं.।।।ऽऽ।।	रात्रि ल. ९ (धनुषि चं., मं. श. दान), भौम युति परिहार:—(आवश्यके)
फागु. कृष्ण ७, मंग	1 मार्च	१८ फागु.	अनु.	कुम्भ	वृश्चि.	ऽबु.।ऽमं.।।ऽरो.ऽऽ।।	दि. ल. १२ (सू., चं., गु.. दान), गोधू., रा. ल. ६ (सू. चं. दा.), ७ (चं., शु. दान), ९ (चं., मं., श. दान) (धनु ल. रात 2/37 तक), (भौम युति परिहार:)
फागु. कृष्ण ९, गुरू	3 मार्च	२० फागु.	मूल	कुम्भ	धनु	ऽमं. शु.।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. १२ (सू., बु. दान, दुपै. 11/19 से रात्रि 23/15 तक मृत्युबाण दोष) रा. ल. ७ (23/15 बाद) (चं. मं. दा.), ९ (चं. दा.) (लग्नस्थ चंद्र परिहार) धनु लग्ने लग्नस्थ चंद्रोपरि गुरु दृष्टि शुभ
फागु. कृष्ण ११, शनि	5 मार्च	२२ फागु.	उ.षा.	कुम्भ	धनु/मक	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. १२ (सू., बु., गु. दान), रा. ल. ७ (चं., शु. दान), ९ (चं., मं. श. दान) गुरु दृष्टि शुभ
फागु. कृष्ण १२, रवि	6 मार्च	२३ फागु.	श्रवण	कुम्भ	मकर	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	दि. ल. १२ (सू., बु. गु. दान)
फागु. शुक्ल २, गुरु	10 मार्च	२७ फागु.	उ.भा.	कुम्भ	मीन	।।।।ऽरा.ऽरो.।।।।	दि. ल. ३ (चं., गु. दान), गोधूलि च (सूर्यग्रहण वेध विचार—देखें पृष्ठ 149)
फागु. शुक्ल ३, शुक्र	11 मार्च	२८ फागु.	अश्वि	कुम्भ	मेष	।।।ऽगु.।।।।।।	दि. ल. ४ (15/42 बाद, सू. बु. शु. दा.), गोधूलि ल., रात्रि ल. ७ (चं., श. दान), ९ (शुक्र-केतु दान)—पादेन गुरु वेधाभाव (देखें पृष्ठ 149)
फागु. शुक्ल ४, शनि	12 मार्च	२९ फागु.	अश्वि	कुम्भ	मेष	।।।ऽगु.।।।।।।	दि. ल. १२ (सू., शु., बु. दान), प्रात: 11/09 बाद मृत्युबाण दोष, भद्रा परिहार (देखें पृ. 149)

आगामी वर्ष में सम्भावित समय शुद्धि

(1) शुक्र लगभग 28 अप्रैल, 2016 से पूर्व में अस्त होकर 9 जुला., 2016 ई. को पश्चिम से उदय होगा।
(2) गुरु लगभग 9 सितं., 2016 ई. से पश्चिम में अस्त होकर 7 अक्तू., 2016 ई. को पूर्व में उदय होगा।
(3) पुनश्च शुक्र लगभग 22 मार्च, 2017 ई. से पश्चिम में अस्त होकर 25 मार्च, 2017 ई. को पूर्वोदय होगा।

दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त-संवत् २०७२ वि. (सन् 2015-16 ई.)

नीचे वि. संवत् २०७२ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका प्रत्यक्षत: कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। गत पृष्ठों में जिन मुहूर्त्तों में किसी क्रूर ग्रह की युति का परिहार मिल गया है, उन्हें शुद्ध मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है।

निवेदक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, गणितकर्त्ता

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
14 अप्रै.	मंग.	धनि.	संक्रान्ति
17 अप्रै.	शुक्र	उ.भा.	कृ. त्रयोदशी, भद्रा
30 अप्रै.	गुरु	हस्त	राहु युति, केतु वेध
1 मई	शुक्र	हस्त	राहु युति, केतु वेध
2 मई	शनि	हस्त	राहु युति, केतु वेध
4 मई	सोम	स्वा.	मृ. बाण, व्यतीपात
5 मई	मंग.	अनु	सूर्य वेध, शनि युति
6 मई	बुध	अनु	शनि युति, सूर्य वेध
14 मई	गुरु	उ.भा.	मासान्त
15 मई	शुक्र	रेवती	संक्रान्ति
16 मई	शनि	अश्वि	कृष्ण त्रयोदशी
28 मई	गुरु	हस्त	राहु युति, केतु वेध
29 मई	शुक्र	हस्त	राहु युति, केतु वेध
29 मई	शुक्र	चित्रा	व्यतिपात दोष
1 जून	सोम	अनु.	शनि युति अपरिहार्य
2 जून	मंग.	अनु.	शनि युति अपरिहार्य
4 जून	गुरु	मूल	मृत्युबाण दोष
6 जून	शनि	उ.षा.	भौम वेध
7 जून	रवि	धनि	वैधृति, लग्न अभाव
8 जून	सोम	धनि	वैधृति दोष
10 जून	बुध	उ.भा.	केतु युति, राहु वेध
11 जून	गुरु	उ.भा.	केतु युति, राहु वेध
11 जून	गुरु	रेव	रा. ल. अभाव, भद्रा दोष
15 जून	सोम	रोहि.	संक्रान्ति, कृष्ण १४
17 जून से 16 जुला. आषाढ़ अधि. मास			
18 जुला.	शनि	मघा	मृ.बा.,व्यतीपात, ल.अभाव
19 जुला.	शनि	मघा	व्यतीपात दोष
21 जुला.	मंग.	हस्त	राहु युति, केतु वेध
22 जुला.	बुध	हस्त	राहु युति, केतु वेध

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
23 जुला.	गुरु	हस्त	राहु युति, केतु वेध
26 जुला.	रवि	अनु.	शनि युति अपरिहार्य
27 जुला.	सोम	अनु.	शनि युति अपरिहार्य
28 जुला.	मंग.	मूल	मंगल का वेध, वैधृति
29 जुला.	मंग.	मूल	मंगल का वेध, वैधृति
2 अगस्त से शुक्र वार्धक्यदोष प्रारम्भ			
12 अगस्त से 7 सितंबर तक गुरु अस्त			
8 सितं. से 10 सितं. तक गुरु बाल्यत्व			
गुरु-सिंह नवांश–14 सितं. से 30 सितं. तक			
28 सितं. से 12 अक्तू. तक श्राद्ध होंगे			
13 अक्तू.	मंग.	चित्रा	सूर्य युति, वैधृति
15 अक्तू.	गुरु	स्वा.	लग्नऽभाव
16 अक्तू.	शुक्र	अनु.	शनि युति, अपरिहार्य
17 अक्तू.	शनि	अनु.	शनि युति, संक्रान्ति
19 अक्तू.	सोम	मूल	मृत्युबाण, लग्नऽभाव
21 अक्तू.	बुध	श्रव.	भुजंगपात
22 अक्तू.	गुरु	श्रव.	भुजंगपात
22 अक्तू.	गुरु	धनि.	शूलयोग, क्रान्तिसाम्य दोष
26 अक्तू.	सोम	रेव.	राहु का वेध
26 अक्तू.	मंग.	अश्वि	मंगल का वेध
27 अक्तू.	बुध	अश्वि	मंगल का वेध
6 नवं.	शुक्र	उ.फा.	वैधृति दोष
7 नवं.	शनि	उ.फा.	भौम-राहु युति, वैधृति
7 नवं.	शनि	हस्त	केतु वेध, दग्धा तिथि
8 नवं.	रवि	हस्त	दग्धा तिथि, केतु का वेध
12 नवं.	गुरु	अनु.	शनि युति
13 नवं.	शुक्र	अनु.	शनि युति

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
15 नवं.	रवि	मूल	मासान्त
16 नवं.	सोम	उ.षा.	संक्रान्ति
18 नवं.	बुध	श्रवण	प्रात: 11/48 तक मृ. बाण
21 नवं.	शनि	उ.भा.	केतु युति, मंगल वेध
22 नवं.	रवि	उ.भा.	केतु युति, मंगल वेध
22 नवं.	रवि	रेव	राहु का वेध
23 नवं.	सोम	रेव	राहु का वेध, व्यतीपात
23 नवं.	सोम	अश्वि	गुरू वेध, व्यतीपात
25 नवं.	बुध	रोहि.	लग्नऽभाव
26 नवं.	गुरु	मृग.	मृत्युबाण दोष व्याप्ति
1 दिसं.	मंग.	मघा	भद्रा दोष व्याप्त
2 दिसं.	बुध	मघा	भद्रा, वैधृति दोष
5 दिसं.	शनि	हस्त	भौम युति, मृत्युबाण
6 दिसं.	रवि	हस्त	भौम युति, मृत्युबाण
6 दिसं.	रवि	चित्रा	केतु का वेध
7 दिसं.	सोम	चित्रा	केतु का वेध
15 दिसं.	मंग.	श्रव.	मासान्त, व्याघात
16 दिसं.	बुध	धनि.	पौष संक्रान्ति
सन् 2016 ईसवी			
14 जन.	गुरु	उ.भा.	संक्रान्ति
15 जन.	शुक्र	रेव	राहु का वेध, मृत्युबाण
16 जन.	शनि	रेव.	राहु वेध, भद्रा दोष
20 जन.	बुध	मृग	सूर्य का वेध
21 जन.	गुरु	मृग.	सूर्य का वेध
25 जन.	सोम	मघा	सूर्य का वेध
26 जन.	मंग.	मघा	सूर्य का वेध
30 जन.	शनि	हस्त	लग्नऽभाव

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
30 जन.	शनि	चित्रा	केतु का वेध, शूल योग
31 जन.	रवि	चित्रा	केतु का वेध, शूल योग
1 फर.	सोम	स्वा.	लग्नऽभाव
2 फर.	मंग.	अनु.	मृत्युबाण दोष 17/52 से
3 फर.	बुध	अनु.	क्रान्ति साम्य दोष
6 फर.	शनि	उ.षा.	कृष्ण त्रयोदशी
9 फर.	मंग.	धनि	सूर्य-युति अपरिहार्य
11 फर.	गुरू	उ.भा.	लग्न अभाव, मृत्युबाण
12 फर.	शुक्र	उ.भा.	लग्नाभाव, मासांत
12 फर.	शुक्र	रेवती	राहुवेध, मासांत
13 फर.	शनि	अश्वि	फागु. संक्रान्ति
16 फर.	मंग.	रोहि.	लग्नऽभाव, वैधृति
20 फर.	शनि	पुष्य	शनि का वेध
21 फर.	रवि	मघा	भद्रा दोष व्याप्ति
23 फर.	मंग.	मघा	लग्नाभाव
25 फर.	बुध	उ.फा.	शूल दोष-भुजंगपात
26 फर.	शुक्र	चित्रा	केतु का वेध
27 फर.	शनि	चित्रा	केतु का वेध
27 फर.	शनि	स्वा.	सूर्य का वेध
28 फर.	रवि	स्वा.	सूर्य का वेध
2 मार्च	बुध	मूल	लग्नऽभाव (गुरु अष्टम)
4 मार्च	शुक्र	उ.षा.	लग्नाभाव, गुरु 8वें
5 मार्च	शनि	श्रव.	लग्नाभाव
10 मार्च	गुरु	रेवती	राहु का वेध
11 मार्च	शुक्र	रेव.	राहु का वेध
12 मार्च	शनि	अश्वि	प्रात: 11 के बाद मृ. बाण
13 मार्च	रवि	कृति	मासान्त
14 मार्च	सोम	रोहि.	चैत्र संक्रान्ति

त्रिबल शुद्धि पर आधारित-वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त, संवत् २०७२ वि. (सन् 2015-16 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित**) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**–मेष राशि का लड़का और मिथुन राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त **अप्रैल** (वैशाख), 2015 ई. में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 19, 21, 22, 23, 27, 28, 29 अप्रैल की तारीखों एवं मुहूर्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे**, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है। (**नोट–मार्च, 2016 ई. की 10, 11, 12 तारीखें सभी प्रदेशों में ग्राह्य नहीं होंगी।**) (**देखें पृष्ठ 18 एवं 149**)

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि–अप्रै. की १९, २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११-१२ (चं. दा.), १३, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे अक्तू. की १८, २०, २१, २३, २५ (चं. दा.), २९, ३०, ३१, **नवं. की** ४, ५, १४] **सन् 2016 ई. में जन. की** १५ (चं. दा.), १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर. की** ४, ५, १५, १७, २२, २४, २५, २६, **मार्च की** ३, ५, ६, १० (चं. दा.), ११, १२ तारीखें शुभ रहेंगी।	मेष राशि के वर को आषा., आश्विन, माघ, फाल्गुन-शुभ; वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रवण-मार्गशीर्ष मास त्याज्य माने गए हैं। इस राशि की कन्या को 13 जुलाई तक गुरु विशेष रुपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**मेष राशि–अप्रै. की** १९, २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३, **जुला. की** २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग. की** १, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १८, २०, २१, २५, २९, ३०, ३१, **नवं. की** ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं. की** १७, १८, १९, २३, २४, २६, २७, **दिसं. की** ४, ५, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर. की** ४, ५, १५, १७, २२, २४ २५, २६, **मार्च की** ३, ५, ६, १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि–मई की १९, २०, २७ (15/10 बाद), २८, ३०, ३१, **जून की** ५ (24/19 बाद), ६, ७, ११, १२-१३ (चं. दा.), **जुला. की** २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग. की** १, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे अक्तू. की २० (20/34 बाद), २१, २३, २५, २९, ३०, ३१, **नवं. की** १४] **मार्गशीर्ष में नवं. की** १७, १८, १९, २३-२४ (चं. दा.), २६, २७, **दिसं. की** ४ (16/01 बाद), ५, ७, ८, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६-१७ (चं. दा.), १९, २०, २८ (8/37 बाद), २९, ३१, **फर. की** १५, १७, २४ (16/21 बाद), २५, २६, २९ **मार्च की** १, ५ (11/27 बाद), ६, १०, ११-१२ (चं. दा.) तारीखें शुभ रहेंगी।	वृष के लड़के को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास-शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, मार्ग., माघ मासों में सूर्य पूज्य तथा वैशाख, भाद्र मास अशुभ एवं त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 13 जुलाई तक साधारण रुपेण पूज्य, तदुपरान्त 14 जुला. से संवतान्त तक विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**वृष राशि–अप्रै. की** १९, २१, २२, २३, ३०, **मई की** २, ३, ९ (18/31 बाद), १०, ११, १२, १९, २०, २७ (15/10 बाद), २८, ३०, ३१, **जून की** ५ (24/19 बाद), ६, ७, ११, १२, १३, **जुला. की** २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग. की** १, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे अक्तू. की २० (20/34 बाद), २१, २३, २५, २९, ३०, ३१, **नवं. की** १४] **मार्ग. में नवं. की** १७, १८, १९, २३, २४, २६, २७, **दिसं. की** ४ (16/01 बाद), ५, ७, ८, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १९, २०, २८ (8/37 बाद), २९, ३१, **फर. की** १५, १७, २४ (16/21 बाद), २५, २६, २९, **मार्च की** १, ५ (11/27 बाद), ६, १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
मिथुन राशि–अप्रै. की १९, २१-२२ (चं. दा.), २३, २७, २८, २९, **मई की** २ (19/39 बाद), ३, ७, ८, ९ (18/31 तक), ११ (22/19 बाद), १२, **जुला. की** २०, २३ (19/44 बाद), २४, २५, **अग. की** १ (18/30 बाद), [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १८, २० (20/34 तक), २३, २५, २९-३० (चं. दा.), ३१, **नवं. की** ४, ५, १४] **मार्ग. में नवं. की** १९ (7/35 बाद), २३, २४, २६-२७ (चं. दा.), **दिसं. की** ७, ८, १२, १३, **सन् 2016 ई. में फर. की** १५ (चं. दा.), १७, २२, २४ (16/21 तक), २९, **मार्च की** १, ३, ५ (11/27 तक), १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।	मिथुन के वर को वैशाख, भाद्रपद, मार्गशीर्ष मास विवाह के लिए शुभ, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में सूर्य पूज्य तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 13 जुला. तक शुभ, 14 जुला. से संवतान्त तक साधारण रूपेण पूज्य होगा।	**मिथुन राशि–अप्रै. की** १९, २१, २२, २३, २७, २८, २९, **मई की** २ (19/39 बाद), ३, ७, ८, ९ (18/31 तक), ११ (22/19 बाद), १२, १९-२० (चं. दा.), २४, २५, २७ (15/10 तक), ३०, ३१, **जून की** ३, ५ (24/19 तक), ११, १२, १३, **जुला. की** २०, २३ (19/44 बाद), २४, २५, **अग. की** १ (18/30 बाद), **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १८, २० (20/34 तक), २३, २५, २९, ३०, ३१, **नवं. की** ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं. की** १९ (7/35 बाद), २३, २४, २६, २७, **दिसं. की** ७, ८, १२, १३, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १९-२० (चं. दा.), २७, २८ (8/37 तक), ३१, **फर. की** ४, ५, १५, १७, २२, २४ (16/21 तक), २९, **मार्च की** १, ३, ५ (11/27 तक), १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कर्क राशि–**अप्रै.** की १९, २१, २२–२३ (चं. दा.), २७, २८, २९, ३०, **मई की** २ (19/39 तक), ७, ८, ९, १०, ११ (22/19 तक), १९, २० (चं. दा.), २४, २५, २७, २८, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३, **जुला. की** २०, २१, २३ (19/44 तक), ३०, ३१, **अग. की** १ (18/30 तक), **नवं. की** १७, १८, २३, २४, २६, २७ (चं. दा.), **दिसं. की** ४, ५, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, **फर. की** ४, ५ शुभ रहेंगी।	कर्क के लड़के को विवाहादि के लिए वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास शुभ, श्रावण, भाद्र., मार्ग. व माघ मासों में सूर्य की पूजा-दान तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य रहेंगे। कर्क राशि की कन्या को गुरु 13 जुला. तक साधारण रूपेण पूज्य, 14 जुला. से संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**कर्क राशि**–**अप्रै.** की १९, २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २ (19/39 तक), ७, ८, ९, १०, ११ (22/19 तक), १९, २०, २४, २५, २७, २८, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३, **जुला.** की २०, २१, २३ (19/44 तक), ३०, ३१, **अग. की** १ (18/30 तक), [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १८, २०, २१, २५, २९, ३०–३१ (चं. दा.), **नवं.** की ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, **दिसं. की** ४, ५, १२, १३ १४, **सन् 2016 ई. में जन.** की १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर.** की ४, ५, १५, १७ (चं. दा.), २२, २४, २५, २६, २९, **मार्च की** १, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
सिंह राशि–**अप्रै.** की १९, २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, १२ (9/40 बाद), १३, **अक्तू.** की १४ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १८, २०, २१, २३, २९, ३०, ३१, **नवं.** की ४, ५, १४] **सन् 2016 ई. में जन.** की १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर.** की ४, ५, १५, १७, २२, २४, २५, २६, **मार्च की** ३, ५, ६, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।	सिंह राशि के लड़के को आश्विन, फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा दानादि रहेगा। ज्ये., आषाढ़, कार्तिक एवं माघ मास शुभ तथा चैत्र, श्रावण और मार्ग. मास त्याज्य होंगे। सिंह राशि की कन्याओं को गुरु 13 जुला. तक विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**सिंह राशि**–**अप्रै.** की १९, २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, १२ (9/40 बाद), १३, **जुला.** की २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, **अक्तू.** की १४ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १८, २०, २१, २३, २९, ३०, ३१, **नवं.** की ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं.** की १७, १८, १९, २३, २४, २६, २७, **दिसं.** की ४, ५, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन.** की १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर.** की ४, ५, १५, १७, २२, २४, २५, २६, **मार्च** की ३, ५, ६, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
कन्या राशि–**मई की** १९, २०, २४–२५–२७ (चं. दा.), २८, ३०, ३१, **जून की** ५ (24/19 बाद), ६, ७, ११, १२ (9/40 तक), **जुला.** की २० (चं. दा.), २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, **अक्तू.** की १४ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की २० (20/34 बाद), २१, २३, २५, २९, ३०, ३१, **नवं.** की ४–५ (चं. दा.)] मार्ग. में **नवं.** की १७, १८, १९, २६, २७, **दिसं.** की ४, ५, ७, ८, १४, **सन् 2016 ई. में जन.** की १५, १९, २०, २७–२८ (चं. दा.), २९, ३१, **फर.** की १५, १७, २२–२४ (चं. दा.), २५, २६, २९, **मार्च** की १, ५ (11/27 बाद), ६, १० तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को आषाढ़ श्रावण, मार्गशीर्ष व फागुन मास शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि होगा। वैशाख, भाद्रपद मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 13 जुला. तक शुभ, 14 जुला. से संवतान्त तक विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**कन्या राशि**–**अप्रै.** की २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ९ (18/31 बाद), १०, ११, १२, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ५ (24/19 बाद), ६, ७, ११, १२ (9/40 तक), **जुला.** की २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, **अक्तू.** की १४ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की २० (20/34 बाद), २१, २३, २५, २९, ३०, ३१, **नवं.** की ४, ५] मार्ग. में **नवं.** की १७, १८, १९, २६, २७, **दिसं.** की ४, ५, ७, ८, १४, **सन् 2016 ई. में जन.** की १५, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर.** की १५, १७, २२, २४, २५, २६, २९, **मार्च** की १, ५ (11/27 बाद), ६, १० तारीखें शुभ होंगी।
तुला राशि–**अप्रै.** की १९, २२ (23/10 बाद), २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २ (चं. दा.), ३, ७, ८, ९ (18/31 तक), ११ (22/19 बाद), १२, **जुला.** की २०, २१–२३ (चं. दा.), २४, २५, **अग.** की १ (18/30 बाद) [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १८, २० (20/34 तक), २३, २५, ३० (28/21 बाद), ३१, **नवं.** की ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं.** की १९, २३, २४, २७ (14/50 बाद), **दिसं.** की ४–५ (चं. दा.), ७, ८, १२, १३, **सन् 2016 ई. में फर.** की १७, २२, २४–२५–२६, २९, **मार्च** की १, ३, ५ (11/27 तक), १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।	तुला के वर को श्रावण, भाद्रपद शुभ, वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. व फागुन मासों में सूर्य की पूजा/दान होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्याओं को गुरु 13 जुला. तक साधारण पूज्य, 14 जुला. से संवातन्त तक शुभ रहेगा।	**तुला राशि**–**अप्रै.** की १९, २२ (23/10 बाद), २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९ (18/31 तक), ११ (22/19 बाद), १२, २० (8/50 बाद), २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५ (24/19 तक), ११, १२, १३, **जुला.** की २०, २१, २३, २४, २५, **अग.** की १ (18/30 बाद), **अक्तू.** की १४ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १८, २० (20/34 तक), २३, २५, ३० (28/21 बाद), ३१, **नवं.** की ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं.** की १९, २३, २४, २७ (14/50 बाद), **दिसं.** की ४, ५, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन.** की १५, १६, १७, २७, २८, २९, ३१, **फर.** की ४, ५, १७, २२, २४, २५, २६, २९, **मार्च** की १, ३, ५ (11/27 तक), १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
वृश्चिक राशि–**अप्रै. की** १९, २१, २२ (23/10 तक), २७, २८, २९, ३०, **मई की** २-३ (चं. दा.), ७, ८, ९, १०, ११ (22/19 तक), १९, २० (8/50 तक), २४, २५, २७, २८, ३०-३१ (चं. दा.), **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३, **जुला. की** २०, २१, २३-२४-२५ (चं. दा.), ३०, ३१, **अग. की** १ (18/30 तक), **अक्तू. की** १४ (चं. दा.), **नवं. की** १७, १८, २३, २४, २६, २७ (14/50 तक), **दिसं. की** ४, ५, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर. की** ४, ५ तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के वर को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण और मार्ग. मासों में सूर्य पूजा/दानादि तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्याओं को गुरु 13 जुला. तक शुभ, 14 जुला. से संवतान्त तक साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**वृश्चिक राशि**–**अप्रै. की** १९, २१, २२ (23/10 तक), २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९, १०, ११ (22/19 तक), १९, २० (8/50 तक), २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३, **जुला. की** २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग. की** १ (18/30 तक), **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १८, २०, २१, २५, २९, ३० (28/21 तक), **नवं. की** ४, ५ १४] मार्ग. में **नवं. की** १७, १८, २३, २४, २६, २७ (14/50 तक), **दिसं. की** ४, ५, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर. की** ४, ५, १५, २२, २४, २५, २६, २९, **मार्च की** १, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
धनु राशि–**अप्रै. की** १९, २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, १२ (9/40 बाद), १३, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १८, २०, २१, २३, २९, ३०, ३१, **नवं. की** ४, ५, १४] **सन् 2016 ई. में जन. की** १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर. की** ४, ५, १५, १७, २२, २४, २५, २६, २९–**मार्च की** १ (चं. दा.), ३, ५, ६, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।	धनु राशि के वर को ज्येष्ठ, अश्वि., कार्तिक एवं फागुन मास शुभ; वैशाख, आषाढ़, भाद्रपद मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण, मार्गशीर्ष और चैत्र मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्याओं को गुरु 13 जुला. तक विशेष रूपेण पूज्य, 14 जुला. से संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**धनु राशि**–**अप्रै. की** १९, २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, १२ (9/40 बाद), १३, **जुला. की** २०, २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग. की** १, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १८, २०, २१, २३, २९, ३०, ३१, **नवं. की** ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं. की** १७, १८, १९, २३, २४, २६, २७, **दिसं. की** ४, ५, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, ३१, **फर. की** ४, ५, १५, १७, २२, २४, २५, २६, २९, **मार्च की** १, ३, ५, ६, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।
मकर राशि–**मई की** १९, २०, २७ (15/10 बाद), २८, ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२ (9/40 तक), **जुला. की** २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग. की** १, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १८, २०, २१, २३, २५, २९, ३०, ३१, **नवं. की** १४] मार्ग. में **नवं. की** १७, १८, १९, २६, २७, **दिसं. की** ४ (16/01 बाद), ५, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १९, २०, २८ (8/37 बाद), २९, ३१, **फर. की** ४, ५, १५, १७, २४ (16/21 बाद), २५, २६, २९, **मार्च की** १, ३-५ (चं. दा.), ६, १० तारीखें शुभ होंगी।	मकर के वर को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग., चैत्र मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण व आश्विन मासों में सूर्य की पूजा तथा वैशाख, भाद्रपद और पौष मास त्याज्य/अशुभ होंगे। इस राशि की कन्या को 13 जुला. तक गुरु शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**मकर राशि**–**अप्रै. की** २१, २२, २३, ३०, **मई की** २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २७ (15/10 बाद), २८, ३०, ३१, **जून की** ३-५ (चं. दा.), ६, ७, ११, १२ (9/40 तक), **जुला. की** २१, २३, २४, २५, ३०, ३१, **अग. की** १, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १८, २०, २१, २३, २५, २९, ३०, ३१, **नवं. की** १४] मार्ग. में **नवं. की** १७, १८, १९, २६, २७, **दिसं. की** ४ (16/01 बाद), ५, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १९, २०, २८ (8/37 बाद), २९, ३१, **फर. की** ४, ५, १५, १७, २४ (16/21 बाद), २५, २६, २९, **मार्च की** १, ३, ५, ६, १० तारीखें शुभ होंगी।
कुम्भ राशि–**अप्रै. की** १९, २२ (23/10 बाद), २३, २७, २८, २९, **मई की** २ (19/39 बाद), ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, **जुला. की** २०, २३ (19/44 बाद), २४, २५, ३०-३१–**अग. की** १ (चं. दा.), [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १८, २०-२१ (चं. दा.), २३, २५, ३० (28/21 बाद), ३१, **नवं. की** ४, ५, १४ (चं. दा.)] मार्ग. में **नवं. की** १७-१८ (चं. दा.), १९, २३, २४, २७ (14/50 बाद), **दिसं. की** ४ (16/01 तक), ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में फर. की** १७, २२, २४ (16/21 तक), २९, **मार्च की** १, ३, ५-६ (चं. दा.), १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।	कुम्भ के वर को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास शुभ, आषाढ़, भाद्रपद व कार्तिक मास में सूर्य की पूजा, ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य रहेंगे। कुम्भ राशि की कन्या को 13 जुला. तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**कुम्भ राशि**–**अप्रै. की** १९, २२ (23/10 बाद), २३, २७, २८, २९, **मई की** २ (19/39 बाद), ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, २० (8/50 बाद), २४, २५, २७ (15/10 तक), ३०, ३१, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३, **जुला. की** २०, २३ (19/44 बाद), २४, २५, ३०, ३१, **अग. की** १, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १८, २०, २१, २३, २५, ३० (28/21 बाद), ३१, **नवं. की** ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं. की** १७, १८, १९, २३, २४, २७ (14/50 बाद), **दिसं. की** ४ (16/01 तक), ७, ८, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, २७, २८ (8/37 तक), ३१, **फर. की** ४, ५, १७, २२, २४ (16/21 तक), २९, **मार्च की** १, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मीन राशि–अप्रै. की १९, २१, २२ (23/10 तक), २७, २८, २९, ३०, **मई की** २ (19/39 तक), ७, ८, ९, १०, ११-१२ (चं. दा.), १९, २० (8/50 तक), २४, २५, २७, २८, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३, **जुला. की** २०, २१, २३ (19/44 तक), ३०, ३१, **अग. की** १, **नवं. की** १७, १८, १९ (चं. दा.), २३, २४, २६, २७ (14/50 तक), **दिसं. की** ४, ५, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, **फर. की** ४, ५ तारीखें शुभ होंगी।	मीन के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण आश्विन व मार्ग. मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की कन्याओं को गुरु 13 जुला. तक शुभ, 14 जुला. से संवातान्त तक साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**मीन राशि–अप्रै. की** १९, २१, २२ (23/10 तक), २७, २८, २९, ३०, **मई की** २ (19/39 तक), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २० (8/50 तक), २४, २५, २७, २८, **जून की** ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३, **जुला. की** २०, २१, २३ (19/44 तक), ३०, ३१, **अग. की** १ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १८, २०, २१, २३ (चं. दा.), २५, २९, ३० (28/21 तक), **नवं. की** ४, ५, १४] मार्ग. में **नवं. की** १७, १८, १९, २३, २४, २६, २७ (14/50 तक), **दिसं. की** ४, ५, १२, १३, १४, **सन् 2016 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९, **फर. की** ४, ५, १५, २२, २४, २५, २६, २९, **मार्च की** १, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तारीखें शुभ होंगी।

नोट–मार्च, 2016 ई. की १०, ११, १२ तारीखें कुछ प्रदेशों में विवाह एवं शुभ मंगल कार्यों हेतु (सूर्यग्रहण के वेध दोष के कारण) ग्राह्य नहीं होंगी। ज्योतिषी भाईयों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए ग्रहण विवरण वाले पृष्ठ देखें।

"त्रिबल शुद्धि-चक्र"

त्रिग्रह बल→	सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरूबल
शुभ एवं ग्राह्य	३, ६, १०, ११	१, ३, ६, ७, १०, ११	२, ५, ७, ९, ११
अल्प-शुभ एवं पूज्य	१, २, ५, ७, ९	२, ५, ९, १२	१, ३, ६, १०
निन्द्य एवं त्याज्य	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

वर तथा कन्या दोनों की राशि से विवाह मुहूर्त्त समय की राशि (गोचर चन्द्र) १, ३, ६, ७, १० या ११वें हो, तो वह चन्द्र शुभ होता है एवं २, ५, ९ या १२वें चन्द्र हो, तो कुछ अशुभ एवं पूज्य होता है तथा ४ या ८वें चन्द्र हो, तो अशुभ एवं निन्द्य माना जाता है। (मु. पारिजात) ऊपर दिए गए **त्रिबल-शुद्धि** चक्र से वर-कन्या के शुभ विवाह मुहूर्त्त का निर्णय करने में सुविधा होगी।

योगिनी दशाओं के अरिष्ट शमन हेतु मन्त्र

मंगला–ॐ ह्रीं मङ्गले मङ्गलायै स्वाहा।।
पिंगला–ॐ ग्लौं पिङ्गले वैरिकारिणी प्रसीद फट् स्वाहा।
धान्या–ॐ श्रीं धनदे धान्यै स्वाहा।।
भ्रामरी–ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरी भ्रामरी क्लीं स्वाहा।।
भद्रिका–ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा।।
उल्का–ॐ उल्के मम रोगं नाशय जृम्भय स्वाहा।।
सिद्धा–ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा।।
संकटा–ॐ ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा।।

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त—संवत् २०७२

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्त्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्त्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है—**विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवने तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥** ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त भी ग्राह्य नहीं होता।

'पंचांग दिवाकर' में लगाए जाने वाले सभी मुहूर्त्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथा सम्भव पालन किया जाता है।

नोट—जिन क्षेत्रों/नगरों में 9 मार्च, 2016 ई. का सूर्यग्रहण दृश्य होगा, वहाँ 10 से 12 मार्च, 2016 ई. के मुहूर्त्त ग्राह्य नहीं होंगे। —निवेदकः पं. विवेक शर्मा

मुण्डन मुहूर्त्त—२०७२ वि.

✡ बालक के मुण्डन जन्म या गर्भाधान काल से १, ३, ५ इत्यादि विषम वर्षों में करने का विधान है। कुछ विद्वान् बालक के जन्म मास एवं जन्म नक्षत्र और विरुद्ध चन्द्र (४,८,१२)वें चूड़ाकरण करने का निषेध मानते हैं-(चूड़ामणि) ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास तथा ज्येष्ठा नक्षत्र में करने का निषेध माना गया है। कुल परम्परानुसार नवरात्रों में सिद्ध शक्ति पीठ या तीर्थ स्थलों पर बिना निर्धारित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य सम्पादित कराते हैं। **निः-पं. पन्ना लाल ज्यो.**

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ११, बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. मिथुन
वै. कृ. ४/५, बुध	22 अप्रै.	मृग	मु. दुपै. 11/15 बाद, भद्रा परि.
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग	मिथुन ल. चंद्र पूज्य दान व
वैशा. शु. ६, शुक्र	24 अप्रै.	पुर्न	मु. दुपै. 12/05 बाद, अभि.
वैशा. शु. ७, शनि	25 अप्रै.	पुर्न	ल. ३, ४ (चं. दा.) वैश्यों के लिए शुभ
वैशा. शु. ८, रवि	26 अप्रै.	पुष्य	ल. ३, ४, विप्रों को शुभ
वैशा. शु. १५, रवि	3 मई	चि/स्वा	मु. 7/59 बाद, ल. ३, ४ विप्रों के लिए शुभ
ज्ये. कृ. ३, गुरु	7 मई	ज्ये.	ल. ३, ४ (चं. दा.), अभि.
ज्ये. कृ.६/७, रवि	10 मई	श्रव.	मु. 11/57 बाद, ल. ४, अभि. (विप्रों के लिए), भद्रा परि.
ज्ये. कृ. ८, सोम	11 मई	श्र/ध	ल. ४ (चं. दा.)
ज्ये. कृ. ९, मंग.	12 मई	ध/शत	ल. ३, अभि. क्षत्रियों के लिए शुभ
ज्ये. कृ.१०, बुध	13 मई	शत.	ल. ३ (प्रातः 8/07 तक)
ज्ये.शु.२/३, बुध	20 मई	मृग.	ल. ३, ४ (चं. मं. दा.)
ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न	ल. ३, ४ (चं. बु. दा.), अभि.
ज्ये.शु. ५/६, शनि	23 मई	पुष्य	ल. ३, ४ (चं. मं. दा.), (वैश्यों को शुभप्रद)
ज्ये. शु. १२, शनि	30 मई	चित्रा	मु. 8/02 बाद, ल. ३, ४, अभि.
ज्ये. शु. १३, रवि	31 मई	स्वा.	ल. ३, ४, अभि. विप्रों को शुभ
प्र.आ.कृ. १, बुध	3 जून	ज्ये.	ल. ३, ४, अभिजित
प्र.आ.कृ. ५, रवि	7 जून	श्रव.	ल. ४, अभि., विप्रों को शुभ
प्र.आ.कृ. ६, सोम	8 जून	धनि.	ल. ३, ४, अभिजित (वैधृती-वरुण पूजा)-आवश्यके
प्र.आ.कृ. ७, मंग.	9 जून	शत.	ल. ३, ४, अभि., क्षत्रियों को शुभप्रद (चंद्र दा. व पूजा)
प्र.आ.कृ.११, शुक्र	12 जून	रे/अ.	ल. ३, ४, अभिजित
प्र.आ.कृ.१२, शनि	13 जून	अश्वि	मु. प्रातः 8/26 तक (ल. ३, ४) (वैश्यों के लिए शुभप्रद)
(सन् 2016 ई० में)			
पौष शु. ८, रवि	17 जन.	अश्वि	ल. ११, ३ (15/58 तक), अभि.-विप्रों के लिए शुभप्रद
पौष शु. १२, गुरु	21 जन.	मृग.	११, अभि., गुरु-राहु दान
पौ.शु. पूर्णि, शनि	23 जन.	पुर्न.	११, अभि., वैश्यों के लिए प्रशस्त
माघ कृ. १, रवि	24 जन.	पुष्य	११, अभि., रविपुष्य योग (ब्राह्मण के लिए प्रशस्त)
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	ल. ११, अभि., चं. दा.
माघ कृ. ८, सोम	1 फर.	स्वाती	ल. १२, अभि., चं. गु. पू. दा.
माघ कृ. ११, गुरु	4 फर.	ज्ये.	ल. १२ (चं. गु. दा.), अभि. (ज्येष्ठ लड़के को छोड़कर)
माघ शु. २, बुध	10 फर.	शत	ल. १२ (चं. गु. दा.), ३
माघ शु. १०, बुध	17 फर.	मृग.	ल. १२ (7/39 तक वैधृ.)
माघ शु. १२, शुक्र	19 फर.	पुर्न.	ल. १२ (गु. दा.), अभि.
माघ शु. १३, शनि	20 फर.	पुष्य	ल. १२, वैश्यों को शुभप्रद
फागु. कृ. ३, गुरु	25 फर.	हस्त	दुपै. 12/24 बाद, चं. दा. अभि. च. (शूले प्रथम ५ घटी त्याज्य) आवश्यके
फागु. कृ. ४, शुक्र	26 फर.	हस्त	ल. १२, अभि. (चं. दा.)
फागु. कृ. ८, बुध	2 मार्च	ज्ये.	ल. १२
फागु.कृ. १२, रवि	6 मार्च	श्रव.	ल. १२, सू. दा., अभि.
फागु. शु. ४, शनि	12 मार्च	अश्वि	ल. १२, अभि. (वैश्यों के लिए शुभप्रद)

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त—२०७२ (खनन एवं भूमि पूजन)

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्त्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्त्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। गृहारम्भ में ५, ७, ९, १५, २१, २४ प्रविष्टों में भूमि-शयन (सुप्त भूमि) का भी विचार किया जाता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वैशा. कृ. ११, बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. ३, ५
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग	ल. ३, ४ (मु. [illegible] तक)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ६, शुक्र	24 अप्रै.	पुन.	अभिजित, दुपै. 12/05 बाद
वैशा. शु. ७, शनि	25 अप्रै.	पु/पुष्य	ल. ३, ४, अभिजित (मु. 16/38 तक)
वैशा. शु.१२, गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. ३, ४, ५, अभिजित
ज्ये.कृ.५/६, शनि	9 मई	उ.षा.	मु. दुपै. 12/40 के बाद, ल. ५
• ज्ये. कृ. ८, चंद्र	11 मई	श्र./ध	ल. ४, अभिजित
• ज्ये. कृ.१०, बुध	13 मई	शत.	ल. ३, मिथुन ल. 8/07 तक
• ज्ये.शु.२/३, बुध	20 मई	मृग	ल. ३,४,५, मिथुन 8/50 तक
• ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न.	ल. ३, ५ अभि., (चं. दा.)
• ज्ये. शु. १०, बुध	27 मई	उ.फा.	मु. दुपै. 2/35 के बाद
• ज्ये. शु. १०, गुरु	28 मई	उ./ह.	ल. ३, ४, ५, अभिजित
• ज्ये.शु. १२, शनि	30 मई	चित्रा	ल. ३,४,५, अभि. मिथुन ल. 8/02 के बाद
प्र.आ. कृ.१०, गुरु	11 जून	रेवती	ल. ५, मु. 10/59 बाद, अभि. (चं. दा.)
प्र.आ.कृ. ११, शुक्र	12 जून	रे/अ	ल. ३, ४, ५, अभिजित
प्र.आ.कृ.१२, शनि	13 जून	अश्वि	ल. ३, ४, मु. प्रात: 8/26 तक
शु.आ. शु.१/२, शुक्र	17 जुला	पुष्य	ल. ५, ७, अभिजित
शु.आ. शु. ७, गुरु	23 जुला	चित्रा	ल. ५, ७ चं. दा., अभिजित
शु. आ.शु.११, चंद्र	27 जुला	अनु.	ल.५, ७, अभि., शनि-यु. परि. (आवश्यके)
शु.आ. पूर्णि., शुक्र	31 जुला	उ/श्र	ल. ५, ७, अभिजित
श्राव. कृ. १, शनि	1 अग.	श्र/ध	ल. ५, ७ (चं. दा.), अभि.
आ.शु. १०, गुरु	22 अक्तू	श्रव.	ल. ९ (धनु ल. 11/59 बाद), अभिजित (शूल योग की प्रथम ५ घड़ी त्यक्त्वा)
आ.शु.११/१२, शनि	24 अक्तू	शत.	मुहूर्त्त प्रात: 10/05 तक
कार्ति. कृ. ३, शुक्र	30 अक्तू	रोहि.	मु. प्रात: 8/25 तक
कार्ति. शु. ७, बुध	18 नवं.	श्रव.	ल. ९, शनि दान
कार्ति. शु. ८, गुरु	19 नवं.	धनि.	ल. १० (11/54 बाद, भद्रोतरे, अभि., गु. पू.)
मार्ग. कृ. १, गुरु	26 नवं.	रोहि.	ल. १०, ११, अभि. (गु.मं.शु.दा.)
मार्ग. कृ. २, शुक्र	27 नवं.	मृग.	ल. १०, गुरु पू., ११ (मं. शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ.१०, शनि	5 दिसं	उ/ह	ल. ९, ११, अभिजित
मार्ग. शु. ३, सोम	14 दिसं	उ.षा.	ल. ९, ११, अभिजित
(सन् 2016 ई. में)			
पौष शु. ६, शुक्र	15 जन.	उ.भा.	ल. ११, अभिजित
पौष पूर्णि., शनि	23 जन.	पुर्न.	ल. ११, अभि., दुपै. 2/03 तक
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	ल. ११, अभिजित
माघ कृ. ८, सोम	1 फर.	स्वाती	अभिजित
माघ शुक्ल २, बुध	10 फर.	शत.	ल. १२ (चं. मं. दा.)
माघ शु. १३, शनि	20 फर.	पुष्य	ल. १२ (मं. दा.), अभिजित
फागु. कृ. २, बुध	24 फर.	उ.फा.	प्रात: 9/42 उप.,
फागु. कृ.११, शनि	5 मार्च	उ.षा.	ल. १२, अभिजित
फागु. शु. २, गुरू	10 मार्च	उ.भा.	ल. ३, अभिजित

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त (संवत् २०७२)

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति, नवग्रह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृष्ण ११, बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. ३, ५
वैशा. शु. ५, बुध	22 अप्रै.	मृग	ल. ५, दुपै. 15/49 बाद
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग.	ल. ३, मु. 11/17 तक
वैशा. शु. ६, शुक्र	24 अप्रै.	पुर्न.	दुपै. 12/05 बाद, अभिजित
वैशा. शु. ७, शनि	25 अप्रै.	पुर्न.	ल. ३, ५, अभिजित
वैशा. शु. १२, गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. ३, ५, अभिजित
वैशा. शु. १३, शनि	2 मई	चित्रा	ल. ३, ४, ५, अभिजित
ज्ये. कृ. ६, शनि	9 मई	उ.षा.	ल. ५ (दुपै. 12/40 बाद) अभि.
ज्ये. कृ. ८, सोम	11 मई	श्र/ध	ल. ४ (चं. दा.), अभिजित
ज्ये. कृ. १०, बुध	13 मई	शत.	ल. ३, मिथु. ल. प्रात: 8/07 तक
ज्ये.शु. २/३, बुध	20 मई	मृग.	ल. ३ (8/50 तक), ५
ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न.	ल. ४, ५, अभिजित
ज्ये.शु.५/६, शनि	23 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. १०, गुरु	28 मई	उ.फा.	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. १२, शनि	30 मई	चित्रा	ल. ३, ५, अभिजित मिथुन ल. 8/02 के बाद
प्र.आ.कृ.१०, गुरु	11 जून	रेवती	ल. ५ (चं. दा.), अभि.
प्र.आ.कृ.११, शुक्र	12 जून	रे/अ.	ल. ३, ५, अभिजित
प्र.आ.कृ.१२, शनि	13 जून	अश्वि	मुहूर्त्त प्रात: 8/26 तक (ल.३)
शु.आ. शु.१, शुक्र	17 जुला	पुष्य	ल. ५, अभिजित (आवश्यके)
आश्वि शु. ८, बुध	21 अक्तू	उ.षा.	ल. ९
आश्वि शु. १०, गुरु	22 अक्तू	श्रवण	ल. ९, अभि. (शूल योग परि.)
आश्वि शु.१०, शुक्र	23 अक्तू	धनि.	ल. ९, अभिजित
आ.शु.११/१२, शनि	24 अक्तू	शत.	मुहूर्त्त प्रात: 10/05 तक
कार्ति. कृ. ३, शुक्र	30 अक्तू	रोहि.	मुहूर्त्त प्रात: 8/25 तक
कार्ति. कृ. ५, शनि	31 अक्तू	मृग	ल. ९, श. दा., अभिजित
कार्ति. कृ. ७, सोम	2 नवं.	पुर्न.	ल. ९, चं. पू., अभि. (रा. दा.)
कार्ति. शु. ७, बुध	18 नवं.	श्रवण	ल. ९ (श. दान)
कार्ति. शु. ८, गुरु	19 नवं.	धनि.	मु. 11/54 बाद भद्रोत्तरे
मार्ग. कृ. १, गुरु	26 नवं.	रोहि.	ल. ९, ११ (गु. शु. मं. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. २, शुक्र	27 नवं.	मृग	ल. ९, ११ (मं. शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. ५, सोम	30 नवं.	पुष्य	ल. ११ (मं. शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. १०, शनि	5 दिसं.	उ/ह	ल. ९, ११, अभि. गु. दा.
मार्ग. शु. ३, सोम	14 दिसं.	उ.षा.	ल. ९, ११, अभिजित
(सन् 2016 ई० में)			
पौष शु. ६, शुक्र	15 जन.	उ.भा.	ल. ११, अभिजित
पौष शु. ११, बुध	20 जन.	रोहि.	ल. ११
पौ.शु. पूर्णि, शनि	23 जन.	पुर्न	ल. ११, अभि. दुपै. 2/03 बाद, भद्रा. दोष
माघ कृ. ५, गुरु	28 जन.	उ.फा.	मु. 11/58 बाद, अभिजित
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	ल. ११, अभि. (गु. दा.)
माघ कृ. ८, सोम	1 फर.	स्वाती	ल. १२ (गु. रा. दा.), अभि.

नूतन गृह प्रवेश

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ कृ. १०, बुध	3 फर.	अनु.	ल. १२
माघ शु. २, बुध	10 फर.	शत.	ल. १२ (चं. मं. दा.)
माघ शु. १०, बुध	17 फर.	मृग	ल. १२ (मं. दा)
माघ शु. १२,शुक्र	19 फर.	पुर्न	ल. १२, अभि., मं. दा.
फागु. कृ. २, बुध	24 फर.	उ.फा.	प्रातः 9/42 बाद, ल. ३
फागु. कृ.११,शनि	5 मार्च	उ.षा.	ल. १२, अभि. सू. दा.
फागु.कृ. १३,सोम	7 मार्च	धनि.	ल. १२, अभि., महाशिवरात्रि
फागु. शु. २, गुरु	10 मार्च	उ.भा.	ल. ३, अभिजित्

पुराने गृह में प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०७२ वि.

अस्थायी तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए नवीन गृह **प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।** ध्यान रहे, पुराने निजी या किराये के मकान में प्रवेश के समय भी कलश पूजन, देव पूजन, नवग्रह शान्ति दान, दक्षिण सहित ब्राह्मण भोजन आदि करवाना शुभ होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, शनि	21 मार्च	रेवती	ल. ३, अभि., स्वयं सिद्ध
वैशा.कृ. ११, बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. ३, ५
वैशा. शु. ५, बुध	22 अप्रै.	मृग.	ल. ५, दुपै. 15/49 बाद
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग.	प्रातः 11/17 तक, अभि.
वैशा. शु. ६, शुक्र	24 अप्रै.	पुर्न	ल. ४, अभिजित, दुपै. 12/05 बाद
वैशा. शु. ७, शनि	25 अप्रै.	पुर्न	ल. ३, ४, अभिजित
वैशा. शु.१२, गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. ३, ५, अभिजित
वैशा.शु. १३,शनि	2 मई	चित्रा	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये.कृ.५/६,शनि	9 मई	उ.षा.	ल.५ (दुपै. 12/40 बाद), अभि.
ज्ये. कृ. ८, सोम	11 मई	श्रव.	ल. ४ (चं. दा.), अभि.
ज्ये. कृ. १०, बुध	13 मई	शत.	ल. ३, लग्न प्रातः 8/07 तक
ज्ये. शु.२/३, बुध	20 मई	मृग.	ल. ३ (प्रा.. 8/50 या), ५
ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न	ल. ४, ५, अभि. (चं. दा.)
ज्ये.शु.५/६, शनि	23 मई	पुष्य	ल. ३, ४, अभि.
ज्ये. शु. १०, गुरु	28 मई	उ.फा.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. १२, शनि	30 मई	चित्रा	ल. ३, ५, अभि. (मिथुन ल. प्रातः 8/02 के बाद)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
प्र.आ.कृ.१०, गुरु	11 जून	उ./रे	ल. ३, ५, अभि., मिथुन ल. प्रातः 5/59 बाद
प्र.आ.कृ.११,शुक्र	12 जून	रे/अ	ल. ३, ४, ५, अभि.
आ. कृ. १२, शनि	13 जून	अश्वि	मुहूर्त्त प्रातः 8/26 तक
17 जून से 16 जुला. तक आषाढ़ अधिक मास			
द्वि.आ.शु.१/२,शुक्र	17 जुला	पुष्य	ल. ५, ७, अभि.
द्वि.आ.शु. ७, गुरु	23 जुला	चित्रा	ल. ५, ७, अभि.
आषा. शु. ८,शुक्र	24 जुला	चि/स्वा	ल. ५, अभिजित
आषा. पूर्णि.,शुक्र	31 जुला	उ.षा.	ल. ५, ७, अभिजित
श्रा.कृ. १/२,शनि	1 अग	श्र/ध	ल. ५, ७, अभिजित
आश्वि शु. ८, बुध	21 अक्तू	उ.षा.	ल. ९
आश्वि शु.१०, गुरु	22 अक्तू	श्रव.	ल. ९, अभि., शूले शिव पूजा
आश्वि शु.११,शनि	24 अक्तू	शत.	मु. प्रातः 10/05 तक
कार्ति. कृ. ३,शुक्र	30 अक्तू	रोह.	मु. प्रातः 8/25 तक
कार्ति. कृ. ५,शनि	31 अक्तू	मृग.	ल. ९, अभिजित
कार्ति. कृ. ७,सोम	2 नवं.	पुर्न	ल. ९, अभिजित
कार्ति. शु. ७, बुध	18 नवं.	श्रवण	ल. ९
कार्ति. शु. ८, गुरु	19 नवं.	धनि.	मुहूर्त्त 11/54 के बाद, अभि.
मार्ग. कृ. १, गुरु	26 नवं.	रोहि.	ल. ११, अभि. गु. मं. दा.
मार्ग. कृ. २, शुक्र	27 नवं.	मृग.	ल. ११ (मं. शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. ५, सोम	30 नवं.	पुष्य	ल. ११ (मं. शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. १०,शनि	5 दिसं	उ/ह	ल. ९, ११, अभि., गु. रा. युत्येन दान
मार्ग. शु. ३, सोम	14 दिसं	उ.षा.	ल. ९, ११, अभिजित
(सन् 2016 ई० में)			
पौष शु. ६, शुक्र	15 जन.	उ.भा.	ल. ११, अभिजित
पौष शु. ११, बुध	20 जन.	रोहि.	ल. ११
पौष पूर्णि., शनि	23 जन.	पुर्न	ल. ११, अभिजित
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	ल. ११, अभिजित, गु. दा.
माघ कृ. ८, सोम	1 फर.	स्वाती	ल. १२, अभिजित
माघ कृ. १०, बुध	3 फर.	अनु.	ल. १२
माघ शु. २, बुध	10 फर.	शत.	ल. १२ (चं. मं. दा.)
माघ शु. १०, बुध	17 फर.	मृग.	ल. १२, (मं. दा.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शु. १२,शुक्र	19 फर.	पुर्न	ल. १२, अभि. (मं. दा.)
फागु. कृ. २, बुध	24 फर.	उ.फा.	प्रातः 9/42 के बाद, ल. ३
फागु.कृ. ११,शनि	5 मार्च	उ.षा.	ल. १२, अभि. (सू. दा.)
फागु.कृ.१३,सोम	7 मार्च	धनि.	ल. १२, अभि., महाशिवरात्रि
फागु. शु. २, गुरु	10 मार्च	उ.भा.	ल. ३, अभिजित

दुकान या व्यवसाय शुरु करने के मुहूर्त्त- वि. २०७२ (2015-16 ई.)-विपणि

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव पूजा, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश स्थापन एवं कन्या पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। विपणि मुहूर्त्त में कुम्भ लग्न त्याज्य होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, शनि	21 मार्च	रेवती	ल. ३, अभि., स्वयं सिद्ध
वैशा.कृ. ११, बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. ३, ५, अभिजित
वैशा. कृ. १२,गुरु	16 अप्रै.	पू.भा.	ल. ३, ५, अभिजित (बु.दा.)
वैशा. शु. १, रवि	19 अप्रै.	अश्वि	ल. ३, ४, ५, अभिजित
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग.	ल. ३, मु. 11/17 तक
वैशा. शु. ६, शुक्र	24 अप्रै.	पुर्न.	मु. 12/05 बाद, अभिजित
वैशा. शु. ७, शनि	25 अप्रै.	पुर्न	ल. ३, ४, अभिजित
वैशा. शु. १२,गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. ३, ४, ५, अभिजित
वैशा.शु. १३,शनि	2 मई	चित्रा	ल. ३, ५, अभिजित
वै.शु.१४/१५,रवि	3 मई	चित्रा	ल. ३, ४, अभि., ५, (मु. प्रातः 7/59 के बाद)
ज्ये. कृ.४/५,शुक्र	8 मई	मूल	ल. ३, ५, अभि., मिथुन ल. प्रातः 9/12 के बाद
ज्ये.कृ.५/६,शनि	9 मई	उ.षा.	दुपै. 12/40 के बाद, ल. ५
ज्ये. कृ. ७, रवि	10 मई	उ.षा.	मु. 11/57 तक
ज्ये. कृ. ८, चंद्र	11 मई	श्र/ध	ल. ४, अभिजित
ज्ये.शु.२/३, बुध	20 मई	मृग.	ल. ३, ४, ५, (चं. दा.) (मिथुन ल. प्रातः 8/50 तक)
ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न	ल. ४, ५, चं. दा., अभिजित

विपणि मुहूर्त—वि. संवत् २०७२

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये.शु. ५/६,शनि	23 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. १०, गुरु	28 मई	उ.फा.	ल. ३, ४, ५, अभिजित
ज्ये. शु. १२,शनि	30 मई	चित्रा	ल. ३ (8/02 बाद), ५, अभि.
ज्ये. शु. १३, रवि	31 मई	स्वाती	ल. ३ (मिथुन प्रातः 8/05 तक)
प्र.आ.कृ. २, गुरु	4 जून	मूल	ल. ३ (चं. दा.), ५, अभि.
प्र.आ.कृ. ५, रवि	7 जून	श्रवण	ल. ४ (चं. दा.), अभिजित
प्र. आ. कृ. ८,बुध	10 जून	पू.भा.	मु. प्रातः 8/07 तक
प्र.आ.कृ. १०,गुरु	11 जून	उ/रे	मु. ल. ३ (प्रातः 5/59 के बाद), ४, अभिजित
प्र.आ.कृ.११,शुक्र	12 जून	रे/अ	ल. ३, ४, ५, अभि. मं.रा.दा.
प्र.आ.कृ.१२,शनि	13 जून	अश्वि	मुहूर्त प्रातः 8/26 तक
17 जून से 16 जुला. तक आषाढ़ अधिक मास			
द्वि.आ.शु.१/२,शुक्र	17 जुला	पुष्य	ल. ५, ७, अभिजित
द्वि.आ.शु. ७, गुरु	23 जुला	चित्रा	ल. ५, ७, अभिजित
आषा. शु. ८,शुक्र	24 जुला	चि/स्वा	ल. ५, अभिजित
आषा. पूर्णि.,शुक्र	31 जुला	उ/श्र	ल. ५, ७, अभिजित
श्रा. कृ.१/२,शनि	1 अग.	श्र/ध	ल. ५, ७, अभिजित
आश्वि शु.१/२,बुध	14 अक्तू	स्वाती	ल. ९
आश्वि शु. ५, रवि	18 अक्तू	मूल	मु. दुपै. 13/13 के बाद
आश्वि शु. ६, सोम	19 अक्तू	मूल	मु. 14/11 तक, ल. ९, १० (बु. दा.)
आश्वि शु. ८, बुध	21 अक्तू	उ.षा.	ल. ९
आ. शु.१०/११, शुक्र	23 अक्तू	धनि.	ल. ९, दुपै. 12/02 तक
आश्वि शु.११/१२,शनि	24 अक्तू	पू.भा.	ल. ९, १०, अभिजित
आश्वि शु. १३,रवि	25 अक्तू	उ.भा.	ल. ९, अभि., केतु दान
कार्ति. कृ. ३,शुक्र	30 अक्तू	रोहि.	मुहूर्त प्रातः 8/25 तक
कार्ति. कृ. ५,शनि	31 अक्तू	मृग.	ल. ९, अभिजित
कार्ति. कृ. ७,सोम	2 नवं.	पुर्न.	ल. ९, अभिजित
कार्ति. शु. ७, बुध	18 नवं.	श्रव.	ल. ९
कार्ति. शु. ८, गुरु	19 नवं.	धनि.	मु. 11/54 के बाद, अभि.
मार्ग. कृ. १, गुरु	26 नवं.	रोहि.	ल. ९, अभिजित
मार्ग. कृ. २, शुक्र	27 नवं.	मृग.	ल. ९, अभि., मं. चं. दा
मार्ग. कृ. ५, सोम	30 नवं.	पुष्य	ल. ९ (मं. शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ.१०,शनि	5 दिसं.	उ.फा.	ल. ९, अभि. (दुपै. 12/22 तक)
मा.कृ.१०/११रवि	6 दिसं.	हस्त	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. शु. १, शनि	12 दिसं.	मूल	अभिजित
मार्ग. शु. ३, सोम	14 दिसं.	उ.षा.	ल. ९, अभिजित
(सन् 2016 ई. में)			
पौष शु. ६, शुक्र	15 जन.	उ.भा.	अभिजित, ल. २
पौष शु. ८, रवि	17 जन.	अश्वि	अभिजित, ल. २
पौष शु. ११, बुध	20 जन.	रोहि.	ल. ३ (चं. गु. दा.)
पौष पूर्णिमा, शनि	23 जन.	पुर्न.	अभिजित
माघ कृ. ५, गुरु	28 जन.	उ.फा.	मु. 11/58 बाद, अभि.
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	अभिजित
माघ कृ. ८, सोम	1 फर.	स्वा.	ल. १२, अभि. (चं. दा.)
माघ कृ. १०, बुध	3 फर.	अनु.	ल. १२
माघ कृ. १२,शुक्र	5 फर.	मूल	ल. १२ (मं. दा.), अभि.
माघ शु. ३, गुरु	11 फर.	पू.भा.	ल. १२ (मं. दा.), अभि. (दुपै. 12/03 तक)
माघ शु. १०, बुध	17 फर.	मृग.	ल. १२ (मं. दान)
माघ शु. १२,शुक्र	19 फर.	पुर्न.	ल. १२, अभि., मं. दा.
फागु. कृ. २, बुध	24 फर.	उ.फा.	प्रातः 9/42 के बाद, अभि.
फागु.कृ. ११,शनि	5 मार्च	उ.षा.	ल. १२ (सू. दा.), अभि, २
फागु. कृ. १२,रवि	6 मार्च	श्रव.	ल. १२ (सू. दा.), अभि.
फागु.कृ. १३,सोम	7 मार्च	धनि.	ल. १२, अभि., महाशिवरात्रि
फागु. शु. २, गुरु	10 मार्च	उ.भा.	ल. २, ३, अभिजित

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०७२

शास्त्रमत अनुसार ज्येष्ठ (बड़े) पुत्र का यज्ञोपवीत ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए। पुनर्वसु नक्षत्र में ब्राह्मण का उपनयन न करें। बुध अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार को उपनयन न करें। मुहूर्त्त के दिन चन्द्रमा बालक की राशि से ४, ८ या बारहवें स्थान नहीं होना चाहिए। आगामी वर्ष के कुछ मुख्य उपनयन मुहूर्त्त दिए जाते हैं—

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र कृष्ण ३, रवि	8 मार्च	हस्त	ल. १ (चं. दा.), ३, अभि.
चैत्र शु. २/३,रवि	22 मार्च	अश्वि	ल. ३, ४, अभिजित
चैत्र शु. ६, बुध	25 मार्च	रोहि.	ल. ३ (चं. दा.)
चैत्र शु. १०, रवि	29 मार्च	पुष्य	ल. ३, ४, अभिजित
चैत्र शु. ११, सोम	30 मार्च	पु/श्ले	ल. ३, अभिजित
वैशा. कृ. १, रवि	5 अप्रै.	चित्रा	ल. ३, ४, अभिजित
वैशा. कृ. २, सोम	6 अप्रै.	स्वा.	ल. ३, ४, अभिजित
वैशा. कृ. ५, गुरु	9 अप्रै.	अनु.	ल. ३, युति परि.
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृ/अ	४ (चं. दा.), अभिजित
वैशा. शु. ११,बुध	29 अप्रै.	पू.फा.	ल. ३, ४, दुपै. 12/25 बाद भद्रा दोष
वैशा. शु. १२,गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. कृ. ५, शुक्र	8 मई	मूल	ल. ३ (9/12 बाद), अभि.
ज्ये. शु. ३, बुध	20 मई	मृग	ल. ४, ५ बाद (चं. दा.)
ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न.	ल. ४, ५, अभि. (चं. दा.)
ज्ये. शु. १०, गुरु	28 मई	उ.फा.	ल. ३, ४, ५ (चं. दा.)
प्र.आ.कृ. २, गुरु	4 जून	मूल	ल. ३, ४, ५ (चं. दा.)
प्र.आ.कृ. ३, शुक्र	5 जून	पू.षा.	ल. ३, ४, ५ चं. दा., भद्रा परि.
प्र.आ.कृ. ५, रवि	7 जून	श्रवण	ल. ४ (चं. दा.), ५, अभि.
(सन् 2016 ई० में)			
पौ.शु.११/१२, बुध	20 जन.	रोहि.	ल. ११, गु. रा. दान
मा.कृ.१/२, सोम	25 जन.	अश्ले	ल. ११, अभिजित
माघ कृ. ५, गुरु	28 जन.	उ.फा.	मु. 11/58 बाद, अभिजित
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	ल. ११ (चं. 8वें परि. पूज्य दान), अभिजित
माघ शु. २, बुध	10 फर.	शत.	ल. १२ (चं. दा.)
माघ शु. ३, गुरु	11 फर.	पू.भा.	ल. मु. दुपै. 12/03 तक
माघ शु.१०, बुध	17 फर.	मृग	ल. १२ (मं. दा.), अभि.
माघ शु. ११, गुरु	18 फर.	आर्द्रा	ल. १२ (मं. दा.)
माघ शु. १२,शुक्र	19 फर.	पुर्न	ल. १२ (मं. दा.), अभि.
फागु. कृ. २, बुध	24 फर.	पू/उ	ल. १२ (चं. गु. दा.), युति परि.
फागु. शु. २, गुरु	10 मार्च	उ.भा.	ल. ३, अभिजित

उप. 25, 28 फर

मुहूर्त मुकलावा (द्विरागमन)-2015-16 ई.

विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है-आजकल कुछ ज्योतिषी परिस्थितिवश एवं लोकाचार स्वरूप रवि एवं शनिवार भी ग्रहण करने लगे हैं। द्विरागमन में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ११, बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. ३, ५ (गु. दा.)
वैशा. शु. ५, बुध	22 अप्रै.	मृग.	ल. ५, दुपै. 15/49 के बाद
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग.	दुपै. 11/17 तक, अभि.
वैशा. शु. ६, शुक्र	24 अप्रै.	पुर्न	दुपै. 12/05 बाद, अभिजित
वैशा. शु. १२, गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. ३, अभिजित
ज्ये. कृ. ५, शुक्र	8 मई	मूल	ल. ३ (ल. 9/12 के बाद), ४, अभिजित
ज्ये. कृ. ८, सोम	11 मई	श्र/ध	ल. ४, अभि., चं. दा.
ज्ये. कृ. १०, बुध	13 मई	शत.	ल. ३, ४, मु. 11/37 तक भद्रा पूर्व
कार्ति. शु. ७, बुध	18 नवं.	श्रवण	ल. ९
कार्ति. शु. ८, गुरु	19 नवं.	धनि.	मु. 11/54 के बाद, अभि.
मार्ग. कृ. १, गुरु	26 नवं.	रोहि.	ल. ९, ११, अभिजित
मार्ग. कृ. २, शुक्र	27 नवं.	मृग.	ल. ११, अभि. (मं. शु. दा.)
मार्ग. कृ. ५, सोम	30 नवं.	पुष्य	ल. ११ (मं. शु. दा.), अभि.
मार्ग. शु. ३, सोम	14 दिसं.	उ.षा.	ल. ९, ११, अभिजित
(सन् 2016 ई. में)			
माघ शु. १०, बुध	17 फर.	मृग.	ल. १२, मं. दा.
माघ शु. १२, शुक्र	19 फर.	पुर्न	ल. १२, अभिजित
फागु. कृ. २, बुध	24 फर.	उ.फा.	प्रात: 9/42 के बाद,
फागु. कृ. १२, रवि	6 मार्च	श्रवण	ल. १२, अभिजित
फागु. कृ. १३, सोम	7 मार्च	धनि.	ल. १२, अभि., महाशिवरात्रि
फागु. शु. २, गुरु	10 मार्च	उ.भा.	ल. ३, अभिजित

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०७२

आगे लिखे मुहूर्त्त प्राय: सभी देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कूआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा देवी/देव का जयंती दिन विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, एवं शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल १, शनि	21 मार्च	रेवती	ल. ३, अभि., स्वयं सिद्ध
वैशा.कृ. ११, बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. ३, ५
वैशा. शु. १, रवि	19 अप्रै.	अश्वि	ल. ३, ५, अभिजित
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग.	ल. ३, मु. 11/17 तक
वैशा. शु. ६, शुक्र	24 अप्रै.	पुर्न	दुपै. 12/05 उप., अभि.
वैशा. शु. ७, शनि	25 अप्रै.	पुर्न	ल. ३, ५, अभिजित
वैशा. शु.१२, गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. ३, ५, अभिजित
वैशा. पूर्णि, रवि	3 मई	स्वा.	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. कृ. ५, शुक्र	8 मई	मूल	ल. ३, ५, अभि. मिथुन 9/12 के बाद
ज्ये. कृ. ७, रवि	10 मई	उ/श्र	ल. ४, ५, अभि., भद्रा परि.
ज्ये. कृ. ८, सोम	11 मई	श्र/ध	ल. ४, अभिजित
ज्ये. कृ.१०, बुध	13 मई	शत.	ल. ३, प्रात: 8/07 तक
ज्ये.शु.२/३, बुध	20 मई	मृग.	ल. ३, ५
ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न	ल. ५, अभिजित
ज्ये.शु.५/६, शनि	23 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. १०, गुरु	28 मई	उ.फा.	ल. ३, ५ (11/26 तक)
ज्ये. शु. १२, शनि	30 मई	चित्रा	ल. ३ (8/02 बाद), ५, अभि.
ज्ये. शु. १३, रवि	31 मई	स्वाती	ल. ३, अभि., प्रात: 8/06 बाद परिघ विचार

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
प्र.आ.कृ. २, गुरु	4 जून	मूल	ल. ३, ५, अभिजित
प्र.आ.कृ. ५, रवि	7 जून	श्रव.	ल. ४, अभिजित
प्र.आ.कृ. १०, गुरु	11 जून	रेव.	ल. ३, ५, अभिजित
प्र.आ.कृ.११, शुक्र	12 जून	रे/अ	ल. ३, ५, अभिजित
(सन् 2016 ई० में)			
पौष शु. ६, शुक्र	15 जन.	उ.भा.	ल. ११, अभिजित
पौष शु. ८, रवि	17 जन.	अश्वि	ल. ११, अभिजित
पौष शु. ११, बुध	20 जन.	रोहि.	ल. ११
पौष पूर्णि, शनि	23 जन.	पुर्न.	ल. ११, अभिजित
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	ल. ११, अभिजित
माघ कृ. ८, सोम	1 फर.	स्वा.	ल. १२, अभि. (चं. दा.)
माघ कृ. १०, बुध	3 फर.	अनु.	ल. १२
माघ कृ. १२, शुक्र	5 फर.	मूल	ल. १२ (मं. दा.), अभि.
माघ शु. २, बुध	10 फर.	शत.	ल. १२ (चं. मं. दा.)
माघ शु. १०, बुध	17 फर.	मृग.	मु. 7/39 बाद, ल. १२, मं. दा.
माघ शु. १२, शुक्र	19 फर.	पुर्न.	ल. १२, अभि., मं. दा., २
फा. कृ. २, बुध	24 फर.	उ.फा.	प्रात: 9/42 के बाद, अभि.
फा. कृ. ११, शनि	5 मार्च	उ.षा.	ल. १२, अभिजित
फा. कृ. १२, रवि	6 मार्च	श्रवण	ल. १२, अभिजित
फा. कृ. १३, सोम	7 मार्च	धनि.	ल. १२, अभि., शिवरात्रि पर्व
फागु. शु. २, गुरु	10 मार्च	उ.भा.	ल. ३, अभिजित

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-२०७२

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वैशा. कृ. ४, बुध	8 अप्रै.	अनु.	ल. ३
ज्ये. कृ. ४, गुरु	7 मई	ज्ये.	प्रात: 9/52 बाद, ल. ३, अभि.
प्र.आ.कृ. ४, शनि	6 जून	उ.षा.	ल. ४, ५, अभि. चं. दा.
श्राव. कृ. ४, सोम	3 अग.	पू.भा.	ल. ५, चं. दा., अभि. (शुक्र वार्धक्य दोष)
कार्ति. कृ. ४, शुक्र	30 अक्तू	रोहि.	ल. ९, अभिजित
मार्ग. कृ. ४, रवि	29 नवं.	पुर्न.	ल. ९, अभिजित
पौष कृ. ४, मंग	29 दिसं.	श्ले.	ल. ११, चं. गु. दा., अभि.
(सन् 2016 ई० में)			
माघ कृ. ४, बुध	27 जन.	पू.फा.	ल. ११ (चं. दा.) प्रात: 9/56 बाद
फागु. कृ. ४, शुक्र	26 फर.	हस्त	ल. १२ (चं. दा.), अभि.
चैत्र कृ. ४, रवि	27 मार्च	विशा	ल. १, ३, अभिजित

श्री दुर्गा देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०७२

(आगे लिखे मुहूर्त्त समस्त देवियों की प्रतिष्ठा के लिए शुभ होंगे। परन्तु शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथियां श्रीगौरी की प्रतिष्ठा में विशेष रूप से प्रशस्त होंगी।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, शनि	21 मार्च	रेव.	ल. २, ३, अभिजित
चै.शु. २/३, रवि	22 मार्च	अश्वि	ल. २, अभिजित
चैत्र शु. ८, शुक्र	27 मार्च	आर्द्रा	ल. २, ४, अभिजित
वैशा. कृ. ६, शुक्र	10 अप्रै.	मूल	ल. ३, अभि. (चं. दा.)
वैशा.कृ. ९, चन्द्र	13 अप्रै.	श्रव.	ल. २, अभिजित
वैशा. शु. ३, मंग.	21 अप्रै.	रोहि.	मु. 11/57 बाद, अभि.
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग.	मु. 11/17 तक
वैशा. शु. ७, शनि	25 अप्रै.	पुर्न.	ल. २, ३, अभिजित
ज्ये. कृ. ४, शुक्र	8 मई	मूल	ल. ३, अभिजित
ज्ये. कृ. ९, मंग.	12 मई	धनि.	ल. ३ (9/38 तक)
ज्ये. शु. ३, बुध	20 मई	मृग.	ल. २, ३ (ल. 8/50 तक), ५
ज्ये. शु. १२, शनि	30 मई	चित्रा	मु. 8/02 बाद,
शु.आ.कृ. २, गुरु	4 जून	मूल	ल. ३, अभिजित
शु.आ.कृ.५, रवि	7 जून	श्रव.	ल. ३, अभिजित
शु.आ.कृ. ९, गुरु	11 जून	रेव.	ल.५ (10/59 बाद), अभि.
शु.आ.शु. ९, शनि	25 जुला	स्वा.	ल. ५, अभिजित
आश्वि शु. १/२, बुध	14 अक्तू	स्वा.	ल. ९
आश्वि शु.५, रवि	18 अक्तू	ज्ये/मू.	ल. ९, ११
कार्ति. कृ. ५, शनि	31 अक्तू	मृग	ल. ९, अभिजित
कार्ति. शु. ४, रवि	15 नवं.	मूल	अभिजित्
मार्ग. कृ. ५, चन्द्र	30 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित
मार्ग. कृ. ९, शुक्र	4 दिसं	उ.फा.	ल. ९, अभिजित
मार्ग. शु. १, शनि	12 दिसं.	मूल	ल. ११, अभिजित
(सन् 2016 ई० में)			
पौष कृ. १२, गुरु	7 जन.	अनु.	ल. ११, अभिजित
पौष शु. ८, रवि	17 जन.	अश्वि	ल. ११, ३, अभिजित
माघ कृ. १२, शुक्र	5 फर.	मूल	अभिजित
फागु. कृ. ९, गुरु	3 मार्च	मूल	ल. १२, अभिजित
फागु. शु. २, गुरु	10 मार्च	उ.भा.	ल. १२ (चं. पू.), अभिजित
फागु. शु. ३, शुक्र	11 मार्च	रेव/अ	ल. १२, अभिजित

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०७२

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिङ्ग स्थापन हेतु मुख्य मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषतः शुभ एवं ग्राह्य होंगे। शिव प्रतिमा/ शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्त्तों में आगामी पृष्ठ पर दिए गए '**शिववास चक्र**' का भी प्रयोग करें तो विशेष शुभ होगा। **शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास विशेष प्रशस्त होते हैं।**

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल १, शनि	21 मार्च	रेव	ल. २, ३, अभि., स्वयं सिद्ध
चैत्र शु. ८, शुक्र	27 मार्च	आर्द्रा	ल. २, ४, अभिजित
चैत्र शु. १०, रवि	29 मार्च	पुष्य	ल. २, ३, अभिजित
वैशा. कृ. ८, रवि	12 अप्रै.	उ.षा.	ल. ३, अभिजित (प्रात: 7/10 बाद)
वैशा. शु. ३, मंग.	21 अप्रै.	रोहि.	ल. ४, ५, अभिजित (11/57 बाद)
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृ/अ	ल. २, ४ (चं. दा.), अभि.
वैशा. शु. ८, रवि	26 अप्रै.	पुष्य	ल. २, ३, अभिजित
वैशा. शु. १४, रवि	3 मई	स्वा	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. कृ. ३, गुरु	7 मई	ज्ये.	ल. २, ३, ४, भद्रा परिहार
ज्ये. कृ. ४, शुक्र	8 मई	मूल	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. कृ. ८, चंद्र	11 मई	श्र/ध	ल. ४, ५, अभिजित
ज्ये. शु. ३, गुरु	21 मई	आर्द्रा	ल. ४, ५, अभिजित
ज्ये. शु. ८, मंग.	26 मई	पू.फा.	ल. ३, ४, अभिजित
शु.आ.कृ. २, गुरु	4 जून	मूल	३, ४, अभिजित, चं. दा.
शु.आ.कृ. ५, रवि	7 जून	श्रव.	ल. ४, ५, अभिजित
शु.आ.कृ.९/१०, गुरु	11 जून	रेव	ल. ५ (10/59 बाद), अभि.
द्वि.आ.शु. ७, गुरु	23 जुला	चित्रा	ल. ५, ७, अभिजित
श्रा.कृ.१/२, शनि	1 अग.	धनि.	ल. ५, ७, अभिजित
कार्ति. शु. ८, गुरु	19 नवं.	धनि.	अभिजित, दुपै. 11/54 बाद
कार्ति. शु. १३, मंग	24 नवं.	अश्वि	ल. ९ (प्रात: 9/58 तक)
मार्ग. कृ. ३, शनि	28 नवं.	आर्द्रा	ल. ९, अभिजित
मार्ग. कृ. ५, चन्द्र	30 नवं.	पुष्य	ल. १०, ११, अभिजित
मार्ग. शु. १, शनि	12 दिसं.	मूल	ल. ११, अभिजित

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
(सन् 2016 ई० में)			
पौष शु. ८, रवि	17 जन.	अश्वि	ल. ११, अभिजित
पौष शु. १४, शनि	23 जन.	पुर्न	ल. ११, अभि., भद्रा परि.
माघ कृ. ८, चंद्र	1 फर.	स्वाती	ल. अभिजित
माघ कृ. १२, शुक्र	5 फर.	मूल	ल. १२, अभिजित
माघ शु. ११, गुरु	18 फर.	आर्द्रा	ल. १२, अभिजित
फागु. कृ. २, बुध	24 फर.	पू.फा.	ल. १२ (मु. 9/42 तक)
फागु. कृ. ५, रवि	28 फर.	स्वा.	ल. १२, अभिजित
फागु. कृ. ७, मंग.	1 मार्च	अनु.	ल. १२, अभिजित
फागु. कृ.१२, रवि	6 मार्च	श्रव.	ल. १२, अभिजित
फा. कृ. १३/१४, चंद्र	7 मार्च	धनि.	ल. १२, अभिजित्
फा. शु. ८, मंग.	15 मार्च	मृग.	ल. १२ (चं. दा.) अभि. (पंजाब, हिमाचल में त्याज्य)

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्राय: सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है– **दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः। चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। '**नारद पुराण**' के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण–मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

श्री मद्भागवत, हरिवंशपुराण, रामायणादि प्रारम्भ मुहूर्त्त-वि. संवत् २०७२

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्री मद्भागवत्, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्त्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष श्रेष्ठतर माना गया है। श्री शिवपुराण पाठारम्भ में श्रावण, माघ व फागुन मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्रीदेवीभागवत् वाचन हेतु श्री दुर्गा प्रतिष्ठा में लिखे मुहूर्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ११,बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. २, ४ (चं. दान)
वैशा. कृ. १२,गुरु	16 अप्रै.	पू.भा.	मुहूर्त्त 10/09 तक
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग	ल. १, २ (मु. 11/17 तक)
वैशा. शु. १२,गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. २, ३, ४
वैशा. शु. १५,रवि	3 मई	चि/स्वा	ल. २, ३, ४, अभि. (मु. 7/59 बाद)
ज्ये. कृ. ८, चंद्र	11 मई	श्र/ध.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. २, बुध	20 मई	मृग	ल. ४, ५
ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न	ल. ४, ५, अभिजित
ज्ये. शु.१०, गुरु	28 मई	उ.फा.	ल. ४, ५ (मु. 11/26 तक)
ज्ये. शु.१३, रवि	31 मई	स्वा.	मुहूर्त्त प्रात : 11/06 के बाद
शु.आ.कृ.३, शुक्र	5 जून	पू.षा.	ल. ३, ५, अभि.
शु.आ.कृ.५, रवि	7 जून	श्रव.	ल. ४, ५, अभि.
शु.आ.कृ.८, बुध	10 जून	पू.भा.	मु. प्रात: 8/07 तक
शु.आ.कृ.११,शुक्र	12 जून	रे/अश्वि	ल. ३, ४, ५, अभि.
शु.आ.शु.७, गुरु	23 जुला	चित्रा	ल. ५, ७, अभि.
शु.आ.पूर्णि. शुक्र	31 जुला	उ/श्र	ल. ७, अभि.
आश्वि शु. ८, बुध	21 अक्तू	उ.षा.	ल. ९, ११ (चं. दान)
आश्वि शु.१०,शुक्र	23 अक्तू	ध/शत	ल. ९, १०, अभि.
कार्ति. कृ.७,सोम	2 नवं.	पुर्न	ल. १०, अभि.
कार्ति.कृ.१०,शुक्र	6 नवं.	पू.फा.	मुहूर्त्त 11/05 बाद, अभि.
कार्ति. शु. ७, बुध	18 नवं.	श्रव.	ल. ९, ११
मार्ग. कृ.१, गुरु	26 नवं.	रोहि.	ल. ९, १०, ११
मार्ग. कृ. २, शुक्र	27 नवं.	मृग	ल. १०, ११, अभि.
मार्ग. कृ. ५, चंद्र	30 नवं.	पुष्य	ल. १०, ११, अभि.
मार्ग. कृ. ८, गुरु	3 दिसं	पू.फा.	मुहूर्त्त प्रात: 8/00 के बाद
मार्ग. शु. २, रवि	13 दिसं.	पू.षा.	ल. ९, १०
मार्ग. शु. ३, चंद्र	14 दिसं.	उ.षा.	ल. ९, ११, अभि.
(सन् 2016 ई० में)			
पौष शु. ११, बुध	20 जन.	रोहि.	ल. ११, १
माघ कृ. १, रवि	24 जन.	पुष्य	ल. ११, १, अभिजित
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	ल. १ (चं. दा.), २, अभि.
माघ कृ. ८, चंद्र	1 फर.	स्वा.	ल. १२, १, अभिजित
माघ कृ. १०, बुध	3 फर.	अनु.	ल. १२, १
माघ शु. २, बुध	10 फर.	शत	ल. १२, १
माघ शु. ३, गुरु	11 फर.	पू/उभा	ल. १२, १ (मु. दोप. 12/03 तक)
माघ शु. १०, बुध	17 फर.	मृग.	ल. १२, १
माघ शु. १२,शुक्र	19 फर.	पुर्न	ल. १२, १, २, अभि.
फागु. कृ. २, बुध	24 फर.	पू/उफा	ल. १२, २
फागु. कृ. १२,रवि	6 मार्च	श्रव.	ल. १२, १, २, अभि.
फागु. शु. २, गुरु	10 मार्च	उ.भा.	ल. १, २, अभिजित

वाहन आदि क्रय मुहूर्त्त-सन् 2015 ई.

आगे लिखे मुहूर्त्त कार, स्कूटर, साईकल, ट्रक आदि का क्रय करने के अतिरिक्त कम्प्यूटर, रेफ्रिजरेटर, जनरेटर, टैलीविजन, ज़मीन-जायदाद, बहुमूल्य आभूषण, वस्त्रादि की खरीद करने में समान रूप में उपयोगी होंगे। शनिवार वाला दिन तभी ग्रहण करें, यदि कुण्डली में शनि शुभ या योगकारक हो। वाहनादि से पूर्ण लाभ प्राप्ति एवं सुरक्षा हेतु अपने पण्डित या पुरोहित जी द्वारा वाहन पर मन्त्रपूर्वक स्वास्तिक चिन्ह रचना, श्री गणेश अम्बिका पूजन एवं हनुमान पूजा एवं कवच व स्तोत्र पाठ करवाना शुभ होगा। पूजनोपरान्त पण्डित जी को यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए। वाहन क्रय करने वाले व्यक्ति का चंद्रमा भी चतुर्थ, अष्टम या बारहवें नहीं होना चाहिए।

—निवेदक पं. विवेक शर्मा ज्यो.

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शु. ७, चंद्र	26 जन.	रेवती	ल. १, २, ३, अभि.
फागु. कृ. १, बुध	4 फर.	श्ले.	ल. १, २
फा.कृ.२/३,शुक्र	6 फर.	पू.फा.	ल. १, २, अभि.
फा. कृ. ७, बुध	11 फर.	स्वा.	ल. १, २
फा. कृ. ११, रवि	15 फर.	मूल	ल. १, २, ३, अभि.
फागु. शु. २, शुक्र	20 फर.	पू.भा.	ल. १, २, ३, अभि.
फागु. शु. ५, चंद्र	23 फर.	अश्वि	ल. २, ३, अभिजित
चैत्र कृ. ३, रवि	8 मार्च	हस्त	ल. २, ३, ४, अभि.
चैत्र शु. १, शनि	21 मार्च	उ./रेव	ल. २, ४, अभि., स्वयं सिद्ध
वैशा. कृ. ११,बुध	15 अप्रै.	शत.	ल. २, ३
वैशा. कृ. १२,गुरु	16 अप्रै.	पूभा	मुहू. प्रात: 10/09 तक
वैशा. शु. ५, गुरु	23 अप्रै.	मृग	मुहू. प्रात: 11/17 तक
वैशा. शु. ७, शनि	25 अप्रै.	पुर्न	ल. २, ३
वैशा. शु. ११,बुध	29अप्रै.	पू.फा.	ल. २, ३ (मु. दोप. 12/25 तक)
वैशा. शु. १२,गुरु	30 अप्रै.	उ.फा.	ल. २, ३, ४, अभि.
वैशा. पूर्णि., रवि	3 मई	चि/स्वा	ल. ३, ४, अभि.
ज्ये.कृ.४/५, गुरु	8 मई	मूल	मुहू. प्रात: 9/12 बाद
ज्ये. कृ. ८, चंद्र	11 मई	श्र/ध	ल. ३, ४, ५, अभि.
ज्ये. शु. २, बुध	20 मई	मृग	ल. ४, ५
ज्ये. शु. ५, शुक्र	22 मई	पुर्न	मुहूर्त्त 5/36 बाद, ल. ४, ५
ज्ये. शु. ५, शनि	23 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभि.
ज्ये. शु. ६, रवि	24 मई	अश्ले	ल. ३, ५, अभि.
ज्ये. शु. १०, गुरु	28 मई	उ.फा.	ल. ३, ४, ५ (11/26 तक)
ज्ये. शु. १३, रवि	31 मई	स्वा.	ल. ३, ४, ५
शु.आ.कृ.५, रवि	7 जून	श्रव.	ल. ३, ४, अभि.
शु.आ.कृ.११,शुक्र	12 जून	रेव/अ	ल. ३, ४, अभि.
शु.आ.शु. २, शनि	18 जुला	अश्ले	ल. ५, ७, अभि.
शु.आ.शु. ७, गुरु	23 जुला	चित्रा	मुहूर्त्त 6/17 बाद
शु.आ.शु. ८, शुक्र	24 जुला	चि/स्वा	ल. ५, ७, अभि.
शु.आ. पूर्णि.,शुक्र	31 जुला	उ/श्र	ल. ५, ७, अभि.
आश्वि शु. २, बुध	14 अक्तू	स्वा.	ल. ९, १०
आश्वि शु. ६, चंद्र	19 अक्तू	मूल	ल. ९, १०, ११, अभि.
आश्वि शु. ८, बुध	21 अक्तू	उ.षा.	ल. ९, १०, ११
आश्वि शु.१०,शुक्र	23 अक्तू	धनि	ल. ९, १०, ११
कार्ति कृ.५, शनि	31 अक्तू	मृग	ल. १०, अभि.
कार्ति. कृ. ७, चंद्र	2 नवं.	पुर्न	ल. ९, १०
कार्ति.कृ.१०,शुक्र	6 नवं.	पू.फा.	ल. ९, अभिजित

श्रावण मास में

शिवभक्ति का प्रतीक काँवड़ी जलाभिषेक मुहूर्त्त-2015 ई.

गोमुख, श्रीकेदारनाथ, श्रीअमरनाथ, श्री हरिद्वार, नीलकण्ठ एवं गंगादि तीर्थों से श्री गंगाजल के कलश भरकर भगवान श्री शिव की प्रसन्नता हेतु **आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान श्री शिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, विग्रहों, स्वरूपों एवं ज्योतिर्लिङ्गों** तथा क्षेत्रीय **मन्दिरों** में शिवभक्त काँवड़ियों द्वारा श्रद्धारूपी श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है।

स्कन्दपुराणानुसार श्रावण मास में नियमपूर्वक नक्त व्रत करें और महीने भर प्रतिदिन रूद्राभिषेक करें।

कुर्यात् नक्त व्रतं योगिन् श्रावणे नियतो नरः। रूद्राभिषेकं कुर्वीत मासमात्रं दिने दिने।।

कुछ लोगों का भ्रम है **कि श्रावण-भादों मास में नदियां रजस्वलारूप हो जाने से उनका जल पवित्र नहीं होता। परन्तु स्कन्दपुराण में स्पष्ट लिखा है कि सिन्धु, सृती, चन्द्रभागा, गंगा, सरयू, नर्मदा, यमुना, प्लक्षजाला, सरस्वती-ये सभी नंदसंज्ञा वाली नदियाँ-ये रजोदोष से युक्त नहीं होती हैं।-ये सभी अवस्थाओं में निर्मल रहती हैं।**

श्री गंगादि तीर्थों से जल लाने एवं भगवान् शिवपूजन एवं शिवलिङ्ग को जलांजली अभिषेक करने की शुभ एवं पुण्य तारीखें-

पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें	पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें
आषा. पूर्णिमा (9/53 तक)	शुक्र	उ.षा.	31 जुलाई	श्रावण शु. ५/६	गुरू	चित्रा	20 अग.
श्रावण कृ. १ (7/41 तक)	शनि	श्रवण	1 अगस्त	श्रावण शु. ६	शुक्र	स्वाती	21 अग.
श्रावण कृ. ७	गुरू	अश्विनी	6 अगस्त	श्रावण शु. ११	बुध	पू.षा.	26 अग.
श्रावण कृ. ११	चंद्र	मृग	10 अगस्त	श्रावण शु.१३(9/32 बाद)	गुरू	उ.षा.	27 अग.
श्रावण कृ. १२/१३	मंग.	आर्द्रा	11 अगस्त	श्रावण शु. १३/१४	शुक्र	श्रवण	28 अग.
श्रावण कृ. १४	गुरु	पुष्य	13 अगस्त	श्रावण पूर्णिमा	शनि	धनिष्ठा	29 अग.
श्रावण शु. ५	बुध	हस्त	19 अगस्त	---------	--	----	-----

विशेष-श्रावण मास में **गुरू 12 अग. से 7 सितं.** तथा **शुक्र 5 अग. से 20 अग.** के मध्य अस्त रहेंगे। परन्तु दोनों ग्रह अस्त होने के बावजूद नित्य कर्म एवं रूद्राभिषेक के लिए गंगाजल आदि ग्रहण करना शुभ होगा। गुरू-शुक्रादि ग्रहों के अस्त का विचार नहीं किया जाता।

अभिषेक हेतु जलामृत लिवाने की यात्रा में शुभ दिन विचार

काँवडियां शुभयात्रा हेतु जाने से पूर्व चन्द्रमा का सम्मुख व दाएँ आदि दिशा वास जानकर शुभ यात्रा आरम्भ करें तो कल्याणकारी होगा। **उदाहरणार्थ**-जिस दिशा की ओर जाना हो उस राशि से सम्बन्धित दिशा सम्मुख अर्थात् कल्याणकारी कहलाएगी। उससे दाहिनी ओर की दिशा में पड़ने वाली चन्द्र राशि एवं उसकी दिशा भी शुभ एवं लाभकारी होगी। जबकि बाईं ओर पड़ने वाली एवं दिशा कष्टकारी एवं अशुभ होगी।

चन्द्रराशि अनुसार यात्रा में दिशा की शुभाशुभ विचार

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
द्वादश राशियां	मेष, सिंह, धनु	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	वृष, कन्या, मकर।

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना में उपयोगी

-शिववास चक्र-

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्रविहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है-उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना। उदाहरण-मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

शिववास चक्र

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ-लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(शून्य)	श्मशान	नेष्ट फल

गृहारम्भ के मुहूर्त्त शोधन में

-वृष वास्तु-चक्र विचार-

बैल के अंग	शिर	अगले पाद (पांव)	पृष्ठपाद (पिछले पांव)	पृष्ठ (पीठ)	दक्ष कुक्षि (दाईं कोख)	पुच्छ (पूँछ)	वाम कुक्षि (बाईं कोख)	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि-भय	शून्य (०)	स्थिरता शान्तिप्रद	श्रीलक्ष्मी प्राप्ति	लाभ-प्रद	स्वामी कष्टकारी	दारिद्रय	सदा पीड़ा व कष्ट

गत पृष्ठों में दिए गए गृहारम्भ के मुहूर्तों में से मास शुद्धि, ग्रह-बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त्त का दिन बदल लेना चाहिए।

उदाहरण-जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि-कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

निष्कर्षत:-गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, **योग–नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा **लग्न** को **आत्मा** माना गया है। यथा—

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योतिर्निबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

× ×
चंद्र विवाह सभी पाप ग्रह
शनि
शुक्र
× ×
राहु
मंगल
× ×
सभी ग्रह [चं.-गु.] (परिहार)
× ×
लग्नेश शुक्र, चंद्र
चं. मं. लग्नेश शुभ ग्रह

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें **मंगल**, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं— **लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।**
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी**, **केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष—लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्युतुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार—कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार—नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे—वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है—

"अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः॥" (पियूषधारा)

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतंबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तंड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद—नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त्त चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **"चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु**, **शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने

पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। --ज्योतिर्निबन्ध

युतिदोष परिहार--पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है। यथा--

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) दग्धा तिथि परिहार--विवाह लग्न समय केन्द्र--त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।--मु० गणपति

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त लगाए गए हैं।

कश्यपर्वि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरु र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र--शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार--सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा--

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो--दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) पीयूषधारानुसार--दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा--भद्र दायिनी॥

(iii) "दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा स्वर्ग लोक में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में--अर्थात् **सम्मुख रहती है**। जब भद्रा **भू--लोक में (सम्मुख)** रहती है, **अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है--

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा --(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू--लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा--मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **वृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से**, दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **वृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **वृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल--शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त में शुद्ध विवाह--लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल--जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने--अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ --मुहूर्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। **ज्योतिनिर्बन्धानुसार–**

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध-अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) **का समय गोधूलि काल है।**

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५-१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम्॥ –नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

––क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन––

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

––तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता–(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैर्ऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, वायव्य (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिग्गीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा **"एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च।**
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत् योगिनी पूर्वम्॥।"–(पीयूषधारा)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.– इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष-ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। "आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥"

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढ्या धनाढ्या च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये।
जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं **(मु. मार्तण्ड)**। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। **(नारद)**, परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें **(वसिष्ठ)** तथा जिस वर को अपनी कन्या देवें, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे **(नारदः)**।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है **(वृन्दमनुः)**। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे **(शार्गंधर)** जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करें। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे–

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है–

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

विवाह में सम-विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। –अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है–

अब्देषु युग्मेषु च कन्याकानां स्वजन्म वर्षात् शुभदो विवाहः।
अयुग्म वर्षेषु शुभो नराणां विपर्यये दुःखगद प्रदःस्यात्॥ (ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

कन्या वरण मुहूर्त्त–

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्ठान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

आवश्यक मुहूर्त विचार

नोट–सभी मुहूर्तों में अधिक मास, पितृ पक्ष, रिक्ता तिथि (४, ९, १४), वैधृति आदि दुष्ट योगों एवं गुरु/शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥ व पूर्णिमा	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में तथा चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत और रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. आषाढ़ तक) ५वें या ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा–तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (मास तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३(शुक्ल),१५ तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा–३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी आरम्भ करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव–रेव।
स्कूटर, कारादि गाड़ी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में। तथा द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में।	अश्वि, उत्तरा–३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा–३, पूर्वा–३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु. धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.) १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भाद्र., मार्ग., माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा (३), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (५,७,९,१५,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्टे।
नए घर में प्रवेश करना	१(कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, कार्ति., मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, वार–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आषाढ़, श्रावण, भाद्र. आश्वि, मार्ग, माघ और फागु.।	अश्वि, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मूल, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१(कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. श. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रवण, धनि., रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूल, धनि., रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु, शनि	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूल, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८,१०,१३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा–३, ज्ये., मूल, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृ)२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३(शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ),२, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोर्टस Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त

मास–वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार–सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र–अश्वि., रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न–शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें ग्रहाभाव।

विशेष–आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

–मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद–(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है–

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहारस्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा–

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता–

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥–फलित संग्रह **अन्येऽपि–**

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष का प्रभाव क्षीण होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता। यथोक्तम्–

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ **–मुहूर्त्त पारिजात**

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

''द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते'' **–मुहूर्त्त चिंतामणि**

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता–

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ **–मुहूर्त्त दीपक**

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता–

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥ **–मुहूर्त्त दीपक**

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता–

''केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥'' **–मुहूर्त्त चिंतामणि**

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता–

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ **–मु. चिंतामणि**

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है। 'मुहूर्त्त दीपक' नामक ग्रन्थानुसार–

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

विवेचन–उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (''लग्ने व्यये पाताले–'') के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे–विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा–

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ –मु. संग्रह दर्पण

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। मिलान करते समय केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जैसे–चलित भाव कुण्डली, सप्तमेश की उच्च-नीच स्थिति, सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि आदि तत्त्वों का सम्यक विचार किसी विद्वान ज्योतिषी जी से करवाना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव, ऋषि एवं पितृ आदि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त कर सकता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे-सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वास्थ्य (शरीर) और आयु-इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट योगों तथा वर्ग, स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में-विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। मंगलीक दोष का विशेष विवरण इसी पंचाँग के गत पृष्ठ पर दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :-

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** -ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६ होता है।** इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार–४, ८, १२ राशियों का **ब्राह्मण**, १, ५, ९ का **क्षत्रिय**, २, ६, १० **वैश्य** तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार–यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार–सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। **समान वश्य होने पर २ गुण**, एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार–कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार–अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे-गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[**नोट**–योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण–वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री–ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का ऐक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार–वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा-

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —बृहज्जयोतिः सार

अपवाद–वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा-

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार–अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण**, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण**, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूल, धनि. और शत. का **राक्षसगण।**

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम**, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन–वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

कन्या	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गण दोष परिहार–

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग–मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता।

–पीयूषधारा

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती।

–मुहूर्त्त मार्त्तण्ड

(७) भकूट विचार–इसे **राशिकूट** भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार–(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा–१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा **राशि स्वामी ग्रह समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा–

न वर्गवर्णौ न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ —बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार–

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है–

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

–बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर–ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ –शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार–

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पतिप्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **–मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे–वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया– **मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।**
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ **–ज्योतिनिबन्ध**

(८) नाड़ी दोष विचार–अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है–आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। —बृहज्योतिषसार

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार-

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार–

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है–

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्यओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता-अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ –मुहूर्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा–

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है– **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है–

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥

***नोट**–ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा दूसरे एवं तीसरे पाद में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) **'नरपतिजचर्या'** अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है।

आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन यादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्प दोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद-इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ –ज्यो० चिन्तामणि

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार–

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है–

अन्यत्र भी लिखा है-श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त–

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-देष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा–

हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८॥ 1236	२१॥ 1,2,3	२२॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३॥ 3,8	३१॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३॥ 14567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४॥ 1238	१८ 1358	२६॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१॥ 3	२३॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८॥ 8,9व	२६ 9,व	२१॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६॥ 1236	२० 1356	२०॥ 1356	२१ 1356	२५॥ 3,6	२६॥ 3,6	२३॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६॥ 3,6	१७॥ 2,3,6	१७॥ 2,3,6	१८॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२॥ 3468	१०॥ 3568	२४॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९॥ 1,2,8	२४॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९॥ 456व	१५ 3458	२४॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१॥ 3,4	१९॥ 2,4,5	१२ 2358	१४॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८॥ 3,व	३१॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९॥ 3,5,8	२७॥ 3,5	२१॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२०॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९॥ 3,4व	२१॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३॥ 3,5,6	२०॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९॥ 1,3	२५॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९॥ 3,6	१६॥ 1246	२०॥ 1234	१५॥ 1238	१८ 1358	१९॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३०॥ 1,3	२१॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११॥ 12358	१८॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५॥ 1238	२३॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५॥ 1246	१८॥ 1236	२१॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६॥ 8,9,व	१७॥ 158व	९॥ 1568व	१७॥ 156व	२१॥ 146व	२२॥ 136व	२१ 1346व	१६॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६॥ 1236	२१॥ 123व
	पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३॥ 145व	१५॥ 1458	२० 148व	२८॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२॥ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	१६॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७॥ 1268
	उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१॥ 1,3,8	१७॥ 2,3,8	२५॥ 2,3	२० 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६॥ 128व	१३॥ 1236
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४॥ 3,9	३१॥ 1,3	२३॥ 1,3,8	२४॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८॥ 236व	२२॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५॥ 1,3,6	२१॥ 356व	१२॥ 3568व	२७ 35,व	२२॥ 2,3,व	८॥ 2368व	१४॥ 2346व	२४॥ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-२)

वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुनं 1,2,3	पुनं 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२॥ 3,4,6	१४ 3468	२८॥ 3,4	२४ 3,7	२०॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	११॥ 3,6,9	२०॥ 3,5,6	२१ 3568	२६॥ 3,5,व	२५॥ 3,5,व	२२॥ 3568	१७॥ 456व	१७॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७॥ 3,4	२१॥ 3	१७॥ 3,6,8	१३ 3678	१५॥ 3,7,8	१६ 4,7	२७ 9	२६॥ 4,9	२८ 9	२१ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५॥ 3,5व	२५॥ 3,5व	२६ 2,3	२७॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२०॥ 3,4,8	१५॥ 3478	१०॥ 3678	१८॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१॥ 4,5,6	१८॥ 3,5,8	१७॥ 358,व	२२॥ 356व	१७॥ 2346	१७॥ 2346	१९ 2346	२७॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४॥ 1478	११॥ 1,4,8	१४॥ 1368	२२॥ 1,3,6	१२॥ 1567	१३ 1567	१३॥ 1567	११॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	१५॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३॥ 136व	२२॥ 146व	१७॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५॥ 1378	२० 1367	२४॥ 1,3,6	२७॥ 1,3,4	२०॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२०॥ 1,5,7	२६॥ 9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२१॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८॥ 1367	२५ 1,3,7	२१॥ 1,3	२२॥ 1,3,6	२२॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५॥ 135678	१०॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	११॥ 1,5,7	१३ 1567	१३॥ 1567	२२ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७॥ 4678	१७॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८॥ 8,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 14567	१८॥ 1457	११ 14578	१८॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३॥ 37,व	१३ 3478	१७॥ 3,6,7	११ 6,9,व	१७॥ 8,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७॥ 1,3,5	२३॥ 37,व	२३॥ 3,7,व	८॥ 678व	८॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२८॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,4,5	२८॥ 4,5	१४॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२२ 1347	२२ 1,3,7	२२॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२२ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६॥ 5678	१८॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४॥ 4,9व	११॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२०॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	११॥ 4,5,7	५॥ 5678	११॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 469व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१०॥ 4568	२६ 3,4,5	३०॥ 3,4	२७ 4,6	११॥ 4,6,8	११ 4689	११ 4,6,9	१८॥ 3469	१३ 4567	४॥ 45678	११॥ 357व	२५॥ 3,5,व	११ 568व	१८॥ 456व	१८ 4,6,7	११ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२॥ 3	२५॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	११ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२२ 5,7,व	२६॥ 3,5,व	२०॥ 356व	११॥ 568व	११॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१॥ 3,4	३१॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७॥ 4,8,9	१८॥ 4,8,9	१३॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	११॥ 5,6,व	२५॥ 4,5व	१६॥ 458व	१५॥ 4,7,8	१५॥ 3478	१७॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४॥ 1248	२२ 1234	१६॥ 1246	११ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८॥ 1458	११ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	११ 4,6,9	१८ 1467	२३॥ 1347	१४॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	११ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७॥ 9	११॥ 8,9	२२॥ 6,9	११ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	११॥ 1456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ४) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-३)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन	
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२॥ 1346	२६॥ 1,3,4	२२॥ 1346	१८॥ 3467	२५॥ 3,7	१४॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२०॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3
मेष	भर 1 से 4	१३॥ 1368	२९ 1,3	२१॥ 1,3,6	१७॥ 3467	१७॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८॥ 8,9	२६ 4,9	२७॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७॥ 2,3,8
मेष	कृति 1 चरण	२७॥ 1,3,4	१५ 1368	१९॥ 1348	१५॥ 3478	१९॥ 3,6,7	२५॥ 3,7	२५ 3,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 6,8,9	१३॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९॥ 1356	१७॥ 2346	१९॥ 2,3,6
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४॥ 1378	२०॥ 3,4,8	२४॥ 3,6	३०॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१०॥ 4689	२४ 3,4,9	२९॥ 1,3,4	३१॥ 1,3	२३॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6
वृष	रोह 1 से 4	१९॥ 1,6,7	१५॥ 1378	९॥ 1678	१५ 1368	२९॥ 3,4	२४ 3,6	१४॥ 3567	१९॥ 3,5,7	११॥ 4578	१६ 4,8,9	१७॥ 4,8,9	२०॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5
वृष	मृग 1-2	१२ 1678	२५॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१॥ 3,5,8	२४॥ 3,6	१५ 3567	१०॥ 3578	१७॥ 3457	२२ 3,4,9	२५॥ 4,9	१३ 4689	१९॥ 1468	२७ 1,4,6	२९॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८॥ 3458	२५ 3,4,5	२०॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१॥ 6,9	२४ 3,9	२५॥ 3,5,व	१७॥ 3,5,8
मिथुन	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२०॥ 4,6,9	१३ 4567	१७॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१८ 467व	१९॥ 4,6,7	१२॥ 689	१७॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६॥ 3,5व
मिथुन	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१७॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८॥ 4,8,9	२८ 5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८॥ 14678	२१ 147व	२१॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८॥ 1567	१०॥ 14578	१६॥ 4,8,9	२६॥ 9
कर्क	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६॥ 1,3,5	२१॥ 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	१७॥ 1367	११॥ 1478	२१॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४॥ 145678	१४ 13567	१८॥ 1457	२४ 4,9	१८॥ 8,9
कर्क	श्ले. 1 से 4	२५॥ 1,3,5	१२ 1568	१७॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२०॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४॥ 1,3,5	११॥ 13568	१६॥ 1358व	२२॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९॥ 6,9व	८॥ 689व	३॥ 15678	४॥ 15678	१८॥ 1,5,7	२४॥ 1,5,व	२५॥ 1,5,व	१८॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7
सिंह	पू.फा. 1 से 4	१०॥ 1568	२५॥ 135व	१८॥ 156व	२४ 3,6व	२३॥ 3,8व	२५॥ 3,6व	२० 6,9व	१७॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८॥ 1,5,7	४॥ 15678	११ 1568	१९॥ 156व	२४॥ 135व	२५ 3,7	१७॥ 3,7,8
सिंह	उ.फा. 1	१७ 13456	२५॥ 1,3,5	१६॥ 13456	२२॥ 3,4,6	३१॥ 3,व	१७॥ 3,6,8	९॥ 3689	२५ 9,व	२५॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११॥ 1567	१७॥ 1356	११ 3568	१५॥ 358व	१६ 3478	२६॥ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६॥ 1246	२५॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७॥ 3,5व	१३॥ 568व	१४ 3568	२९॥ 5	२९॥ 5	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६॥ 1367	१०॥ 3678	१४॥ 1378	१७॥ 3,5,8	२८ 3,5व
कन्या	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६॥ 1,2,3	१८॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८॥ 34678	१३॥ 1378	१६॥ 3458	२६॥ 3,5व
कन्या	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६॥ 1,2,3	२८॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६॥ 1467	१९॥ 3456	१० 34568

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-४)

कन्या ↓	वर/नक्षत्र →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 3,7,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
वृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12468	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1व236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 126व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२१॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3,4	३१ 3,4	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3,4	२२॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	२९ 4	१९ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्ठक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्टाद्यपादेऽवज्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूल नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकरं १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, दूसरे में मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित सम्पूर्ण 'गण्डमूल नक्षत्र-शान्ति प्रयोग' पुस्तक मंगवा लेवें। मूल्य ६५ रुपए।

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से **''व्रत और त्यौहार''** एवं **सप्तवार कथा** मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य 60 रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''** मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। **आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्॥** अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—**''एहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर''** स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूं, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर **''ॐ नमः शिवाय''** आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे-चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज मंत्र **''ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः''** की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, ह्रदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **''ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः''** बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारणा करना शुभ होता है। **मंगल देवता** का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र **''ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः''** का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे-मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारणा करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरू के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र **''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः''** का यथाशक्ति पाठ करे। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समधि,

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि–यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

"ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः" की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथाशक्ति मात्रा में करें–मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि–यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करे। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा काबल, जौं आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के बीजमंत्र **"ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥"** का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र **"ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः"** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरम्भ न करें। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे. २०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचश्ला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उ.षा.
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर(मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पू.षा.
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूल
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उ.भा.
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पू.भा.
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मिश्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूल	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥ज२	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उ.फा.

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहा:	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समा:	बुध:	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	वृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम–कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषत: त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष–लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषत: त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें गत पृष्ठ 175

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वयं करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है--

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं–

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), **(९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।**

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**–यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला)स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां–१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार–सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र–रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न–लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त पुत्रार्थी विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल–रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा- अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**–यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार–रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल व बुध वारों** में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र–रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**–यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**–रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र–मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूल, श्रवण:

लग्न–१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त–यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां–२, ७, १२

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**–कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)
शुभ वार = चं., बु., गु., शु.

नक्षत्र–अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेधा-जनन संस्कार**–जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोघृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः "ॐ भूस्त्वपि धथामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।" तथा **ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **स्तनपान का मुहूर्त्त**–जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि–१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र–रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **षष्ठी पूजन**–जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी पूजन,

कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞ **प्रसूता स्नान मुहूर्त्त**—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—रवि, मंगल, गुरु, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र—आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞ **नामकरण संस्कार**—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है—

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''

गृहारम्भ—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞ **नामकरण**—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहले निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युञ्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞ **झूला आरोहन मुहूर्त्त**—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞ **निष्क्रमण मुहूर्त्त**—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞ **भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त**—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त—

शुभ तिथियां—१ (कृ) 2,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२,५,८,११ राशि लग्न।

☞ **जीविका परीक्षा**—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞ **अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त**—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

कर्ण वेध का मुहूर्त्त–बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास–चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां–४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार–चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव। विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न–२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष–बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की श्लाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

कन्या की नासिका छेदन–हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं–२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यत: लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्त: एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रात: उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में –वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र. स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयातीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ बर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

क्षौर (हजामत) कर्म मुहूर्त्त–मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हज़ामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुन: ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष–यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभप्रद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रात:काल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग टेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**–चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, **सूर्य-नक्षत्र** से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला–सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अत: इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है-(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रातः ७/३० से प्रातः ९ बजे तक
मंगलवार–अपराह्न ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार–दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार–दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार–प्रातः १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार–प्रातः ९/०० से प्रातः १०/३० बजे तक
रविवार–सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

नींव खोदने के लिए विशेष ज्ञातव्य

(*i*) सूर्य वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) कोण में करें।
(*ii*) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या तुला) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) से करें।
(*iii*) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) से करें।
(*iv*) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गु. या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) से करें।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वी को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वौषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- (विशेष) –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पाव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

एक ही नक्षत्र में जन्म का फल

यदि एक ही परिवार में, एक ही माता-पिता और उनकी सन्तानों में से किन्हीं दो का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो, तो वह अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। यह अनिष्ट दोनों में से किसी एक को होता है। यदि भाई-भाई, भाई-बहन, पिता-पुत्र या माता-पुत्र या माता-पुत्री अथवा पिता-पुत्री का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, तो वह मृत्यु-तुल्य कष्टदायक होता है। इसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिए।

वसिष्ठ जी के अनुसार—

पिगोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा।
जन्मर्क्षांशे च तल्लग्ने जातः सद्योमृतिप्रदः।

एक नक्षत्र जनन की शान्ति संक्षिप्त रूप से इस प्रकार से वर्णित की गई है-अग्नि (हवनकुण्ड) के ईशानकोण में कलश के ऊपर जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के देवता के स्वरूप की नक्षत्र प्रतिमा बनवाकर स्थापित करें। उस नक्षत्र के मन्त्र से कलश के ऊपर उस नक्षत्र की पूजा करनी चाहिए। कलश को दो लाल रंग के वस्त्रों से लपेट देना चाहिए। फिर वैदिक पद्धति के अनुसार समिधा द्वारा होम आदि विधान करना चाहिए। प्रत्येक समिधा को घी में डुबोकर हवन करना चाहिए।

इस प्रकार प्रायश्चित होम करने के बाद जातक और उसके माता-पिता का अभिषेक भी आचार्य को करना चाहिए। कर्म समाप्ति के बाद यजमान (पूजा कराने वाला जातक) आचार्य पण्डित जी को भोजन, गोदान, वस्त्र दक्षिणा आदि से सम्मानित करें।

—त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति—

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, **क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं**, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करें। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 11 अप्रै., 2015 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/04 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/09) से 5 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 5 मिनट के घटी पल 13 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता।** इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

11 अप्रैल, 2015 ई. को जालन्धर का पंचांग	**11 अप्रैल, 2015 ई. को दिल्ली का पंचांग**
घटी पल	**घटी पल**
तिथि – ३९/२३ (समाप्ति काल)	**तिथि – ३९/३६ (समाप्ति काल)**
नक्षत्र – ३/३८	**नक्षत्र – ३/५१**
योग – १६/५५	**योग – १७/०८**

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०७२ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में वैशाख कृष्ण सप्तमी प्रविष्टे २९ चैत्र, तदनुसार 11 अप्रै., 2015 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ५० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२७°/०३'/१२" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २७° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें २/१९ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/५० में जमा कर देने से कुल जोड़ २३/०९ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/०९ सिंह (४) राशि के सामने और २ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २३/०९ से केवल ३ पल अधिक है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ३ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। जैसे यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो ३ पल के पीछे १५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/५० घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, १ अंश, ४५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/०१°/४५'/००")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'ज्योतिष तत्त्व'** का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।५० **लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)** **चरखण्ड १५१।१२०।५१**

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
मेष	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
वृष	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
मिथुन	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	११
३	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
कर्क	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
सिंह	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
कन्या	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
तुला	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
वृश्चिक	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
धनु	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
मकर	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१०	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
मीन	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° **पलभा ४।७।५५**

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
वृष	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	११	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°   पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५९	३ ६	३ १४	३ २१	३ २९	३ ३७	३ ४४	३ ५२	४ ०	४ ९	४ १८	४ २६	४ ३५	४ ४४	४ ५२	५ १	५ १०	५ १८	५ २७	५ ३५	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५३	७ २	७ १०
१ वृष	७ १०	७ १९	७ २८	७ ३६	७ ४५	७ ५४	८ २	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२	९ २८	९ ३३	९ ४३	९ ५३	१० ४	१० १४	१० २४	१० ३५	१० ४५	१० ५५	११ ५	११ १६	११ २६	११ ३६	११ ४६	११ ५७	१२ ७
२ मिथुन	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३७	१२ ४८	१२ ५८	१३ ९	१३ १९	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २३	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५६	१६ ८	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ ५३	१७ ४	१७ १५	१७ २७	१७ ३८
३ कर्क	१७ ३८	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २३	१८ ३४	१८ ४६	१८ ५७	१९ ८	१९ १९	१९ ३१	१९ ४२	१९ ५३	२० ५	२० १६	२० २७	२० ३९	२० ५०	२१ १	२१ १२	२१ २४	२१ ३५	२१ ४६	२१ ५८	२२ ९	२२ २०	२२ ३२	२२ ४३	२२ ५४	२३ ५	२३ १७
४ सिंह	२३ १७	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३०	२५ ४१	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३६	२६ ४७	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५३	२८ ४	२८ १४	२८ २५	२८ ३६	२८ ४७
५ कन्या	२८ ४७	२८ ५८	२९ ९	२९ २०	२९ ३१	२९ ४२	२९ ५३	३० ४	३० १५	३० २६	३० ३७	३० ४८	३० ५८	३१ ९	३१ २०	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २६	३२ ३७	३२ ४८	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४२	३३ ५३	३४ ४	३४ १५
६ तुला	३४ १५	३४ २६	३४ ३७	३४ ४८	३४ ५९	३५ १०	३५ २०	३५ ३२	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २८	३६ ४०	३६ ५१	३७ २	३७ १४	३७ २५	३७ ३६	३७ ४७	३७ ५९	३८ १०	३८ २१	३८ ३३	३८ ४४	३८ ५५	३९ ७	३९ १८	३९ २९	३९ ४०	३९ ५२
७ वृश्चिक	३९ ५२	४० ३	४० १४	४० २६	४० ३७	४० ४८	४० ५९	४१ ११	४१ २२	४१ ३३	४१ ४५	४१ ५६	४२ ७	४२ १८	४२ ३०	४२ ४१	४२ ५२	४३ ३	४३ १५	४३ २६	४३ ३७	४३ ४९	४४ ००	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १९	४५ ३०
८ धनु	४५ ३०	४५ ४१	४५ ५२	४६ ४	४६ १५	४६ २६	४६ ३८	४६ ४९	४६ ५९	४७ ९	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ १	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४२	४८ ५२	४९ २	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५४	५० ४	५० १४	५० २४	५० ३५	५० ४५
९ मकर	५० ४५	५० ५५	५१ ५	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५७	५२ ५	५२ १४	५२ २३	५२ ३१	५२ ४०	४२ ४९	५२ ५७	५३ ६	५३ १४	५३ २३	५३ ३२	५३ ४०	५३ ४९	५३ ५८	५४ ६	५४ १५	५४ २४	५४ ३२	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५८	५५ ७	५५ १५
१० कुम्भ	५५ १५	५५ २४	५५ ३३	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ७	५६ १६	५६ २३	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४६	५६ ५४	५७ १	५७ ९	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४७	५७ ५५	५८ २	५८ १०	५८ १७	५८ २५	५८ ३३	४८ ४१	५८ ४७	५८ ५५	५९ ३	५९ ११
११ मीन	५९ ११	५९ १८	५९ २६	५९ ३३	५९ ४१	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १९	० २७	० ३४	० ४२	० ४९	० ५७	१ ५	१ १२	१ २०	१ २७	१ ३५	१ ४३	१ ५०	१ ५८	२ ५	२ १३	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५१	२ ५९

अक्षांश २७°   पलभा ६।६।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ६	४ १४	४ २२	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५६	५ ४	५ १२	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ ११	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५२
१ वृष	६ ५२	७ १	७ ९	७ १७	७ २६	७ ३४	७ ४२	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१	९ १	९ ११	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३२	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १३	११ २३	११ ३३	११ ४३
२ मिथुन	११ ४३	११ ५३	१२ ३	१२ १३	१२ २३	१२ ३३	१२ ४४	१२ ५४	१३ ५	१३ १६	१३ २८	१३ ३९	१३ ५१	१४ २	१४ १४	१४ २५	१४ ३६	१४ ४८	१४ ५९	१५ ११	१५ २२	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५७	१६ ८	१६ १९	१६ ३१	१६ ४२	१६ ५४	१७ ५	१७ १७
३ कर्क	१७ १७	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ००	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४६	१९ ५८	२० ९	२० २१	२० ३३	२० ४४	२० ५६	२१ ७	२१ १९	२१ ३१	२१ ४२	२१ ५४	२२ ५	२२ १७	२२ २९	२२ ४०	२२ ५२	२३ ३
४ सिंह	२३ ३	२३ १५	२३ २७	२३ ३८	२३ ५०	२४ १	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५९	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४४	२५ ५५	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४०	२६ ५२	२७ ३	२७ १४	२७ २५	२७ ३७	२७ ४८	२७ ५९	२८ ११	२८ २२	२८ ३३	२८ ४५
५ कन्या	२८ ४५	२८ ५६	२९ ७	२९ १८	२९ ३०	२९ ४१	२९ ५२	३० ०४	३० १५	३० २६	३० ३८	३० ४९	३१ ००	३१ ११	३१ २३	३१ ३४	३१ ४५	३१ ५७	३२ ८	३२ १९	३२ ३१	३२ ४२	३२ ५३	३३ ४	३३ १६	३३ २७	३३ ३८	३३ ५०	३४ १	३४ १२	३४ २४
६ तुला	३४ २४	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५७	३५ ९	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २९	३६ ४१	३६ ५२	३७ ०४	३७ १५	३७ २७	३७ ३९	३७ ५०	३८ २	३८ १३	३८ २५	३८ ३७	३८ ४८	३९ ००	३९ ११	३९ २३	३९ ३५	३९ ४६	३९ ५८	४० ०९
७ वृश्चिक	४० ९	४० २१	४० ३३	४० ४४	४० ५६	४१ ७	४१ १९	४१ ३१	४१ ४२	४१ ५३	४२ ५	४२ १६	४२ २८	४२ ३९	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २५	४३ ३६	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ०८	४५ १९	४५ ३१	४५ ४२	४५ ५४
८ धनु	४५ ५४	४६ ५	४६ १६	४६ २८	४६ ३९	४६ ५१	४७ २	४७ १४	४७ २४	४७ ३४	४७ ४४	४७ ५४	४८ ४	४८ १४	४८ २४	४८ ३४	४८ ४५	४८ ५५	४९ ५	४९ १५	४९ २५	४९ ३६	४९ ४५	४९ ५५	५० ५	५० १५	५० २६	५० ३६	५० ४६	५० ५६	५१ ०६
९ मकर	५१ ६	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५६	५२ ०७	५२ १७	५२ २५	५२ ३३	५२ ४२	५२ ५०	५२ ५८	५३ ७	५३ १५	५३ २३	४३ ३२	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ५	५४ १३	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४७	५४ ५५	५५ ३	५५ १२	५५ २०	५५ २८
१० कुम्भ	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ २	५६ १०	५६ १८	५६ २७	५६ ३४	५६ ४१	५६ ४८	५६ ५६	५७ ०३	५७ १०	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५३	५८ १	५८ ८	५८ १५	५८ २२	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५९	५९ ६	५९ १३
११ मीन	५९ १३	५९ २०	५९ २७	५९ ३५	५९ ४२	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १८	० २५	० ३३	० ४०	० ४७	० ५४	१ १	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३०	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ७	२ १४	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५०

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) पलभा ७/४८/३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

लग्न सारिणी (अक्षांश–२८°)

(अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनू, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३९	४७	५५	०३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१६	२४	३३	४०
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४९	५७	०५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३९	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०३	१५	२६	३८	४९	०१
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२८	३९	५१	०३	१४	२६	३८	४९
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	०९	२०	३१	४३	५४	०५	२०	२८	४०	५१	०२	१४
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	५०	०१
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१२	२४	३५	४७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१८	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०	१९	२९	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	२९	३७	४५	५४	०२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	०८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	०६	१४	२२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३१	३९	४७	५६	०४	१२	२०	२९	३६	४३	५०	५८	०४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	०६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१३	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४७	५४	०१	०८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी (अक्षांश– ३२°)

(अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
	प.	४०	४७	५३	०	०७	१४	२१	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
	प.	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	२९	४१
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	५२	०४	१६	२७	३९	५०	०३	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१८	३०	४२	५४	०६	१८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३०	४०	५०	०	१०	१९	२९	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	०८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	०२	०९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३७	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३७	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३२	३९	४५	५२	०	६	१२	१९	२६	३३

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४

अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१२ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।**—**लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २० ।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (० ।१२ ।७) द्वारा प्राप्तांक ४ ।९ है, और लग्न स्पष्ट ४ । १० ।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४ ।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १ ।८ ।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त** हो जाती हैं। —पं० विवेक शर्मा ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	वर्ग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
भाग		०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि रा. षट्		२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८॥	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २६	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४२	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
० मे.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिं.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कं.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	वर्ग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८॥	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २६	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४२	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
६ तु.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	सं	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	सं	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ ध.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सं	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सं	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुं.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सं	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	सं	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें। स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आधांप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश ; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (विहा.) = बिहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू–काश्मीर।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अण्डेमान एवं निकोबार			
पोर्टब्लेअर	11 40	92 45	+41 00
अरुणांचल प्रदेश			
ईटानगर	27 08	93 37	+44 28
तवांग	27 33	91 48	+37 12
आंध्रा प्रदेश			
अनन्तपुर	14 41	77 36	–19 36
Cuddapah	14 28	78 49	–14 44
Guntur	16 18	80 27	–08 12
Kurnool	15 50	78 03	–17 48
Vizianagaram	18 07	83 25	+03 40
विजयवाड़ा	16 31	80 39	–07 24
विशाखापट्टनम्	17 42	83 18	+03 12
गोलकुण्डा(आं. प्र.)	17 24	78 23	–16 28
तिरुपति(आंध्र.)	13 40	79 24	–12 24
आसाम			
उ.लखीमपुर	27 14	94 07	+46 28
गुवाहाटी	26 11	91 44	+36 56
जोरहाट	26 45	94 13	+46 52
तेजपुर	26 38	92 49	+41 16
डिब्रूगढ़	27 29	94 54	+49 36
डिगबोई	27 23	95 38	+52 32
लखीमपुर	27 14	94 15	+47 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उड़ीसा			
कटक	20 30	85 50	+13 20
बालासोर	21 30	86 56	+17 44
बहरामपुर	19 21	84 51	+09 24
भुवनेश्वर	20 14	85 50	+13 20
उत्तरप्रदेश			
अलीगढ़	27 53	78 05	–17 40
अमरोहा	28 55	78 28	–16 08
अमेठी	26 08	81 50	–02 40
अयोध्या	26 48	82 14	–01 04
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा	27 11	77 46	–18 56
अम्बाह	26 44	78 15	–17 00
अतरौली	28 00	78 16	–16 48
अफज़लगढ़	29 23	78 41	–15 16
अल्लापुर	27 52	79 19	–12 44
अलीगंज	27 30	79 11	–13 16
आगरा	27 11	78 01	–17 56
इलाहाबाद	25 28	81 54	–02 24
इटावा	26 46	79 02	–13 52
इटवा	27 20	82 42	+00 48
ईसानगर	27 54	81 14	–05 04
उझानी	28 00	79 02	–13 52
उतरौला	27 19	82 25	–00 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उन्नाव	26 33	80 31	–07 56
उरई	25 58	79 27	–12 12
उस्का	27 08	83 12	+02 48
एटा	27 38	78 40	–15 20
ऐत	25 56	79 12	–13 12
औरैया	26 26	79 32	–11 52
औरंगाबाद	24 44	84 22	+07 28
कटारनियां घाट	28 22	81 10	–05 20
कदौरा	26 00	79 50	–10 40
कन्नौज	27 03	79 58	–10 08
कमसिन	25 32	80 56	–06 16
करहल	27 02	78 58	–14 08
कर्वी	25 12	80 54	–06 24
कसिया	26 44	83 56	+05 44
कानपुर	**26 28**	**80 22**	**–08 32**
कांठ	29 01	78 38	–15 28
कादीपुर	26 11	82 24	–00 24
कान्धला	29 20	77 15	–21 00
काम्पिल	27 36	79 16	–12 56
काल्पी	26 06	79 44	–11 04
कासगंज	27 50	78 40	–15 20
कुञ्छा	28 06	84 21	+07 24
कुण्डा	25 43	81 30	–04 00
कुराओं	25 00	82 05	–01 40
कुरौली	27 25	79 00	–14 00
कुलपहाड़	25 20	79 40	–11 20
कूँच	26 00	79 08	–13 28

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कैसरगंज	27 20	81 34	–03 44
कैप्टनगंज	26 56	83 43	+04 52
कैमगंज	27 35	79 20	–12 40
कोरा	26 06	80 27	–08 12
कोरियालाघाट	28 20	81 04	–05 44
कोसी	27 50	77 26	–20 16
कौपागंज	26 00	83 34	+04 16
खतौली	29 18	77 43	–19 08
खागा	25 48	81 07	–05 32
खिलचीपुर	24 00	76 34	–23 44
खुर्जा	28 15	77 50	–18 40
खेड़ी	27 55	80 49	–06 44
खैर	27 57	77 50	–18 40
खैरागढ़	26 58	77 53	–18 28
खैराबाद	27 31	80 45	–07 00
गंगोह (सहार.)	29 45	77 16	–20 56
गढ़मुक्तेश्वर	28 49	77 05	–17 40
गरौठा	25 35	79 19	–12 44
गाज़ियाबाद	28 40	77 26	–20 16
गाजीपुर	25 34	83 35	+04 20
गुरसराए	25 38	79 12	–13 12
गुन्नौर	28 15	78 27	–16 12
गुलावठी	28 37	77 48	–18 48
गोण्डा	27 08	82 01	–01 56
गोरखपुर	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ	28 06	80 30	–08 00
गोवर्धन	27 32	77 28	–20 08

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चकला	25 02	83 12	+02 48
चकिया	26 26	85 02	+10 08
चन्दौसी	28 28	78 48	—14 48
चरखाड़ी	25 25	79 46	—10 56
चित्रकूटधाम	25 12	80 52	—06 32
चिरगांव	25 36	78 50	—14 40
चुनार	25 10	82 56	+01 44
चोपां	24 30	83 00	+02 00
छतरपुर	24 56	79 38	—11 28
छपरा	24 39	76 48	—22 48
छाटा	27 45	77 30	—20 00
छितौनी	27 10	83 58	+05 52
जगदीशपुर	25 30	84 26	+07 44
जपिया	24 34	84 00	+06 00
जलालाबाद	27 44	79 40	—11 20
जलेसर	27 29	78 20	—16 36
जसरा	25 17	81 48	—02 48
जसराना	27 15	78 42	—15 12
जसवन्तनगर	26 52	78 56	—14 16
जहांगीराबाद	28 26	78 06	—17 36
जहानाबाद	25 12	84 58	+09 52
जाईस	26 16	81 30	—04 00
जानसठ (मु.)	29 20	77 52	—18 32
जालौन	26 10	79 20	—12 40
जिगनी	25 46	79 26	—12 16
जौनपुर	25 45	82 40	+00 40
झाँसी	25 27	78 37	—15 32
टप्पल	28 04	77 36	—19 36
टाण्डा	28 56	78 59	—14 04
टूण्डला	27 10	78 15	—17 00
ठाकुरद्वारा	29 10	78 50	—14 40
डिबाई	28 12	78 16	—16 56

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
डेरापुर	26 28	79 48	—10 48
ताजपुर	29 08	78 30	—16 00
दानापुर	25 40	85 02	+10 08
दालमऊ	26 02	81 02	—05 52
दूधी	24 13	83 15	+03 00
देवगांव	25 24	83 01	+02 04
देवबन्द	29 42	77 41	—19 16
देवरिया	26 32	83 45	+05 00
देहरी	24 52	84 11	+06 44
धामपुर	29 19	78 31	—15 56
नगीना	29 27	78 27	—16 12
नजीबाबाद	29 38	78 20	—16 40
नरैनी	25 11	80 29	—08 04
नवाबगंज	28 33	79 38	—11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	—01 28
नानपाड़ा	27 52	81 30	—04 00
निहतौर	29 20	78 23	—16 28
नोएडा	28 35	77 20	—20 40
पट्टी	25 55	82 12	—01 12
पदरौना	26 55	83 59	+05 56
पयागपुर	27 25	81 48	02 48
पवायां	28 04	80 06	—09 36
पिलखुआं	28 43	77 39	—19 24
पिहानी	27 38	80 12	—09 12
पीलीभीत	28 38	79 48	—10 48
पुखरायां	26 14	79 51	—10 36
पुरवा	26 28	80 50	—06 40
पूरनपुर	28 31	80 09	—09 24
प्रतापगढ़	25 50	81 59	— 2 04
फतेहपुर	25 56	80 48	—06 48
फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	—19 20
फतेहाबाद	27 01	78 19	—16 44

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फरीदनगर	28 46	77 37	—19 32
फरीदपुर	28 13	79 33	—11 48
फर्रूखाबाद	27 24	79 34	—11 44
फिरोज़ाबाद	27 09	78 25	—16 20
फैज़ाबाद	26 47	82 08	—01 28
बक्सर	25 35	83 59	+05 56
बगहा	27 06	84 05	+06 20
बदायूँ	28 02	79 07	—13 32
बनारस (वाराणसी)	25 20	83 00	+02 00
बबीना	25 15	78 28	—16 08
बहराइच	27 35	81 36	—03 36
बहेड़ी	28 47	79 30	—12 00
बरवासागर	25 23	78 44	—15 04
बलिया	25 45	84 10	+06 40
बरेली	28 21	79 25	—12 20
बलरामपुर	27 26	82 11	—01 16
बस्ती	26 48	82 43	+00 52
बागपत	28 57	77 13	—21 08
बाड़ी	26 39	77 36	—19 36
बान्दा	25 29	80 20	—08 40
बाराबंकी	26 55	81 12	—05 12
बांसी	27 11	82 56	+01 44
बाह	26 53	78 36	—15 36
बिजनौर	29 22	78 08	—17 28
बिलग्राम	27 11	80 02	—09 52
बिलसी	28 08	78 55	—14 20
बिलारी	28 38	78 48	—14 48
बिलासपुर	28 53	79 16	—12 56
बीसलपुर	28 18	79 48	—10 48
बुलन्दशहर	28 24	77 51	—18 36
बुढ़ाना	29 17	77 28	—20 08
भदोही	25 25	82 34	+00 16

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
भरथाना	26 45	79 14	—13 04
भाण्डेर	25 44	78 45	—15 00
भोनगांव	27 15	79 11	—13 16
भोवाली	29 23	79 31	—11 56
मन्दावर	29 30	78 08	—17 28
मऊ	25 17	81 23	—04 28
मऊ-ऐम्मा	25 42	81 55	—02 20
मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12
मऊरानीपुर	25 15	79 08	—13 28
मखदूमनगर	26 28	82 46	+01 04
मछलीशहर	25 41	82 25	—00 20
मथुरा	27 30	77 41	—19 16
मवाना	29 06	77 55	—18 20
मलीहाबाद	26 55	80 43	—07 08
महमूदाबाद	27 18	81 07	—05 32
महरौली	24 35	78 43	—15 08
महाराजगंज	26 07	84 29	+07 56
महाराजगंज	27 09	83 34	+04 16
महोवा	25 17	79 52	—10 32
मिर्ज़ापुर	25 09	82 35	+00 20
मिसरिख	27 27	80 31	—07 56
मुंगराबादशाहपुर	25 40	82 11	—00 16
मुज़फ्फरनगर	29 28	77 41	—19 16
मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28
मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12
मुरादाबाद	28 51	78 49	—14 44
मुरादनगर (गा.)	28 47	77 30	—20 00
मुस्किरा	25 40	79 48	—10 48
मुहम्मदी	27 57	80 13	—09 08
मेरठ	28 59	77 42	—19 12
मेहनगर	25 53	83 07	+02 28
मेहन्दाबाल	26 59	83 07	+02 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मैनपुरी	27 14	79 01	−13 56
मैलानी	28 17	80 21	−08 36
रसरा	25 51	83 51	+05 24
राजाखेड़ा	26 55	78 11	−17 16
राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16
रामनगर	25 17	83 02	+02 08
रायबरेली	26 13	81 14	−05 04
रूदौली	26 45	81 45	−03 00
लखनऊ	26 51	80 55	−06 20
लखीमपुर	27 57	80 46	−06 56
ललितपुर	24 41	78 25	−16 20
शाहजहाँपुर	27 53	79 55	−10 20
शिकोहाबाद	27 06	78 36	−15 36
सम्भल	28 35	78 33	−15 48
सरधना	29 09	77 37	−19 32
सहसवां	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	29 58	77 33	−19 48
सहानीकलां	28 41	77 25	−20 20
सहानीखुर्द	28 42	77 25	−20 20
सिंगरामऊ	25 57	82 23	−00 28
सिधौली	27 17	80 50	−06 40
सिरसागंज	27 03	78 42	−15 12
सीतापुर	27 34	80 41	−07 16
सुल्तानपुर	26 16	82 04	−01 44
सेमरिया	24 16	79 54	−10 24
सैदपुर	25 33	83 11	+02 44
सोनवां	27 40	81 45	−03 00
हमीरपुर	25 57	80 09	−09 24
हरदोई	27 25	80 07	−09 32
हरैया	26 47	82 36	+00 24
हलिया	24 48	82 20	−00 40
हसनपुर	28 43	78 17	−16 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
हाजीपुर	25 41	85 13	+10 52
हाथरस	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	28 43	77 47	−18 52
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28
उत्तराखण्ड			
अल्मोड़ा	29 37	79 40	−11 20
आमपाटा	30 17	78 37	−15 32
आदिब्रद्री	30 10	79 12	−13 12
उत्तरकाशी	30 44	78 27	−16 12
उरवीमठ	30 31	79 07	−13 32
ऋषिकेश	30 07	78 18	−15 12
कर्णप्रयाग	30 15	79 16	−12 56
कपकोट	29 58	79 54	−10 54
काठगोदाम	29 16	79 32	−11 52
काशीपुर	29 13	78 57	−14 12
काण्डी	29 56	78 25	−16 20
केदारनाथ	30 44	79 04	−13 44
केनूर	30 03	79 01	−13 56
कोटद्वार	29 45	78 32	−15 52
खानपुर	29 36	78 07	−17 32
खाती	30 08	79 54	−10 54
गरजिया	29 29	79 06	−13 36
गंगनाणी	30 55	78 42	−15 12
गंगोत्तरी	30 39	79 02	−13 52
गंगापुर	26 30	76 44	−23 04
गिरगांव	30 02	80 07	−09 32
घरमघर	29 52	80 01	−09 56
घनस्याली	30 27	78 13	−17 08
चकराता (देह.)	30 42	77 51	−18 36
चम्बा	30 18	78 25	−16 20

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चमौली	30 24	79 21	−12 36
चन्दौसी	28 27	78 46	−14 56
चम्पावत	29 20	80 06	−09 36
चुरानी	29 47	78 55	−14 20
जमनोत्री	31 01	78 27	−16 12
जोशीमठ	30 34	79 34	−11 44
टनकपुर	29 02	80 08	−09 28
टिहरी	30 32	78 31	−15 56
डांगचौरा	30 17	78 19	−15 32
डाण्डा	29 10	79 55	−10 20
डीडीहाट	29 48	80 12	−09 12
डोईवाला	30 12	78 06	−17 36
तेजम	29 56	80 10	−09 20
देहरादून	30 19	78 02	−17 52
धनोलटी	30 25	78 19	−16 44
नरेन्द्रनगर	30 10	78 18	−16 48
नन्दप्रयाग	30 19	79 24	−12 24
नैनीताल	29 23	79 27	−12 12
पिन्सवार	30 38	78 42	−15 12
पिथौरगढ़	29 35	80 13	−09 08
पीपलकोटी	30 26	79 27	−12 12
पौड़ीगढ़वाल	30 09	78 47	−14 52
बद्रीनाथ	30 44	79 29	−12 04
भगवानपुर	29 59	77 56	−18 16
भटवाड़ी	30 49	78 36	−15 36
मंगलौर	29 48	77 52	−18 32
मनेरी	30 41	78 30	−16 00
मंसूरी	30 27	78 05	−17 40
मोलनेऊँ	30 22	78 36	−15 36
रालम	30 16	80 12	−09 12

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
रानीखेत	29 39	79 25	−12 20
राजगढ़ी	30 52	78 49	−14 44
रामनगर	29 24	79 07	−13 32
राजपुर	30 25	78 06	−17 36
रामपुर	28 49	79 02	−13 52
रायपुर	30 19	78 06	−17 36
रूद्रपुर	30 26	77 59	−18 04
रूद्रप्रयाग	30 16	78 59	−14 04
रूड़की	29 52	77 53	−18 28
लक्सर	29 49	78 02	−17 52
लम्बगाँव	30 29	78 31	−15 56
लालकुआं	29 06	79 32	−11 52
लालढाग	29 50	78 19	−16 44
लिसकोट	29 46	79 01	−13 56
लैंसडाऊन	29 50	78 41	−15 16
विकासनगर	30 29	77 50	−18 40
श्रीनगर (गढ़वा)	30 13	78 47	−14 52
सहसपुर (देह.)	30 24	77 58	−18 08
हरिद्वार	29 58	78 10	−17 20
हरकीदून	30 58	78 24	−16 24
हल्द्वानी	29 13	79 31	−11 56
कर्नाटक			
बैंगलुरु	12 59	77 35	−19 40
गुलबर्गा	17 20	76 50	−22 40
मैसूर	12 18	76 39	−23 24
हुबली	15 20	75 14	−29 04
केरला			
कोचीन	09 58	76 14	−25 04
त्रिवन्तपुरम्	12 40	76 55	−22 20
त्रिवेन्द्रम	08 29	76 57	−22 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
गुजरात			
अंकलेश्वर	21 36	73 00	—38 00
अंजार	23 08	70 01	—49 56
अमरापुर	21 45	70 02	—49 52
अमरेली	21 37	71 14	—45 04
अमोद	21 59	72 54	—38 24
अहमदाबाद	23 02	72 40	—39 20
आनन्द	22 34	72 56	—38 16
आनन्दपुर	22 10	71 08	—45 28
ईदर	23 50	73 00	—38 00
उपलेटा	21 44	70 17	—48 52
ओलपाड़	21 20	72 49	—38 44
कच्छ (भुज)	22 50	70 25	—48 20
कटाना	22 18	72 49	—38 44
कलोल(महेसाणा)	23 15	72 29	—40 04
कांडला	23 03	70 11	—49 16
कुटियाना	21 39	71 04	—45 44
कोरल	21 53	73 10	—37 20
खम्भात	22 20	72 38	—39 28
खम्भालिया	22 12	69 39	—51 24
खावड़ा	23 51	69 43	—51 08
गोधरा	22 45	73 38	—35 28
जखाऊ	23 13	68 43	—55 08
जसदान	22 02	71 12	—45 12
जाफराबाद	20 52	71 22	—44 32
जामनगर	22 28	70 04	—49 44
जारोद	22 26	73 20	—36 40
जूनागढ़	21 31	70 28	—48 08
जेतपुर	21 44	70 37	—47 32
जोड़िया	22 42	70 18	—48 48

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
झिंझुवाड़ा	23 30	71 38	—43 28
डीसा	24 15	72 10	—41 20
ढोला	20 51	71 48	—42 48
तनखला	21 57	72 50	—38 40
तालाला(जूना.)	21 02	70 32	—47 48
तालाजा	21 21	72 03	—41 48
थराड़	24 24	71 38	—43 28
दभोई	22 11	73 26	—36 16
दासदा	23 19	71 50	—42 40
देहज	21 42	72 35	—39 40
देवदार	24 07	71 50	—42 40
दोहाद	22 47	74 18	—32 48
द्वारिका	22 14	68 58	—54 08
धर्मपुर	20 32	73 11	—37 16
धारी	21 20	71 01	—45 56
धुले	20 54	74 47	—30 52
धोराजी	21 44	70 27	—48 12
नडियाद	22 41	72 55	—38 20
नवसारी	20 51	72 55	—38 20
नारा	23 39	69 10	—53 20
नालिया	23 18	68 50	—54 40
पड़ाना	22 21	69 52	—50 16
पाटन	23 50	72 07	—41 16
पाटरी	23 08	71 10	—45 20
पालनपुर	24 10	72 26	—40 16
पोरबन्दर	21 38	69 36	—51 36
बगासरा	20 58	70 56	—46 16
बचाऊ	23 20	70 18	—48 48
बजाना	23 04	71 45	—43 00

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
बड़ोदा	22 18	73 12	—37 12
बरूच	21 38	72 56	—38 16
बुलसार	20 38	72 56	—38 16
बोताड़	22 10	71 40	—43 20
भंगोर	22 02	69 55	—50 20
भरूच	21 40	72 58	—38 08
भावनगर	21 46	72 09	—41 24
भुज	23 16	69 40	—51 20
महेसाणा	23 37	72 28	—40 08
महुआ	21 05	71 48	—42 48
माधवपुर	21 18	70 01	—49 56
मालसार	22 00	73 22	—36 32
रतनपुर	21 44	73 16	—36 56
राजकोट	22 18	70 47	—46 52
रापार	23 34	70 38	—47 28
लखपत	23 49	68 47	—54 52
लूनावाड़ा	23 08	73 37	—35 32
वड़ोदरा	22 18	73 12	—37 12
वलसाड़	20 40	72 55	—38 20
वादनगर	23 47	72 38	—39 28
वीजापुर	23 34	72 45	—39 00
सन्तालपुर	23 45	71 10	—45 20
सुरेन्द्रनगर	22 42	71 41	—43 16
सूरत	21 10	72 50	—38 40
सिहोर	21 42	71 58	—42 08
सोनगढ़	20 59	70 29	—48 04
सोमनाथ	21 00	70 30	—48 00
हडोल	23 55	73 13	—37 08
हिम्मतनगर	23 36	72 57	—38 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
गोवा			
पंजिम	15 29	73 50	—34 40
मडगांव	15 18	73 57	—34 12
जम्मू-कश्मीर			
अनन्तनाग	33 43	75 12	—29 12
अखनूर	32 54	74 45	—31 00
अवन्तीपूरा	33 56	75 03	—29 48
अमरनाथगुफा	34 13	75 33	—27 48
उड़ी	34 04	74 02	—33 52
ऊधमपुर	32 56	75 08	—29 28
कठुआ	32 22	75 31	—27 56
कटरा	33 01	74 58	—30 08
कारगिल	34 30	76 13	—25 08
किश्तवाड़	33 19	75 48	—26 48
कुलगाम	33 42	75 02	—29 52
केरन	34 40	73 59	—34 04
कोटली	33 30	73 53	—34 12
खयालू	35 10	76 20	—24 40
गिलगित	35 55	74 22	—32 32
गुलमर्ग	34 05	74 25	—32 20
गुरयास	34 38	74 56	—30 16
चिनेनी	33 01	75 20	—28 40
चिलास	35 27	74 06	—33 36
चुशूल	33 35	78 39	—15 24
छम्ब	32 51	74 23	—32 28
जम्मू	32 43	74 54	—30 24
जंगला	33 40	77 00	—22 00
जास्कार	33 20	77 00	—22 00
द्रास	34 22	75 50	—26 40

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
नवांशहर	32 30	74 46	−30 56
नागिर	36 17	74 45	−31 00
नौशेहरा	33 11	74 17	−32 52
पहलगांव	34 01	75 24	−28 24
परिपंजाल	33 36	74 22	−22 32
पुंछ	33 51	74 08	−33 28
बनिहाल	33 32	75 19	−28 44
बटोटी	33 06	75 19	−28 44
बटोत	33 06	75 19	−28 44
बड़गाम	34 00	74 44	−31 04
बसौली	32 30	75 49	−26 24
बारामूला	34 10	74 20	−32 40
मनावर	32 50	74 25	−32 20
मार्तण्ड	33 48	75 18	−28 48
मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	−35 56
रामनगर	32 50	75 22	−28 32
राजौरी	33 23	74 18	−32 48
रामबन	33 14	75 15	−29 00
रियासी	33 04	74 53	−30 28
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
वैष्णोदेवी	33 03	74 56	−30 16
शेरकिला	36 05	74 04	−33 44
श्रीनगर	34 06	74 51	−30 36
सोपूर	34 19	74 30	−32 00
सोनामर्ग	34 19	75 20	−28 40
सोन्दर	33 29	75 57	−26 12
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
झारखण्ड			
जमशेदपुर	22 50	86 10	+14 40
राँची	23 23	85 23	+11 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
तामिलनाडु			
चेन्नई	13 05	80 17	−08 52
रामेश्वरम्	09 17	79 22	−12 32
तेलंगाना			
करनूल	15 50	78 03	−17 48
हैदराबाद	17 24	78 30	−16 00
त्रिपुरा			
अगरतला	23 49	91 18	+35 12
दादर-नगर-हवेली			
सिल्वासा	20 17	73 00	−38 00
डमन एण्ड डियू			
डामन	20 25	72 51	−38 36
डियू (Diu)	20 42	70 59	−46 04
दिल्ली			
पु. दिल्ली	28 39	77 12	−21 12
शाहदरा	28 40	77 19	−20 44
न्यू दिल्ली	28 40	77 13	−21 08
नागालैण्ड			
कोहिमा	25 41	94 07	+46 28
प. बंगाल			
आसनसोल	23 42	87 01	+18 04
कोलकाता	22 34	88 24	+23 36
दार्जिलिंग	27 03	88 18	+23 12
पुरुलिया	23 20	86 24	+15 36
दुर्गापुर	23 30	87 20	+19 20
सिलीगुड़ी	26 42	88 26	+23 44
हावड़ा	22 25	88 23	+23 32

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
पंजाब			
अमृतसर	31 37	74 55	−30 20
अजनाला	31 51	74 48	−30 48
अटारी	31 37	74 36	−31 36
अमलोह	30 37	76 15	−25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	−26 36
अबोहर	30 08	74 12	−33 12
अकालगढ़	29 50	75 54	−26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	−25 56
अलावलपुर	31 26	75 39	−27 24
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	−23 52
आदमपुर	31 25	75 43	−27 08
उरमर-टाण्डा	31 40	75 41	−27 16
कपूरथला	31 23	75 25	−28 20
करतारपुर	31 27	75 30	−28 00
कादियां	31 49	75 23	−28 28
कीतरपुर साहिब	31 11	76 34	−23 44
कुराली	30 50	76 35	−23 40
कोटकपूरा	30 34	74 52	−30 32
खन्ना	30 42	76 13	−25 08
खरड़	30 45	76 39	−23 24
खेमकरण	31 08	74 35	−31 40
गड़दीवाल	31 44	75 45	−27 00
गढ़शंकर	31 13	76 08	−25 28
गुरदासपुर	32 03	75 27	−28 12
गुरुहरसहाय	30 40	74 32	−31 42
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	−29 28
गोराया	31 06	75 47	−26 52
गोविन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	−24 28
घनौर	30 21	76 37	−23 32

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
चमकौर साहि.	30 55	76 24	−24 24
छहरटा	31 16	74 53	−30 28
जगरांव	30 48	75 30	−28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	−33 00
जण्डियालागुरु	31 34	75 01	−29 56
जाखल	29 48	75 41	−26 36
जालन्धर	31 19	75 34	−27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	−28 16
जीरा	30 57	74 59	−30 04
जैतों	30 28	74 53	−30 28
जैजों	31 21	76 09	−25 24
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	−31 12
ढिलवां	31 25	75 19	−28 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	31 28	74 58	−30 08
तलवाड़ा	32 05	75 38	−27 38
तलवंडी साबो	29 59	74 59	−30 04
दतारपुर	31 53	75 45	−27 00
दसूहा	31 49	75 38	−27 28
दमदमा साहिब	30 50	76 04	−25 44
दीनानगर	32 08	75 30	−28 00
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	−25 56
दौलतपुर	31 58	75 38	−27 28
धर्मकोट	30 53	75 14	−29 04
धारीवाल	31 57	75 19	−28 44
धूरी	30 22	75 52	−26 32
नकोदर	31 07	75 29	−28 04
नवांशहर	31 07	76 08	−25 28
नंगल	31 23	76 23	−24 28
नाभा	30 25	76 09	−25 24
नूरमहल	31 01	75 22	−28 32
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	−24 04

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पटियाला	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	31 17	74 51	−30 36
पठानकोट	32 17	75 42	−27 12
फरीदकोट	30 40	74 57	−30 12
फगवाड़ा	31 13	75 47	−26 52
फतेहगढ़ सा.	30 39	76 22	−24 32
फतेहगढ़	31 03	75 03	−29 48
फाज़िल्का	30 24	74 04	−33 44
फिल्लौर	31 01	75 48	−26 48
फिरोजपुर	30 55	74 40	−31 20
बरनाला	30 23	75 33	−27 48
बस्सी	30 35	76 50	−22 40
बसी-पठाना	30 40	76 23	−24 28
बटाला	31 48	75 12	−29 12
बंगा	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर	31 03	76 19	−24 44
बिलगा	31 02	75 26	−28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	−27 44
बेला	30 56	76 24	−24 24
ब्यास	31 32	75 18	−28 48
भटिण्डा	30 11	75 00	−30 00
भवानीगढ़	30 16	76 01	−25 56
भुलत्थ	31 32	75 32	−27 32
भुच्चो (मण्डी)	30 13	75 06	−29 36
भोगपुर	31 33	75 38	−27 28
मजीठा	31 46	74 57	−30 12
मलोट	30 13	74 29	−32 04
मलेरकोटला	30 31	75 59	−26 04
मलकाणा	29 56	75 03	−29 48
मुकेरिया	31 57	75 37	−27 32
मुबारिकपुर	30 37	76 51	−22 36

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुक्तसर	30 29	74 31	−31 56
मोगा	30 48	75 10	−29 20
मोरांवली)	31 18	76 01	−25 56
मोरिण्डा	30 48	76 30	−24 00
मोहाली	30 43	76 42	−23 12
राजपुरा	30 29	76 34	−23 44
रामपुरा फूल	30 17	75 14	−29 04
रायकोट	30 41	75 36	−27 36
राहों	31 03	76 07	−25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	−23 52
लुधियाना	30 55	75 54	−26 24
लोहियांखास	31 08	75 28	−28 04
शाहकोट	31 03	75 19	−28 44
शाहपुर	32 17	75 46	−26 56
संगरूर	30 12	75 53	−26 28
सरहिन्द	30 38	76 23	−24 28
समराला	30 51	76 11	−25 16
सनौर	30 18	76 30	−24 00
समाना	30 09	76 12	−25 12
सुजानपुर	32 19	75 26	−28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 13	75 11	−29 16
सुनाम	30 08	75 48	−26 48
सोहाणां	30 42	76 42	−23 12
हमीरा	31 27	75 19	−28 44
हरयाणा	31 36	75 48	−26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	−30 12
हाजीपुर टा.	31 57	75 37	−27 32
होशियारपुर	31 32	75 57	−26 12
पाण्डिचेरी			
पांडिचेरी	11 56	79 53	−10 28
म्हे (Mahe)	11 42	75 32	−27 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिहार			
गया	24 49	85 01	+10 04
छपरा	25 47	84 45	+09 00
सीतामढ़ी	26 35	85 32	+12 08
सीवां	26 12	84 23	+07 32
पटना	25 37	85 13	+10 52
झरिया	23 50	86 24	+15 36
समस्तीपुर	25 55	85 50	+13 20
धनबाद	23 47	86 30	+16 00
बांकीपुर	25 40	85 12	+10 48
बेगुसराय	25 25	86 08	+14 32
भागलपुर	25 15	87 00	+18 00
मधुबनी	26 22	86 05	+14 20
मणिपुर			
इम्फाल	24 46	93 58	+45 52
मध्यप्रदेश			
अगर	23 42	76 01	−25 56
अजयगढ़	24 53	80 13	−09 08
अंजद	22 02	75 03	−29 48
अमरकंटक	22 40	81 45	−03 00
अमला	21 56	78 07	−17 32
अम्बाह(म. प्र.)	26 43	78 14	−17 04
अन्नूपुर	22 40	81 48	−05 18
अलिराजपुर	22 19	74 21	−32 36
अशोकनगर	24 34	77 43	−19 08
इच्छापुर	21 05	76 09	−25 24
इच्छावर	23 01	77 01	−21 56
इटारसी	22 37	77 45	−19 00
इटावा	24 05	78 12	−17 12
इन्दौर	22 43	75 50	−26 40
इन्द्रगढ़	25 56	78 35	−15 40
उज्जैन	23 11	75 46	−26 56
उमरी	26 33	79 00	−14 00

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उमरिया	23 32	80 50	−06 40
उमरिया (बा.गढ़)	23 48	80 56	−06 16
ओरछा	25 21	78 39	−15 24
औबेदुल्लागंज	22 59	77 36	−19 36
कटंगी	21 44	79 48	−10 48
कटनी	23 51	80 24	−08 24
कुकशी	22 12	74 45	−31 00
कोठी	24 45	80 45	−07 00
कोरवई	24 08	78 03	−17 48
क्षिप्रा	22 54	78 00	−26 00
खजुराहो	24 50	79 58	−10 08
खण्डवा	21 50	76 20	−24 40
खरगोन	21 49	75 36	−27 36
खेतिया	21 40	74 35	−31 40
खुरई	24 03	78 19	−16 44
गादरवाड़ा	22 55	78 47	−14 52
गुना	24 39	77 19	−20 44
गोहद	26 26	78 27	−16 12
ग्वालियर	26 13	78 10	−17 20
चन्दला	25 05	80 12	−09 12
चन्देरी	24 43	78 08	−17 28
चाचोरा	24 10	76 59	−22 04
चापरा	22 44	76 20	−24 40
छतरपुर	24 55	79 36	−11 36
छिन्दवाड़ा	22 04	78 56	−14 16
छोटा छिन्दवाड़ा	23 03	79 29	−12 04
जबलपुर	23 10	79 57	−10 12
जऔरा	28 38	75 08	−29 28
जावद	24 38	74 52	−30 32
झाबुआ	22 46	74 36	−31 36
टीकमगढ़	24 46	78 53	−14 28
तिरोदी	21 41	79 42	−11 12
दतिया	25 40	78 28	−16 08
दमोह	23 50	79 27	−12 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
दिन्दोरी	22 57	81 05	−05 40
धार	22 36	75 18	−28 48
नयागाँव	25 54	77 10	−21 20
नरसिंहपुर	22 57	79 12	−13 12
नीमच	24 28	74 52	−30 32
नैनपुर	22 26	80 07	−09 32
पंचमढ़ी	22 30	78 26	−16 16
पठारिया	23 54	79 12	−13 12
पन्ना	24 43	80 12	−09 12
पाटन	23 18	79 42	−11 12
पांधुरना	21 36	78 31	−15 56
पिचोर	25 11	78 11	−17 16
पिछोर (ग्वा.)	25 58	78 24	−16 24
पिपारिया	22 45	78 21	−16 36
प्रतापगढ़	24 02	74 47	−30 52
बन्दा	24 03	78 57	−14 12
बरनगर	23 03	75 22	−28 32
बरवाह	22 16	76 03	−25 48
बालाघाट	21 48	80 11	−09 16
बासोदा	23 51	77 56	−18 16
बान्धवगढ़	23 53	79 05	−13 40
बिच्छिया	22 27	80 42	−07 12
बिजावर	24 38	79 30	−12 00
बीना (इटावा)	24 11	78 11	−17 16
बुरहानपुर	21 18	76 14	−25 04
बैतूल	21 55	77 54	−18 24
भिण्ड	26 34	78 48	−14 48
भोपाल	23 16	77 24	−20 24
मऊगंज	24 41	81 53	−02 28
मकराई	22 04	77 06	−21 36
मण्डला	22 36	80 23	−08 28
मनावर	22 14	75 05	−29 40

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
मन्दसौर	24 04	75 04	−29 44
महाराजपुर	25 01	79 44	−11 04
महेश्वर	22 11	75 35	−27 40
मानपुर	23 46	81 08	−05 28
मुरैना	26 30	78 09	−17 24
मुलताई	21 46	78 15	−17 00
मैहर	24 16	80 45	−07 00
रतलाम	23 19	75 04	−29 44
राजगढ़	23 56	76 58	−22 08
राजपुर	25 23	81 09	−05 24
रामनगर	22 13	80 47	−06 52
रामपुरा	24 28	75 26	−28 16
रायसेन	23 20	77 48	−18 48
राहतगढ़	23 47	78 22	−16 32
रीवा	24 32	81 18	−04 48
रेहली	23 38	79 05	−13 40
लखनादोन	22 36	79 36	−11 36
लखेड़ी	25 40	76 10	−25 20
लामटा	22 08	80 07	−09 32
विदिशा	23 32	77 49	−18 44
वैधन	24 04	82 20	−00 40
शहडोल	23 20	81 21	−04 36
शाजापुर	23 26	76 16	−24 56
शाहपुरा	23 11	80 42	−07 12
शिवपुरी	25 26	77 39	−19 24
श्योपुर	25 40	76 42	−23 12
सतना	24 35	80 50	−06 40
सनावद	22 11	76 04	−25 44
सबलगढ़	26 15	77 24	−20 24
सरदारपुर	22 39	74 59	−30 04
सागर	23 50	78 43	−15 08
सांची	23 29	77 44	−19 04
सारंगपुर	23 34	76 28	−24 08

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
सिरोंज	24 06	77 42	−19 12
सिहोरा	23 29	80 07	−09 32
सिहोर	23 12	77 05	−21 40
सीधी	24 25	81 53	−02 28
सेओनी	22 05	79 32	−11 52
सेओनीमालवा	22 27	77 28	−20 08
सेंधवा	21 41	75 06	−29 36
सोहागपुर	22 42	78 12	−17 12
हट्टा	24 07	79 36	−11 36
हरदा	22 20	77 06	−21 36
होशंगाबाद	22 45	77 43	−19 08
छत्तीसगढ़			
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48
आरंग	21 12	81 58	−02 08
कवर्धा	22 00	81 15	−05 00
कांकेर	20 17	81 29	−04 04
काठघोरा	22 30	82 33	+00 12
कुतरू	19 05	80 48	−06 48
कुरसेकोडी	20 12	80 48	−06 48
कोईसारी	23 57	81 45	−03 00
कोंगूर	19 53	81 27	−04 12
कोण्डागांव	19 36	81 40	−03 20
कोरबा	22 21	82 41	+00 44
जगदलपुर	19 04	82 02	−01 52
जशपुरनगर	22 54	84 09	+06 36
दन्तेवाड़ा	18 54	81 21	−04 36
दुर्ग	21 11	81 17	−04 52
धमतरी	20 41	81 34	−03 44
धर्मजयगढ़	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम	18 16	80 55	−06 20
नवापाड़ा	20 58	81 53	−02 28
पण्डारिया	22 14	81 25	−04 20

३६गढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
परताबपुर	23 29	83 13	+02 52
बलोदाबाज़ार	21 40	82 10	−01 20
बस्तर	19 12	81 57	−02 12
बिलासपुर	22 05	82 09	−01 24
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
भरतपुर	23 44	81 45	−03 00
भाटपाड़ा	21 44	81 56	−02 16
भिलाई	21 13	81 26	−04 16
महासमुन्द	21 06	82 06	−01 36
राजनान्दगांव	21 06	81 02	−05 52
रामानुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़	21 55	83 26	+03 44
रायपुर	21 14	81 38	−03 28
सक्ति	22 02	82 58	+01 52
सारनगढ़	21 36	83 05	+02 20
सेओरी नारायण	21 44	82 35	+00 20
महाराष्ट्र			
अकलकोट	17 32	76 13	−25 08
अकोला (मुम्ब.)	20 44	77 00	−22 00
अकोट	21 11	77 04	−21 44
अचलपुर	21 16	77 31	−19 56
अमरावती	20 56	77 45	−19 00
अम्बजोगई	18 44	76 23	−24 28
अरमोरी	20 28	79 59	−10 04
अरवी	20 59	78 14	−17 04
अलीपुर	20 34	78 41	−15 16
अलीबाग	18 39	72 54	−38 24
अहमदनगर	19 05	74 44	−31 04
इगतपुरी	19 42	73 33	−35 48
उमरेड़	20 51	79 20	−12 40
उल्हासनगर	19 13	73 07	−37 32
एलोरा	20 01	75 10	−29 20

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
ओस्मानाबाद	18 10	76 02	−25 52
औरंगाबाद	19 53	75 20	−28 40
कतोल	21 16	78 35	−15 40
कराड़	17 17	74 12	−33 12
कल्याण	19 15	73 09	−37 24
कामथी	21 14	79 12	−13 12
किरकी	18 34	73 52	−34 32
कुरदुवाड़ी	18 05	75 26	−28 16
कोपारगांव	19 53	74 29	−32 04
कोल्हापुर	16 42	74 13	−33 08
खमगांव	20 41	76 34	−23 44
खेड़ (रत्नागिरी)	17 43	73 23	−36 28
गंगापुर	19 41	75 01	−29 56
गोंडिया(मुम्बई)	21 27	80 12	−09 12
घाटकोपर (मुम्बई)	19 05	72 54	−38 24
चन्द्रपुर	19 57	79 18	−12 48
चालिसगांव	20 28	75 01	−29 56
चिखली	20 21	76 15	−25 00
चिपलून	17 32	73 31	−35 56
चोपड़ा	21 15	75 18	−28 48
जलगांव	21 01	75 34	−27 44
जलगांव (अकोला)	21 03	76 32	−23 52
जालना	19 50	75 53	−26 28
जुन्नार	19 12	73 53	−34 28
तालोडा	21 34	74 13	−33 08
तासगांव	17 02	74 36	−31 36
तुमसार	21 23	79 44	−11 04
थाने	19 12	72 58	−38 08
दरवाहा	20 19	77 46	−18 56
दिगरस	20 06	77 43	−19 08
दिगलूर	18 33	77 36	−19 36
देयूलगावराजा	20 01	76 02	−25 52
देवलाली	19 57	73 50	−34 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
धुलिया	20 54	74 47	−30 52
नन्दगांव	20 19	74 39	−31 24
नागपुर	21 09	79 06	−13 36
नान्देड़	19 09	77 20	−20 40
नासिक	19 59	73 48	−34 48
पंढरपुर	17 40	75 20	−28 40
पनवेल	18 59	73 06	−37 36
पाचोरा	20 40	75 21	−28 36
पाटन(महेसाणा)	23 50	72 07	−41 32
पातुर	20 27	76 56	−22 16
पुणे	18 32	73 52	−34 44
पुसाद	19 54	77 35	−19 40
पुलगांव	20 44	78 20	−16 40
बडनेरा	20 52	77 44	−19 04
बारसी	18 14	75 42	−27 12
बारामती	18 09	74 35	−21 40
बालापुर	20 40	76 46	−22 56
बासमत	19 19	77 10	−21 20
बीड़	18 59	75 46	−26 56
भण्डारा	21 10	79 39	−11 24
भिवंडी	19 18	73 04	−37 44
भुसावल	21 03	75 46	−26 56
भोकरदान	20 16	75 46	−26 56
मंगलवेढ़ा	17 31	75 28	−28 08
मनमाड़	20 15	74 27	−32 12
मनवात	19 18	76 30	−24 00
मल्कापुर(बुल्डाना)	20 53	76 12	−25 12
महाद	18 05	73 25	−36 20
महाबलेश्वर	17 55	73 40	−35 20
मालवान	16 04	73 28	−36 08
मालेगांव (ना.)	20 33	74 32	−31 52
मिराज	16 50	74 38	−31 28
मुम्बई	18 58	72 50	−38 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
मुम्ब्रा (थाना)	19 10	73 03	−37 48
मुरुद	18 19	72 58	−38 08
मुर्तजापुर	20 44	77 23	−20 28
मुल	20 04	79 40	−11 20
मेहेकर	20 09	76 34	−23 44
यवतमाल	20 24	78 08	−17 28
रत्नागिरि	16 59	73 18	−36 48
रहिमतपुर	17 36	74 12	−33 12
रामटेक	21 24	79 20	−12 40
रावेर	21 15	76 02	−25 52
वर्धा	20 45	78 37	−15 32
वसाई	19 21	72 48	−38 48
वाशिम	20 06	77 09	−21 24
वाशी	19 13	73 10	−37 20
वाई	17 56	73 54	−34 24
वैजापुर	19 55	74 44	−31 12
शहादा	21 28	74 18	−32 48
शिरपुर	21 21	74 53	−30 28
शेगांव	20 47	76 41	−23 16
शोलापुर	17 41	75 55	−26 20
श्रीवर्धन	18 02	73 01	−37 56
सकोली	21 05	79 59	−10 04
संगोला	17 26	75 12	−29 12
सतना	20 35	74 12	−33 12
सतारा	17 41	73 59	−34 04
सांगली	16 52	74 34	−31 44
सावन्तवाड़ी	15 54	73 49	−34 44
सिन्नार	19 51	74 00	−34 00
हरनाई	17 48	73 06	−37 36
हिंगनघाट	20 34	78 52	−14 32
हिंगोली	19 43	77 09	−21 24
मिज़ोरम			
ऐज़वाल	23 43	92 44	+40 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
मेघालय			
शिलांग	25 34	91 56	+37 44
राजस्थान			
अजमेर	26 27	74 42	−31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	−37 36
अलवर	27 34	76 38	−23 28
असोप	26 48	73 44	−35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	−25 30
अमेट	25 20	73 59	−34 04
आबू	24 40	72 45	−39 00
आमेर	26 59	75 52	−26 32
उदयपुर	24 35	73 41	−35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	−34 56
करौली	26 30	77 01	−21 56
कांकरोली	25 02	73 54	−34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	−30 32
केकड़ी	25 55	75 10	−29 20
कोटा	25 10	75 52	−26 32
खण्डेला	27 37	75 32	−27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	−35 44
घोटारू	27 18	70 04	−49 44
चात्सू	26 36	75 59	−26 04
चित्तौड़गढ़	24 54	74 42	−31 12
चूरू	28 19	75 01	−29 56
चोमू	27 08	75 47	−26 52
चोटां	25 28	71 06	−45 36
छाबरा	24 40	76 54	−22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	−31 36
जयपुर	26 55	75 52	−26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	−40 00
जालौर	25 22	72 38	−39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	−46 24

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
जोधपुर	26 18	73 04	−37 44
जोधासर	28 07	73 50	−34 40
झालावाड़	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	−28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	−28 04
टोंक	26 11	75 50	−26 40
डीडवाना	27 17	74 25	−32 20
डूँगरपुर	23 50	73 43	−35 08
तिजारा	27 55	76 50	−22 40
थानागाजी	27 25	76 19	−24 44
देओरा	26 30	70 42	−47 12
देचू	26 47	72 20	−40 40
देओरा	26 30	70 42	−47 12
दौसा	26 51	76 21	−24 36
धौलपुर	26 42	77 53	−18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	−28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	−30 56
नागौर	27 11	73 40	−35 20
नाचना	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	−34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	−26 48
नोखा	27 35	73 29	−36 04
नौहर	29 11	74 46	−30 56
पचपदरा	25 55	72 21	−40 36
परबतसर	26 53	74 47	−30 52
पल्लू	28 56	74 13	−33 08
पाली	25 46	73 25	−36 20
पिलानी	28 23	75 35	−27 40
पुष्कर	26 30	74 34	−31 44
पोखरन	26 56	71 55	−42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	−30 00
फलौदी	27 09	72 22	−40 32

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
फुलेरा	26 52	75 16	−28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	−32 08
बयाना	26 55	77 17	−20 52
बाड़मेर	25 46	71 25	−44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	−23 44
बाप	27 24	72 22	−40 32
बारॉं	25 07	76 30	−24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	−32 24
बालोतरा	25 50	72 14	−41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	−35 12
बीकानेर	28 01	73 22	−36 32
बून्दी	25 27	75 40	−27 20
भरतपुर	27 05	77 30	−20 00
भादरा	29 15	75 20	−28 40
भीलवाड़ा	25 21	74 40	−31 20
भीनमाल	25 01	72 19	−40 44
मकराना	27 04	74 43	−31 08
महाजन	28 49	73 56	−34 16
मांगरोल	25 21	76 30	−24 00
मावली	24 48	73 58	−34 08
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	−25 56
मुनाबाओ	25 43	70 15	−49 00
मेड़ता सिटी	26 40	74 06	−33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	−34 20
मोहनगढ़	27 17	71 18	−44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	−31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	−41 08
रायसिंहनगर	29 32	73 27	−36 12
रीगस	27 21	75 34	−27 44
रूपनगर	26 47	74 54	−30 24
लछमनगढ़	27 45	75 04	−29 44
लाठी	27 03	71 30	−44 00

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
शाहगढ़	27 08	69 58	−50 08
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	−34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	−27 52
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	−45 12
समदड़ी	25 49	72 35	−39 40
सरदारशहर	28 27	74 30	−32 00
सरूपसर	29 22	73 37	−35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	−24 00
सांगानेर	26 49	75 52	−26 32
सांचोर	24 41	71 50	−42 40
साम्भर	26 55	75 10	−29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	−28 24
सिरोही	24 54	72 55	−38 20
सिवाना	25 37	72 27	−40 12
सिरोही	24 53	72 54	−38 24
सीकर	27 36	75 09	−29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	−32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	−34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	−29 20
रामगढ़ (जैसलमेर)	27 23	70 30	−48 00
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	−26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	−30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	−40 36
शेरगढ़ (झालाबाड़)	24 41	76 32	−23 52
सिक्किम			
गंगटोक	27 22	88 36	+24 24
हरियाणा			
अम्बाला	30 21	76 52	−22 32
अलीपुर	29 10	75 52	−26 36
अगरोहा	29 20	75 38	−27 88

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
करनाल	29 42	77 02	−21 52
कलानौर	28 52	76 23	−24 28
कालका	30 49	76 57	−22 12
कुरुक्षेत्र	29 59	76 48	−22 48
केसरी	30 15	76 53	−26 28
कैथल	29 48	76 26	−24 16
खतौली	30 37	76 58	−22 08
गुड़गांव	28 29	77 04	−21 44
गोहाना	29 09	76 41	−23 16
घरौण्डा	29 34	76 58	−22 08
चरखी-दादरी	28 36	76 16	−24 56
जगाधरी	30 10	77 16	−20 56
जाखल	29 49	75 49	−26 44
जीन्द	29 19	76 21	−24 36
झज्जर	28 38	76 39	−23 24
टोहाना	29 43	75 53	−26 28
थानेसर	29 58	76 56	−22 16
दादरी	28 33	77 32	−19 52
नरवाणा	29 36	76 08	−25 28
नारनौल	28 02	76 14	−25 04
नारायणगढ़	30 30	77 09	−21 24
नाहर	28 23	76 23	−24 28
नीलोखेड़ी	29 52	76 54	−22 24
पंचकूला	30 45	76 53	−22 28
पटौदी	28 19	76 48	−22 48
पलवर	28 10	77 19	−20 44
पानीपत	29 23	77 01	−21 56
पिंजौर	30 49	76 55	−22 20
पिपली	29 59	76 52	−22 32
पिहोवा	29 56	76 36	−23 36
फतेहाबाद	29 31	75 30	−28 00
फरीदाबाद	28 25	77 22	−20 32
बल्लभगढ़	28 21	77 19	−20 44

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बहादुरगढ़	28 42	76 55	−22 20
बरवाला	29 23	75 55	−26 20
बालसमन्द	29 05	75 29	−28 04
भादसों	29 56	76 56	−22 16
भिवानी	28 47	76 08	−25 48
मनसादेवी	30 44	76 52	−22 32
मनीमाजरा	30 42	76 52	−22 32
महेन्द्रगढ़	28 18	76 09	−25 24
मोहाना	29 04	76 50	−22 40
यमुनानगर	30 08	77 16	−20 56
रादौर	30 02	77 06	−21 36
रिवाड़ी	28 12	76 40	−23 20
रैना	29 28	74 54	−30 24
रोडी	29 44	75 15	−29 00
रोहतक	28 54	76 38	−23 28
लाडवा	29 59	77 05	−21 40
शाहाबाद	30 10	76 55	−22 20
सिरसा	29 32	75 06	−29 56
सिवानी	28 55	75 37	−27 32
सोनीपत	28 59	77 01	−21 56
हसनपुर	27 59	77 29	−20 04
हांसी	29 06	76 00	−26 00
हिसार	29 10	75 46	−26 56

हिमाचल-प्रदेश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अम्ब	31 43	76 06	−25 36
अर्की	31 09	76 59	−22 04
आनी	31 28	77 20	−20 40
आनी	31 28	77 20	−20 40
आलमपुर	31 54	76 30	−24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	−27 16
ऊना	31 32	76 18	−24 48
करसोग	31 23	77 14	−21 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कसौली	30 55	76 57	−22 12
कथला	31 59	76 47	−22 52
कल्पा	31 34	78 16	−16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	−21 28
काला अम्ब	30 29	77 13	−21 08
कांगड़ा	**32 05**	**76 18**	**−24 48**
किन्नौर	31 32	78 20	−16 40
कुफरी	31 07	77 12	−21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	−21 48
कुल्लू	31 58	77 10	−21 20
कुमारसेन	31 18	77 37	−19 32
कुनिहार	30 58	77 10	−21 20
केलांग	32 37	77 05	−21 40
कोटखाई	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	−20 04
कोटला	32 17	76 02	−25 52
खजियार	32 31	76 03	−25 40
गर्ली (परागपुर	31 48	76 18	−24 48
गगरेट	31 41	76 04	−25 44
गोहर	31 32	77 02	−21 52
घुमारवीं	31 28	76 42	−23 12
चम्बा	**32 34**	**76 08**	**−25 28**
चच्योट	31 36	77 04	−21 44
चामुण्डा देवी	32 08	76 22	−24 32
चायल	31 03	77 14	−21 04
चिन्तपूर्णी	31 47	76 04	−25 44
जस्सूर	32 17	75 55	−26 20
जतोग	31 06	77 07	−21 32
जोगिन्द्रनगर	31 58	76 45	−23 00
ज्वाली	32 06	76 01	−25 56
ज्वालामुखी	31 53	76 20	−24 40
ठयोग	31 08	77 33	−19 48
डमटाल	32 13	75 41	−27 16
डगशाई	30 53	77 06	−21 36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
डल्हौज़ी	32 31	76 00	−26 00
ढलियारा	31 52	76 11	−25 16
तारादेवी	31 04	77 10	−21 20
तत्तापानी	31 14	77 10	−21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	−23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	−21 24
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	−25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	−26 08
धनेटा	31 38	76 29	−24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	−24 48
धर्मपुर	30 54	77 04	−21 44
धौलाकुआं	30 30	77 29	−20 04
नगर	32 07	77 10	−21 20
नगरोंटा बगवां	32 06	76 22	−24 32
नगरोटा	32 07	76 23	−24 28
नादौन	31 47	76 22	−24 32
नाहन	30 33	77 21	−20 36
नालागढ़	30 57	76 22	−24 32
नारकण्डा	31 15	77 28	−20 08
निरमण्ड	31 28	77 34	−19 44
नूरपुर	32 18	75 56	−26 16
नैनादेवी	31 19	76 31	−23 56
पच्छाद	31 47	77 08	−21 28
पण्डोह	31 41	77 07	−21 32
पपरोला	32 04	76 34	−23 44
परवाणू	30 52	77 05	−21 40
पाओंटा साहिब	30 28	77 38	−19 28
पालमपुर	32 06	76 33	−23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	−24 08
बसौली	31 34	76 23	−24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	−24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	−21 00
बंजार	31 40	77 20	−20 40
बनीखेत	32 32	75 58	−26 08
बकलोह	32 27	75 59	−26 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिलासपुर	31 19	76 45	−23 00
बैजनाथ	32 03	76 36	−23 36
भरवाईं	31 47	76 07	−25 36
भरमौर	32 27	76 32	−23 52
भाखड़ा	31 20	76 30	−24 00
भुन्तर	31 54	77 09	−21 24
मण्डी	31 43	76 58	−22 08
मनाली	32 17	77 10	−21 20
मनीकरण	32 01	77 20	−20 40
मशोबरा	31 07	77 14	−21 04
मंगवाल	32 03	76 05	−25 40
महासू	31 05	77 13	−21 08
राजगढ़	30 52	77 22	−20 32
रायसन	32 05	77 07	−21 32
रोहड़ू	31 12	77 44	−19 04
लाहौल स्पीति	31 28	77 39	−19 24
शाहपुर	32 14	76 12	−25 12
शिमला	**31 06**	**77 10**	**−21 20**
शेरपुर	32 34	75 59	−26 04
सपाटू	30 59	76 59	−22 04
सरकाघाट	31 43	76 22	−24 32
सन्धोल	31 59	76 45	−22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	−24 40
सिरमौर	30 45	77 30	−20 00
सुन्दरनगर	31 33	76 54	−22 24
सोलन	30 55	77 09	−21 24
हमीरपुर	31 42	76 30	−24 00
हड़सर	32 21	76 33	−23 48
हरिपुर	32 39	76 11	−25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	−20 08
हाटकोटी	31 09	77 44	−19 04

अन्य प्रदेश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चण्डीगढ़	30 44	76 53	−22 28

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (—) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। **जैसे– एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। पं. विवेक शर्मा

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं.क.	रेखांश पू.=East प..=West अं.क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं.क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
ASBURY Park (N.J.)(E.T.)*	U.S.A.	40 13 उ.	74 01 प.	+3 56	75 00 प.	+10 30
अर्थीस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	-24 32	30 00 पू.	+03 30
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	-21 12	180 00 पू.	-06 30
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	-02 48	75 00 प.	+10 30
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	-22 20	60 00 पू.	+01 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	-31 00	90 00 प.	+11 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	-38 56	90 00 प.	+11 30
ऐबटसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	-10 00	120 00 प.	+13 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	-40 28	15 00 पू.	+04 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)	England	55 52 उ.	3 12 प.	-12 48	00 00	+05 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 30 प.	-34 00	105 00 प.	+12 30
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	-5 00	00 00	+05 30
ईस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
इस्तबूल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	-04 00	30 00 पू.	+03 30
काठमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	-03 44	86 15 पू.	-00 15
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	-73 20	120 00 पू.	-02 30
कुवैत	Kuwait	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
कराची	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	-31 48	75 00 पू.	+00 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00
कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	-08 00	67 30 पू.	+01 00
कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	-07 28	82 30 पू.	+00 00
कोलम्बो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	-10 56	82 30 पू.	00 00
कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	-10 00	15 00 पू.	+04 30
कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	-39 56	75 00 प.	+10 30
कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	-09 20	90 00 प.	+11 30
कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	-36 12	105 00 प.	+12 30
ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	-35 24	15 00 पू.	+04 30
जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	105 00 पू.	-01 30
जाफना	Sri Lanka	09 40 उ.	80 00 पू.	-10 00	82 30 पू.	00 00
जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
टोक्यो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	-03 30
टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	-35 48	120 00 प.	+13 30
डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	-04 08	00 00	+05 30
डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	-32 12	75 00 प.	+10 30
डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	-25 00	00 00 प.	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं.क.	रेखांश पू.=East प..=West अं.क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं.क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट (Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकांक	Thailand	13 43 उ.	100 31 पु.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीजिंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रैडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-19 12	75 00 प.	+10 30
बेकर्जफील्ड (Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 पू.	+13 30
ब्रिस्टल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30
मस्कट	(Oman)	23 37 उ.	58 35 पू.	-5 40	60 00 पू.	+01 30
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं.क.	रेखांश पू.=East प..=West अं.क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं.क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मौंट्रियाल (Montreal)*	Canada (E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada (E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
*रोम (Rome)	Italy	41 55 उ.	12 27 पू.	-10 12	15 00 पू.	+04 30
लाहौर (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एजलंस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वौलवरहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada (P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada (P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वैलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकांगो (C.T.)*	U.S.A.	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A. (P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A. (P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैम्लटन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	39 08 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (–) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (–) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०' पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (–) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग ३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण–मान लो, आपको 2 फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर –२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (–२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में हैं) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे-इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, भारत के अधिकांश नगर के अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।

–शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या – करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश | अक्षांश १०° उ. | अक्षांश २०° उ.

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४°	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मि
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 1
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 1
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 1
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 1
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 0
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 0
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 0
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्तू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
11 अक्तू.	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नव.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्तू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अक्तूबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
11 अक्टू.	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 2/3 मिनट घटाने तथा अस्त में 2/3 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें ज़िला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार-1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्तू.	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार मिं. सैं.
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
कोटरवाई	– १ ३२
रोहडू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

वैशाख (अप्रैल-मई)

अप्रैल	वैशाख प्रवि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३१	९ २५	११ ३९	१४ ०२	१६ २१	१८ ३९	२१ ०१	२३ २१	१ २६	३ ०७	४ ३२	५ ५४
15	२	७ २७	९ २१	११ ३६	१३ ५८	१६ १७	१८ ३५	२० ५७	२३ १७	१ २२	३ ०३	४ २८	५ ५०
16	३	७ २३	९ १७	११ ३२	१३ ५४	१६ १३	१८ ३१	२० ५३	२३ १३	१ १८	२ ५९	४ २४	५ ४६
17	४	७ १९	९ १३	११ २८	१३ ५१	१६ १०	१८ २७	२० ४९	२३ ०९	१ १४	२ ५५	४ २०	५ ४२
18	५	७ १५	९ १०	११ २४	१३ ४७	१६ ०६	१८ २४	२० ४५	२३ ०५	१ १०	२ ५१	४ १६	५ ३८
19	६	७ ११	९ ०६	११ २०	१३ ४३	१६ ०२	१८ २०	२० ४१	२३ ०१	१ ०६	२ ४७	४ १२	५ ३४
20	७	७ ०७	९ ०२	११ १६	१३ ३९	१५ ५८	१८ १६	२० ३७	२२ ५७	१ ०२	२ ४३	४ ०८	५ ३०
21	८	७ ०३	८ ५८	११ १२	१३ ३५	१५ ५४	१८ १२	२० ३३	२२ ५४	० ५८	२ ३९	४ ०४	५ २६
22	९	६ ५९	८ ५४	११ ०९	१३ ३१	१५ ५०	१८ ०८	२० २९	२२ ५०	० ५४	२ ३५	४ ००	५ २२
23	१०	६ ५५	८ ५०	११ ०५	१३ २७	१५ ४६	१८ ०४	२० २६	२२ ४६	० ५०	२ ३१	३ ५६	५ १८
24	११	६ ५१	८ ४६	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ००	२० २२	२२ ४२	० ४६	२ २७	३ ५२	५ १५
25	१२	६ ४७	८ ४२	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५६	२० १८	२२ ३८	० ४२	२ २३	३ ४८	५ ११
26	१३	६ ४३	८ ३८	१० ५३	१३ १५	१५ ३५	१७ ५२	२० १४	२२ ३४	० ३८	२ २०	३ ४४	५ ०७
27	१४	६ ४०	८ ३४	१० ४९	१३ ११	१५ ३१	१७ ४८	२० १०	२२ ३०	० ३४	२ १६	३ ४०	५ ०३
28	१५	६ ३६	८ ३०	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४४	२० ०६	२२ २६	० ३०	२ १२	३ ३६	४ ५९
29	१६	६ ३२	८ २६	१० ४१	१३ ०४	१५ २४	१७ ४०	२० ०२	२२ २२	० २६	२ ०८	३ ३२	४ ५५
30	१७	६ २८	८ २२	१० ३७	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५८	२२ १८	० २२	२ ०४	३ २८	४ ५१
मई	१८	६ २४	८ १८	१० ३३	१२ ५६	१५ १६	१७ ३३	१९ ५४	२२ १४	० १८	२ ००	३ २५	४ ४७
2	१९	६ २०	८ १४	१० २९	१२ ५२	१५ १२	१७ २९	१९ ५०	२२ १०	० १४	१ ५६	३ २१	४ ४४
3	२०	६ १६	८ १०	१० २५	१२ ४८	१५ ०८	१७ २५	१९ ४६	२२ ०६	० ११	१ ५२	३ १७	४ ४०
4	२१	६ १२	८ ०६	१० २१	१२ ४४	१५ ०४	१७ २१	१९ ४२	२२ ०२	० ०७	१ ४८	३ १३	४ ३६
5	२२	६ ०८	८ ०२	१० १७	१२ ४०	१५ ००	१७ १७	१९ ३८	२१ ५८	० ०३	१ ४४	३ ०९	४ ३२
6	२३	६ ०४	७ ५८	१० १३	१२ ३६	१४ ५६	१७ १३	१९ ३४	२१ ५४	२३ ५९	१ ४०	३ ०५	४ २८
7	२४	६ ००	७ ५४	१० ०९	१२ ३२	१४ ५२	१७ ०९	१९ ३०	२१ ५०	२३ ५५	१ ३६	३ ०१	४ २४
8	२५	५ ५६	७ ५०	१० ०५	१२ २८	१४ ४८	१७ ०५	१९ २६	२१ ४६	२३ ५१	१ ३२	२ ५७	४ २०
9	२६	५ ५२	७ ४६	१० ०१	१२ २४	१४ ४४	१७ ०१	१९ २२	२१ ४२	२३ ४७	१ २८	२ ५३	४ १६
10	२७	५ ४८	७ ४२	९ ५७	१२ २०	१४ ४०	१६ ५७	१९ १८	२१ ३८	२३ ४३	१ २४	२ ४९	४ १२
11	२८	५ ४४	७ ३९	९ ५३	१२ १६	१४ ३६	१६ ५३	१९ १४	२१ ३४	२३ ३९	१ २०	२ ४५	४ ०८
12	२९	५ ४०	७ ३५	९ ४९	१२ १२	१४ ३२	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३५	१ १६	२ ४१	४ ०४
13	३०	५ ३६	७ ३१	९ ४५	१२ ०९	१४ २८	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३१	१ १२	२ ३७	४ ००
14	ज्ये	५ ३३	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

ज्येष्ठ (मई-जून)

मई	ज्येष्ठ प्रवि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ २७	९ ४२	१२ ०५	१४ २४	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २७	१ ०८	२ ३३	३ ५६	५ २९
15	२	७ २३	९ ३८	१२ ०१	१४ २०	१६ ३८	१८ ५९	२१ १९	२३ २३	१ ०४	२ २९	३ ५२	५ २५
16	३	७ १९	९ ३४	११ ५७	१४ १६	१६ ३४	१८ ५५	२१ १५	२३ १९	१ ००	२ २५	३ ४८	५ २१
17	४	७ १६	९ ३०	११ ५३	१४ १२	१६ ३०	१८ ५१	२१ ११	२३ १५	० ५६	२ २१	३ ४४	५ १७
18	५	७ १२	९ २६	११ ४९	१४ ०८	१६ २६	१८ ४७	२१ ०७	२३ ११	० ५२	२ १७	३ ४०	५ १३
19	६	७ ०८	९ २२	११ ४५	१४ ०४	१६ २२	१८ ४३	२१ ०३	२३ ०८	० ४९	२ १३	३ ३६	५ ०९
20	७	७ ०४	९ १८	११ ४१	१४ ००	१६ १८	१८ ३९	२० ५९	२३ ०४	० ४५	२ १०	३ ३२	५ ०५
21	८	७ ००	९ १४	११ ३७	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	० ४१	२ ०६	३ २८	५ ०१
22	९	६ ५६	९ १०	११ ३३	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	० ३७	२ ०२	३ २४	४ ५७
23	१०	६ ५३	९ ०७	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ २८	२० ४८	२२ ५३	० ३४	१ ५८	३ २१	४ ५४
24	११	६ ४९	९ ०३	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ २४	२० ४४	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १७	४ ५०
25	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २०	२० ४०	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १३	४ ४६
26	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१८ १६	२० ३६	२२ ४१	० २२	१ ४७	३ ०९	४ ४२
27	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३३	१५ ५१	१८ १२	२० ३२	२२ ३७	० १८	१ ४३	३ ०५	४ ३८
28	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ २९	१५ ४७	१८ ०८	२० २८	२२ ३३	० १४	१ ३९	३ ०१	४ ३४
29	१६	६ २९	८ ४३	११ ०६	१३ २५	१५ ४३	१८ ०४	२० २४	२२ २९	० १०	१ ३५	२ ५७	४ ३०
30	१७	६ २५	८ ३९	११ ०२	१३ २१	१५ ३९	१८ ००	२० २०	२२ २५	० ०६	१ ३१	२ ५३	४ २६
31	१८	६ २१	८ ३५	१० ५८	१३ १७	१५ ३५	१७ ५६	२० १६	२२ २१	० ०२	१ २७	२ ४९	४ २२
जून	१९	६ १७	८ ३१	१० ५४	१३ १३	१५ ३१	१७ ५२	२० १२	२२ १७	२३ ५८	१ २३	२ ४५	४ १८
2	२०	६ १३	८ २७	१० ५०	१३ ०९	१५ २७	१७ ४८	२० ०८	२२ १३	२३ ५४	१ १९	२ ४१	४ १४
3	२१	६ ०९	८ २३	१० ४६	१३ ०५	१५ २३	१७ ४४	२० ०४	२२ ०९	२३ ५०	१ १५	२ ३६	४ १०
4	२२	६ ०५	८ १९	१० ४२	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ ११	२ ३३	४ ०६
5	२३	६ ०१	८ १५	१० ३८	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०७	२ २९	४ ०२
6	२४	५ ५७	८ १२	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ ३३	१९ ५३	२१ ५८	२३ ३९	१ ०३	२ २६	३ ५८
7	२५	५ ५३	८ ०८	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ २९	१९ ४९	२१ ५४	२३ ३५	० ५९	२ २२	३ ५५
8	२६	५ ४९	८ ०४	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ २५	१९ ४५	२१ ५०	२३ ३१	० ५५	२ १८	३ ५१
9	२७	५ ४५	८ ००	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ २१	१९ ४१	२१ ४६	२३ २७	० ५१	२ १४	३ ४७
10	२८	५ ४१	७ ५६	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ १७	१९ ३७	२१ ४२	२३ २३	० ४७	२ १०	३ ४३
11	२९	५ ३७	७ ५२	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१७ १३	१९ ३३	२१ ३८	२३ १९	० ४३	२ ०६	३ ३९
12	३०	५ ३३	७ ४८	१० ११	१२ ३०	१४ ४८	१७ ०९	१९ २९	२१ ३४	२३ १५	० ३९	२ ०२	३ ३५
13	३१	५ २९	७ ४४	१० ०७	१२ २६	१४ ४४	१७ ०५	१९ २५	२१ ३०	२३ ११	० ३५	१ ५८	३ ३१
14	३२	५ २५	७ ४०	१० ०३	१२ २२	१४ ४०	१७ ०१	१९ २१	२१ २६	२३ ०७	० ३१	१ ५४	३ २७
15	आ.	५ २२	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

आषाढ़ (जून-जुलाई)

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
15	१	७ ३६	९ ५९	१२ १८	१४ ३६	१६ ५७	१९ १७	२१ २२	२३ ०३	० २८	१ ५०	३ २३	५ १८
16	२	७ ३२	९ ५५	१२ १४	१४ ३२	१६ ५३	१९ १३	२१ १८	२२ ५९	० २४	१ ४६	३ १९	५ १४
17	३	७ २८	९ ५१	१२ १०	१४ २८	१६ ४९	१९ ०९	२१ १४	२२ ५५	० २०	१ ४२	३ १५	५ १०
18	४	७ २४	९ ४७	१२ ०६	१४ २४	१६ ४५	१९ ०५	२१ १०	२२ ५१	० १६	१ ३८	३ ११	५ ०६
19	५	७ २०	९ ४३	१२ ०२	१४ २०	१६ ४१	१९ ०१	२१ ०६	२२ ४७	० १२	१ ३४	३ ०७	५ ०२
20	६	७ १६	९ ३९	११ ५८	१४ १६	१६ ३७	१८ ५७	२१ ०२	२२ ४३	० ०८	१ ३०	३ ०३	४ ५८
21	७	७ १२	९ ३५	११ ५४	१४ १२	१६ ३३	१८ ५३	२० ५८	२२ ३९	० ०४	१ २६	२ ५९	४ ५४
22	८	७ ०९	९ ३१	११ ५०	१४ ०८	१६ २९	१८ ४९	२० ५४	२२ ३५	० ००	१ २२	२ ५५	४ ५०
23	९	७ ०५	९ २७	११ ४६	१४ ०४	१६ २५	१८ ४५	२० ५०	२२ ३१	२३ ५६	१ १८	२ ५१	४ ४६
24	१०	७ ०१	९ २३	११ ४२	१४ ००	१६ २१	१८ ४१	२० ४६	२२ २७	२३ ५२	१ १४	२ ४७	४ ४२
25	११	६ ५७	९ १९	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३८
26	१२	६ ५३	९ १५	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०६	२ ३९	४ ३४
27	१३	६ ४९	९ १२	११ ३१	१३ ४९	१६ १०	१८ ३०	२० ३५	२२ १६	२३ ४१	१ ०३	२ ३६	४ ३१
28	१४	६ ४५	९ ०८	११ २८	१३ ४५	१६ ०६	१८ २६	२० ३१	२२ १२	२३ ३७	० ५९	२ ३२	४ २७
29	१५	६ ४१	९ ०४	११ २३	१३ ४१	१६ ०२	१८ २२	२० २७	२२ ०८	२३ ३३	० ५५	२ २८	४ २३
30	१६	६ ३७	९ ००	११ १९	१३ ३७	१५ ५८	१८ १८	२० २३	२२ ०४	२३ २९	० ५१	२ २४	४ १९
जुला	१७	६ ३३	८ ५६	११ १५	१३ ३३	१५ ५४	१८ १४	२० १९	२२ ००	२३ २५	० ४७	२ २०	४ १५
2	१८	६ २९	८ ५२	११ ११	१३ २९	१५ ५०	१८ १०	२० १५	२१ ५६	२३ २१	० ४३	२ १६	४ ११
3	१९	६ २५	८ ४८	११ ०७	१३ २५	१५ ४६	१८ ०६	२० ११	२१ ५२	२३ १७	० ३९	२ १२	४ ०७
4	२०	६ २१	८ ४४	११ ०३	१३ २१	१५ ४२	१८ ०२	२० ०७	२१ ४८	२३ १३	० ३५	२ ०८	४ ०३
5	२१	६ १७	८ ४०	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	० ३२	२ ०५	३ ५९
6	२२	६ १३	८ ३६	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	० २८	२ ०१	३ ५५
7	२३	६ १०	८ ३३	१० ५२	१३ १०	१५ ३१	१७ ५१	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५८	३ ५२
8	२४	६ ०६	८ २९	१० ४८	१३ ०६	१५ २७	१७ ४७	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
9	२५	६ ०२	८ २५	१० ४४	१३ ०२	१५ २३	१७ ४३	१९ ४८	२१ २९	२२ ५४	० १७	१ ५०	३ ४४
10	२६	५ ५८	८ २१	१० ४०	१२ ५८	१५ १९	१७ ३९	१९ ४४	२१ २५	२२ ५०	० १३	१ ४६	३ ४०
11	२७	५ ५४	८ १७	१० ३६	१२ ५४	१५ १५	१७ ३५	१९ ४०	२१ २१	२२ ४६	० ०९	१ ४२	३ ३६
12	२८	५ ५०	८ १३	१० ३२	१२ ५०	१५ ११	१७ ३१	१९ ३६	२१ १७	२२ ४२	० ०५	१ ३८	३ ३२
13	२९	५ ४६	८ ०९	१० २८	१२ ४६	१५ ०७	१७ २७	१९ ३२	२१ १३	२२ ३८	० ०१	१ ३४	३ २८
14	३०	५ ४२	८ ०५	१० २४	१२ ४२	१५ ०३	१७ २३	१९ २८	२१ ०९	२२ ३४	२३ ५७	१ ३०	३ २४
15	३१	५ ३८	८ ०१	१० २०	१२ ३८	१४ ५९	१७ १९	१९ २४	२१ ०५	२२ ३०	२३ ५३	१ २६	३ २०
16	श्रा.	५ ३४	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

श्रावण (जुलाई-अगस्त)

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
16	१	७ ५७	१० १६	१२ ३४	१४ ५५	१७ १५	१९ २०	२१ ०१	२२ २६	२३ ४९	१ २२	३ १६	५ ३०
17	२	७ ५३	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५७	२२ २२	२३ ४५	१ १८	३ १२	५ २६
18	३	७ ४९	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५३	२२ १८	२३ ४१	१ १४	३ ०८	५ २२
19	४	७ ४६	१० ०५	१२ २३	१४ ४४	१७ ०४	१९ ०९	२० ४९	२२ १५	२३ ३८	१ ११	३ ०४	५ १८
20	५	७ ४२	१० ०१	१२ १९	१४ ४०	१७ ००	१९ ०५	२० ४५	२२ ११	२३ ३४	१ ०७	३ ००	५ १४
21	६	७ ३८	९ ५७	१२ १५	१४ ३६	१६ ५६	१९ ०१	२० ४१	२२ ०७	२३ ३०	१ ०३	२ ५६	५ १०
22	७	७ ३४	९ ५३	१२ ११	१४ ३२	१६ ५२	१८ ५७	२० ३७	२२ ०३	२३ २६	० ५९	२ ५२	५ ०६
23	८	७ ३०	९ ४९	१२ ०७	१४ २८	१६ ४८	१८ ५३	२० ३३	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४८	५ ०२
24	९	७ २६	९ ४५	१२ ०३	१४ २४	१६ ४४	१८ ४९	२० २९	२१ ५५	२३ १८	० ५१	२ ४४	४ ५८
25	१०	७ २२	९ ४१	११ ५९	१४ २०	१६ ४०	१८ ४५	२० २५	२१ ५१	२३ १४	० ४७	२ ४०	४ ५४
26	११	७ १८	९ ३७	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४१	२० २२	२१ ४७	२३ १०	० ४३	२ ३६	४ ५०
27	१२	७ १४	९ ३३	११ ५१	१४ १३	१६ ३३	१८ ३७	२० १८	२१ ४३	२३ ०६	० ३९	२ ३२	४ ४६
28	१३	७ १०	९ २९	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३३	२० १४	२१ ३९	२३ ०२	० ३५	२ २८	४ ४३
29	१४	७ ०६	९ २५	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ २९	२० १०	२१ ३५	२२ ५८	० ३१	२ २४	४ ३९
30	१५	७ ०२	९ २१	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २५	२० ०६	२१ ३१	२२ ५४	० २७	२ २१	४ ३५
31	१६	६ ५८	९ १७	११ ३६	१३ ५७	१६ १८	१८ २१	२० ०२	२१ २७	२२ ५०	० २३	२ १७	४ ३१
अग	१७	६ ५४	९ १३	११ ३२	१३ ५३	१६ १४	१८ १७	१९ ५८	२१ २३	२२ ४६	० १९	२ १३	४ २७
2	१८	६ ५०	९ ०९	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १३	१९ ५४	२१ १९	२२ ४२	० १५	२ ०९	४ २३
3	१९	६ ४६	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ०६	१८ ०९	१९ ५०	२१ १५	२२ ३८	० ११	२ ०५	४ १९
4	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४१	१६ ०२	१८ ०५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३५	० ०७	२ ०१	४ १५
5	२१	६ ३८	८ ५८	११ १७	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०७	२२ ३२	० ०४	१ ५८	४ ११
6	२२	६ ३४	८ ५४	११ १३	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २८	० ००	१ ५४	४ ०८
7	२३	६ ३१	८ ५०	११ ०९	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५४	१९ ३५	२१ ००	२२ २४	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
8	२४	६ २७	८ ४६	११ ०५	१३ २६	१५ ४७	१७ ५०	१९ ३२	२० ५६	२२ २०	२३ ५२	१ ४६	४ ००
9	२५	६ २३	८ ४२	११ ०१	१३ २२	१५ ४३	१७ ४६	१९ २८	२० ५२	२२ १६	२३ ४८	१ ४२	३ ५६
10	२६	६ १९	८ ३८	१० ५७	१३ १८	१५ ३९	१७ ४२	१९ २४	२० ४८	२२ १२	२३ ४४	१ ३८	३ ५२
11	२७	६ १५	८ ३४	१० ५३	१३ १४	१५ ३५	१७ ३८	१९ २०	२० ४४	२२ ०८	२३ ४०	१ ३४	३ ४८
12	२८	६ ११	८ ३०	१० ४९	१३ १०	१५ ३१	१७ ३४	१९ १६	२० ४१	२२ ०४	२३ ३६	१ ३१	३ ४४
13	२९	६ ०७	८ २६	१० ४५	१३ ०६	१५ २७	१७ ३०	१९ १२	२० ३७	२२ ००	२३ ३२	१ २७	३ ४१
14	३०	६ ०३	८ २२	१० ४१	१३ ०२	१५ २३	१७ २६	१९ ०८	२० ३३	२१ ५६	२३ २८	१ २३	३ ३७
15	३१	५ ५९	८ १८	१० ३७	१२ ५८	१५ १९	१७ २२	१९ ०४	२० २९	२१ ५२	२३ २४	१ १९	३ ३३
16	३२	५ ५५	८ १४	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १८	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९
17	भाद्र	५ ५१	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर)

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १०	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १४	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
18	२	८ ०६	१० २६	१२ ४६	१५ ०७	१७ १०	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
19	३	८ ०२	१० २२	१२ ४२	१५ ०३	१७ ०६	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
20	४	७ ५९	१० १८	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०२	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३५
21	५	७ ५५	१० १४	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३१
22	६	७ ५१	१० १०	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५५	१८ ३७	२० ०१	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २७
23	७	७ ४७	१० ०६	१२ २७	१४ ४७	१६ ५१	१८ ३३	१९ ५७	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०१	५ २३
24	८	७ ४३	१० ०२	१२ २३	१४ ४३	१६ ४७	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४४	२ ५७	५ १९
25	९	७ ३९	९ ५८	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २५	१९ ५०	२१ १३	२२ ४५	० ४०	२ ५४	५ १६
26	१०	७ ३५	९ ५४	१२ १६	१४ ३६	१६ ३९	१८ २१	१९ ४६	२१ ०९	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
27	११	७ ३१	९ ५०	१२ १२	१४ ३२	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०५	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
28	१२	७ २७	९ ४६	१२ ०८	१४ २८	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०१	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
29	१३	७ २३	९ ४२	१२ ०४	१४ २४	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५७	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
30	१४	७ १९	९ ३८	१२ ००	१४ २०	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५३	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
31	१५	७ १५	९ ३४	११ ५६	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितं	१६	७ ११	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
2	१७	७ ०७	९ २७	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
3	१८	७ ०३	९ २३	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ १०	० ०४	२ १८	४ ४०
4	१९	६ ५९	९ १९	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३६
5	२०	६ ५५	९ १५	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३२
6	२१	६ ५२	९ ११	११ ३२	१३ ५२	१५ ५६	१७ ३७	१९ ०२	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २८
7	२२	६ ४८	९ ०७	११ २८	१३ ४८	१५ ५२	१७ ३३	१८ ५८	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०२	४ २४
8	२३	६ ४४	९ ०३	११ २४	१३ ४४	१५ ४८	१७ २९	१८ ५४	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५८	४ २०
9	२४	६ ४०	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४४	१७ २५	१८ ५०	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५४	४ १६
10	२५	६ ३६	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४०	१७ २१	१८ ४६	२० ०९	२१ ४२	२३ ३६	१ ५०	४ १२
11	२६	६ ३२	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३६	१७ १७	१८ ४२	२० ०५	२१ ३८	२३ ३२	१ ४६	४ ०८
12	२७	६ २८	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३२	१७ १३	१८ ३८	२० ०१	२१ ३४	२३ २८	१ ४२	४ ०४
13	२८	६ २४	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २८	१७ ०९	१८ ३४	१९ ५७	२१ ३०	२३ २४	१ ३८	४ ००
14	२९	६ २०	८ ३९	११ ००	१३ २०	१५ २४	१७ ०५	१८ ३०	१९ ५३	२१ २६	२३ २०	१ ३४	३ ५६
15	३०	६ १६	८ ३५	१० ५६	१३ १६	१५ २०	१७ ०१	१८ २६	१९ ४९	२१ २२	२३ १६	१ ३०	३ ५२
16	आ.	६ १२	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर)

सितंबर	आश्विन प्र.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३१	१० ५२	१३ १२	१५ १६	१६ ५७	१८ २२	१९ ४५	२१ १८	२३ १२	१ २६	३ ४८	६ ०९
17	२	८ २७	१० ४८	१३ ०८	१५ १२	१६ ५३	१८ १८	१९ ४१	२१ १४	२३ ०८	१ २२	३ ४५	६ ०५
18	३	८ २३	१० ४४	१३ ०४	१५ ०८	१६ ४९	१८ १४	१९ ३७	२१ १०	२३ ०४	१ १८	३ ४१	६ ०१
19	४	८ १९	१० ४०	१३ ००	१५ ०४	१६ ४५	१८ १०	१९ ३३	२१ ०६	२३ ००	१ १४	३ ३७	५ ५७
20	५	८ १५	१० ३६	१२ ५६	१५ ००	१६ ४१	१८ ०६	१९ २९	२१ ०२	२२ ५६	१ १०	३ ३३	५ ५३
21	६	८ ११	१० ३२	१२ ५२	१४ ५६	१६ ३७	१८ ०२	१९ २५	२० ५८	२२ ५२	१ ०६	३ २९	५ ४९
22	७	८ ०७	१० २८	१२ ४८	१४ ५२	१६ ३३	१७ ५८	१९ २१	२० ५४	२२ ४८	१ ०२	३ २५	५ ४५
23	८	८ ०३	१० २४	१२ ४४	१४ ४८	१६ २९	१७ ५४	१९ १७	२० ५०	२२ ४४	० ५८	३ २१	५ ४१
24	९	७ ५९	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १३	२० ४६	२२ ४०	० ५४	३ १७	५ ३७
25	१०	७ ५५	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ०९	२० ४२	२२ ३६	० ५१	३ १३	५ ३३
26	११	७ ५१	१० १३	१२ ३३	१४ ३७	१६ १८	१७ ४३	१९ ०६	२० ३८	२२ ३२	० ४७	३ ०९	५ २९
27	१२	७ ४७	१० ०९	१२ २९	१४ ३३	१६ १४	१७ ३९	१९ ०२	२० ३४	२२ २९	० ४३	३ ०५	५ २५
28	१३	७ ४३	१० ०५	१२ २५	१४ २९	१६ १०	१७ ३५	१८ ५८	२० ३०	२२ २५	० ३९	३ ०१	५ २१
29	१४	७ ३९	१० ०१	१२ २१	१४ २५	१६ ०६	१७ ३१	१८ ५४	२० २६	२२ २१	० ३५	२ ५७	५ १७
30	१५	७ ३५	९ ५७	१२ १७	१४ २१	१६ ०२	१७ २७	१८ ५०	२० २२	२२ १७	० ३१	२ ५३	५ १३
अक्तू	१६	७ ३१	९ ५३	१२ १३	१४ १७	१५ ५८	१७ २३	१८ ४६	२० १८	२२ १३	० २७	२ ४९	५ ०९
2	१७	७ २७	९ ४९	१२ ०९	१४ १३	१५ ५४	१७ १९	१८ ४२	२० १५	२२ ०९	० २३	२ ४५	५ ०५
3	१८	७ २३	९ ४५	१२ ०५	१४ ०९	१५ ५०	१७ १५	१८ ३८	२० ११	२२ ०५	० १९	२ ४२	५ ०१
4	१९	७ १९	९ ४१	१२ ०१	१४ ०५	१५ ४६	१७ ११	१८ ३४	२० ०७	२२ ०१	० १५	२ ३८	४ ५७
5	२०	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ ०१	१५ ४२	१७ ०७	१८ ३०	२० ०३	२१ ५७	० ११	२ ३४	४ ५४
6	२१	७ ११	९ ३३	११ ५३	१३ ५७	१५ ३८	१७ ०३	१८ २६	१९ ५९	२१ ५३	० ०७	२ ३०	४ ५०
7	२२	७ ०७	९ २९	११ ४९	१३ ५३	१५ ३४	१६ ५९	१८ २२	१९ ५५	२१ ४९	० ०३	२ २७	४ ४६
8	२३	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १८	१९ ५१	२१ ४५	२३ ५९	२ २३	४ ४२
9	२४	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १४	१९ ४७	२१ ४१	२३ ५५	२ १९	४ ३८
10	२५	६ ५६	९ १८	११ ३८	१३ ४२	१५ २३	१६ ४८	१८ ११	१९ ४३	२१ ३७	२३ ५२	२ १५	४ ३५
11	२६	६ ५२	९ १४	११ ३४	१३ ३८	१५ १९	१६ ४४	१८ ०७	१९ ३९	२१ ३४	२३ ४८	२ ११	४ ३१
12	२७	६ ४८	९ १०	११ ३०	१३ ३४	१५ १५	१६ ४०	१८ ०३	१९ ३५	२१ ३०	२३ ४४	२ ०७	४ २७
13	२८	६ ४४	९ ०६	११ २६	१३ ३०	१५ ११	१६ ३६	१७ ५९	१९ ३१	२१ २६	२३ ४०	२ ०३	४ २३
14	२९	६ ४०	९ ०२	११ २२	१३ २६	१५ ०७	१६ ३२	१७ ५५	१९ २७	२१ २२	२३ ३६	१ ५९	४ १९
15	३०	६ ३६	८ ५८	११ १८	१३ २२	१५ ०३	१६ २८	१७ ५१	१९ २३	२१ १८	२३ ३२	१ ५५	४ १५
16	३१	६ ३२	८ ५४	११ १४	१३ १८	१४ ५९	१६ २४	१७ ४७	१९ १९	२१ १४	२३ २८	१ ५१	४ ११
17	का.	६ २८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर)

अक्टू.	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५०	११ १०	१३ १४	१४ ५५	१६ २०	१७ ४३	१९ १५	२१ १०	२३ २४	१ ४७	४ ०६	६ २४
18	२	८ ४६	११ ०६	१३ १०	१४ ५१	१६ १६	१७ ३९	१९ ११	२१ ०६	२३ २०	१ ४३	४ ०३	६ २०
19	३	८ ४२	११ ०२	१३ ०६	१४ ४७	१६ १२	१७ ३५	१९ ०७	२१ ०२	२३ १६	१ ३९	३ ५८	६ १६
20	४	८ ३८	१० ५८	१३ ०२	१४ ४३	१६ ०८	१७ ३१	१९ ०३	२० ५८	२३ १२	१ ३५	३ ५४	६ १२
21	५	८ ३४	१० ५४	१२ ५८	१४ ३९	१६ ०४	१७ २७	१८ ५९	२० ५४	२३ ०८	१ ३१	३ ५०	६ ०८
22	६	८ ३०	१० ५०	१२ ५४	१४ ३५	१६ ००	१७ २३	१८ ५५	२० ५०	२३ ०४	१ २७	३ ४६	६ ०४
23	७	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३१	१५ ५६	१७ १९	१८ ५१	२० ४६	२३ ०१	१ २३	३ ४३	६ ००
24	८	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १५	१८ ४७	२० ४२	२२ ५७	१ १९	३ ३९	५ ५७
25	९	८ १९	१० ३९	१२ ४३	१४ २३	१५ ४८	१७ १२	१८ ४४	२० ३८	२२ ५३	१ १६	३ ३५	५ ५३
26	१०	८ १५	१० ३५	१२ ३९	१४ २०	१५ ४५	१७ ०८	१८ ४०	२० ३५	२२ ४९	१ १२	३ ३२	५ ४९
27	११	८ ११	१० ३१	१२ ३५	१४ १६	१५ ४१	१७ ०४	१८ ३६	२० ३१	२२ ४५	१ ०८	३ २८	५ ४५
28	१२	८ ०७	१० २७	१२ ३१	१४ १२	१५ ३७	१७ ००	१८ ३२	२० २७	२२ ४१	१ ०४	३ २४	५ ४१
29	१३	८ ०३	१० २३	१२ २७	१४ ०८	१५ ३३	१६ ५६	१८ २८	२० २३	२२ ३७	१ ००	३ २०	५ ३७
30	१४	७ ५९	१० १९	१२ २३	१४ ०४	१५ २९	१६ ५२	१८ २४	२० १९	२२ ३३	० ५६	३ १६	५ ३४
31	१५	७ ५५	१० १५	१२ १९	१४ ००	१५ २५	१६ ४८	१८ २०	२० १५	२२ २९	० ५२	३ १२	५ ३०
नवं.	१६	७ ५१	१० ११	१२ १५	१३ ५६	१५ २१	१६ ४४	१८ १६	२० ११	२२ २५	० ४८	३ ०८	५ २६
2	१७	७ ४७	१० ०७	१२ ११	१३ ५२	१५ १७	१६ ४०	१८ १२	२० ०७	२२ २१	० ४४	३ ०४	५ २२
3	१८	७ ४३	१० ०३	१२ ०७	१३ ४८	१५ १३	१६ ३६	१८ ०९	२० ०३	२२ १७	० ४०	३ ००	५ १८
4	१९	७ ३९	९ ५९	१२ ०३	१३ ४४	१५ ०९	१६ ३२	१८ ०५	१९ ५९	२२ १३	० ३६	२ ५६	५ १४
5	२०	७ ३५	९ ५५	११ ५९	१३ ४०	१५ ०५	१६ २८	१८ ०१	१९ ५५	२२ ०९	० ३२	२ ५२	५ १०
6	२१	७ ३१	९ ५१	११ ५५	१३ ३६	१५ ०१	१६ २४	१७ ५७	१९ ५१	२२ ०५	० २८	२ ४८	५ ०६
7	२२	७ २८	९ ४७	११ ५१	१३ ३२	१४ ५७	१६ २०	१७ ५३	१९ ४७	२२ ०१	० २४	२ ४४	५ ०२
8	२३	७ २४	९ ४३	११ ४७	१३ २८	१४ ५३	१६ १६	१७ ४९	१९ ४३	२१ ५७	० २०	२ ४०	४ ५८
9	२४	७ २०	९ ३१	११ ४३	१३ २४	१४ ४९	१६ १२	१७ ४५	१९ ३९	२१ ५३	० १६	२ ३६	४ ५४
10	२५	७ १६	९ ३५	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०८	१७ ४१	१९ ३५	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ५०
11	२६	७ १२	९ ३१	११ ३५	१३ १७	१४ ४२	१६ ०५	१७ ३७	१९ ३२	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ४६
12	२७	७ ०८	९ २७	११ ३२	१३ १३	१४ ३८	१६ ०१	१७ ३३	१९ २८	२१ ४२	० ०५	२ २४	४ ४२
13	२८	७ ०४	९ २४	११ २८	१३ ०९	१४ ३४	१५ ५७	१७ २९	१९ २४	२१ ३८	० ०१	२ २०	४ ३८
14	२९	७ ००	९ २०	११ २४	१३ ०५	१४ ३०	१५ ५३	१७ २५	१९ २०	२१ ३४	२३ ५७	२ १६	४ ३४
15	३०	६ ५६	९ १६	११ २०	१३ ०१	१४ २६	१५ ४९	१७ २१	१९ १६	२१ ३०	२३ ५३	२ १२	४ ३०
16	मा.	६ ५२	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

मार्गशीर्ष (नवम्बर-दिसम्बर)

नवम्बर	मार्गशीर्ष	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १२	११ १६	१२ ५७	१४ २२	१५ ४५	१७ १७	१९ १२	२१ २६	२३ ४९	२ ०८	४ २६	६ ४८
17	२	९ ०८	११ १२	१२ ५३	१४ १८	१५ ४१	१७ १३	१९ ०८	२१ २२	२३ ४५	२ ०४	४ २२	६ ४४
18	३	९ ०४	११ ०८	१२ ४९	१४ १४	१५ ३७	१७ ०९	१९ ०४	२१ १८	२३ ४१	२ ००	४ १८	६ ४०
19	४	९ ००	११ ०४	१२ ४५	१४ १०	१५ ३३	१७ ०५	१९ ००	२१ १४	२३ ३७	१ ५६	४ १४	६ ३६
20	५	८ ५६	११ ००	१२ ४१	१४ ०६	१५ २९	१७ ०१	१८ ५६	२१ १०	२३ ३३	१ ५२	४ १०	६ ३२
21	६	८ ५२	१० ५६	१२ ३७	१४ ०२	१५ २५	१६ ५७	१८ ५२	२१ ०६	२३ २९	१ ४८	४ ०६	६ २८
22	७	८ ४८	१० ५२	१२ ३३	१३ ५८	१५ २१	१६ ५४	१८ ४९	२१ ०३	२३ २५	१ ४५	४ ०३	६ २५
23	८	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १७	१६ ५०	१८ ४५	२० ५९	२३ २१	१ ४१	३ ५९	६ २१
24	९	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १३	१६ ४६	१८ ४१	२० ५५	२३ १७	१ ३७	३ ५५	६ १७
25	१०	८ ३७	१० ४१	१२ २२	१३ ४७	१५ १०	१६ ४२	१८ ३७	२० ५१	२३ १३	१ ३३	३ ५१	६ १३
26	११	८ ३३	१० ३७	१२ १८	१३ ४३	१५ ०६	१६ ३८	१८ ३३	२० ४७	२३ १०	१ २९	३ ४७	६ ०९
27	१२	८ २९	१० ३३	१२ १४	१३ ३९	१५ ०२	१६ ३४	१८ २९	२० ४३	२३ ०६	१ २५	३ ४३	६ ०५
28	१३	८ २५	१० २९	१२ १०	१३ ३५	१४ ५८	१६ ३०	१८ २५	२० ३९	२३ ०२	१ २१	३ ३९	६ ०१
29	१४	८ २१	१० २५	१२ ०६	१३ ३१	१४ ५४	१६ २७	१८ २१	२० ३५	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ५७
30	१५	८ १७	१० २१	१२ ०२	१३ २७	१४ ५०	१६ २३	१८ १७	२० ३१	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ५३
दिसं.	१६	८ १३	१० १७	११ ५८	१३ २३	१४ ४६	१६ १९	१८ १३	२० २७	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ४९
2	१७	८ ०९	१० १३	११ ५४	१३ १९	१४ ४२	१६ १५	१८ ०९	२० २३	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ ४५
3	१८	८ ०५	१० ०९	११ ५०	१३ १५	१४ ३८	१६ ११	१८ ०५	२० १९	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ ४१
4	१९	८ ०१	१० ०५	११ ४६	१३ ११	१४ ३४	१६ ०७	१८ ०१	२० १५	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ ३७
5	२०	७ ५७	१० ०१	११ ४२	१३ ०७	१४ ३०	१६ ०३	१७ ५७	२० ११	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ ३३
6	२१	७ ५३	९ ५७	११ ३८	१३ ०३	१४ २६	१५ ५९	१७ ५३	२० ०७	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ २९
7	२२	७ ४९	९ ५३	११ ३४	१२ ५९	१४ २२	१५ ५५	१७ ४९	२० ०३	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ २५
8	२३	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १८	१५ ५१	१७ ४५	१९ ५९	२२ २३	० ४२	३ ००	५ २१
9	२४	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १४	१५ ४७	१७ ४१	१९ ५५	२२ १९	० ३८	२ ५६	५ १७
10	२५	७ ३८	९ ४२	११ २३	१२ ४८	१४ ११	१५ ४४	१७ ३८	१९ ५२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ १४
11	२६	७ ३४	९ ३८	११ १९	१२ ४४	१४ ०७	१५ ४०	१७ ३४	१९ ४८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ १०
12	२७	७ ३०	९ ३४	११ १५	१२ ४०	१४ ०३	१५ ३६	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०६
13	२८	७ २६	९ ३०	११ ११	१२ ३६	१३ ५९	१५ ३२	१७ २६	१९ ४०	२२ ०४	० २३	२ ४१	५ ०३
14	२९	७ २२	९ २६	११ ०७	१२ ३२	१३ ५५	१५ २८	१७ २२	१९ ३६	२२ ००	० १९	२ ३७	४ ५९
15	३०	७ १८	९ २२	११ ०३	१२ २८	१३ ५१	१५ २४	१७ १८	१९ ३२	२१ ५६	० १५	२ ३३	४ ५५
16	पौ.	७ १४	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

पौष (दिसम्बर-जनवरी)

दिसंबर	पौष प्रवि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १८	१० ५९	१२ २४	१३ ४७	१५ २०	१७ १४	१९ २८	२१ ५२	० ११	२ २९	४ ५०	७ १०
17	२	९ १४	१० ५५	१२ २१	१३ ४३	१५ १६	१७ १०	१९ २४	२१ ४८	० ०७	२ २५	४ ४६	७ ०६
18	३	९ १०	१० ५२	१२ १७	१३ ३९	१५ १२	१७ ०६	१९ २०	२१ ४४	० ०३	२ २१	४ ४२	७ ०२
19	४	९ ०६	१० ४८	१२ १३	१३ ३५	१५ ०८	१७ ०२	१९ १६	२१ ४०	२३ ५९	२ १७	४ ३८	६ ५८
20	५	९ ०२	१० ४४	१२ ०९	१३ ३१	१५ ०४	१६ ५८	१९ १२	२१ ३६	२३ ५५	२ १३	४ ३४	६ ५४
21	६	८ ५८	१० ४०	१२ ०५	१३ २७	१५ ००	१६ ५४	१९ ०८	२१ ३२	२३ ५१	२ १०	४ ३०	६ ५०
22	७	८ ५४	१० ३६	१२ ०१	१३ २३	१४ ५६	१६ ५०	१९ ०५	२१ २८	२३ ४७	२ ०६	४ २६	६ ४६
23	८	८ ५०	१० ३२	११ ५७	१३ १९	१४ ५२	१६ ४६	१९ ०१	२१ २४	२३ ४३	२ ०२	४ २२	६ ४२
24	९	८ ४७	१० २८	११ ५३	१३ १५	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ २०	२३ ३९	१ ५८	४ १८	६ ३८
25	१०	८ ४३	१० २४	११ ४९	१३ ११	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १६	२३ ३५	१ ५४	४ १४	६ ३५
26	११	८ ३९	१० २०	११ ४५	१३ ०८	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ १२	२३ ३१	१ ५०	४ १०	६ ३१
27	१२	८ ३५	१० १६	११ ४१	१३ ०४	१४ ३७	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०८	२३ २७	१ ४६	४ ०७	६ २७
28	१३	८ ३१	१० १२	११ ३७	१३ ००	१४ ३३	१६ २७	१८ ४१	२१ ०४	२३ २३	१ ४२	४ ०३	६ २३
29	१४	८ २७	१० ०८	११ ३३	१२ ५६	१४ २९	१६ २३	१८ ३७	२१ ००	२३ १९	१ ३८	३ ५९	६ १९
30	१५	८ २३	१० ०४	११ २९	१२ ५२	१४ २५	१६ १९	१८ ३३	२० ५६	२३ १५	१ ३४	३ ५५	६ १५
31	१६	८ १९	१० ००	११ २५	१२ ४८	१४ २१	१६ १५	१८ २९	२० ५२	२३ ११	१ ३०	३ ५१	६ ११
जन.	१७	८ १५	९ ५६	११ २१	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २५	२० ४८	२३ ०७	१ २६	३ ४७	६ ७
2	१८	८ ११	९ ५२	११ १७	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २१	२० ४४	२३ ०३	१ २२	३ ४३	६ ३
3	१९	८ ०७	९ ४८	११ १३	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १७	२० ४०	२२ ५९	१ १८	३ ३९	५ ५९
4	२०	८ ०३	९ ४४	११ ०९	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १३	२० ३६	२२ ५५	१ १४	३ ३५	५ ५५
5	२१	७ ५९	९ ४०	११ ०५	१२ २८	१४ ०१	१५ ५५	१८ ०९	२० ३२	२२ ५१	१ १०	३ ३१	५ ५१
6	२२	७ ५५	९ ३६	११ ०१	१२ २४	१३ ५७	१५ ५१	१८ ०५	२० २८	२२ ४७	१ ०६	३ २७	५ ४७
7	२३	७ ५१	९ ३२	१० ५७	१२ २०	१३ ५३	१५ ४७	१८ ०१	२० २४	२२ ४३	१ ०२	३ २३	५ ४३
8	२४	७ ४७	९ २८	१० ५३	१२ १६	१३ ४९	१५ ४३	१७ ५७	२० २०	२२ ३९	० ५८	३ १९	५ ३९
9	२५	७ ४३	९ २४	१० ४९	१२ १२	१३ ४५	१५ ३९	१७ ५३	२० १६	२२ ३५	० ५४	३ १५	५ ३५
10	२६	७ ३९	९ २०	१० ४५	१२ ०८	१३ ४१	१५ ३५	१७ ४९	२० १२	२२ ३१	० ५०	३ ११	५ ३१
11	२७	७ ३५	९ १६	१० ४१	१२ ०४	१३ ३७	१५ ३१	१७ ४५	२० ०८	२२ २७	० ४६	३ ०७	५ २७
12	२८	७ ३१	९ १२	१० ३७	१२ ००	१३ ३३	१५ २७	१७ ४१	२० ०४	२२ २३	० ४२	३ ०३	५ २३
13	२९	७ २७	९ ०८	१० ३३	११ ५६	१३ २९	१५ २३	१७ ३७	२० ००	२२ १९	० ३८	२ ५९	५ १९
14	मा.	७ २३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

माघ (जनवरी-फरवरी)

जनवरी	माघ प्रवि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ०४	१० २९	११ ५२	१३ २५	१५ १९	१७ ३३	१९ ५६	२२ १५	० ३४	२ ५५	५ १५	७ १९
15	२	९ ००	१० २५	११ ४८	१३ २१	१५ १५	१७ २९	१९ ५२	२२ ११	० ३०	२ ५१	५ ११	७ १५
16	३	८ ५७	१० २२	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २५	१९ ४९	२२ ८	० २७	२ ४७	५ ७	७ ११
17	४	८ ५३	१० १८	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २१	१९ ४५	२२ ४	० २३	२ ४३	५ ३	७ ७
18	५	८ ४९	१० १४	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १८	१९ ४१	२२ ०	० १९	२ ३९	४ ५९	७ ३
19	६	८ ४५	१० १०	११ ३३	१३ ६	१५ ००	१७ १४	१९ ३७	२१ ५६	० १५	२ ३५	४ ५६	६ ५९
20	७	८ ४१	१० ०६	११ २९	१३ २	१४ ५६	१७ १०	१९ ३३	२१ ५२	० ११	२ ३१	४ ५२	६ ५५
21	८	८ ३७	१० २	११ २५	१२ ५८	१४ ५२	१७ ९	१९ २९	२१ ४८	० ७	२ २७	४ ५७	६ ५२
22	९	८ ३३	९ ५८	११ २१	१२ ५४	१४ ४८	१७ २	१९ २५	२१ ४४	० ३	२ २३	४ ४४	६ ४८
23	१०	८ २९	९ ५४	११ १७	१२ ५०	१४ ४४	१६ ५८	१९ २१	२१ ४०	२३ ५९	२ १९	४ ४०	६ ४४
24	११	८ २५	९ ५०	११ १३	१२ ४६	१४ ४०	१६ ५४	१९ १८	२१ ३६	२३ ५५	२ १६	४ ३६	६ ४०
25	१२	८ २१	९ ४६	११ ९	१२ ४२	१४ ३६	१६ ५०	१९ १४	२१ ३२	२३ ५१	२ १२	४ ३२	६ ३६
26	१३	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३९	१४ ३३	१६ ४७	१९ १०	२१ २९	२३ ४८	२ ८	४ २८	६ ३२
27	१४	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३५	१४ २९	१६ ४३	१९ ६	२१ २५	२३ ४४	२ ४	४ २४	६ २८
28	१५	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३१	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २१	२३ ४०	२ ०	४ २०	६ २४
29	१६	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १७	२३ ३६	१ ५६	४ १६	६ २०
30	१७	८ २	९ २७	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १३	२३ ३२	१ ५२	४ १३	६ १७
31	१८	७ ५८	९ २३	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २७	१८ ५०	२१ ९	२३ २८	१ ४८	४ ९	६ १३
फर	१९	७ ५४	९ १९	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २३	१८ ४६	२१ ५	२३ २४	१ ४४	४ ५	६ ९
2	२०	७ ५०	९ १५	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ १९	१८ ४२	२१ १	२३ २०	१ ४०	४ १	६ ५
3	२१	७ ४६	९ ११	१० ३४	१२ ७	१४ १	१६ १५	१८ ३८	२० ५७	२३ १६	१ ३६	३ ५७	६ १
4	२२	७ ४२	९ ७	१० ३०	१२ ३	१३ ५७	१६ ११	१८ ३४	२० ५३	२३ १२	१ ३२	३ ५३	५ ५७
5	२३	७ ३८	९ ३	१० २६	११ ५९	१३ ५३	१६ ७	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २८	३ ४९	५ ५३
6	२४	७ ३४	८ ५९	१० २२	११ ५५	१३ ४९	१६ ३	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ४९
7	२५	७ ३०	८ ५५	१० १८	११ ५१	१३ ४५	१५ ५९	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४१	५ ४५
8	२६	७ २६	८ ५१	१० १४	११ ४७	१३ ४१	१५ ५५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३७	५ ४१
9	२७	७ २२	८ ४७	१० १०	११ ४३	१३ ३७	१५ ५१	१८ १५	२० ३४	२२ ५२	१ १३	३ ३३	५ ३७
10	२८	७ १८	८ ४३	१० ६	११ ३९	१३ ३३	१५ ४७	१८ ११	२० ३०	२२ ४८	१ ९	३ २९	५ ३३
11	२९	७ १४	८ ३९	१० २	११ ३५	१३ २९	१५ ४३	१८ ७	२० २६	२२ ४४	१ ५	३ २५	५ २९
12	३०	७ १०	८ ३५	९ ५८	११ ३१	१३ २५	१५ ३९	१८ ३	२० २२	२२ ४०	१ १	३ २१	५ २५
13	फा.	७ ७	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

फाल्गुन (फरवरी-मार्च)

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३१	९ ५४	११ २७	१३ २१	१५ ३५	१७ ५९	२० १८	२२ ३६	० ५७	३ १७	५ २१	७ ३
14	२	८ २७	९ ५०	११ २३	१३ १७	१५ ३१	१७ ५५	२० १४	२२ ३२	० ५३	३ १३	५ १७	६ ५९
15	३	८ २३	९ ४६	११ १९	१३ १३	१५ २७	१७ ५१	२० १०	२२ २८	० ४९	३ ९	५ १३	६ ५५
16	४	८ १९	९ ४२	११ १५	१३ ९	१५ २३	१७ ४७	२० ६	२२ २४	० ४५	३ ५	५ ९	६ ५१
17	५	८ १५	९ ३८	११ ११	१३ ५	१५ १९	१७ ४३	२० २	२२ २०	० ४१	३ १	५ ६	६ ४७
18	६	८ ११	९ ३४	११ ७	१३ १	१५ १५	१७ ३९	१९ ५८	२२ १६	० ३७	२ ५७	५ २	६ ४३
19	७	८ ७	९ ३०	११ ३	१२ ५७	१५ ११	१७ ३५	१९ ५४	२२ १२	० ३३	२ ५३	४ ५८	६ ३९
20	८	८ ४	९ २७	११ ०	१२ ५३	१५ ७	१७ ३१	१९ ५०	२२ ८	० २९	२ ४९	४ ५४	६ ३५
21	९	८ ०	९ २३	१० ५६	१२ ५०	१५ ४	१७ २७	१९ ४६	२२ ४	० २५	२ ४६	४ ५०	६ ३१
22	१०	७ ५६	९ १९	१० ५२	१२ ४६	१५ ०	१७ २३	१९ ४२	२२ ०	० २१	२ ४२	४ ४६	६ २७
23	११	७ ५२	९ १४	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
24	१२	७ ४८	९ १०	१० ४४	१२ ३८	१४ ५२	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	० १४	२ ३४	४ ३८	६ १९
25	१३	७ ४४	९ ७	१० ४०	१२ ३४	१४ ४८	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	० १०	२ ३०	४ ३४	६ १५
26	१४	७ ४०	९ ३	१० ३६	१२ ३०	१४ ४४	१७ ७	१९ २६	२१ ४४	० ६	२ २६	४ ३०	६ ११
27	१५	७ ३६	८ ५९	१० ३२	१२ २६	१४ ४०	१७ ३	१९ २२	२१ ४०	० २	२ २२	४ २६	६ ७
28	१६	७ ३२	८ ५५	१० २८	१२ २२	१४ ३६	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ५८	२ १८	४ २२	६ ४
मार्च	१७	७ २८	८ ५१	१० २४	१२ १८	१४ ३२	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ५४	२ १४	४ १८	६ ०
2	१८	७ २४	८ ४७	१० २०	१२ १४	१४ २८	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ५०	२ १०	४ १४	५ ५६
3	१९	७ २१	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २५	१६ ४७	१९ ६	२१ २४	२३ ४६	२ ६	४ १०	५ ५२
4	२०	७ १७	८ ४०	१० १३	१२ ७	१४ २१	१६ ४३	१९ २	२१ २०	२३ ४२	२ २	४ ६	५ ४८
5	२१	७ १३	८ ३६	१० ९	१२ ३	१४ १७	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ ३९	१ ५८	४ ३	५ ४४
6	२२	७ ९	८ ३२	१० ५	११ ५९	१४ १३	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ ३५	१ ५४	३ ५९	५ ४०
7	२३	७ ५	८ २८	१० १	११ ५५	१४ ९	१६ ३१	१८ ५०	२१ ९	२३ ३१	१ ५०	३ ५५	५ ३६
8	२४	७ १	८ २४	९ ५७	११ ५१	१४ ५	१६ २७	१८ ४६	२१ ५	२३ २७	१ ४६	३ ५१	५ ३२
9	२५	६ ५७	८ २०	९ ५३	११ ४७	१४ १	१६ २४	१८ ४३	२१ १	२३ २३	१ ४३	३ ४७	५ २८
10	२६	६ ५३	८ १६	९ ४९	११ ४३	१३ ५७	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १९	१ ३९	३ ४३	५ २४
11	२७	६ ४९	८ १२	९ ४५	११ ३९	१३ ५३	१६ १७	१८ ३५	२० ५३	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
12	२८	६ ४५	८ ८	९ ४१	११ ३५	१३ ४९	१६ १३	१८ ३२	२० ४९	२३ १२	१ ३१	३ ३५	५ १७
13	२९	६ ४१	८ ४	९ ३७	११ ३१	१३ ४५	१६ ९	१८ २८	२० ४५	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
14	चैत्र	६ ३७	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

चैत्र (मार्च-अप्रैल)

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ००	९ ३३	११ २७	१३ ४१	१६ ५	१८ २४	२० ४१	२३ ७	१ २४	३ २८	५ ९	६ ३३
15	२	७ ५६	९ २९	११ २३	१३ ३७	१६ १	१८ २०	२० ३७	२३ ०	१ २०	३ २४	५ ५	६ २९
16	३	७ ५२	९ २५	११ १९	१३ ३३	१५ ५७	१८ १६	२० ३३	२२ ५६	१ १६	३ २०	५ १	६ २५
17	४	७ ४८	९ २१	११ १५	१३ २९	१५ ५३	१८ १२	२० २९	२२ ५२	१ १२	३ १६	४ ५७	६ २१
18	५	७ ४४	९ १७	११ ११	१३ २५	१५ ४९	१८ ८	२० २५	२२ ४८	१ ८	३ १२	४ ५३	६ १७
19	६	७ ४०	९ १३	११ ७	१३ २१	१५ ४५	१८ ४	२० २१	२२ ४४	१ ४	३ ८	४ ४९	६ १३
20	७	७ ३६	९ ९	११ ३	१३ १८	१५ ४१	१८ ०	२० १७	२२ ४०	१ ०	३ ४	४ ४५	६ ९
21	८	७ ३२	९ ५	१० ५९	१३ १४	१५ ३७	१७ ५६	२० १३	२२ ३६	० ५६	३ ००	४ ४१	६ ५
22	९	७ २८	९ १	१० ५५	१३ १०	१५ ३३	१७ ५२	२० ९	२२ ३२	० ५२	२ ५६	४ ३७	६ १
23	१०	७ २५	८ ५७	१० ५२	१३ ६	१५ २९	१७ ४८	२० ५	२२ २८	० ४८	२ ५२	४ ३३	५ ५७
24	११	७ २१	८ ५३	१० ४८	१३ २	१५ २५	१७ ४४	२० १	२२ २४	० ४४	२ ४८	४ ३०	५ ५३
25	१२	७ १७	८ ४९	१० ४४	१२ ५८	१५ २१	१७ ४०	१९ ५७	२२ २०	० ४०	२ ४४	४ २६	५ ४९
26	१३	७ १३	८ ४५	१० ४०	१२ ५४	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ १६	० ३६	२ ४०	४ २२	५ ४५
27	१४	७ ९	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १३	१७ ३२	१९ ५०	२२ १२	० ३२	२ ३६	४ १८	५ ४१
28	१५	७ ५	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ९	१७ २८	१९ ४६	२२ ८	० २८	२ ३३	४ १४	५ ३७
29	१६	७ १	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ५	१७ २४	१९ ४२	२२ ४	० २४	२ २९	४ १०	५ ३४
30	१७	६ ५७	८ ३०	१० २४	१२ ३९	१५ १	१७ २०	१९ ३८	२२ ०	० २०	२ २५	४ ६	५ ३०
31	१८	६ ५३	८ २६	१० २०	१२ ३५	१४ ५७	१७ १६	१९ ३४	२१ ५६	० १६	२ २१	४ २	५ २६
अप्रै	१९	६ ४९	८ २२	१० १६	१२ ३१	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ५२	० १२	२ १७	३ ५८	५ २२
2	२०	६ ४५	८ १८	१० १२	१२ २७	१४ ४९	१७ ८	१९ २६	२१ ४८	० ८	२ १३	३ ५४	५ १८
3	२१	६ ४१	८ १४	१० ८	१२ २३	१४ ४५	१७ ४	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ ९	३ ५०	५ १४
4	२२	६ ३७	८ १०	१० ४	१२ १९	१४ ४१	१७ ०	१९ १९	२१ ४०	२४ ००	२ ५	३ ४६	५ १०
5	२३	६ ३३	८ ०६	१० ०	१२ १५	१४ ३७	१६ ५६	१९ १५	२१ ३७	२३ ५७	२ १	३ ४२	५ ६
6	२४	६ ३०	८ ३	९ ५६	१२ ११	१४ ३३	१६ ५२	१९ ११	२१ ३३	२३ ५३	१ ५७	३ ३८	५ २
7	२५	६ २६	७ ५९	९ ५३	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१९ ७	२१ २९	२३ ४९	१ ५३	३ ३४	४ ५८
8	२६	६ २२	७ ५५	९ ४९	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१९ ३	२१ २५	२३ ४५	१ ४९	३ ३०	४ ५४
9	२७	६ १८	७ ५१	९ ४५	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ५९	२१ २१	२३ ४१	१ ४५	३ २६	४ ५१
10	२८	६ १४	७ ४७	९ ४१	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ५५	२१ १७	२३ ३७	१ ४१	३ २२	४ ४७
11	२९	६ १०	७ ४३	९ ३७	११ ५१	१४ १४	१६ ३३	१८ ५१	२१ १३	२३ ३३	१ ३७	३ १८	४ ४३
12	३०	६ ६	७ ३९	९ ३३	११ ४७	१४ १०	१६ २९	१८ ४७	२१ ९	२३ २९	१ ३४	३ १४	४ ३९
13	३१	६ २	७ ३५	९ २९	११ ४३	१४ ६	१६ २५	१८ ४३	२१ ५	२३ २५	१ ३०	३ ११	४ ३६
14	वै.	५ ५८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३/४ मिनट घटाने तथा अस्त में ३/४ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	6 59	17 20	7 20	17 40	7 32	17 47	7 17	17 24	7 05	17 43	6 20	16 59	6 48	17 15	1
2	35	34	29	31	23	30	21	33	6 59	21	20	41	32	48	17	25	05	44	21	17 00	48	16	2
3	35	35	29	32	23	31	21	34	7 00	21	21	43	33	49	17	25	06	44	21	00	48	17	3
4	35	36	29	33	24	32	22	35	00	22	21	43	33	50	18	26	06	45	21	01	48	17	4
5	35	36	29	34	24	32	22	35	00	23	21	43	33	51	18	27	06	45	22	02	49	18	5
6	35	37	29	35	24	33	22	36	00	24	21	44	33	51	18	28	06	46	22	02	49	19	6
7	35	38	29	36	24	34	22	37	00	24	22	45	33	52	18	28	07	47	22	03	49	20	7
8	35	39	29	36	24	35	22	38	00	25	22	46	33	52	18	29	07	47	22	04	49	20	8
9	35	40	29	37	24	36	22	39	01	26	22	46	33	53	18	30	07	48	22	04	49	21	9
10	35	40	29	38	24	37	22	39	01	26	22	47	33	54	18	31	07	49	22	05	49	22	10
11	35	41	29	39	24	38	22	40	01	27	22	48	33	55	18	32	07	49	23	06	49	23	11
12	35	42	29	39	24	39	22	41	01	28	22	49	33	56	18	32	07	50	23	06	49	23	12
13	35	43	29	40	24	40	22	42	01	29	22	50	33	57	18	33	07	51	23	07	49	24	13
14	35	44	29	41	24	40	22	43	01	30	21	50	33	58	18	34	07	51	23	08	49	25	14
15	35	45	29	42	24	41	22	44	01	30	21	51	33	17 59	18	35	07	52	23	09	49	26	15
16	35	46	29	43	24	42	22	45	01	31	21	52	33	18 00	18	36	07	53	23	09	49	26	16
17	34	47	29	44	24	42	21	46	01	32	21	53	33	01	18	37	07	53	23	10	49	27	17
18	34	47	28	46	23	43	21	46	00	33	21	53	32	01	17	38	07	54	23	11	49	28	18
19	34	48	28	47	23	44	21	47	00	34	21	54	32	02	17	39	07	55	23	11	49	29	19
20	34	49	28	46	23	45	21	48	00	34	21	55	32	02	17	40	07	56	23	12	49	29	20
21	33	50	27	47	23	46	20	48	00	35	20	56	32	03	17	41	06	56	23	13	49	30	21
22	33	51	27	48	22	47	20	49	7 00	36	21	56	32	04	16	42	06	57	22	13	49	31	22
23	33	52	27	49	22	48	20	50	6 59	37	20	57	31	05	16	43	06	58	22	14	48	32	23
24	32	53	27	50	21	49	20	51	59	37	20	58	31	06	16	43	06	59	22	15	48	32	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	59	38	19	17 59	31	08	15	44	06	17 59	22	16	48	33	25
26	31	55	26	52	21	50	19	53	59	39	19	18 00	30	08	15	44	05	18 00	22	16	47	34	26
27	31	56	25	53	20	51	19	54	59	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	27
28	30	57	25	54	20	52	18	55	58	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	28
29	30	58	24	55	19	53	18	56	57	41	18	02	30	10	13	47	05	02	21	18	46	36	29
30	29	17 58	23	56	19	54	17	56	57	42	17	03	29	11	13	48	05	02	21	19	46	37	30
31	7 29	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	6 57	17 43	7 17	18 03	7 29	18 12	7 12	17 49	7 04	18 03	6 20	17 20	6 46	17 38	31
फर.	28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	6 56	17 44	7 16	18 04	7 28	18 13	7 12	17 50	7 04	18 04	6 20	17 20	6 45	17 38	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	59	56	44	16	05	28	14	11	50	03	05	20	21	45	39	2
3	27	02	21	17 59	17	57	15	17 59	55	45	15	06	27	15	11	51	03	06	19	22	44	40	3
4	26	03	21	18 00	16	58	14	18 00	55	46	15	06	26	15	10	52	03	06	19	22	44	41	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	01	54	47	14	07	26	16	09	53	02	07	18	23	43	41	5
6	25	05	21	02	15	18 00	13	02	53	47	14	08	25	17	09	54	02	08	18	23	43	42	6
7	24	06	19	02	14	01	13	03	53	48	14	08	25	18	08	55	01	08	17	24	42	43	7
8	7 23	18 07	7 18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	6 52	17 49	7 13	18 09	7 24	18 18	7 07	17 56	7 00	18 09	6 17	17 25	6 41	17 43	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	6 52	17 50	7 12	18 10	7 23	18 19	7 07	17 56	7 00	18 09	6 16	17 25	6 41	17 44	9
10	21	08	16	05	11	04	10	06	51	50	11	11	23	19	06	57	6 59	10	16	26	40	45	10
11	20	09	15	06	11	05	09	06	50	51	10	12	22	20	05	58	59	11	15	26	39	45	11
12	20	10	14	07	10	06	09	07	50	52	10	12	21	21	04	17 59	58	11	15	27	39	46	12
13	19	11	13	08	09	06	08	08	49	53	09	13	20	22	03	18 00	58	12	14	28	38	47	13
14	17	12	12	09	08	07	07	09	48	53	08	14	19	23	03	00	57	12	14	28	37	47	14
15	18	13	11	10	07	08	06	09	47	54	07	14	18	23	02	01	57	13	13	29	37	48	15
16	16	14	10	11	06	09	06	10	47	55	06	15	18	24	01	02	56	13	12	29	36	49	16
17	15	14	10	11	05	09	05	11	46	55	06	16	17	25	7 00	03	55	14	12	30	35	49	17
18	13	15	09	12	04	10	04	12	45	56	05	16	16	26	6 59	04	55	14	11	30	34	50	18
19	14	16	08	13	03	11	03	13	44	57	04	17	15	26	58	04	54	15	10	31	34	50	19
20	12	17	07	13	02	11	02	13	43	57	03	18	14	27	57	05	53	15	10	31	33	51	20
21	11	18	06	14	01	12	01	14	42	58	02	18	13	28	56	06	52	16	09	32	32	52	21
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	42	59	01	19	12	28	55	07	51	17	08	32	31	52	22
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	41	17 59	7 00	20	11	29	54	07	50	17	07	33	30	53	23
24	08	20	03	17	58	14	58	15	40	18 00	6 59	20	10	29	53	08	50	17	07	33	29	53	24
25	07	21	02	18	57	15	57	16	39	01	59	21	09	30	52	09	49	18	06	34	29	54	25
26	06	22	01	19	56	15	56	16	38	01	58	21	08	31	51	09	48	18	05	34	28	55	26
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	37	02	57	23	07	31	50	10	47	18	04	35	27	55	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 36	18 02	6 55	18 23	7 06	18 32	6 49	18 11	6 47	18 19	6 03	17 35	6 26	17 56	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 34	18 03	6 55	18 23	7 05	18 33	6 47	18 12	6 46	18 20	6 01	17 37	6 25	17 56	मार्च
2	01	25	56	21	52	19	52	19	33	04	54	24	04	33	46	13	45	20	6 00	38	24	57	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	32	05	53	24	03	34	45	14	44	21	5 59	38	23	57	3
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	30	05	52	25	02	34	44	14	43	21	58	38	22	58	4
5	57	27	53	23	49	20	49	22	29	06	51	26	01	35	43	15	42	22	57	39	21	58	5
6	56	28	51	24	48	21	48	22	28	06	50	26	7 00	35	41	16	42	22	56	39	20	59	6
7	55	29	50	25	47	21	47	23	27	07	49	27	6 59	36	40	18	41	23	56	40	19	17 59	7
8	54	29	49	25	45	22	45	23	26	07	48	27	58	36	39	17	40	23	55	40	18	18 00	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	25	08	46	28	57	37	38	18	39	23	54	40	17	00	9
10	51	31	46	27	43	23	43	24	24	08	45	28	56	38	37	18	38	24	53	41	16	01	10
11	50	31	45	27	42	24	42	25	23	09	44	29	55	39	36	19	37	24	52	41	15	01	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	22	09	43	30	54	39	35	20	36	25	51	42	14	02	12
13	48	33	43	29	40	26	40	27	21	10	42	31	53	40	33	20	35	25	50	42	13	02	13
14	46	34	42	29	39	27	38	27	20	11	41	31	52	40	32	21	34	26	49	42	12	03	14
15	45	34	40	29	38	27	37	28	19	11	40	32	50	41	31	21	33	26	48	43	11	03	15
16	44	35	39	30	36	28	36	28	18	12	39	32	49	41	30	22	32	26	47	43	10	03	16
17	43	36	38	31	35	28	35	29	17	12	38	33	48	42	29	23	31	27	46	44	09	04	17
18	41	36	36	31	34	29	34	29	16	13	37	33	47	42	27	23	31	27	45	44	08	04	18
19	40	37	35	32	33	30	33	30	15	13	36	34	46	43	26	24	30	27	45	44	07	05	19
20	39	38	34	33	31	31	31	30	14	14	35	34	45	43	25	25	29	27	44	45	06	05	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	13	14	33	35	44	44	24	25	28	28	43	45	05	06	21
22	36	39	32	34	29	32	29	31	12	15	32	35	43	44	23	26	27	28	42	45	04	07	22
23	35	40	31	34	28	32	28	32	11	15	31	36	41	45	21	26	26	28	41	46	03	07	23
24	34	40	30	35	26	33	26	32	10	16	30	36	40	45	20	27	25	29	40	46	02	07	24
25	32	41	28	36	25	33	25	33	09	16	29	37	39	46	19	28	24	29	39	46	01	08	25
26	31	42	27	37	24	34	24	33	08	17	28	37	38	46	18	28	23	29	38	47	6 00	08	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 07	18 17	6 27	18 38	6 37	18 47	6 17	18 29	6 22	18 30	5 37	17 47	5 59	18 09	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 05	18 18	6 26	18 38
29	27	44	23	39	20	35	21	36	04	18	25	38
30	26	44	22	39	19	36	20	36	03	19	24	39
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 02	18 19	6 23	18 39
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 01	18 20	6 22	18 40
2	22	46	18	42	15	38	16	38	6 00	20	21	40
3	21	47	17	42	14	39	15	38	5 59	21	20	41
4	20	48	16	43	13	40	14	39	58	21	19	41
5	19	48	15	43	12	40	13	39	57	22	18	42
6	17	49	13	44	11	41	12	40	56	22	16	42
7	16	50	12	44	10	41	11	40	55	23	15	43
8	15	50	11	45	09	82	09	41	54	23	14	43
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	53	24	13	44
10	16	52	09	47	06	43	07	43	52	24	12	44
11	11	52	07	47	05	43	06	43	50	25	11	45
12	10	53	06	48	03	44	05	44	49	25	10	45
13	09	54	05	48	02	44	04	44	48	26	09	46
14	08	54	04	49	01	45	03	45	47	26	08	46
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	47	26	08	46
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	45	27	06	47
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	44	28	05	48
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	43	28	04	48
19	02	58	57	53	56	48	58	47	43	28	03	49
20	01	58	56	54	55	49	57	48	42	29	02	49
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	41	29	01	50
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	41	29	6 01	50
23	58	00	53	56	52	51	54	50	40	30	5 59	51
24	57	01	52	57	51	51	53	51	39	31	59	52
25	56	02	51	57	50	52	52	51	38	31	58	52
26	55	02	50	57	49	53	51	52	37	32	57	53
27	54	03	49	58	48	53	50	52	36	32	56	53
28	53	04	48	58	47	54	49	53	35	33	55	54
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	34	34	54	54
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 33	18 34	5 53	18 55
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 32	18 35	5 53	18 55
2	49	06	45	02	43	57	45	55	37	35	52	56
3	48	07	43	03	43	57	44	56	31	36	51	56
4	47	08	43	03	42	58	44	57	30	36	50	57
5	46	09	42	04	42	59	43	57	30	37	50	57
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	29	37	49	58
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	28	38	48	59
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	27	38	47	18 59
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	27	39	47	19 00
10	42	07	38	07	38	02	40	01	26	40	46	00
11	41	13	37	07	37	02	39	01	25	40	46	01
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 25	18 41	5 45	19 01

बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
6 36	18 47	6 15	18 29	6 21	18 30	5 36	17 47	5 57	18 09	28
35	48	14	30	20	31	35	48	57	09	29
34	18 49	13	31	19	32	34	48	56	10	30
6 32	19 49	6 12	18 31	6 18	18 32	5 33	17 48	5 55	18 10	31
6 31	19 50	6 10	18 32	6 17	18 32	5 33	17 48	5 54	18 11	अप्रै.
30	51	09	32	16	32	32	48	53	11	2
29	51	08	33	15	33	31	49	52	11	3
28	52	07	34	15	33	30	49	51	12	4
27	52	06	34	14	33	29	49	50	12	5
26	53	05	35	13	34	28	50	49	13	6
24	53	03	35	12	34	28	50	48	13	7
23	54	02	36	11	34	24	50	47	14	8
22	54	01	37	10	35	26	51	46	14	9
21	55	6 00	37	09	35	25	51	45	15	10
20	55	5 59	38	08	35	24	51	44	15	11
19	56	58	39	07	36	23	52	43	15	12
18	56	57	39	06	36	22	52	42	16	13
17	57	55	40	05	37	21	53	41	16	14
16	57	55	40	05	37	21	53	41	16	15
15	58	52	42	02	38	20	53	39	17	16
14	58	52	42	02	38	19	54	38	18	17
13	59	51	42	01	38	18	54	37	18	18
12	59	51	42	6 01	38	18	54	37	19	19
11	00	49	43	5 59	39	17	55	35	19	20
10	00	49	44	59	40	16	55	34	20	21
10	00	49	45	59	40	15	55	33	20	22
08	01	47	45	57	41	14	56	23	21	23
07	02	46	46	56	41	14	56	32	21	24
06	03	45	46	55	41	13	57	31	21	25
05	04	44	47	55	42	12	57	30	22	26
04	04	43	47	54	42	11	57	29	22	27
03	05	42	48	53	43	11	58	28	23	28
03	05	41	49	53	43	10	58	27	23	29
6 02	19 06	5 40	18 49	5 52	18 43	5 09	17 59	5 26	18 24	30
6 01	19 07	5 34	18 50	5 51	18 44	5 09	17 59	5 25	18 24	मई
6 00	07	38	51	50	44	08	17 59	29	25	2
5 59	08	37	51	50	44	07	18 00	24	25	3
58	08	36	52	49	45	07	00	23	26	4
57	09	36	53	49	45	06	01	23	26	5
56	09	35	53	48	46	05	01	22	27	6
55	10	34	54	48	46	05	02	21	27	7
55	11	33	55	47	47	04	02	21	28	8
54	11	32	55	47	47	04	03	19	29	9
54	12	32	56	46	48	03	03	19	29	10
53	12	31	56	46	48	03	03	19	29	11
5 53	19 13	5 30	18 57	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 30	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 24	18 41	5 44	19 02	5 52	19 13	5 30	18 58	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 31	13
14	39	15	35	10	35	04	38	03	24	42	44	02	51	14	29	58	44	50	01	05	17	31	14
15	38	15	34	11	34	05	37	03	23	42	43	03	50	14	28	18 59	44	50	01	05	17	32	15
16	38	16	34	11	33	06	36	04	23	43	43	04	50	15	28	19 00	43	51	00	06	16	32	16
17	37	17	33	12	33	06	36	04	22	44	42	04	50	15	27	00	43	51	5 00	06	16	33	17
18	37	17	33	12	32	07	35	05	22	44	42	05	49	16	26	01	42	52	4 59	07	15	33	18
19	36	18	32	13	32	08	34	06	21	45	41	05	49	17	26	02	42	52	59	07	15	34	19
20	35	19	32	13	31	08	34	07	21	45	41	06	48	18	25	02	41	53	59	08	15	34	20
21	35	20	31	14	31	09	33	07	20	46	40	06	48	18	25	03	41	53	58	08	14	35	21
22	34	20	31	15	30	09	33	08	20	46	40	07	47	19	24	03	40	53	58	09	14	35	22
23	34	21	30	15	30	10	32	08	19	47	40	07	47	19	24	04	40	54	58	09	14	36	23
24	33	22	30	16	29	10	32	09	19	47	39	08	47	20	23	05	40	54	57	09	13	36	24
25	33	22	29	16	29	11	31	09	19	48	39	08	46	20	23	05	39	55	57	10	13	37	25
26	33	23	29	17	29	11	31	10	18	48	39	09	46	21	23	06	39	55	57	10	13	37	26
27	32	24	28	18	28	12	30	10	18	49	38	10	46	21	22	06	39	56	57	11	12	38	27
28	32	24	28	18	27	13	30	11	18	49	38	10	45	22	22	07	39	56	56	11	12	38	28
29	31	25	27	19	27	14	30	11	17	50	38	11	45	22	22	08	38	57	56	12	12	39	29
30	31	26	27	19	27	14	29	12	17	50	37	11	45	23	21	08	38	57	56	12	12	39	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 12	18 40	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 11	18 40	जून
2	30	27	26	21	26	16	28	13	17	52	37	12	44	24	21	10	38	59	55	13	11	40	2
3	30	27	26	22	26	16	28	14	16	52	37	13	44	25	20	10	38	59	55	14	11	41	3
4	30	28	26	23	26	17	28	14	16	53	37	13	44	25	20	11	38	18 59	55	14	11	41	4
5	30	28	27	23	26	17	28	15	16	53	36	14	44	26	20	11	38	19 00	55	15	11	42	5
6	30	29	26	23	26	18	28	15	16	54	36	14	44	26	20	12	38	00	55	15	11	42	6
7	29	29	26	24	26	18	28	16	16	54	36	15	44	27	20	12	38	00	55	15	11	43	7
8	29	30	26	24	25	19	28	16	16	54	36	15	44	27	20	13	38	00	55	16	11	43	8
9	29	30	26	24	25	19	28	17	16	55	36	15	44	28	20	13	38	01	55	16	11	43	9
10	29	30	26	25	25	19	28	17	16	55	36	16	44	28	20	13	38	01	55	16	11	44	10
11	29	31	26	25	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	11
12	29	31	26	26	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	12
13	29	32	26	26	25	20	28	19	16	57	36	17	43	29	20	15	38	03	55	18	11	45	13
14	29	32	26	26	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	55	18	11	45	14
15	29	32	26	27	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	15
16	29	33	26	27	25	21	28	19	16	58	37	18	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	16
17	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	43	30	20	15	38	04	56	19	12	46	17
18	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	44	31	20	16	38	04	56	19	12	46	18
19	30	34	26	27	25	22	29	20	17	58	37	19	44	31	20	16	39	04	56	19	12	46	19
20	30	34	26	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	19	12	47	20
21	30	34	27	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	21
22	30	34	27	28	26	23	30	21	17	59	37	20	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	22
23	31	34	27	28	26	23	30	22	17	59	38	20	44	32	20	17	39	05	57	20	13	47	23
24	31	35	27	29	27	23	30	22	18	18 59	38	20	44	32	21	18	40	05	57	20	13	47	24
25	31	35	28	29	27	23	30	22	18	19 00	39	20	45	32	21	18	40	05	57	20	13	48	25
26	31	35	28	29	27	23	31	22	18	00	39	20	45	32	22	18	40	05	58	21	13	48	26
27	31	35	28	29	27	24	31	22	19	00	39	20	46	32	22	18	41	06	58	21	14	48	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 19	19 00	5 39	19 20	5 46	19 32	5 22	19 18	5 41	19 06	4 58	18 21	5 14	18 48	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 41	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 22	5 20	19 00	5 41	19 21	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	जुला
2	34	35	29	29	30	24	32	22	20	00	41	21	48	33	24	18	42	06	5 00	21	16	48	2
3	34	35	30	29	30	24	33	22	20	00	41	21	48	33	24	18	43	06	00	21	16	48	3
4	34	35	30	29	31	24	34	22	21	00	41	21	49	33	25	18	43	06	00	21	16	48	4
5	35	35	31	29	31	24	34	22	21	00	42	21	49	33	25	18	43	06	01	21	17	48	5
6	35	35	31	29	31	23	34	22	22	00	43	20	50	33	26	18	44	06	01	21	18	48	6
7	36	35	33	29	32	23	32	22	22	00	42	21	50	33	25	18	44	06	01	21	17	48	7
8	36	34	33	29	32	23	35	21	23	00	43	20	51	33	26	18	44	06	02	21	18	48	8
9	37	34	33	29	3	23	35	21	23	19 00	43	20	51	33	27	17	44	06	02	21	18	48	9
10	37	34	34	2	33	22	36	21	23	18 59	44	20	52	32	27	17	45	06	02	21	19	48	10
11	38	34	3	28	34	22	36	21	24	59	44	20	52	32	28	17	45	05	03	21	19	48	11
12	38	33	35	28	34	22	37	20	24	59	45	20	52	32	28	17	45	05	03	21	20	48	12
13	39	33	36	27	35	22	38	20	25	59	45	19	53	32	29	17	46	05	04	20	21	47	13
14	39	33	36	27	35	21	38	20	25	59	46	19	53	32	29	16	46	05	04	20	21	47	14
15	40	32	37	27	36	21	39	20	26	58	46	19	54	31	30	16	47	05	05	20	21	47	15
16	41	32	37	26	36	21	39	19	26	58	47	18	54	31	30	16	47	04	05	20	22	47	16
17	41	32	37	26	37	21	40	19	27	58	47	18	55	30	31	15	48	04	05	20	22	46	17
18	42	31	38	26	38	20	40	19	27	57	48	18	55	30	32	15	48	04	06	19	23	46	18
19	42	31	39	25	38	20	41	18	28	57	48	17	56	29	32	14	49	04	06	19	23	46	19
20	43	30	39	25	39	20	41	18	28	57	49	17	56	29	33	14	49	03	07	19	23	45	20
21	44	30	39	24	39	19	42	17	29	56	49	17	57	29	33	13	50	03	07	19	24	45	21
22	44	29	40	24	40	19	42	17	29	56	50	16	57	29	34	13	50	03	07	18	24	45	22
23	45	29	41	23	40	18	43	16	30	55	50	16	58	28	34	12	51	02	08	18	25	44	23
24	45	29	41	23	41	18	43	16	30	55	51	15	58	27	35	12	51	02	08	17	25	44	24
25	46	28	42	22	42	17	44	15	31	54	51	15	59	27	36	11	52	02	09	17	26	43	25
26	47	27	43	22	42	17	44	15	31	54	52	14	5 59	26	36	11	52	01	09	17	26	43	26
27	47	26	44	21	42	16	45	14	32	53	32	14	6 00	25	37	10	53	01	10	16	26	43	27
28	48	26	44	21	43	16	45	14	32	53	53	13	01	25	37	10	53	01	10	16	27	42	28
29	48	25	44	20	44	15	46	13	33	52	53	13	01	24	38	09	54	00	10	15	27	41	29
30	49	24	45	19	45	14	46	13	33	52	54	12	01	24	39	08	54	19 00	11	15	28	41	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 34	59	5 54	19 12	6 02	19 23	5 39	19 08	5 54	18 59	5 11	18 14	5 28	18 40	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 34	18 51	5·55	19 11	6 02	19 22	5 40	19 07	5 55	18 59	5 12	18 14	5 29	18 40	अग.
2	51	22	47	17	46	12	48	11	35	50	55	10	03	22	40	06	55	58	12	13	29	40	2
3	52	21	48	16	47	11	49	10	35	49	56	10	03	21	41	05	55	57	12	13	30	38	3
4	52	20	49	15	47	10	50	09	36	49	56	09	04	20	42	05	56	56	13	11	31	37	4
5	53	20	49	15	48	10	50	09	37	48	57	08	04	19	42	04	56	56	13	11	31	37	5
6	54	19	49	13	49	09	51	08	37	47	57	08	05	18	43	03	57	55	14	11	31	36	6
7	54	18	50	12	49	08	51	07	38	46	58	07	06	18	43	02	57	55	14	10	32	36	7
8	55	17	51	11	50	07	52	06	38	46	58	06	07	17	44	01	58	54	14	10	32	36	8
9	55	16	51	11	51	06	52	05	39	45	59	05	07	16	45	00	58	54	15	09	32	34	9
10	56	15	52	05	51	05	53	04	39	44	5 59	04	08	15	45	19 00	58	53	15	08	33	34	10
11	57	14	53	09	52	04	53	03	40	43	6 00	04	08	14	46	18 59	59	52	16	08	33	33	11
12	57	14	54	08	52	03	54	02	40	42	00	03	09	14	46	58	59	51	16	07	34	32	12
13	58	12	54	07	53	92	54	01	41	42	01	02	09	13	47	57	5 59	51	16	06	34	31	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	19 00	5 41	18 41	6 01	19 01	6 10	19 12	5 48	18 56	6 00	18 59	5 17	18 05	5 35	18 30	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 52	18 39	6 02	18 59	6 11	19 10	5 49	18 54	6 01	18 48	5 18	18 04	5 36	18 29	15
16	6 00	09	56	04	55	59	57	58	42	39	02	59	11	10	49	54	01	48	18	04	36	29	16
17	01	08	56	03	55	58	57	57	43	38	03	58	11	9	49	53	01	47	18	03	36	28	17
18	01	07	56	02	56	57	58	56	43	37	04	58	12	8	50	52	02	46	18	02	36	27	18
19	02	06	57	19 01	56	56	58	55	43	36	04	57	12	7	50	51	02	45	19	02	36	27	19
20	02	05	59	18 59	57	55	59	54	44	35	05	56	13	06	51	50	03	45	19	02	36	26	20
21	03	04	59	59	58	54	5 59	53	44	34	05	55	13	5	52	49	03	44	19	18 00	37	24	21
22	04	03	5 59	58	58	53	6 00	52	45	33	05	54	14	4	52	48	03	43	20	17 59	38	24	22
23	04	02	6 00	57	59	52	00	51	45	32	06	53	14	3	53	47	04	42	20	58	38	23	23
24	05	19 00	01	55	5 59	51	01	50	56	31	07	52	15	02	53	46	04	41	20	57	39	22	24
25	06	18 59	01	55	6 00	50	01	49	46	30	07	51	15	1	54	54	04	40	21	51	39	22	25
26	06	58	02	54	00	49	02	48	47	29	07	50	16	00	54	43	05	39	21	56	39	21	26
27	07	57	03	52	01	47	02	47	47	28	08	49	16	59	55	42	05	38	21	55	40	20	27
28	07	54	04	50	01	46	48	27	48	27	08	47	17	57	56	40	06	38	22	55	40	18 19	28
29	08	54	04	49	02	45	03	45	48	26	08	47	17	57	56	40	06	37	22	53	41	18	29
30	09	53	04	49	03	44	04	44	49	25	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	41	17	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	5 49	18 24	6 09	18 46	6 18	18 56	5 57	18 39	6 06	18 36	5 22	17 52	5 41	18 17	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	5 49	18 23	6 10	18 44	6 19	18 58	5 55	18 36	6 06	18 34	5 22	17 51	5 42	18 14	सितं.
2	10	50	06	46	05	41	05	40	50	22	10	42	19	53	58	35	07	33	22	50	42	13	2
3	11	48	06	45	05	40	06	39	50	21	11	41	20	52	59	34	07	32	22	49	43	12	3
4	12	47	07	43	06	39	06	33	51	20	11	40	20	50	5 59	33	07	31	23	48	43	11	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	51	19	11	39	21	49	6 00	32	07	30	23	47	44	10	5
6	13	45	08	41	07	36	07	36	52	18	12	38	21	48	00	30	08	29	23	46	44	09	5
7	13	43	09	40	07	35	08	34	52	17	12	37	22	46	01	29	08	28	24	45	44	07	7
8	14	42	10	38	08	34	08	32	52	15	13	36	23	45	02	28	08	27	24	44	45	06	8
9	15	41	11	36	08	32	09	31	53	15	13	35	23	44	02	27	07	26	24	43	45	05	9
10	15	39	11	35	09	31	09	30	53	13	14	34	23	43	03	26	09	25	25	42	46	04	10
11	16	38	12	18 34	09	29	10	29	54	12	14	33	23	42	03	24	09	24	25	41	46	03	11
12	16	37	12	17 33	10	28	10	28	54	11	14	31	23	41	04	23	10	23	25	40	46	02	12
13	17	36	13	18 31	10	27	11	27	55	10	15	30	24	40	04	22	10	22	25	39	47	01	13
14	17	34	13	31	11	26	11	26	55	09	15	29	24	38	05	21	10	21	26	38	47	18 00	14
15	18	33	13	30	11	24	12	25	55	08	16	28	25	37	05	19	10	20	26	38	47	17 59	15
16	19	32	14	28	12	23	12	24	56	06	16	27	25	36	06	18	10	19	26	37	48	58	16
17	19	30	15	25	12	22	13	22	56	05	17	26	26	35	06	17	11	18	26	36	48	57	17
18	20	29	15	25	13	21	13	21	57	04	17	25	26	34	07	16	11	17	27	35	49	56	18
19	20	28	16	24	13	19	14	20	57	03	17	23	27	32	07	14	11	16	27	33	49	55	19
20	21	26	17	22	14	18	14	19	58	02	18	22	27	31	08	13	11	15	27	32	49	53	20
21	22	25	18	20	14	17	15	18	58	01	18	21	28	30	09	12	12	14	27	31	50	52	21
22	22	24	18	19	15	16	15	17	58	18 00	19	20	28	29	09	11	12	13	28	30	50	51	22
23	23	23	18	19	16	14	16	16	59	17 58	19	19	29	28	10	09	13	12	28	29	50	50	23
24	23	21	19	18	16	13	16	14	5 59	57	20	18	29	27	10	08	13	11	28	28	51	49	24
25	24	20	20	15	17	12	17	13	6 00	56	20	17	30	26	11	07	14	10	29	28	51	48	25
26	25	19	20	14	17	11	17	12	00	55	20	15	30	24	11	06	14	09	29	27	52	47	26
27	25	17	21	13	18	09	18	11	01	54	21	14	31·	23	12	04	14	08	29	26	52	46	27
28	26	16	21	12	18	08	18	09	01	53	21	13	31	22	12	03	14	07	29	25	53	45	28
29	27	15	22	10	19	07	19	08	02	52	22	12	32	21	13	02	15	06	30	24	53	43	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 02	17 51	6 22	18 11	6 32	18 20	6 13	18 01	6 15	18 05	5 30	17 23	5 53	17 43	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्तू	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	अक्तू
अक्तू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 02	17 49	6 23	18 10	6 33	18 19	6 14	17 59	6 15	18 04	5 32	17 21	5 54	17 42	अक्तू
2	28	11	24	07	21	03	20	05	03	48	23	09	33	18	15	58	15	03	32	20	54	40	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	6 03	47	24	08	34	16	15	47	16	02	32	19	54	39	3
4	30	08	25	04	22	01	21	18 01	6 04	46	24	06	34	15	16	56	16	01	33	18	55	38	4
5	30	07	25	02	22	18 00	22	17 00	04	45	25	05	35	14	16	55	17	18 00	33	17	55	37	5
6	31	06	26	02	23	17 58	23	59	05	44	25	04	35	13	17	53	17	17 59	33	16	55	36	6
7	32	05	27	00	23	57	24	58	05	43	26	03	36	12	18	52	18	58	34	15	56	35	7
8	32	03	27	18 00	24	56	24	57	06	42	26	02	36	11	18	51	18	57	34	14	57	34	8
9	33	02	27	17 59	25	55	25	56	06	42	27	01	37	10	19	50	18	56	34	13	57	33	9
10	34	01	29	57	25	54	25	55	6 07	40	27	18 00	37	09	19	49	18	56	35	12	57	32	10
11	34	18 00	30	55	26	53	26	54	6 07	39	28	17 59	38	08	20	48	19	55	35	11	58	31	11
12	35	17 59	30	55	27	51	26	53	08	38	28	58	38	07	21	46	19	54	36	10	58	30	12
13	36	57	31	54	27	50	27	52	08	37	29	57	39	06	21	45	19	53	36	09	59	29	13
14	36	56	32	52	28	49	27	51	09	36	29	56	40	05	22	44	20	52	36	09	59	28	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	09	35	30	55	41	04	23	43	20	51	37	08	6 00	27	15
16	38	54	33	50	29	47	28	49	10	34	30	54	41	03	23	42	20	50	37	07	00	27	16
17	39	53	33	49	30	46	29	48	10	33	31	53	42	02	24	41	21	49	38	06	01	26	17
18	39	52	34	48	30	45	30	47	11	32	31	52	42	01	24	40	21	49	38	05	01	25	18
19	40	50	35	48	31	44	31	46	12	31	32	51	43	18 00	25	39	22	48	38	05	01	24	19
20	41	49	35	46	32	43	31	45	12	30	33	50	43	17 59	26	38	22	48	39	04	02	23	20
21	42	48	36	45	32	42	32	44	13	29	33	49	44	58	26	37	23	47	39	03	03	22	21
22	42	47	37	44	33	41	33	43	13	28	34	48	45	57	27	36	23	46	40	02	03	21	22
23	43	46	38	42	34	40	34	42	14	27	34	47	46	56	28	35	24	45	40	01	04	20	23
24	44	45	39	42	35	39	34	41	15	26	35	47	46	55	29	34	24	44	41	01	05	20	24
25	45	44	40	41	35	38	35	40	15	25	36	45	47	54	29	33	25	43	41	17 00	05	19	25
26	45	43	40	39	36	37	35	39	16	25	36	45	47	53	30	32	25	42	42	16 59	06	18	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	16	24	37	44	48	52	31	31	26	42	43	59	06	17	27
28	47	41	42	37	37	35	36	37	17	23	37	43	48	51	31	31	26	41	43	58	07	16	28
29	48	40	42	37	38	34	37	36	18	22	37	42	49	51	31	30	27	41	43	57	07	16	29
30	49	39	43	36	39	35	38	35	19	21	39	42	50	50	33	28	27	40	44	57	08	15	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 10	17 14	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 09	17 14	नवं.
2	51	37	45	33	41	31	40	34	20	19	41	39	52	48	34	26	29	38	45	55	10	13	2
3	52	36	47	32	42	31	41	33	21	18	41	39	53	47	36	25	30	38	46	54	11	12	3
4	53	35	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	12	4
5	53	34	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	11	5
6	54	33	48	30	44	29	43	31	23	17	44	37	56	45	38	23	32	36	47	53	12	10	6
7	55	33	50	30	45	28	44	30	24	16	44	36	56	45	39	22	32	36	48	52	13	10	7
8	56	32	51	29	46	27	45	29	24	15	45	36	57	44	40	21	33	35	48	52	14	09	8
9	57	31	52	28	47	27	45	29	25	15	46	35	57	44	41	21	33	35	49	51	15	09	9
10	58	31	52	27	47	26	46	28	26	14	46	35	58	43	41	20	34	34	50	51	15	08	10
11	59	30	53	27	48	25	47	28	26	14	47	34	6 59	42	42	20	34	34	50	50	16	08	11
12	7 00	29	54	26	49	24	48	27	27	13	48	33	7 00	41	43	19	35	33	51	50	17	07	12
13	00	29	54	26	50	23	48	27	28	13	49	33	01	41	44	18	35	33	55	50	17	07	13
14	01	28	55	26	51	23	49	26	29	12	49	33	01	40	45	18	36	33	52	49	18	06	14
15	02	28	56	25	52	22	50	26	29	12	50	32	02	40	46	17	37	32	53	49	19	06	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 30	17 12	6 51	17 32	7 03	17 39	6 46	17 17	6 38	17 32	5 53	16 49	6 19	17 06	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 31	17 11	6 52	17 31	7 03	17 39	6 47	17 16	6 38	17 32	5 54	16 48	6 20	17 05	17
18	05	26	6 59	23	54	21	53	24	32	11	52	31	05	39	48	16	39	31	55	48	21	05	18
19	06	26	7 00	23	55	21	54	23	32	10	53	31	05	39	49	16	40	31	55	48	22	05	19
20	07	25	01	22	56	21	55	23	33	10	54	30	06	38	50	15	41	31	56	48	22	04	20
21	07	25	01	22	57	20	55	23	34	10	55	30	06	38	51	15	41	31	57	48	23	04	21
22	08	24	02	22	57	20	56	22	35	10	55	30	07	38	51	15	42	30	57	47	24	04	22
23	09	24	04	22	58	20	57	22	35	09	56	30	08	38	52	14	42	30	58	47	24	04	23
24	10	24	05	21	6 59	20	58	22	36	09	57	29	09	37	53	14	43	30	59	47	25	04	24
25	11	23	06	21	7 00	19	6 59	22	37	09	58	29	09	37	54	14	43	30	5 59	47	26	03	25
26	12	23	06	21	01	19	7 00	22	38	09	58	29	10	37	55	14	44	30	6 00	47	27	03	26
27	13	23	07	21	02	19	01	22	38	09	6 59	29	11	37	55	13	45	30	01	47	27	03	27
28	14	23	08	20	03	19	02	22	39	09	7 00	29	12	37	56	13	46	30	01	47	28	03	28
29	14	23	08	20	03	19	02	21	40	09	01	29	13	37	57	13	46	30	02	47	29	03	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 58	17 13	6 47	17 30	6 02	16 47	6 30	17 03	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 59	17 13	6 48	17 30	6 03	16 47	6 30	17 03	दिसं.
2	17	22	11	20	06	19	04	21	42	09	03	29	15	36	6 59	13	49	30	04	47	31	03	2
3	18	22	11	20	06	19	04	21	43	09	04	29	16	36	7 00	13	49	31	05	47	32	03	3
4	19	22	12	20	07	19	05	21	44	09	05	29	17	36	01	13	50	31	05	47	32	03	4
5	19	22	13	20	08	19	06	21	44	09	06	29	17	36	02	13	51	31	06	48	33	04	5
6	20	22	14	20	09	19	07	21	45	49	07	29	18	37	03	13	52	31	07	48	34	04	6
7	21	22	14	20	09	19	07	21	46	09	07	29	19	37	03	13	52	31	07	48	35	04	7
8	22	23	15	20	10	19	08	22	46	09	08	30	20	37	04	13	53	32	08	48	35	04	8
9	22	23	16	20	11	19	09	22	47	09	09	30	20	37	05	13	53	32	09	48	36	04	9
10	23	23	17	20	12	19	10	22	48	10	09	30	21	37	06	14	54	32	09	49	37	05	10
11	24	23	18	20	12	19	10	22	49	10	09	30	22	37	06	14	54	33	10	49	37	05	11
12	25	23	19	21	13	20	11	23	49	10	10	30	23	38	07	14	55	33	11	49	38	05	12
13	25	24	19	21	14	20	12	23	50	10	11	31	23	38	08	14	56	33	11	50	38	05	13
14	26	24	20	21	14	20	13	23	50	11	11	31	24	39	08	15	57	33	12	50	39	06	14
15	27	24	21	22	15	21	13	24	51	11	12	31	24	39	09	15	57	34	12	50	40	06	15
16	27	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	15	58	34	13	51	41	06	16
17	28	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	16	58	34	14	51	41	07	17
18	28	25	23	23	17	22	15	25	53	12	14	32	26	40	11	16	59	35	14	51	41	07	18
19	29	26	23	23	17	22	15	25	53	13	14	33	26	40	11	17	6 59	35	15	52	42	08	19
20	30	26	24	23	18	23	16	26	54	13	14	33	27	41	12	17	7 00	36	15	52	42	08	20
21	30	27	24	24	18	23	16	26	55	14	15	34	27	41	12	17	01	36	15	53	43	09	21
22	13	27	25	25	19	14	17	27	55	14	16	34	28	42	13	18	01	37	16	53	44	09	22
23	31	28	25	25	19	24	17	27	55	15	16	35	28	42	13	18	02	37	17	54	44	10	23
24	32	28	25	26	20	25	18	28	56	15	17	35	29	43	14	19	02	38	17	54	45	10	24
25	32	29	25	26	20	26	18	28	56	16	17	36	29	43	14	20	03	38	18	55	45	11	25
26	32	29	26	27	21	26	19	29	57	16	18	37	30	44	15	20	03	39	18	55	45	11	26
27	33	30	26	27	21	27	19	29	57	17	18	37	30	44	15	21	03	39	19	56	45	21	27
28	33	31	27	28	21	27	20	30	58	17	18	38	30	45	15	21	04	40	19	57	46	12	28
29	33	31	27	28	22	28	20	30	58	18	19	38	30	45	16	22	04	40	19	57	47	13	29
30	34	32	28	29	22	28	21	31	58	19	19	39	31	47	16	23	04	41	20	58	47	14	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	6 59	17 19	7 20	17 40	7 31	17 47	7 16	17 23	7 05	17 41	6 20	16 58	6 47	17 14	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करें॥

उदाहरण–यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१°।५२′ है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२′ कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अत: ५ **दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।**

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान–जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को 12 से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को 30 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो. लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से 'ज्योतिष तत्त्व' पुस्तक मंगवाकर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६			
कृति उ.फा. उ.षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.				आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा. पू.भा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४

शनिदशावर्ष १९				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
पुष्य. अनु. उ. भा.				श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूल. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्रवण,आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य, विशा शत.			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि			मघा. ज्ये. उ.भा. भर.			पूफा मूल रेव, कृति			उ.फा. पू.षा. रोह			हस्त उ.षा. मृग		

योगिनी दशा विचार–योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि–अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ–यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा–अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा–मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**–पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि–जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोतरी दशा।** अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षो** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत–विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर–दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	9
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	26	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

स्वप्न-शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छ: मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रात:काल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	गर्भपात	गम्भीर रोग	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	घूंघट देखना	नया कारोबार	जुआ खेलना	धन हानि	तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	जेब काटना	धन हानि	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
अन्धेरा देखना	दु:ख मिले	कबूतर देखना	शुभ समाचार	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	जड़ें देखना	दीर्घायु	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	काला नाग	राज्य सम्मान	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	जड़ें काटना	संकट का सूचक	तैरते देखना	आयु में वृद्धि
अर्थी देखना	रोग मुक्त	किला देखना	तरक्की पाना	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	कोढ़ी देखना	रोग सूचक	घड़ी देखना	यात्रा का संकेत	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
आकाश देखना	तरक्की होना	कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	झाड़ू देखना	नुकसान हो	तीर मारना	खुशी मिले
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ	कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	तूफान देखना	परेशानी बढ़े
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	चरखा देखना	आर्थिक लाभ	झांकी देखना	अशुभ	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	चावल खाना	शुभ समाचार	झोली देखना	विजय संकेत	तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
आत्महत्या करना	दीर्घायु	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	तोता देखना	धन लाभ
आलू देखना	मुसीबत आना	कोयल देखना	कोई शुभ समाचार	चादर देखना	बदनामी हो	झरना देखना	दु:ख दूर हों	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
अस्त्र-शस्त्र देखना	दु:खों से निपटारा हो	कबाब खाना	अपयश/विवाद	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि	तराजू देखना	व्यापार लाभ
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	ताली बजाना	खुशी मिले
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	खून करना	संकट आना	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	ताश खेलना	व्यापार लाभ
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	खिलौना देखना	सुख शान्ति	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	टापू देखना	संकट लक्षण	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	खरबूजा देखना	धन लाभ	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	टोपी देखना	प्रगति हो	तरबूज देखना	परेशानी
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	खेत देखना	संकट पूर्ण	छींकना	कार्य बाधा	ठग मिलना	धन हानि	तांगा देखना	झगड़ा हो
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	थूक देना	परेशानी बढ़े
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	गुरु देखना	कार्य सफलता	छपाई देखना	अपमानित होना	ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	गोबर देखना	पशु लाभ हो	छंटनी देखना	पदोन्नति	ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति	थप्पड़ खाना	शुभ
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जख्म देखना	परेशानियां	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	थन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
ऊँट देखना	अंग घात	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दूध पीना	खुशी प्राप्ति
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दरवाजा बन्द देखना	परेशानियां हों
कमल देखना	धन प्राप्ति	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	जल देखना	मान सम्मान	डाकू देखना	धन हानि	दाँव लगाना	भारी हानि

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दु:ख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व दखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दु:ख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दु:ख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पुरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दु:ख निवृत्ति
रस्सी देखना	यात्रा हो
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लाल फूल देखना	पुत्र सुख
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	मान-सम्मान
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
अश्विनी १	रोग दिन संख्या ०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाभ् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सवुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यत्र माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नंहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
स्वाती १५	रोग दिन संख्या ६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपथ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमबितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु–वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्गगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र–पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः शृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा–द्रपद २६.	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पू.भा.	अश्वि.	रोहि
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाती	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृग.

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

।। अथ बालकष्टावली पूतना विधान ।।

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रात: समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो सूर्य की, २ बचें तो चन्द्रमा, ३ बचें तो मंगल, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो शुक्र की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—सूर्य के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १। ५, चन्द्रमा २। ४, मंगल १। ८। १०, बुध ३। ६, बृहस्पति १२। ४, शुक्र २। ७। १२, शनि १०। ११। ७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १। २। ३। ७। ८। ९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४। ५। ६। १०। ११। १२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९
गुप्त मित्र	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११
प्रत्यक्ष शत्रु	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७
गुप्त शत्रु	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुन: जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से **'वर्षफल चन्द्रिका'** लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। (देखें हमारी पुस्तक **'वर्षफल चंद्रिका'**)

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में-**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुन: उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुन: उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैंकिड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्तमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि–आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार,एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे**, सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रात: साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2015 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2015 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 41 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 41 के सामने हमें 2 वार, 12 घण्टे एवं 16 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 6 वार, 17 घण्टे, 46 मिनट प्राप्त हुए। हमें 6 वार अर्थात् शुक्रवार की सायं (17) बजकर, 46 मिनट प्राप्त हुए।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 2	12	16
	6	17	46
अर्थात् (शुक्रवार)	6 वार	17	46

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 2 अक्तू. की सायं 17 बजकर 46 मिनट पर हमें **मीन वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न मीन में सं. २०७२ की पंचांग से 2 अक्तू. 2015 ई. सायं 17/46 स्टैं. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 110 रु.।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 21	7 49	9 13	10 49	12 44	14 58	17 19	19 37	21 52	24 11	2 30	4 34
25	6 18	7 46	9 10	10 46	12 41	14 55	17 16	19 34	21 49	24 08	2 27	4 31
26	6 14	7 42	9 06	10 42	12 37	14 51	17 12	19 30	21 45	24 04	2 23	4 27
27	6 11	7 39	9 03	10 39	12 34	14 48	17 09	19 27	21 42	24 01	2 20	4 24
28	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
29	6 04	7 32	8 56	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 00	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1 134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्टू.	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

नवंबर — दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दिसंबर — दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा-सोसाइटी में आना-जाना और मुकदमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी हैं, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**–पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र

वार	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

॥ चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

॥चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१८.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१९.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	२१.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२२.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	२४.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	२५.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	२७.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२८.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त १½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टम्मांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**–सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°-२०' (अंश कला) होगा (१३°-२०') ÷ 4 = 3°—20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रतयेक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०—००—००	अश्विनी (१) मेषे	४—००—००	मघा (१) सिंहे	८—००—००	मूल (१) धनु
०—०३—२०	.. (२) ..	४—०३—२०	.. (२) ..	८—०३—२०	.. (२) ..
०—०६—४०	.. (३) ..	४—०६—४०	.. (३) ..	८—०६—४०	.. (३) ..
०—१०—००	.. (४) ..	४—१०—००	.. (४) ..	८—१०—००	.. (४) ..
०—१३—२०	भरणी (१) ..	४—१३—२०	पू.फा. (१) ..	८—१३—२०	पू.षा. (१) ..
०—१६—४०	.. (२) ..	४—१६—४०	.. (२) ..	८—१६—४०	.. (२) ..
०—२०—००	.. (३) ..	४—२०—००	.. (३) ..	८—२०—००	.. (३) ..
०—२३—२०	.. (४) ..	४—२३—२०	.. (४) ..	८—२३—२०	.. (४) ..
०—२६—४०	कृतिका (१) मेषे	४—२६—४०	उ.फा. (१) ..	८—२६—४०	उ.षा. (१) ..
१—००—००	.. (२) वृषे	५—००—००	.. (२) कन्या	९—००—००	उषा (२) मक
१—०३—२०	.. (३) ..	५—०३—२०	.. (३) ..	९—०३—२०	.. (३) ..
१—०६—४०	.. (४) ..	५—०६—४०	.. (४) ..	९—०६—४०	.. (४) ..
१—१०—००	रोहिणी (१) ..	५—१०—००	हस्ते (१) ..	९—१०—००	श्रव (१) ..
१—१३—२०	.. (२) ..	५—१३—२०	.. (२) ..	९—१३—२०	.. (२) ..
१—१६—४०	.. (३) ..	५—१६—४०	.. (३) ..	९—१६—४०	.. (३) ..
१—२०—००	.. (४) ..	५—२०—००	.. (४) ..	९—२०—००	.. (४) ..
१—२३—२०	मृगशिर (१) ..	५—२३—२०	चित्रा (१) ..	९—२३—२०	धनि (१) ..
१—२६—४०	.. (२) ..	५—२६—४०	.. (२) ..	९—२६—४०	.. (२) ..
२—००—००	.. (३) मिथुन	६—००—००	चित्रा (३) तुला	१०—००—००	.. (३) कुंभे
२—०३—२०	.. (४) ..	६—०३—२०	.. (४) ..	१०—०३—२०	.. (४) ..
२—०६—४०	आर्द्रा (१) ..	६—०६—४०	स्वाती (१) ..	१०—०६—४०	शतभिषा (१)..
२—१०—००	.. (२) ..	६—१०—००	.. (२) ..	१०—१०—००	.. (२) ..
२—१३—२०	.. (३) ..	६—१३—२०	.. (३) ..	१०—१३—२०	.. (३) ..
२—१६—४०	.. (४) ..	६—१६—४०	.. (४) ..	१०—१६—४०	.. (४) ..
२—२०—००	पुनर्वसु (१) ..	६—२०—००	विशाखा (१) ..	१०—२०—००	पूभा (१) ..
२—२३—२०	.. (२) ..	६—२३—२०	.. (२) ..	१०—२३—२०	.. (२) ..
२—२६—४०	.. (३) ..	६—२६—४०	.. (३) ..	१०—२६—४०	.. (३) ..
३—००—००	पुनर्वसु (४) कर्के	७—००—००	.. (४) वृश्चिके	११—००—००	पूभा (४) मीने
३—०३—२०	पुष्ये (१) ..	७—०३—२०	अनुराधा (१) ..	११—०३—२०	उ.भा. (१) ..
३—०६—४०	.. (२) ..	७—०६—४०	.. (२) ..	११—०६—४०	.. (२) ..
३—१०—००	.. (३) ..	७—१०—००	.. (३) ..	११—१०—००	.. (३) ..
३—१३—२०	.. (४) ..	७—१३—२०	.. (४) ..	११—१३—२०	उ.भा. (४) ..
३—१६—४०	आश्ले (१) ..	७—१६—४०	ज्ये. (१) ..	११—१६—४०	रेवती (१) ..
३—२०—००	.. (२) ..	७—२०—००	.. (२) ..	११—२०—००	.. (२) ..
३—२३—२०	.. (३) ..	७—२३—२०	.. (३) ..	११—२३—२०	.. (३) ..
३—२६—४०	.. (४) ..	७—२६—४०	.. (४) ..	११—२६—४०	रेवती (४) ..
				००—००—००	अश्वि (१) मेषे

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19′ अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-00′ अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैंण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यत: अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 28 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

29 फरवरी के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**–ता. 16 अप्रैल, 2007 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +2 मिनट प्राप्त हुए। अत: सन् 2007 में **मेष लग्न 7/31** पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००९	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	+०	–१	–१
२०१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०१५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१६B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	ज्ये.	५ ३९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	०१ १५	२ ४०	४ ०२	५ ३५
15	२	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	३	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	४	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	५	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	६	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	७	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	८	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	९	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	१०	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	११	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	१२	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१३	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१४	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१५	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१६	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१७	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१८	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१९	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	२०	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२१	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२२	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२३	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२४	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२५	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२६	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२७	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२८	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२९	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	३०	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३१	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३२	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	भाद्र	६ ०१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५	५ ५७
17	२	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	३	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	४	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	५	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	६	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	७	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	८	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	९	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	१०	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	११	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	१२	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१३	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१४	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१५	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१६	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१७	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१८	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१९	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	२०	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२१	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२२	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२३	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२४	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२५	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२६	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२७	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२८	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२९	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	३०	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३१	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्टू. (आश्विन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४	६ १५
17	२	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	३	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	४	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	५	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	६	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	७	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	८	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	९	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	१०	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	११	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	१२	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१३	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१४	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१५	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्टू.	१६	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१७	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१८	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१९	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	२०	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२१	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२२	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२३	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२४	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२५	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२६	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२७	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२८	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२९	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	३०	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३१	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्टू.-नवं. (कार्तिक) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्टूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ ११	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ०२	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५६	९ १८	१० ५१	१२ ४५	१४ ५९	१७ २२	१९ ४२	२२ ००	० २२	२ ४२	४ ४६	६ २७
25	१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
26	१४	७ ५०	९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३६	२१ ५४	० १६	२ ३६	४ ४०	६ २१
27	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३६	६ १८
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१७	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१८	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	१९	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२०	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२१	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२२	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२३	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२४	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२५	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२६	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२७	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२८	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	२९	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ ११	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	चै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (–) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**–मान लो आपने 16 जुलाई, 2013 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें –८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**–नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	–५	–५	–५	–३	–३	–६	–५	–५	–४	–५	–५	–५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	–१	–३	–४	–१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	–१	–५	–४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	–१५	–१२	–१३	–१५	–२१	–२९	–३४	–३७	–३६	–३२	–२६	–२०
अलीगढ़	–४	–३	–३	–५	–७	–१३	–१६	–१७	–१७	–१३	–११	–७
अयोध्या	–१८	–१८	–१५	–१९	–२१	–२५	–२८	–३०	–२८	–२७	–२४	–१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	–४	–६	–७	–७	–४	+१	+४
आगरा	–४	–२	–३	–६	–७	–१२	–१५	–१६	–१६	–१३	–१०	–६
अगरतला	–५०	–४७	–४६	–५३	–६०	–६७	–७५	–७८	–७६	–७३	–६४	–५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	–८	–१४	–१९	–१७	–१०	–१	+७
ऊना (हि.प्र.)	–३	–३	–३	–३	–२	–२	–२	–२	–२	–२	–२	–३
उधमपुर	–२	–२	–२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	–७	–१४	–१९	–१७	–१०	–२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	–४	–८	–६	–१	+६	+१३
करनाल	–५	–५	–५	–५	–५	–६	–६	–७	–७	–५	–४	–३
कालका	–५	–५	–५	–४	–४	–५	–६	–६	–७	–७	–४	–३
कुरुक्षेत्र	–४	–३	–३	–४	–५	–६	–६	–७	–७	–५	–३	–३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	–१	–१	+१	–०	–०	–०	–०	–१
कोटखाई	–७	–७	–७	–७	–७	–८	–७	–७	–७	–६	–६	–७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	–१	–६	–११	–१४	–१३	–८	–२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	–०	–०	–१	+०	–०	–०	–०	–०	–१
काठमण्डू	–३२	–३१	–३१	–३०	–३३	–३८	–४०	–४२	–४२	–४०	–३६	–३३
कोलकत्ता	–३७	–३२	–३५	–४०	–४९	–५८	–६४	–६९	–६८	–६१	–५३	–४४
कानपुर	–११	–१०	–१०	–१३	–१८	–२२	–२५	–२७	–२६	–२१	–१७	–१३
कांगड़ा	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४
कुल्लू	–७	–७	–७	–६	–६	–६	–५	–४	–४	–४	–५	–५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	–२	–२	–२	–१	–०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	–१	–१	–१	–०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	–२	–३	–३	–२	–२	–३	–३	–३	–३	–२	–२	–३
ग्वालियर	–२	+१	+०	–५	–९	–१२	–१६	–१८	–१७	–१३	–८	–५
गुरदासपुर	–१	–१	–१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	–२३	–२१	–२२	–२४	–२७	–३२	–३५	–३७	–३६	–३२	–२७	–२४
गुड़गांव	–१	–१	–१	–३	–३	–७	–१०	–११	–११	–९	–६	–४
गोहाटी	–५५	–४८	–५३	–५५	–६१	–६८	–७२	–७५	–७३	–६९	–६४	–६०
गाजियाबाद	–२	–१	–१	–२	–२	–७	–९	–११	–११	–९	–६	–३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	–२६	–१८	–२३	–२७	–३३	–४२	–४७	–५१	–४१	–४४	–३७	–३२
चण्डीगढ़	–५	–५	–५	–५	–६	–६	–६	–६	–६	–६	–६	–५
चिन्तपूर्णी	–२	–१	–२	–२	–३	–३	–३	–२	–२	–२	–२	–१
चम्बा	–६	–६	–६	–५	–४	–२	+१	+२	+१	+०	+३	–४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	–३	–७	–९	–९	–७	–२	+३
ज्वालामुखी	–५	–५	–६	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४
जम्मू	–१	–२	–१	–१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	–२	–१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	–१	–३	–५	–६	–७	–७	–५	–४	–१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	–२	+१	+०	–६	–११	–१७	–२२	–२५	–२३	–१८	–१३	–७
जगन्नाथपुरी	–२२	–१६	–१३	–२६	–३७	–४९	–५९	–६४	–६३	–५५	–४४	–३२
दिल्ली	–२	–१	–१	–४	–४	–८	–११	–१२	–१२	–१०	–७	–५
दुर्ग (म. प्र.)	–६	–०	–२	–१०	–१९	–२७	–३७	–४२	–४२	–३१	–२१	–१४
देहरादून	–१०	–१०	–९	–१०	–९	–११	–१२	–१२	–१३	–११	–९	–९
धर्मशाला	–५	–५	–६	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-११	-१२	-१४	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन(हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१६	-२३	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-१०	-११	-१३	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+८	+२	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ(उ.प्र.)	-६	-३	-४	-७	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८
मण्डी (हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	+०	-१	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१२	-१६	-२२	-२४	-३०	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-९	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+४	+३	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-१	+१

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं–

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि–(1) असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध–कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (2) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (3) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि–माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र–ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान** को विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो,, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र–रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र–रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी–पंजाबी में मोती एवं अंग्रेज़ी में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान–शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा–(1) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (2) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति–चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा–मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर–विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि–मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए '**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**' के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न–चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)–यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल–रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते–जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा–(१) असली मूंगे को खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त–विकार, भूत–प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय–रोग, वायु–कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न** वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र–ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा–(1) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (2) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण–'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि–यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु-रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि–जो पुखराज स्पर्श में चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त हो वह **उत्तम कोटि का** माना जाता है।

परीक्षा–(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण–पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख** की **बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग–इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि–पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **"ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः"** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न–सुनैला–इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, **हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान–अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा–(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण–हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक सुख** में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण–हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे–दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का 16 हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। हीरा **वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों** को लाभदायक रहता है।

शुक्र के उपरत्न–(i) फिरोज़ा–नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)–यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान–असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा–(i) असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।

गुण–नीलम धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति–नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि–नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों में शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः मन्त्र से २३००० की संख्या में अभिमन्त्रित करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न-गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि–सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि–गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र–"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया चार रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान–(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि–लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र–"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूम्रवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'आपका भाग्यरत्न' पुस्तक 60 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य 150 रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज़ स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्राय: अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यत: **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्राय: अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्राय: चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा है**। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मज़बूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमज़ोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्राय: परिवर्तन करता रहता है तथा प्राय: अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र-मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यत: परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध-शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा-गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना है**। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न—तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मज़बूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा (Diamond)** अथवा **श्वेत मोती शुभ नग है** जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न—वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा है।** शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न—धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज है।** अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न—मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न—लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम है। स्त्रियों के लिए पुखराज नग शुभ** होगा।

मीन लग्न—मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज है।** शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
सट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा-तेजी)	120 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	250 रु.
मोटर वाईडिंग	300 रु.
पशु चिकित्सा	300 रु.
विवाहित आनन्द	80 रु.
गर्भावस्था व शिशुपालन	150 रु.
कष्टनिवारक उपाय-टोटके	120 रु.
संस्कृत-हिन्दी कोष	350 रु.
व्यापार रत्न	350 रु.
तबला वादन कोर्स	100 रु.
Dictionary (Big)	350 रु.
हिन्दी शब्द कोष	300 रु.
ताश के जादू	60 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज (बड़ी)	300 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	200 रु.
कम्पयूटर कोर्स (बड़ा)	320 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	150 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	100 रु.
जूडो कराटे सीखें	80 रु.
हारमोनियम सीखिए	100 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	100 रु.
सिलाई कटाई शिक्षा	120 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	80 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	80 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	30 रु.
घरेलू आयुर्वेदिक गाइड	330 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	150 रु.
मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज	300 रु.
कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज़	200 रु.
इन्वर्टर सर्विसिंग	150 रु.
ए. सी. मोटर वाईंडिंग	200 रु.
स्क्रीन प्रिंटिंग गाईड	150 रु.
आर्य संगीत रामायण (नाटक)	165 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
बनाइये खाना वेजीटेरियन	90 रु.
खाना खजाना	250 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	200 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	80 रु.
भारतीय व्यंजन	80 रु.
आलू पनीर के व्यंजन	60 रु.
माइक्रोवेव कुकिंग	80 रु.
फल सब्जी से चिकित्सा	80 रु.
चाइनिज़ कुकरी	80 रु.
हर्बल ब्यूटी बुक	180 रु.
योगासन चिकि. स्वा. रामदेव	125 रु.
प्राणायाम चिकित्सा	50 रु.
ब्यूटी पार्लर कोर्स (रंगीन)	180 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	80 रु.
55 चालीसा एवं आरती संग्रह	50 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
एलोपेथिक चिकि. (कोकचा)	350 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	300 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	200 रुपए
स्वदेशी चिकित्सा सार	110 रुपए
घर का वैद्य	100 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	350 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	200 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	350 रुपए
होम्योपैथी द्वारा इलाज	100 रुपए
योगासन एवं साधना	100 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	150 रुपए
जड़ी-बूटियाँ	200 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	230 रु.
यूनानी चिकित्सा सार	150 रु.
सचित्र योगासन व ध्यान	120 रु.
वनौषधि शतक	250 रु.
भैषज्य भास्कर	100 रु.
ईलाजुलगुर्बा	120 रु.
दादी माँ के नुस्खे	100 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	100 रु.
आयुर्वेद मंथन	80 रु.
महत्त्वपूर्ण जड़ी-बूटियां	300 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	295 रु.
गुणकारी जड़ी-बूटियां	80 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	150 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	120 रु.
भावप्रकाश निघन्टु	195 रु.
योग के अद्भुत चमत्कार	80 रु.
आपका आरोग्य आपके हाथ	100 रु.
योगासन	100 रु.
प्राकृतिक चिकित्सा	100 रु.
घरेलू इलाज	100 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	175 रु.
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	350 रु.
योगासन व स्वास्थ्य	100 रु.
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	80 रु.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

पुस्तक	मूल्य
काली किताब	550 रु.
काली किताब (छोटी)	300 रु.
महाइन्द्रजाल	600 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	200 रु.
शाबर मंत्र विद्या	120 रु.
तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य	300 रु.
यंत्र-मंत्र महाशास्त्र	1000 रु.
काला ईल्म	120 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	105 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	120 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	150 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	250 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	150 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	80 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	150 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	80 रु.
काली तंत्र शास्त्र	100 रु.
तारा तंत्र शास्त्र	100 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	105 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	60 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके	50 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	95 रु.
ब्रह्मास्त्र विद्या व बगुलामुखी सा.	700 रु.
महाकाल संहिता	600 रु.
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	60 रु.
11000 गंडे ताबीज़ और टोटके	300 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	300 रु.
महाकाल संहिता (4 भाग)	2400 रु.
तन्त्रराजतन्त्रम् (2 भाग)	1200 रु.
श्रीदेवीरहस्यम् (2 भाग)	1200 रु.
मंत्र रहस्य	100 रु.
यंत्र विधान	200 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	90 रु.
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	80 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	80 रु.
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	80 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	80 रु.
मनोकामना सिद्धि	80 रु.
वशीकरण मन्त्र	80 रु.
चीन बंगाल का जादू	60 रु.
कामाक्षा मन्त्र	80 रु.
सूर्य तन्त्रम्	70 रु.
कामाख्या उपासना	200 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	200 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	100 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	65 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	30 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	40 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीप:	145 रु.
विवाह पद्धति	70 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25 रु.
पौरोहित्य कर्म-विधि	250 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	75 रु.
नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?)	150 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	150 रु.
कर्मकाण्ड भारती	150 रु.
पूजा रहस्यम्	100 रु.
पूजा भास्कर	80 रु.
हवन रहस्यम्	60 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	40 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	75 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	70 रु.
श्रीसूक्तम् व कनकधारा	20 रु.
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	90 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा) बड़ा	180 रु.
सनातन संस्कार विधि	150 रु.
षोडश संस्कार पद्धति	150 रु.
श्राद्ध विवेक	150 रु.
नित्यकर्म पद्धति	150 रु.
पितृकर्म पद्धति	75 रु.
सर्वदेव पूजा पद्धति	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	250 रु.
हवन पद्धति	60 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	40 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा (लघु)	150 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	60 रु.
सर्व व्रतोद्यापन रहस्यम्	200 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	80 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	160 रु.

अपने आर्डर के साथ 50/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर। फोन–2457959

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो. तुलसीकृत रामायण (भाषा–टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित् की महिमा को हृदयांगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन–पठनार्थ घर में रखना अथवा दान–दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत **501/– रु.। आर्डर के साथ 100 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य 150 रु. (डाक व्यय अलग)**

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्त्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्रा से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र **451 रुपए, आर्डर के साथ 100 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम सुखसागर–मूल्य 250 रु.।**

सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पीपल, करवा–चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे–एकादशी, धन, त्र्योदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई-दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। मूल्य–40 रु.

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जोकि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि, सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शतचण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल 75 रुपए। सजिल्द 85 रुपए।

श्रीमद्भगवत् गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली माहात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मंगवाएँ। **मूल्य 200 रु.।**

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्वेद-1 खण्ड, अर्थर्ववेद-2 खण्ड, समावेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। **मूल्य सम्पूर्ण सैट-1200 रु.।**

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। **मूल्य केवल 400 रु.।** मनीआर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय 40 रु. पृथक।

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

श्रीमद्देवी भागवत पुराण	301/–
श्री विष्णु पुराण	250/–
श्री विश्वकर्मा महापुराण	200/–
योग वशिष्ठ (दो भाग)	500/–
व्यापार रत्न	350/–
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	500/–
निर्णयसिन्धु (भाषा टीका)	550/–
व्रतराज	500/–
चाणक्य नीति	80/–
विदुर नीति	80/–
महामृत्युञ्जय साधना	80/–
श्री गरुड़ पुराण (प्रेतकल्प)	90/–
कर्मकाण्ड कुसुमाञ्जली	45/–
कर्मकाण्ड प्रदीप:	195/–
कर्मठगुरु (भा.टी.)	**400/–**
कवच संग्रह (भा.टी.)	100/–
भद्रबाहु संहिता (मंदा-तेजी पर)	250/–
लाल किताब	250/–
मंत्र महोदधि	550/–
षोडश संस्कार पद्धति	150/–
वास्तु शान्ति प्रयोग	25/–
मन्त्र सागर	100/–
बगुलामुखी महासाधना	150/–
मंत्र द्वारा कामना सिद्धि	95/–
मंत्र द्वारा रोग निवारण	80/–
मंत्र शक्ति	80/–
मनोकामना पूरक मंत्र	80/–
वृहद् कौवा तंत्र	60/–
सूर्यशक्ति से इलाज	50/–
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	80/–
आरती संग्रह ग्लेज़चित्र	60/–
योग वसिष्ठ महारामायण	300/–
35 [illegible] आरतियों सहित	50/–
गरुड़ पुराण भा. टी.	90/–
विशाल हस्त सामुद्रिक	300/–
ऋणमोचन मंगलस्तोत्र	20/–
विशाल भृगु संहिता पद्धति	350/–
पं. देवीदयालु राशिफल	**40/–**
माघ महात्म्य	40/–
चन्द्र हस्त विज्ञान	**395/–**
कार्तिक महात्म्य	40/–
ज्योतिष सर्व संग्रह	60/–
सन्तान गोपाल स्तोत्र	20/–
असली आल्हाखण्ड	**151/–**
विवाहपद्धति देवीदयालु	**70/–**
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	**75/–**
सूर्य पुराण भाषा	300/–
हस्त रेखा विज्ञान	100/–
सूर्य उपासना	80/–
तान्त्रिक सिद्धियाँ	100/–
रामायण तर्ज राधेश्याम	150/–
दुर्गार्चन रहस्यम्	150/–
श्री हरिवंश पुराण (मध्यम)	200/–
श्रीगणेश महापुराण	250/–
मनुस्मृति	200/–
देवी-देवता सिद्धि	60/–
कर्मकाण्ड प्रदीप:	**145/–**
भजन सरोवर	150/–
लाल किताब (हिन्दी)	**800/–**
शिव मंत्रावली	180/–

अपने आर्डर के साथ 100/– रुपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ पूरा लिखें। वी. पी. द्वारा मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर
फोन–0181–2457959

ज्योतिष सम्बन्धी प्रामणिक पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

पं० देवी दयालु ज्यो०, जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग	840 रु.
श्रीदशवर्षीय पंचांग (1994-04 ई.)	220 रु.
दशवर्षीय पंचांग (2004-14 ई.)	400 रु.
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	75 रु.
वर्षफल चन्द्रिका	110 रु.
ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड)	125 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I)	300 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II)	300 रु.
सुतभाव प्रकाश	135 रु.
शिव मन्त्रावली	**180 रु.**
अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय-टोटके	200 रु.
विवाह पद्धति	70 रु.
दुर्गा सप्तशती (हिन्दी-भाषा)	80 रु.
श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.)	85 रु.
गण्डमूल शान्ति प्रयोग	**65 रु.**
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति	30 रु.
नवग्रह पूजा विधान	40 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	40 रु.
श्री सूक्तम्-कनकधारा स्तोत्र भा.टी.	25 रु.
कार्तिक माहात्म्य	40 रु.
55 चालीसा आरती संग्रह	50 रु.
लघु पंचांग दिवाकर	30 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा-भा.टी.	25 रु.
षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.)	12 रु.
जन्माङ्क पत्रिका (16 पृ.)	10 रु.
जन्माङ्क पत्रिका (12 पृ.)	10 रु.
टेवा फार्म छपा/प्लेन	150 रु. सैंकड़ा
ज्यो० ज्ञान शास्त्र (पंजाबी)	100 रु.
लाल किताब (पंजाबी)	120 रु.
फलित ज्योतिष (पंजाबी)	400 रु.
राशिफल सन् 2015 ई.	40 रु.

अन्य प्रकाशनों की ज्यो. सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
कालसर्प योग-शोध संज्ञान	415 रु.
ग्रह और भावबल	100 रु.
ग्रहरोग निदान चिकित्सा	75 रु.
ग्रहलाघव-गणेश दैवज्ञ	275 रु.
चमत्कार चिन्तामणि	245 रु.
जातक निर्णय (2 भाग) (बी.वी. रमण आधारित)	320 रु.
जातक-पारिजात (2 भाग)	620 रु.
ज्योतिष और हम	95 रु.
ज्योतिष जगत्	75 रु.
ज्योतिष तत्त्व प्रकाश	245 रु.
ज्योतिष रत्नाकर	325 रु.
ज्योतिष रहस्य	195 रु.
ज्यो. शास्त्र में रोग विचार	225 रु.
ज्यो. शास्त्र में स्वर विज्ञान	125 रु.
जीवनफल दर्पण	75 रु.
जैमिनी ज्यो. का अध्ययन	65 रु.
षड्वर्ग फलम्	200 रु.
गणेश होरा शास्त्रम्	500 रु.
राशिफल विचार	160 रु.
परमायु दशा	150 रु.
ज्यो. और रोग (2 भाग)	300 रु.
तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग	175 रु.
त्रिफला	125 रु.
दशाफल दर्पण	100 रु.
दशाफल विचार	75 रु.
पुत्रेष्टि अनुष्ठान	495 रु.
समृद्धि सूत्र (2 भाग)	925 रु.
प्रश्नचन्द्र प्रकाश	125 रु.
फलदीपिका	175 रु.
फलित ज्यो. में कालचक्र	85 रु.
बृहज्जातकम्	250 रु.
मंत्र पुष्पाञ्जली	395 रु.
मेलापक मिमांसा	395 रु.
मंत्र संदर्शन	295 रु.
मुहूर्त-चिन्तामणि (पीयूषधारा)	265 रु.
मुहूर्त गणपति	295 रु.
मुहूर्त्त मार्तण्ड	195 रु.
मुहूर्त्त पारिजात	200 रु.
योग-शृंखला (2 खण्ड)	795 रु.
लग्नचन्द्रप्रकाश	245 रु.
लघुपराशरी सिद्धान्त	295 रु.
लघुपराशरी भाष्य	225 रु.
लघुपराशरी	**80 रु.**
वैवाहिक सुख	**295 रु.**
वैवाहिक विलम्ब के आयाम	345 रु.
शनि शमन (दो भाग)	600 रु.
शत्रु शमन	195 रु.
हस्तरेखा सामुद्रिक शास्त्र	125 रु.
हस्तरेखा विज्ञान	160 रु.
चन्द्रहस्त विज्ञान	395 रु.
सन्तानसुख-सर्वाङ्ग चिंतन	295 रु.
होरा-रत्नम्	790 रु.
नक्षत्र विचार	250 रु.
भृगु संहिता	300 रु.
मंगलीक योग भ्रान्ति निदान	135 रु.
कालसर्प योग कारण-निवारण	300 रु.
शनि-साढ़ेसति से छुटकारा	50 रु.
दशाफल दर्पण	300 रु.
ज्योतिष सर्वस्व	300 रु.
जातक सत्याचार्य	80 रु.
केवलज्ञान प्रश्न चूड़ामणि	100 रु.
भारतीय ज्यो. (नेमिचंद्र शा.)	350 रु.
काली किताब	550 रु.
काली किताब (मध्यम)	300 रु.
रावण संहिता (बड़ा)	2500 रु.
रावण संहिता (मध्यम)	600 रु.
लाल किताब (वृहद्)	2500 रु.
लाल किताब	800 रु.
लाल किताब-टोटके व उपाय	150 रु.
लाल किताब कष्ट निवारण	150 रु.
लाल किताब-पं. किसनलाल	250 रु.
प्रश्न भास्कर	100 रु.
प्रश्न विद्या	80 रु.
प्रश्न दर्पण	120 रु.
प्रश्न रहस्य	120 रु.
सारावली	225 रु.
वृहद्पराशरहोराशास्त्र	250 रु.
सामुद्रिक शास्त्र (2 भाग)	600 रु.
विशोंतरी दशाफल निर्णय	150 रु.
उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर	80 रु.
जातकालंकार (भा.टी.)	90 रु.
गोचर विचार	80 रु.
चुने हुए ज्योतिष योग	80 रु.
कर्ज से मुक्ति	120 रु.
पितृदोष कारण-निवारण	150 रु.
सुगम वैदिक ज्यो.	350 रु.
दशाफल विचार (वृहद्)	200 रु.
सन्तान सुख विचार	200 रु.
ज्यो. गणित व खगोल-शास्त्र	200 रु.
भावफल् विचार (2 भाग)	300 रु.
फलित ज्योतिष (केदार)	300 रु.
बुद्धि विद्या विचार	200 रु.
गृह क्लेश क्यों ?	120 रु.
महाशक्तिशाली टोने-टोटके	300 रु.
5001 प्रभावशाली टोने-टोटके	250 रु.
11000 गंडे तावीज टोटके	300 रु.
नक्श सूलेमानी	150 रु.
प्रश्न-मार्ग (दो. खण्ड)	300 रु.
आयुनिर्णय	200 रु.
प्रश्न फल निर्णय	100 रु.
सम्पूर्ण ज्यो. विज्ञान	200 रु.
फलित दर्पण	300 रु.
सुगम वैदिक ज्योतिष	350 रु.
आयु आकलन	400 रु.
मंगली दोष कारण-निवारण	120 रु.
उत्तर कालामृत	300 रु.
रत्न ज्योतिष	80 रु.
रत्न पहने भाग्य बदलें	100 रु.
रत्न प्रदीप	120 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	150 रु.
रत्न रुद्राक्ष और भाग्य	250 रु.
रत्न परिचय	80 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	200 रु.
आपका भाग्यरत्न	100 रु.
अंक विद्या रहस्य	80 रु.
अंकों में छिपा भविष्य	80 रु.
अंकों का अद्भुत संसार	150 रु०
अंक ज्योतिष (कीरो)	100 रु.

वास्तुशास्त्र विज्ञान पव

पुस्तक	मूल्य
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	150 रु.
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	150 रु.
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	100 रु.
रेमिडियल वास्तुशास्त्र	150 रु.
व्यावहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुकला और भवन निर्माण	150 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य	400 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य (2 भाग)	450 रु.
फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र	120 रु.
इंटीरियर डिजाइनिंग वास्तुशास्त्र	250 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

"लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फ़ोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 2000 रु. (डाक व्यय सहित)
हिन्दी रुपान्तरण 'अरुण संहिता' मूल्य 1000 रु.

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता :

अग्रिम राशि मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेजें।

जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन-0181-2457959